इंगलैंड का सामाजिक इतिहास

लेखक
जी. एम. ट्रेवेल्यन

अनुवादक
रामपाल सिंह गौड़
यशदेव शल्य
आनन्द काश्यप

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग,
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की
मानक ग्रंथ योजना के अन्तर्गत प्रकाशित

प्रथम हिन्दी सस्करण, २००० प्रतियाँ

अगस्त, १९६८

The English Language Book Society and Longmans, London द्वारा प्रकाशित 'ENGLISH SOCIAL HISTORY' by G M Trevelyan, Edition of 1962 से अनूदित।

प्रस्तुत पुस्तक वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की मानक ग्रथ योजना के अन्तर्गत, शिक्षा मत्रालय, भारत सरकार के शतप्रतिशत अनुदान से प्रकाशित हुई है।

मूल्य १५ रुपए

प्रकाशक सामाजिक विज्ञान हिन्दी रचना केन्द्र,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर।

मुद्रक शर्मा ब्रदर्स इलैक्ट्रोमेटिक प्रेस,
अलवर।

प्रस्तावना

हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओ को शिक्षा के माध्यम के रूप मे अपनाने के लिए यह आवश्यक है कि इनमे उच्चकोटि के प्रामाणिक ग्रन्थ अधिक से अधिक सख्या मे तैयार किए जाएँ। भारत सरकार ने यह कार्य वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के हाथ मे सौपा है और उसने इसे बडे पैमाने पर करने की योजना बनाई है। इस योजना के अन्तर्गत अग्रेजी और अन्य भाषाओ के प्रामाणिक ग्रन्थो का अनुवाद किया जा रहा है तथा मौलिक ग्रन्थ भी लिखाए जा रहे हैं। यह काम अधिकतर राज्य सरकारो, विश्वविद्यालयो तथा प्रकाशको की सहायता से प्रारम्भ किया गया है। कुछ अनुवाद और प्रकाशन कार्य आयोग स्वय अपने अधीन भी करवा रहा है। प्रसिद्ध विद्वान और अध्यापक हमे इस योजना मे सहयोग दे रहे हैं। अनूदित और मौलिक साहित्य मे भारत सरकार द्वारा स्वीकृत शब्दावली का ही प्रयोग किया जा रहा है ताकि भारत की सभी शिक्षा सस्थाओ मे एक ही पारिभाषिक शब्दावली के आधार पर शिक्षा का आयोजन किया जा सके।

श्री जी एम ट्रेवेल्यन कृत **'इगलिश सोश्यल हिस्ट्री'** का हिन्दी रूपान्तर **'इगलैंड का सामाजिक इतिहास'** शीर्षक के अन्तर्गत राजस्थान विश्वविद्यालय के सामाजिक विज्ञान हिन्दी रचना केन्द्र द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा हे। सर्वश्री रामपाल सिह गौड, यशदेव शल्य, और आनन्द काश्यप ने इसका अनुवाद किया है। मूल पुस्तक भारतीय विश्वविद्यालयो मे इतिहास की स्नातकोत्तर कक्षाओ के लिए एक लोकप्रिय निर्धारित/अनुमोदित पाठ्य पुस्तक है। आशा है कि भारत सरकार द्वारा मानक ग्रन्थो के प्रकाशन सम्बन्धी इस प्रयास का सभी क्षेत्रो मे स्वागत किया जायगा।

बाबूराम सक्सेना

अध्यक्ष

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार

नई दिल्ली,

३० जून, १९६८

आमुख

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि हमारे विश्वविद्यालय के तत्वावधान मे सामाजिक विज्ञान हिन्दी रचना केन्द्र की ओर से श्री जी एम ट्रेवेल्यन कृत सुप्रसिद्ध ग्रथ "इगलिश सोश्यल हिस्ट्री" का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया जा रहा है। यह ग्रथ भारतीय विश्वविद्यालयो मे इतिहास की स्नातकोत्तर कक्षाओ के लिए एक निर्धारित/अनुमोदित पाठ्य ग्रथ के रूप मे दीर्घकाल से स्वीकार किया गया है। इसमे चौदहवी शताब्दी मे लेकर बीसवी शताब्दी के प्रारम्भ तक (चासर के काल से विक्टोरिया के शासनकाल के अन्त तक) के अग्रेजो के समाज के विभिन्न पक्षो का विस्तारपूर्वक एव सूक्ष्म विवेचन किया गया है। वर्तमान इगलैड की सुदृढ औद्योगिक अर्थव्यवस्था और ससार-प्रसिद्ध लोकतान्त्रिक शासन-प्रणाली के क्रमिक विकास की पार्श्वभूमि मे जो सामाजिक, शैक्षणिक, साहित्यिक, सास्कृतिक, धार्मिक एव आध्यात्मिक परिस्थितिया कार्यरत रही है उनका अत्यधिक गहन एव रोचक विश्लेषण इस कृति की विशिष्टता है। अत विद्वानो तथा जनसाधारण दोनो ही वर्गो के लिए इसकी उपयोगिता निर्विवाद है। आशा है ऐसे प्रामाणिक और उपयोगी ग्रथ का हिन्दी रूपान्तर प्रकाशित हो जाने से सम्बन्धित साहित्य मे निश्चय ही सम्यक् योगदान हो सकेगा।

पुस्तक का अनुवाद सामाजिक विज्ञान हिन्दी रचना केन्द्र के अधिकारियो, सर्वश्री रामपात सिह गौड, यशदेव शल्य और आनन्द काश्यप ने किया है। अनूदित पाण्डुलिपि का पुनरीक्षण भी केन्द्र मे किया गया है।

राजस्थान विश्वविद्यालय भारत सरकार के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग एव शिक्षा मत्रालय के प्रति आभारी है कि उन्होने ऐसे महत्वपूर्ण ग्रथ का हिन्दी सस्करण प्रकाशित करने का उसे अवसर दिया। मै डा शान्तिप्रसाद वर्मा, अवैतनिक निदेशक, सामाजिक विज्ञान हिन्दी रचना केन्द्र, का भी आभारी हूँ जिनके मार्गदर्शन मे पुस्तक को प्रस्तुत रूप मे प्रकाशित करने की व्यवस्था हुई है।

जयपुर,

५ जुलाई, १९६८

मुकुट विहारी माथुर
उपकुलपति
राजस्थान विश्वविद्यालय

विषय-सूची

अनुवादक

अध्याय १ से ८	श्री यशदेव शल्य
अध्याय ९ से १३	श्री रामपाल सिंह गौड
अध्याय १४ से १८	श्री आनन्द काश्यप

प्राक्कथन

यद्यपि मैने इस पुस्तक को अभी इधर हाल (१६४१) तक की प्रकाशित पुस्तको के प्रकाश मे अद्यतन काल तक लाने का प्रयत्न किया है, किन्तु यह, लगभग सम्पूर्ण, युद्ध से पहले ही लिखी गयी थी। तब मेरा विचार रोम के काल से हमारे युग तक का इतिहास लिखने का था, किन्तु अन्त मे मैने वह भाग छोड दिया जो मुझे बहुत कठिन प्रतीत हुआ, यानि चौदहवी शताब्दी से पहले की शताब्दियो तक का। युद्ध ने मेरे लिए कार्य समाप्त करना असम्भव कर दिया है, किन्तु मुझे यह लगा कि जो अध्याय मैने समाप्त कर लिये है वे निरतर छ शताब्दियो की कथा कहते है, अर्थात् चौदहवी से उन्नीसवी शताब्दी तक की, और परिणामत कुछ पाठक इसका स्वागत कर सकते है।

नकारात्मक पदावली मे, सामाजिक इतिहास की इस प्रकार से परिभाषा की जा सकती है कि, यह एक जाति का ऐसा इतिहास होता है, जिसमे राजनीति का भाग छोड दिया जाता है। सम्भवत किसी भी जाति के इतिहास से राजनीति का भाग छोडना कठिन कार्य है, किन्तु इगलिश जाति के इतिहास से इसे अलग करना विशेष रूप से कठिन है। तो भी, क्योकि कितनी ही इतिहास की पुस्तको मे केवल राजनैतिक इतिवृत्तो का ही आख्यान किया गया है और उनके सामाजिक परिवेश की कोई चर्चा नही की गयी है, इसलिए इस विधि का व्यतिक्रम (उलट) इस असन्तुलन के उपचार के रूप मे उपयोगी रहेगा। मेरे अपने जीवन-काल मे एक तीसरा अत्यन्त सम्बद्ध प्रकार का इतिहास अस्तित्व मे आ गया है—अर्थात् आर्थिक-इतिहास—जोकि सामाजिक इतिहास के गम्भीर अध्ययन मे बहुत सहायक हो सकता है। वास्तव मे सामाजिक चित्र आर्थिक परिस्थितियो मे उभरता है, बहुत कुछ उसी प्रकार से राजनैतिक घटनाएँ सामाजिक परिस्थितियो मे से जन्म लेती है। सामाजिक इतिहास के बिना आर्थिक इतिहास बजर है और राजनैतिक इतिहास अबोधगम्य।

किन्तु सामाजिक इतिहास केवल आर्थिक तथा राजनैतिक इतिहास के बीच अपेक्षित कडी का कार्य ही नही करता है, इसका अपना एक निजी मूल्य तथा विशिष्ट लक्ष्य भी होता है। इसकी अवधि (स्कोप) इस प्रकार से परिभाषित की जा सकती है कि यह किसी देश के प्राचीन निवासियो के दैनिक जीवन का चित्रण है, और इस दैनिक जीवन की सीमारेखा मे मानवीय सम्बन्धो एव विभिन्न वर्गो के परस्पर आर्थिक

सम्बन्धो का, परिवार तथा घर के स्वरूप तथा लक्षणो का, श्रम तथा विश्राम सम्बन्धी स्थितियो का, मनुष्य के प्रकृति के प्रति रवैये का, और प्रत्येक युग की उस सस्कृति का जो जोवन की इन सामान्य परिस्थितियो मे से जन्म लेती रही है तथा धर्म, साहित्य, सगीत, शिल्प, विद्या और दर्शन के क्षेत्रो मे निरतर परिवर्त्तमान रूप लेती रही है, समावेश किया जा सकता हे ।

हम प्रत्येक अनुक्रमागत युग के लोगो के वास्तव जीवन को कहाँ तक जान सकते है ? इतिहासज्ञो तथा पुरातत्वविदो ने अपने अध्यवसाय पूर्ण अध्ययनो से बहुत विशाल जानकारी एकत्र करली है और असख्य आलेख, चिट्ठी-पत्र और पत्रिकाएँ सम्पादित की है । यह इतनी सामग्री है जितनी कम से कम आधे जीवन-काल तक किसी को भी अध्ययन-व्यस्त रखने के लिये पर्याप्त है । तो भी यह ज्ञान-भडार भी सम्पूर्ण सामाजिक इतिहास की तुलना मे बहुत अल्प है, जिसका सम्यक् ज्ञान तभी सम्भव है यदि हम उन करोडो व्यक्तियो—स्त्रियो, पुरुषो, बच्चो--की जीवनियो से परिचित हो जो इगलैंड मे इन सब युगो मे रहे है । समाज-इतिहासकार, जो प्राय साधारणीकरण करते है, उनका ऐसी थोडी सी विशिष्ट घटनाओ पर निर्भर करना अनिवार्य है जिन्हे प्रतिनिधि प्रकार का मान लिया जाता है, किन्तु वास्तव मे पूर्ण सत्य इन से कही अधिक जटिल होता है ।

और जबकि यह सग्रहीत ज्ञान-भडार विषय की विशालता की तुलना मे बहुत अल्प है, तब उस सामग्री की दयनीय अल्पता का तो कहना ही क्या जिसका उपयोग मैने उस अल्प मात्रा मे से भी चयन कर इस केवल २,००,००० शब्दो की पुस्तक मे किया है । इससे पूरी छ शताब्दियो के इगलैंड के वैविध्यपूर्ण तथा अद्भुत जीवन का विवरण देने के इस प्रयत्न की सीमाएँ स्पष्ट हे । तो भी, ग्रास का अत्यल्प भाग, रोटी बिल्कुल भी न होने से तो, अच्छा ही हे । यह कम से कम भूख को तो चमकाएगा ही । यदि यह पुस्तक कुछ लोगो को प्राचीन साहित्य और आलेख पढने के लिए थोडा और उत्सुक कर सकती है तो मै समझूगा कि इसका प्रयोजन सिद्ध हुआ ।

निर्लिप्त-बौद्धिक कौतूहल वास्तव मे सभ्यता का प्राण है । सामाजिक इतिहास इसके सर्वोत्तम रूपो मे से एक है । मेरे विचार मे, मूलत इतिहास का आकर्षण कल्पनात्मकता मे है । हमारी कल्पना हमारे पूर्वजो को उनके असली रूप मे देखने की आतुरता अनुभव करती हे—उनके दैनिक कार्य-व्यवहार मे तथा दैनिक सुख-दुख मे । कार्लाइल ने पुरातत्वविद् अथवा इतिहासकार को "नीरस" कहा है । यह "नीरस" वास्तव मे हृदय की गहरी तहो मे एक कवि हे । पुरालेखागार मे उसे एक काव्य दिखाई देता है, चाहे वह उसे अपने पडौसी पर व्यक्त न ही कर पाए । किन्तु उसके जीवन की मुख्य प्रेरणा अतीत जीवन के याथार्थ्य का अनुभव करने की उत्कण्ठा, "विनष्ट काल के पुराख्यानो" के साथ परिचय की वासना हे--"मृत नायिकाओ के लिए तथा हत योद्धाओ के लिए ।"

स्कॉट आरम्भ मे शुष्क पुरातत्वविद् ही था, क्योकि उस प्रकार से वह अपार काव्य तथा अनन्त रोमास की उपलब्धि कर सका था। वास्तव मे साहित्य के सम्पूर्ण क्षेत्र मे वह शुष्क पुरातत्वविद् का सबसे बडा समर्थक है। उसने, एक कमाल अत्युक्ति के साथ, कहा कि पुरातत्वविद् मानव के अतीत के सम्बन्ध मे जो एक क्षुद्रतम तथ्य का भी उद्घाटन करता है वह शैले के सम्पूर्ण काव्य से अधिक कवितामय तथा स्कॉट के काव्य के सम्पूर्ण रोमास से अधिक रोमास पूर्ण है।

"अतीत" इस एक शब्द मे जो कुछ निहित है उसकी ओर जरा ध्यान दे। कितना व्यथा-जनक, पवित्र और सर्वथा एक कवितामय अर्थ इसमे निहित है, एक ऐसा अर्थ जो उतना ही अधिक निखरता जाता है जितना गहरा हम इस अतीत की अतलता मे बूडते है। उसी अतीत के और अधिक गहरे अतल मे झाकना हमारे लिये आवश्यक हो जाता है। अन्तत, इतिहास एक सच्ची कविता है, और यथार्थ, यदि इसकी सही व्याख्या की जाए तो, गल्प से कही अधिक समृद्ध और भव्य है।

इतिहास का विस्तृत अध्ययन ही हमे यह अनुभूति देता है कि अतीत उतना ही वास्तव था जितना कि वर्त्तमान है। ससार यह समझता हे कि हम इतिहासज्ञ लोग मृत अतीत के धूल भरे आलेखो मे खोए रहते है, कि हम अन्य कुछ नही देख पाते सिवाय—"जब तुम नदी का कुहरा देखते हो, तब धु धलके मे लिपटे, किरणो से अस्पृश्य प्रेत, परले किनारे पर मूर्त्त होते है।"

किन्तु जब हम पुरालेखो को पढते है तब ये प्रेत हमारे लिये रूप, रग, चेष्टाओ, वासनाओ तथा विचार-समन्वित होकर सजीव हो उठते है, केवल अध्ययन ही ऐसा साधन है जिसके द्वारा हम अपने निकट तथा सुदूर अतीत के पूर्वजो को देख पाते है, जो पूर्वज उन पुराने युगो मे दैनिक कार्य-व्यस्त रहते थे, श्रद्धाजलि अर्पित करने अथवा मतदान करने जाते थे, अथवा पडौसी के खेत-स्थित घर पर अधिकार करने तथा उसकी रखवाली करने वाले को उठा ले जाने के लिये जाते थे, अथवा पैटीकोटो वाली (अभिजात वर्ग की (अनु०)) नायिकाओ को पत्र पहुँचाने जाते थे। और पुन, "किसानो से आपूरित विशाल-सुन्दर खेत" है। सन्ततियो के बाद सन्ततियाँ आई, और बैलो के पीछे, अथवा घोडो के पीछे, अथवा मशीन के पीछे कृषक है और पीछे घर पर है उसकी पत्नी, सारा दिन कार्य-व्यस्त, दिन भर के समाचारो के अपने दैनिक बजट के साथ तैयार।

प्रत्येक भला और सरल, अपनी साधारणतम गतिविधियो मे भी प्रथा तथा विधान के, समाज तथा राजनीति के और देश-विदेश की घटनाओ के, जिन्हे कि वह न जानता था और न समझता था, एक अत्यन्त जटिल और निरन्तर बदलते ताने-बाने से शासित था। हमारा प्रयत्न केवल उसके परिचित व्यक्तित्व की कुछ झाकिया भर प्राप्त कर लेना नही है प्रत्युत प्रत्येक बीतते युग के सम्पूर्ण ताने-बाने की पुनारचना

करना तथा यह देखना है कि वह व्यक्ति किस प्रकार से उसे प्रभावित करता था, और कुछ अर्थों मे उन परिस्थितियो को, जो उसे परिवेष्टित कर उसका नियमन करती थी, स्वय उससे भी अधिक अच्छी तरह से समझना है।

सभ्य मानव को पशु-कल्प से पृथक् करने मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व यह चेतना है कि हमारे पूर्वज वस्तुत किस प्रकार के थे, और इस विस्मृत अतीत का विविध-वर्णी चित्र क्रमश पुनारचित करना है। आज के इस वैज्ञानिक युग मे तारो को तोलना, अथवा जहाजो को हवा या सागर मे तैराना उतना विस्मयजनक और उदात्तता देने वाला नही है जितना चिरविस्मृत घटनाओ का क्रम जानना तथा उन स्त्री-पुरुषो के वास्तव स्वभाव को जानना है जो यहाँ हमारे से पहले हो गये है।

ऐतिहासिक अध्ययन की कसौटी सत्य है, किन्तु इसमे प्रेरणा-स्रोत काव्यात्मक है। इसकी कविता इसके सत्य होने मे निहित है। इसमे हम इतिहास के वैज्ञानिक तथा साहित्यिक दृष्टिकोणो का समन्वय पाते है।

किन्तु इस समय हमारे पूर्वजो के सम्बन्ध मे हमे बहुत कम जानकारी उपलब्ध है, इसलिये इस पुस्तक मे बहुत सी कडिया कल्पित करना आवश्यक है। ऐसी अवस्था मे यह विचारणीय है कि किस प्रकार मे यह कहानी सबसे बढिया ढग से कही जा सकती है। यह इतिहास राजनैतिक इतिहास के जाल के समान प्रसिद्ध राजाओ, शासन-सभाओ तथा युद्धो के नामो के ककाल के चारो ओर नही बुना जा सकता। समाजिक विकास पर उनका प्रभाव वास्तव मे ही होता है, जिसको प्राय ही ध्यान मे रखना आवश्यक है। शुद्धतावादी (प्यूरिटन) क्रान्ति तथा उसका शमन दोनो घटनाए सामाजिक भी थी और राजनैतिक भी। किन्तु, सब मिल कर, सामाजिक परिवर्तन की गति अन्त सलिला के समान होती है, जो राजनैतिक घटनाओ का अनुसरण करने के बजाय, जो प्राय सत ही होती है, या तो अपने ही नियमो का अनुसरण करती है अथवा आर्थिक परिवर्तन के नियमो का अनुसरण करती है। राजनैतिक घटनाए प्राय सामाजिक परिवर्तन की परिणाम होती है, कारण नही। एक नया राजा, नया प्रधानमत्री अथवा नयी शासन-सभा प्राय ही राजनीति मे एक नये युग का प्रवर्तन करते है, किन्तु शायद ही कभी ये लोक-जीवन को प्रभावित कर पाते हो।

तब फिर यह कथा किस प्रकार से कही जाय ? किन काल-भागो में सामाजिक इतिहास को बाटा जाय ? जब हम दृष्टि फेर कर इसकी ओर झाकते है तब हम जीवन का एक सुतरा प्रवहमान स्रोत देखते है, जिसमे एक निरन्तर क्रमिक परिवर्तन हो रहा है, किन्तु कभी कभी ज्वारभाटा भी आता है। इनमे महामारी शायद एक है और दूसरा है औद्योगिक क्रान्ति। किन्तु औद्योगिक क्रान्ति कई पीढियो तक व्यापक है, इसलिये उसे उचित रूप से ज्वारभाटा या घटना नही कहा जा सकता। यह महामारी के समान जीवन-सरिता के आरपार आ गिरी कोई आकस्मिक बाधा नही है जिसने कुछ काल के

लिये इसकी गति को दिशान्तरित कर दिया हो, प्रत्युत इस सरिता की ही एक अन्त - प्रवाहित धारा है ।

राजनैतिक इतिहास मे एक समय मे एक ही राजा शासन करता हे, एक समय मे एक ही शासन-सभा बैठती है । किन्तु सामाजिक इतिहास मे हम एक ही देश, एक ही मण्डल तथा एक ही नगर मे एकसाथ विभिन्न प्रकार की अनेक सामाजिक और आर्थिक सस्थाओ को साथ-साथ कार्य करते हुए पाते है । उदाहरणत, कृषि के क्षेत्र मे हम एकसाथ ही ऐंग्लो-सेक्सनो की, १८वी शताब्दी मे प्रचलित खुले क्षेत्रो की कृषि-व्यवस्था, अत्यन्त प्राचीन कैल्टो के ढग से आवेष्टित खेत तथा आर्थर यग द्वारा स्वीकृत वैज्ञानिक ढग से कर्षित आधुनिक आवेष्टनात्मक कृषि (स्ट्रिप कल्टीवेशन) साथ साथ पाते है । ऐसी ही बात विभिन्न औद्योगिक तथा व्यापारिक सगठनो की है—सदियो से घरेलू दस्तकारी, व्यावसायिक शिल्प तथा पूजीवादी व्यवस्था साथ साथ कार्य करते दिखाई देते है । सब चीजो मे पुराना नये का अतिच्छादन करता है—धर्म, विचार पारिवारिक परम्पराएँ, सभी मे । कभी एकदम स्पष्ट विभाजन नही होता, कोई ऐसा एक क्षण नही है जब सब अग्रेज लोग नयी विचार-विधिया और दर्शन अपनाते हो ।

ऐसी वस्तुस्थिति होने से, मुझे ऐसा लगा है कि यह कहानी इस ढग से कहना सब से बढिया रहेगा जैसे जीवन रगमच पर प्रस्तुत किया जाता है, अर्थात् काल-व्यवधानो के साथ दृश्यो की एक शृ खला प्रस्तुत करना । एक दृश्य तथा उसके अनुगामी दृश्य मे बहुत कुछ समान भी होगा, जैसे चासर के युग मे तथा कैक्स्टन के युग मे, डा० जॉनसन के युग मे तथा कोब्बैट के युग मे—किन्तु इनमे बहुत कुछ भिन्न भी होगा ।

किसी भी काल का सही चित्र प्राप्त करने के लिये नये तथा पुराने दोनो प्रकार के तत्वो को ध्यान मे रखना आवश्यक है । कभी कभी, अतीत के किसी समय विशेष का मानसिक चित्र बनाते हुए लोग नये लक्षणो को पकड लेते है और उसमे अति-व्याप्त पुरातन को भूल जाते है । उदाहरण के लिये, इतिहास के विद्यार्थी पीटरलू के जनसहार की कुख्यात राजनैतिक घटना से प्राय इतने अभिभूत हो जाते है कि वे समझते है कि लकाशायर फैक्टरी-मजदूर १८१६ का एक प्रतिनिधि श्रमिक था, किन्तु वास्तव मे वह नही था, वह केवल एक स्थानीय प्रकार का प्रतिनिधि था, नवीनतम प्रकार (टाइप), भविष्य की एक प्रतिकृति । कठिनाई यह थी कि शेष समाज, जो प्रतिशासन (रीजेसी) काल के पुराने साचे मे ढला था, उस (नये श्रमिक) के आविर्भाव से आपातित परिवर्तन के साथ अपना सामजस्य नही बैठा पाया था । उससे उन्हे चिढ होती थी, वे अपनी धारणाओ के ससार मे उसके लिये कोई स्थान निश्चित नही कर पाते थे, क्योकि वह तब उसमे सगत नही था, जैसाकि अब वह है ।

इसलिये इस पुस्तक की विधि इगलैड के जीवन के दृश्यो की एक आनुक्रमिक कडी प्रस्तुत करना है, और इन दृश्यो मे से प्रथम है चासर का जीवन-काल (१३४०-१४००) । यह मै पहले ही स्वीकार कर चुका हू कि इस पुस्तक के इस काल से

आरभ होने का कारण व्यक्तिगत और आकस्मिक है। किन्तु वास्तव मे आरभ करने की दृष्टि से यह एक बढिया काल भी है। क्योकि सर्वप्रथम चासर के काल मे ही अगरेज लोग एक जातीय और सास्कृतिक समष्टि के रूप मे स्पष्ट रूप से प्रकट हुए। घटक जातिया और भाषाएँ एक मे घुल-मिल गयी। अब उन्नत वर्ग फ्रासीसी नही रहा था और न कृषक वर्ग ऐंग्लोसेक्सन सब इगलिश हो गये थे। इगलेंड जब मुख्यत बाहर के प्रभावो का गृहीता भर नही रह गया था। अब से वह अपने निजी प्रभाव उत्पन्न करने लगा था। इसने चासर, वाइक्लिफ, वाट्टेलर तथा इगलिश नाविको के युग मे अपना निजी द्वीप, साहित्य-विधाएँ, धर्म, आर्थिक समाज तथा युद्ध निर्मित करने आरभ कर दिये थे। इगलैंड को रूप देने वाली शक्तिया अब विदेशी नही थी प्रत्युत भीतरी ही थी। उसकी प्रगति अब महान विदेशी पोपो तथा प्रशासको की, सामन्तीय जमीदारो के फ्रासीसी विचारो की, अजोऊ (एक फ्रेंच प्रान्त (अनु०)) के वकील राजाओ की, फ्रेंच नमूने पर शिक्षित और शस्त्रसज्जित अश्व-सेना की तथा लेटिन प्रदेशो से आने वाले धर्म नेताओ की देन नही रही थी। अब से इगलैंड ने अपने निजी प्ररूप तथा निजी परम्पराएँ विकसित करनी आरभ कर दी थी।

जब शतवर्षीय युद्ध मे (१३३७-१४५३) "गाड्डैम लोग" (जेसाकि जोन आफ आर्क उन्हे (अग्रेजो को) घृणा स कहता था फ्रैंचो को विजित करने के लिये निकले तो वे वहा विदेशी आक्रमणकारियो के रूप मे गये, आर उनकी सफलता का कारण यह था कि वे एक राष्ट्र के रूप मे सगठित थे और अपने एक राष्ट्र होने की उन्हे चेतना थी, जबकि फ्रास मे अभी यह चेतना नही थी। और आखिरकार जब वह विजय का प्रयत्न विफल हो गया तब इगलेंड एक अपरिचित उपेक्षित द्वीप के रूप मे यूरोपीय महाद्वीप से विच्छिन्न हो गया, और यूरोपीय ससार की केवल एक शाखा नही रह गया।

यह सच है कि हमारा एक विशिष्ट राष्ट्र के रूप मे उद्भव नही हुआ। इसकी प्रक्रिया चासर के जीवन काल मे न आरभ हुई और न समाप्त हुई। किन्तु उन वर्षो मे यह तत्व अधिक सक्रिय तथा स्पष्ट दिखाई देता है, बजाय उससे पहले की तीन शताब्दियो के, जबकि यूरोप की, इगलैंड समेत, ईसाई तथा सामन्तीय सभ्यता राष्ट्रीय न होकर सार्वभौमिक थी। किन्तु चासर के काल के इगलैंड मे हम एक राष्ट्र को देखते है।

अध्याय १

चासर-कालीन इंगलैंड (१३४०-१४००)

खेत, गाँव तथा सामन्त-गृह

चासर काल के इगलैड मे हम पहली बार आधुनिक को मध्ययुगीन मे मिश्रित होता हुआ और इगलैंड को स्वय एक ऐसे स्वतत्र-पृथक् राष्ट्र के रूप मे उदित होता हुआ पाते है जो अब फ्रेच-लेटिन यूरोप की एक शाखा मात्र नही रह गया था। वास्तव मे कवि की अपनी कृतिया आधुनिकता के सबसे प्रमुख तथ्य को प्रस्थापित करने वाली थी, वह था हमारी निजी भाषा का जन्म और उसका सामान्य रूप से स्वीकार, सेक्सन तथा फ्रासीसी भाषाओ के शब्द आखिरकार सुष्ठुरूप से "इगलिश बोली" मे मिलते हुए, जिसे 'सब समझ सकते थे', और जो इस कारण से अब विद्यालीय शिक्षा तथा कानूनी काम-काज के लिये प्रयोग मे लायी जा रही थी। वास्तव मे उस समय वैल्श और कोर्निश जैसी पूर्णत पृथक् बोलियो के अतिरिक्त अनेक प्रादेशिक बोलिया भी थी। और समाज के कुछ वर्गो की एक दूसरी भाषा भी थी सुपठित पादरियो की दूसरी भाषा लैटिन थी, दरबारियो तथा अभिजात वर्ग के लोगो की फ्रैच थी, यद्यपि अब यह उनकी मातृ-भाषा नही थी किन्तु एक ऐसी विदेशीभाषा थी जो—

"बोवे के स्ट्रैट्फोर्ड स्कूल के पश्चात्"

सीखनी होती थी।

चासर के लिये, जिसका अधिकाश समय दरबार के परिवेश मे ही गुजरता था, फ्रेच सस्कृति हस्तामलकवत् थी इसलिये, जब उसने आधुनिक इगलिश कविता का आने वाली अनेक शताब्दियो के लिये एक प्रतिमान स्थापित किया, तब उसके रूप और छन्द फ्रास और इटली से लिये गये थे, जिन देशो मे कि वह राज्य-कार्य से अनेक बार यात्रा कर चुका था। तो भी, उसने एक नया अग्रेजी मुहावरा ईजाद किया था। उसी ने वास्तव मे पहली बार "दि कैंटर्बरी टेल्ज" मे 'उपहास के अग्रेजी रूप' को सम्यक् अभिव्यक्ति दी थी—एक चौथाई निन्दात्मक और तीन चौथाई सौहार्दपूर्ण—जिसके लिये हमे दान्ते, पेट्रार्च अथवा रोमेन ड' ला रोस की ओर देखने की आवश्यकता नही है, और जिसे हम बोकेक्श्यो अथवा फ्रोइस्सार्ट मे भी नही पा सकते।

नवोदित जाति की अन्य विशेषताएँ इगलैंड के एक धार्मिक रूपक "प्यर्स दि प्लौमैन" मे व्यक्त हुई। यद्यपि वह भी एक विद्वान कवि था और अपने जीवन के

अधिकाश काल मे वह लन्डन मे ही रहा, किन्तु जन्म से वह मल्वर्न निवासी था और उसने ऐंग्लो-सेक्सन कविता से उत्पन्न एकातरी मुक्त छन्द को अपनाया, जोकि उस समय पश्चिम प्रान्त मे प्रचलित था। यह प्राकृत अग्रेजी छन्द शीघ्र ही चासर के अन्त्यानुप्रासी छन्दो से स्थानान्तरित होने वाला था, किन्तु "प्यर्स दि प्लौमैन" की आत्मा हमारे पूर्वजो की धार्मिक श्रद्धा मे, दूसरो के दुष्कृत्यो के प्रति उनके अविराम क्षोभ मे, तथा अपने दुष्कर्मों के प्रति पश्चात्ताप मे सदैव जीवित रही। अग्रेजी शुद्धाचारवाद (प्यूरिटिनिज्म) सुधारवाद से कही अधिक पुराना है, और दो 'स्वप्नदर्शी'—प्यर्स दि प्लौमैन (हलचालक प्यर्स) तथा बुन्मन दि थिकर (विचारक बुन्मन)--तीन शताब्दियो के अन्तर से होने वाले किन्ही भी अन्य दो लेखको की अपेक्षा कल्पना तथा अनुभूति मे परस्पर अधिक निकट है।

जबकि लैंगलैड तथा ग्रोवर ने, धर्म-विरोध किए बिना, मध्ययुगीन समाज तथा धर्म मे व्याप्त भ्रष्टाचार पर आँसू बहाये और इसके उपचार के लिए एक नवीन और भिन्न भविष्य की ओर देखने के बजाय अतीत के आदर्शो की ओर देखा, तब वाइक्लिफ ने परिवर्त्तन का एक क्रान्तिकारी कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जिसका अधिकाश बहुत पीछे जाकर इगलैंड के पादरी-विरोधी तथा धार्मिक रूढीवाद-विरोधी आन्दोलनो द्वारा कार्यान्वित हुआ। इस कार्यक्रम का एक भाग था बाइबल का इगलैड की नयी बोली मे अनूदित होना और सार्वजनिक होना। इन्ही दिनो जॉन बाल ने मध्ययुगीन पदावली मे एक अत्यन्त आधुनिक प्रश्न किया था—

> जब आदम ने गुफा खोदी तथा ईव ने ताना तना था
> तब, उस समय कौन सभ्य-सस्कृत था ? —

क्योकि आर्थिक क्षेत्र मे भी मध्ययुगीनता आधुनिकता को स्थान दे रही थी और इगलैड अपने विशिष्ट सामाजिक वर्गो को विकसित कर रहा था। सामन्तीय जागीरदारियो का ध्वस तथा इनमे चलने वाली अर्ध दास व्यवस्था की समाप्ति दोनो प्रक्रियाए साथ-साथ चल रही थी। विद्रोही किसानो की यह माग, कि सभी इगलिश लोग स्वतत्र होने चाहिये, आज बडी सामान्य प्रतीत होती है, किन्तु तब यह एक नयी और विचित्र बात थी और यह विद्यमान सामाजिक व्यवस्था के मूल पर कुठाराघात करती थी। जिन कार्यकर्त्ताओ को पहले से इस स्वतत्रता का वर प्राप्त था वे अधिक वेतन के लिए स्वीकृत आधुनिक इगलिश पद्धति के अनुसार निरन्तर हडताले कर रहे थे। इसके अतिरिक्त, जिन नियोक्ताओ के विरुद्ध ये हडताले की जाती थी वे मुख्य रूप से पुराने सामन्त नही थे, बल्कि पट्टाधर कृषक, उत्पादन-कर्त्ता तथा व्यापारी थे। वस्त्र-उद्योग, जोकि भविष्य मे प्रभूत धनार्जन का उपकरण बनने वाला था और इगलैड के समाज को एक नया रूप देने वाला था, एड्वर्ड तृतीय के काल मे ही सागर पार के हमारे कच्ची ऊन के मध्ययुगीन व्यापार को तीव्रता से निगल रहा था और राज्य पहले से ही परस्पर स्पर्धी मध्ययुगीन नगरो के स्वार्थो मे सामञ्जस्य स्थापित

करने का प्रयत्न कर रहा था, जिसमे कि राष्ट्र के व्यापार की रक्षा तक, उसका नियत्रण किया जा सके।

इस नीति को सफल बनाने के लिये समुद्री बेडे का होना आवश्यक है और एड्वर्ड तृतीय का सोने का नया सिक्का उसे शस्त्र तथा मुकुट सहित जलपोत मे खडे हुए प्रदर्शित करता है।

राष्ट्रीय आत्म-चेतना अब उन स्थानीय वफादारियो को तथा कडे वर्ग-विभाजनो को समाप्त कर रही थी जो सामन्त युग के सर्वदेशीय समाज की विशेषताएँ थी और परिणामत, फ्रास को लूटने के लिये आरभ किये गये सौ वर्षीय युद्ध मे राजाओ और कुलीनो को नये प्रकार की शक्ति का समर्थन प्राप्त हो रहा था, यह थी आधुनिक प्रकार की प्रजातात्रिक उद्धत देश भक्ति, जोकि सामतीय राजनीति तथा युद्ध-विधि का स्थान ले रही थी। क्रेसी तथा एगिकोर्ट मे अब वे "बलिष्ठ अश्वारोही" धनुर्धर अपने देश के युद्ध मे अगले मोर्चे पर थे जोकि इगलैंड के अश्वारोही सरदारो और सामन्तो के साथ कधे से कधा मिला कर फ्रास की पुरानी अश्वसेना का पुज के पुज हनन कर रहे थे।

शान्ति के पुरशासको की सस्था, जोकि ताज द्वारा राजा के प्रतिनिधि के रूप मे पडौसी प्रदेशो पर शासन करने के लिये नियुक्त की गयी थी, स्थानीय लोगो से ही निर्मित थी और इस प्रकार से यह उत्तराधिकार की सामतीय परपरा से विपरीत दिशा मे एक कदम था। किन्तु यह अधिकारी तत्रीय राज्यतत्र की केन्द्रीकरण मूलक प्रवृत्ति के भी विपरीत दिशा मे एक कदम था इसने राजा के लाभ के लिये स्थानीय सपर्को तथा प्रभावो को मान्यता दी और उनका उपयोग किया। यह एक ऐसा समझौता था जो इगलिश समाज के (अन्य देशा के समाजो से पूर्णत विशिष्ट समाज के रूप मे) भावी विकास के लिये बहुत महत्वपूर्ण था।

ये सब आन्दोलन—आर्थिक, धार्मिक, राष्ट्रीय—पार्लियामेट की कार्यवाहियो मे झलकते थे, जोकि स्वरूपत एक मध्ययुगीन सस्था थी, किन्तु जिसका आधुनिकीकरण आरभ हो चुका था। यह अब केवल सामतो, पादरियो, न्यायाधीशो तथा नागरिक अधिकारियो की समिति मात्र नही थी जिसका कार्य राजा को परामर्श देना अथवा उसे तग करना था। लोकसभा अब अपने लिये एक सीमित स्थान बना रही थी। यह सभव है कि उच्चस्तरीय राजनीति मे लोकसभा के सदस्य दरबार की प्रतिस्पर्धी पार्टियो की चालो मे साधन मात्र बनते हो, किन्तु अपनी ओर से वे छोटे नगरो और गावो के नये मध्यवर्गो की अर्थ-नीति को ही ध्वनित करते थे, और प्राय ही इसमे वे अपने वर्ग-स्वार्थो से निर्देशित होते थे, वे जल और स्थल पर लडे गये युद्धो के अयोग्य आयोजन पर राष्ट्र का रोष व्यक्त करते थे, और देश मे योग्यतर व्यवस्था तथा उचिततर न्याय के लिये निरन्तर माग कर रहे थे, जिसकी पूर्ति अभी ट्यूडर के काल तक नही होने वाली थी।

इस प्रकार से, चासर का युग अनेक आवाजो मे बोलता है, जोकि आधुनिक काल के लिये दुर्बोध्य नही है। वास्तव मे, यह सभव है कि हम उत्सुकतावश उससे अधिक समझ पाए होने की कल्पना करते हो जितना वास्तव मे हम उसे समझते है। क्योकि हमारे ये पूर्वज बौद्धिक, नैतिक तथा सामाजिक धारणाओ के ऐसे एक जटिल सम्मिश्र से निर्देशित थे जिसके वास्तव अभिप्राय को केवल मध्ययुगो के विद्वान् ही आज समझ सकते है।

चासर के जीवन-काल (१३४१-१४००) मे हो रहे परिवर्त्तनो मे सबसे अधिक महत्वपूर्ण परिवर्तन था सामन्ती दासत्व (मेनोर) की समाप्ति। खेती की पट्टेदारी तथा पैसे के रूप मे वेतन की प्रथा दास-श्रमिक द्वारा स्वामी की जागीर की जोताई की प्रथा का स्थान ले रही थी, और इस प्रकार से इगलिश गाँव का अर्धदासता से व्यक्ति-वादी समाज की ओर सक्रमण आरभ हो चुका था, जिसमे सभी कम से कम वैधानिक रूप से, स्वतत्र थे, और जिसमे पारस्परिक सम्बन्धो द्वारा स्थानान्तरित हो चुके थे। इस महान परिवर्त्तन ने गतिहीन सामती ससार के ढाचे को तोड दिया और पूजी, श्रम तथा व्यक्तिगत प्रयत्न की गतिशील शक्तियो को मुक्त कर दिया, जिसने कि कालानुक्रम मे नागरिक तथा ग्रामीण जीवन को अधिक वैविध्यपूर्ण बना दिया और व्यापार, उद्योग तथा कृषि के क्षेत्र मे नयी सभावनाओ के लिये पथ-प्रशस्त कर दिया।

इस परिवर्तन का अभिप्राय समझने के लिये यह आवश्यक है कि उस पुरानी व्यवस्था का भी सक्षिप्त विवरण दिया जाय जो धीरे धीरे स्थानान्तरित हो रही थी।

मध्ययुगीन इगलैड मे जोताई का सर्वाधिक, यद्यपि एकमात्र नही, प्रचलित ढग 'खुले खेत'[१] का था। यह वाइट के द्वीप से लेकर यार्कशायर की बजर भूमियो तक सम्पूर्ण मध्यप्रान्तो मे प्रचलित था। इस प्रथा के अनुसार, ग्राम एक समुदाय के रूप मे विशाल, अविभाजित खेतो की जोताई अल्प खडो के वितरण (स्ट्रिप एलाटमेट) के सिद्धान्त पर करता था। प्रत्येक कृषक के पास एक या आध एकड के कुछ कृषि-योग्य खड होते थे। उसके दीर्घ-सकीर्ण खड एक-दूसरे के साथ जुटे हुए नही थे और इस प्रकार से वे एक सगठित खेत नही बनाते थे जिस पर कि बाड लगायी जाती, वे उसके पडोसियो के खडो के बीच खुले मैदान मे बिखरे होते थे।

सेक्सन तथा मध्ययुगीन ट्यूडर-स्टूअर्ट काल के कृषको द्वारा जोते गये इन खडो की बाह्य रूपरेखाएँ अब भी देखी जा सकती है। चरागाहो मे दिखाई देने वाली 'मेढे' तथा हल की रेखाएँ, जोकि कभी कृषि-योग्य भूमिया थी, आज इगलैड के लैडस्केप की यह सर्वाधिक प्रमुख विशेषता है। दीर्घ, उठानवाली तथा वर्तुल पीठ वाली 'मेढे' अथवा 'भूमिया' नालो अथवा हल-रेखाओ के द्वारा एक-दूसरे से विभाजित थी, जोकि

[१] द्रष्टव्य इस प्रथा के उत्कृष्टतम विवरण के लिये सी एस आर्विन—दि ओपन फील्ड, (१९३८)।

हल के फले मे पानी ले जाने के लिये बनाये गये थे ।[२] टेटी 'मेढ' या 'भूमि', जोकि आज भी प्राय ही स्पष्टत दृष्टिगत होती है, उस 'खड' की प्रतिनिधि है जो बहुत पहले किसी काश्तकार कृषक का था और जिस पर उसने हल चलाया था, और जिसके पास ऐसे और भी बहुत से खड खुले क्षेत्र मे थे । अधिकाश अवस्थाओ मे ये खड एक-दूसरे से घास की मेढो द्वारा विभाजित नही थे बल्कि, हल द्वारा निर्मित खुली नाली से विभाजित थे ।

ये खड या खेत पृथक् पृथक् आवलयित नही थे । सम्पूर्ण विशाल 'खुला क्षेत्र', आवश्यकता होने पर, अस्थायी बाडो से घिरा रहता था । एक ही गाव के दो या तीन, या अधिक भी, कृषि योग्य 'क्षेत्र' हो सकते थे जो कृषको मे उपविभाजित रहते थे । इनमे से एक परती रहता था और शेष मे बुवाई की जाती थी ।

चारे के लिये चरागाहे भी इसी प्रकार से बोई जाती थी । चरागाहे और कृषित क्षेत्र दोनो, चारा तथा फसल काट लेने के बाद ढोरो के चरने के लिये खुले छोड दिये जाते थे । प्रत्येक व्यक्ति के अपने पशु चराने के अधिकार ग्राम-समुदाय द्वारा सम्मिलित रूप से निश्चित किये जाते थे, जिससे प्रत्येक सदस्य के साथ न्याय किया जा सकता ।

कृषि की यह व्यवस्था, जिसे कि आदि इगलिश-सेक्सन आगन्तुको ने जन्म दिया था, आधुनिक आलवाल की प्रणाली के आगमन तक जारी रही । जब प्रत्येक कृषक का उद्देश्य केवल अपने परिवार के उपभोग के लिये अन्न उत्पन्न करना था, विक्रय के लिये नही, तब यह प्रथा आर्थिक रूप से एक लाभप्रद प्रथा थी । इसमे व्यक्तिगत श्रम तथा सामूहिक नियत्रण दोनो के लाभ सम्मिलित थे, इसमे बाड लगाने के व्यय से भी बचत थी, इसमे प्रत्येक कृषक को बढिया और घटिया दोनो प्रकार की भूमियो से उचित भाग मिलता था, यह व्यवस्था कृषको को एक समुदाय के रूप मे बाधती थी, यह दीनतम को भी भूमि का अपना स्वामित्व देती थी, और कृषि-नीति मे उसका मत वर्ष भर के लिये सारे ग्राम को स्वीकार करना होता था ।

काश्तकार कृषको के इस प्रजातत्र पर सामन्ती शक्ति तथा जागीर के स्वामियो के वैधानिक अधिकारो का बहुत भारी बोझ लदा हुआ था । ये काश्तकार कृषक, पारस्परिक सम्बन्धो मे एक आत्मशासित समुदाय थे, किन्तु जागीरदार की सापेक्षता मे वे

---

[२] डरोथी वर्ड्स्वर्थ के जर्नल के आरभिक वाक्य, जोकि एक बरसाती रात के पश्चात् लिखे गये थे, सतह के नालो की इस व्यवस्था के स्वरूप तथा दृश्य का बडा सुन्दर चित्रण देते है । यह दृश्य एक समय इगलैड की कृषित भूमि पर सर्वत्र दिखाई देता था । एल्फोक्सडन, जनवरी २०, १७९८ "पर्वतो की उपत्यकाओ मे हरित मार्ग जल-प्रवाह के पथ है । गेहू के छोटे छोटे पौधे मेढो के बीच से दौडती हुई जल की चादी जैसी रेखा से कढे हुए से हैं ।"

कृषिदास थे। उन्हे अपनी जोत की भूमि छोडने से वैधानिक मनाही थी —वे भूमि से निबद्ध थे। उनके लिये यह आवश्यक था कि वे अपना अनाज जागीरदार की चक्की से ही पिसाएँ। वे अपने बच्चो का विवाह उसकी आज्ञा के बिना नही कर सकते थे। सर्वोपरि, वर्ष के कुछ दिन उन्हे जागीरदार के प्यादे के आदेशानुसार उसकी भूमि पर कार्य करना पडता था। कुछ गावो मे बृहत् क्षेत्र के कुछ खड जागीरदार के होते थे, किन्तु अधिकतर उसकी एक एकत्र जागीर भी होती थी।

दास कृषि की यह व्यवस्था, जिसमे जागीरदार की भूमि पर नियत दिन अवैतनिक कार्य करना अनिवार्य होता था, सारे इगलैड मे प्रचलित थी। न केवल खुले क्षेत्रो की खड-कृषि वाले प्रदेशो मे ही, प्रत्युत दक्षिण पूर्व मे, पश्चिम मे तथा उत्तर मे, पुराने घेरो की भूमियो मे, जहाकि कृषि की भिन्न व्यवस्थाएँ प्रचलित थी, सर्वत्र इसका प्रचलन था। नार्मन (फ्रैचप्रदेश) के वकीलो ने जागीर के सामन्ती विधान को सारे इगलैड मे ही समधिक एकरूप बना दिया था। नार्मन तथा आरभिक प्लेटेजेनेट के कालो मे एक गाँव एक समाज था, जो एक ओर जागीरदार तथा उसके प्यादो आदि से तथा दूसरी ओर उसके कृषि-दासो से निर्मित होता था। स्वतत्र लोग बहुत कम थे, विशेषत डेन लॉ मे।

किन्तु इगलैड मे मध्ययुगीन कृषि का ठीक-ठीक रूप जानने के लिये हमे भेड-पालन तथा गडरियो के जीवन को कभी नहीं भूलना चाहिये। हमारा द्वीप यूरोप मे सर्वोत्तम ऊन उत्पन्न करता था और इसने शताब्दियो तक रोम तथा इटली की खड्डियो को कच्चामाल दिया, जो कि उनके लिये उच्चकोटि के उत्पादनो के लिये आवश्यक था और जो उन्हे अन्यत्र कही नही मिल सकता था। ऊनी थैला (वूल सैक), जो कि इगलैड के महाकोष के मत्री की प्रतीकात्मक गद्दी था, इगलेंड के राजा तथा उसकी प्रजा की वास्तव सपत्ति था, जो कि उन्हे भोजन के अतिरिक्त, जिसे कि वे भूमि से उपजाते थे और जिसका स्वय ही उपभोग करते थे, पैसा प्रदान करता था। भेडे न केवल समृद्ध चरागाहो के प्रदेशो मे, बृहत् यार्कशायर की अधित्यकाओ मे कोट्सवोल्ड की पहाडियो मे तथा सुस्सेक्स के मैदानो मे और कछारो के हरित गीले द्वीपो मे ही बहुतायत से उपलब्ध थी बल्कि सामान्य कृषियोग्य खेतो मे भी बहुत बडी मात्रा मे पाली जाती थी। और केवल भेडो के बडे व्यापारी, पादरी तथा मठाधीश ही भेडे नही रखते थे (जिनके हजारो भेडो के इज्जडो को पेशावर गडरिये पालते थे) बल्कि साधारण जागीरो के किसान भी स्वय ऊन का व्यापार करते थे और प्राय ही उससे अधिक भेडे रखते थे जितनी जागीरदार की जमीन पर चराई जा सकती थी। वास्तव मे एड्वर्ड तृतीय के काल मे किसानो द्वारा पाली गयी भेडो का अनुपात ससारी तथा पादरी जमीदारो द्वारा पालित भेडो की तुलना मे बढ रहा था। (द्रष्टव्य ईलीन पावर—इगलिश वूल ट्रेड, १९४१, अ २)।

चासर का जीवन-काल स्थूलत उस समय पडता है जबकि पुरानी कृषिदास-प्रथा का अन्त बडी तीव्रता से और बडे कष्टदायक ढग से हो रहा था। किन्तु यह परिवर्त्तन प्रक्रिया उसकी मृत्यु के काफी देर बाद तक अभी पूरी नही हुई थी और यह उसके जन्म से काफी पहले आरम्भ हो चुकी थी। बहुत से जागीरदारो ने बारहवी शताब्दी मे ही अपनी भूमि पर बलात् श्रम के बदले पैसा स्वीकार करना आरम्भ कर दिया था। इससे कृषिदास वैधानिक रूप से स्वतत्र व्यक्ति नही बने, उन पर अब भी अनेक दासताओ के बोझ थे, और जागीरदार की भूमि पर कुछ दिन अवैतनिक कार्य करने के उनके दायित्व को जब भी वह चाहता पुन व्यवहार मे ला सकता था। तब भी प्रतिवर्ष श्रम के बजाय नजराना दे देने की प्रथा चलती रही। क्योकि जागीरदार के भू-प्रबन्धक ने भी अनुभव से यह देख लिया था कि अपने खेतो को छोडकर कुछ निश्चित दिनो के लिए अनिच्छापूर्वक आये किसानो से खेती करवाने से वर्ष भर के लिए वेतन पर मजदूर रखकर खेती करवाना अधिक लाभप्रद है। किन्तु कुछ अवस्थाओ मे स्वय दास ही सेवा की पुरानी प्रथा को पसन्द करते थे।

इस प्रकार से, कृषि-सेवाओ के विनियम की प्रथा ने १२वी शताब्दी के समाप्त होने तक कुछ प्रगति की। किन्तु अगली शताब्दी मे इस प्रक्रिया का चक्र लगभग पीछे ही घूम गया। बैकेट के काल मे जबकि कार्य-दिनो के बदले मे पैसा स्वीकार कर लिया जाता था, दी मोटफोर्ट के काल मे पुन कार्यदिनो की ही माँग की जाने लगी, और कुछ अवस्थाओ मे नये बोझ भी लादे गए। एक सामान्य कडाई की नीति तथा जागीरदार के अधिकारो की परिभाषाओ का स्पष्टीकरण, ये १३वी शताब्दी की विशेषताएँ थी, विशेषत मन्दिरो की कुछ बडी जागीरो मे, जिनमे कि पहले विनिमय की प्रथा धीरे-धीरे प्रवेश कर रही थी।

तेरहवी शताब्दी की इस 'सामन्ती प्रतिक्रिया' का एक कारण जनसख्या का तेजी से बढना तथा परिणामस्वरूप भूमि की भूख होना था। जैसे-जैसे दासो के परिवारो की सख्याएँ बढी वैसे वैसे खुले क्षेत्र मे एक किसान को प्राप्त खडो की सख्या भी कम होने लगी। आजीविका के साधनो पर जनसख्या का दबाव बढने से तथा काश्त के लिए भूमि प्राप्त करने मे प्रतियोगिता तीव्र होने से जागीरदार के प्रबन्धक को दासो के साथ सौदेबाजी करने की अधिक सुविधा मिली और इस प्रकार दूसरी भूमि पर काश्त करने की आज्ञा के बदले मे वह जागीर की भूमि पर कार्य करने की शर्त को और भी कडाई से लागू कर सका।

इस प्रकार, चौदहवी शताब्दी का आरम्भ होने से पूर्व जागीरदारो की शक्ति दृढतर हो गयी। किन्तु इसके पश्चात् एक बार फिर स्थिति उलटी। एड्वर्ड द्वितीय के राज्य-काल मे जनसख्या की वृद्धि की दर कम हुई और अब पुन कृषि-सेवा का पैसे से विनिमय करने की प्रथा मे वृद्धि हुई। तब फिर १३४८-४९ मे प्लेग का प्रकोप आया और परिणामस्वरूप इस प्रथा की गति और त्वरित हुई।

जब प्लेग के दो वर्षो से भी कम समय मे इगलैड के एक तिहाई, और सभवत आधे, निवासी मर गये तब इसका इगलैड के एक औसत परिवार पर क्या प्रभाव पडा ? स्पष्टत बचे हुए कृषको को जागीरदारो तथा उनके अधिकारियो के दण्ड-हस्त का भाजन होना पडा। अब पहले वाली पृथ्वी की भूख के बजाय पृथ्वी के लिये जोतने वालो की कमी हो गयी। खेतो की कीमते कम हो गयी और श्रम की माग बहुत अधिक बढ गयी। कृषि-दासो के कम हो जाने से अब जागीरदार अपनी जमीन की काश्त नही करवा पाता था और दूसरी ओर खुले क्षेत्र मे अनेक भूखड वापिस जागीरदार के पास ही लौट आए थे, क्योकि जिन परिवारो ने उन्हे जोता था वे प्लेग से मर गये थे।

किन्तु जागीरदार की कठिनाई किसानो के लिए सुअवसर था। स्वामी-हीन भू-खडो पर किसानो द्वारा अधिकार कर लेने के कारण अब किसानो के पास अधिक खड हो गये थे, और इन बडे खडो वाले दास-कृषक अब मध्यम श्रेणी के जमीदार हो गए थे और स्वय भाडे पर मजदूर रखने लगे थे। स्वभावत अब वे अपने दास पद के विरुद्ध और सामन्त के जमीदारो के कारिदो के इस आग्रह के विरुद्ध विद्रोही हो उठे कि वे अब भी स्वय ही जाकर सामन्त की भूमि पर अपने नियत कार्य-दिनो की जोताई करे। ऐसी परिस्थिनि मे जिन मजदूरा के पास भूमि नही थी वे, हाथो की सामान्य रूप से ही कमी होने से, जागीर के कारिदे और खुले क्षेत्रो के किमान दोनो से पहले से कही अधिक मजदूरी माग सकने की स्थिति मे थे।

कुछ सामन्त अब भी कृषि-दासो से ही अपनी भूमि की जोताई करवाने की प्रथा का आश्रय लेते थे। किन्तु इन दासो की सख्या कम हो जाने से, तथा विद्रोहियो की सख्या बढ जाने मे, पुरानी प्रथा के पहिये वही गड गये। प्राय ही जब कभी सामन्त का कारिन्दा कृषि-दास को भूमि पर कार्य करने को बाध्य करता तो वह इमसे बचने के लिए जगल के दूसरी ओर भाग जाता जहाँ कि प्लेग के कारण प्रत्येक नगर और प्रत्येक गाव मे मजदूरो की इतनी कमी थी कि आगन्तुको को बडे-बडे वेतन दिये जाते थे और कोई यह नही पूछता था कि वे कहाँ से आए है। एक दास, जो विधान द्वारा जागीर की 'भूमि से बधा' था, वास्तव रूप मे वह अपने आपको मुक्त कर मकता था, जब तक कि वह अपनी पत्नी और बच्चो से नही घिरा होना था, क्योकि इन्हे प्रवास मे साथ ले जाना अधिक कठिन होता था। अविवाहित दासो के, जोकि प्राय ही युवक और पुष्ट होते थे, ऐसे पलायनो से खुले क्षेत्र मे उनके खड जागीरदार के हाथ पडते थे और इन्हे कोई तब तक नही लेना चाहता था जब तक बहुत थोडे पैसे पर नही मिलते।

इसलिये, चासर के यौवन काल मे सामन्त लोग पुरानी विधि से अपनी जागीर की जोताई कराने की प्रथा छोड रहे थे और इसके बदले नकद पैसा लेना स्वीकार करने लगे थे। क्योकि जन-सख्या कम हो जाने से प्रतिव्यक्ति पैसा अधिक हो गया

था इसलिए दासो के लिए इतना पैसा बचा लेना या ऋण ले लेना सहज हो गया था कि वे अपने खेत का किराया भी दे सकते थे और अपने कार्य-दिनो का विनिमय-मूल्य भी दे सकते थे, और बहुत से किसान भेडे भी रखते थे, जिसमे उनकी ऊन बेच कर भी वे पैसा कमा लेते थे ।

जमीन पर कार्य करने के बदले मे प्राप्त पैसे से सामन्त लोग स्वतत्र मजदूरो को मजदूरी दे सकते थे, किन्तु वे प्राय ही काफी नही दे पाते थे क्योकि अब मजदूर की कीमत बहुत ऊची हो गयी थी । इसलिए बहुत से सामन्तो ने स्वय कृषि करवाना बन्द कर दिया था और वे मध्यम-श्रेणी के जमीदारो को ठेके पर जमीन देने लगे थे । ये किसान प्राय ही सामन्त के ढोरो को भी पट्टे पर ले लेते थे । कभी-कभी तो ये ठेका पैसे मे चुकाते थे, किन्तु अधिकाशत सामग्री के रूप मे, अर्थात् सामन्त तथा उसके ठिकाने के लिए खाद्य सामग्री तथा पेय पदार्थो के रूप मे, चुकाते थे । सामन्त के परिवार का भरण पहले सदैव घर के खेत की उपज से ही होता था, और अब जबकि भूमि पट्टे पर दे दी जाती थी, वस्तु रूप मे कीमत चुकाने की पुरानी प्रथा का अब भी परस्पर सुविधा की दृष्टि से निर्वाह किया जा रहा था । चरागाहो वाले कुछ प्रदेशो मे तो, जहाँ कि किसान ऊन बेचने के कारण बहुत धनी हो रहे थे, दास-कृषक सामन्त की सम्पूर्ण जागीर को ही पट्टे पर ले लेते थे और उसे परस्पर बाट लेते थे ।

इस प्रकार से मध्यम श्रेणी के पर्याप्त सम्पन्न जागीरदारो के नये वर्ग अस्तित्व मे आये । इनमे से कुछ सामन्त की भूमि पर काश्त करते थे, दूसरे उन नयी भूमियो पर कृषि कर रहे थे जो पहले वीरान पडी थी, अन्यो ने पुराने खुले क्षेत्र मे खाली खडो को अपने अधिकार मे कर लिया था । कुछ अनाज का व्यापार कर रहे थे, कुछ अन्य ऊन का, और शेष ढोरो का । उनकी सख्या-वृद्धि तथा समृद्धि मे उन्नति ने नये इगलैड का स्वर आने वाली कई शताब्दियो के लिए निर्धारित कर दिया था । एक अगरेज योमैन (yoeman) की विशेषताएँ—उसकी स्वच्छन्दता, उसका प्रसन्न साधु स्वभाव, धनुर्विद्या मे उसकी कुशलता—ये सब शतवर्षीय युद्ध के काल से स्टुअर्ट के काल तक के आल्हा गीतो मे भरे पडे है ।[3]

---

[3] 'योमैन' शब्द का अर्थ था मध्यम श्रेणी का कोई भी ग्रामीण, अधिकाशत कृषक, किन्तु कभी-कभी एक सेवक अथवा एक सशस्त्र भृत्य भी (जैसे कैंटरबरी कथाओ मे सामन्त भट (नाइट) के भृत्य तथा कैनोन के योमैन) । प्राचीन आल्हाओ मे रोबिनहुड एक प्रच्छन्न सामन्त नही है बल्कि एक 'योमैन' है । यह विचार कि योमैन आवश्यक रूप से एक स्वतत्र कृषक होना चहिए जिसकी अपनी निजी भूमि हो, वास्तव मे बहुत पीछे का है ।

सामन्त तथा कृषि-दास के बीच की चौडी खाई, जोकि सामन्ती जागीर के समाज की विशेषता थी, अब कम हो रही थी। वास्तव मे कृषिदास अब क्रमश समाप्त हो रहा था। वह अब या तो स्वतत्र भूमिचर कृषक बन रहा था अथवा भूमिरहित श्रमिक हो रहा था, और तब इन दो वर्गो मे शत्रुता आरम्भ हो रही थी। कृषक अपने ही वर्ग के भीतर नियुक्त (भृत्य) और नियोजक (भर्ता) मे विभक्त हो गय थे और इनके सघर्ष का आरभिक रूप "श्रमिको के अधिनियम" मे देखा जा सकता है।

छोटे जमीदारो तथा भूमिधर किसानो के लाभ के लिए वेतन कम रखने के कानून पार्लियामेट मे पारित कर दिए गए। इस नीति का निर्धारण नए कृषीय मध्यवग द्वारा किया गया था पुरानी तरह के बडे सामन्तो द्वारा नही, यद्यपि बडे जागीरदारो ने भी अपने कृषको की मागो का समर्थन किया, क्योंकि अधिक वेतन, परोक्ष रूप से उन्हे मिलने वाले पट्टे के पैसे को प्रभावित करता था। किन्तु सीधी कलह कृषको के दो वर्गो मे ही थी छोटे भूमिधर कृषक मे तथा भूमिहीन श्रमिक मे, जिसे कि भूमि-धर किराये पर रखता था। उनके पिता चाहे साथ-साथ के भूखडो पर एक साथ ही कृषि करते थे और सामन्त की भूमि पर दास के रूप मे साथ-साथ कार्य करते थे, किन्तु उनके पुत्रो के स्वार्थ परस्पर विरुद्ध थे।

वेतन पर नियत्रण के ये लोकसभा द्वारा पारित अधिनियम इस बात के प्रतीक थे कि अब व्यक्तिगत सेवा की स्थानीय प्रथा पर आधारित समाज से रुपये पर आधारित एक राष्ट्र व्यापी अर्थ-व्यवस्था की ओर धीरे-धीरे सक्रमण आरम्भ हो रहा था। प्रत्येक मध्ययुगीन जागीर अपनी विशिष्ट प्रथाओ द्वारा शासित थी, जोकि अब अधिकाशत समाप्त हो चुकी थी। इस समय इस प्रथा को राष्ट्रीय नियत्रण द्वारा स्थानातरित करने के लोकसभा के आरभिक प्रयत्न आरम्भ होते है। श्रमिक अधि-नियमो का स्वीकृत उद्देश्य वेतनो को चढने से रोकना, और एक सीमा तक, कीमतो को बढने से भी रोकना था। लोकसभा द्वारा स्वीकृत दरो को लागू करने के लिए और अधिक की माग करने वाला को दण्डित करने के लिए विशेष अधिकारी नियुक्त किए गए थे।

इस प्रकार से, भूमिधर कृषको के विरुद्ध, जिनके पक्ष मे सवैधानिक न्याय था, भूमिहीन श्रमिको का युद्ध प्लेग के आक्रमण से लेकर १३८१ के विप्लव तथा उसके बाद तक जारी रहा। हडतालो, उपद्रवो तथा स्थानीय सगठना के निर्माणो को अभियोग तथा कैद द्वारा दण्डित किया जाता था। किन्तु, व्यापक महामारी तथा इसकी स्थानीय आवृत्तियो के कारण उत्पन्न श्रमिको की अल्पता के परिणामस्वरूप अन्तत· विजय श्रमिको की रही। कीमते वस्तुत ही बढी थी, किन्तु वेतन उससे अधिक तेजी से बढे। इस काल मे भूमि-हीन श्रमिक बडी सौभाग्यपूर्ण स्थिति मे थे, जिसका प्यर्स दि प्लोमैन ने इस प्रकार से वर्णन किया है (B VI ३०८-३१९) सो, हम अब यहाँ भूमि-हीन श्रमिको को छोड कर, जो कम से कम कभी-कभी उष्ण मास

से भोजन करता था अथवा अपने ठडे शूकर-माम और बासी गोभी पर क्रोध और विद्रोह से भर उठता था, खुले क्षेत्र के खडो के छोटे भूमिधर कृषक की ओर लौटेगे। उसका स्वतन्त्रता के लिए सघर्ष किस प्रकार से चल रहा था—जिस समय कि चासर किशोर राजा रिचर्ड के दरबार मे समृद्धि तथा सम्पन्नता से युक्त मध्ययुग के निकट पहुँच रहा था ?

कुछ जागीरो मे सामन्त तथा काश्तकार के मबधो मे परिवर्त्तन बिना किसी सघर्ष के ही हो गया था, क्योकि दोनो पक्षो को यह स्पष्ट था कि दोनो पक्षो का लाभ दास-कृषि के स्थान पर नगदी मे किराए की प्रथा स्वीकार करने मे है। किन्तु उन जागीरो मे भी, जिनमे जमीन मे कार्य करने के बदले मे पैसा दिया जा सकता था, सामन्त प्राय ही कुछ अन्य दासोचित टैक्स लगाते थे, इनमे से विवाह के लिए टैक्स, किसी काश्तकार के मर जाने पर परिवार के सर्वोत्तम पशु को ले लेना, सामन्त की चक्की पर उसकी अपनी मर्जी की कीमत पर आटा पिसवाने की अनिवार्यता होना -और इसी प्रकार से दासत्व के अनेकानेक अन्य ज्वलत उदाहरण भी देखे जा सकते है। ये अर्ध मुक्त कृषक अब पूर्ण उद्धार से, उनकी स्वतन्त्रता की वैसी वैधानिक स्वीकृति से जैसी मैग्नाकार्टा मे उन्हे मिली, कम पर कभी राजी नही हो सकते थे। इसके अतिरिक्त, बहुत सी जागीरो मे अभी भी कृषको को भूमि पर कृषि-दास का कार्य करने को बाध्य किया जा रहा था और इस प्रकार सघर्ष को और भी तीव्र किया जा रहा था।

स्वतन्त्रता के लिए सघर्ष ने, जोकि एक जागीर से दूसरी जागीर मे तथा एक खेत से दूसरे खेत मे भिन्न प्रकार का रूप ले रहा था, असगठित उपद्रवो को जन्म दिया और इस प्रकार से १३८१ के विप्लव के लिये पथ-प्रशस्त किया। १३७७ मे पार्लियामेट द्वारा पारित सविधान का प्राक्कथन बडा अर्थगर्भित है। इसके अनुसार जागीरो के सामन्त तथा पवित्र गिरजे' के अन्य लोग यह शिकायत करते है कि उनकी जागीरो के कृषि-दास यह दावा करते है कि उन्हे मुक्त किया जाय और सब प्रकार की दासता से छुटकारा दिया जाय, उन्हे उनके शरीर का और उनकी भूमि का स्वामित्व दिया जाय, वे अब किसी प्रकार की दीनता और विधान द्वारा उन पर आरोपित कोई दबाव नही सहन करेगे, इसके अतिरिक्त सामन्त के अधिकारियो और उनके परिवारो का वध कर देगे, और अधिक क्या, सगठित रूप से उपद्रव करेगे और प्रतिज्ञा करेगे कि सामन्त के दबाव का मुकाबला करने के लिए और उसका कडाई से उत्तर देने के लिए प्रत्येक दूसरे की सहायता करेगा।" (स्टेट्स आफ रैल्म, अ० २, पृ० २)।

यदि वर्षो से ग्रामो की यह अवस्था थी तो हम १३८१ की विस्मयकारक घटनाओ को अधिक अच्छी तरह से समझ सकते है। लडन की एक सौ मील की परिधि के भीतर के गावो मे और पश्चिम तथा उत्तर की ओर इससे भी सुदूरवर्ती

क्षेत्रो मे, पार्लियामेट के वेतन निर्धारक विधानो का प्रतिरोध करने वाले श्रमिको के सगठन तथा जागीर की प्रथाओ का प्रतिरोध करने वाले कृषि-दासो के सगठन सब लोगो को प्रशासक वर्ग के विरुद्ध सक्रिय और निष्क्रिय विद्रोह के लिए उकसा रहे थे। और फिर, यह सामाजिक असन्तोष केवल गावो तक ही सीमित नही था। सट अल्बेस तथा बरी सेट एडमड्स के समान बृहत् ईसाई विहारो के साथ बसी हुई मडियो मे केवल दास ही नही बल्कि पौरवासी भी साधुओ के साथ निरन्तर सघर्ष-रत रहते थे, क्योकि इन्हे वे नागरिक स्वतत्रताएँ देने को तैयार नही थे, जो स्वतत्रताएँ कि पीछे आने वाले राजाओ ने राजकीय भूमियो पर बसे नगरो को बिना किसी झिझक के दे दी थी।

इगलैड के ये विद्रोही फ्रास के फेकेरियो (फेकेरीज) के समान ऐसे भूखे मरते हुए लोग नही थे जोकि निराशा के कारण उत्पात मे प्रवृत्त हुए थे। सम्पत्ति तथा आत्मनिर्भरता की दृष्टि से उनकी स्थिति मे तीव्रता से सुधार हो रहा था, किन्तु यह सुधार उतनी गति से नही हो रहा था जितनी गति से उनकी आकाक्षाए बढ रही थी। उनमे बहुतो मे सैनिको का सा अनुशासन और आत्मसम्मान था, क्योकि उनमे से बहुतो ने सेना मे कवायद और शस्त्राभ्यास किया था। इगलैड के अनेक प्रसिद्ध धनुर्धारी विद्रोहिया की ओर थे और जगलो मे आन्दोलन के भीषण समर्थक थे, जैसे रोबिनहुड के उद्घोषित विद्रोही-कृषक, जिन्हेकि उच्च वर्ग के न्याय ने जगलो म ढकेल दिया था, पेशेवर डाकू, भग्न मनुष्य, अपराधी तथा फ्रास के युद्ध के पद-मुक्त सैनिक घात लगाए बैठे थे।

सामाजिक विद्रोह के इन विभिन्न दुर्धर्ष तत्वो को ईसाई प्रजातत्रवाद के प्रचार मे विशेष उत्तेजना मिली थी। यह आन्दोलन ईश्वर के नाम पर निर्धनो के लिये स्वतत्रता और न्याय की माग करता था। जोन बाल तथा अनेक परिव्राजक ईसाई सन्तो और श्रमणो की शिक्षा भी इसी प्रकार की थी। और पादरी-प्रदेश के पुजारी, जोकि लगभग उसी वर्ग के थे जिसके कि कृषि-दास थे, प्राय ही स्वतत्रता की इनकी आकाक्षाओ के प्रति सहानुभूतिशील थे। इस आन्दोलन का आदर्शवाद ईसाई धर्माधारित था, अधिकाश अवस्थाओ मे यह अरूढिवादी भी नही था, यद्यपि इसमे कुछ वाइक्लिफ के लोल्लार्ड पुजारी भी सम्मिलित थे। किन्तु रूढिवादी या रूढि-विरोधी सब विद्रोही सम्पन्न पुजारियो के प्रति तथा निर्धनो की मागो का विरोध करने के लिये उच्चवर्ग मे मिले हुए एकतत्रवादी पोपो के प्रति आदर खो चुके थे। सम्पन्न मठ, मठाधीश तथा सामान्य लोग, जो भी पादरी-प्रदेश के लोगो से दशमाश कर लेते थे तथा लोगो को भूखा मारते थे, वे पुजारी तथा पादरी-प्रदेशवासियो के लिये समान रूप से घृणाजनक थे।

इगलैड के दक्षिण-पूर्वी भाग मे, जोकि विद्रोह का प्रमुख क्षेत्र था, मठ विशेष रूप से घृणा के विषय थे और इन पर विद्रोहियो की हिसात्मक कार्यवाहियो का बहुत

प्रकोप था। बरी सेंट एडमड्स के महन्त का उसके अपने ही दासो ने वध कर दिया था। लडन मे वाट् लेटर के आदमियो ने टावरहिल पर कैंटरबरी के प्रमुख पादरी का वध कर दिया था, क्योकि वह उस प्रदेश के अर्थ मत्री के रूप मे एक अप्रिय सरकार का प्रतिनिधित्व करता था। इसके प्रतिशोध मे नारविच के बिशप ने व्यक्तिगत रूप से सेना का नेतृत्व किया और पूर्वी एगलिया मे विद्रोह का दमन किया। इस प्रकार से समाननावादी तथा रूढिवादी तत्व, जोकि ईसाई धर्म मे सदैव साथ साथ रहे थे, कुछ समय से एक दूसरे के प्रति खुले सघर्ष मे रत थे।

यह विद्रोह एक अप्रिय कर के विरुद्ध उठा था। इसके दमनात्मक तथा कलुषित प्रशासन ने एस्सेक्स तथा केंट मे स्थानीय विद्रोह खडे कर दिये थे, और इससे सकेत पाकर एकसाथ अट्ठाईस जिलो मे विद्रोह भडक उठा था। लोक-प्रिय नेताओ ने सब ओर सन्देश भिजवा दिया कि "जोन बाल ने आपकी घटिया खडका दी है।" अर्धशस्त्रसज्जित ग्रामीणो तथा कसबो के साधारण लोगो ने कही मठ-प्रदेशो के पादरियो के नेतृत्व मे और कही पुराने सेनानियो के नेतृत्व मे, और कुछ स्थानो पर सहानुभूतिपूर्ण कुलीनो के नेतृत्व मे भी, विद्रोह किया। उन्होने जागीरो तथा विहारो पर आक्रमण किये, उनके अधिकारो के दावो को बलात् छीन लिया, तथा घृणित चार्टरो तथा सामन्तो के सम्मान-पत्रो को फाड दिया। कुछ हत्याए की गयी और कुलीन लोगो को अपनी जान बचाने के लिये घर छोड कर वनो मे भाग कर छिपना पडा, जिनमे से कि कानून द्वारा दण्डित लोग अभी अभी निकल कर आए थे।

इसके पश्चात् हमारे सामाजिक इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना घटित हुई—वह था लडन पर अधिकार। ग्रामो से अनेक जत्थो को राजधानी पर आक्रमण करने के लिये भेजा गया जहाकि जनप्रिय नेताओ के अनेक सहयोगी विद्यमान थे। लडन के वन-समुदाय ने तथा नगरपालो के एक दल ने इन जन सेनाओ के लिये द्वार खोल दिये। शासक वर्ग मे इतना आतक था कि टावर का अभेद्य विद्रोहियो को लगभग उसी प्रकार से समर्पित कर दिया गया जैसे १७८९ मे बैस्टिले समर्पित किया गया था। वकीलो का व्यवहार विशेष रूप मे घृणीय था और विदेशी शिल्पियो के वध को देशी प्रतिद्वदियो ने प्रोत्साहित किया।

सरकार की भीरुता के कारण कानून तथा व्यवस्था भग हो चुकी थी, इसे कुछ सीमा तक अशत साहस के द्वारा और अशत छल द्वारा पुन प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया गया। किशोर राजा रिचर्ड द्वितीय, जिसेकि विद्रोहियो ने सर्वत्र अपने पक्ष का उद्घोषित कर दिया था, उनकी लडन-सेना से मील एड पर मिला और उसने दासत्व के सब दातव्यो के बदले प्रतिएकड चार पैसे देने की घोषणा कर दी और सब विद्रोहियो को क्षमा कर दिया। तीस क्लर्कों को स्वतत्रता का घोषणा पत्र तैयार करने तथा प्रत्येक गाम और जागीर के, तथा सामान्य रूप से सभी मडलो के, लोगो

का क्षमा करने के घोषणा-पत्र तैयार करने के लिये नियुक्त किया गया। इस बडी रयायत के बाद, जोकि विद्रोहियो के बहुत बडे बहुमत के लिये सन्तोषजनक थी, उल्लघन-कर्त्ताओ को कडा दण्ड दे सकना सभव था। वाट्टाइलर का स्मिथफील्ड मे उस वृहत् समुदाय के सामने वध किया गया जिसका उसने नेतृत्व किया था। मेयरवाल्वर्थ के इस साहसपूर्ण कृत्य के बाद उच्चवर्ग ने अपना साहस पुन सँजोया, अपने सैनिको को एकत्र किया, लडन तथा प्रान्तो मे विद्रोह का दमन किया और उन्हे बहुत कठोर क्रूरता के साथ दण्डित किया। स्वतत्रता के घोषणापत्र, पार्लियामेंट द्वारा यह कह कर समाप्त कर दिये गये कि ये बलात् स्वीकार करवाये गये थे। यह विद्रोह एक बहुत बडी घटना रहा और इसका इतिहास उस काल के सामान्य इगलिश लोगो की जीवन विधि पर बहुत प्रकाश डालता है। इतिहासकार यह निर्णय नही कर सकते कि यह घटना दास-प्रथा को समाप्त करने मे सहायक रही याकि बाधक, क्योकि यह प्रथा १३८१ के बाद लगभग यथापूर्व रूप से ही जारी रही। किन्तु जिस भावना ने इस विद्रोह को प्रज्ज्वलित किया था वह इगलैड से दास-प्रथा की समाप्ति के लिये एक प्रमुख कारण थी, जैसाकि यूरोप महाद्वीप के शेष देशो मे इस प्रथा के जारी रहने से देखा जा सकता है।

हमारे देश मे व्यक्तिगत स्वतत्रता बहुत पहले सार्वभाम हो गयी थी, और सभवत यही कारण है कि 'स्वतत्रता' शब्द से ही इगलैड के लोगो का इतना सैद्धान्तिक स्नेह है। किन्तु बहुत से दासो ने यह स्वतत्रता भूमि से विलग होने की कीमत पर प्राप्त की, और देश की निरन्तर बढती हुई समृद्धि के साथ आय की असमानता भी निरन्तर बढी। सामन्त की अधीनता मे सामतीय जागीरे दासो के सहकारपूर्ण समुदाय थे सब निर्धन, किन्तु लगभग सभी उन भूमियो मे, जिनके साथ कि वे बधे थे, अपने निजी अधिकारो से समन्वित। किन्तु एक सामन्त के अधीन आधुनिक गॉव समृद्ध किसानो ग्रामीण शिल्पियो तथा निरन्तर शहरो की ओर प्रवास कर रहे स्वतत्र किन्तु भूमिहीन श्रमिको के वर्ग का समाज था। समाज के एक रूप से दूसरे रूप की ओर यह सक्रमण शताब्दियो मे चलने वाली एक दीर्घ प्रक्रिया थी जोकि १२वी से १९वी शताब्दी तक चली।

चासर के काल के नये इगलैड का विशिष्ट प्रतिनिधि भूमिधर किसान था, जिसकी सन्ताने अगली सदी मे पूर्वी एग्लिया मे बडे भूमिधर और राजनीतिज्ञ बनी। उसके सम्बन्ध मे यह बताया गया कि—"वह एक भला सरल स्वभाव का पति (पुरुष) था और पास्टन की अपनी भूमि पर रहता था और उस पर वर्ष के सारे दिन एक हल रखता था, और कभी कभी जौ के खेत मे दो हल रखता था। यह कथित भूमिधर ग्रीष्म और शीत दोनो ऋतुओ मे एक ही हल पर रहता था, और अपना अनाज नीचे रखकर मिल को घोडे की नगी पीठ पर जाता था और लौटते हुए सामान अपने नीचे रखता था। वह अपनी गाडी पर विभिन्न प्रकार का अनाज रखकर बेचने के लिये विटर्टोन जाता था, और गाडी स्वय ही चलाता था, जैसाकि अच्छे पति (मनुष्य) को

करना चाहिये । पास्टन मे वह अधिक से अधिक पाच या छ कोडी एकड भूमि रखता था (जोकि कृषि दास की साधारणत अधिकृत भूमि से लगभग चार गुणा थी) और इससे काफी अधिक बँधेज की भूमि उसके पास जेमिघम मे होती थी, जिसमे नदी के पास एक छोटी सी पनचक्की रहती थी । उसके पास और कोई चल सपत्ति या जागीर नही थी ।

वह स्वय स्वतत्र होता था, किन्तु विवाह वह दास स्त्री से करता था । वह इतना पैसा बचा लेता था कि अपने बच्चा को स्कूल और उसके बाद कानून पढने के लिये भेज सकता, और इस प्रकार उसने प्रसिद्ध नोर्फोक परिवार की सम्पत्ति की आधारशिला रखी जिसने कि दो आगामी पीढियो मे अनेक अन्य स्थानो पर अनेक जागीरे अधिगत कर ली - और आने वाली सन्ततियो को "पास्टन पत्र" उत्तराधिकार के रूप मे दिये ।

१३८१ के विद्रोह से हमे ज्ञात होता है कि उन दिनो के इगलैड मे पुलीस कितनी अपर्याप्त थी और कानून कितना अक्षम था । हत्या, बलात्कार, पीटना और हिसापूर्ण डाका ये उन दिनो रोजमर्रा की बाते हो गयी थी । सामन्त, मिल मालिक तथा किसान सब की अपनी जिम्मेदारी थी कि वे अपने परिवार, सम्पत्ति तथा जीवन की रक्षा करे । राजा की पुलीस कभी पर्याप्त शक्तिशाली नही थी, किन्तु सभवत एड्वर्ड द्वितीय के काल मे, और सभवत हेनरी द्वितीय के काल मे भी, यह अपेक्षाकृत अधिक सुदृढ थी । शतवर्षीय युद्ध ने फ्रास से लूटी गयी सपत्ति के कारण व्यक्तियो को समृद्ध बना दिया था, तथा दरबार और किले की सुख-समृद्धि को बढा दिया था, किन्तु यह देश के लिये सब मिलाकर एक अभिशाप ही था । इसने सैनिक उच्चवर्ग तथा उनके आश्रितो को राजा की अधीनता से निकाल दिया और इस प्रकार से अव्यवस्था और हिसा को बढा दिया ।

राजा अपने बडे सरदारो के विरुद्ध कोई कार्यवाही करने मे असमर्थ था, क्योकि उसके सैनिक-साधन स्वय वही थे जोकि इन सरदारो के पास थे। उसकी सेना अपने निजी शरीर-रक्षको तथा अपने वशजो से निर्मित नही थी बल्कि धनुर्धारियो के छोटे समूहो, सामन्तो और सरदारो, वेतन पाने वाले अश्वारोहियो, समृद्ध पेशावर सैनिको - जोकि सरकार को अपनी सेवाएँ थोडे या अधिक समय के लिये अर्पित कर देते थे, निर्मित थी । ऐसी सेनाएँ फ्रास के युद्ध मे बडी बढिया रह सकती थी, और किसान-विद्रोह जैसे अवसरो पर, जबकि सभी उच्चवर्ग एक ही खतरे से प्रभावित थे, राजा की सहायक हो सकती थी । किन्तु उन्हे स्वय अपना ही दमन करने के लिये, अथवा अपने वेतन-दाताओ को, जिनके बिल्ले वे अपने कोटो पर लगाते थे, कैद करने के लिये प्रयुक्त नही किया जा सकता था । १६७८ मे एक बार वास्तव मे ही लोक-सभा ने दबाव डाला था कि व्यवस्था स्थापित करने के लिये एक विशेष कमीशन नियुक्त किया जाय । किन्तु यह नयी सेना अनिवार्यत बडे सामन्तो तथा उनके आश्रितो से ही निर्मित की गयी,

जिनके सम्बन्ध मे शीघ्र ही पाया गया कि वे उनसे भी कही अधिक अवाछनीय थे जितने कि स्वय अव्यवस्था उत्पन्न करने वाले लोग, जिनका कि दमन करने के लिये ये भिजवाये गये थे। अगले वर्ष लोकसभा ने इन्हे वापिस बुलाने का आदेश दिया, क्योकि "राजा के प्रजाजन सामन्तो तथा कमिशनरो और उनके आश्रितो के दास बनाए जा रहे है।"

इससे एक बहुत मिलती-जुलती कहानी "पिअर्स दि प्लोमैन" मे बताई गई है जिसके अनुसार कि 'शान्ति' (नामक पात्र) पार्लियामेट मे 'अन्याय' (पात्र) के विरुद्ध शिकायत के साथ पहुचता है। 'शान्ति' की शिकायत के अनुसार, 'अन्याय' राजा के अधिकारी की हैसीयत से खेतो मे बलात् घुस कर उन्हे लूट ले गया, स्त्रियो पर बलात्कार किया, घोडे छीन ले गया, खलिहानो से गेहू उठा ले गया, राजा के कोष मे भुगतान के लिये एक हिसाब-पट्ट छोड गया। 'शान्ति' शिकायत करती है कि वह उससे न्याय प्राप्त करने की आशा नही करती, क्योकि वह "मेरे आदमियो की हत्या करने के लिये भाडे पर आदमी रखता है।" सो, ऐसी धारणा थी देहाती प्रदेशो मे राजा के अधिकारियो के बारे मे। ये सामन्त सचमुच ही महत्वाकाक्षी थे और राजा का नाम लेकर अपने लिये सम्पत्ति सग्रह करना चाहते थे। ये अत्याचारी लोग अशत राज्य के दीवालियापन के परिणाम थे। राजा सैनिक-व्यवस्था मे परिवर्तन नही कर सकता था क्योकि वह कुलीनो के आश्रितो को स्थानान्तरित करने के लिये आदमी नही रख सकता था।

तो भी किसानो को पुलीस के अभाव मे जितनी हानि हुई उतना लाभ भी हुआ। स्वतत्रता के लिये सघर्ष करते हुए कृषि-दास, तथा श्रमिक-कानून के विरुद्ध निरन्तर विद्रोह-रत श्रमिक अब अपने से उच्च वर्ग की उतनी वास्तविक-दासता मे नही थे जितने उन्नीसवी शताब्दी के पुलीस द्वारा सुनियत्रित देहात के कृषि श्रमिक, जबकि निर्धनो को धनुष तथा लाठी से वचित कर दिया गया था और उन्हे अभी मतदान का शस्त्र नही प्राप्त हुआ था। चौदहवी शताब्दी मे, जबकि प्रत्येक व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती थी कि वह लाठी या घूसे से, धनुष या तलवार से 'अपना निजी भाग' लेगा तब ग्रामीण उतनी आसानी से भयभीत नही होते थे।

जिस सैनिक-व्यवस्था मे इगलैंड ने 'शतवर्षीय युद्ध' लडा, उसने स्वय राजा की शक्ति मे वृद्धि नही की, इसके विपरीत, इसने उसकी प्रजा के एकाधिक वर्ग की शक्ति वृद्धि की। जबकि फ्रास पर आक्रमण करने वाली सेनाओ का सगठन राजा ने सामन्तो व कुलीनो से किराये पर सैनिक लेकर किया था, आन्तरिक सुरक्षा के लिये सेना का सगठन साधारण लोगो मे से जबरन भरती के द्वारा किया गया था। और यह जबरी भर्ती की हुई सेना इतनी सुसज्जित और सुशिक्षित थी कि स्काट लोग प्राय ही अपनी इस भूल पर पछताते रहे कि उन्होने राजा तथा उसके नवाब के फ्रास गये होने पर इगलैंड पर बिना सोचे समझे ही आक्रमण कर दिया।

बढिया कृषक धन्वा, 'जिसके अवयव इगलैड मे बने थे', शैक्सपीयर की केवल एक अतीतोन्मुख मधुर कल्पना ही नही था बल्कि एक ऐसा यथार्थ था जो फ्रास तथा स्काटलैड के लिये सदैव हृदय-दाह का कारण रहा। इसी प्रकार से वह कारिदो तथा कचहरियो के लिये भी, जो उस पर कानून द्वारा स्वीकृत वेतन-दरे चाहते थे, एक भयानक शक्ति था। वास्तव मे, इन वेतन-दरो को कोई भी, छोटा या बडा, आदर की दृष्टि से नही देखता था।[४]

इस प्रकार से इगलैड के अधिकाश भाग मे राज्य का आदेश चलता था, यद्यपि या तो प्राय ही इसकी उपेक्षा होती थी अथवा उल्लघन होता था। हत्यारे तथा चोर, यदि वे किसी बडे सामन्त की नौकरी मे नही होते थे, तो प्राय ही उन्हे या तो जगल मे भागना पडता था अथवा किसी मन्दिर मे जाकर शासन के प्रति वफादार रहने की शपथ लेनी पडती थी। कभी कभी वे पकडे भी जाते थे और कचहरी मे हाजिर किये जाते थे। किन्तु तब भी वे प्राय ही अपने पादरी से अनुनय-विनय करके, अथवा अपने वकील की होशियारी के कारण, छूट जाते थे। किन्तु तब भी, राजा के न्यायालय द्वारा प्रतिवर्ष अनेक हत्यारे और चोर फासी पर चढाए जाते थे। कानून का यत्र इगलैड के पर्याप्त बृहत्तर प्रदेश पर सक्रिय था, यद्यपि यह बहुत जटिल तथा भ्रष्ट और अनियमित रूप से था।

किन्तु स्काटलैड की सीमा पर के प्रदेशो मे राजा का अनुशासन शायद ही कभी चला हो। युद्ध कभी ही रुकता था और पशु उठाने की घटनाएँ तो सदैव होती रहती थी। उन मार्ग-रहित दलदली भूमियो मे पुराने अश्वारोही योद्धाओ के कबीले बसे हुए थे, जो या तो निरन्तर परस्पर युद्धरत रहते थे अथवा स्काटो के साथ युद्धरत रहते थे। कोई व्यक्ति रक्षा अथवा वैर-परिशोध के लिये राजा के अधिकारी की ओर नही ताकता था। सीमान्तीय आल्हाओ के इस प्रदेश मे सब पुरुष योद्धा थे और अधिकाश स्त्रिया नायिकाएँ थी।

---

[४] धनुष चलाने मे अग्रेजो की यूरोप मे अद्वितीय स्थिति का रहस्य इसमे निहित था कि—"अग्रेज आदमी अपना बाया हाथ स्थिर रख कर दाये से धनुष को नही खीचता था, बल्कि प्रत्यचा के ऊपर अपना दाया हाथ टिकाकर अपने शरीर के सपूर्ण भार का दबाव धनुष के किनारो पर डालता था। सभवत इसी से "धनुष झुकाना" पद अथवा "खीचने" का फ्रैंच पर्याय प्रयुक्त हुआ। (डब्लू गिल्पिन रिमार्क्स ऑन फॉरेस्ट सीनरी, १७९१) हफ लैटीमर ने जब यह वर्णन किया था कि "उसे किस प्रकार से बचपन मे" अन्य देशो के धनुर्धारियो के समान केवल भुजाओ के बल से खीचने के बजाय शरीर के बल से खीचना" सिखाया गया था, तो उसका यही भाव था। यह एक ऐसी कला थी जिसे आसानी से नही सीखा जा सकता था।

चासर के लिये यह एक अज्ञात, सुदूर और बर्बर प्रदेश था—उससे कही दूर जितना फ्रास—"बहुत दूर उत्तर मे, मै नही जानता कहा।" वहा पर्सी तथा अन्य सीमान्तीय सरदार स्काटलैड के राजा की सेनाओ का प्रतिरोध करने तथा उनके घेरे से बचने के लिये बडे बडे किले बना रहे थे। एल्नविक, वार्कवोर्थ, डस्टेन्बर्ग, चिप्चेज, बेल्से तथा अन्य अनेकानेक ऐसे ही किले है। छोटे सरदारो ने भी अपने चौरस छोटे किले बनाए थे जोकि इन बडे किलो के छोटे सस्करणो जैसे थे। यहा कोई जागीरे नही थी, जोकि अपेक्षाकृत शान्ति की उपज होती है। किसान लकडी की झोपडियो मे रहते थे जिन्हे कि आक्रमणकारी नियमित रूप से जला देते थे, जबकि ये लोग तथा इनके ढोर भागकर इन किलो मे छिपे होते थे।

यह वस्तुस्थिति ट्यूडर्स के भी बाद तक जारी रही, जिसने कि शेष इगलैड को एक स्थायी शान्ति दी थी। जब इगलैड तथा स्काटलैड का जेम्ज स्टुअर्ट की अध्यक्षता मे सघ बन गया और सीमा युद्ध समाप्त हो गये (१६०३) केवल तभी इन किलो के उत्तर मे शान्तिपूर्ण जागीरे बननी आरभ हुई।

इस विरल आबादी मे युगो मे निरन्तर युद्ध की स्थिति बने रहने का एक परिणाम यह हुआ कि उन जगली प्रदेशो मे उच्च तथा नीच के बीच निकटता का भाव अपेक्षाकृत अधिक रहा जोकि आधुनिक युग तक चल रहा है। दलदली प्रदेशो के ये गडरिये तथा 'हिड' (उत्तर के कृषि-श्रमिको का नाम) कभी उस तरह से छोटे या बडे भूमिधरो के उस तरह से दास नही रहे जिस तरह से पीछे के दिनो मे दक्षिण के निर्धन श्रमिक थे। जबकि उत्तर अभी शस्त्रसज्जित तथा युद्ध के लिये दुर्ग-रक्षित ही था, और जबकि योद्धा सामन्त स्कॉट लोगो का मुकाबला करने के लिये अभी भी अपने दुर्गों का आश्रय लेते थे, तब इगलैड के अपेक्षाकृत अधिक प्रदेश मे सामन्त तथा धनिक लोग ऐसे दुर्ग-गृह नही बनाते थे जोकि नियमित सेनाओ के घेरे का मुकाबला करने के लिये आवश्यक होते।

जबकि ब्लैक प्रिस फ्रास का ध्वस कर रहा था तब इगलैड के देहाती प्रदेश लिये युद्ध वैसी एक साधारण बात नही था। किन्तु आन्तरिक उत्पात का भय सदैव बना रहता था—चाहे वह दुष्ट पडौसी के रक्षितो से हो, ग्राम के विद्रोही किसानो से हो, अथवा जगलो मे छिपे चोर-डाकुओ से हो।

इसलिये उन दिनो की गृह-निर्माण-कला मे कुछ ऐसे परिवर्तन किये गये जिनमे इसकी झलक मिलती है। सपूर्ण दक्षिणवर्त्ती तथा मध्य प्रदेशीय मडलो मे जो जागीर-घर इन दिनो बने उनमे कभी ही कोई दो मजिलो से अधिक ऊँचा होता होगा, और वे अच्छी तरह से व्यूहीकृत नही थे। किन्तु उनमे गोली चलाने के छोटे सुराख थे जिनके मुँह परिखा की ओर थे। इस परिखा को लाघने के लिये उठाए जा सकने वाले पुल बने होते थे। भीतर की ओर का भाग, जोकि घिरे हुए ग्राम की ओर

होता, उसमे बडी खिडकियाँ रहती और उसका शिल्प अधिक घरेलू होता। ग्राम की ओर का आगन कमरो से घिरा रहता था, ऐश्वर्यपूर्ण निवास की अपेक्षाओ के कारण हाल कमरा, बैठक तथा रसोईघर और बडे कर दिये गये थे। अग्निकुडो से निकले धुएँ को बाहर निकालने के लिये अब छत मे रोशनदार काफी नही थे। इसलिये अब रहने के कमरो मे बढिया अगीठिया तथा दीवारो के अन्दर चिमनियाँ बनाई जाने लगी। किन्तु खेत तथा कुटियाएँ अब भी चिमनियो से रहित थे। जागीर-गृह के पास बगीचा या स्त्रियो का केलि-कुज होता था, जोकि, जैसाकि काव्यो मे हम वर्णित पाते है, प्रेमालाप के लिये एक परम्परागत स्थान था।

पार्वत्य प्रदेश मे पानी से भरी खाई उतनी प्रचलित नही थी, इन प्रदेशो की रक्षा-योजना मे परकोटो का प्रचलन अधिक था। डर्बीशायर मे हैड्डन हाल अर्ध-दुर्ग-रक्षित जागीर-गृहो का एक उत्कृष्ट नमूना है, जोकि दो ग्राम-आगनो को घेर कर बना होता था और आने वाली अनेक सततियो की आवश्यकताओ के अनुसार उसमे निरन्तर वृद्धि की जाती रहती थी।

पश्चिम प्रदेश मे रक्षा सबधी चिन्ता के क्रमश कम होने से कभी कभी बहुत बढिया प्रकार के घर पत्थर के बजाय चूने और लकडी से बनाये जाते थे। रोमन लोगो के चले जाने के समय से लेकर पन्द्रहवी शताब्दी तक इगलैड मे ईटो की बहुत कमी थी। ईट १५वी शताब्दी के बाद पूर्व एग्लियन तथा अन्य प्रदेशो मे, जहाँ कि पत्थर की स्थानीय उपलब्धि कम थी, और जहाँ कि जगलो से प्राप्त इमारती लकडी घटती जा रही थी, ईट का उपयोग अधिक होने लगा था।

चासर के काल मे युद्ध की विभीषिका के उस युग से, जबकि बहुत धनी परिवार भी नार्मनो के अधकारपूर्ण और तग चौकोण सरक्षण-गृह मे ठुँसे रहते थे, जीवन अपेक्षाकृत सुरक्षित और सुविधापूर्ण था। तेरहवी शताब्दी मे कैलिन्वर्थ रक्षागृह ने छ महीनो तक राज्य की सेना का प्रतिरोध किया, किन्तु शतवर्षीय युद्ध की तोपे इसके प्राचीन बल का बहुत शीघ्र ध्वस कर देती। न अब इसे बडे व्यक्ति की कचहरी के उपयुक्त ही समझा जाता था। इसलिये जोन आफ गॉन्ट ने इसके चरणो मे एक महल बनवाया जिसमे उसने भोज देने योग्य एक बहुत बडा हाल कमरा बनवाया। इस कमरे मे महीन और कोमल नक्काशी की चौडी खिडकियो मे से बहुत तीव्र प्रकाश की बाढ आती थी। किन्तु उसने अपने इस नये घर को एक तोप रखने योग्य दृढ स्तभो से सुरक्षित रखने का भी ध्यान रखा।

जबकि नार्मन योद्धाओ के आयताकार गृह अब निवास-अयोग्य समझकर छोडे जा रहे थे, कुछ उत्कृष्टतर प्लैटजेनेट किले नये युग की आवश्यकताओ के अनुसार सुधारे तथा बडे किये जा रहे थे। इनमे बहुत से, लुडलौ किले मे मिल्टन के कोमुस नाटक का अभिनय होने के काल तक, राजकीय या व्यक्तिगत किलो के रूप मे प्रयुक्त किये

जाते रहे। अन्त मे, क्रामवैल के आदमिया ने बडे लोगो के निवासभूत इन किलो मे से अनेको को ध्वस्त कर दिया।

निर्धनो के क्षेत्र-गृह तथा झोपडियाँ लट्ठो अथवा पट्टिया की, अथवा खभो और शहतीरो की, जोकि गारे और ककड आदि को सहारा देते थे, बनी होती थी। फर्श प्राय ही मिट्टी के होते थे और छते छप्पर की। परन्तु क्योकि ये निर्धनो के घर अब विलुप्त हो गये है इसलिये हम इनके सम्बन्ध मे बहुत ही कम जानते है। सामाजिक परिवर्त्तन तथा सघर्ष के इस काल मे इन गृहो के निवासियो की स्थिति के बारे मे पहले ही कहा जा चुका है। किन्तु किसानो की निर्धनता अथवा सुखावस्था का अनुमान करना बहुत ही कठिन कार्य है, क्योकि इनकी स्थिति एक स्थान से दूसरे स्थान तथा एक वर्ष से दूसरे वर्ष बदलती रहती थी। इनमे से बहुतो ने भेडे पालकर उनकी ऊन से बहुत सम्पत्ति सग्रह कर ली, ऊन की बडी मडी को ये किसान ही ऊन मुहैया करते थे। उनका भोजन और शराब साधारण खेत की अनिश्चित उपज पर निर्भर करते थे और बुरे मौसमो मे स्थानीय अल्पता या अकाल की स्थिति हो जाती थी। किन्तु माम, पनीर तथा सब्जिया उनके भोजन के समान रूप से महत्वपूर्ण अग थे। बहुत से किसान मुर्गियाँ पालते थे और उनके अडे खाते थे। अधिकाश किसानो की झोपडियो के साथ ज़मीन का कुछ भाग रहता था जिसमे वे मटर, लोबिया या साग आदि बोते थे और जहा कभी कभी गाय या सूअर भी रखा जाता था। खुले क्षेत्र के प्रत्येक किसान के बैल, वह दास हो या स्वतत्र, गाँव की घुडसाल तथा चरागाह मे रहते थे। ये दीन पशु, जोकि आकार मे वर्तमान पशुओ से आधे थे, कम चारा मिलने से दुबले और वर्षो से हल पर जुतने के कारण सख्त थे। किन्तु वे या तो प्रतिवर्ष (११ नवम्बर को होने वाले) मार्टिन भोज के लिये मार दिये जाते थे, या सर्दी के लिये उनके मास का आचार डाल दिया जाता था, या फिर क्रिस-मिस के भोज के लिये उनका वध कर दिया जाता था।

किसानो के भोजन मे सूअर के मास का उपयोग अधिक होता था, किन्तु गाव के ढोरो मे सूअरो की संख्या बहुत कुछ 'उच्छिट' की मात्रा तथा प्रकार पर निर्भर करती थी। कुछ जागीरो मे बीहड और जगल इन भूमियो को साफ करके कृषि के लिये घेरे जाने से पूर्व ही बहुत सकुचित हो गये थे। दूसरो मे, विशेषत पश्चिम तथा उत्तर मे, उच्छिष्ट अनेक परिवारो के जीवन के लिये आवश्यक था। कुछ लोगो ने एकान्त स्थलो पर अधिकृत रूप से अपनी झोपडिया बना ली थी, और वे अपने पशुओ को किसी खाली पडे स्थान पर चरा लेते थे। और प्रत्येक कानून का पालन करने वाले ग्रामीण को भी घर बनाने, कमरा गरम रखने या रसोई पकाने के लिये, अथवा अपनी गाडी, हल या अन्य औज़ार बनाने के लिये, अनधिकृत भूमि से लकडी काटने की आवश्यकता होती थी। परपरागत पट्टे के किसानो के अधिकार एक जागीर से दूसरी जागीर मे भिन्न थे, किन्तु प्राय सब जगह ही उन्हे घर बनाने और औज़ार बनाने के लिये लकडी काटने तथा ईंधन के लिये 'जायज़ या नाजायज', यानि खडे पेडो से भी, छडिया काटने

की सुविधा थी। परती भूमि भी सूअर चराने या ढोरो और भेडो को चराने के काम मे आती थी, और भेडे ऊन की बिक्री के कारण कृषक के बजट मे सबसे मूल्यवान भाग थी। इन दृष्टियो मे, जगलो के स्थान पर अनाज के खेत बढ जाने से, ग्रामीणो की सुविधाएँ और सम्पत्ति को हानि पहुँची। इस प्रकार से लाभ के साथ हानि थी और हानि के साथ लाभ था।

किन्तु भेड, गाय, मुर्गी, तथा सूअर के मास के अतिरिक्त और मास भी होता है। परती तथा वन-भूमि शिकार के पशुओ की दृष्टि से खूब समृद्ध थी। राजा के जगल मे, जिसका क्षेत्र निरन्तर घट रहा था, तथा सामन्तो और सरदारो के बाडो अथवा वलयित जगलो मे, जिनका क्षेत्र निरन्तर बढ रहा था, हिरण तथा अन्य छोटे प्राणियो की रक्षा बडे कठोर कानून द्वारा की जा रही थी। इन कानूनो को और भी अधिक कठोरता से नार्मन सरक्षक लागू कर रहे थे जिनका अपना एक लाठी का कानून था, और इसलिये जो राजा की कचहरी की चिन्ता नही करते थे। चोरी करना न केवल चोरो-डाकुओ के लिये ही आजीविका का साधन था बल्कि सब वर्गो के लोग यह करते थे—किसानो और श्रमिको के अतिरिक्त, जोकि कभी पक्षी या खरगोश आदि खाने के लिये पकड लाते थे, कुलीन और गिरजे के छोटे अधिकारी भी यह चोरी करते थे।

१३८९ मे पार्लियामेट मे लोकसभा के सदस्यो ने शिकायत की कि शिल्पी और मजदूर, नौकर और अश्वरक्षक शिकारी कुत्तो को पालते है और शुभ दिनो के अवसर पर, जब भले क्रिश्चियन लोग पूजा के लिये गिरजे मे गये होते है, ये लोग शिकार करने के लिये सामन्तो की शिकारगाहो, शशक-वनो आदि मे चले जाते है और उन्हे बहुत हानि पहुँचाते है। इसलिये विधान मे यह विज्ञापित किया गया कि "मानव-हृदय वास्तव मे पापपूर्ण है। इसलिये अब से किसी व्यक्ति को, जिसकी भूमि से होने वाली आय ४० शिलिंग से कम हो, तथा १० पाउण्ड से कम आय वाले किसी पुजारी या चर्च के अन्य अधिकारी को, शिकारी कुत्ते या जाल आदि रखने की आज्ञा नही होनी चाहिये।" इसका कहाँ तक पालन हुआ, यह सन्देहास्पद बात है। (स्टेट्स आफ रैल्म, भाग २, पृ० ६५) इसके अतिरिक्त, बहुत से परती, दलदलपूर्ण अथवा वीरान जगल थे जहाँ शिकारी जन्तु सम्यक् प्रकार से सुरक्षित नही थे और ये किसी विशेष खतरे के बिना ले जाए जा सकते थे।

शशक, जिन्हे उस समय इगलैड मे 'कोने' नाम से पुकारा जाता था, मध्ययुगीन इगलैड के अनेक भागो मे एक बडी मुसीबत बने हुए थे और व्यक्तिगत बाडो के अतिरिक्त, सब जगह से निकाल कर मार दिये जाते थे। सारिका और लवा के समान छोटे पक्षियो को पकडना और खाना उस समय इगलैड मे वैसा ही प्रचलित था जैसा आजकल यूरोप के अन्य भागो मे है। किसान या शौकीन शिकारी लोग बहुत बडी सख्या मे इन्हे जालो मे फँसा लेते थे। किन्तु किसान के हृदय को सबसे अधिक

आनन्द इस बात से मिलता था कि वह सामन्त द्वारा पालित प्रतिष्ठित पक्षी-समुदाय मे से कोई पक्षी अपनी हाडी के लिये चुरा कर काट सकता था। ये पक्षी तबतक किसान के खेतो के धान पर मोटे होते थे जबतक कि वे सामन्त की प्लेट मे नही पहुँच जाते थे।[५] इस प्रकार से मठो या सामन्त-गृहो से सलग्न नदी और नालो मे ट्राउट नामक-मछली होती थी और तालाबो मे बडी पाइक मछली होती थी। उच्च वर्ग के लोगो का अधिकाश समय घोडो और कुत्तो के साथ हिरण का शिकार खेलने मे, या तीतर, बटेर और बगुले पर बाज छोडने मे अथवा रात को लोमडी तथा बिज्जू आदि को जाल मे फँसाने के लिये घात लगाकर बैठे रहने मे बीतता था। स्त्रियो की उपस्थिति मे मैदान के खेल तथा घोडे से गिराने वाली खेल-प्रतियोगिताएँ उनके जीवन के मनोरजनात्मक पक्ष थे। अधिक गम्भीर कार्यो मे सम्मिलित थे विदेश मे युद्ध, और देश मे मुकदमेबाजी, राष्ट्रीय-राजनीति तथा स्थानीय प्रशासन।[६] कृषि की विधि के सुधार मे उनकी वैसी रुचि नही थी जैसी उनकी सन्तानो मे हुई। किन्तु सामन्ती जागीरो के टूटने से, और इसके परिणामस्वरूप बाजार के लिये उत्पादन के जो नये अवसर मिले उससे, कृषि-सुधार का पथ प्रशस्त हुआ और इस प्रकार से जमीदार वर्ग को कृषि-सुधार की नयी विधियाँ खोजने के लिये प्रोत्साहन मिला। वास्तव मे लार्ड बर्कले ने, जोकि यद्यपि बहुत ही अपवाद रूप था, १४वी शताब्दी मे अपनी भूमि मे बहुत सुधार किये।

आत्मश्लाघा मूलक भ्रम के कारण हमारे आधुनिक नागरिक वातावरण मे पले कुछ लोग समझते है कि उनके पूर्वज क्योकि कार्य-दिनो मे, तथा सप्ताहान्त मे भी, देहाती दृश्यो तथा ध्वनियो मे रहने के लिये अभ्यस्त थे इसलिये वे अपने परिवेश की सुन्दरता और मनोहारिता की ओर कोई ध्यान नही देते थे। निस्सन्देह उनमे से बहुत से प्राकृतिक सौदर्य के प्रति वैसे ही उदासीन थे जैसे आज के गँवार लोग है। किन्तु जैसाकि चासर तथा लैगलैड की कविताओ से देखा जा सकता है, सभी इस प्रकार से उदासीन नही थे।[७]

---

५ पन्द्रहवी शताब्दी मे किग्ज कॉलेज केम्ब्रिज के सदस्य अपने मेचेस्टर की जागीर से एक वर्ष मे दो से तीन हजार तक कबूतरो को खाते या बेचते थे।

६ "शायर के सरदार-सामन्त" (लोक सभा मे मडलो के सदस्य) स्थानीय प्रशासन मे व्यस्त थे। कुमारी वुडलफ ने पता लगाया है कि १६३६ आदमियो मे से, जोकि एडवर्ड तृतीय की ५० विभिन्न पार्लियामेटो मे शायर के सरदार-सामन्त थे, १२५ लावारिस सपत्तियो को देखते थे।

७ मई मास मे जबकि अनेक वस्तुएँ मनोरजनार्थ प्रस्तुत होती है, और ग्रीष्म मे जबकि वायु मद-कोमल होती है मै वन मे अपना भाग्य आजमाने के लिये गया और झाडखण्डो मे हिरण या बारहसिंगे का शिकार करने गया, और जब भगवान

पुरुषो के पहरावे तथा अन्य बहुत कुछ मे मध्ययुगीन से आधुनिक की ओर सक्रमण चासर के युग से आरम्भ हुआ कहा जा सकता है। दान्ते के समान वह स्वय भी भव्य गाउन तथा सीधा हुड धारण करता था। यह एक विशिष्ट रूप से मध्य-युगीन वेश था जिसेकि सम्प्रदाय के लोग अब भी सरलतम रूप मे धारण करते है। किन्तु चासर के समकालीन शौकीन लोगो ने, विशेषत तरुणो ने, उस भव्य गाउन को छोड दिया था और छोटा कोट या जैकेट अपना ली थी, और ऐसे कसे हुए पायजामे डालने आरम्भ कर दिये थे जिनमे कि टागो की पुष्ट वर्तुलता दिखाई दे। यह नया ढग आज के पुरुषो द्वारा पहने जाने वाले 'कोट और पेट से मिलता-जुलता था, किन्तु हमारे वेश की नीरसता तथा मन्दतापूर्ण एकरसता उसमे नही थी। रिचर्ड द्वितीय की कचहरी मे कोट तथा तग पायजामे के रग बहुत भडकीले होते थे। बहुत बार एक टाग का रग लाल होता था और दूसरी का हरा। "पुरुष अपनी जागीर को मानो अपनी पीठ पर धारण करते थे" और उनके द्वारा धारण किये गये रत्न-आभूषण उससे कम मूल्यवान नही होते थे जितने उनकी स्त्रियो के। एक बहुत अमिताचारपूर्ण राजदरबार के फैशन का अनुसरण करते हुए, सर्वत्र आभूषण मडित युवक तडक-भडक के साथ दिखाई देते थे। उनके कमीज की बाहे बहुत चौडी होती थी और कमर तक कसे हुए लबी-तीखी नोक वाले बूट प्रार्थना तक के लिये नीचे झुकने मे बाधक थे।

किन्तु शालीन वर्ग मे लम्बे गाउन का प्रयोग ट्यूडर के काल तक समाप्त नही हुआ। वास्तव मे कभी कभी तो स्वय गाउन मे भी अमिताचारिता रहती थी,

---

अशुमाली दिन के रथ पर आरूढ नभ पर प्रकट हो रहे थे तब मैं एक निर्झर के किनारे खडा रहा, जहाँ की घास हरी और पुष्प-तारको से खचित थी—जिनमे प्राइमरोज, पैरीविकन्ज तथा बडे-बडे पैन्नीरायल फूल थे। ओस-कणो से जटित डेजी के फूल, कलियाँ तथा शाखाएँ बहुत सुन्दर लगती थी। और मेरे चारो ओर कुहरे की हल्की फुहिआँ झर रही थी। कोयल तथा कबूतर मधुर-तार स्वर मे गा रहे थे, तथा तीर पर थ्रोसल पक्षियो के आतुर गीत उद्वेलित हो रहे थे। वन का प्रत्येक पक्षी तम के पुँछ जाने पर तथा प्रकाश प्रकट होने से साथ के दूसरे पक्षी से अधिक हर्षोन्मत्त दिखाई देता था। हिरण तथा हिरणी पहाडियो पर ऊपर चढ रहे थे, लूमड तथा मार्जार अपनी मादो की ओर लौट रहे थे, खरगोशी झाडियो के पास से बाहर उछल कर निकलती, और फिर दुबक जाती थी। हिरण चौकन्ने होकर रुका, फिर सावधानी के साथ, चारो तरफ ध्यान से देखते हुए आगे बढा, किन्तु अन्तत वह झुका और खाना आरभ किया। तब मैंने अपने धनुष की प्रत्यचा खीची और हिरण पर तीर चलाया। तीर उसके बाये कधे पर लगा, वह धरा-शायी हो गया और प्राण त्याग दिये।

उच्चपदासीन लोग बडे मूल्यवान गाउन पहनते थे जोकि पीछे भूमि पर लटकते जाते थे, जैसे मानो वे स्त्रियाँ हों। शोकीन स्त्रियाँ और पुरुष दोनो ही सिर की पोशाके बहुत चित्र-विचित्र प्रकार की पहनते थे जोकि सीग, या पगडी या मीनार जैसी होती थी। ऐसे बहुत से निरर्थक और अस्थायी भोगैश्वर्य के साथ सुख-सुविधा की बहुत सी ठोस और स्थायी चीजे तथा नवीन जीवन-विधिया भी अस्तित्व मे आई, जोकि अभी तक बची हुई है। इस युग मे पहली बार हमारे देश मे प्रतिष्ठित परिवार विशाल हालो से विमुख हुए जिनमे कि वे अपनी पैतृक बिरादरी के साथ भोजन करते थे और अधिक उत्कृष्टतर खाना घर पर खाते थे। शतवर्षीय युद्ध के आरम्भिक तथा अधिक सफल काल मे फ्रास से जो लूट और भेट के रूप मे सम्पत्ति आयी उसने इगलैड की सामन्तीय परिवार-व्यवस्था मे क्रान्तिकारी परिवर्त्तन ला दिये, ठीक उसी प्रकार से जैसे प्राचीन रोम मे भू-मध्य सागर-तटवर्त्ती प्रदेशो की लूट और विजय के परिणाम स्वरूप कैमिल्लस तथा काटो की उग्र सादगी पूर्णत समाप्त हो गई। फ्रासीसी सामन्त, जोकि युद्ध मे पकड कर लाए गये थे, कुछ अवस्थाओ मे वर्षो तक बदी रखे गये, जबतक कि उनके कृषि-दासो द्वारा अपेक्षित लूट का पैसा पूरा नही चुका दिया गया। इस बीच वे अपने अगरेज बदीकर्त्ताओ के घर सम्मानित अतिथियो के रूप मे रहे, वे पुरुषो के साथ शिकार करते थे, स्त्रियो के साथ प्रेम-सम्बन्ध बनाते थे और सादे देहाती अग्रेजो को सिखाते थे कि प्रत्येक सभ्य व्यक्ति को कैसी पोशाक पहननी चाहिये और कैसा खाना कैसे बर्तनो मे परोसना चाहिये।

ऐसे शिक्षको के होते विलासिता बढने लगी और इसके साथ व्यापार बढा तथा बाह्याडबर का प्रसार हुआ, और यह ठीक उन्ही साधनो से हुआ जिनका आचार की शुद्धता के पक्षपातियो ने इतना विरोध किया था। नगर के व्यापारी निरन्तर इस बात के लिये प्रयत्नशील रहते थे कि सामन्तो के दरबार मे वेष-भूषा, प्रसाधन-सामग्री तथा खाने-पीने की नये से नये प्रकार की वस्तुएँ पहुँचा सके। सामन्त लोग अपनी समृद्धि तथा अतिव्ययशीलता के द्वारा व्यापारी वर्ग की उन्नति मे सहायक हो रहे थे, जो वर्ग कि आगे चल कर इनका स्थान लेने वाला था। हमारे नगरो का अधिकाश उत्पादन तथा विदेशी व्यापार, तथा पूर्व के साथ लगभग सम्पूर्ण यूरोपीय व्यापार सामन्तो तथा जागीदारो की विलासिता की सामग्री मुहैया करने पर ही पनप रहे थे, आधुनिक युग के समान विशाल जन-समुदाय की आवश्यकतापूर्ति के लिये नही। इगलैड के नगरो तथा व्यापार ने उन दिनो कोई भी उन्नति नही की होती यदि उन्होने केवल कृषक तथा श्रमिक की आवश्यकताओ का ही ध्यान रखा होता, जोकि अपनी आवश्यकता के लिये स्वय खाद्य सामग्री पैदा करते थे, और उनके कपडे, फर्नीचर तथा खेती के औजार ग्राम-शिल्पी ही बनाते थे।

अध्याय २

चासर का इंगलैंड (जारी)

नगर तथा चर्च

चौदहवी शताब्दी मे अग्रेजी नगर मे अभी भी एक ग्रामीण और कृषि-प्रधान समाज निवास करता था और साथ ही यह उद्योग तथा व्यापार का भी केन्द्र था। इसके चारो ओर इसकी रक्षा के लिये एक पत्थर की दीवार अथवा टीले बने रहते थे और इस प्रकार इसे पहले के खुले ग्राम से पृथक् करते थे। किन्तु बाहर 'ग्राम-क्षेत्र' होता था, जोकि झाडियो आदि से घिरा नही रहता था और जहाँ प्रत्येक ग्राम-कृषक धान के अपने पृथक् खडो पर कृषि करता था, और प्रत्येक व्यक्ति अपने ढोर अथवा भेडे नगर या ग्राम की सार्वजनिक चरागाह पर चराता था, जोकि प्राय ही नदी के किनारे पर होती थी, जैसाकि आक्सफर्ड या कैम्ब्रिज मे उस समय थी।[1] १३८८ में पार्लिया-मेट द्वारा यह विधान किया गया कि कटाई के समय शिल्पियो तथा उनके शिक्षार्थियो के लिये यह अनिवार्य है कि वे अपने शिल्प-व्यापार को छोड कर खेती की कटाई करके धान एकत्र करने तथा उसे घर मे लाने मे सहयोग दे। नगरो के नगरपालिकाध्यक्षो, कारिदो तथा पोलीस के अधिकारियो का यह उत्तरदायित्व था कि वे देखे कि यह क्रियान्वित हो रहा है। (स्टेच्यूट्स ऑफ रैल्म, II, ५६) नोविच मे, जोकि इगलैड का दूसरा बडा नगर था, जुलाहो को इस काल के बहुत बाद तक प्रतिवर्ष फसल घर लाने मे सहायता के लिये बाध्य किया जाता था। वास्तव मे, लन्दन भी इस अर्ध-असस्कृत नियम का अपवाद नही था। ग्राम्य तथा नागरिक मे ऐसी कोई स्पष्ट सीमा-रेखाएँ नही थी जैसी औद्योगिक क्रान्ति के बाद से दृष्टिगोचर होती है। उस समय कोई अग्रेज आदमी ग्रामीण वस्तुस्थिति से पूर्णत अपरिचित नही होता था जैसा वह आज होता है।

नगर प्राय ही ग्रामो से अधिक गदे और अस्वास्थ्यकर होते थे और उनमे प्राय ही प्लेग पडता रहता था। किन्तु तब इसमे घनी मजदूर बस्तियो के कारण ठसाठस भीड नही थी। इनमे घर अभी भी मनोरम उद्यानो, उपवनो, जोहडो तथा खेतो के

---

[1] कैम्ब्रिज चाहारदीवारी से सुरक्षित नही था बल्कि पानी से सुरक्षित था—पश्चिम मे नदी थी तथा पूर्व मे राजा की खाई।

बीच मे बने होते थे। इसका कारण यह था कि रहने वालो की सख्या अभी भी बहुत कम थी—अच्छे बडे नगर मे दो से तीन हजार।

नगर-वासियो को ग्राम और नगर दोनो के लाभ उपलब्ध थे। प्राकृतिक सौन्दर्य का सर्व-आवेष्टी वातावरण सबकी भाषा और विचारो को प्रभावित करता था। चासर लण्डन-निवासी था, किन्तु उसने एक सुन्दर तथा चचल युवती का वर्णन करते हुए चार रूपको का प्रयोग किया है, इनमे से एक तो रूपक नवनिर्मित स्तभ से था और अन्य तीन खेतो के परिचित-प्राकृत दृश्यो, ध्वनियो तथा गधो से लिये गये थे

'उसका रग बहुत चटकीला था, उससे भी अधिक जितना सामन्त द्वारा नवनिर्मित स्तभ, और उसका गीत ! वह इतना तीव्र और उत्तान था जितना खलिहान पर बैठ कर गाती हुई अबाबील का होता है, और वह इतनी चचल और क्रीडामय थी जैसा अपनी माता का अनुसरण करते हुए कोई बछडा या अन्य शिशु। उसका मुख ऐसा मधुर था जैसा शहद-घुली यव-सुरा या मधु-सुरा, अथवा पाल मे पके मेवो का ढेर'।

यह कविता कितनी सरल और सशक्त है किन्तु फिर भी कितनी सुन्दर ! ऐसी कविताएँ अब अलभ्य है क्योकि इन्हे जन्म देने वाली दैनिक जीवन की परिस्थितियाँ अब समाप्त हो चुकी है, अथवा ये अब अन्य ऐसे तत्वो से आच्छादित हो चुकी है जो कुरूप तथा याँत्रिक है। यह भी चासर के युग की ही विशेषता थी कि युवती का इतना सुन्दर वर्णन करते हुए भी इस वर्णन मे कही अस्वाभाविक अतिशयोक्ति नही की गयी है। (दि मिलर्ज टेल)

किन्तु इन छोटे नगरो मे, यद्यपि ये अर्धग्रामीण ही थे, एक निराला ही नागरिक गौरव था। आत्म-प्रशासन के अधिकार तथा राजा, सामन्त, मठाधीश अथवा पादरी से खरीदे गये स्थानीय व्यापार के एकाधिकार को बनाये रखना और उसका क्षेत्र बढाना, यह उनकी मुख्य चिन्ता थी। अपने नगर के व्यापारियो को उनकी भयावह यात्राओ के अवसर पर सरक्षण देने मे तथा दूसरे नगरो मे उनके उधार दिए गये पैसे को एकत्र करने मे नगरपालिकाओ का कार्य अर्ध अन्तर्राष्ट्रनीति के स्तर का था। नोर्विच (नगर) साउथेम्प्टन (नगर) मे ऐसे ही बात करता था जैसे इगलैड फ्राम से करता था। नगरो के बीच व्यापारिक समझौते एक साधारण बात थी। जहाँ तक लण्डन का सम्बन्ध है, इसके स्वायत्त शासन की शक्ति, जिसकी अधिकार-सीमा नदी के उतार और चढाव दोनो दिशाओ मे पर्याप्त विस्तृत प्रदेश तक थी, जर्मनी के अनेक "स्वतत्र नगरो" के लिये स्पर्धा का विषय थी। यदि कोई राजा का अधिकारी अथवा गॉट के जोन का भृत्य लण्डन के किसी नागरिक की अधिकार-सीमा मे हस्तक्षेप करता था, अथवा नगरपालिकाध्यक्ष के अधिकार को चुनौती देता था उसे उसका दुष्परिणाम भुगतना पडता था।

किन्तु लण्टन के पास इतनी महत् अधिकार-शक्ति होने पर भी, तथा अन्य नगरो के पास इतनी 'स्वतत्रताए' रहने पर भी, ये सब राज्य के वफादार सदस्य थे, जिसकी पार्लियामेट आर्थिक प्रश्नो पर, जिस सीमा तक वे राष्ट्रीय महत्व के होते थे, अशत इन नगरो के परामर्श से विधान निर्माण करती थी, और व्यापार चौदहवी शताब्दी मे नगरपालिका के अधिकार-क्षेत्र से निकले बिना निरन्तर अधिक से अधिक राष्ट्रीय स्तर पर आ रहा था। इगलैड के नगरो का इतिहास इगलैड के इतिहास मे, जिसके निर्माण मे कि ये सहायक हो रहे थे, तदात्म हो रहा था, जबकि जर्मनी मे, जोकि अभी एक राष्ट्र नही था, न्यूरबर्ग तथा हास नगरो के इतिहास उस काल के यूरोप के इतिहास मे पृथक् अध्ययना का निर्माण करते है।

किन्तु इगलैड मे भी शतवर्षीय युद्ध के दिना मे लोगो मे राष्ट्रीय भावना तथा राज्य के प्रति वफादारी उतनी अधिक नही थी जितनी अपने नगर के प्रति थी। पौरवासी का प्रथम कर्त्तव्य नगर-सेना मे भाग लेकर नगर की दीवारो तथा खेतो की रक्षा करना था जिन्हे, फास अथवा स्कॉटलैड के आक्रमण-कर्त्ताओ, कानून-बहिष्कृतो के दलो तथा बडे लोगो द्वारा नियुक्त गु डो से निरतर भय रहता था। अनिवार्य भरती के सिद्धान्त से मध्ययुगीन लोगो के मन मे कोई कठिनाई उत्पन्न नही होती थी, अन्यथा वह दूसरो से यह कैसे अपेक्षा कर सकता था कि वे उसकी तथा उसके सम्बन्धियो की निरन्तर खतरे से रक्षा करेगे ? नगर-अधिकारी युद्ध तथा आन्तरिक व्यवस्था के कार्य के लिये, तथा सब प्रकार के नागरिक कार्यों के लिए जैसे नगर-परिखा अथवा नाला खोदने, नगर का पुल सँवारने, नगर के खेतो की जुताई-कटाई मे सहयोग देने, अपने घर के सामने के बाजार के भाग को साफ करने तथा सँवारने के लिये, लोगो को बुला सकते थे। सार्वजनिक कार्य मे ऐसा योगदान तब दासत्व नही समझा जाता था जैसाकि सामन्त की भूमि पर कार्य को समझा जाता था। उन दिनो कोई यह नही सोचता था कि 'स्वतत्रता' उन सैनिक अथवा अन्य कर्त्तव्यो की उपेक्षा करने मे निहित थो जिनके सम्पादन पर ही उसकी तथा उसके नगर की रक्षा निर्भर थी। अनेक शताब्दियों तक इगलैड के नागरिक जीवन के शिक्षणालयों मे आत्म-निर्भरता तथा आत्म-प्रशासन की शिक्षा दी जाती थी, और एक सीमा तक गाँव के न्यायालय मे भी यह शिक्षा दी जाती थी। उन दिनो कर्त्तव्यो के बिना कोई अधिकार नही थे।

इगलैड के प्रत्येक नगर के बाजार मे राजनैतिक सघर्ष बहुत तीव्र और बलवत्तर रूप से चलता था। यह सघर्ष राष्ट्रीय दलो का नही था बल्कि शिल्प की राजनीति तथा नगर की राजनीति ही नगरवासी के दैनिक जीवन को प्रभावित करती थी। शक्ति के लिये सघर्ष शिल्पो के नगरपालिका के साथ झगडो मे, व्यापारियो के छोटे उत्पादको के साथ झगडो मे, स्वामियो के उनके भृत्यो के साथ झगडो मे, बाहर से

आकर बसने और व्यापार करने वालो के साथ सम्पूर्ण नगर के झगडो मे, राजधानी के सब निवासियो के राजा के अधिकारियो के साथ अथवा सामन्त तथा पादरी के कारिदो के साथ अथवा मठ के साधुओ के साथ झगडो मे चल रहा था। निरन्तर परिवर्तित होते हुए ऐसे झगडे सैकडो नगरो मे सैकडो रूपो मे शताब्दियो तक चलते रहे। इन नगरो मे लदन जैसे विशाल नगर से लेकर (जोकि राज्य के भीतर एक राज्य था) छोटे कस्बो तक मे, जो अभी कारिदो द्वारा शासित सामन्तयुगीन ग्राम के स्तर से ऊपर उठने की प्रक्रिया मे थे, यह शक्ति के लिये सघर्ष चल रहाँ था। इन सब आन्तरिक तथा बाह्य नागरिक युद्धो मे, प्रत्येक पक्ष सभी प्रकार के उपयुक्त शस्त्रो का,—जैसे कानूनी कार्यवाही, खुले दगे-फिसाद तथा आर्थिक दबावो का—उपयोग कर रहा था।

लण्डन मे समुद्री कोयला (इसका यह नाम इसलिये पडा था कि यह टाइनेसाइड से पोत द्वारा लाया जाता था) काष्ठ तथा काष्ठ-कोयले के स्थान पर क्रमश अधिकाधिक उपयोग मे लाया जा रहा था, और लण्डन मे आकर बसने वाले मठाधीश तथा सामन्त इसके विरुद्ध यह शिकायत कर रहे थे कि इस कोयले के जलने से उत्पन्न होने वाली दुर्गन्ध से भयानक रोग फैलने का भय है।[1] आग के भय से लडन मे अब छते घास-फूस के बजाय लाल ईट की बनने लगी थी। दीवारे अभी भी कीचड और लकडी की थी, यद्यपि बडे सामन्तो अथवा धनी नागरिको द्वारा निर्मित बढिया पत्थर के सौधो की सख्या निरन्तर बढ रही थी, जैसेकि लडन तथा वैस्टमिस्टर के बीच जोह्न आफ गॉट का महल। किन्तु राजधानी की शिल्पकला का प्रमुख गौरव था इसके एक सौ गिरजाघर। बाजारो की सडके अच्छी नही थी और किनाने पर चलने के लिये पार्श्व-पथ नही बने थे, सडके दोनो ओर ढलानदार थी और किनारो की नालियो मे मल बहता था, दुर्बल लोग भीड की ठेल-पेल मे सडक के बीच से ढकेले जाने पर दीवार मे जा लगते और किनारे के कीचड मे उनके पैर लथपथ हो जाते। नगराधिकारियो से प्राय कोई भी रोक-टोक नही होने मे लोग घरो और दुकानो से कूडा-कर्कट तथा जूठ आदि, बिना किसी स्वास्थ्य या सुविधा का ध्यान रखे, सडक पर बिखरा देते।

लडन से दो मील पर वैस्टमिस्टर था, जो चारो ओर से विहारो तथा हाल कमरो से घिरा हुआ था। इसे रचूफस ने बनवाया था तथा रिचर्ड द्वितीय इसे देवदार के शहतीरो से और सुन्दर बना रहा था। वैस्टमिस्टर राजकीय प्रशासन, कानून तथा पार्लियामेट का एक प्रतिष्ठित केन्द्र बन गया था, यद्यपि इसमे न कुछ व्यापार होता था और न ही इसका निजी नागरिक प्रशासन ही था, और यह केवल महान लडन के द्वार

---

[1] कोयले के घरेलू ईधन के रूप मे उपयोग के विरुद्ध बडा पूर्वाग्रह था जबतक कि लकडी की कमी के कारण इसका बहुत उपयोग बढ नही गया। गॉवो मे, ट्यूडर के काल तक, इसका उपयोग प्राय. लोहार तथा चूना जलाने वालो तक ही सीमित था।

पर एक गॉव मात्र था। इगलैंड की राजधानी मे राजा की वैसी कोई पैंठ नही थी जैसी पॅरिस मे ताओरी की थी। जब राजा नगर मे आया तो कभी तो वह लडन के एक ओर वेस्टमिस्टर मे रहता था और कभी अट्टालिका मे दूसरी ओर। किन्तु नगर, जोकि बीच मे पडता था, उसका क्षेत्र नही था और इस दृष्टि से रिचर्ड द्वितीय रिचर्ड प्रथम से नगर की सेना, इसके न्यायाधीशो तथा इसके जनसमुदाय से अपनी आज्ञा मनवाने मे किसी भी प्रकार से अधिक समर्थ नही था। मध्ययुगीन सन्तुलन तथा शक्तियो की समरसता, जिसमे से कि आधुनिक इगलैंड की स्वतत्रता की चेतना का उद्भव हुआ, राजाओ तथा राजधानी के सबधो मे स्पष्ट झलकते है।

अब लण्डन के बडे धनिक लोग बडे प्रादेशिक सरदारो के बराबर थे, और यह केवल इसीलिये नही था कि उनके अधिकार मे नगर-सेना तथा इगलैंड के समुद्री जहाजो का एक बहुत बडा भाग था, बल्कि इसलिये भी था क्योकि वे सरकार को सूद पर पैसा भी ऋण देते थे। १२९० मे एड्वर्ड प्रथम ने इगलैंड से यहूदियो को निकाल दिया था और इस प्रकार से राजकीय ऋण की पुरानी प्रथा का अन्त कर दिया था। इगलैंड मे जो आज यहूदी-विरोधवाद यूरोप के दूसरे कई देशो की तुलना मे कम है उसका एक कारण यहूदियो का उपर्युक्त निष्कासन भी है हमारे पूर्वज एड्वर्ड प्रथम के इस कार्य के कारण यहूदियो के सहारे के बिना ही अपने आर्थिक तथा बौद्धिक जीवन-यापन के लिये अभ्यस्त हो गये थे, परिणामत जब क्रामवेल के काल मे इन्हे वापिस लौटने की आज्ञा दे दी गयी तबतक इगलैंड अपने पैरो पर स्वय खडा होना सीख चुका था और इसलिये इस वरद जाति के साथ, बिना किसी ईर्ष्या के, बराबर कदम मिलाकर चल सकता था।[1]

इसलिये, यहूदियो की अनुपस्थिति मे, एड्वर्ड तृतीय ने अपने युद्धो के लिये पैसा फ्लोरेस बैंको से लिया, ये ही बैक सामन्तो को भी ऋण देते थे। बोक्काचिओ के डीकामेरोन् मे हम पढते है कि किस प्रकार से तीन फ्लोरेस निवासियो ने 'लडन मे आकर एक छोटा घर लिया और इतने अल्प व्यय से रहे जितना सभव था, और सूद

---

[1] यहूदियो के निष्कासन से पूर्व उनकी सम्पत्ति और ऋण देने की शक्ति मे ह्रास हो चुका था, अन्यथा उन्हे निकाला ही नही जा सकता था। साहूकार के रूप मे इगलैंड के लोग तथा विदेशी ईसाई उनका स्थान ले रहे थे। उद्योग तथा कृषि सम्पूर्ण मध्ययुगो मे परिवर्तित तथा विस्तारित हो रहे थे और इन्हे इस बात की आवश्यकता थी कि राजा, सामन्त, किसान, दास तथा व्यापारी इनकी पूजी ऋण पर लें। सूदखोरी के विरुद्ध कानूनो ने सूद को मर्यादित करने के बजाय बिल्कुल ही गैर कानूनी कर दिया, इसका परिणाम यह हुआ कि सूद बहुत बढ गया, यहा तक कि ५० प्रतिशत तक हो गया, क्योकि यह लेन-देन अवैधानिक था। (लिप्सन १, पृ० ६१६-६२०)।

पर पैसा देते रह ।' जब उन्होने पर्याप्त धनार्जन कर लिया तब वे फ्लोरेस को लौट गये, 'किन्तु बैक-व्यापार इगलेंड ही मे रखते हुए उन्होने एलेस्सेड्रो नामक अपने भतीजे को इसकी व्यवस्था करने के लिये वहा भेज दिया । उसन सामन्तो को उनके किलो तथा अन्य सम्पत्तियो को गिरवी रखकर पैसा देना आरभ किया, जिसका उसे बडा लाभ हुआ ।'

किन्तु राजा अपने प्रजाजनो से भी ऋण लेता था – जिन्हे हम 'महान नागरिक की सज्ञा दे सकते है, और दूसरे नगरो के धनिको से भी लेता था, जैसेकि हल के सर विलियम डी ला पोल से, जोकि इगलैड के एक महत् कुलीन घराने की स्थापना करने वाला प्रथम व्यापारी था । इन नये ऋण-दाताओ के साथ राजा का सबध यहूदियो के साथ उसके सबध से बडा भिन्न था, ये लोग राजा के हाथ मे मात्र स्पज थे जिनकी सपत्ति का वह शोषण करता था – असहाय आश्रित जन, जिन्हे कि केवल वही (राजा ही) लोगो के अत्याचार और वध मे बचा सकता था । किन्तु अग्रेज व्यापारी, जिन्होने कि सरकार को शतवर्षीय युद्ध के लिये पैसा दिया, अपनी सहायता इच्छानुसार देने या न देने के लिये स्वतत्र थे, और राजा की इस आश्रितता का वे अपने-अपने परिवार, अपने नगर अथवा अपने शिल्प के व्यापारिक तथा अन्य लाभो के लिये सोदेबाजी करने मे उपयोग करते थे ।

इन परिस्थितियो मे ही एड्वड तृतीय की आर्थिक, गृह सबधी तथा विदेश नीति का ताना बाना तना गया था । शतवर्षीय युद्ध केवल सैनिक लूट अथवा अपनी वश-मूलक महत्वाकाक्षाओ को लेकर ही नही लडा गया था, यह हमारे ऊन तथा वस्त्र-व्यापार के लिये फ्लैडर्स तथा फ्रास के बाजारो के द्वार खुले रखने के लिये भी लडा गया था । वान् आर्टवल्डे तथा फ्लेमिश नागरिको के साथ फ्रास के विरुद्ध समझौता कूटनैतिक तथा व्यापारिक दोनो ही प्रकार का था ।

इगलेंड की राष्ट्रीय नीति राजा की आवश्यकताओ के दबाव के कारण तथा उसकी अपनी प्रजाओ के विरोधी स्वार्थो, तथा अपने विदेशी मित्र देशो के स्वार्थो मे सघर्ष के कारण निरन्तर बदलती रहती थी । एक स्थिर सुरक्षावादी नीति से युक्त 'व्यापारवादी' युग अभी नही आया था, किन्तु देश ने इस दिशा मे पहले से ही टटोलना आरभ कर दिया था । विदेशी पोतो को इगलैड की बदरगाहो मे व्यापार करने से रोकने के लिये नौपरिवहन विषयक कानून रिचर्ड द्वितीय के काल मे ही बना दिये गये थे, किन्तु ये लागू नही किये जा सके क्योकि स्टुअर्ट के काल तक हमारा व्यापारी बेडा अभी इतना बडा नही हुआ था कि हमारे निरन्तर बढते हुए व्यापार को अकेला सभाल सकता । इगलैड के व्यापारी अपना अधिकाश समुद्रपारीय व्यापार विदेशी पोतो मे ही करते थे ।

किन्तु अन्तत अब अग्रेज नाविक एक बृहत् शक्ति बन रहा था । एड्वर्ड तृतीय ने इस शक्ति का प्रयोग ब्रिटेन की चैनल (इगलैड तथा फ्रास के बीच का सागर) से

विदेशी जल-दस्युओ को निकालने के लिये किया था, और इसमे वह कई वर्ष तक सफल रहा। जिस जहाजी बेडे ने इस स्थान पर दस्यु दल को १३४० मे पराजित किया वह राजकीय जल-सेना का बेडा नही था यह भिन्न-भिन्न नगरो के व्यापारी पोतो से निर्मित था, जो कि लडने के लिये एक राजकीय सेनापति की अध्यक्षता मे अस्थायी रूप से भरती किया गया था। सागर-युद्ध मे अभी तोपो ने स्थान नही लिया था। तो भी, सालामिस के अनुरूप ही पोत एक-दूसरे से भिडते और जूझते थे, और स्थल के समान ही जल मे भी युद्ध तलवारो, भालो तथा तीरो से चलता था।

निर्यात के लिये मडी, जिसमे इगलैड का पण्य एकत्र होता था और उस पर कर लगाया जाता तथा बेचा जाता था, निर्यात-कर की वसूली के लिये आवश्यक थी। राजा की अर्थ-व्यवस्था इस पर चलती थी, और यह अग्रेज व्यापारियो को उन दिनो अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मे चलने वाली धोखाधडी तथा लूटखसोट से भी बचाती थी। किन्तु 'मडी की कम्पनी' ने निर्यात मे आशिक एकाधिकार प्राप्त कर लिया जोकि बहुत से ऊन के उत्पादको तथा अनेक स्पर्धी व्यापारियो को स्वीकार्य नही था। मडी के सबध मे अनेक तथा विपरीत स्वार्थो—कृषीय, औद्योगिक तथा व्यापारिक—के विरोधी मत थे, विशेषत इसके स्थान को लेकर। एक समय यह इगलैड के कुछ नगरो मे रखी गयी थी, उसके बाद फ्लैडर्स मे, अन्त मे केलेइस मे—जिसेकि अग्रेज सेना ने फ्रास मे प्रवेश के लिये बदरगाह के रूप मे जीता और अपने अधिकार मे रखा था। जब ऊन केलेइस पहुँचती थी तब विदेशी ग्राहक कुछ रकम तो नकद देते थे और शेष के लिये देयक दे देते थे, यह एक सामान्य प्रचलन ही था। दूसरो को हस्तातरित करके देयक की कटौती की प्रथा भी तब बहुत प्रचलित थी, इस प्रकार से एक ऋण-दाता से दूसरे को देयको के हस्तातरण की व्यापारिक प्रथा कम से कम पाच सौ वर्ष पुरानी है। (लिप्सन १, ५६९)

केलेइस की मडी से निर्यातित पण्यो मे ऊन की मात्रा बहुत अधिक थी, किन्तु ऊनी कपडे का निर्यात निरन्तर बढ रहा था, और अन्त मे ट्यूडर के समय इस निर्यात ने ऊन का निर्यात पूर्णत समाप्त कर दिया। किन्तु चासर के काल मे, और बहुत पीछे तक भी, राजा को अधिकाश ऋण देने वाले ये मडी के व्यापारी ही थे जोकि विदेशी करघो के लिये ऊन का निर्यात करते थे। और मडी मे निर्यात की जाने वाली ऊन पर लगाया जाने वाला निर्यात-कर राज्य की आय का बहुत बडा स्रोत था।[1]

---

[1] मडी मे ऊन तथा ऊनी कपडा दोनो एकत्र किये जाते, उन पर कर लगाया जाता तथा इन्हे बेचा जाता था। किन्तु 'मडी-कम्पनी' केवल ऊन का व्यापार करती थी कपडे का नही, परिणामत स्वतत्र व्यापारियो द्वारा कपडे के निर्यात मे निरन्तर वृद्धि से उसका क्रमश ह्रास हो गया। चौदहवी शताब्दी के आरभ मे ऊन का निर्यात ३०,००० बोरे प्रतिवर्ष था, और कपडे का निर्यात लगभग ५००० थान था।

ये लण्डन तथा केलेइस के व्यापारी, जिनके साथ कि राजा को ऋण तथा कर के लिये सौदेबाजी करनी पडती थी, ऊन उत्पादक जिलो, जैसे कोट्सवोल्ड्स, के साथ व्यापारिक तथा व्यक्तिगत सम्पर्क रखते थे, और वहाँ इन्होने तथा इनके स्पर्धी कपडा व्यापारियो ने जायदादे खरीद ली थी और पश्चिमी इगलैड के बडे घरानो की स्थापना की थी। १४०१ मे चिप्पिग कैम्पडन मे 'लण्डन के स्वर्गीय नागरिक तथा इगलैड के ऊन-व्यापारियो के सिरमौर' विलियम ग्रेवल का शव दफनाया गया था। उसका पत्थर का बना घर अब भी द्वीप मे अवशिष्ट सर्वाधिक सुन्दर ग्राम का एक अलकार है, क्योकि चिप्पिग कैम्प्डन एक साधारण ग्लौसेस्टरशायर के प्रकार का गाँव नही था बल्कि इगलैड के बृहत्तर व्यापार के लिये यह एक सग्रह-केन्द्र था।

वास्तव मे प्रो० पास्टन जिसे 'इगलैड के पू जीवाद की महान प्रसव-ऋतु' कहता है, वह चासर का युग ही था। शतवर्षीय युद्ध के आरभिक काल मे राजकीय अर्थ-व्यवस्था की बढी हुई आवश्यकताएँ, कर-व्यवस्था मे नये प्रयोग, ऊन के व्यापार मे सट्टेबाजी, इटेलियन अर्थ-व्यवस्था का भग होना, तथा नये वस्त्र-उद्योग का आरम्भ होना, ये सब तत्व युद्ध के लिये पू जी प्रदान करने वाली तथा सट्टा करने वाली, सेना को भोजन-सामग्री सप्लाई करने वाली तथा ऊन के व्यापार मे एकाधिकार सम्पन्न एक नयी जाति को अस्तित्व मे लाने के लिये सयुक्त हो गये। (इकनामिक हिस्ट्री-रिव्यू, मई १९३९, पृ० १६५)।

पू जीपति जबकि वित्तदाता तथा सार्वजनिक साहूकार के रूप मे मुख्यत ऊन व्यापार मे ही विद्यमान था, इसका उद्योगो के सगठनकर्त्ता के रूप मे आविर्भाव हम इसी काल मे वस्त्र उद्योग मे पाते है।

जबकि कच्ची ऊन अभीतक मुख्य निर्यात सामग्री थी, घरेलू आवश्यकताऐ अधिकाशत इगलैड मे बने कपडे से ही पूरी की जाती थीं। प्राचीन रोमवासियो तथा सेक्सन-वासियो के काल मे तथा उसके बाद के काल मे, इगलैड की गृहिणी का तथा उसकी नौकरानियो और लडकियो का खाली समय कातने मे ही बीतता था—जोकि हमारी आद्य मातृ देवी का कार्य कहा जाता है, और इसी प्रकार से, बहुत प्राचीन काल मे, बुनने की अधिक कला पुरुषो के हाथ मे थी, जोकि जुलाहे के रूप मे प्रशिक्षित होते थे। ये सारा दिन अपनी कुटिया मे अपने करघे पर बुनते रहते थे और इस प्रकार से स्थानीय कृषको के लिये मोटा कपडा तैयार करते थे। बारहवी तथा तेरहवी शताब्दियो मे जुलाहो के सघो ने बहुत से नगरो मे, जिनमे लण्डन, लिकोन, आक्सफर्ड तथा नोटिंघम भी

शताब्दी के मध्य मे ऊन का निर्यात ४००० बोरे हो गया और कपडे का निर्यात १००,००० थान से भी ऊपर हो गया। द्रष्टव्य, (इ० इ० रिच, दि आर्डिनेस बुक आफ दि मर्चेंट्स दि स्टेपल, १९३)।

शामिल है, उत्कृष्टतर किसम का माल तैयार किया था। हेनरी तृतीय के काल मे स्टेम्फोर्ड का कपडा वीनस मे पर्याप्त प्रसिद्ध था, जबकि यार्कशायर, पूर्व और पश्चिम दोनो, अपने ऊनी कपडो के लिये पहले से ही प्रसिद्ध हो चुका था।

तेरहवी तथा चौदहवी शताब्दी के आरभिक काल मे बाजार के लिये बने स्तरीय कपडे का उत्पादन इगलैड के नगरो मे, जिनमे कि जुलाहो की सख्या बहुत घट गयी थी, बहुत गिर गया। ठीक बात यह है कि उत्पादक अब देहाती प्रदेशो की ओर प्रयाण करने लगा था, विशेपत पश्चिम की ओर के, जहाकि कपडे को साफ करने वाली मिलो को चलाने के लिये जल-प्रपात उपलब्ध थे। कपडा बनाने मे आवश्यक अनेक प्रक्रियाओ मे से एक, जोकि धोबी करता था, पहले मनुष्य के हाथो, पैरो या लकडी के डडो से ही सपादित होती थी, किन्तु अब यह कार्य जल-शक्ति द्वारा किया जा रहा था। इसलिये अब १४वी शताब्दी का आरभ हुआ। उससे पहले ही, कोट्सवोल्ड तथा पैन्नाइन घाटियो और झील के प्रदेशो ने पूर्वी इगलैड के साथ वस्त्र उत्पादन के क्षेत्र मे होड लेनी आरभ करदी थी और वह उद्योगो के अवस्थान की दृष्टि से ग्राम प्रदेश के साथ होड लेना आरभ कर चुका था। इसे तकनीकी आविष्कारो के महत्वपूर्ण सामाजिक परिणामो का एक आरभिक उदाहरण कहा जा सकता है। (एसा-हिस्ट्री रिव्यू, १९६१ मे मिस कारास विल्सन का लेख इडस्ट्रियल रेवोल्यूशन आफ दि थर्टीन्थ सेचुरी)।

एड्वर्ड द्वितीय तथा तृतीय के राज्य कालो मे हमारी सरकार के कार्य ने हमारे बृहत्तम उद्योगो को और भी प्रोत्साहन दिया। विदेश से वस्त्र का आयात अवैधानिक घोषित कर दिया गया। कुशल शिल्पियो को आमत्रित किया गया, विशेषत लडम और पूर्व एग्लिया मे, और उन्हे राज्य ने स्थानीय ईर्ष्या से सरक्षण दिया, साथ ही इगलैड के जुलाहो को भी विशेष सुविधाए दी गयी। चासर के जीवन काल मे चौडे कपडे का उत्पादन तिगुणा हो गया था और उसका निर्यात नौ गुणा हो गया था। भेड के चारे की दृष्टि से तथा सर्वोत्तम ऊन के उत्पादन की दृष्टि से इगलैड को जो अन्य देशो की अपेक्षा बहुत लाभ था उससे उसे ससार के वस्त्र बाजार को धीरे धीरे जीतने का अवसर मिला, जिस प्रकार से कि वह बहुत पहले कच्ची ऊन का बाजार जीत सका था।

वस्त्र-व्यापार की वृद्धि का आगामी अनेक सततियो तक चलते रहना अवश्यम्भावी ही था और इससे नगरो तथा ग्रामो मे एक नये वर्ग का उदय हुआ, सामन्त-प्रासादो का वैभव और बढा तथा झौपडियो की निर्धनता घटी, कृषि की विधि मे परिवर्त्तन हुआ तथा उसके उत्पादन मे वृद्धि हुई, हमारे पोतो को परिवहन के लिये माल मिला, हमारा व्यापार पहले सारे यूरोप मे और फिर सारे ससार मे फैला, हमारे राजनीतिज्ञो को अपनी नीति दूसरो पर लादने का अवसर मिला तथा राजनैतिक दलो को कार्यक्रम मिला और यह मैत्रियो, सधियो तथा युद्धो का कारण बना। वस्त्र-व्यापार इगलैड

का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्योग रहा जबकि, बहुत काल बाद, कोयला लोहा निर्माण मे काम आने लगा था। शताब्दियो तक इसने नगरो तथा ग्रामो मे लोगो के विचारो को अभिभूत रखा। इस दृष्टि से यह केवल कृषि से ही दूसरे पीछे था। हमारे साहित्य तथा सामान्य भाषा ने वस्त्र के उत्पादन से कितने ही पद-प्रयोग तथा रूपक ग्रहण किये है, यथा—'वार्तालाप का सूत्र' (थ्रेड ऑफ डिस्कोर्स) 'सूत कातना' (लबी बात करना) (स्पिन ए यार्न) 'रहस्य का अनावरण करना' (अनरेवल ए मिस्ट्री) जीवन का ततुवाय (वैब ऑफ लाइफ) 'महीन कता हुआ' (बढिया बना हुआ) (फाइन ड्रान) 'घर का कता हुआ' (सादा-ठोस व्यक्ति) (होम स्पन) 'कातने वालियो (कुमारियो) के सूत उधेडना' (से छेडखानी करना) (टू टीज दि स्पिस्टर्स)।

चौदहवी शताब्दी मे पहले से ही यह स्पष्ट था कि वस्त्र-व्यापार का विस्तार एक नवीन अर्थ-व्यवस्था की अपेक्षा करता है। कच्ची ऊन से बढिया वस्त्र के निर्माण के लिये केवल एक शिल्प ही अपेक्षित नही है बल्कि कई शिल्पो की आवश्यकता है— जैसे धुनना, कातना, बुनना, धोना, रगना, थान बनना आदि। इसलिये शिल्प-सगठन, जिन्होने कि पिछली शताब्दियो मे बुनाई मे सुधार की दिशा मे इतना महत्वपूर्ण कार्य किया था, घरेलू बाजार तथा विदेशी बाजार के लिये वस्त्र-उद्योग के बृहत्तर विस्तार की व्यवस्था नही कर सकते थे। अब व्यापारी से, जिसकी दृष्टि स्थानीय सीमाओ से अधिक व्यापक हो चुकी थी और जिसके पास पैसा था, यह अपेक्षा की जाती थी कि वह कच्चा माल, अर्ध निर्मित माल तथा पूरा तैयार माल एकत्र करेगा और एक शिल्पी से दूसरे शिल्पी को तथा एक स्थान से दूसरे स्थान पर, ग्राम से नगर मे तथा नगर से बदरगाह पर, और अन्त मे स्तरीय माल को उचित बाजार तक पहुँचायेगा। इस सब के लिये पूजी की आवश्यकता थी।

उद्योग के सगठनकर्त्ता के रूप मे पूजीवाद सर्वप्रथम वस्त्र-उद्योग मे ही स्पष्टत दिखाई पडता है। चासर के युग मे ही पूजीवादी वस्त्र-व्यापारी उत्पन्न हो चुका था जोकि विभिन्न स्थानो पर विभिन्न लोगो को नियुक्त करता था। वह एक ऐसे सामाजिक वर्ग का था जो मध्ययुगीय से अधिक आधुनिक था, और उस स्वामी-शिल्पी से भिन्न था जो अपने शिष्य-शिल्पियो तथा सहायक शिल्पियो के साथ एक बेच पर बैठकर कार्य करता था।[1] औद्योगिक क्रान्ति के बहुत आरभिक दिनो से भविष्य का अन्तिम रूप

---

[1] अठारहवी शताब्दी मे पर्याप्त विकसित यत्रो के आविष्कार से पूर्व तक 'पूजीवाद' का अर्थ फैक्टरिया नही हुआ था। सिवाय पानी से चलने वाली धुलाई की मशीनो के, पूजीपति शिल्पियो को उनके अपने घर पर ही कार्य देता था, और ये शिल्पी अपने निजी उपकरणो और यत्रो का ही उपयोग करते थे। यह उद्योग की 'घरेलू' व्यवस्था थी। पूजीपति को उत्पादित सामग्री के सग्रह के लिये गोदाम अवश्य देने पडते थे।

पूजीपति नियोक्ता के हाथ मे ही था । किन्तु कपडे के उत्पादन ने उसे सारा उद्योग आत्मसात् कर सकने मे समर्थ होने के चार सौ वर्ष पूर्व ही अस्तित्व मे ला दिया था । नौवहन (जहाजरानी), कोयला-व्यापार तथा गृह-निर्माण व्यापार भी इस आरभिक काल मे अशत पूजीवादी आधार पर ही चलते थे । किन्तु आगे शताब्दियो तक अधिकाश उद्योग पुराने ढग के ही स्वामी शिल्पी द्वारा, थोडे से शिष्यो और छोटे शिल्पियो के साथ, जोकि उसी की छत के नीचे सोते तथा कार्य करते थे, चल रहा था, केवल उस पर शिल्प-सगठन का एक सामान्य निरीक्षण होता था । इसमे भी किसानो तथा स्वतत्र श्रमिको मे उत्पन्न सघर्ष के समान ही स्वामी शिल्पियो और उनके द्वारा नियुक्त शिल्पियो मे भी सघर्ष सुलग रहा था । दुकान मे नियुक्त शिल्पी वही महत्वाकाक्षाए अनुभव कर रहा था जोकि खेत मे श्रमिक कर रहा था । उसने भी तब अधिक वेतन की माग की जब प्लेग के कारण श्रमिक कम हो गये, श्रमिको के लिये बनाये गये अधिनियम अशत उसकी मागो को भी दबाने के लिये थे ।

किन्तु इस विक्षोम मे केवल "वेतन के लिये सघर्ष" से कुछ अधिक भी निहित था । नगरो मे अशान्ति के कुछ गभीरतर कारण थे । व्यापार का विस्तार बढ जाने से तथा इसके लाभो मे वृद्धि हो जाने से स्वामी तथा उसके कर्मचारी मे सामाजिक और आर्थिक दुराव बहुत बढ रहा था और परिणामत शिल्पी-वर्ग की समरसता मे अब विक्षोभ उत्पन्न हो गया था ।

शिल्पी वर्ग के उदय के आरभिक काल मे स्वामी, शिष्य तथा कर्मचारी लगभग एक ही श्रेणी के होते थे । वे सब एक-साथ 'छोटे' आदमी थे—एक दुकान पर कार्य करने वाले श्रमिक बन्धु, उसी भोजन को एक साथ खाने वाले । यद्यपि वे किसी भी आधुनिक स्तर से निर्धन थे, किन्तु वे एक गर्वीले भाईचारे के भाग थे । इन कलाकुशल व्यवसायी लोगो का वर्ग उनके सर्वसाधारण स्वार्थो का प्रतिनिधि था, और नगरपालिका के साधारण नियत्रण के साथ यह नगर मे शिल्प सबधी मुआमलो का प्रबन्ध करता था, मूल्य-निर्धारण करता था, और स्वामी तथा कर्मचारी दोनो की सुविधा को ध्यान मे रखते हुए वेतन निर्धारित करता था । शिष्य लोग अपना शिक्षण-काल समाप्त होने पर या तो स्वामी बन जाते थे अथवा कर्मचारी बन जाते थे, और अधिकाश कर्मचारी देर या सबेर छोटे स्वामी बन जाते थे । स्वामी शिल्पी अपने कर्मचारियो के साथ कार्य करता था । वह अपने शिष्यो को प्राय ही पीटता था और कभी कभी अपने कर्मचारियो को भी पीटता था, क्योकि उन दिनो पीटना एक सामान्य प्रथा ही थी । किन्तु उन दिनो सामाजिक स्तर तथा जीवन-विधि मे कोई बहुत स्पष्ट अन्तर नही था । वास्तव मे, सगठनो से बाहर सदैव नगर मे अकुशल श्रमिको का एक ऐसा समुदाय रहता था, जोकि अत्यल्प वेतन पाता था और जिसका कोई ध्यान नही करता था । किन्तु सगठनो मे बहुत समरसता और सन्तोष था ।

चासर के युग मे ये चीजे बदल रही थी। उद्योग तथा व्यापार के विस्तार अनेकविध कार्यों को जन्म दे रहे थे और आर्थिक लाभो के अन्तर की मात्रा निरन्तर बढ रही थी। स्वामी अब शिल्पी बन्धु कम रह गया था और व्यवसायी अधिक हो गया था, जोकि व्यापार के सगठनो तथा वस्तुओ के विक्रय मे व्यस्त था। कुछ शिष्य स्वामी बन जाते थे, विशेषत यदि वे 'अपने स्वामी की लडकी से शादी कर लेते थे।' किन्तु अधिकाश शिष्य तो कर्मचारी ही बनने की आशा कर सकते थे, और बहुत ही कम कर्मचारी स्वामी बनने की आशा कर सकते थे। व्यापार मे लगने वालो की सख्या मे वृद्धि के अनुपात से शिल्पी स्वामियो की सख्या पहले की अपेक्षा घट रही थी। शिल्पी सगठनो की समरसता इनके सदस्यो के स्वार्थो की एकता पर आधारित थी, और एक मात्रा मे इनमे सामाजिक समानता पर भी आधारित थी। किन्तु यह प्रति-वर्ष कम हो रही थी। नियोक्ता और नियुक्त मे अन्तर निरन्तर स्पष्ट से स्पष्टतर हो रहा था। धनी व्यापारी और उस निर्धन शिल्पी-मुखिया मे भी अन्तर बढ रहा था जोकि इस धनी विक्रेता के लिये अपने दो-तीन सहायको के साथ मिलकर वस्तुए तैयार करता था।

और इस प्रकार से हम चौदहवी शताब्दी के कसबो मे न केवल शिल्पी सगठनो के भीतर अधिक वेतन के लिए हडताले होती ही देखते है बल्कि कुछ अवस्थाओ मे कर्मचारियो के स्वार्थों की रक्षा के लिये "कर्मचारी सघो" का निर्माण होता भी पाते है। कुछ व्यापारो मे तथा कुछ नगरो मे इन कर्मचारी सघो मे छोटे शिल्पी मुखिया भी सम्मिलित रहते थे, क्योकि वे भी धनी मुखियाओ के विरुद्ध थे, जोकि अब शिल्पी नही रहे थे और केवल व्यापारी हो गये थे। कुछ व्यापारो मे व्यापारी तथा दस्तकार पृथक् हो रहे थे तथा ये व्यापारी शिल्पी सघ अथवा लिवरी कम्पनी पर अपने अधिकार द्वारा उद्योग का नियत्रण अपने हाथ मे ले रहे थे। दस्तकार, चाहे शिल्पी हो अथवा शिल्पी-सहायक, अपनी आर्थिक स्वतत्रता प्राय खो चुका था और एक गौणतर स्थिति की ओर अग्रसर हो रहा था। नगरो का शासन बडे व्यापारियो के हाथ मे था। किन्तु आधुनिक श्रमिक सघ की भावना पहले से ही सक्रिय हो चुकी थी।[१]

ये आर्थिक तथा समाजिक परिवर्त्तन, जोकि चौदहवी शताब्दी मे आरम्भ हुए थे, अनुगामी युगो मे भी निरन्तर जारी रहे। किन्तु इसमे कोई एकरूपता नही थी, इसलिये इस सम्बन्ध मे कोई साधारणीकरण अनुचित है। प्रत्येक शिल्प तथा प्रत्येक

---

[१] पिछले मध्य युग के भव्य कैथेड्रलो, सुन्दर चर्चो तथा सामन्तो के किलो के निर्माता शिल्पियो के सगठन इन सगठनो के समान निर्मित नही हुए थे, बल्कि पू जीवादी आधारो पर निर्मित हुए थे। इसलिये 'स्वतत्र राज-शिल्पियो' मे श्रमिक सगठन वृत्ति बहुत उग्र थी। ये लोग आधुनिक राज शिल्पियो से बहुत भिन्न थे।

नगर का इतिहास एक-दूसरे से भिन्न थे। किन्तु शतवर्षीय युद्ध मे तथा रोजेज के युद्धो मे उद्योग तथा व्यापार मे वृद्धि की सामान्य दिशा उपर्युक्त प्रकार की थी।

इसलिये, चासर के काल मे समाज के ढाचे मे बृहत् परिवर्त्तन हो रहे थे। सामन्तो के क्षेत्रो मे दासता समाप्त हो रही थी और कृषि तथा व्यापार का नियत्रण हाथ मे लेने के लिये नये वर्गो का उद्भव हो रहा था। गावो तथा नगरो दोनो मे मध्ययुगीन सस्थाओ के ऊपर आधुनिक सस्थाएँ जन्म ले रही थी। किन्तु मानवीय परिस्थितियो के अन्य बडे भाग, धर्म तथा कर्मकाड मे, चर्च के अधिकारियो के कठोर रूढीवाद के कारण सस्थात्मक परिवर्त्तन रुका हुआ था, यद्यपि यहाँ भी विचार तथा मत तीव्रता से गतिशील थे।

वास्तव मे परिवर्त्तन की बहुत देर से अपेक्षा थी। पुरोहित वर्ग के दुराचार की निन्दा न केवल लोल्लाई (ईसाई सुधारक) सम्प्रदाय के धर्म-निन्दक ही कर रहे थे बल्कि श्रद्धालु लोग भी कर रहे थे—लैगलैड, गोवर तथा चासर की उतनी ही निन्दा कर रहे थे जितनी वाइक्लिफ कर रहा था। चर्च निश्चय ही 'भ्रष्टाचारी' था, किन्तु यह पूरे चित्र का केवल एक पहलू है—चर्च मे अनेक शताब्दियो से इसी प्रकार से भ्रष्टाचारण था, किन्तु फिर भी वह सुरक्षित था, और चासर के काल मे वह उससे अधिक भ्रष्ट नही था जितना राजकीय न्याय तथा सामन्तो और उनके सरक्षितो के कार्य भ्रष्ट थे। मध्य युगो मे अधिकाश सस्थाएँ आधुनिक मानदडो से भ्रष्ट थी, किन्तु जहाँ पुरोहित वर्ग से इतर लोग समय के साथ बदल रहे थे, चर्च स्थिर खडा था। इसके दुर्निवार विशेषाधिकारो तथा निरन्तर बढती हुई सम्पत्ति की ओट मे सुरक्षित नेताओ ने नैतिक निन्दा तथा ईर्ष्यापूर्ण लोभ को, जोकि इसके तथा इसकी सम्पत्तियो के प्रति चारो ओर उग्र हो रहा था, शात करने का कोई प्रयत्न नही किया। साधारण लोग न केवल अब पहले से आलोचक ही अधिक कटु थे बल्कि उससे कही अधिक शिक्षित और अतएव कही अधिक दुर्धर्ष भी थे जितने कि वे एसेल्म तथा बैक्केट के काल मे थे, जिस काल मे कि पादरी लोगो का शिक्षा पर लगभग एकाधिकार था। तो भी चर्च ने व्यापक असन्तोष को दूर करने के लिये कुछ भी नहीं किया, और पन्द्रहवी शताब्दी मे वह तूफान कुछ शान्त हो गया। किन्तु यह विराम बहुत ही अचिरस्थायी था और अन्ततः प्रशासको द्वारा सुधार के सब प्रयत्नो के विफल होने पर आखिर ट्यूडरो के नेतृत्व मे क्रान्ति हुई।

बहुत से पादरी भी चर्च के आलोचक हो गये थे, और ये भी उतने खुले आलोचक थे जितने अन्य लोग। ऑक्सफोर्ड के शिक्षित लोग, और पादरी प्रतिष्ठिानो के बहुत से पुजारी भी, जिनका दशाश कर धनी महन्तो और विदेशी पादरियो को जाता था, सुधारको का कार्य कर रहे थे और विद्रोही तक हो गये थे। इसके अतिरिक्त, स्वय ये लोग भी, जिनकी कि निन्दा की जा रही थी, परस्पर भी दोषारोपण और निन्दा

कर रहे थे और ऐसे गाली गलौच का प्रयोग कर रहे थे जैसी मध्य युग मे ऐसे विवादो मे प्राय ही प्रयुक्त होती थी। श्रमण पादरी बिशपो तथा गृहस्थ पादरियो पर लाछन लगा रहे थे और ये लोग श्रमणो की निन्दा कर रहे थे। चासर की कथाओ (टेल्ज) मे श्रमण (फ्रेअर) पादरी तथा सम्मोनर पादरी एक-दूसरे की चालो की पोल खोल कर सामान्य लोगो के उपहास-भाजन बनते है। सभी ओर से, चर्च के भीतर और बाहर, सब प्रकार से पादरियो की निन्दा की जा रही थी।

तो भी कुछ नही किया गया। सामन्तो तथा शिल्पी सगठनो (गिल्डो) के विपरीत चर्च आर्थिक परिवर्तन की प्राकृतिक क्रिया से अथवा जनमत के दबाव मात्र से ही परिवर्तित नही हुआ। इसके लिए कुछ निश्चित प्रशासकीय तथा वैधानिक सुधारो की आवश्यकता थी और इनको लागू करने के लिये कोई साधन-व्यवस्था नही थी, सिवाय ऐसी अवस्था के जोकि पोप और पादरियो के हार्थं मे थी। किन्तु जिस पोप ने पहले युगो मे इगलैड मे चर्च की हालत सुधारने के लिये इतना कार्य किया अब वह सर्वथा कुछ नही कर रहा था। उसने अपनी शक्ति का उपयोग ऐसे दुराचरणो को प्रश्रय देने के लिए किया जो रोमन चर्च की सपत्ति बढाने मे सहायक हो सकते थे—जैसे पादरी-पद का विक्रय, गिरजे मे न रहना, अधिक पादरी-पद स्वीकार करना, कृपाओ का विक्रय करना आदि। ये सब कृत्य उस आलोचना-प्रधान युग की नैतिक चेतना को बहुत खलते थे।

किन्तु पोप के समर्थन-सहायता के बिना भी इगलैड के बिशप कुछ न कुछ तो कर ही सकते थे। और चासर के युग मे बिशप लोग, बहुत कम अपवादो को छोडकर, योग्य, परिश्रमी तथा अत्यन्त सम्मानित व्यक्ति थे। तब क्यो उन्होने चर्च मे सुधार करने का प्रयत्न तक नही किया ?

इसका मुख्य कारण था उनकी सासारिक कार्यो मे अधिक रुचि होना। यद्यपि बिशपो को चर्च की आय मे से वेतन मिलता था किन्तु वे अपना जीवन राज्य की सेवा मे ही लगाते थे। पार्लियामेट के कानून होने पर भी पोप और राजा मिलकर चर्च के उत्कृष्टतम स्थान बेच रहे थे। पोप बहुत से समृद्ध मठो मे अपने विदेशी कृपा-भाजनो को थोप देता था और वह प्राय ही सौदेबाजी के रूप मे बिशपो की नियुक्ति का अधिकार राजा के हाथ मे छोड जाता था। और राजा अपने मत्रियो तथा अन्य अधिकारियो को वेतन राजकीय-आय मे से देने के बजाय चर्च की आय मे से देता था। १३७६ तथा १३८६ के बीच इगलैड तथा वेल्स मे २५ बिशपो मे से १३ राज्य के भी उच्च पदाधिकारी थे और अन्य बहुत से राजनीति मे महत्वपूर्ण भाग ले रहे थे। बहुत बार वे विदेशो मे राजदूत के रूप मे भी भेजे जाते थे। अन्य कुछ राजा के पुत्रो की नौकरी के द्वारा ऊँचे पदो पर पहुँचते बाथ तथा वेल्स का बिशप ब्लैक राजकुमार के लिये गासकोनी का चान्सलर रहा, सालिसबरी का बिशप जोन आफ गॉट

के लिये लकास्टर का चास्लर बना। रैल्फ का चास्लर सामान्यत बिशप ही होता था, जैसे प्राइमेट सडबरी, तथा विलियम आफ वैंकेहैम।

नार्मन राजाओ के काल मे बिशप-मडल तथा राजकीय मत्री परिषद् मे निकट सम्बन्ध होने से उस असस्कृत देश को योग्य तथा शिक्षित अधिकारी-तत्र प्राप्त हुआ। इन बिशप लोगो को धर्माध्यक्षता के अधिकार के कारण ऐसा सम्मान प्राप्त था जिसने उन्हे राज्य कर्मचारियो के रूप मे अशिक्षित तथा असभ्य सामन्तो का मुकाबला करने मे समर्थ बनाया। किन्तु जो व्यवस्था किसी समय देश के लिए बहुत मूल्यवान् थी अब उसकी आवश्यकता निरन्तर घट रही थी। अब साधारण लोगो मे से भी बहुत से, जिनमे से चासर भी एक था, राज्य कर्मचारी होने के योग्य हो गये थे। अब सचिवालय सम्बन्धी कार्य पर पादरियो के एकाधिकार तथा बडे राज्य पदो पर बिशपो के एकाधिकार के प्रति ईर्ष्या उत्पन्न हो रही थी, जो उचित ही थी। अब बहुत से अत्यन्त कुशल तथा बुद्धिमान वकील जैसे नाइवेट, तथा सुशिक्षित लोग, जैसे रिचर्ड स्क्रोप, सहज ही प्राप्य थे जोकि राज्य के बडे से बडे कार्य को भी योग्यता पूर्वक कर सकते थे। इस प्रकार के लोगो ने ही ट्यूडर राजाओ के राजत्व मे महन्तो तथा सामन्तो को राज्य के पदाधिकारियो के रूप मे स्थानान्तरित किया था। पीछे के प्लैटेजेनेटो के राज्यकाल मे ऐसे परिवर्त्तन के चिह्न पहले से ही दिखाई देने लगे थे। पादरियो के राजकीय सेवा मे रखे जाने के विरुद्ध लोक-सदन की १३७९ की याचिका के कारण कुछ वर्षो तक राज्य के चास्लरो तथा कोशाध्यक्षो के रूप मे एक पादरी और एक ससारी व्यक्ति रहता था।

ये बिशप लोग प्रशासकीय कार्यो मे इतने व्यस्त रहते थे कि अपने चर्च के प्रदेश की दुरवस्था की ओर कोई ध्यान नही दे पाते थे। यदि रैक्टर-पद खाली होते, अथवा दुष्ट व्यक्ति या कम वेतन पाने वाले लोग उन स्थानो मे भरे होते, तो ये लोग कहते कि ऐसा सदा से ही चला आया है। यदि पोप इन्हे कृपाओ अथवा झूठे अवशेषो को बेचने के लिए आदेश देता तो ये इसे उचित व्यापार ही मानते थे, इस सम्बन्ध मे अधिक सोचे बिना ये लोग 'क्षमा-भाजनो' को पोप के क्षमा-पत्र बाटते थे और इनको प्राप्त करने वालो को जनता के सम्मुख प्रशसित करते थे।

अपने कार्यो के एक अग—धार्मिक न्यायालयो की उचित व्यवस्था—की ये बिशप लोग उपेक्षा कर रहे थे और इसके बडे दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम हो रहे थे। जहाँ तक वसीयतो तथा विवाहो का प्रश्न है, जोकि उस युग मे चर्च के अधीन थे, ये न्यायालय उस काल के सामान्य-न्यायाधीशो तथा वकीलो से अधिक भ्रष्टाचारपूर्ण और अयोग्य नही थे। किन्तु बिशप के न्यायालय का अधिक विशिष्ट कार्य, जिसेकि वह प्राय अपने सहायक (आर्कडीकन) पर छोड देता था, चासर के काल मे बडे षड्यत्रो को जन्म दे रहा था। इनके ऐसे अपराधो का दण्ड, जो सामान्य न्यायालय

के क्षेत्र मे नही आते थे, जैसे लम्पटता आदि, धार्मिक न्यायालय देता था। किन्तु वास्तव मे ऋण न चुका पाने पर उसे प्रायश्चित्त मे बदलने की प्रथा उन दिनो एक सामान्य बात हो गयी थी। और सरकारी प्रथा यह होने पर बिशप के न्यायालय के अधिकारियो द्वारा अपराधियो के घरो पर उनसे रिश्वत लेकर उनके भेद छिपाना एक स्वाभाविक बात थी। सम्मन देने वाले तो इसमे बहुत ही बदनाम थे।

यद्यपि बिशप लोग अपने अधिकाश कार्यो की उपेक्षा करते थे किन्तु फिर भी चर्च के मुआमलो मे उनका ध्यान इतना अधिक था कि वे चर्च के विशेषाधिकारो तथा धर्मस्व के लिए किसी भी हस्तक्षेप के विरुद्ध लडने के लिए तत्पर रहते थे तथा धर्मविरोधियो को कुचलने मे कुछ नही उठा रखते थे। वास्तव मे धर्म-विरोध ने पहली बार कुछ महत्वपूर्ण रूप से अपना सिर उस समय उठाया जब वाइक्लिफ ने (१३८०) मास (ईसाई पर्व विशेष) मे बलिदान करने पर तत्व-परिवर्त्तन होने की धारणा का खडन किया।

निस्सन्देह, बहुत से पादरियो के प्रदेशा की सेवा कुछ बहुत ही ईमानदार और योग्य व्यक्ति कर रहे थे, जोकि बहुत कुछ चासर की 'दीन व्यक्ति' (पूअर पर्सन) की कल्पना के अनुरूप थे। और एकमात्र इन्ही लोगो के लिये चासर के मन मे प्यार और आदर था। लोगो से प्राप्त भेटो का बहुत बडा भाग ऐसे लोगो को बाट दिया जाता था जो पादरी वर्ग के नही थे, अथवा जो केवल साधारण लोग ही होते थे। और बहुत अधिक बार चर्च किसी मठ का भाग होता, अथवा किसी अनुपस्थित धनी, बहुपदधारी बिशप के अधिकार मे होता था और इस पर कोई बहुत कम वेतन पाने वाला मूढ पादरी था जो मास पढाता था, जो उन लैटिन शब्दो को कुछ भी नही समझता था, जिन्हे कि वह गुनगुनाता था। अन्य लोग, जो अपना कार्य अधिक सम्यक् रूप से कर सकते थे, अपने कार्य छोडकर लडन या आक्सफर्ड मे, अथवा किसी बडे आदमी के घर मे, घूमते थे जहाकि उन्हे अधिक स्वतत्र तथा उत्तेजनापूर्ण जीवन तथा अधिक शुल्क मिल पाता था। पादरी के हल्के का पुजारी बहुत कम ही कभी अध्यक्ष (रैक्टर) होता था, अक्सर तो वह उपाध्यक्ष भी नही होता था, अधिकाशत वह पुरोहित ही होता था, जो बहुत कम वेतन पर पदासीन पादरी द्वारा उपेक्षित कार्यो का सम्पादन करता था।

इसका अर्थ यह हुआ कि इगलैड के गॉवो के निवासी पुरोहित से अध्यापन तथा उपदेश का लाभ बहुत कम होता था, यद्यपि मास (ईसाइयो का पूजा समारोह) प्रतिदिन होता था। किन्तु इस अभाव की पूर्ति बहुत सीमा तक उपदेश-कर्त्ता श्रमणो द्वारा नियमित भ्रमणो के सिलसिले मे, अपने थैले के साथ घूमने वाले क्षमा-दाताओ द्वारा, वैक्लिफ के धर्मालोचक सुधारको द्वारा तथा बल के अनुयायी ईसाई प्रजातत्रवाद के प्रचारक उपदेशको द्वारा की जा रही थी। चर्च के क्षेत्र मे हस्तक्षेप करने वाले

इन लोगो को हम चाहे गेहू की खेती मे शायिघास बोने वाले (अर्थात् बाधक) कहे अथवा ईश्वर की खेती की समृद्ध करने वाले, उन्होने देश के धार्मिक तथा बौद्धिक जीवन मे बहुत महत्वपूर्ण भाग लिया। उन्होने उस काल के नवीनतम विचारो, शिक्षाओ तथा समाचारो का सुदूरतम खेतो और झोपडियो तक प्रसार किया, जिनके निवासी अन्यथा अपने पडौस से परे भी कभी नही जा पाते थे और कोई लिखा शब्द नही पढ सकते थे। ये धार्मिक परिव्राजक पैदल या घोडे की पीठ पर चक्करदार पकिल सडको के रास्ते अथवा हरी वीथिकाओ के रास्ते निरन्तर घूमा करते थे। इनके इस घूमक्कड वर्ग की सूची मे अधिक सॉसारिक प्रकार के लोगो, जैसे चारणो, ऐन्द्रजालिको, बाजीगरो, भिखारियो, जादूगरो तथा विरागी और गृहस्थी तीर्थयात्रियो को भी रखा जा सकता है। ये सब घुमन्तू लोग, सुस्सरेड के शब्दो मे, जीवाणुओ के समान थे जो कि जनसमुदाय के अचल भाग को नये युग तथा विशालतर ससार के नये विचारो की छूत लगाते थे। ये लोग भी मध्ययुगीन से आधुनिक की ओर सक्रमण मे सहायक हो रहे थे। किन्तु पादरी द्वारा नियुक्त पुजारी अपने चर्च की चार दीवारी के भीतर राजा था, और वहा वह रविवारो को पूजा कराता था जिसमे कि गॉव के अधिकाश लोग भाग लेते थे।

प्रत्येक रविवार को चर्च के फर्श पर झुकने वाला किसान लैटिन के शब्दो का अर्थ नही जान पाता था, किन्तु तब भी, जब वह आराध्य को देखता था तथा परिचित किन्तु रहस्यपूर्ण शब्दो को सुनता था तो उसके हृदय मे पवित्र विचारो का सचार होता था। उसके चारो ओर दीवारो पर धर्म ग्रथो से तथा सन्तो के जीवन से चित्रित दृश्य विद्यमान होते थे, और दीवारी पर्दे के ऊपर की गैलरी पर "अन्तिम निर्णय" का चित्र आकर्षक रगो मे चित्रित रहता था—स्वर्ग उत्तम व्यक्तियो का स्वागत करने के लिये तत्पर और दूसरी ओर जलता हुआ नरक, जिसमे कि दडधर राक्षस नग्न आत्माओ को प्रपीडित कर रहे चित्रित होते थे। नरक का भय एक बडी प्रभावशाली शक्ति था, जिसका लाभ सभी धार्मिक पोप-पादरी बडी निर्दयतापूर्वक उठाते थे, जिसका उद्देश्य चर्च को अधिक प्रभावशाली बनाना भी होता था और दोषियो से पश्चात्ताप करवाना भी। रूढिवादी लोग चर्च-विरोधियो को तथा चर्च विरोधी लोग रूढिवादियो को नारकीय कष्टो के अधिकारी बताते थे और इस बात मे सभी सहमत थे कि अब नरक मे स्थान बहुत कम होगा क्योकि वहा श्रमणो की बहुत भीड पहले सी ही लगी है।

किसान ईसा की कुड उक्तियो तथा उसके जीवन के कुछ वृतातो को जानता था, और इसके अतिरिक्त बाइबल की अनेक कथाए, जैसे आदम और ईव की, नोआह की बाढ की, सोलोमन की पत्नियो तथा उसकी बुद्धिमता की, जेजेबल के भाग्य की, जेफ्फेथाह तथा उसकी लडकी की "जिससे कि उसने कूए के पास गुजरते हुए सभोग किया था।" यह सब, और ऐसा ही बहुत कुछ और, वह उक्ति चमत्कार पूर्ण भाषा मे वर्णित धार्मिक कथाओ तथा श्रमणो के रोमाचक और मनोरजन धर्मोपदेशो से सीखता था। उसने कभी इगलिश भाषा मे बाइबल नही देखी थी, और यदि उसे इगलिश मे मिलती

भी तो भी वह उसे पढ नही सकता था। उसके अपने घर मे वैसा कुछ नही था जैसा पारिवारिक प्रार्थना या बाइबल के पाठ के अनुरूप कहा जा सकता। किन्तु तब भी धर्म तथा धार्मिक भाषा ने इसके जीवन को आवेष्टित किया हुआ था। क्रॉस पर लटके ईसा का चित्र प्राय ही उसकी आखो के सम्मुख रहता था तथा ईसा के सूली चढने की कथा उसके मन मे रहती थी।

पापो की स्वीकृति एक आवश्यक कर्तव्य था, जो कि सामान्यत पादरी या पुजारी के सम्मुख किया जाता था, किन्तु बहुत बार यह आगन्तुक श्रमण के सम्मुख भी किया जाता था, जो कि इससे मुक्ति अधिक सहज मे दे देता था, और बहुत बार (जैसा कि प्राय कहा जाता था) रिश्वत मे पैसा लेकर, अथवा अच्छे भोजन के बदले मे, अथवा अन्य किसी लाभ के लिये, वह 'क्षमा प्रदान' कर देता था।

किन्तु इन श्रमणो के सम्बन्ध मे बहुत कुछ और भी कहना अपेक्षित है। सेट डेमिनिक के काले श्रमण और उनसे भी अधिक शालीन स्वभाव के सेट फ्रासिस के धूसर वर्णी श्रमिक तेरहवी शताब्दी के इगलैड मे एक सच्ची ईसाई शक्ति के वाहक थे, और चोदहवी शताब्दी मे भी चर्च का अधिकाश प्रचार कार्य वे ही कर रहे थे। अब भी वे महान् उपदेशक थे और उन्होने उपदेश के लिये आकाक्षा उत्पन्न कर दी थी। बौद्धिकता के प्रति प्रबुद्ध युग का अपट सामान्य जन बोले गये शब्द की अधिकाधिक माग कर रहा था, और पादरी से उसे वह पर्याप्त मात्रा मे नही मिलता था।

परिणामत श्रमण चासर के युग मे भी युग की दिशा का निर्धारण कर रहे थे। वाइक्लिफ के अनुयायियो द्वारा जन-प्रचार को जो इतना महत्व दिया जा रहा था वह इन श्रमणो की नकल भी था और ईर्ष्या के कारण भी था। प्रोटेस्टैटो ने जो आगे चलकर पूजा स्थान के बजाय उपदेश मच को अधिक महत्व दिया, वह वास्तव मे उन्होने श्रमणो द्वारा प्रवर्तित इस आन्दोलन को ही आगे बढाया था।

रूढिवादी गृहस्थी पादरी, जो श्रमणो की यह कह कर निन्दा कर रहे थे कि ये लोग अपढ लोगो को आकर्षित करने के लिये भोडी और धर्मतत्व से रहित कहानिया सुनाते है, उसका एक कारण यह भी था कि ये अपने उपदेशो मे बिशपो, मठाधीशो तथा पुजारियो के निठल्लेपन की तथा इनके कर्मचारियो के भ्रष्टाचार की निन्दा करते थे। वाइक्लिफ के जीवन के पहले भाग मे श्रमण लोग सम्पन्न पादरियो के विरोध के लिये उसके मित्र थे, किन्तु जब उसने तत्वान्तरण (ट्रासब्स्टेंश्येशन) के विरुद्ध अपना मत प्रतिपादन किया तब सभी श्रमण सप्रदाय उसके शत्रु हो गये। सिद्धान्तत तो श्रमण लोग, मठाधीशो से भिन्न, भिक्षावृत्ति से रहते थे, उनकी अपनी कोई सम्पत्ति नही थी तथा वे सन्त फ्रासिस द्वारा उपदिष्ट धार्मिक त्याग (निर्धनता) से रहते थे, किन्तु व्यवहार मे उन्होने बहुत धन-सपति का सग्रह कर लिया था, जिसे कि वे अपने भव्य

विहारो मे जमा किये हुए थे। वाइक्लिफ सिद्धान्त को तो पसन्द करता था किन्तु वह उनके व्यवहार का आलोचक था।

यदि हम अग्रेजी शुद्धाचारवाद के कुछ विशिष्ट लक्षणो, जैसे सन्यासवाद, दुश्चरित्रता के विरुद्ध अभियान, रविवासरीय उपासना-नियम के कट्टर पालन, नरक से भय, बिशपो तथा धनी पुजारियो का विरोध, विरोधियो की कठोर निन्दा, मर्मस्पर्शी तथा प्रेरणापूर्ण उपदेशो, अश्रुगलद् भावुकता, दीनो और निर्धनो को इसकी समानता-वादी अपील आदि के मूल की खोज करना चाहे तो यह हमे मध्ययुगीन चर्च मे, और विशेष रूप से श्रमणो के आन्दोलन मे मिल सकता है। किन्तु ये प्रवृत्तिया केवल श्रमणो मे ही पायी जाती, पादरी लैंगलैंड बुन्यन का पूर्वगामी था और वाइक्लिफ के लिये लेटियर तथा वेस्ले द्वारा चरितार्थ सन्यास एक अनुसरणीय आदर्श हो सकता था। जिन विद्वानो ने इधर हाल ही मे १४वी शताब्दी के धर्मोपदेशो तथा अन्य गद्य-पद्यात्मक धार्मिक साहित्य का अत्यन्त विस्तृत और गभीर अध्ययन किया है, वे इस बात के बहुत विरुद्ध है कि कोई आधुनिक दल मध्ययुगीन धर्म पर अपना अधिकार जताए या कोई अन्य दल उसका खडन करे। क्योकि, उसके अनुसार, मध्ययुगीन चर्च हम सब का जन्म प्रदाता है।[1]

दूसरी ओर, उत्तरकालीन अग्रेजी प्रोटेस्टेट धर्म मे ऐसे तत्व थे जो किसी भी प्रकार से मध्ययुगीन नही कहे जा सकते। पारिवारिक पूजा तथा पारिवारिक और व्यापारिक जीवन का धर्म को समर्पण ये प्रोटेस्टेटो की पीछे की देने है। मध्ययुगीय आदर्शो तथा कार्य-कलाप मे इनको कही स्थान नही था, क्योकि मध्ययुगीय आदर्श मुख्यत आदिम ईसाइयत की विरागात्मक तथा असासारिक प्रवृत्तियो से प्रेरणा प्राप्त करते थे। यद्यपि व्यवहार मे ऐसी कोई बात नही थी, किन्तु तब भी सिद्धान्त मे यही आदर्श थे।

जबकि श्रमणो के शत्रु यह शिकायत करते थे कि ये लोग बहुत अति करते थे और अव्यापार मे व्यापार करते थे, ईसाई साधुओ के विरुद्ध भी यह दोषारोपण किया जाता था कि ये लोग प्राय कुछ नही करते है। जिन मठो तथा आश्रमो ने कभी इगलैंड को एक उत्कृष्ट नेतृत्व दिया था, उनमे अब धार्मिक उत्साह की ज्वाला तथा ज्ञान का प्रकाश बहुत मन्द पड गये थे। अब राजा कभी किसी विरक्त मठाधीश को आमन्त्रित कर पृथ्वी पर दया करने की प्रार्थना नही करता था और उससे यह अनुरोध नही करता था कि वह राज्य के बदले मे अपनी अनुकम्पा और वरदान दे दे। अब कैंटरबरी का महन्त विद्वत्ता तथा दार्शनिकता मे पैरिस के विश्वविद्यालय के प्रोफेसर

---

[1] पीपल्स फेथ इन दि टाइम आफ वाइक्लिफ, बी मैन्निग, पृ० १८६-१८९, तथा पैस्सिम, प्रीचिग इन मैडीवल इग्लैंड, जी आर औस्ट, पृ० XII, ९१-९५ तथा पैस्सिम (कैम्ब्रिज प्रैस)।

की स्पर्धा के योग्य नही रहा था, अब देश का उच्च चिन्तन तथा शिक्षण ऑक्सफर्ड मे केन्द्रित था और वहाँ बौद्धिक प्रभाव मुख्यत श्रमणो तथा गृहस्थ पादरियो का था। न अब ये महन्त लोग राजनीति मे वैसा महत्वपूर्ण भाग लेते थे जैसा बैरोन युद्ध मे लेते थे। पुरावृत्त अब भी मठो मे ही तैयार किये जाते थे, किन्तु वे केवल पिछले युग की एक साहित्यिक परम्परा का ही सवहन कर रहे थे जबकि फ्रोइस्टर नामक एक असन्यासी व्यक्ति इतिहास लेखन मे नये प्रतिमान स्थापित कर रहा था। तेरहवी शताब्दी मे सेट अलबास मठ का मैट्थ्यू पैरिस नामक एक साधु वास्तव अर्थ मे एक महान् इतिहासज्ञ हुआ है, किन्तु चासर के काल के मठीय पुरावृत्त लेखक, यहाँ तक कि वाल्सिघम जैसा अत्युत्कृष्ट लेखक भी, घटनाओ के सापेक्ष महत्व को समझने मे समर्थ नही थे और न उनमे यह सामर्थ्य ही थी कि वे अपने मठो की चार दीवारी के बाहर ससार की घटनाएँ समझ सकते। उसे अपने मठ के स्वार्थों के अतिरिक्त अन्य किसी चीज का ध्यान नही था। उसका सारा जीवन मठ की सीमाओ मे ही बीता, वह केवल अपनी सुदूर-स्थित सम्पत्तियो के किराये इकट्ठे करने के लिये, अथवा मठपति के साथ शिकार के लिये, अथवा कभी लदन जाने के लिये ही अपने मठ से बाहर निकलता था। घर पर वह अपना समय अपने भाई-बन्धुओ के साथ बिताता था जिनके अनुभव का क्षेत्र उतना ही सीमित था जितना उसका अपना था। इसलिए इसमे कोई आश्चर्य की बात नही है कि मठ के लोग नगर-निवासियो या किसानो की मागो का इतना कडा विरोध करते थे जिनके लिये कि परिवर्त्तित परिस्थितियो मे मठो के स्थानीय विशेषाधिकार अत्यन्त कष्ट तथा क्षोभ-जनक प्रतीत होने लगे थे। सब प्रकार से ससार आगे बढ रहा था, किन्तु मठ का जीवन स्थिर खडा था। केवल यार्कशायर तथा उत्तर मे ही मठ लोकप्रिय थे और सामान्य ध्वस के काल तक वैसे रहे।

चासर के काल के इगलैंड मे मठो के साधु सासारिक रूप से चतुर तथा समृद्ध थे, और मठो मे विश्रामपूर्ण ऐश्वर्य का जीवन व्यतीत करते थे, अथवा साधारण व्यक्तियो की वेषभूषा मे घूमते थे तथा शिकार करने, अथवा अपनी सपत्तियो की सभाल करने मे व्यस्त रहते थे। वे सख्या मे बहुत अधिक नही थे—तो भी हेनरी अष्टम् के काल मे, जबकि उनको समाप्त किया गया, वे ५००० से अधिक थे। अपने पूर्वजो के अनुरूप श्रम करने का अभ्यास छोड देने के कारण उनके अनेक एकडो तक विस्तृत विशाल प्रतिष्ठानो की दैनिक कार्य-व्यवस्था के लिये उन्हे नौकर-चाकरो की पूरी एक सेना ही रखनी पडती थी। बरी सेट एड्मड्स तथा एबिग्डन के मठ इसके उदाहरण है। मठो के साधु जीवित या मृत के लिये, तथा अपने सरक्षको और सस्थापको के लिये प्रार्थनाएँ तथा मास स्वय करवाते थे। वे अपने दीनो को दैनिक बलि पैसे तथा आमिष के रूप मे बाटते थे, तथा अभ्यागतो को, जिनमे से बहुत से बहुत धनी होते थे, अत्यन्त उदार आतिथ्य प्रदान करते थे। धनी अतिथि मठाध्यक्ष या उपाध्यक्ष के साथ भोजन करते थे, और साधारण अतिथियो को मठ के अतिथि-गृह मे स्थान मिलता

था। सस्थापको के सम्बन्धी प्रभावशाली सामन्त तथा सरदार मठो के अनिथि, अधिकारी अथवा प्रतिनिधि होने का दावा करते थे और इनकी सम्पत्ति के बहुत बडे भाग का उपभोग करते थे, और साथ ही साधु, और विशेषत मठाध्यक्ष भी अपनी सुख-सुविधा के लिये बहुत अधिक व्यय करते थे।[१]

मठो ने इस समय तक भूमि, दशाश कर, हस्तगत चर्चो, कोशो तथा सरक्षकता के रूप मे विशाल सपत्तियो का सग्रह कर लिया था—इतना कि उनकी 'निठल्ले' और 'निर्धन प्रजा के रक्त-शोषक' कह कर आलोचना होने लगी। लोकसभा ने यह घोषित किया कि इगलैंड की सम्पत्ति का तीन चौथाई चर्चो के अधिकार मे था, जिसका अधिकाश नियमित पादरियो का स्वामित्व था। तो भी मठो के ये स्वामी निरन्तर आर्थिक कठिनाइयो मे रहते थे। कभी तो अपने मठो और सलग्न चर्चों को भव्य शिल्प से सुसज्जित करने के उत्साहातिरेक के कारण और कभी केवल कुप्रबन्ध ही के कारण। ऐसे महन्त, जिनमे कार्लाइल के सेम्सन के समान अन्य गुणो के अतिरिक्त, व्यापार की योग्यता भी अच्छी थी, पिछले दिनो मे बहुत दुर्लभ हो गये थे, यद्यपि कुछ प्रमुख गिरजो के महन्त, जैसे कैंटर्बरी का, पिछले दिनो मे भी अपने वित्त का सुचारू प्रबन्ध रखते रहे तथा अपनी सुदूर-स्थित सपत्ति की उचित व्यवस्था करते रहे। प्लेग का प्रकोप मठो पर उतना ही भयानक था जितना सामान्य लोगो पर। इटेलियन तथा अग्रेज साहूकार, जिन्होने कि यहूदियो को स्थानान्तरित किया था, उतना ही अधिक सूद ले रहे थे और मठो के साधु उनके फँदे मे आसानी से फँस जाते थे। मठ प्राय ही साहूकारो से, उन्हे जीवन भर का वार्षिक-व्यय-शुल्क देने के बदले मे, पैसा उधार ले लेते थे और वह प्राय ही बहुत लम्बी आयु जीता था।

पहले समय मे मठीय जमीदारो की भूमियाँ, जिनका प्रबन्ध सीधे उनके अधिकारी ही करते थे, सम्पत्ति के प्रबन्ध तथा कृषि-सुधार के उत्कृष्ट उदाहरण थे। और यह स्थिति केवल यार्कशायर के उपत्यका प्रदेश मे ही नही थी बल्कि दक्षिण के कृषि-योग्य तथा चरागाहो वाले प्रदेशो मे भी थी। किन्तु १५वी तथा १६वी शताब्दियो मे मठो की भूमियाँ प्राय ही साधारण लोगो को दीर्घकालीन पट्टे पर दी जा रही थी, और ये लोग या तो इन पर स्वय कृषि करते थे या आगे पट्टे पर दे देते थे। इस तथा अन्य अनेक प्रकार से मठो की सम्पत्तियो पर सामान्य लोगो का नियत्रण अन्तिम विलयन से बहुत पहले आरम्भ हो चुका था।

मठो मे बहुत बार प्रवाद के अवसर भी उपस्थित हो जाते थे, और धर्म पर श्रद्धा

---

[१] स्नेप-इगलिश मोनास्टिक फाइनेंसिस, कैम्ब्रिज यूनीवर्सिटी प्रैस, १९२६, सेविने-इगलिश मोनास्ट्रीज आन दि ईव आफ दि डिस्सोल्यूशन, ऑक्सफर्ड स्टडीज, स० विनोग्राडोफ, १९०९।

रखने वाला गोवर इस सम्बन्ध मे उतना ही निश्चित तथा जितना वाइक्लिफ, कि महन्त लोग दुराचारी हैं। किन्तु यदि उस युग के सभी वर्गो मे आचरण के निम्न-स्तर को तथा अविवाहित पादरियो की विशिष्ट कठिनाइयो को ध्यान मे रखकर देखा जाय, तब यह समझना उचित है कि इस दृष्टि से मठो मे बहुत अधिक दुराचार था। निश्चय ही पिछले युगो की त्याग भावना मर चुकी थी और अब महन्त लोग नियम-निष्ठना के आदर्श नही रहे थे। सामान्य साधु भी अब, उस युग के जीवन-स्तर के अनुसार, बहुत ऐश के साथ रहते थे, बढिया और चुस्त कपडे पहनते थे तथा पौष्टिक और सुस्वादु भोजन करते थे। उनके आमिषाहार पर लगाये गये पहले के निषेध अब शिथिल हो गये थे। वे बाहरी खेलो (फील्ड स्पोर्ट्स) के शौकीन थे—किन्तु उसी प्रकार से अन्य लोग भी थे। इन खेलो मे स्वय कोई दोष नहीं था, किन्तु इसमे उनके साधु होने का वैशिष्ट्य नही रहता था, और इस प्रकार से उनकी साधु के रूप मे उपयोगिता समाप्त हो जाती थी। यही कारण था कि वे इस कारण से भी आलोचना के विषय थे। लैगलैड उनके विरुद्ध जो भयानकतम दोषारोपण कर सका वह था

वह घुड सवारी करता था, गली-कूचो मे आवारा घूमता था, प्रेम-दिवसो (सामन्ती दरबार की बैठको) का वह नेता था, तथा भूमि-क्रेता था, एक जागीर से दूसरी जागीर मे वह घोडे पर घूमता था, उसके पीछे पालतू कुत्तो का झुड रहता था, मानो वह कोई लार्ड हो।[१]

और कवि उस दिन की प्रतीक्षा करता है जो काल-क्रम मे आया भी—

जिस दिन कि अबिग्डन के महन्त तथा उसकी सभी सन्तानो पर राजा आघात करेगा, और उस आघात के घाव का कभी उपचार नही होगा।

चर्च के सुधारक, जो कि पोप तथा बिशपो से व्यग्र और विक्षुब्ध थे, अब राज्य-शक्ति की ओर आशा से देख रहे थे। पार्लियामेट तो पहले से ही चर्च की बहुत बडी सम्पत्तियो का भाग छीन लेने की माग कर रही थी, जिन्होने कि अनेक पीढियो से

---

[१] साधु के जीवन की लैगलैड द्वारा आलोचना, अधिकाश आधुनिक आलोचना के समान, जिसमे वाइक्लिफ की आलोचना भी शामिल है, उनके विरक्त तथा एकान्त जीवन के विरुद्ध नही थी, बल्कि ठीक इसके विपरीत, उनके द्वारा इस आदर्श मे विमुख रहने के कारण थी। 'मध्य युगो को इसमे कोई सन्देह नही था कि विरागात्मक जीवन चुनने वाली मेरी कर्म का जीवन चयन करने वाली मार्था से उत्कृष्ट थी। किन्तु साधु अब मार्था बने बिना ही मेरी का जीवन त्याग चुके थे। मै पाठको को पिअर्स दि प्लोमैन अच्छी तरह से समझने के लिये इस विषय पर आर० डब्लू० चॉबर की पुस्तक मैन्स अनककर्ड माइड (१९३९) पढने का परामर्श दूँगा।

दान-कर्त्ताओ की विशाल भूमियो को निगल रखा था, और एक एकड भी वापिस नही किया था । किन्तु अभी समय नही आया था कि सामान्य लोगो की नैतिक चेतना यह समझती कि सासारिक शक्ति चर्च की धार्मिक सम्पत्तियो को इस प्रकार से छीन सके । पार्लियामेट मे राजा की सर्वशक्तिमत्ता अभी वैधानिक रूप से पूर्णत निश्चित नही हुई थी । चर्च तथा राज्य की पार्लियामेट तथा पादरी-सभा की समानान्तर सत्ताएँ समाज मे वास्तव सन्तुलन का प्रतिनिधित्व कर रही थी ।

चासर के युग मे चर्च मानवता की सेवा की एक बहुत बडी शाखा मे न तो ह्रासोन्मुख था और न अचल ही । चर्च सम्बन्धित शिल्प की सतत किन्तु निरन्तर गतिमान परम्परा अभी भी भव्य गति से अग्रसर हो रही थी और इगलैड को वास्तु शिल्प के अत्यन्त समृद्ध निर्माणो से भर रही थी, जिनकी तुलना न तो प्राचीन काल ही कर सकता है और न आधुनिक ही । वास्तु कला मे प्लेग के कारण आये सक्षिप्त अवरोध के अतिरिक्त मठो तथा चर्चो मे अग्रेजी वास्तु कला की प्रगति और लहरीली ज्वालाकृतिवत् नक्काशी के युग से ऋजु लम्बाकृति की ओर हुई, इसकी मुख्य विशेपता नक्काशी की समृद्धता तथा वृहदाकार खिडकिया थी जिनमे कि प्रस्तर स्तभ बने होते थे । बिशप अथवा उसका सहकारी अपने निरीक्षण के समय छोटे पुराने नार्मन काल के चर्च की 'बहुत छोटा बहुत अधेरा' कहकर भत्सर्ना करते थे यद्यपि वह अपने ढग से बहुत उत्कृष्ट बना होता था । नये चर्चो मे प्रकाश रेगता हुआ नही आता था बल्कि रगे शीशो मे से होकर बाढ के समान आता था । इन शीशो का रहस्य आज पूरी तरह से हमारी पहुच के बाहर हो चुका है, उससे भी अधिक जितना कि शिल्प का जादू । इसमे कोई सन्देह नही है कि मध्ययुगीय चर्च बहुत सम्पन्न हो गया था, इसमे भी सन्देह नही है कि उनके स्पर्धी अध्यक्ष तथा समितिया गर्व, ऐश्वर्य तथा सकुचित महत्वाकाक्षाओ के शिकार थे, किन्तु यदि चर्च का वही रूप होता जैसा सैंट फ्रासिस अथवा वाइक्लिफ—जो कि एक निवेदित इसाई धर्म-परायण व्यक्ति था—चाहता था, तो वे अत्यन्त भव्य मठ और विहार कभी नही निर्मित हो पाते जो शताब्दियो से खडे एक के बाद दूसरी पीढी को दृष्टि पथ से, भक्ति का महत्तम अनुभव प्रदान कर रहे है ।

मध्ययुगीय चर्च का एक बहुत बडा अग, जिसमे लाभवचित पुजारी, डीकन (छोटे पादरी) तथा क्लर्क थे, देश भर मे बिखरे हुए थे और सब प्रकार की जीवन वृत्तियो मे लगे हुए थे, इन पर चर्च का कोई नियत्रण नही रहा था। अधिकाश अवस्थाओ मे वे आजकल के सामान्य सासारिक लोगो द्वारा किये जाने वाले कार्य करते थे । वे क्लर्क थे (इस शब्द के दोनो अर्थो मे) जो व्यापारियो, जमीदारो या राज्याधिकारियो के यहा लिखने और हिसाब रखने के कार्य करते थे । दूसरे सामन्त-गृहो अथवा किलो मे व्यक्तिगत पुरोहितो के रूप मे धार्मिक कृत्य सम्पादन कर रहे थे अथवा वे चाट्री पुजारी के रूप मे मृत व्यक्तियो की आत्माओ की शान्ति के लिये दान लेकर पूजा करते

थे। अनेक एक कार्य से दूसरे कार्य पर घूमते आलस्य और अन्य बुरी आदतो के शिकारी होते थे और अन्त मे किसी भी कार्य के अयोग्य हो जाते थे।

व्यापार-गृहो तथा कानूनी और राजकीय कार्यालयो मे नियुक्त 'क्लर्क' समाज के लिये उपयोगी कार्य कर रहे थे, और अपने अन्य सहकारियो से न बुरे थे न अच्छे। किन्तु इस बात को देखते हुए कि ये लोग चर्च के नियत्रण मे इतने कम थे, यह एक 'दुर्भाग्य पूर्ण' (अनुचित) बात थी कि ये लोग किसी भी अर्थ मे पादरी गिने जाते थे। पादरियो से, निम्न स्तर के पादरियो के निम्न स्तरो के अतिरिक्त, पादरियो के लिये विवाह निषिद्ध था,[1] जबकि इनमे मे अधिकाश के लिये यह अच्छा था कि वे विवाह करके गृहस्थ का जीवन व्यतीत करे। उस समय के साहित्य मे 'क्लर्क' प्राय ही प्रेम सम्बन्धी षड्यन्त्रो के नायक के रूप मे चित्रित किये गये मिलते है। इसके अतिरिक्त जब वे चोरी या हत्या के अपराध करते थे तब वे पादरी होने के आधार पर राजा के कठोर न्याय से बच जाते थे और धार्मिक न्यायालय के हल्के प्रायश्चित का दड उन्हे भोगना पडता था। इसलिये इसमे कोई आश्चर्य की बात नही है कि 'अपराधी क्लर्क' अक्सर अपने तथा चर्च के लिये, जिससे कि उनका बहुत शिथिल सबध होता था, अपयश और निन्दा अर्जित करते थे।

क्लर्कों के लेखन, अध्ययन तथा लेटिन मे शिक्षा का पहले ही काफी अच्छा प्रबध था। लेटिन की शिक्षा देने वाले तीन से चार सौ तक विद्यालय, जिनमे से अधिकाश बहुत छोटे प्रतिष्ठान थे, इगलैड भर मे बिखरे हुए थे। प्राय मठो या विहारो के, अथवा हस्पतालो, व्यापारिक सगठनो अथवा प्रार्थना-मन्दिरो के आधीन होते थे। ये अधिकारी जिन अध्यापको को नियुक्त करते थे वे ससारी पादरी होते थे। निम्न वर्गों के चतुर लडके ऐसे स्कूलो के द्वारा क्लर्क अथवा पुजारी की स्थिति प्राप्त कर लेते थे, क्योकि चर्च अभी भी उन महत्वाकाक्षाओ का वाहक था जिनकी उपलब्धि निर्धनो के लिये भी सभव थी। किन्तु १८वी शताब्दी तक, जबकि धर्मार्थ विद्यालय अस्तित्व मे आए, सामान्य लोगो की साक्षरता देने का कोई प्रयन्न नही किया गया।

१३८२ मे विलियम वैकेहम ने, ससारी पादरियो के उत्कृष्टतर शिक्षण के लिये विचैस्टर मे एक लैटिन विद्यालय की स्थापना की जो अपनी भव्यता और विशालता मे

---

[1] वास्तव मे बहुत से पादरी, जिनमे पैरिशो के पादरी भी शामिल थे, विवाहित थे। ऐसे विवाह अनियमित और भग करने योग्य थे, किन्तु तब तक भग नही किये जाते थे जब तक न्यायालय मे उनके विरुद्ध शिकायत नही की जाती थी। अन्य अल्पाधिक स्थायी रखेलपन की स्थिति मे रहते थे। आग्ल पादरी नार्मन विजय के बाद चर्च द्वारा आरोपित ब्रह्मचर्य की व्यवस्था के विरुद्ध थे। इसके विरुद्ध तब तक सघर्ष जारी रहा जब तक कि "सुधार" ने विद्रोहियो को विजय से मडित नही कर दिया।

अभूतपूर्व था, और यह उतने ही भव्य भावी विद्यालयो के लिये, जैसे एटन के, एक आदर्श बना। आगे चलकर इनमे कुछ अनुपात मे सामन्तो और अन्य शक्ति सपन्न लोगो के बच्चे भी विद्यार्थी बनने वाले थे। इस नियम मे, जेसा कि मध्ययुगीय विद्यालयो के एक इतिहास लेखक का कथन है, पब्लिक स्कूल व्यवस्था के बीज विद्यमान थे। (ए एफ लीश, विचेस्टर कालेज, पृ ९६)।

इगलैड के दो विश्वविद्यालय पहले से ही विद्यमान थे, किन्तु तब तक ये अभी इन विद्यालयो के स्पर्धी नही बने थे, क्योकि कैम्ब्रिज केवल १५वी तथा १६वी शताब्दियो मे ही राष्ट्रीय महत्व की सस्था बन सका था।

चासर के काल मे, आक्सफर्ड इगलैड का बौद्धिक केन्द्र था और उसमे वाइक्लिफ का प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण तत्व था, जब तक कि वह तथा उसके साथी विश्वविद्यालय से उसके स्वायत्त जीवन मे राजा तथा बिशपो के हस्तक्षेप द्वारा, निकाल नही दिये गये, या मूक नही बना दिये गये (१३८२)। यदि आक्सफर्ड सगठित होता तो उसकी स्वतत्रताओ का अपहरण अधिक कठिन होता। किन्तु वहाँ देर से शिक्षको के दो दल थे, ससारी तथा नियमित पादरियो के दल, ससारियो ने वाइक्लिफ का पक्ष लिया जबकि दूसरे उसके विरुद्ध हो गये।

'नियमित' केवल साधु तथा श्रमण लोग ही थे, जिनके अपने मत के अनेक बृहत् शिक्षणालय विश्वविद्यालय के साथ सम्बन्धित थे। इससे पहली शताब्दी मे श्रमण लोग ग्रोस्सेटैटै, रोजर बेकन तथा डस स्कोटस आदि के द्वारा शैक्षणिक विचार का नेतृत्व कर रहे थे, और अब भी आक्सफोर्ड मे इनकी शक्ति बहुत थी।

'ससारी', जिसमे ससारी पादरी वाइक्लिफ जैसे पुजारी, तथा निचले स्तर के डीकन तथा क्लर्क सम्मिलित थे, अपने आपको मुख्य विश्वविद्यालय के कर्त्ता-धर्ता मानते थे। ये लोग शिक्षार्थी पहले थे और चर्च के आदमी पीछे। ये लोग विश्वविद्यालय की 'स्वतत्रताओ' के प्रति उतने ही सचेष्ट थे जितने नगरवासी लोग अपने नगर की स्वतत्रताओ के प्रति। ये पोप के हस्तक्षेप, राजकीय शासनादेश तथा नगर के दावो के प्रति सदैव जागरूक रहते थे उनके अधिकार आक्सफर्ड के गदे होम्टलो मे रहने वाले उद्दड और हिसा-पूर्ण अवर-स्नातको द्वारा पूर्णत सुरक्षित थे। ये अवर-स्नातक अवसर उपस्थित होने पर बिशप के सदेहवाहक को मारने-पीटने, राजा के अधिकारियो को हूट करने तथा कुलपति के विरुद्ध नगरपालिकाध्यक्ष का पक्ष समर्थन करने वाले जन समुदाय को भालो-छुरो से मारने के लिए तत्पर रहते थे।

नगरजन तथा विश्वविद्यालय के लोग बाजार मे खुली लडाई मे छुरो तलवारो तथा तीरो तक का प्रयोग करते थे। १३५५ मे नगरनिवासियो ने क्लर्को तथा विद्यार्थियो की सगठित रूप से हत्या की बचे हुए आक्सफर्ड से भयत्रस्त होकर भाग गये और विश्वविद्यालय बन्द कर दिया गया, जब तक कि राजा ने अध्यापको और

विद्यार्थियो को मुरक्षा का आश्वासन देने के लिये हस्तक्षेप नही किया। कैंब्रिज मे, १३८१ के दगो मे, नगर के लोगो ने विश्वविद्यालय के रजिस्टरो और अन्य अभिलेखो को ध्वस्त कर दिया।

मध्ययुगीय विद्यार्थी, कालेज प्रथा के विकास से पूर्व, उपद्रवी उद्दड तथा दूराचारी था। वह अत्यन्त निर्धन था, वह पुस्तको के अभाव तथा अध्यापन की अपर्याप्तिता के कारण प्राय बहुत कम सीख पाता था और बिना उपाधि प्राप्त किये ही विश्वविद्यालय छोड देता था। किन्तु फिर भी अनेक विद्यार्थी सीखने को बहुत उत्सुक थे, अथवा कम स कम वाद-विवाद मे चतुर होने के लिये। इनमे से कुछ चौदह वर्ष की आयु के होते थे, किन्तु अधिकाश आजकल के अवर स्नातक स्तर के विद्यार्थियो की आयु के थे। अधिकाश अभी भी सामान्य ससारी जन ही थे, किन्तु लगभग सभी, कम से कम, क्लर्क बनने के इच्छुक थे, यदि साथ-साथ पुजारी भी बन पाते तब तो कहना ही क्या। इसमे कोई सन्देह नही हो सकता कि आक्सफर्ड तथा कैंब्रिज के जीवन-काल मे अर्जित आदते ही बहुत से पादरी-पुजारियो के बाद हिंसापूर्ण और षड्यत्रपूर्ण आचरणो के लिए उत्तरदायी थी। विश्वविद्यालयो के अधिकारियो ने, राज्य तथा चर्च की मूर्खता का अनुकरण करते हुए विश्वविद्यालय मे युवको के लिये खेल-कूद आदि व्यायामो का निषेध कर दिया, किन्तु इसके लिये विशेप प्रयत्न करने की कोई आवश्यकना नही देखी कि वे मदिरालय या वेश्यागारो मे नही जाय, कुछ तो लूटमार के लिए गिरोह बना कर गाँवो मे घूमते थे।

किन्तु आखिरकार, इगलैंड ने इन कुत्साओ का उपचार खोज लिया। कालेज-व्यवस्था का उद्भव यद्यपि पैरिस मे हुआ था, किन्तु अन्त मे यह इगलैंड के दो विश्व-विद्यालयो का विशिष्ट लक्षण बन गया। तेरहवी शताब्दी के पिछले वर्षों मे आक्सफर्ड मे अनेक कालेज स्थापित किये गये, तथा कैम्ब्रिज मे पीटर हाउस कालेज की स्थापना हुई। किन्तु कालेज-जीवन अभी भी अपवादरूप ही था, तथा वाइक्लिफ की आजीविका के आरभिक दिनो मे आक्सफर्ड विश्वविद्यालय के तीन हजार विद्यार्थियो मे से एक सौ से भी अधिक इस अनुशासन मे रहे होगे, यह सन्देह की बात है। किन्तु वाइक्लिफ की मृत्यु से पूर्व ही वाइकेहम के विलियम ने अपने भव्य कालेज की स्थापना कर दी थी जिसमे सौ क्लर्क अध्ययन करते थे। अनुकरण के लिए ऐसा आदर्श रहते इगलैंड की कालेज व्यवस्था अगली दो शताब्दियो मे नित्य नये प्रतिष्ठानो की स्थापना के साथ बढती गयी।

धार्मिक विवाद के कारण कालेजो की माँग तथा उसकी पूर्ति करने मे प्रतिष्ठापको की तत्परता बढ गयी थी। कट्टरपथी लोग अगली पीढी मे क्लर्क (पादरी) बनने वाले बच्चो को ऐसी सस्थाओ तथा ऐसे अध्यापको के सरक्षण मे रखना चाहते थे जो वाइक्लिफ के विद्रोही विचारो से बचा सकते थे, जो कि इन सरायो तथा

होस्टलो आदि मे निरन्तर फैल रहे थे जिनमे ये विद्यार्थी ठुसे रहते थे। यहाँ ये विद्यार्थी जमीन आसमान तक की सभी बातो पर ऐसी स्वतन्त्रता से विवाद करते थे जो उत्तरदायित्व शून्य तथा उद्दड युवको की विशेपता है। और, धार्मिकता सम्बन्धी बातो के अतिरिक्त, माता-पिता तथा अन्य व्यावहारिक लोग शिक्षा-गृहो की उपयोगिता युवको को भौतिक तथा आचारिक दोपो से बचाने के रूप मे भी देखते थे, जो कि सभवत उनकी दृष्टि मे, उतने ही बुरे थे जितने वाइक्लिफ के बौद्धिक दोप। कालेज व्यवस्था ने इगलैंड मे अपनी जड जमा ली और वहाँ ऐसी फली-फूली जैसी अत्यन्त कही नही फली-फूली। इस काल मे कालेज की आय का प्रबन्ध अधिकाशत मठो की आय के प्रबन्ध की अपेक्षा उत्कृष्टतर था।

परिणामत जब पन्द्रहवी शताब्दी मे धार्मिक तथा चर्च सम्बन्धी प्रश्नो पर विवाद करने के विरुद्ध लगाये गये प्रतिबन्ध लडखडा गये तब एक शताब्दी तक इगलैंड के विश्वविद्यालयो मे तीव्रगति से बौद्धिक विकास हुआ तथा कालेजो की सख्या मे वृद्धि हुई और परिणामस्वरूप विद्यालयो मे आचार तथा अनुशासन का स्तर बहुत समुन्नत हो गया और विद्यालय-जीवन का सास्कृतिक स्तर भी उन्नत हुआ। इगलैंड की बाद की पीढियाँ इसके लिये उत्तर मध्यकालीन ऑक्सफर्ड तथा कैब्रिज की बहुत ऋणी है।

शिक्षा की एक बहुत महत्वपूर्ण शाखा ने अपने लिये आक्सफर्ड तथा कैम्ब्रिज के अतिरिक्त एक अन्य स्थान खोजा। व्यावसायिक वकीलो ने, जो कि राजा की कचहरी मे चलने वाले सामान्य विधि-नियमो का निर्माण कर रहे थे, इस विधान की शिक्षा के लिये लन्दन तथा वेस्टमिस्टर के बीच अपने लिए छात्रावास तथा विधि-समितियाँ बना ली थी। मेटलैंड ने उसका वर्णन इस प्रकार से किया है ये वकीलो की सस्थाएँ थी, जिनके साथ अच्छे खासे क्लब, कालेज जैसी कुछ सस्थाएँ तथा श्रमिक सघ जैसे सगठन भी सयुक्त थे। उन्होने सराये तथा आश्रमादि अपने अधिकार मे कर लिए थे। ये प्राय बडे सामन्तो की सम्पत्तियाँ थे, उदाहरणत जैसे लिकोन के अर्ल की सराय। गिरजे के सरदारो के घर तथा चर्च उनके हाथ म पड गये। कचहरी की सरायो के सदस्य वकीलो तथा उनके शिष्यो को कचहरी मे वकालत करने का एकमात्र अधिकार था। ये सार्वजनिक वकील, सामान्य जनो मे सबसे पहला शिक्षित वर्ग था, और इसलिए राष्ट्र की वृद्धि मे इस वर्ग का बहुत महत्व था।

अध्याय ३

कैक्स्टन के युग का इंगलैंड

(हेनरी षष्ठम् १४२२। एड्वर्ड चतुर्थ १४६१। एड्वर्ड पंचम १४८३। रिचर्ड तृतीय १४८३। हेनरी सप्तम् १४८५)

आज हमारे लिये यह कल्पना करना भी बडा कठिन है कि आविष्कारो के युग से पूर्व सामाजिक परिवर्तन की दर कितनी मन्द थी। इगलैंड मे चौदहवी शताब्दी की सामाजिक तथा बौद्धिक हलचल के बाद यह आशा की जा सकती थी कि कुछ बृहत् तथा नाटकीय घटित होगा। तो भी, पन्द्रहवी शताब्दी जीवन के अधिकाश पक्षो मे अत्यधिक अपरिवर्तनशील प्रमाणित हुई।

यदि चासर प्रेत रूप मे कैक्स्टन के जीवन-काल मे (१४२२-१४६१) इगलैंड मे कही आता तो उसे लगभग ऐसा कुछ दिखाई नही देता जिससे उसे विस्मय होता, सिवाय इस बात के कि चर्च के विरुद्ध इतनी सब चर्चा का कोई भी परिणाम नही निकला। जब वह परिचित प्रकार की गदी और टूटी-फूटी सडको पर चलता, तथा गहरे नालो और टूटते पुलो को पार करता तो वह किसानो को अपने बैलो के साथ बडे खुले क्षेत्रो के उन्ही खडो को जोतते हुए पाता, और केवल उसी अवस्था मे उसे यह ज्ञात हो पाता कि इनमे से बहुत कम लोग अब पहले के समान भू-दास रह गये है, यदि वह सामन्त के दरबार मे जाकर देखता। रास्ते पर मिलने वाले लोग अब भी उसी प्रकार के होते जिस प्रकार के लोगो से वह इतना सुपरिचित था — उतनी ही सख्या मे तीर्थयात्री और उसी प्रकार के हास्य-प्रिय लोग, जैसो के साथ उसने कैटर्बरी की यात्रा की थी, श्रमण, सम्मान देने वाले, क्षमा-वितरक अब भी उसी प्रकार से सामान्य लोगो को छलते हुए, अपने सामान से लदे घोडो की पक्तियो की सभाल करते हुए व्यापारी, उसी प्रकार से अमीर तथा मठो के लोग अपने बाजो और शिकारी कुत्तो के साथ, सामन्त के सैनिक और भृत्य धनुष और बाण से सुसज्जित उसी प्रकार के अनुचित और अनाचारपूर्ण प्रयोजनो मे नियुक्त जैसे ग्राम-प्रदेशो को अपने अत्याचार से भयभीत रखने वाले गाट के जोह्न के भृत्य थे। अलबत्ता वह उनकी इगलैंड की भूमि पर लडे गये युद्धो की चर्चा से यह निष्कर्ष निकाल सकता था कि इस समय अव्यवस्था उससे भी कही अधिक भयानक थी जितनी कि स्वय उसके जीवन-काल मे थी, किन्तु शासन की भ्रष्टता के कारण वही थे जो उसके काल मे थे, बडे आदमियो के सैनिक ईमानदार लोगो को,

न्यायालयो को, यहा तक कि स्वय उच्चतम न्याय सभा (प्रिवी काउसिल) को भी त्रस्त कर रहे थे। चासर को सडक पर चलती बातचीत से यह अनुमान करने मे कोई देर नही लगती कि एगिकोर्ट का युद्ध उसके देशवासियो के मनो मे पुनर्जागृत हो गया है जिसका विचार शुरु मे क्रेसी ने रोपित किया था, जबकि वह स्वय अभी बच्चा था। उसने इगलैड मे यह भावना स्फूर्तित कर दी थी कि प्रत्येक अग्रेज तीन विदेशियो को पराजित कर सकता है, और कि फ्रास पर राज्य करना और उसे लूटना इगलैड के लोगो का एक व्यावसायिक कार्य तथा मनोविनोद का विषय है। परिणामत इगलैड के अपने सामाजिक दोष सदा की तरह ही असाध्य बने रहे। क्योकि फ्रास मे उसकी सफलता अब एगिकोर्ट के बाद उससे अधिक स्थायी नही रही जैसी क्रेसी के बाद रही थी, चैनल पर से पुन पीछे धकेली जाने पर व्यक्तिगत रूप से स्थापित सेनाओ ने बडे आदमियो के सेवक सैनिको के रूप मे इगलैड मे पुन आतरिक शान्ति को भग करना आरभ किया।

हमारे इस विचरण करते हुए प्रेत के ध्यान मे यह भी पड सकता है कि अधिकाश नगर उसके काल से, अब तक बिना किसी वृद्धि-विकास के, उसी प्रकार से खडे है, और कुछ तो सिकुड भी गये है। किन्तु लदन और ब्रिसल बडे है और इनके चारो ओर कुछ बस्तिया भी विकसित हुई है। नगरो तथा ग्रामो मे कुछ बहुत उत्कृष्ट नये चर्च, व्यावसायिक सस्थाओ के भवन तथा प्रार्थना-मन्दिर बन गये है, तथा पुराने चर्चो को भी इतने ही उत्कृष्ट भवन साथ बना कर बडा कर दिया गया है। वह देखता कि ये सब एक अत्यन्त अलकारपूर्ण शैली के शिल्प मे बनाये गये है। उसे यह एक नया ही बना दिखाई देता, उसी प्रकार से उसे ईटो के भवन भी दिखाई पडते, जैसे कि अब पूर्व के देशो मे देखे जा सकते है—सामन्त-गृह, द्वार-गृह, केब्रिज के कालेज—जैसे क्वीन का कालेज, और नोबलो (सरदारो) के महल, जैसेकि टैट्टरशैल का, सब लाल ईटो के ऊचे ऊचे बने हुए—तथा एटन मे राजा का कालेज (किग्स कालेज)।[1]

बन्दरगाहो वाले नगरो मे दाढी वाले मल्लाह, बहुत कुछ उसी प्रकार के जैसे चासर द्वारा वर्जित 'जहाजी' थे, इस प्रेत-देही चासर को इगलिश चैनल तथा बिस्के की खाडी की अनगढ कथाए सुनाते, स्पेन की बृहत् नौकाओ, जेनेओ, ब्रेटनो तथा फ्लेमो के व्यापारिक बेडो के माल को लूटने वाले अग्रेज जल-दस्युओ की सफलता की तथा विदेशी लुटेरो के साथ लडाई की कहानिया कहते। इगलिश समुद्रो सबधी इन परिचित और पुरानी चर्चा के बीच शायद एक विचित्र और नवीन अफवाह भी ध्यान मे पडती कि

---

[1] इगलैड मे रोमन-काल की पतली टाइल ईटो के प्रयोग के बाद कभी ईटो (ब्रिक्स) का निर्माण या प्रयोग नही हुआ, जब तक कि फ्लैडर्स से ईटे आनी आरभ नही हो गयी ('ब्रिक' यह नाम ही फ्रास या वैलून मे उत्पन्न हुआ था) पन्द्रहवी शताब्दी मे पूर्व के देशो का बहुत व्यापक प्रयोग हुआ।

कुछ विदेशी मल्लाह समुद्री रास्ते से अफरीका होकर या सागर के ही बीच से पश्चिम की ओर इटीज जाने की सोच रहे है, और कि ब्रिसल मे कुछ लोग इस पर विश्वास करते है।

जागीरो मे, नोबलो (सरदारो) के किलो मे तथा राजा के दरबार मे कवि के प्रेत को अपनी प्रिय सस्कृति अभी भी जीवित मिलती, यद्यपि थोडे चुक्ते रूप मे। यह एक सुन्दर बात थी कि वह देखता कि लोग उसकी कविताए अभी भी पढ रहे थे, किन्तु वह अपने उत्तराधिकारियो को प्राय अकर्मण्य पाता, जो केवल निष्फल नकल मात्र कर रहे थे। युवको की कल्पना मध्ययुगीन प्रेम-काव्य की अन्योक्ति पद्धति और रीति-बद्धता मे कैद थी, और वे अब भी ट्रॉय के विरुद्ध यूनानियो के युद्ध की कहानियो मे रस ले रहे थे। किन्तु राजा आर्थर के मन्त्रिमडल की कहानिया 'फ्रेच पुस्तक' से मैलोरी के अमर इगलिश गद्य मे नये सिरे से कही जा रही थी।

और यदि चासर की आत्मा एड्वर्ड चतुर्थ के कधो पर से केक्स्टन द्वारा फ्लेडर्स से लाई गयी उस मशीन पर झाक सकना जो कैटर्बरी कहानियो की, वास्तव पाडु-लिपियो ही जैसी प्रतिलिपिया तेजी से निकाल सकती थी, तो कवि इस खिलोने पर बहुत ही हर्षोत्फुल्ल हो उठना। किन्तु शायद वह इसकी आवाज मे उन मूसलो की चोटो की धमक नही भाप पाया होता जिसने पीछे मठो और किलो को धराशायी कर दिया और अनतिदीर्घ काल मे धर्म तथा इगलैड के प्रजातन्त्र को नया रूप दे दिया।

फ्रास से इगलैड की सेनाओ के दूसरी बार निष्कासन के बाद घर पर रोसेस के युद्ध (१४५५-८५) आ पडे। इन्होने इगलैड के सामाजिक जीवन को कहा तक प्रभावित किया? इसका उत्तर इस बात पर निर्भर करता हे कि हम 'रोसेस के युद्ध' से क्या अभिप्राय समझते है? यदि हमारा इन युद्धो से अभिप्राय केवल २,००० से १०,००० मनुष्यो की सेनाओ द्वारा कभी इधर उधर लडे गये सघर्षों से हे जो सेट अल्बास, टाउट-बार्नेट तथा बोस्वर्थ फील्ड के समान युद्धो मे निष्पन्न हुए, तब उत्तर होगा कि यह प्रभाव बहुत अल्प हुआ। ऐसे युद्धो का निर्णय, चाहे ये यॉर्कशायर तथा मिडलैड जैसे सुदूर प्रदेशो मे ही क्यो न लडे गये हो, प्राय ही, बिना किसी विशेष आपत्ति के, लदन तथा सम्पूर्ण राज्य द्वारा स्वीकार किया जाता था, और इस प्रकार से, इसमे जीतने वाला सामन्तो का दल सारे इगलैड पर शासन करता था। यॉर्क तथा लकास्टर के घरानो के लिये यह सभव नही था कि वे उस तरह के गृह-युद्धो मे प्रवृत्त हो सकते जैसे पीछे चॉर्ल्स प्रथम तथा लाग पार्लियामेट द्वारा लडे गये थे। जबकि विशाल तथा उत्साही सेनाए एक नियमित लूट तथा राष्ट्रीय कर के सहारे नियमित अभियानो के लिये, बीसियो परिखा-रक्षित नगरो तथा सैकडो किलो और जागीरो पर घेरे डालने के लिये बनाई गयी थी। रोसेस के लार्डो का अपने देशवासियो पर ऐसा कोई अधिकार नही था क्योकि वे राज्य के लिये अपने प्रतिस्पर्धी दावो के आधार

पर किसी सिद्धान्त अथवा किसी जन-प्रिय भावना का सहारा नही ले सकते थे, और न ही कोई पक्ष भारी कर लगा कर, व्यापार मे बाधा पहुचा कर, अथवा ग्राम-प्रदेश को नष्ट-भ्रष्ट कर लोकमत को अपने विरुद्ध करने का खतरा मोल ले सकता था, जैसे हमारी सेनाओ ने अभी हाल ही बहुत गदे ढग से फ्रास मे किया था। इस प्रकार, इस अर्थ मे तो यह ठीक ही है कि 'रोसेस के युद्ध' सैनिक दृष्टि से इगलेड के सामाजिक जीवन मे केवल सतही ही थे।

किन्तु यदि, 'रोसेस के युद्धो' मे हमारा अभिप्राय उस सामाजिक अव्यवस्था से हो, जिन्होने कि अन्तराया के साथ वास्तव युद्धो को जन्म दिया, तो यह स्पष्ट है कि उस काल मे सारा ही सामाजिक ताना-बाना एक व्यापक कुशासन से प्रभावित हो चुका था। "अति शक्ति सम्पन्न शासितो" तथा "शासन की शिथिलता" के कारण हानि इतनी गहरी हो चुकी थी कि अनुगामी शताब्दी मे ट्यूडर राजवश इस कारण से लोक-प्रिय हो गया क्योकि वह इतना सशक्त था कि वह "सबल सरदारो तथा जागीरदारो" पर लगाम डाल सकता था।

यह सामाजिक अव्यवस्था किस बात मे निहित थी ? यह अव्यवस्था वास्तव मे ग्राम-प्रदेश मे ही थी, नगरो मे यह विशेष नही थी। किन्तु इगलैड की आबादी का दस मे से नौ भाग ग्रामीण ही था, और सामाजिक अव्यवस्था का मुख्य कारण जमीदारो के जमीन के लिये परस्पर झगडे ही थे।

अधिकाश लोगो के आचरण उनके परिवेश के अनुसार ही निर्धारित होते है। जैसे अट्ठारहवी शताब्दी मे किसी ऐसे भूमिपति के सम्बन्ध मे सोचना कठिन था जो अपनी भूमि के चारो ओर आलवाल नही बनाता हो और नालिया आदि नही बनाता हो, अपने खेत के मकान दुबारा नही बनाता हो, वृक्ष नही लगाता हो, अपने हाल कमरे को और बडा नही करता हो तथा अपने ग्राउण्डो को सजाता नही हो। उसी प्रकार से पन्द्रहवी शताब्दी मे भी एक ग्रामीण जमीदार अपने अधिक महत्वाकाक्षी पडोसियो की नकल करता था जब वह देखता था कि वे अपने समय तथा शक्ति का व्यय, अशत अपनी जागीरो को सुरक्षित रखने तथा उनके किराये इकट्ठे करने मे, और अधिकाशत अपनी सम्पत्तियो तथा जागीरो को विवाह-सम्बन्धो के द्वारा, या फिर किसी कानून का नाजायज सहारा लेकर अपने पडौसी की जमीन बलात् हस्तगत करने मे, करते थे। और जो लोग स्वय इस प्रकार के अन्याय के शिकार थे, वे उत्तराधिकार मे प्राप्त अपनी न्यायोचित भूमि आदि की रक्षा इसी प्रकार से कानूनी कार्यवाही तथा पाशव शक्ति के सम्मिलित प्रयोग से करते थे। इगलैड के मडल (काउटी), जैसे पास्टनो के नार्फोक, अपनी अल्प या महत् शक्तियो के साथ, शिशु विवाह के द्वारा सपुष्ट मैत्री-सधियो के साथ, अपने शक्ति-सन्तुलन के साथ, अपने स्वत्व के दावो और प्रतिदावो के साथ, जोकि सदैव सुलगते रहते थे और कभी-कभी खुले सघर्ष अथवा वैधानिक धोखाधडी मे परिणत हो जाते

थे, शेप यूरोप के अनुरूप ही थे। समाज की इस स्थिति तथा रोसेस के युद्धो मे सम्बन्ध को १४६६ मे नार्फोक के ड्यूक द्वारा ३,००० मनुष्यों की सेना के साथ कैसर के किले पर घेरा डालने के उदाहरण मे देखा जा सकता है, जिसका आधार—अधिकार सम्बन्धी विशुद्धत व्यक्तिगत झगडा था।

भूसम्पत्ति पर धावे की कला मे मारपीट, लाठी-प्रहार आदि, यहाँ तक कि हत्या भी, सम्मिलित थी, और यह सब दिन-दहाडे और सबके सामने खुले किया जाता था जिससे कि उसका प्रभाव और भी अधिक हो, और न केवल स्पर्धी दावेदार को ही, बल्कि न्यायाधीश आदि को भी अपने प्राणो का भय हो उठे। न्यायाधीशो से न्याय भी केवल औचित्य के आधार पर ही नही मिलता था। किसी शक्तिशाली सामन्त या सरदार का भृत्य होने पर दूसरो की सपत्ति छीनने, यहाँ तक कि हत्या तक कर देने पर भी दड से बचत हो जाती थी।

ऐसी परिस्थितियो मे, कोई भी मडल मे प्रभावशाली होने का महत्वाकाक्षी, अथवा अपने पडोसी की भूमि हथियाने को उत्सुक, अथवा अपनी भूमि का स्वामित्व सुरक्षित रखने को उत्सुक कोई शान्त व्यक्ति उस प्रदेश के किसी सामन्त का सरक्षण खोजता था, कि वह उसका 'कृपालुस्वामी' हो जाय, जिससे कि जब न्यायाधीश अथवा पचो के सम्मुख उसका अभियोग आये तो वे डर जाय, अथवा यदि प्रिवी कौसिल स्थानीय न्याय मे हस्तक्षेप करे तो वह (सामन्त) उसमे उसका पक्ष समर्थन कर दे। भय अथवा कृपा के बिना प्रतिकार (रीड्रैस) न तो कचहरी से मिलता था और न प्रिवी कौसिल (उच्चतम न्याय-परिषद्) से ही मिलता था।[1]

अनुगामी शताब्दी मे ट्यूडरो ने उच्चतम न्याय परिषद् को राजाओ और सामन्तो के हस्तक्षेप से मुक्त किया, सरक्षित गुडो का दमन किया तथा देश मे व्यवस्था स्थापित की। किन्तु वे भी मानव-प्रकृति को परिवर्तित नही कर पाए—न अपने आप मे ही और न अपनी प्रजाओ मे ही। शैक्सपीयर ने एलिजाबेथ के समृद्धिपूर्ण युग मे न्यायाधीश शैलो तथा उसके सेवक डेवी के मुह से कहलवाया है कि पन्द्रहवी शताब्दी मे, और कुछ कम मात्रा मे बाद के और उत्कृष्टतर काल मे, जबकि शैक्सपीयर जीवित था, न्याय किन सिद्धान्तो के आधार पर होता था

"डेवी मान्यवर, मै आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप कृपया वोकोट के विलियमविजर पर हिल के क्लेमेट पर्क्स के विरुद्ध रियायत करे।

---

[1] उदाहरण के लिये, १४५१ मे नार्फोक के जिलाधीश ने जॉन पास्टन को बताया कि रोबर्ट हगरी फोर्ड पर अभियोग चलाना निरर्थक है क्योकि उसे राजा से लिखा आया है कि वह ऐसी समिति बनाए जो लार्ड मोलिन्स को छोड दे।

शैल्लो डेवी, उस विजर के विरुद्ध अनेक शिकायतें है, जैसा मुझे ज्ञात है, वह विजर एक दुष्ट और धूर्त है ।

डेवी मै आपकी यह बात स्वीकार करता हू कि वह दुष्ट है, किन्तु तो भी, मान्यवर, एक दुष्ट आदमी को भी अपने मित्र की प्रार्थना पर तो कुछ रयायत मिलनी ही चाहिए । मान्यवर, एक ईमानदार व्यक्ति अपने लिये स्वय कह सकता है, जबकि एक दुष्ट व्यक्ति यह नही कर सकता । माननीय, मैने पिछले आठ वर्षो से आपकी सेवा बडी लगन से की है, अब यदि मै तीन-चार मास मे एक-दो बार भी किसी दुष्ट व्यक्ति की सज्जन के विरुद्ध सिफारिश नही कर सकता तो आपकी सेवा का मुझे क्या फल मिला ?

शैल्लो –अच्छा जाओ मै आश्वासन देता हू कि उसे कोई हानि नही होगी ।

पन्द्रहवी शताब्दी मे भूमि-अधिकार को लेकर निरन्तर मुकदमे चल रहे थे, जो प्राय वर्षो तक बिना निर्णय हुए चलते रहते थे । ये मुकदमे उस भूमि को जोतने वाले के लिए बहुत गम्भीर समस्या होते थे, विशेषत जब उसके दोनो दावेदार अपने सशस्त्र आदमी भेजकर जबरदस्ती किराया वसूल कर लेते थे । नौकरो तथा मुकदमो पर खर्च बढ जाने के कारण तथा उस समय की कृषि विषयक मन्दी के कारण जमीदार अपने महलो आदि को सॅवारने मे बहुत कृपण हो गये थे और किरायो के सम्बन्ध मे बहुत अति करने लगे थे, क्योकि गॉव के प्रतिष्ठित लोग पैसे के लिए अपने किराये देने वालो की सूची की ओर ही देखते थे । उन दिनो मे नगदी आय के लिए भेड पालने के अतिरिक्त प्राय एकमात्र साधन किराए का पैसा ही था, यद्यपि घर की आवश्यकता के भोजन तथा कपडे उसके अपने खेत से अथवा वस्तु-सामग्री के रूप मे प्राप्त किराए से ही प्राप्त हो जाते थे ।

भूमिपति के अपने मुजारो से सम्बन्धो मे—चाहे वे खुले खेतो के हो या आवलयित (एन्क्लोज्ड) खेतो के—प्रतिवर्ष आधुनिक प्रवृत्तियो का समावेश हो रहा था । सामन्तवाद तथा कृषिदासत्व क्रमश समाप्त हो रहे थे । किन्तु भूमिपति की सामन्त-कल्प स्थिति अपने क्षेत्र के न्यायालय के प्रभावशाली अध्यक्ष के रूप मे अब भी बनी हुई थी । उस न्यायालय मे ही जागीर के सामन्त तथा उसके स्थायी काश्तकारो (कापी होल्ड टेनेट्स) के मुआमलो पर विचार होता था तथा उन्हे दर्ज किया जाता था, तथा खुले क्षेत्र के किसानो के आपसी मुआमलो तथा सार्वजनिक चरागाह और परती भूमि सम्बन्धी मुआमलो पर विचार किया जाता था । यह हो सकता है कि व्यवहार मे काश्तकार सामन्त अथवा उसके प्रतिनिधि की इच्छा के विरुद्ध कुछ कर पाने मे समर्थ नही रहते हो, किन्तु काश्तकार भी कचहरियो मे न्यायाधीश होते थे तथा खुली कचहरी की कार्य-विधि, जो कि जागीर की परम्परागत रीति से निर्धारित होती थी,

सामन्त के अत्याचार पर एक वास्तव अकुश थी, और साथ ही इससे सबके लिए स्वशासन का अवसर होता था जिनमे कि दीनतम भी अपना भाग ले सकता था ।

जमीदार तथा उसके मुजारो के बीच मकान आदि की मरम्मत तथा किराये की मात्रा और उसके भुगतान आदि की नियमितता को लेकर होने वाले झगडे सामन्तप्रथा से पट्टेदारी प्रथा की ओर सक्रमण शील उस युग की विशेषता थे, क्योंकि पट्टेदारी सम्बन्धी नियम अभी परम्परा से पुष्ट नही हुए थे । भूमिपति (जमीदार) इन झगडो मे ही फसे रहते थे, जैसाकि उनके पत्र-व्यवहार आदि से पता चलता है, और उनके प्रतिनिधियो—साधारण अथवा क्लर्क—के लिए विद्रोही मजारो से निपटना कोई आसान कार्य नही था । जेम्स ग्लीएस (पास्टनो का एक पुजारी तथा भृत्य) जोकि उनके बच्चो के शिक्षक के रूप मे तथा विश्वासपात्र सचिव और भूप्रबन्धक के रूप मे कार्य करता था, मुजारो के पशुओ तथा हल आदि को बधक रख लेता था अथवा बन्धक रखने की धमकी देता था । किन्तु उसमे भी मानवता थी उसने एक मुजारे के लिए कहा कि वह उसे नही छू पाएगा—"मै यह कभी नही कर पाऊँगा क्योकि केवल उसकी माता के घर मे ही उसकी कुर्की करना सम्भव है, और यह करने का साहस मुझ मे नही है, क्योकि उसके दुराशीष और क्रदन मै नही सहन कर सकता ।"

गुमाश्ते के कार्य प्राय सामन्त या जागीरदार के व्यक्तिगत पादरी द्वारा ही सम्पादित किये जाते थे, अथवा कभी गिरजे के पादरी द्वारा भी सपादित किए जाते थे, और वह अपनी भूमि के मुजारो से किराया आदि लेने जाता था । आजीविका-दाता द्वारा धार्मिक व्यक्ति का ऐसे सासारिक कार्यो मे उपयोग बहुत बार उसे बहुत से अनुचित कार्यो मे भी फँसा देता था ।[१]

लौकिक जनो द्वारा अपने सासारिक कार्यों के लिए पादरियो का उपयोग, जोकि उस काल की परम्परा के अनुसार किया जा रहा था जबकि केवल पादरी लोग ही पढ-लिख सकते थे, अब भी समाज के सभी स्तरो पर हो रहा था । क्योकि सन्त-स्वभाव राजा हेनरी षष्ठ भी अपने कर्मचारियो को पादरीपद अथवा चर्च सम्बन्धी अन्य पदो से लाभान्वित करता था । क्योकि अन्यथा वह उन्हे ऐसे देश मे वेतनादि कैसे दे सकता था जहाँकि लोग कर को सहन करने को तैयार नही थे ?

---

[१] स्टीवेसन के "ब्लैक ऐरो" मे पादरी ओलिवर ओट्स के अपने स्वामी सर डेनियल ब्रैक्ले से सम्बन्ध पास्टन पत्रो के सूक्ष्म अध्ययन के आधार पर चित्रित किए गए है, जैसे कि इस पुस्तक मे अन्य भी अनेक सकलित सामाजिक तथ्य है, तथापि यह सही है कि आर एल एस को श्रमण (फ्रेअर) तथा सन्त (मोक) के भेद का ज्ञान नही था । पन्द्रहवी शताब्दी की विचारधारा तथा सामाजिक व्यवहार का एक अन्य, और अधिक विद्वत्तापूर्ण, अध्ययन श्री इवान जोह्न के क्रिपल्ड स्प्लेडेर (१९३८) मे हम पा सकते है ।

बहुत बार पादरी लोग अपना अधिकाश ममय किसान के रूप मे बिताते थे। वे चर्च से प्राप्त अपनी भूमि मे (जोकि सामान्यत पचास से साठ एकड का होता था) जन्मजात किसान के समान ही जोकि वे थे, कृषि करते थे और बहुत बार दूसरो की भूमि भी ठेके पर ले लेते थे। फील्डिग के जोसेफ एड्र्यूस का पात्र पार्सन ट्रुलिवर, जिसका कृषि मे बहुत उत्साह था, मध्ययुगीन परम्परा का अवशेष था।

प्राय ही खुला खेत आवलयित कर दिया जाता था और कृषको द्वारा स्वय समझौते से आपस मे समेकीकृत खेतो के रूप मे विभाजित कर लिया जाता था। तथा परम्परागत काश्तकारो मे भूमि का खुला क्रय-विक्रय चलता था। पन्द्रहवी शताब्दी के इगलैंड का मितव्ययी कृषक, उन्नीसवी शताब्दी के फ्रास के कृषक के समान ही पैसा बचा कर अपने छोटे खेत को बडा करने के लिये अपने पडौसी का खेत खरीदने का प्रयत्न करता था।

सब मिलाकर, किसान तथा मजदूर के लिए पन्द्रहवी शताब्दी एक बढिया काल था तथा जमीदार के लिये दुष्काल था। प्लेग की अविरत आवृत्तियो के कारण, महामारी (ब्लैक डैथ) के दिनो से जनसख्या मे कमी की पूर्ति अभी तक नही हुई थी, और दास-प्रथा के समाप्त हो जाने से मजदूर को इस कमी से लाभ उठाने का पूर्ण अवसर मिला, क्योंकि अब वह अपने स्वतत्र श्रम का बहुत मूल्य प्राप्त कर सकता था। अब जागीरदार के लिए न केवल जागीर की भूमि पर कार्य के लिए श्रमिको को वेतन पर लगाना बडा महगा पडता था बल्कि पट्टे पर देना भी उतना ही कठिन था, चाहे वह उसकी जागीर की भूमि हो या खुले क्षेत्र की। तेरहवी शताब्दी की भूमि की भूख के स्थान पर, जो कि जागीरदार के लिये बडी लाभप्रद थी, अब भूमि से अतितृप्ति और कृषि कार्य के लिये श्रमिको की कमी हो गयी थी, और यह वस्तुस्थिति चौदहवी तथा पन्द्रहवी शताब्दियो मे ट्यूडर के काल तक निरन्तर बनी रही।

रोसेज के युद्धो के काल मे इगलैंड उससे भी अधिक निर्धन हो गया जितना वह फ्रास के साथ असफल युद्ध, अनुगामी गृह-कलह तथा जनसख्या मे कमी के कारण हो गया था। नगरो तथा बन्दरगाहो मे प्लेग की आवृत्ति बहुत प्रसिद्ध थी, जहाँ कि देहिका युक्त चूहो की सख्या-वृद्धि के लिए बडा अवसर था। अभिप्राय यह कि देश का वह भाग जहाँ सम्पत्ति का अधिकाश उत्पादित होता था, वही बहुधा अव्यवस्थित तथा महामारियो से आक्रान्त भी था। इन कारणो से कुल राष्ट्रीय आय उससे कम थी जितनी चासर के दिनो मे थी, किन्तु अब यह अधिक समविभाजित थी। सामान्य आर्थिक स्थिति कृषक तथा निर्धन के पक्ष मे थी।[1]

---

[1] इसी प्रकार से, आज राष्ट्रीय आय उससे कम है जितनी अभी यह हाल ही मे था, किन्तु अधिक सम-विभाजित है। द्रष्टव्य—प्रोफेसर पोस्टन का महत्वपूर्ण लेख "पन्द्रहवी शताब्दी" (हिस्ट्री रिव्यू, मई १९३९)।

ग्रामीण समाज के इस काल का विवरण हमे पास्टन परिवार के पत्रो तथा अन्य छोटे सकलनो, जैसे 'स्टोनर तथा सेलीपेपर्ज', से अधिक अच्छा मिलता है। पन्द्रहवी शताब्दी ऐसी पहली शताब्दी थी जिसमे उच्च वर्ग की स्त्रिया और पुरुषो मे तथा उनके एजेटो (क्लर्क तथा सामान्य दोनो प्रकार के) मे पत्र-व्यवहार की परपरा थी—यह कह देना आवश्यक है कि ये पत्र वे अग्रेजी मे लिखते थे। ये काल चाहे कितने ही अव्यवस्थित क्यो न रहे हो, किन्तु शिक्षा ने उस काल की अपेक्षा स्पष्टत बहुत प्रगति कर ली थी जिनमे कि राजा तथा सामन्त लोग उन दस्तावेजो को भी पढ नही सकते थे जिन पर कि वे अपनी मुहर लगाते थे।

कैक्स्टन के काल मे पत्र मन बहलाव या गप के लिये नही लिखे जाते थे बल्कि किसी व्यावहारिक उद्देश्य से ही, प्राय कानून, व्यापार अथवा स्थानीय राजनीति के कार्य से, लिखे जाते थे। किन्तु वे प्रासगिक रूप से हमे घरेलू रीति-रिवाज के बारे मे भी कुछ जानकारी देते है। पारिवारिक जीवन, प्रेम तथा विवाह का जो चित्र इन शताब्दी के पत्रो से उभरता है वह ध्यान देने योग्य है, और इनके द्वारा प्रकाश मे आने वाले कुछ तथ्य, जो आधुनिक पाठको को बडे विचित्र प्रतीत हो सकते हैं, ऐसे है जो उन अपेक्षाकृत पुराने युगो की भी विशेषता थे, और शायद अधिक ही, जिनके कि कोई लिखित रिकार्ड हमे उपलब्ध नही है।

बच्चो को जो अपने माता-पिता के प्रति अत्यधिक और औपचारिक सम्मान प्रकट करने के लिये बाध्य किया जाता था, घर तथा स्कूल मे उन्हे जो कडे अनुशासन मे रखा जाता था, उनकी तथा नौकरो की जो अक्सर पिटाई होती थी, उस सब मे किसी को आश्चर्य नही होगा। किन्तु कुछ पाठको को, जिनकी कल्पना मे मध्ययुगो का चित्र वीरता और प्रेम का है, जिसमे सरदार-सामन्त लोग स्त्रियो के सम्मुख अपने घुटनो के बल बैठे रहते थे, यह जानकर बडा धक्का पहुचेगा कि सामन्त तथा अन्य उच्च वर्गो मे विवाह से प्रेम का कोई भी सबध नही था, प्राय ही दूल्हा-दुलहन बहुत छोटी आयु

---

४५० जागीरो मे से, जिनके पन्द्रहवी शताब्दी के विवरणो का अध्ययन किया गया है, चार सौ से अधिक की भूमियो के भाग मुजारो के हाथ मे चले जाने से उनकी वसूली मे भी कमी हो गयी। घटती हुई जनसख्या तथा गिरी हुई कीमतो का प्रभाव किसानो पर क्या हुआ होगा, इसका अनुमान किया ही जा सकता है। इसका परिणाम हुआ भूमि की सुलभता तथा किरायो मे कमी। भूमिधारियो की स्थिति मे सुधार के साथ भाडे के श्रमिको की स्थिति मे भी सुधार हुआ। इसलिए कृषि-उत्पादन के मूल्यो मे कमी से वास्तविक हानि जागीरदारो को हुई।

जोह्न साल्टमार्श का लेख "प्लेग ऐण्ड इकनामिक डिक्लाईन इन इगलैंड इन दि लेटर मिडल एजिज" (दि कैम्ब्रिज हिस्टोरिकल जर्नल, १९४१ भी द्रष्टव्य)।

मे जीवन भर के लिये बाध दिये जाते थे, और यदि कभी बडी आयु के भी होते तो भी माता-पिता उन्हे सबसे बडी कीमत देने वाले को बेच देते थे। पास्टन तथा अन्य बडे घराने अपने बच्चो के विवाह को अपने परिवार की उन्नति के खेल मे एक चाल के रूप मे देखते थे, जिससे या तो धन अथवा जायदाद की प्राप्ति की दृष्टि से लाभ होता अथवा जिससे एक शक्तिशाली सरक्षक की सहायता की प्राप्ति के रूप मे लाभ होता था। यदि बलि के लिये नियत कोई व्यक्ति प्रतिरोध करता तो इस विद्रोह का दमन इतने क्रूर शारीरिक दड के साथ किया जाता कि उसकी कल्पना भी कठिन है— कम से कम उस अवस्था मे यदि वह लडकी अथवा स्त्री सरक्षित होती। जब एलिजाबेथ पास्टन ने पचास वर्ष के एक वृद्ध और कुरूप विधुर से विवाह करने मे झिझक दिखाई, तो उसे तीन मास तक निरन्तर "प्रति सप्ताह एक या दो बार, कभी कभी एक दिन मे दो बार, पीटा जाता था, और उसका सिर दो-तीन स्थानो से फाड दिया जाता था।" ऐसे थे उसकी माता एग्नेस के ढग, जोकि एक अत्यन्त धार्मिक, सम्मानित तथा विशाल पास्टन परिवार की सफल अधिष्ठातृ थी। ऐसा प्रतीत होता है कि बहुत से माता-पिता इस बात की विशेष चिन्ता नही करते थे कि उनके बच्चो से कौन विवाह करता है, बशर्ते कि उन्हे पैसा मिल जाता, जोह्न विडम ने, जोकि पास्टनो के पडोसियो मे से एक था, लदन के एक व्यापारी को अपने पुत्र के विवाह का अधिकार बेचा था।

ये देर से बद्धमूल मध्ययुगीन प्रथाए, जोकि अभी पन्द्रहवी शताब्दी मे भी बडी प्रचलित थी, पहली दृष्टि मे मध्ययुगीन साहित्य की टोन से बडी असगत प्रतीत हो सकती है, विगत तीन शताब्दियो मे, कविता का विषय प्रेम की तडप तथा नायक के अपनी प्रेयसी के प्रेम मे समर्पण का अत्यन्त भाव-पूर्ण तथा रहस्यात्मक रूपको द्वारा आख्यान करना ही रहा। वास्तव मे पास्टनो तथा उनके पडोसियो का ऐसे ही साहित्य से परिचय था। किन्तु इस प्रेम काव्य का—दान्ते के पर-स्त्री प्रेम के अत्यन्त अलौकिक कल्पना-चित्रो से लेकर दरबारी ऐयाशी के आदर्शीकरण तक—विवाह से कोई भी सबध नही था।

मध्ययुगीन शिक्षित स्त्री या पुरुष के लिये विवाह जीवन मे एक प्रकार का सबध था और प्रेम दूसरे प्रकार का, इनका परस्पर कोई सबध नही था। विवाह से सयोग-वश प्रेम भी हो सकता था, जैसाकि निस्सन्देह यह प्राय ही होता भी था। किन्तु यदि यह नही होता तब स्त्री अपनी जबान से अपने अधिकार का दावा करता थी, और कभी कभी इसमे उसे सफलता भी मिलती थी। किन्तु 'स्वामित्व' पति का ही था और वह जब इसका दावा घूसे या छडी से करता था, तब जनमत उसकी निन्दा नही करता था। इस असमान सघर्ष मे स्त्री को निरन्तर सन्तानोत्पत्ति का कष्ट भी झेलना पडता था— जिनमे से अधिकाश शीघ्र ही मर जाते थे और परिणामत उनका स्थान भरना पडता था। ऐसा विवाह कोई आदर्श व्यवस्था नही हो सकता था, किन्तु शताब्दियो तक यह

इगलेड की जनसख्या बनाये रखने मे उपयोगी सिद्ध हुआ, जोकि उन प्लेग तथा चिकित्सा विषयक अज्ञान के दिनो मे बडी महत्वपूर्ण बात थी।

विवाह का क्या अर्थ होना चाहिए, इस सबध मे किसी आदर्श की उद्भावना उस काल के जनमत ने अभी नही की थी। इसमे चर्च भी कोई योगदान नही कर रहा था, क्योकि उसका वैराग्यपरक आदर्श औसत मानव-प्रकृति के प्रतिकूल था। पादरी लोग स्त्री को शैतान द्वारा मनुष्य को फासने के लिये फैलाये गये जालो के रूप मे देखते थे। चर्च ने अपने अधिकार द्वारा स्त्रियो की अवैध कामुकता तथा हिसा से रक्षा करने का सचमुच ही प्रयत्न किया, और कम से कम उसके विवाह-बधन का समर्थन करने के कारण पुरुष के लिये अपनी पत्नि का परित्याग करना अधिक कठिन था — यद्यपि कभी कभी पैसा देकर तलाक ले ही लिया जाता था। किन्तु धार्मिक अधिकारी वर्ग, जोकि इस बात पर आग्रह करता था कि पुजारियो का ब्रह्मचारी होना आवश्यक है, विवाह को एक निम्नतर स्थिति मानता था। इस अपूर्ण ससार मे सामान्यजन को विवाह करने की अनुमति देना आवश्यक है, किन्तु उन्नत आध्यात्मिक रतरो पर स्त्री-पुरुष सबध को स्वीकृति नही दी जा सकती। इसलिये इसमे कोई आश्चर्य की बात नही है कि पादरी लोग सस्कार-समारोह आदि द्वारा बच्चो की सगाई तथा विवाह को धार्मिक स्वीकृति दे रहे थे और इस प्रकार से इस सबध मे ससारियो के इस भौतिकवादी दृष्टिकोण को स्वीकार कर रहे थे कि इसमे लडके-लडकी की अपनी पसद देखना आवश्यक नही है और माता-पिता इसमे सौदेबाजी कर सकते है।[1]

क्योकि विवाह सामान्य रूप से प्रेम के आधार पर नही होते थे, इसलिये लेग्यूडोक के ट्रोबेडर ग्यारहवी शताब्दी के अन्तिम वर्षो मे, तथा उनके अनुगामी फ्रास तथा इगलैड के कवि, 'जो कि प्यार के देवता' का प्रशस्ति-गान करते थे, प्यार की वासना के लिये विवाह जैसी चीज को अप्रासगिक मानते थे। किसी ने बडी चतुराई से यह कहा है कि "किसी समाज मे, जिसमे विवाह के प्रति पूर्णत उपयोगितावादी दृष्टिकोण है, यौन प्रेम का आदर्शीकरण अनिवार्यत व्यभिचार के आदर्शीकरण से आरभ होता है।" किन्तु वास्तव मे यह आवश्यक नही है।[2]

मध्ययुगीन कवियो की पश्चिमी जगत् को महान् देन थी स्त्री-पुरुष के प्यार की

---

[1] चर्च ने जिस सीमा तक बाल-विवाह पर नियत्रण करने का प्रयत्न किया, अथवा कहे, बाल-विवाह की अनुमति दी, उस पर विमर्श के लिये द्रष्टव्य कौल्टन की पुस्तक चासर तथा उसका इगलैड, पृ० २०४-२०८, १९२१ सस्करण।

[2] कहा जाता है—प्रेम-विषयक एक अदालत ने यह निर्णय दिया था कि दो विवाहित व्यक्ति परस्पर प्रेम नही कर सकते। इस विषय मे मैं पाठक को एक एक अत्यन्त विद्वतापूर्ण पुस्तक का हवाला देना चाहूगा—(दि एल्लीगोरी ऑफ लव, ए स्टडी इन मैडीव्यल ट्रैडीशन, लेखक, सी एस ल्यूईस ऑफ मैग्डेलन, आक्सफर्ड, १९३६)।

यह आध्यात्मिक अवधारणा—सब आध्यात्मिक धारणाओ मे सर्वोत्तम, जो स्त्री-पुरुषो को उनके शील तथा गुण मे सहज उन्नत कर देती है

प्रेम का भगवान्, जो कि एक वरदान रूप है,
वह कितना शक्तिशाली और कितना महान् है।
क्योकि वह अवनत हृदयों को उन्नत और
उन्नत हृदयो को अवनत बना सकता है,
और कठोर हृदयों को वह कोमल बना सकता है।
और उसी से हृदय का सब श्रेय आता है,
सब सम्मान तथा सब शालीन्य आता है,
वही देता है—पूजा, निर्बन्धता, तथा हृदय का सब ओज,
पूर्ण आनन्द तथा पूर्ण आश्वासन,
हर्ष, सौख्य तथा नवता, विनम्रता, उदारता और मृदुता,
सच्ची मित्रता तथा साहचर्य,
चूक से लज्जित होने के प्रति भय और ग्लानि,
क्योकि जो प्रेम का सच्चा सेवक है,
वह लज्जा का पात्र होने के बजाय मरना अधिक पसद करेगा।

मानव-जीवन के लिये यह एक प्रेरणा का नया स्रोत था जो प्राकृतिक तथ्यो पर आधारित था। यह विचार प्राचीनो को पूर्णत अज्ञात था और आरभिक चर्च को भी इसका कोई पता नही था। क्या मध्ययुगीन कवियो की यह अत्यन्त मूल्यवान अवधारणा, एक अन्य क्रान्ति द्वारा, विवाह-सस्था से सम्बन्धित की जा सकती थी? क्या प्रेमी लोग अपने आप ही पति-पत्नि का सबध स्थापित कर सकते थे? क्या युवा-प्रेम का बधन वार्द्धक्य और मृत्यु पर्यन्त प्रलम्बित किया जा सकता था? यह परिवर्तन अब विवाह की अवधारणा और बाह्यय स्वरूप के विकास द्वारा इगलैड मे वास्तव मे ही हो चुका है। यह परिवर्तन कोई अवश्यभावी नही था। उदाहरणत फ्रास मे अभिभावको द्वारा आयोजित विवाह अब भी एक सामान्य बात है, यद्यपि यह ठीक है कि फ्रास के सस्कृत लोग अपने बच्चो की सहमति तथा परस्पर समानता के प्रति उससे कही अधिक ध्यान देते है जितना एग्नेस पॉस्टन देती थी। और ऐसे विवाह प्राय ही सफल होते है। किन्तु इगलैड मे आयोजित विवाह प्रेम-विवाह से स्थानान्तरित हो गया है, माता-पिता ने बच्चो के अपने चुनाव का अधिकार स्वीकार कर लिया है। ग्रैटेना ग्रीन का युद्ध जीत लिया गया है।

प्रेम तथा स्वतत्रता की विजय के पीछे अज्ञात योद्धाओ तथा बलिदान होने वालो की एक दीर्घ परपरा है। निस्सन्देह प्रेमियो द्वारा विवाह करने की अनेक घटनाए सम्पूर्ण मध्य युग मे निरन्तर होती रही हैं। पुरुष सदैव अपने माता-पिता की आज्ञा

का पालन नही करते थे, और कोई-कोई माता-पिता सहानुभूतिशील भी होते थे, और बहुत से छोटी आयु मे मर भी जाते थे। चासर की फ्रेकलिन की कहानी प्रेम-विवाह तथा प्रेम द्वारा ही उसके निर्वाह की एक अत्यन्त सुन्दर कहानी है। और पन्द्रहवी शताब्दी मे समय की गति मन्द थी। स्कॉटलैड के जेम्स प्रथम ने, जोकि एक कवि-राजा था, अपनी प्रेमिका को अपनी रानी बनाया था, और उसके सम्मान मे उसने "किग्सक्वायर" नामक काव्य की रचना की थी।

नीरस पास्टनो तक के समाज मे भी हमे पत्रो के रूप मे कम से कम दो प्रेम विवाहो के विवरण उपलब्ध होते है। पहली घटना १४७७ मे मार्जरी ब्रूथ तथा जोह्न पास्टन की है। इसमे लडकी ने अपनी कोमल-हृदया माता की स्वीकृति जीत ली थी। नीचे मार्जरी का पत्र दिया जा रहा है (पुस्तक मे वह मूल हिज्जो मे दिया गया है) जो कि उसने जोह्न को उस समय लिखा था जबकि उस सम्बन्ध मे अभी बातचीत चल रही थी, और विशुद्ध आर्थिक कारणो से वह बहुत आशाजनक नही थी

"अति सम्माननीय तथा प्रतिष्ठित, तथा मेरे अतिप्रिय वेलेंटाइन, मेरी माता ने मेरे पिता से सारी बात अत्यन्त सुचारू रूप से कह दी है, किन्तु वह मेरे लिए उससे अधिक दहेज नही जुटा सकती जितना कि मेरे पास पहले है और आपको ज्ञात है। ईश्वर जानता है कि इसका मुझे कितना दुःख है। किन्तु यदि आप मुझे प्यार करते है, जैसाकि मेरा विश्वास है कि आप अवश्य करते है, तो आप इस कारण से मुझे नही छोडेंगे, ऐसी मेरी धारणा है।"

इसी परिस्थिति पर उसका अलग पत्र, जो यद्यपि व्याकरण की दृष्टि से बहुत ठीक नहीं है, किन्तु तो भी इतना द्रावक है कि इगलिश गद्य मे उससे अधिक द्रावक किसी कृति की कल्पना नही की जा सकती है।

"यदि आप इतना दहेज तथा मुझे प्राप्त कर सन्तुष्ट हो सके तो इस भूमि पर मेरे से अधिक सौभाग्यशालिनी कोई लडकी नही हो सकती। किन्तु यदि आप इतने से सन्तुष्ट नही हो सकते है, अथवा आप उससे बहुत अधिक चाहते है जितना मेरा अनुमान है, तब मेरे भले, सच्चे और मधुर वेलटाइन, आपको इसके लिए यहाँ आने का कष्ट करने की आवश्यकता नही है, तब यह कहानी समाप्त होने दो और इसकी दोबारा कभी चर्चा भी नही करना, मै सारा जीवन तुम्हारी सच्ची प्रेमिका रहूगी तथा शेष जीवन तुम्हारे लिए प्रार्थना करती रहूगी।'

जोह्न के लिए यह पत्र पर्याप्त था। वह अनेक युवको की तुलना मे कही अधिक अपना स्वामी था, उसका पिता मरा हुआ था और उसने अपनी माता तथा अन्य सबधियो की असहमति के बावजूद यह विवाह कर लिया।

पास्टन कुल की दूसरी प्रेम-कहानी का वृत्त अपेक्षाकृत अधिक दीर्घ और कठिन रहा, परन्तु परिणाम इसका भी उतना ही सुखद रहा। मार्जरी पास्टन ने पास्टन-प्रदेश के बैल्लिफ रिचर्ड कैल्ले के पास जाकर गुप्त रूप से अपना वाग्दान करने का साहस किया। ऐसी सगाइयाँ अनिवार्य मानी जाती थी और चर्च उनको स्वीकार करने से इन्कार नही कर सकता था, किन्तु ये कभी-कभी दोनो पक्षो की सहमति से तोड दी जाती थी। यह लडकी वर्षो तक अपने परिवार के आक्रोश तथा दमन के सम्मुख दृढ रही, जब तक कि अन्त मे उसकी अनम्यता से थक कर तथा अपने अत्यधिक महत्वाकाक्षी बैल्लिफ की अत्यावश्यक सेवाओ को बनाए रखने के लिए पास्टनो ने प्रेमियो को अपना विवाह सम्पन्न करने की अनुमति नही दे दी।

पन्द्रहवी शताब्दी के पिछले भाग के गाथा काव्य मे प्रेम-विवाह के लक्षण अधिकाधिक स्पष्ट दिखाई देने लगे थे, जैसे इस्लिग्टन के बैल्लिफ की लडकी की पूर्वज नट ब्राउन मेड तथा गाथा काव्य की अन्य सैकडो नायिकाओ के प्रेम-विवाह वर्णन मे। शैक्सपीयर के युग तक पहुँचते-पहुँचते हम काव्य तथा नाटक मे प्रेम को विवाह के एक उचित आधार के रूप मे चित्रित पाते है, यद्यपि यह एकमात्र उचित आधार नही माना जाता था। वैवाहिक स्वतत्रता के लिए बच्चो का माता-पिता के विरुद्ध सघर्ष उस समय लोक-कल्पना मे सहानुभूतिपूर्ण स्थान बना चुका था, तथा एलिजाबेथ-युग के रगमच पर सर्वाधिक प्रचलित रुचि का विषय विवाह के इच्छुक प्रेमियो का परस्पर के प्रति सच्चा समर्पण तथा घर से भाग जाने वाले युगलो के साहसपूर्ण कार्य थे, जिनका चित्रण हम मास्टर फैटन तथा एन्ने पेज जैसे पात्रो मे देख सकते है। स्पष्टत प्रेम-विवाह ट्यूडर-काल के अन्त तक अधिक प्रचलित हो गया था, किन्तु बाल-विवाह का भी अभी काफी प्रचलन था इस मुआमले मे सुधारोपरान्त का चर्च उतना ही दोषी था जितना मध्ययुगीन चर्च था। १५८२ मे, बिशप चैडर्टन ने अपनी एकमात्र लडकी जोन का विवाह नौ वर्ष की आयु मे एक ग्यारह वर्ष के लडके से कर दिया इसका परिणाम बुरा हुआ। एक अन्य अवसर पर तीन वर्ष की आयु के जोन रिगयार्डन को एक पादरी ने अपनी गोदी मे उठा कर उससे एक पाँच वर्ष की लडकी के प्रति विवाह के निर्धारित शब्द बोलने के लिए प्रेरित किया। समाप्त होने से पूर्व उस बच्चे ने यह चिल्लाते हुए गोदी से उतरने के लिए बडी जिद्द की कि वह आज नही पढेगा, किन्तु उस पादरी ने कहा "तुम्हे थोडे शब्द और कहने पडेगे, तब जाकर खेलना।"

और इस प्रकार से इगलैड के सामाजिक इतिहास मे प्रेम-विवाह की दिशा मे दीर्घ सघर्षयुक्त विकास-क्रम निरन्तर जारी रहा, जब तक कि जेन ऑस्टिन तथा विक्टोरियनो के युग मे विवाह के लिए वरण की स्वतन्त्रता को समाज के ऊँचे से ऊँचे वर्गों मे स्वीकार नही कर लिया गया तथा अर्थ-लोलुपता पर आधारित विवाह को

अनुचित नही माना जाने लगा। अवैध तथा अबोध 'प्रेम का देवता', जिसकी वेदी का निर्णय मध्य युगीन कवियो ने किया था, अब वैध स्वीकार कर लिया गया था, तथा अल्फ्रेड टेनीसन और रोबर्ट ब्राउनिग और उसकी पत्नी के इगलैंड मे उसे प्रतिष्ठा मिल चुकी थी।

सभवत निर्धन वर्गों मे विवाह के लिए वरण के रास्ते मे अर्थलाभ सम्बन्धी प्रयोजन हमेशा से ही कम बाधक रहे थे। इस विषय पर हमे बहुत कम साक्ष्य उपलब्ध है, किन्तु हम यह मान कर चल सकते है कि कृषक वर्ग मे मध्य युग मे, और इसी प्रकार से सब युगो मे, युवक-युवती इकट्ठे वन मे जाते, फिर वहाँ से चर्च मे, क्योकि वे परस्पर प्रेम करते थे और साथ यह विश्वास भी रहता था कि युवती अच्छी माता तथा गृहणी प्रमाणित होगी, तथा युवक कार्य-कुशल व्यक्ति है अथवा उसके पास खुले क्षेत्र मे भूमि के एक खड के अतिरिक्त, सूअरो का बाडा है। अवैध यौन-सम्बन्धो को वैध बनाने के लिए विवाह करने की प्रथा काफी सामान्य थी, विशेषत समाज के निम्न स्तरो मे, जिनमे कि कुमारी लडकी की चौबीसो घटे रखवाली नही की जा सकती थी। किन्तु पास्टनो की लडकियाँ सदैव अपनी माता अथवा अभिभावक की कडी निगरानी मे रहती थी, और परिणामत कुलीन लपट लोग व्यभिचार के लिए या तो निर्धन वर्ग की लडकिया खोजते थे अथवा धनियो की पत्निया।

जब एकबार स्त्री का विवाह हो जाता था तो वह कर्म, प्रभाव तथा, कुछ अवस्थाओ मे, अधिकार के भी क्षेत्र मे प्रवेश करती थी। पास्टनो के पत्रो से पत्नियो की अनेक पीढियो का विवरण मिलता है, जो कि किसी भी अर्थ मे अपने पतियो की दास नही थी बल्कि उनकी परामर्शदाता और विश्वस्त सगिनिया थी। इन पत्रो के अनुसार, उनका ध्यान अपने पति के स्वार्थो के प्रति अधिक था और परिणामत उनके अनेक बच्चे उसकी बलि चढते थे। वे माता की अपेक्षा गृहणियाँ अधिक अच्छी थी। उनके पत्रो से प्रदर्शित होता है कि वे परिवार के व्यापारिक तथा कानूनी मुआमलो मे, और घरेलू कार्यों मे भी—जहाँ कि उनका एक छत्र राज्य था—भाग लेती थी।

एक या अधिक सामन्त-गृहो के लोगो के भोजन-वस्त्र का प्रबन्ध करना ही अपने आप मे एक बहुत बडा कार्य था, जिसके लिए उसी प्रकार की प्रबन्ध-कुशलता आवश्यक होती थी जैसी हमारे आज के युग मे सार्वजनिक कार्यो अथवा व्यावसायिक कार्यो मे लगी हुई स्त्रियो को आवश्यक होती है। उन दिनो घर की आवश्यकता की सामग्री दुकानो से तुरन्त जाकर खरीदी नही जा सकती थी। जो सामग्री जागीर में से प्राप्त नही हो सकती थी उसके लिये महीनो पहले आदेश देना पडता था—फ्रास की शराबे, भूमध्य सागर के प्रदेशो मे उत्पादित चीनी, मिर्च-मसाला, सतरे, खजूरें तथा बढिया किस्म का कपडा। यह गृहणी का कार्य था कि वह भावी आवश्यकताओ का अनुमान पहले से करे तथा प्रदेश की राजधानी के बडे व्यापारियो

को उस वस्तुजात के लिये आदेश दे। बहुत बार तो ये आदेश लन्डन मे भी देने पडते थे, क्योकि अनेक बार नॉर्विच तक ऐसी सामान्य विदेशी वस्तुएँ सप्लाई नही कर पाता था जैसी आज छोटे कसबो के बाजारो मे मिल जाती है। जहाँ तक घर के भीतरी कार्य का प्रश्न है, भोजन तैयार करना, जमा करना और जागीर के बाहर से मास और शिकार का प्रबन्ध करना तथा तालाबो से मछली लाना, इसके अतिरिक्त दूध के पशुओ की सम्भाल करना, शराब की भट्टी तथा रसोई का प्रबन्ध देखना ये सब उस जागीर की स्वामिनी के कार्य थे। सामन्त-गृह के लोगो के अधिकाश कपडे भी इस गृह-स्वामिनी के निर्देश मे ही सामन्त-गृह के भीतर ही काते, बुने तथा सिये जाते थे। उनकी लडकियाँ अपने वस्त्र खरीदने के लिये नगर मे नही जाती थी, यद्यपि प्राय ही उनकी बढिया पोशाक लडन से खरीदी जाती थी। युवा पुरुष, जोकि उतने ही उत्कृष्ट और भडकीले कपडे पहनते थे जितने उनकी बहने पहनती थी, बाहर घूमने की अपेक्षाकृत अधिक स्वतत्रता होने के कारण बहुत बार बाजार के दर्जी से भी कपडे सिलवा पाते थे।

इस प्रकार से हम एक समृद्ध परिवार की गृहणी के असख्य तथा निरन्तर चलने वाले कार्यक्रमो को देख सकते है, और आवश्यक परिवर्तनो के साथ, सब स्तरो की गृहणियो के कार्यक्रम की कल्पना कर सकते है।

इस काल मे सामन्त-गृहो के कमरो की दीवारो पर पर्दे टगे रहते थे हाल कमरे तथा अन्य अच्छे कमरो की दीवारो पर कढे हुए और चित्र-विचित्र पर्दे लटके होते थे, जिन पर शिकार के, धार्मिक या अन्य प्रतीकात्मक चित्र बने होते थे। ये पर्दे अब अजायबघरो की शोभा है। सामान्य कमरो मे एक रग के या धारीदार बुने हुए कपडे लटके रहते थे। इगलैड के प्रासादो मे अभी फ्रेम किये हुए चित्रो ने स्थान नही पाया था किन्तु दीवारे प्राय ही चित्रित होती थी। एटन कालेज के उपासना-गृह मे जो भित्ति-चित्र बचे हुए है, जोकि एक इगलैड के चित्रकार विलियम बेकर ने बनाए हुए है, यदि उनसे कुछ अनुमान किया जाय तो कहा जा सकता है कि रोसेज् के युद्धो के काल के इगलैड मे दीवारो पर बहुत सुन्दर चित्र होगे—जोकि बहुत समय पहले नष्ट हो गये थे।

दीवारो के भीतर चिमनियाँ बनाने की प्रथा अब बीच के कमरे मे खुली अगीठी बनाने की प्रथा को, जिनका कि धुआँ खुली खिडकियो से बाहिर निकलता था, क्रमश स्थानान्तरित कर रही थी। पास्टन लोग अपने प्रासादो मे यह महान सुधार हेनरी षष्ठ के काल मे ही आरम्भ कर चुके थे, किन्तु इस परिवर्तन की गति मन्द थी, क्योकि एलिजाबेथ तक के युग मे हम विलियम हैरीसन को पुरानी प्रथा को व्यथापूर्वक याद करते हुए पाते है।

हैरिसन को डाक्टर जोन्सन के उस अत्यन्त रूढिवादी कथन के साथ भी सहानुभूति होती जो उसने १७५४ मे पुराने गोथिक हालो के बारे मे थोमस वार्टन के सम्मुख व्यक्त किया था —"इन हालो मे पुराने जमानो मे अगीठी हमेशा कमरे के बीच मे होती थी, जबतक कि जनवादियो (व्हिग्ज) ने यह कमरे मे एक ओर को नही हटा दी।" किन्तु यह क्रान्तिकारी सूझ एक भी जनवादी के आविर्भाव से पूर्व धीरे-धीरे तीन-चार सौ वर्ष तक परिवर्तन-क्रम से गुजरी थी।

सामन्त-गृह अथवा किले मे उस युग मे पारिवारिक जीवन की जो एक कठोर धारणा थी उसमे अविवाहिता बूआ आदि को एक व्यर्थ बोझ समझा जाता था। यदि किसी लडकी का विवाह नही हो पाता था तो उसे, सम्भव होने पर, अनिवार्यत साध्वियो (नन्स) की शाला मे भेज दिया जाता था। उससे सम्यक् रूप से छुटकारा पाने के लिये पैसा दान कर दिया जाता था, और इस प्रकार वहाँ लडकी जीवन भर के लिए आदरपूर्वक स्थान पाती थी। दान मे पैसा दिए बिना साध्वी-शाला मे प्रवेश पाना लगभग असम्भव होता था। इस प्रकार से चौदहवी-पन्द्रहवी शताब्दियो मे इगलैंड मे साध्वीशालाओ का निर्माण होता था और उनको वित्त मिलता था। सिद्धान्त मे वे जो भी रही हो, तथा बहुत प्राचीन काल मे जो भी रूप उनका रहा हो, इस युग मे वे निर्धनो के शरणागर नही थे, न ये विशेष रूप से धार्मिक स्त्रियो के आवास थे। इन शालाओ मे पोप के प्रायिक आगमनो के वृत्तान्तो से पता चलता है कि इनमे स्त्रीत्व की मात्रा पर्याप्त थी, अनुशासन थोडा शिथिल था, यद्यपि लोकापवाद बहुत कम ही कभी होता था। साध्वी, विशेष रूप से मठस्वामिनी, को सदैव यह ध्यान रहता था कि वह एक कुलीन स्त्री है। चासर की मादाम एग्लेंटाइने के समान भक्ति-परायण होने के बजाय वह फैशन तथा व्यवहारकौशल की आदर्श थी।

पोशाक तथा आचरण सम्बन्धी जो नियम बहुत पुराने समय मे विरागात्मक विचारो के प्रवर्तको ने बनाए थे उनका अधिकाशत तिरस्कार ही हो रहा था। छ से अधिक दीर्घ शताब्दियो तक पादरियो ने मठो मे फैशन के विरुद्ध सघर्ष किया किन्तु इसमे कोई सफलता नही मिली। निरीक्षणार्थ आने वाले पोप पर अधिकाशत स्त्रियो के वाचालतापूर्ण कोलाहल की बौछार होती थी, मठ-स्वामिनी साध्वियो की शिकायत करती हुई और सब साध्विया एकसाथ मठ-स्वामिनी की शिकायत करती हुई, जब तक कि वह भद्र पुरुष, बिना कुछ विशेष किये, इस तूफान के सम्मुख भाग नही खडा होता था। बिशपो ने 'शिकारी कुत्तो' के गिरोहो को—और कभी कभी बन्दरो को भी—हटाने के अनेक प्रयत्न किये, किन्तु उन्हे सफलता नही मिली। इनसे ये बेचारी स्त्रिया, नियम के विरुद्ध, अपने दीर्घ एकान्त काल मे मन बहलाती थी। चर्च के लिकन नामक हलके के एक तपस्विनी विहार मे जब बिशप ने आकर पोप की आज्ञप्ति की एक प्रति प्रस्तुत की और तपस्विनियो को उसका पालन करने के लिये कहा, तो वे

उसके पीछे दरवाजे तक भागी और आज्ञप्ति की पुस्तक को उसके सिर पर यह चिल्लाते हुए मारा कि वे उसका पालन नही करेगी।

तपस्विनी-विहार यद्यपि सख्या मे बहुत थे किन्तु ये बहुत छोटे होते थे। इगलैड मे एकसौ ग्यारह विहारो मे से केवल चार मे तपस्विनियो की सख्या तीस से अधिक थी। देश मे तपस्विनियो की कुल सख्या १५०० से २००० थी। किन्तु प्रत्येक विहार मे नौकर और एक या अधिक पुजारी भी रहते थे।

पन्द्रहवी शताब्दी मे ये विहार आर्थिक रूप से, तथा अन्य प्रकार से भी, अधोगति की ओर जा रहे थे। हेनरी अष्टम् के इस सबध मे कठोरता से कार्यवाही करने के पूर्व रूढिवादी बिशपो के सकेत पर चालीस वर्षो मे आठ तपस्विनी-विहार समाप्त कर दिये गये थे। उदाहरणत, १४९६ मे सन्त रेडगुड के तपस्विनी-विहार के स्थान पर एलाई के बिशप अल्कोक ने जीसम कॉलिज "कैम्ब्रिज की स्थापना की और विहार को इस आधार पर समाप्त कर दिया कि इनका ठीक प्रबन्ध नही हो रहा है, तथा कैम्ब्रिज कालेज समीप होने के कारण दुराचार बहुत बढ रहा है।" कैब्रिज के उन दो विद्वानो के अनुवर्ती, जो चासर के काल मे ट्रम्पिगटन मिल मे आए थे, सन्त रेडगुड की तपस्विनियो मे बहुत अधिक रुचि ले रहे थे। अन्त मे केवल दो तपस्विनिया बची थी, एक अनुपस्थित थी और दूसरी 'बच्ची' थी। कम से कम, ऐसा बिशप का कथन था जोकि एक अधिक उपयोगी सस्था की स्थापना करना चाहता था।

सत रेडगुड तो विशेष रूप से बुरी अवस्था मे था, और यह सामान्य रूप से कहा जा सकता है कि इगलैड के मध्य युग के तपस्विनी विहार आज की अपेक्षा कम उपयोगी तथा प्रशसनीय थे।

विक्लिफ द्वारा चर्च की बृहत् सपत्तियो की आलोचना करने के काल से लेकर हेनरी अष्टम् के इन पर आक्रमण तक चर्च को भूमि तथा पैसा दान देने का काफी प्रचलन था, किन्तु अब यह दान साधुओ अथवा तपस्विनियो के घरो मे कम जाता था और मन्दिर तथा स्कूलो को अधिक प्राप्त होता था। इन पिछले दिनो मे धनिक तथा सामान्य नागरिक दान तथा वसीयतनामा करते समय अपने तथा अपने बन्धु-बाधवो की चिन्ता अधिक करते थे, बजाय पवित्र चर्च के। विद्यालयो को मिला दान सामान्य लोगो और पुजारियो दोनो की शिक्षा मे बराबर काम मे आता था। पूजा-गृह-प्रतिष्ठान मुख्यत एक आत्मप्रसाधक कार्य था पूजा-मदिर मे एक या दो पुजारियो को वेतन देकर सस्थापक की आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना (मॉस) करने के निमित्त रखा जाता था, और परलोक के सबध मे किसी की जो भी धारणाए हो, यह इस लोक मे अपना स्मारक रखने का एक साधन तो था ही। पूजा-गृह प्राय ही चर्च के एक ओर अत्यन्त सूक्ष्म शिल्प-कौशल से निर्मित होता था और उनमे सस्थापक की कब्र बनी होती थी। कुछ लोग अपने स्मारक के रूप मे पृथक् भवन ही बनवाते थे—छोटा चर्च या

पूजा-मन्दिर, जोकि सस्थापक का नाम अनुगामी सततियो की स्मृति के लिये सुरक्षित रखना था ।

पन्द्रहवी शताब्दी, अपनी सब अव्यवस्था के बावजूद, शिक्षा की सुविधाओ मे वृद्धि तथा तदर्थ प्राप्त धन की दृष्टि से बहुत अच्छा काल था । चासर-काल के इगलैड मे अनेक विद्यालय थे, किन्तु "सुधार" के पूर्व उससे अधिक थे । पन्द्रहवी शताब्दी के बिशप, जोकि अधिकाशत व्यवहार-कुशल और अच्छे थे, विद्यालयो को पैसा देने मे रुचि रखते थे । नगर-परिषदे तथा व्यक्तिगत नागरिक लोग, जोकि सपत्ति तथा जमीदारो के साथ पारिवारिक सबधो की दृष्टि से उन्नति कर रहे थे, विद्यालय स्थापित करने मे बडा गर्व अनुभव करते थे, जोकि उनके नगर अथवा प्रदेश के अन्य बच्चो को उन्नति का अवसर प्रदान कर सकते थे, "जिससे कि वे बडे होकर पुजारी अथवा बिशप बन सके, अथवा भविष्य मे मेयर, व्यापारी, राज्य मत्री, क्लर्क, न्यायाधीश तथा वकील आदि बन सके, जो कि उनकी जागीरो का सुप्रबन्ध कर सके अथवा राज्य प्रबन्ध कर सके ।[1]

वास्तव मे, इगलैड ने बहुत बढिया माध्यमिक शिक्षा-व्यवस्था का विकास किया । इनमे से बहुत से विद्यालय 'निर्धनो' को नि शुल्क पढाने के लिये स्थापित किये गये थे, किन्तु श्रमिक वर्ग इससे लाभ नही उठा रहा था बल्कि केवल सापेक्षत निर्धन लोग ही इससे लाभ उठा रहे थे —अर्थात् निम्न मध्यम वर्ग के लोग, छोटे जमीदारो के बच्चे या सरक्षित अथवा मध्यम श्रेणी के जमीदारो अथवा नागरिको के बच्चे, जोकि इन विद्यालयो के माध्यम से देश की सरकार मे भाग लेने के लिये आगे आते थे । इस प्रकार से, शिक्षित-जन तथा पादरियो के नये वर्ग के आगमन ने अगली शताब्दी मे होने वाले सामाजिक तथा बौद्धिक परिवर्तनो के लिये भूमि तैयार की, क्योकि दोनो ने ही शीघ्र बाद मे होने वाले महान आन्दोलनो मे भाग लिया था । सामान्य धारणा के विपरीत, व्याकरण विद्यालय (ग्रामर स्कूल) अग्रेजी भाषा-सुधार के परिणाम नही थे वे इसके कारण थे ।

पन्द्रहवी शताब्दी के अन्त तक, यूनानी तथा सिसेरोवादी नवजागरण का सदेश हमारे द्वीप तक पहुचने से पूर्व माध्यमिक शिक्षा विचेस्टर तथा एटन के समान समृद्ध

---

[1] १९३० और १९७५ के बीच पोपो तथा बिशपो के लेखो मे "शिक्षित जन-साधारण" का प्राय ही वर्णन आता है—जोकि उस समय एक नयी बात थी । पन्द्रहवी शताब्दी बीतते बीतते यह पद-प्रयोग समाप्त हो गया, क्योकि जिस वर्ग का यह पद वर्णन करता है वह अब इतना सामान्य हो गया था कि वह कुतुहल उत्पन्न नही करता था, और ग्राम-स्कूल सामान्य लोगो को अधिक से अधिक सख्या मे शिक्षा दे रहे थे ।

नगरो से लेकर छोटे नगरो तक सभी मे, लैटिन के अध्यापन तक सीमित थी—वर्जिल, ओविड, तथा कुछ ईसाई लेखको के ग्रन्थ ही पढाए जाते थे। मध्य युगीन चर्च का बहुत पुराने समय से प्राचीन लेखको के प्रति, उनकी मूढतापूर्ण गलतियो के बावजूद, एक उदारतापूर्ण आदर का रवैया था, और इस उदारता मे से ऐसा बहुत कुछ उत्पन्न हुआ जिसे यूरोपीय सस्कृति मे उत्कृष्टतम तत्व कहा जा सकता है। व्याकरण विद्यालयो मे विद्यार्थी लैटिन भाषा मे गद्य ओर पद्य रचना करते थे और कक्षा मे लैटिन से इगलिश मे अनुवाद करते थे, जोकि उस समय तक अध्यापन का एक सर्वस्वीकृत माध्यम हो चुकी थी, केवल कुछ ही विद्यालयो मे फ्रैंच का वैकल्पिक प्रयोग होता था, वह भी इसलिये नही कि बच्चे घर पर फ्रेंच बोलते थे, बल्कि इसलिये कि 'कही फ्रेच भाषा पूरी तरह से ही नही भूल जाय।' किन्तु विद्यालय के समय के बाद लैटिन के सिवाय अन्य कोई भाषा बोलने की मनाही थी। कुछ शताब्दियो तक यह विचित्र नियम कोडो की मार द्वारा लागू किया जाता था। कभी कभी तो यह भेद लेने के लिये कि कोई विद्यार्थी खेल आदि के समय इगलिश का शब्द तो नही बोलता, सवैतनिक गुप्तचर तक रखे जाते थे। यह कहना कठिन है कि यह कठोर निषेध व्यवहार मे कहा तक लागू होता था। क्या लैटिन पन्द्रहवी शताब्दी के व्याकरण विद्यालय के विद्यार्थी के लिये उससे कम 'मृत भाषा' थी जितनी कि वह उन्नीसवी शताब्दी के पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी के लिये थी ? ऐसा सोचने के लिये बहुत से कारण है कि वह थी। उन दिनो के व्याकरण-विद्यालय जितना परिचय लैटिन का देते थे वह उन दिनो किसी भी व्यवसाय-वृत्ति के लिये आवश्यक था। इसकी आवश्यकता केवल पुजारियो को ही नही थी, उतनी ही आवश्यकता राजदूतो, वकीलो, राज्याधिकारियो, डाक्टरो, व्यापारियो के मुनीमो, और क्लर्कों आदि को भी थी।

सामन्तो तथा अभिजातो के लडके भिन्न-भिन्न प्रकार से शिक्षा प्राप्त कर रहे थे जोकि भेद उनके माता-पिताओ के स्तर तथा व्यक्तिगत दृष्टिकोण के अनुसार होते थे। कुछ तो अपने घर पर ही रहते थे और उन्हे पादरी पढाने के लिये, वनाधिकारी शिकारीदि सिखाने के लिये और कोई वृद्ध आरक्षक अथवा पडौस का कोई सामन्त शस्त्र-विद्या सिखाने के लिये आता था। किन्तु अधिकाशत वे घर से दूर ही भेजे जाते थे। इगलैड की यह प्रथा विदेशियो को बडी निष्करुण प्रतीत होती थी, किन्तु परिणाम मे यह हानिकारक की अपेक्षा लाभदायक ही अधिक थी। कुछ विद्यार्थी व्याकरण-विद्यालयो मे भर्ती होते थे और वहा लैटिन पढ थे, और सम्पन्न नगरवासियो तथा सामन्तो के योग्यतम बच्चो के निकट-परिचय मे रहते थे।* दूसरे गैरसरकारी छोटे स्कूलो मे जाते थे, किन्तु वहा भी किसी विवाहित व्यक्ति के सरक्षण मे रहते थे।[1] शेष किसी सन्त की देखरेख मे किसी मठ मे रहते थे। किसी समय, चौदह से अट्ठारह वर्ष

---

[1] स्टोनर लैटर्स, अ १, पृ० २१।

की श्रायु के बीच, कुछ विद्यार्थी श्राक्सफर्ड तथा कैम्ब्रिज भी जाते थे, जबकि श्रन्य श्रपनी शिक्षा राज्य दरबार मे श्रथवा बडे सामन्तो के दरबारो जैसे घरो मे सहायक श्रथवा श्रनुचर के रूप मे पूर्ण करते थे। वहा सबसे श्रधिक मूल्य लैटिन के ज्ञान को नही दिया जाता था बल्कि घुडसवारी, क्रीडा-प्रतियोगिता, शिकार, नृत्य, वादन, तथा गायन मे निपुणता का तथा प्रेमकला के सब रूपो का मूल्य था। नैतिकतावादी लोग इन सस्थानो की "युवको को भ्रष्ट करने वाले स्थान" कह कर निन्दा करते थे। निस्सन्देह, इनमे कुछ दूसरो से उत्कृष्टतर थे, किन्तु पन्द्रहवी शताब्दी के उत्तरार्ध मे सामन्त तथा इनके दरबार के लोग निरन्तर पतन की श्रोर जा रहे थे तथा जागीरो, दफ्तरो, व्याकरण-विद्यालयो तथा विश्वविद्यालयो के लोग श्रागे श्रा रहे थे। नया युग उनके हाथो मे श्राना निश्चित था। सम्पन्नो के बहुत से लडके, जो जीवन के पिछले वर्षो मे बहुत सफल होते थे, उनमे से होते थे जो शिल्पियो तथा व्यापारियो के शागिर्द होते थे। यह एक ऐसी परम्परा थी (जो कि इगलैड के समाज को फ्रास के समाज से पृथक् करती थी) जिससे कुलीन लोग सामान्य लोगो मे मिश्रित होते थे।

वैखम के विलियम का विचेस्टर कालेज तथा १४४० मे हेनरी चतुर्थ द्वारा स्थापित एटन कालेज धीरे धीरे श्राज के पब्लिक स्कूलो का, इस शब्द के इगलिश श्रर्थ मे, रूप ले रहे थे—ऐसे स्कूल जिनमे सम्पन्नो के बच्चे पढते थे। विचेस्टर स्कूल मे श्रारभ से ही इस वर्ग के बच्चो की भारी सख्या थी, श्रौर श्रारभ से ही यह राष्ट्रीय स्तर का स्कूल था, केवल एक स्थानीय व्याकरण स्कूल नही था। इसमे सम्पूर्ण दक्षिण से, मध्य प्रदेश से, श्रौर यहा तक कि चशायर तथा लकाशायर तक से, विद्यार्थी श्राकर भर्ती होते थे। बहुत से विद्यार्थी श्रट्ठारह वर्ष की श्रायु तक इसमे रहते थे। रोसेस के युद्ध-काल मे एटन महान् श्रार्थिक कठिनाइयो मे था। किन्तु, श्री लीश के श्रनुसार, इस बात ने "इस स्कूल के एक बृहत् पब्लिक स्कूल बनने की दिशा मे सक्रमण की गति को मन्द करने के बजाय तीव्र ही किया, क्योकि उच्च वर्ग जबकि श्रपने बच्चो के शिक्षणार्थ कुछ नही देते थे, श्रन्य साथियो के घरो मे तथा एटन शहर मे, जहाकि उन्हे श्रोप्पीडस् कहा जाता था, खाने का बहुत पैसा देते थे।"

इस प्रकार से १४७७ मे युवक विलियम पास्टन नार्फोक जागीर से लैटिन का श्रनुवाद तथा गद्य-पद्य रचना सीखने के लिये तथा सहचार सीखने के लिये एटन भेजा गया था, यद्यपि उसके माता-पिता उसके खाने श्रादि का पैसा चुकाने मे बहुत श्रालसी थे, यहा तक कि उनका नौ महीने का पैसा बकाया हो गया था। एक बार उसके श्रध्यापक ने उसे बीस शिलिग उधार दिया था, जोकि, उस समय की शिलिंग की कीमत देखते हुए, बहुत बडी रकम थी।

एक प्राचीनतर पीढी मे प्रथम जोह्न पास्टन भीतरी मन्दिर (इनर टेम्पल) मे जाने से पूर्व ट्रिनिटी हाल मे कानून पढने के लिये पडौस के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय

मे गया था। मुकद्दमेबाजी के इस युग मे, उच्च वर्ग के व्यक्ति के लिये अपनी सपत्ति की रक्षा के निमित्त कानून जानना आवश्यक था। जैसाकि जोह्न पास्टन की व्यवहार-कुशल माता एग्नेस ने उसे कहा था

"मै तुम्हे सलाह दूगी कि तुम अपने पिता के कानून सीखने के परामर्श को दिन मे एक बार अवश्य अपने मन मे दुहराओ, क्योकि वह अनेक बार यह कहते थे कि पास्टन मे रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पैरवी करना आना चाहिये।"

जोह्न का पुत्र वाल्टर पास्टन अधिक दूर, आक्सफर्ड मे, पारिवारिक पुरोहित तथा सर्व कार्य कुशल जेम्ज ग्लॉयस के सरक्षण मे भेजा गया था। उसकी माता मार्गरेट को चिन्ता थी कि कही विश्वविद्यालय के धर्मशिक्षक उसे धर्म पढने के लिये प्रेरित नही करे

"मै उसे एक बढिया कार्य-व्यवहारी व्यक्ति बनाना अधिक पसन्द करूगी बजाय एक निकम्मा पुजारी बनाने के।"

१४७४ मे जब वाल्टर पास्टन आक्सफर्ड मे था तब उसने मैग्डेलन कालेज की, जिसकी स्थापना कि बीस वर्ष पहले वेग्रनफ्लैट ने की थी, दीवारे उठती हुई अवश्य देखी होगी। इस कालेज का निर्माण रोसेस के युद्धो के कारण विलबित हो गया था। मैग्डेलन कालेज वैकेहम के "नवीन कालेज" की, जोकि उस समय एक सौ वर्ष पुराना था, शिल्प को दृष्टि से बराबरी करता था। कैम्ब्रिज मे भी हेनरी चतुर्थ के कालेज का भवन उसके राज्यकाल की अव्यवस्था के कारण विलबित हो गया था यहा तक कि मदिर भी ट्यूडर के युग मे जाकर पूरा हुआ।[1] किन्तु नदी के पास बना क्वीस कालेज, जिसे कि अजरु की मार्गरेट ने स्थापित किया था, उसके शान्त स्वभाव के पति के जीवन-काल मे ही विकसित हुआ, जोकि इस बात का प्रमाण था कि अब ईट से भी बहुत बढिया भवन-निर्माण हो सकता है।

सम्पूर्ण पन्द्रहवी शताब्दी मे कैम्ब्रिज आक्सफर्ड के प्रतिस्पर्धी के रूप मे आगे बढ रहा था। यद्यपि १३८२ मे चर्च अथवा राज्य दोनो ने विश्वविद्यालय से विक्लिफवाद का निरास कर दिया था, किन्तु अपने बच्चो को विश्वविद्यालय भेजने के इच्छुक पवित्रतावादी माता-पिता अब भी इस पर सन्देह करते थे। अशत इस कारण से भी आक्सफर्ड मे विद्यार्थियो की सख्या घटी तथा अगले सौ वर्षों मे कैब्रिज मे विद्यार्थियो की सख्या बढी, और अब तक उपेक्षित कैब्रिज मे कालेज स्थापित करने की ओर राज्य का ध्यान आकर्षित हुआ। उस शताब्दी के अत तक अधिकाश बिशप कैब्रिज से

[1] विलिस एड क्लार्क, १, पृ० ४६४।

निकले विद्यार्थी थे। किन्तु यद्यपि यह शिशु विश्वविद्यालय सख्या की दृष्टि से तथा वैभव और शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप मे बहुत प्रगति कर रहा था, किन्तु न तो कैंब्रिज ने और न आक्सफर्ड ने ही विद्वत्ता तथा चिन्तन के क्षेत्र मे ट्यूडर राजाओ के काल तक कोई महत्वपूर्ण योगदान किया। चिन्तन तथा विद्वत्ता अनिवार्यत धर्म द्वारा प्रतिष्ठित रूढियो के अनुसारी थे और धर्म अब उस तरह से सृजनात्मक नही रहा था जैसे महान् मध्ययुगीन विद्वान थे।

किन्तु इस रूढिवादी युग मे कालेज-व्यवस्था ने अत्यन्त गहरी जडे पकड ली थी और इस चीज ने मध्ययुगीन विद्यार्थियो की उपेक्षित तथा अनुशासन-विहीन स्थिति का अन्त कर दिया था। प्राय सब आन्दोलनो मे सफलता के पहले दौर मे बहुत आगे बढ जाने की प्रवृत्ति रहती है, इस तरह से पन्द्रहवी तथा सोलहवी शताब्दियो मे अवर-स्नातको मे अनुशासन बहुत अधिक कठोर हो गया। कम से कम ऐसा अनुमान किया जा सकता हे कि ऐसा रहा होगा यदि यॉर्किस्ट तथा ट्युडर-कालो के कालेजो तथा विश्वविद्यालयो के नियम व्यवहार मे वास्तव मे ही आते होगे, क्योकि उस समय अवर-स्नातको के साथ स्कूल के लडको जैसा ही व्यवहार किया जाता था। एक दण्ड डडे से पीटना भी था, जो कि उससे पूर्व विश्वविद्यालयो मे कभी नही होता था। यह बात इस कारण से और भी ध्यान देने योग्य है क्योकि उन दिनो अवर-स्नातको की औसत आयु पहले की अपेक्षा और भी अधिक थी जब इरासमस आक्सफर्ड तथा कैंब्रिज मे था तब सत्रह वर्ष की आयु के विद्यार्थियो की सख्या का अनुपात चौदह वर्ष की आयु के विद्यार्थियो से वाइक्लिफ के युग की अपेक्षा अधिक था। किन्तु यह जानना सदैव कठिन होता है कि नियम किस सीमा तक व्यवहार मे लाये जाते थे। स्वभावत ऐसी बाते परिस्थिति और व्यक्ति के अनुसार बदलती रहती है। जो भी हो, वह समय हमेशा के लिये समाप्त हो गया था जबकि शैक्षणिक अनुशासन नाम की कोई चीज ही नही थी। पन्द्रहवी शताब्दी के अन्त तक आक्सफर्ड तथा कैंब्रिज का कालेजीय ढाचा सदा के लिये रूप ले चुका था।

इग्लैड मे जब स्कूलो तथा विश्वविद्यालयो मे विद्यार्थियो की सख्या बढ रही थी उस समय उन्हे क्या पढाया जा रहा था? उस समय धार्मिक ग्रन्थो की बहुत माग थी, किन्तु बाइबल से बहुत कम परिचय था। इसका आग्ल अनुवाद बिना लाइसेस के रखने को चर्च के अधिकारी धर्म-द्रोह का एक असदिग्ध प्रमाण समझते थे। लोल्लार्ड सम्प्रदाय (वाइक्लिफ का मत) की शिक्षाए, जिनके पीछे अब नेतृत्व तथा विद्वत्ता का बल नही रहा था, निर्धनों तक सीमित रह गयी थी। यह मत अब अवैध घोषित कर दिया गया था, किन्तु यह मरा नही था बल्कि परिस्थिति बदलते ही दोबारा अकुरित होने के लिये तैयार था। पन्द्रहवी शताब्दी मे प्रतिष्ठित धर्म के विरोधी बीसियो की सख्या मे जला दिये गये थे, किन्तु अनेको ने सूली से बचने के लिये मत-परिवर्तन भी कर लिया था, अनेक ध्यान मे ही नही आए, कम से कम कैद से तो बच ही गये।

धार्मिक पुस्तको, स्कूलो मे पढाये जाने वाले प्राचीन लैटिन ग्रन्थो तथा वास्तविक विद्वानो के पढने योग्य बृहद् ग्रन्थो के अतिरिक्त सामान्य नागरिक तथा उच्च वर्ग के लोग इगलैड तथा फ्रास के गद्य-पद्यात्मक इतिवृत्त, गद्य मे लिखी अनन्त प्रेम-कथाए तथा ट्रॉय, राजा आर्थर के बारे मे गाथाए तथा असख्य अन्य परम्परागत कथाए पढते थे।[1] चासर, लैगलैड तथा मैडेविले की यात्राओ की पुस्तको की प्रतिलिपियो का निरन्तर निर्माण (जब मगरमच्छ मनुष्य को खाता है तो कैसे रोता है) सिद्ध करता है कि ये प्राचीन-लेखक उस समय अत्यन्त जन-प्रिय थे। इगलिश पद्य मे राजनैतिक व्यग्य हस्तलिखित रूप मे बहुत प्रचारित होते थे। इसी प्रकार की १४३६ मे लिखी गयी इगलिश नीति की निन्दा (लिबल ऑफ इगलिश पालिसी) पुस्तक थी जिसमे कहा गया था कि राज्य का प्रथम कर्त्तव्य राष्ट्रीय सागर मे एक शक्तिशाली जहाजी बेडा रखना है, और यह उतना ही आवश्यक सैनिक सुरक्षा की दृष्टि से है जितना व्यापारिक दृष्टि से।

व्यक्तिगत पुस्तकालयो के अतिरिक्त सार्वजनिक पुस्तकालयो की भी स्थापना हो रही थी, जैसे आक्सफर्ड मे ड्यूक हम्फ्रे का पुस्तकालय, कैम्ब्रिज मे विश्वविद्यालय पुस्तकालय, लण्डन मे ग्रे फ्रेअर्स पर हि्वटिग्टन का पुस्तकालय तथा गिल्ड्हाल मे पुस्तकालय। मनोरजनात्मक साहित्य मे बैले (गाथा काव्य) के अतिरिक्त और कुछ विशेष नही रहा था और वे अधिकाशत मौखिक रूप से गाये जाते थे, बजाय पढे या लिखे जाने के। कहानियो के लिये मानव की शाश्वत क्षुधा मौखिक शब्द के द्वारा अधिक सन्तुष्ट हो रही थी। काल की लबी घडिया बिताने के लिये स्त्री-पुरुष कहानी सुनाने की सामाजिक कला का उपयोग करते थे तथा सगीत से मन बहलाते थे।

कैक्सटन ने जब इगलैड मे छापने की मशीन स्थापित की थी उस समय समाज तथा शिक्षा की ऐसी अवस्था थी।

विलियम कैक्सटन (१४२२-१४९१) नवीन मध्यम वर्ग तथा उसकी समुन्नत शिक्षा की उपज था। वह एक सुपरिचित आधुनिक प्रकार का आरभिक तथ्य उत्कृष्ट

---

[1] महारानी एलिजाबेथ के स्कूल मास्टर रोजर एस्कम ने लिखा था "हमारे पूर्वजो के काल मे जबकि पोपतंत्र इगलैड को स्थिर पानी के समान आवृत्त और निमग्न किये हुए था, हमारी भाषा मे वीरता के किस्सो के सिवाय, जो कि कालयापन के लिये पढे जाते थे, कोई साहित्य नही पढा जाता था। उदाहरण के लिये, इनमे से एक 'आर्थर की मृत्यु' (ला मार्टे डि आर्थर) था जिसका रस केवल दो बातो मे था, खुले मानव-वध मे तथा स्थूल अश्लीलता मे तो भी मैं यह जानता हू कि कब ईश्वर की बाइबल को दरबार से निष्कासित किया गया और "राजा आर्थर की मृत्यु" को प्रवेश दिया गया।

उदाहरण था जिस प्रकार ने कि ससार के लिये इतना महत्वपूर्ण कार्य किया था। यह प्रकार था एक व्यक्तिवादी अग्रेजी मानव का, जो व्यापार की योग्यता तथा प्रशिक्षित उत्साह के साथ अपनी निजी 'हॉबी' मे सलग्न रहता था। लडन मर्सर्ज कम्पनी के एक सफल व्यापारी के रूप मे उसने लो कट्रीज (निम्न स्थलीय प्रदेशो) मे अपने तीस वर्षों के निवास-काल मे इतना पैसा एकत्र कर लिया था कि वह पीछे के वर्ष अध्ययन मे बिता सके। उसने पहले फ्रेंच की पुस्तको का अनुवाद इगलिश मे करना आरभ किया। इसमे जबकि अभी वह व्यस्त ही था, वह मुद्रण-कला के नये रहस्य की ओर आकर्षित हो गया और इसके बारे मे उसने ब्रजेस तथा कोलेज मे अध्ययन किया। १४७४-७५ मे उसने विदेश मे अपने दो अनुवाद प्रकाशित किये (इनमे से एक मध्यकालीन रोमास था और दूसरा "शतरज के खेल और उसके नियम" था) ये इगलिश भाषा मे प्रकाशित होने वाली पहली किताबे थी।

पीछे १४७७ मे वह अपना प्रेस इगलैंड मे ले आया, इसे वैस्टमिस्टर मे एब्बे के पास स्थापित किया, और वहा अपने जीवन के शेष १४ वर्षो मे राजा तथा सामन्तो के सरक्षण मे लगभग एक सौ पुस्तके मुद्रित की, और इनमे से अधिकाश इगलिश भाषा मे थी। इनमे चासर, गोवर तथा लिडगेट की पुस्तके तथा मेलोरी की "आर्थर की मृत्यु" भी सम्मिलित थी और सिसेरो की पुस्तको तथा ईसप की कहानियो के अनुवाद भी थे। उसका उद्योग विलक्षण था। प्रेस पर कठोर तथा निरन्तर परिश्रम करने के बावजूद उसने बीस ग्रन्थो का अनुवाद किया। उसमे वास्तव मे "अपनी इगलिश भाषा मे" अपने देशवासियो के लिये उत्कृष्ट तथा उपयोगी ग्रथ प्रस्तुत करने के प्रति एक अपूर्व उत्साह था। अनुवादक, मुद्रक तथा प्रकाशक के रूप मे उसके अध्यवसाय तथा सफलता ने साहित्यिक अग्रेजी की आधारशिला रखी तथा अनुगामी शताब्दी मे अग्रेजी के विकास तथा इसकी गौरव-वृद्धि मे बहुत महत्वपूर्ण योगदान किया।

उसका इस मुद्रणकला का उपयोग, जो कि उसने इगलैंड के जीवन के एक अग के रूप मे स्थापित की थी, एक साथ आदर्श और व्यावहारिक दोनो था, किन्तु यह विवादास्पद तनिक भी नही था। तब भी इसके बाद से प्रैस सब राजनैतिक तथा धार्मिक विवादो के लिये साधनभूत हुई। विचारो तथा ज्ञान के विस्तार का प्रवेग अत्यधिक तीव्र हो गया। किन्तु जिस वर्ष कैक्स्टन की मृत्यु हुई, प्रेस के ये सभावी परिणाम अभी देखे नही गये थे।

दूसरी ओर, कैक्स्टन शिक्षितो के लिये अग्रेजी भाषा का रूप निर्धारण करने मे अपने कार्य के महत्व को खूब अच्छी तरह से समझता था। इसलिये वह बोली के सुघडतम रूप के सबध मे बहुत परामर्श लेता था तथा विचार करता था। इन कठिनाइयो का उसने इनीडोस के प्राक्थन मे वर्णन किया है जोकि वर्जिल के एनीड के फ्रेंच भाषा मे रूपान्तर का अनुवाद था।

इस प्रकार से हम देखते हे कि कैक्स्टन के पास चुनाव का अवसर था। उसके पास सहायता के लिये कोई शब्दकोश नही थे। जब वह अपने पुस्तक सकुल अध्ययन-कक्ष मे बैठता था तब उसके लिये एक नियमित अग्रेजी भाषा नही थी जिसकी सीमाओ का तो वह विस्तार कर सकता किन्तु जिसकी योजना को स्वीकार करना उसके लिये अनिवार्य होता। इगलैंड मे बोलियो की सख्या उतनी ही अधिक थी जितनी मडलो की थी, और वे भी निरतर बदलती रहती थी। उत्तर के रहने वाले, पश्चिम के ग्रामीण, यहातक कि कैंट की गृहिणी भी लडन के व्यापारी की बोली नही समझ सकती थी और न ही परस्पर सवाद कर सकती थी। यद्यपि अन्तत लडन की तथा दरबार की बोली की विजय अवश्यभावी थी किन्तु इस विजय को निश्चित तथा त्वरित पहले तो चॉसर और उसके पन्द्रहवी शताब्दी के अनुगामियो ने किया जिन्होने कि पश्चिमी मध्य प्रदेश के पियर्स कृषको की बोली को शिक्षितो मे से निकाल बाहर किया, उसके बाद कैक्स्टन की प्रेस ने किया, और अन्त मे तथा सर्वाधिक अग्रेजी की बाइबल तथा प्रार्थना-पुस्तक ने किया, जाकि ट्यूडर के काल मे प्रेस की कृपा से उन सबके पास पहुच गयी जो पढे लिखे थे, और कुछ अवस्थाओ मे उन के पास भी जो नही पढ सकते थे, केवल लिख ही सकते थे। इस प्रकार से, पन्द्रहवी तथा सोलहवी शताब्दियो मे इगलैंड के शिक्षितो को 'साहित्यिक अग्रेजी' से मिलती-जुलती एक सामान्य बोली मिली, और जैसे-जैसे शिक्षा का प्रसार हुआ यह बोली सारे देश की भाषा हो गयी।

लकाशायर तथा यॉर्क के राजाओ के 'अव्यवस्थित राज्यकाल मे लडन शान्त रहा तथा उसका वैभव निरन्तर बढा उत्सवो के अवसर पर उसके दडाधिकारियो की सज्जा तथा नगर मे से और नदी के किनारे पर उनकी परेड की प्रभावशालित निरन्तर अधिकाधिक बढती गयी, उसका नागरिक, धार्मिक तथा गृह्य वास्तुशिल्प और भी अधिक सम्पन्न तथा सुन्दर हो गये। इसलिये इसमे कोई आश्चर्य की बात नही है कि शताब्दी के अन्तिम वर्षो मे स्कॉट कवि डु बर ने प्रशसा पूर्ण हर्ष से कहा था "हे लन्डन, तुम सब नगरो मे रत्न हो"।[1]

---

[1] हेनरी सप्तम् के राज्यकाल मे एक इटली के यात्री ने लिखा था कि "केवल एक ही बाजार मे, जिसका नाम स्ट्राडा है और जो सन्त पॉल चर्च की ओर जाता है, सुनारो की बावन दुकाने है जोकि सोने-चादी के छोटे-बडे अनेक प्रकार के बर्तनो से इतनी भरी पडी है कि मिलान, रोम, विनाइस तथा फ्लोरेस के बाजारो की सब दुकानो मे इतना वैभव नही होगा।" (इटालियन रिलेशन ऑफ इगलैंड, काम्डन सोसाइटी, १८४७, पृ० ४२)। 'स्ट्राडा' सम्भवत अब के स्ट्रैंड का नाम नही था बल्कि चीपसाइड का नाम था। द्रष्टव्य कुमारी डेविस का "हिस्ट्री" के अप्रैल, १९३२ के अक मे लेख।

इस काल मे लन्डन की सरकार शिल्पी प्रजातत्र द्वारा शासित नही हो रही थी बल्कि बृहत् व्यापार-कम्पनियो के सदस्यो द्वारा शासित हो रही थी। पन्द्रहवी शताब्दी के लन्डन के सब नगराध्यक्ष तथा नगरपिता पसारियो, वस्त्र-व्यापारियो और कुछ घट कर मछली व्यापारियो तथा स्वर्णकारो मे से ही थे। इन बृहत् कम्पनियो के सदस्य, इनके नामो से चाहे जैसा भी अनुमान होता हो, वस्त्र-उद्योग तथा पसारी के व्यापार तक ही सीमित नही थे बल्कि उनके मुख्य लाभ-स्रोत सब प्रकार के समुद्रपारीय व्यापार थे, मुख्यत अनाज, ऊन तथा वस्त्र। यूरोप के मुख्य व्यापार केन्द्रो, जैसे ब्रजेस आदि मे, उनके घर तथा एजेट रखे होते थे, जैसे विलियम कैक्स्टन था। न केवल लन्डन मे बल्कि अन्य बन्दरगाहो मे भी इगलैड के अधिकाश पोतों पर उनका स्वामित्व था, और वे विदेशी पोतो को भी किराये पर ले लेते थे। किन्तु इटली के तथा उत्तरी जर्मनी के व्यापारी अभी भी अपने ही जहाजो मे अपना वस्तुजात लन्डन मे ला रहे थे। पोत-घाट, जिनमे अनेक देशो के पोतो की भीड लगी रहती थी, ब्रिज से नदी तक विस्तृत थे, उनके दोनो ओर ऊँचे-ऊँचे मकान थे तथा राजमहल और शस्त्रागार देशद्रोहियो के नित्य नवीन आने वाले सिरो से विभूषित होते थे।

व्यापारी अभिजात वर्ग ने, जोकि राजधानी पर राज्य कर रहा था, राजगद्दी के लिये स्पर्धी परिवारो के सघर्ष से अपने आपको बडी बुद्धिमत्तापूर्वक पृथक् रखा (लन्डन ने केवल स्टूअर्ट के काल मे ही राजाओ को बनाने-हटाने मे भाग लिया)। किन्तु उन्होने लाल तथा श्वेत रोसेस की सेनाओ को लन्डन की स्वाधीनता तथा व्यापार का आदर करने के लिये बाध्य कर दिया और प्रत्येक अनुगामी सरकार ने, चाहे वह हेनरी षष्ठ की हो या एड्वर्ड चतुर्थ अथवा रिचर्ड तृतीय अथवा हेनरी सप्तम् की, सभी राष्ट्रीय कोश की समृद्धि के लिये अपने व्यापारियो के सद्भाव को आवश्यक समझा। एड्वर्ड चतुर्थ जब कभी व्यक्तिगत अथवा गार्हस्थिक कार्यो से लन्डन जाता था तब उनकी मित्रता अर्जित करने के लिये तथा उन्हे प्रसन्न करने के लिये ऐसे कार्य तक करता था जो राजा के गौरव के योग्य नही कहे जा सकते। व्यापारी लोग सरकार को अब भी पैसा उधार दे रहे थे। राजकीय जागीर तथा लार्ड हेस्टिंग्स और एस्सेक्स के अर्ल के समान शक्ति-सम्पन्न राजनीतिज्ञो की जागीरो के बाहर की ऊन लन्डन के व्यापारियो के माध्यम से विदेशो मे ही बेची जाती थी। स्टोनर्स के समान ग्रामीण उच्च वर्ग के लोग, जोकि पश्चिम प्रान्त के भेडो के गल्लो के स्वामी थे, अपने आपको ऊन के व्यापारी कहलाने मे गौरव का अनुभव करते थे। उस प्राचीन काल मे भी भूमि तथा पूजी के स्वार्थो मे भेद था। व्यापार मे अर्जित सम्पत्ति भूमि की ओर प्रवाहित हो रही थी तथा उसे उर्वरा कर रही थी। जमीदारो के छोटे बच्चे लन्डन के शिक्षको के पास शिष्य होकर नगर-प्रमुखो के रूप मे आगे आए।

रोसेज के युद्ध-काल मे केवल लन्डन ही नही वल्कि अन्य नगर भी तटस्थ रह कर तथा राजा और अन्य राष्ट्रीय और स्थानीय राजनीतिज्ञो तथा न्यायाधीशो को उपहार आदि देकर शान्ति से रह रहे थे। कैम्ब्रिज के नगराध्यक्ष ने १४८४-८५ मे इस प्रकार से विवरण दिया है

महाराजा को मछलियो के रूप मे ६ ५ पौड भेट किया, महाराजा के प्रमुख न्यायाधीश को मदिरा, मसाला, मछली तथा रोटी के रूप मे ५ शिलिग भेट किया, यॉर्क के बिशप को ८ शिलिग ८ पेस भेट दी, नार्फोक के ड्यूक को ६ शिलिग ८ पेस भेट दी, विलियम कॉयले को उसकी मैत्री प्राप्त करने के लिये ६ शिलिग ८ पेस दिया, नार्फोक के ड्यूक को मदिरा के रूप मे २ शिलिग ८ पेस दिया।

कैम्ब्रिज नगर भी पार्लियामेट मे अपने प्रतिनिधियो को सत्र के दिनो मे प्रतिदिन १२ पेस देता था और कुल मिलाकर ३३ शिलिग देता था, यद्यपि दो मे से एक ही प्रतिनिधि अपना कार्य-सपादन करता था। नये नगराध्यक्ष को अपने भव्य वस्त्र खरीदने के लिये प्रतिवर्ष २० शिलिग मिलते थे, और "वैतालिको" तथा उनकी पोशाको के लिये भी बहुत पैसा दिया जाता था। ये पैसे आज के पैसो के क्रय मूल्य की दृष्टि से बहुत बडी रकम थी। एक ग्राम-पुरोहित, जिसे वर्ष भर मे सब साधनो से १० पौड तक आय हो जाती थी, उसके लिये समझा जाता था कि उसे अच्छी आय हो रही है।

चौदहवी शताब्दी के पूर्वार्ध के बाद से लेकर कपडे का उत्पादन तथा निर्यात कच्ची ऊन के निर्यात को हानि पहुँचा कर बढ रहे थे। दूसरे शब्दो मे, साहासी व्यापारी लोग ऊन के उत्पादको के ह्रास पर पोषित और सवर्द्धित हो रहे थे। वस्त्र-व्यापार कोल्चेस्टर जैसे अन्तर्देशीय नगरो को, जहॉकि वस्त्र एकत्र होता था, तथा बन्दरगाहो को, विशेषत लन्डन को, जहॉ से यह निर्यातित होता था, समृद्ध कर दिया था। किन्तु कपडे का उत्पादन मुख्यत ग्राम-क्षेत्रो मे ही हो रहा था, और बहुत से गॉवो मे जीवन अब अधिक समृद्ध और वैविध्यपूर्ण हो गया था, और यह अब अशत औद्योगिक भी था। खुले बाजार के लिये कुशल वस्त्र-निर्माता तेरहवी शताब्दी से ही नगरो को छोडकर ग्रामो मे जा रहे थे। वह दिन अभी भी बहुत दूर था जबकि १८ वी तथा १९ वी शताब्दियो के आविष्कारो ने इस गति-दिशा को उलट दिया और इगलैड के कारीगरो को वापिस नगरो की ओर उन्मुख कर दिया। १५वी शताब्दी मे लण्डन के अतिरिक्त इगलैड के अधिकाश नगरो मे या तो कोई गति नही थी अथवा वे वैभव तथा जनसख्या की दृष्टि से ह्रास की ओर जा रहे थे।[1]

---

[1] द्रष्टव्य—प्रोफिसर पास्टन (हिस्ट्री रिव्यू, मई १९३९, पृ० १६४-६५)। उसके अनुसार वस्त्र-उद्योग मे महत् वृद्धि चौदहवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे हो चुकी थी

यह स्वाभाविक ही था कि नगर के शिल्पी सघ वस्त्र-उद्योग के ग्राम की ओर प्रवास को नापसद करते, और उन्होने नगरो के व्यापारियो पर ग्रामीण वस्त्र-उत्पादको से व्यापार करने पर रोक लगा कर उत्पादन मे स्पर्धा को रोकने का प्रयत्न किया। किन्तु ये निरोधक प्रयत्न अव्यवस्थित और असफल ही रहे। क्योकि इस प्रश्न पर नगर के व्यापारियो के स्वार्थ नगर के शिल्पियो से उलटे थे और नगरपालिका के नीतिनिर्धारण मे उनका प्रभाव अधिक था इसलिये बडे व्यापारियो ने ग्राम और नगर दोनो ही क्षेत्रो मे पूँजीवादी प्रणाली के अनुसार निरन्तर बढते दर पर वस्त्र उद्योग जारी रखा। उन्होने उन ग्राम-शिल्पियो को, जिनके पास अपने करघे थे, कच्चा माल मुहैया किया। उसके पश्चात् वे बुना वस्त्र उनसे ले लेते, फिर अन्य शिल्पियो को अन्तिम रूप देने के लिये दे देते और अन्त मे बाजार भेज देते।

सम्पूर्ण एस्सेक्स प्रदेश मे ऐसे गाँव फैले हुए थे जो वस्त्र-उत्पादन के लिये विख्यात थे, जैसे —गोग्गेशाल और ब्रैट्री, बॉकिग तथा हाल्स्टैड, शैल्फोर्ड तथा डैढम, और कोल्चैस्टर। ये गाव उद्योगो के कारण समृद्ध हो रहे थे और शायद ही कोई घर हो जो चरखे से गुजरित नही हो, और शायद ही कोई बाजार हो जिसमे आप बुनने वालो की दुकाने नही गिनते हो, और शायद ही कोई रसोई हो जिसमे खाली समय कार्य के लिये दीवार के साथ करघा लगा नही खडा हो। शायद ही कोई सप्ताह बीतता होगा जब सामान लादने वाले घोडो की टापे बाजारो मे नही सुनाई पडती थी जोकि गाँव मे कच्ची ऊन लाते थे और तैयार कपडे आस-पास के गावो के अथवा कोल्चैस्टर के वस्त्र व्यापारियो के लिये ले जाते थे। सम्पूर्ण पन्द्रहवी शताब्दी मे गोग्गेशाल एक महत्वपूर्ण केन्द्र था जोकि नॉर्विच, कोल्चैस्टर तथा सडबरी के बृहत् केन्द्रो के बाद सबसे बडा केन्द्र कहा जा सकता है। आज तक इसकी दो सरायो के नाम वूलपैक (जहाँ ऊन बाधी जाती है) तथा फ्लीस (उनी रेशे) है। (ईलिन पावर, मैडीवल पीपल, पृ० १४६)।

गोग्गेशाल मे थोमस पेकाक नाम का एक विख्यात वस्त्र-व्यापारी रहता है, वहाँ उसने अपना एक सुन्दर घर बनाया जिसके दरवाजो आदि मे उसने उत्कृष्ट पच्चीकारी का काम कराया था। अब यह घर राष्ट्रीय ट्रस्ट के अधिकार मे है। ग्राम-बाजारो

और ट्यूडर के काल मे १५वी शताब्दी के अन्तिम बीस वर्षों मे यह पुन प्रारम्भ हुई थी। १५वी शताब्दी के अधिकाश भाग मे कपडे का कुल उत्पादन लगभग स्थिर रहा—यह ईस्ट एग्लिया, यार्कशायर तथा पश्चिम के गाँवो और नगरो मे बढ रहा था किन्तु पुराने वस्त्र-उत्पादक नगरो मे घट रहा था। किन्तु कच्ची ऊन के उत्पादको का निर्यात-व्यापार और भी तीव्र गति से गिर रहा था, यहाँ तक कि पन्द्रहवी शताब्दी के उच्चतम स्तर पर भी, वस्त्र-निर्यात इतना नही था कि उसे ऊन के उत्पादन मे ह्रास का एकमात्र कारण कहा जा सकता।

मे ऐसे सौधो का होना तथा चर्चो मे पीतल पर पच्चीकारी के काम नये ग्रामीण वर्ग के उद्भव के सूचक थे, जो कि उतना ही सम्पन्न था जितने जागीरदार लोग, जिनके साथ कि उनके विवाह-सम्बन्ध अनतिदूर भविष्य मे स्थापित होने वाले थे और जिसके विशिष्ट क्षेत्र मे वे उनकी भूमि आदि खरीद कर शीघ्र ही प्रवेश करने वाले थे।

यही हालत पश्चिम मे भी थी, दो शताब्दियो के बाद डिफो ने लिखा था कि "पश्चिम मडल मे अनेक ऐसे परिवार, जो अब कुलीन जमीदार समझे जाते है, वे वास्तव मे श्रेष्ठ वस्त्र-उत्पादको मे से ही उठे थे। पन्द्रहवी शताब्दी मे कोट्सवोल्ड इगलैंड मे, और परिणामत यूरोप मे भी, सर्वोत्कृष्ट समझा जाता था। उस सुन्दर प्रदेश की समृद्धि इस पर ही प्रतिष्ठित थी। इसकी गवाही उस युग के पत्थरो के बने भव्य क्षेत्र-गृह तथा घाटियो मे बहते झरनो के किनारो पर बनी पनचक्कियाँ अब देती है।

इस युग के एक अग्रेजी व्यापारी का चरित्र थामस बैट्सन के जीवन तथा पत्रो द्वारा बहुत सुचारु रूप से प्रकाश मे आता है (ईलिन पावर, मेडीवल पीपल, अ ५)। वह एक स्टैपल ऊन का व्यापारी था और अपने व्यापार के सिलसिले मे केलैस मे रहता था। ये व्यापार-सम्बन्ध प्राय ही वैवाहिक सम्बन्धो द्वारा पक्के किये जाते थे। बैट्सन ने कैथेराइन रइचे से, जोकि स्टोनर-कुल का सम्बन्धी और सरक्षक था, विवाह कर लिया था। उसने वास्तव मे उससे तब तक विवाह नही किया जब तक कि उसकी आयु पन्द्रह वर्ष की नही हुई, और विवाह बहुत सफल रहा, किन्तु उनकी मगाई कुछ वर्ष पूर्व हो गयी थी, और हमे थॉमस का एक पत्र भी मिलता है जो उसने अपनी कैथेराइन को, जिसकी आयु उस समय बारह या तेरह वर्ष की थी, लिखा था, उसने यह पत्र कैलैस के अपने व्यापार प्रतिष्ठान से १४७४ मे उसे लिखा था और वह उस समय आक्सफर्ड के अन्तर्गत स्टोनर मे रह रही थी। यदि किसी की सगाइ बारह वर्ष की लडकी से हो ही जाय तो उसे पत्र लिखने का यह अच्छा ढग है। वह बच्ची को प्रेरित करते हुए लिखता है

"भोजन खूब अच्छा खाया करो जिससे कि तुम जल्दी बडी हो जाओ और स्त्री बनो, और मेरे घोडे से विनम्रतापूर्वक प्रार्थना किया करो कि वह तुम्हे अपनी आयु मे से चार वर्ष दे दे जिससे तुम जल्दी बडी हो सको। और उसे कहना कि मै घर आने पर उसे अपने हिस्से के चार वर्ष दे दू गा और साथ बढिया खाना दू गा। उसे कहना कि यह प्रार्थना मैने उसे की है—और सर्वशक्तिमान ईश्वर भी तुम्हे एक अच्छी स्त्री बनाए और तुम्हे सदैव अनेक सुखद वर्ष निरन्तर भेजता रहे तथा तुम्हे सुख-स्वास्थ्यपूर्ण दीर्घायु प्रदान करे। यह पत्र मैं तुम्हे कैलैस से एक जून को लिख रहा हू जबकि प्रत्येक व्यक्ति भोजन के लिये गया हुआ है तथा घडी दोपहर होने की सूचना दे रही है

तथा घर के सब लोग मुझे खाने के लिये पुकार रहे है "खाने के लिये तुरन्त चले आओ।" मैने उन्हे क्या उत्तर दिया, यह तुम अच्छी तरह से जानती ही हो।"

घडी द्वारा यह 'दोपहर होने' की सूचना दिये साढे चार सौ वर्ष से अधिक समय बीत चुका है किन्तु थामस बैट्सन के एक इगलिश व्यक्ति होने से, हम आज भी अपनी कल्पनाओ मे यह देख सकते है कि किस प्रकार वह अपने लिखने के मेज से मुस्कराते हुए पत्र की तह लगाते-लगाते उठा होगा।[१]

खेत तथा दुकान या फैक्ट्री आदि पर कार्य-घटे आज की तुलना मे बहुत अधिक थे। किन्तु लोग रविवारो को तथा महान् सन्तो के स्मारक दिनो की छुट्टियो मे आराम करते थे। परम्परा इस सुन्दर नियम का पालन करने को बाध्य करती थी तथा चर्च के न्यायालय इन दिनो कार्य करने पर जुर्माना करते थे अथवा कोई अन्य दड लगाते थे। किन्तु पुराने इगलैंड मे, जो कि सब युगो मे "प्रफुल्ल इगलैंड" तथा "पीडित इगलैंड" दोनो ही रहा है, बहुतसा अन्य कार्य चलता रहता था। शिकार करना तथा बाज उडाना, जाल बिछाना तथा मछली पकडना आदि मनोरजन ग्राम्य-जीवन के वातावरण को एक सुखद पृष्ठभूमि प्रदान करते थे। सामन्त तथा जमीदार लोग ये मनोरजन तडक-भडक से करते थे और सामान्य लोग यह सब सीधे-सादे शान्त ढग से करते थे। अनेक प्रकार के खेलो और मनोरजनो पर बहुत पैसा खर्च किया जाता था तथा निशाना लगाना, मल्ल युद्ध, दौडो तथा गोला आदि फेकने पर बडी शर्ते लगती थी।

इस काल मे ही ताश के खेल का भी आविष्कार हुआ, इसका रूप तब भी बहुत कुछ वैसा ही था जैसा आज है। हमारे कार्डो पर राजा-रानी आदि की पोशाक अब भी उसी युग के अनुसार है। ताश शतरज के समान ही सामन्तो और उनकी स्त्रियो की उबाने वाली सध्याओ को गुजारने की साधन थी और जुआरियो को मुहरे खेलने का एक विकल्प देती थी।

मनोरजन के स्पर्धी अखाडो द्वारा चादमारी करवाने की विशेष घोषणा तथा सविधि द्वारा उसी प्रकार से प्रोत्साहित किया जाता था जैसे 'हैडबाल, फुटबाल तथा

---

[१] स्टोनर लैटर्स, भाग २, पृ० ६-८। बैट्सन जैसे ऊन के अग्रेज व्यापारी पश्चिमी शायर मे प्रमुख व्यापारी थे, किन्तु उन्हे इतालवी व्यापारियो की स्पर्धा का निरन्तर मुकाबला करना पडता था, जो इसी कार्य से कोट्सवोल्ड्स मे आते थे। ऊन के व्यापारी कैलैस को जहाजो के द्वारा अग्रेजी ऊन भेजते थे और वहा से वह निम्न-तलीय प्रदेशो तथा उत्तरी यूरोप को भेजी जाती थी, किन्तु ये भूमध्य के प्रदेशो मे व्यापार नही करते थे। इटली के व्यापारियो के पास अग्रेजी ऊन सीधे जिब्राल्टर के रास्ते इटली भेजने के लाइसेस थे।

हाकी को' जिसमे कि लम्बे धनुषो के प्रयोग मे इगलैड की सेना की अद्वितीयता अक्षुण्ण रखी जा सकती। सो, यह अद्वितीयता बनी रही भी, क्योकि यह एक ऐसी कला थी जिसे सीख पाना कोई सहज कार्य नही था। हफ लैटीमर ने वर्णन किया है कि किस प्रकार से उसके कृषक पिता ने हेनरी सप्तम् के राज्य मे "मुझे धनुष की डोरी खीचना, तथा धनुष मे अपना शरीर न्यस्त करना सिखाया था। मेरे पास मेरे खरीदे हुए धनुष थे जो मेरी आयु के अनुसार आकार के थे। जैसे-जैसे मै आयु मे बढा वैसे-वैसे मेरे धनुषो का आकार भी बढता गया। क्योकि आरम्भ ही से ठीक प्रशिक्षण के बिना कोई कुशल धन्धा नही हो सकता।" (द्रष्टव्य, टिप्पणी, पृ० १८)।

धनुर्कौशल की प्रतियोगिता मे नेता लोग 'रोबिन हुड' तथा 'लिटिल जोह्न' की भूमिका मे सज्जित होकर ग्राम के जलूस को चादमारी के स्थान की ओर ले जाते थे।

नगरो तथा समृद्धतर गाँवो मे अनेक सघ—केवल शिल्पी सघ ही नही—उत्सव के सगठन मे सहायता करते थे। सभी अवसरो पर, स्थानीय हो या राष्ट्रीय, पुरुष आनन्दोत्सव मनाते थे। इनमे से जो कुछ थोडे से बचे है उनमे से लार्ड मेयर का प्रदर्शन तथा राजा द्वारा ससद (पार्लियामेट) का उद्घाटन भी हैं। उन दिनो तडक-भडक पर बहुत पैसा व्यय होता था और इससे बचा पैसा ही व्यापार आदि मे लग पाता था। धनी लोग सबसे अधिक महगे और भव्य वस्त्र पहनते थे तथा अपनी समृद्धि का प्रदर्शन अपने कधो के दोनो ओर लगी हुई प्लेटो से करते थे। व्यावसायिक सघ, जिनसे पुजारी लोग प्राय ही बहिष्कृत रहते थे, लौकिको की बुद्धिमत्ता तथा उपक्रम को प्रदर्शित करते है। किन्तु वे भी, जीवन के अन्य सब पक्षो के समान, धार्मिक विचारो और विश्वासो से प्रभावित थे। उस युग मे धर्म तथा दैनिक जीवन के बीच वैसा स्पष्ट अन्तर नही था जैसा आज है। सघ मे किसी शुभ, उपयोगी अथवा किसी मनोरजनात्मक उद्देश्य से भी एकत्र होने पर वे उस उत्सव को एक धार्मिक रूप देते थे तथा सघ के लिये किसी सत से आशीर्वाद मागते थे। यद्यपि वे पादरी-विरोधी थे किन्तु तब भी वे अधार्मिक नही थे।

व्यवसायी सघ का कार्य पूजा-गृह, स्कूल, धर्मशाला तथा पुल बनाने और उनके सचालन के अतिरिक्त चमत्कारपूर्ण नाटक सगठित करना भी था। पन्द्रहवी शताब्दी मे ऐसे नाटक बहुत जन-प्रिय थे और ये बाइबल की कहानियो तथा अन्य पौराणिक कहानियो को सामान्य लोगो के लिये उस युग मे प्रस्तुत कर रहे थे जबकि बाइबल पुस्तक रूप मे बहुत थोडे लोगो को ज्ञात थी।

'अभिनेता अपनी घोषणा इस प्रकार से करते थे, जैसे—मै अब्राहम हू, अथवा, मै हेरोद हू। उनकी वेशभूषा तत्कालीन प्रथा के अनुसार ही होती थी और यह वेशभूषा स्तर से निर्धारित होती थी। सर्वशक्तिमान ईश्वर दाढी युक्त होता था और

अलकृत मुकुट, चोगा तथा दस्ताने पहनता था। दुष्ट राजा लोग पगडी धारण करते थे और महौंड की शपथ खाते थे। बडे पुजारी धर्माध्यक्ष की भूमिका मे प्रस्तुत किये जाते थे और समारोहपूर्वक बैठाये जाते थे। कानून के पडित गोल टोपो तथा रोयें-दार चोगे पहनते थे। किसान तथा मजदूर अपने समय की वेशभूषा पहनते थे। देवता लोग सीढियो के द्वारा स्वर्गारोहण और अवरोहण करते थे, तथा एक भद्दा दरवाजा, जिसको नरक का द्वार कहा जाता था, इस प्रकार से बनाया जाता था कि वह बारी-बारी से खुलता और बद होता रहे। काले, नीले तथा लाल रगो के पिशाचर अभिशप्त व्यक्ति को लेने आते थे, जबकि पर्दे के पीछे रखे बर्तनो और घटियो आदि की आवाजे भीतर की अव्यवस्था की सूचना देती थी।[१]

शैक्सपीयर से एक सौ या अधिक वर्ष पूर्व नाटक की ऐसी स्थिति थी।

इसी प्रकार से रिफार्मेशन (ईसाई धर्मान्दोलन) के दिन क्रिसमस के भक्तिगीत भी लौकिको की धार्मिक भावनाओ का प्रतिनिधित्व करते थे।

पादरी के सरक्षण मे अधिक प्रत्यक्ष रूप से 'चर्च के मदिरालय' थे जोकि धार्मिक चाय-गृह तथा परोपकारी बाजार के पुरोगामी थे। स्त्री और पुरुष वस्त्र एकत्र करने के लिये अथवा किसी अन्य उपकारी कार्य के लिये चर्च के प्रागण मे अथवा स्वय चर्च मे ही सुरा बेचते और पीते थे। चर्च-मदिराओ का पन्द्रहवी शताब्दी मे बहुत प्रचलन था यद्यपि उससे पूर्व समयो मे विरक्त साधुजन इसका विरोध करते थे। चर्च का केन्द्र-स्थान अधिकाश सार्वजनिक कार्यों के लिये ग्राम के हाल का काम करता था।

शिशु बिशप का समारोह, जो कि आज के युग को बडा विचित्र लगेगा, नीरस और रूढिवादी पादरियो द्वारा उतना ही समर्थित था जितना सुधारक डीन कोलेट द्वारा। सन्त निकोलास के दिन, जोकि शिशुओ का सरक्षक सन्त था, अथवा पवित्र निरछलो के दिन, एक बच्चे को स्कूल अथवा प्रधान गिरजो मे बिशप के रूप मे सज्जित किया जाता था और उसे समारोह मे ले जाया जाता था। तब वह उपदेश देता था जिसे न केवल उसके स्कूल के साथी ही सुनते थे बल्कि जिसे गिरजे के सम्मानित पादरियो के लिये भी सम्मानपूर्वक सुनना आवश्यक था। कभी-कभी तो इस समारोह की, जिसमे कि गिरजे का अध्यक्ष शिशु से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये घुटनो के बल झुक जाता था, साज सज्जा के व्यय को पूरा करने के लिये नियमित धर्मस्व भी लगा दिया जाता था।

---

[१] कैनन मेनार्ड स्मिथ—प्रि-रिफार्मिशन इगलैंड (१९३८), पृ० १४६१। यह पुस्तक अवश्य पठनीय है।

अध्याय ४

ट्यूडर का इंगलैंड–प्रवेश

मध्य युग का अन्त

हेनरी सप्तम्, १४८५। हेनरी अष्टम्, १५०९। मठों का विलय, १५३६-३९। एड्वर्ड षष्ठ, १५४७। मेरी १५५३। एलिजाबेथ, १५५८-१६०३।

इतिहास के अध्ययन तथा विमर्श के लिये तारीखो तथा कालो का निर्धारण आवश्यक है, क्योकि सम्पूर्ण ऐतिहासिक घटनाए और स्थितिया समय से निर्धारित होती है तथा घटनाओ के अनुक्रम से निर्मित होती है। इसलिये तारीखे किसी भी ऐतिहासिक कथन की परीक्षा मे आवश्यक होती है; और प्राय ही ये अबाध साधरणीकरणो के रास्ते मे बाधक होती है तथा कल्पनाओ को हवा मे उडने से रोकती है। तारीख के निर्णय के बाद और कोई सुनवाई नही होती।

किन्तु तारीखो के विपरीत, "युगो" को तथ्य नही कहा जा सकता। ये अतीतोन्मुख अवधारणाए है जो हम विगत घटनाओ के सम्बन्ध मे बनाते है। ये विमर्श को एक दृक्केन्द्र देने की दृष्टि से उपयोगी होते है किन्तु प्राय ही ये ऐतिहासिक विचार को भटका देते है। इस प्रकार से, जबकि 'मध्ययुग' तथा 'विक्टोरियन युग' शब्दो का प्रयोग निश्चय ही उपयोगी है, इन दो अमूर्त कल्पनाओ ने कितने ही विद्वानो तथा लाखो समाचारपत्र-पाठको को इस भ्रम मे डाला है कि कुछ शताब्दियो में, जिन्हे 'मध्य युग' कहा जाता है, तथा अन्य कुछ दशाब्दियो मे, जिन्हे 'विक्टोरिया युग' कहा जाता है, सभी लोग लगभग एक ही प्रकार से विचार और कार्य करते थे – जबतक कि अन्तत विक्टोरिया का देहान्त नही हुआ, अथवा 'मध्य युगो का अन्त नही हुआ। किन्तु वास्तव मे ऐसी कोई एकरूपता विद्यमान नही थी। विक्टोरियन युग के इगलैड मे व्यक्ति-वैचित्र्य, वैविध्य तथा परिवर्तन की अकाक्षा की प्रवृत्तिया बहुत स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, और उस युग के अन्तिम वर्ष आरभिक वर्षो से बहुत भिन्न थे। इसी प्रकार से, मध्ययुगीन समाज का अध्ययन भी उसी अवस्था मे उपयोगी हो सकता है यदि हम उसे एक स्थिर व्यवस्था के रूप मे न देख कर एक ऐसी निरन्तर परिवर्तमान प्रक्रिया के रूप मे देखें जिसका आदि-अन्त तारीखो से निर्धारित नही किया जा सकता।

अतीत को निर्धारित "कालो" की पदावली मे समझने की आदत आर्थिक तथा सामाजिक इतिहास के सदर्भ मे सबसे भयानक है। क्योकि सामान्यत काल-विभाजन, जैसाकि उनके नामो से भी स्पष्ट है, विशुद्ध रूप से राजनैतिक दृष्टिकोण से किया गया है—'ट्यूडर का युग' 'ल्यूइस १४ का युग' आदि। किन्तु आर्थिक तथा सामाजिक जीवन राजाओ की मृत्यु की ओर अथवा नये राज्य-कुलो के पदासीन होने की ओर कोई ध्यान नही देता। अपने दैनिक जीवन मे व्यस्त यह अन्त सलिला के समान निरन्तर प्रवहमान रहता है। यह केवल यदाकदा ही राजनीति के दिवा-प्रकाश मे प्रस्फुटित होता है, यद्यपि यह सदैव इनका परोक्ष और अन्तर्हित नियामक होता है।

और सामाजिक तथा आर्थिक इतिहास 'कालो' मे विभाजन सबसे अधिक कठिन कार्य है, क्योकि इस क्षेत्र मे पुरातन और नवीन सदैव परस्परातिच्छादी रहते है—एक ही देश मे पीढियो तक, कभी कभी शताब्दियो तक, साथ साथ जारी। इगलैड मे उत्पादन की विभिन्न व्यवस्थाए—शिल्प, गृह तथा पूजी सम्बन्धी सभी – उत्तर मध्य युग तथा आधुनिक युग मे साथ साथ जारी रही। इसी प्रकार से कृपि के क्षेत्र मे भी, खुले क्षेत्र तथा वलयित क्षेत्र, आग्ल-सेक्सन तथा आधुनिक विधिया, मध्य युगो मे १९वी शताब्दी तक साथ-साथ जारी रही है। और सामाजिक क्षेत्र मे भी, सामन्तवादी तथा प्रजातात्रिक भावनाओ ने हमारे सहिष्णु स्वभाव के द्वीप मे एक साथ रह सकने की आश्चर्यजनक योग्यता प्रदर्शित की है।

अब यदि हमे 'मध्य युगो के अन्त' की तारिख, अथवा काल भी, बताने को कहा जाय तो हम निश्शक रूप से क्या उत्तर दे सकते है? निश्चित रूप से '१४८५' नही, जबकि ट्यूडर का राज्य आरम्भ हुआ। यद्यपि अध्यापको तथा परीक्षको को मध्य युगो की परिसमाप्ति बताने के लिये यह एक बडी सुविधाजनक तारीख मालूम देती है किन्तु १४८५ के वर्ष मे, जब हमारे सरल पूर्वजो ने हेनरी ट्यूडर तथा उसके सहायक वेल्सवासियो के द्वारा बोस्वर्थ मे रिचर्ड तृतीय से सत्तापहरण का समाचार दुःख मिश्रित क्रोध के साथ सुना तब उन्होने यह सोचा तक भी नही था कि एक नये युग का आरभ हो रहा है। उन्होने केवल यही समझा था कि रोसेस के अनन्त और थकाने वाले युद्धो मे लकाशायरवासी यॉर्कशायरवासियो पर एक बार पुन बाजी मार ले गये है। यह सही है कि अगले बीस वर्षो की घटनाओ से यह स्पष्ट हो गया था कि रोसेस के युद्ध बोस्वर्थ के क्षेत्र मे लगभग समाप्त ही हो गये थे। किन्तु रोसेस के युद्धो का अन्त और मध्य युगो का अन्त एक ही बात नही है—फिर चाहे मध्य युगो को कैसे भी परिभाषित करे।

वेल्स-वासी हेनरी की विजय से जो परिवर्तन सभव हुए वे हेस्टिग्स मे नार्मन के विलियम की विजय के महत्व की तुलना मे बहुत नगण्य थे। १४८५ के बाद आधी शताब्दी तक, जबतक कि हेनरी के पुत्र ने पोप-पद के अधिकार तथा मठीय संपत्ति को

अपने अधीन नहीं कर लिया, इगलैंड के समाज की बहुत कुछ वैसी ही स्थिति रही जैसी स्थिति का विवरण मैने पिछले अध्याय मे दिया है। कृषि-क्षेत्र मे परिवर्तन अब भी थोडी तीव्र गति से जारी रहे। चर्च की स्थिति भी पूर्ववत् ही रही, यद्यपि उसकी अप्रतिष्ठा तथा निन्दा पुन एक नये वेग से बढी। इसका रूप बहुत कुछ उसी प्रकार का था जैसा लैंगलैंड, चासर तथा वाइक्लिफ के दिनो मे पादरी-विरोधी आन्दोलन का था। किन्तु यह स्पष्ट नही था कि ऐसी निन्दा आदि के व्यावहारिक परिणाम पिछले आन्दोलनो से अधिक महत्व के होगे। हेनरी सप्तम् तथा युवक हेनरी अष्टम् दोनो मे धार्मिक रूढिवादिता बहुत अधिक थी। वे विधर्मियो को जलाने मे बराबर कर्तव्य-परायण थे, उन्होने मध्ययुगीन प्रथा के अनुसार प्राय ही अपनी मन्त्रि-परिषद् मे बिशपो को नियुक्त किया था। इस प्रथा का अन्त कार्डिनल वोल्से की महत् समृद्धि-सम्पत्ति के भव्य प्रदर्शन के साथ हुआ जिसने कि मध्ययुगीन चर्च के गर्व तथा ऐश्वर्य का अत्यन्त उत्कट प्रदर्शन किया था। पोप की शक्ति और अधिकार का वाहक होने के नाते उसने इगलैंड के चर्च पर अपना नियत्रण बहुत बढा लिया। उसने कुलीन तथा प्रतिष्ठित लौकिको के साथ अपने पैर के नीचे पडी धूल का सा व्यवहार किया और इस प्रकार उस पादरी-विरोधी क्रान्ति को प्रोत्साहित किया जो उसके पतन के साथ आई। सपत्ति के अन्य अनेक स्रोतो के अतिरिक्त उसने राजस्व भी एकत्रित किया और उन कर्तव्यो की ओर कोई ध्यान नही दिया जो यॉर्क के बडे पादरी, डर्हम के बिशप तथा अल्बास के मठाधीश के रूप मे उसके थे। वोल्से तथा हेनरी अष्टम् के जीवनी-लेखक का यह अनुमान था कि वोल्से लगभग उतना ही धनी था जितना कि राजा (पोल्लार्ड वोल्से, पृ० ३२०-३२)। उसने अपने अवैध पुत्र के लिये चार आर्कडीकन-पद, एक डीन पद, पाच याजक-वृत्ति पद तथा दो रैक्टर पद प्राप्त कर लिये थे, केवल वह उसे डर्हम के महत् सपत्ति-सागर मे प्रवेश कराने मे सफल नही हो सका। वोल्से मे गर्व, ऐश्वर्य तथा लोभ अनुपात मे उदारता भी थी जिसकी अभिव्यक्ति भव्य, और पीछे अद्वितीय, स्कूलो कालेजो की स्थापना मे हुई। वास्तव मे वह यूरोप की सार्वभौमिक पोप परम्परा का राजकुमार था, जिस परम्परा के सम्मुख लोग शताब्दियो तक नतमस्तक होते रहे किन्तु जिसके सम्मुख इगलैंड मे लोग कभी पुन नतमस्तक नही होगे। हमारे इतिहास मे इन सब मे वोल्से 'मध्य युग' के महानतम और सर्वाधिक विशिष्ट व्यक्तियो मे से एक था और उसकी शक्ति बोस्वर्थ फील्ड के चालीस वर्ष बाद अपने उत्कर्ष के शिखर पर पहुच गई थी।

•

तूफान से पहले की शान्ति के उन पचास वर्षों का एक दूसरा पक्ष था निर्देश मे शास्त्रीय विद्वत्ता तथा बाइबल-भाष्य की प्रथा का पुनरुद्भव। उनका कार्य, वोल्से के सम्पूर्ण गर्व से अधिक, भविष्य का निर्माण कर रहा था, किन्तु वर्तमान के परिवर्तन मे यह कोई विशेष योगदान नही कर पा रहा था। उस मित्र-मडली मे से किसी को यह कल्पना नही थी कि प्राचीन शास्त्रो तथा धर्म-नियमो का नवीन ज्ञान उस मध्ययुगीन

चर्च का नाशक सिद्ध होगा जिसे वे सुधारना और उदार बनाना चाहते थे। इनसे भी अधिक क्रातिकारी लक्ष्य विलियम टिडेल के थे, क्योकि उसने दारिद्र्य और खतरे की परिस्थितियो मे बाइबल का अनुवाद शक्ति और सौदर्य की भाषा मे किया जो भविष्य मे लाखो के जप-पाठ का विषय बनी, और जिसकी उन्होने अतीत के लिये अनेक घातक प्रकार से व्याख्या की।

धर्मेतर क्षेत्र मे हेनरी सप्तम् ने ग्राम-प्रदेश मे पुन व्यवस्था स्थापित की तथा भत्यो (रिटेनर्स) का दमन किया। यह एक महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन था, किन्तु यह 'मध्य युगो का अन्त' नही था, इसके विपरीत इसे मध्य युगीन इगलैंड-निवासी की एक आशा की विलबित पूर्ति ही कहना चाहिए। हेनरी सप्तम् तथा वोल्से के शासन के नीचे कम से कम एक मध्ययुगीन सस्था, अर्थात् ससद्, के अप्रयोग के कारण नष्ट हो जाने का भय वास्तव मे ही उत्पन्न हो गया था, किन्तु इगलैंड मे, फ्रास तथा स्पेन से भिन्न, मध्ययुगीन ससद् का हेनरी अष्टम् के द्वारा आधुनिक उद्देश्यो से पुनरुज्जीवन तथा पुष्टीकरण होना अवश्यभावी था। इसी प्रकार से इगलैंड की एक अन्य मध्ययुगीन सस्था, आग्ल अलिखित कानून (इगलिश कॉमन लॉ), भी ट्यूडर-काल के उपरान्त भी बच रही और आधुनिक आग्ल जीवन तथा स्वतन्त्रता का आधार बनी।

सोलहवी शताब्दी के आरभ मे अग्रेजी व्यापार, जोकि यद्यपि सापेक्षिक अवरोध के बाद अब बढ रहा था, अोर भी उन्ही पुरानी मध्य युगीन सरणियो मे उत्तरी यूरोप के तटो के साथ साथ होकर चल रहा था, और कपडे की बिक्री के लिये भूमध्यसागर मे एक नवीन प्रेरणा के साथ अग्रसर हो रहा था। हेनरी सप्तम् के राज्यकाल मे कैबट की ब्रिस्टल से लेकर "नवोपलब्ध भूमि" (न्यू फाउडलैंड) तक की यात्राओ के बावजूद एटलाटिक के परे के एक व्यापक दृष्टिकोण ने इगलैंड के लोगो को प्रभावित नही किया था। इसका प्रभाव उन पर एलिजाबेथ के राज्याभिषेक के बाद से ही दिखाई देता है। उसकी बहन मेरी के राज्यकाल तक अग्रेज लोग फ्रास के लोगो से अभी भी घृणा करते थे, किन्तु स्पेनवासियो से घृणा नही करते थे, क्योकि अभी नयी भूमियो की खोज तथा अधिकार के लिये कलह का अवसर उपस्थित नही हुआ था।

इगलैंड मे मध्य-युगो की समाप्ति कब हुई, इसके लिये किसी तारीख अथवा किसी काल विशेष को खोजने का प्रयत्न व्यर्थ है। अधिक से अधिक जो कहा जा सकता है वह यह कि तेरहवी शताब्दी मे अग्रेजी विचार तथा समाज मध्ययुगीन थे और उन्नीसवी शताब्दी मे ये नही थे। किन्तु तब भी हम आज तक कुछ मध्ययुगीय सस्थाओ, जैसे राजतन्त्र, लार्ड पद, ससद मे एकत्र जन-साधारण, अलिखित कानून, कानून के शासन की न्यायालयो द्वारा व्याख्या, प्रतिष्ठित चर्च मे पद की वशपरपरागतता, पादरी-प्रदेश-प्रथा, विश्वविद्यालय, पब्लिक स्कूल तथा व्याकरण स्कूल (ग्रामर स्कूल्स) इन सबको इगलैंड मे प्राप्त कर सकते है। और जब तक हम सर्वाधिकारवादी

राज्यतत्र को अपना लेते और अगेजी सस्कारो को नही भुला देते तब तक हम अपने चिन्तन मे कुछ न कुछ तो मध्य युगीय रहेगे ही, विशेषत अपनी इस मान्यता मे कि जनता तथा नगरपालिकाओ के कुछ अधिकार और स्वतन्त्रताए ऐसी है जिनका राज्य को कुछ सीमा तक ध्यान रखना ही चाहिए, चाहे ससद् की वैधानिक सर्वशक्तिमत्ता स्वीकार कर ही ली जाय। रूढिवाद तथा उदारतावाद, और इसी प्रकार से श्रमिक सघ भी, मूलत मध्ययुगीय ही है। जिन लोगो ने सत्रहवी शताब्दी मे हमारी नागरिक स्वतन्त्रताओ की स्थापना की उन्होने 'आधुनिकीकरण' करने वाले स्टुअर्ट राजकुल के विरुद्ध मध्ययुगीय आदर्शो का ही बखान किया। वास्तव मे इतिहास का सस्थान एक अत्यन्त उलझे हुए जाले जैसा है। इसकी असीम जटिलता को किसी सरल चित्र के द्वारा नही समझा जा सकता।

जहा तक नगर तथा ग्राम के आर्थिक पक्ष का प्रश्न है, उसके लिये सोलहवी शताब्दी के सामाजिक इतिहास का एक लेखक श्री टॉनि ट्यूडर युग को एक विभाजक रेखा मानता हे जहा से इतिहास की गति १८वी, १९वी शताब्दी की बडी जमीदारियो और बडे फार्मो तथा बीसवी शती के औद्योगिक पूजीवाद की दिशा मे निरन्तर तीव्र होती चली गयी। यह बात सही हो सकती है। किन्तु यह एक प्रश्न रह जाता है कि 'मध्य युगो का अन्त' ज्यॉर्ज तृतीय के राज्य मे होने वाले आर्थिक तथा सामाजिक परिवर्तनो की निष्पत्ति मे देखना उतना ही उपयुक्त है जितना ट्यूडर काल के आरम्भ मे। और वास्तव मे, न यही कहा जा सकता है कि इन प्रवृत्तियो का आरभ ट्यूडर के शासन-काल मे ही पहले-पहल हुआ। जैसाकि इस पुस्तक के पिछले अध्यायो मे उल्लेख हुआ है, कुछ उद्योगो मे पूजीवादी तत्वो का समावेश बहुत पहले हो चुका था। इसी प्रकार से कमिया कृषको का विमोचन तथा परिणाम स्वरूप मध्ययुगीन सामन्त क्षेत्र की प्रथा का अन्त बोस्वर्थ फील्ड के युद्ध से बहुत पहले हो चुका था।

तब फिर हम मध्ययुगीन समाज तथा अर्थ-व्यवस्था की समाप्ति कब से माने— चौदहवी शताब्दी से, सोलहवी शताब्दी से या कि अट्ठारहवी शताब्दी से ? सभवत इस बात का कोई विशेष महत्व नही है महत्व इस बात का है कि हम वस्तुस्थिति को ठीक से समझे। सभावना यह है कि शीघ्र ही अतीत के काल-विभाजन का एक नया परिप्रेक्ष्य पुराने को स्थानान्तरित कर देगा। जीवन के यत्रीकरण के कारण मनुष्य पिछले एक सौ वर्षो मे उससे कही अधिक प्रभावित हुआ है जितना वह उससे पूर्व एक हजार वर्षो मे हुआ था। इसलिये बहुत सभव है कि 'आधुनिक कालो' का वास्तविक आरभ—यदि 'आधुनिक काल' मे हमारे अब के काल का समावेश भी करना हो तो, पुनरुत्थान आन्दोलन तथा सुधार आन्दोलन-काल से माना जाय। और विचार तथा धर्म के क्षेत्र मे भी यह सभव है कि विज्ञान तथा डार्विन का प्रभाव उतना ही महत्वपूर्ण माना जाय जितना इरास्मस तथा लूथर का प्रभाव माना जाता है।

इन सब स्थितियो को पूर्ण अभिव्यक्ति शैक्सपीयर के नाटकों मे मिली। इन नाटको मे हम विचार और अनुभूति के क्षेत्र मे बहुत बडा कदम आगे उठा हुआ देखते है। कम-से-कम हैमलेट नाटक एक आधुनिक नाटक है। इसी प्रकार से, हम कह सकते है कि इगलैड की चर्च-सेवा मे तथा घरो मे चलने वाले बाइबल के पाठ मे इगलैडवासियो का मन तथा कल्पना मध्ययुगीनता से मुक्त हो गयी थी। किन्तु समाज, राजनीति तथा अर्थशास्त्र अब भी बीसवी शताब्दी के बजाय चौदहवी शताब्दी के अधिक निकट पडते थे। "रिचर्ड द्वितीय" तथा "हैनरी चतुर्थ" के लेखक को उस अनतिदूर के विश्व को समझाना तथा चित्रित करना सरल प्रतीत हुआ।

यदि हम जीवन के पक्षो को ध्यान मे रखे तो हम शायद हेनरी अष्टम् के शासन के इतिहास-लेखक ए एफ पोल्लार्ड वोल्से से सहमत हो सकेगे कि इतिहास को समझाने के लिये जितनी विचार-योजनाएँ रचित की गयी है उनमे सबसे अधिक अनुपयुक्त वे है जो मध्ययुगीन तथा आधुनिक इतिहास के बीच एक गहरी खाई देखती है।"[१]

किन्तु इस अल्प-स्थायी स्वर्णिम युग से पूर्व, (१५६४-१६१६) जोकि शेक्सपीयर का समकालीन था, ट्यूडर का इगलैड एक अन्धकार काल मे से होकर गुजरा था। यह ठीक है कि वह उस प्रकार के धार्मिक युद्धो से प्रताडित नही हुआ जैसे युद्धो ने फ्रास को प्रताडित किया था, क्योकि इगलैड का राजतन्त्र पर्याप्त सशक्त था और धार्मिक उन्माद अपेक्षाकृत कम था। किन्तु तब भी ट्यूडर के सुधार उत्पीडन और हिसा के बिना भी सम्पन्न नही हुए थे। और हेनरी अष्टम्, एडवर्ड षष्ठ तथा मेरी द्वारा धार्मिक-नीति मे तीव्र गति से किये गये परिवर्तनो के परिणाम स्वरूप होने वाली अव्यवस्था और उत्पात के काल मे ही व्यापार तथा कृषि मे आर्थिक सकट भी आया, जिसका कारण मुख्यत मूल्य-वृद्धि था। इस वृद्धि का अशत कारण तो विश्व की घटनाए थी और अशत हेनरी द्वारा अनियोजित रूप से सिक्को का ढालना इसका कारण था। आगे के अध्यायो मे मै बहुत सी अन्य बातो के अतिरिक्त इन पर भी विचार करूँगा।

मध्य युगो का अन्त जब सोलहवी शताब्दी कहा जाता है तब मुख्यत ध्यान पुनरुत्थान तथा सुधार आन्दोलनो पर केन्द्रित होता है।[२] विचार तथा धर्म के

---

[१] दूसरा कथित कारण 'राष्ट्रीय राजतन्त्रो के उदय' को भी कहा जाता है। किन्तु इगलैड मे, फ्रास तथा स्पेन के विपरीत, 'राष्ट्रीय राजतत्र' फ्रेसी तथा एगिकोर्ट के काल से ही विद्यमान था, यद्यपि यह निस्सन्देह ठीक है कि हेनरी अष्टम् द्वारा धार्मिक अधिकार अपने हाथ मे कर लेने से राष्ट्रवाद को और भी प्रोत्साहन मिला था।

[२] ए० एफ० पोल्लार्ड, वोल्से, पृ० ८।

क्षेत्रो मे यह युग उस जाति के एक सहज आनन्द का द्योतक था जो जाति मध्ययुगीय मानसिक ग्रन्थियो तथा भयो से मुक्त हुई थी और शुद्धाचारवादी ग्रन्थियो तथा भयो मे ग्रस्त नही हुई थी, जो प्रकृति तथा ग्राम-प्रान्त के सौन्दर्य का रस-पान कर रही थी, जिसकी गोदी मे उसे जीवन के सुख-भोग उपलब्ध होते थे, जो अधिक फलद कृषि तथा सामुद्रिक व्यापार की समृद्धि की दिशा मे अग्रसर हो रही थी तथा जो औद्योगिक भौतिकवाद के बोझ के नीचे नही आयी थी।

अध्याय ५

पादरी-विरोधी क्रान्ति के काल का इंगलैंड

प्रथम अग्रेज पुरातत्व शास्त्री जोह्‌न लेलैंड के उद्‌भव को भी इस बात के सकेत के रूप मे देखा जा सकता है कि मध्य युग समाप्त हो रहे थे। लेलैंड ने लगभग दस वर्षों तक (१५३४-१५४३) हेनरी अष्टम् के राज्य की यात्रा की और उसमे बडे ध्यान से प्राचीन और नवीन का अध्ययन किया।[1] उसने बहुत कुछ देखा जो नयी जन्म लेती हुई समृद्धि का द्योतक था, किन्तु उसकी रुचि अतीत को देखने मे भी थी और उसे देखने के लिए उसके पास शिक्षित दृष्टि भी थी। उसने अनेक 'गौरवोन्नत स्तभो' को 'भूमिशायी' देखा, विशेषत तीन प्रकार के ध्वसावशेषो को— ध्वस्त किलो और नगरो की गिरती परिखाओ को, तथा चर्चो की गिरती हुई छतो को।

वास्तव मे लेलैंड ने अनेक ऐसे किले देखे जिन्हे बाद के काल की आवश्यकताओ के अनुसार घरो के रूप मे उपयोग करने के लिये तोडा-बनाया गया था। किन्तु अन्य अनेक (जैसे राजकीय बर्खम्स्टैड, जिसमे ब्लैक राजकुमार की कचहरी थी) रोसेज के युद्ध के बाद हेनरी सप्तम् की मितव्ययिता की नीति के कारण त्याग दिये गये थे, जबकि व्यक्तिगत स्वामी प्राय ही उत्तराधिकार मे प्राप्त अपने किलो को इसलिए कोसते थे कि वे न तो पडौस की ऊची दीवार पर खडी तोप के प्रहार को सहन करने योग्य थे और न उनमे ऐसी "आधुनिक" सुविधाए ही थी कि उनमे उच्चवर्ग के धनिक रह सकते। इसलिए, लेलैंड ने ऐसे अनेक सामन्तयुगीन किलो आदि का विवरण दिया है जो ध्वसोन्मुख थे, कुछ की छते ढह गयी थी, उनकी दीवारे गाव वालो अथवा नवीन जमीदार-प्रासादो के लिए कुतुहल का विषय थी, और ढहते हुए अवशेष पशु-पालको तथा उनके इज्जडो को आश्रय देते थे।

मध्य युगो मे प्रत्येक नगर के सम्मान तथा सुरक्षा की प्रतीक उसकी परिखा होती थी, किन्तु अब सैनिक, राजनैतिक तथा आर्थिक कारण सम्मिलित रूप से उनके ध्वस के कारण हो रहे थे। पत्थर का बारीक पर्दा, जैसाकि न्यू कालेज आक्सफर्ड के मैदान मे अब भी देखा जा सकता है, ट्यूडर काल की तोपो से सुरक्षा नही कर सकता था। एक सौ वर्ष बाद, चार्ल्स तथा क्रामवैल के युद्धो मे लडन, आक्सफर्ड तथा ब्रिसल

---

[1] दि इटीनरेरी ऑफ जोन लेलैंड, ल्यूसी टूल्मीन स्मिथ द्वारा सम्पादित, १९०६-१९१०।

जैसे स्थानो की रक्षा मिट्टी के निर्माणो से की जाती थी जो सैनिक इजीनियरिग के नवीन सिद्धान्तो के अनुसार बनाये जाते थे। ये मध्ययुगीन परिखा के अत्यन्त सँकरे आलवाल मे काफी आगे बनाये जाते थे। वास्तव मे ऐसे समृद्ध नगर लेलैंड के काल मे पहले से ही इस प्राचीन प्रस्तरपरिखाओ को पार कर विकसित हो चुके थे और इनकी ओर आने वाले मार्गों के दोनो ओर बस्तिया विकसित हो चुकी थी। अन्य, कम भाग्यशाली नगर, आर्थिक परिवर्तन के कारण सिकुड गये थे तथा निर्धन हो गये थे, और परिणामत ट्यूडर युग द्वारा निरर्थक बना दी गयी इन परिखाओ की मुरम्मत आदि पर पैसा खर्च करने की स्थिति मे नही थे। सब मिलाकर, परिखाओ का क्षय उस मध्ययुगीन नगर-भक्ति के ह्रास का सूचक था जिसने मध्ययुगीन नगर-जनो को इतना प्रेरित किया था। राष्ट्रीय नियन्त्रण तथा व्यक्तिगत उपक्रम अब नगर तथा व्यवसाय-सघो का स्थान न केवल शासन तथा सैनिक सुरक्षा के मामलो मे ही ले रहे थे बल्कि व्यापार तथा उद्योग के क्षेत्र मे भी ले रहे थे, जैसाकि इस तथ्य मे देखा जा सकता है कि वस्त्र-उत्पादक व्यवसाय-सघ नगरपालिका के नियमो से बचने के लिये निरन्तर नगरो से गावो की ओर प्रयाण कर रहे थे।

किन्तु लेलैंड ने एक जो तीसरे प्रकार का ध्वसावशेष देखा वह बहुत निकट अतीत का था। मठीय भवनो का ध्वस, जिनके ध्वस्त होने की गूज देश मे दूर-दूर तक सुनायी दी, 'कल्पना-शून्य काल का कार्य' नही था (कम से कम भौतिक अर्थ मे तो कदापि नही) बल्कि एक राजा के आदेश का प्रभाव था, जिससे एक ही झटके मे गत दो शताब्दियो से घनीभूत हो रही एक सामाजिक समस्या समाप्त हो गयी।

जिस दशाब्द मे लेलैंड यात्रा कर रहा था और सूचना-सग्रह कर रहा था उसी मे हेनरी अष्टम् ने ससद की सहायता से पादरी-विरोधी क्रान्ति की थी जिसे कि इगलैंड मे मध्ययुगीन क्रान्ति को समाप्त करने वाली एक सबसे महत्वपूर्ण घटना कहा जा सकता है। चर्च को पोप के प्रभुत्व से निकाल कर उसकी राष्ट्रीय स्वतत्रता स्थापित कर देने पर पादरियो पर लौकिको का शासन तथा मठो की विशाल भूमियो का लौकिको मे विभाजन भी सभव हो सके। सम्मिलित रूप से इनको सामाजिक क्रान्ति कहा जा सकता है। इस क्रान्ति के साथ धार्मिक परिवर्तन केवल उस मात्रा तक ही हुआ जितना नव चेतना के शिशु हेनरी अष्टम् को उचित जँचा—यानि, अग्रेजी भाषा मे लिखित बाइबल का सब वर्गों मे प्रसार, स्थूल प्रकार की मूर्ति-पूजा तथा अवशेष-पूजा का निषेध, आक्सफर्ड तथा केम्ब्रिज मे परपरावादी दर्शन तथा ईसाई विधान के स्थान पर नवोत्थान युग की विद्वत्ता की स्थापना। हेनरी की दृष्टि मे, ये सुधार परपरावादी और कैथोलिक मतानुकूल थे। यह सब करने के बावजूद उसने प्रोटेस्टेटो से घृणा तथा उनका उत्पीडन नही छोडा, और यदि उसने ऐसा नही किया होता तो, जैसी परिस्थितिया इस समय थी, उनमे वह अपना राज्य खो बैठता। इसके बावजूद, उसने एक

नवीन सामाजिक तथा धार्मिक व्यवस्था को जन्म दे दिया था जो, समय के बीतने के साथ, केवल प्रोटेस्टेंट ढग की परिस्थितियो मे ही चल सकती थी ।

इगलैड मे सुधार-आन्दोलन का रूप एकसाथ राजनैतिक, धार्मिक तथा सामाजिक था । इसके ये तीनो पक्ष परस्पर घनिष्ट रूप से सयुक्त थे, किन्तु जहा तक इनमे भेद का प्रश्न है, इस पुस्तक मे इस आन्दोलन के केवल सामाजिक पक्ष पर ही विचार किया जा रहा है । पादरी विरोधवाद एक सामाजिक आन्दोलन था जो अनेक धर्म सम्बन्धी विश्वासो के साथ सगत बैठता था । पादरी विरोधवाद वैचारिक आन्दोलन का मूलस्वर था जिसका प्रभाव शिक्षित और अशिक्षित दोनो मे बराबर दृष्टिगोचर हो रहा था, और इसी से पोप के प्रभाव से मुक्ति तथा मठो का विलय भी सभव हुआ, यह सब ऐसे समय मे सभव हुआ जबकि इगलैड के प्रोटेस्टेंट अभी भी एक उत्पीडित अल्पमत के रूप मे थे ।

हेनरी अष्टम् स्वय भी इरासमस तथा उसके आक्सफर्ड के मित्रो की विद्वत्तापूर्ण पादरी विरोधवादी परपरा मे शिक्षित हुआ था—आक्सफर्ड के ये लोग सच्चे धार्मिक थे और मुख्यत परपरावादी थे, किन्तु वे धूर्त पादरियो की अशिक्षित तथा अन्धविश्वासी लोगो से पैसा लूटने वाली चालो से क्षुब्ध और क्रुद्ध थे । वे साधुओ तथा परिव्राजको के विशेष रूप से विरुद्ध थे क्योकि वे सुधार-विरोधी तथा अन्धश्रद्धामूलक दर्शन के समर्थक थे और बाइबल की ग्रीक सहिता के अध्ययन के विरोधी थे, जिसे इरासमस तथा कोलैट मतावलबी धार्मिक सत्य की कसौटी मानते थे ।

इरासमस के कम से कम कुछ लेखो मे पादरी विरोधवाद की भावना बहुत तीव्र थी । "मूर्खता की प्रशसा मे" (इन दि प्रेज ऑफ फॉली) लेख मे वह साधुओ की निन्दा करते हुए कहता है कि वे "मूर्खतापूर्ण धार्मिक औपचारिकताओ तथा परपरागत नियमो का बडे ध्यान से और अत्यन्त पूर्ण सम्यक्ता से पालन करते थे," जिनकी ईसा जरा भी परवाह नही करते थे, और साथ ही वे एक ऐश्वर्यपूर्ण जीवन भी बिताते थे ।

"पेट इतना भरते कि वह फटने को आता था ।"

'जघन्य परिव्राजक' तथा उनके उपदेशो की आलोचना मे भी उसने कम कटु शब्दो का प्रयोग नही किया

"उनके उपदेश का सारा ढग ऐसा है कि आप यह कसम खाकर कह सकते है कि उन्होने यह घूमते फिरते छद्‌म चिकित्सको से सीखा है, यद्यपि यह ठीक है कि ये छद्‌म चिकित्सक सब प्रकार से उनसे श्रेष्ठतर होते है", आदि आदि ।

यदि यूरोप का सर्वोत्कृष्ट विद्वान और सुसस्कृत व्यक्ति लातीनी भाषा मे साधुओ और परिव्राजको के सम्बन्ध मे इस प्रकार से लिख सकता था तो इससे सहज मे ही अनुमान किया जा सकता है कि उस काल के प्रचलित इगलिश मे लिखने वाले लोक-

प्रिय पादरी-विरोधी लेखको का स्वर कैसा रहा होगा। प्रेस ऐसी आलोचनाओ को खूब मुस्तैदी से प्रचारित करता था और चर्च की विशाल भू-सपत्ति के प्रति लोगो के लोभ को उकसाता था, जिसे केवल इसीलिए अब तक नही लूटा गया था क्योंकि अभी तक इसका एक नैतिक प्रभाव और धार्मिक भय बना हुआ था।

उदाहरण के लिए, मठो की समाप्ति के कुछ वर्ष पूर्व हेनरी अष्टम् ने साइमनाफिश का "भिक्षुओ की याचना" नामक पैम्फ्लेट बिना किसी आपत्ति के पढा था और लडन-वासियो ने इसका बहुत हर्ष और आनन्द के साथ स्वागत किया था। यह राजा को सबोधित कर लिखा गया था

"आपके श्रेष्ठ पूर्वजो के कालो मे आपके राज्य मे एक अन्य प्रकार के सशक्त, शूर तथा छद्मवेशी, धार्मिक तथा निष्कर्मण्य भिखारी तथा आवारा लोग बिशप, अब्बोट, प्रिअर, डीकन, आर्कडीकन, सफरैग, प्रीस्ट, मॉन्क, कैनन, फ्रेअर, पार्डनर तथा समनर बडी कुशलता से आ बैठे है। इन निष्कर्मण्य तथा घातक लोगो को कौन गिन सकता है जिन्होने कि (सब प्रकार के श्रम को छोड कर) भिक्षावृत्ति इतनी कुशलता से आरम्भ की है कि आपके राज्य का एक तिहाई भाग अब इनके हाथ मे है। उत्कृष्ट से उत्कृष्टतर पद, जागीरे तथा प्रदेश उनके हाथ मे है। इसके अतिरिक्त, वे सम्पूर्ण अनाज, उद्यान, चरागाहो, घास, ऊन, भेडो, गायो, सूअर, बतखो तथा मुर्गियो सबका दशमाश प्राप्त करते है। और वे अपने लाभो का इतना ध्यान रखते हैं कि बेचारी स्त्रियो को प्रत्येक दसवा अडा आवश्यक रूप से उनके लिए रखना पडता है, अन्यथा ईस्टर पर उन्हे अपना अधिकार नही मिलता और उन्हे धर्मद्रोही समझा जाता है। ये लोग सोम्मनर लोगो को कम्मिस्सरो (सामग्री अधिकारियो) की कचहरी मे पेश करके और फिर वहा से रिश्वत पर छुडवा कर कितना धन एकत्र करते हैं? इसी प्रकार से, स्त्रियाँ तीन पेस प्रतिदिन के हिसाब मे कार्य प्राप्त करती है और पीछे साधु, या परिव्राजक अथवा पुजारी के साथ एक घटा बिस्तर पर सोकर २० पेस प्रतिदिन प्राप्त कर लेती है।"

इस पैम्फ्लेट का लेखक इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि इन पुजारियो से, विशेष रूप से साधुओ और परिव्राजको से, उनकी सम्पत्ति छीन कर राज्य को दे देनी चाहिए और इन्हे अन्य लोगो के समान कार्य मे नियुक्त करना चाहिए, उन्हे भी विवाह करने की अनुमति मिलनी चाहिए जिससे दूसरो की पत्नियो की उनसे रक्षा हो सके।

शताब्दियो से चल रहे इस व्यभिचार के विरुद्ध लौकिक जन को उत्तेजित करने के ऐसे प्रयत्न वोल्से के राज्य-काल मे लडन मे बहुत प्रचलित थे, और उसके पतन के बाद दरबार मे भी ऐसी बाते प्रचलित हो गई। उन दिनो, राजधानी तथा दरबार यदि किसी बात पर एकमत हो जाते थे तो सघर्ष मे आधी विजय तो पहले ही मिल जाती थी। और जिस तत्परता से सुधार ससत् (रिफार्मेशन पार्लियामेट) ने हेनरी

के नेतृत्व को स्वीकार कर उसका अनुसरण किया उससे अनुमान किया ही जा सकता है कि देश मे अन्यत्र भी वैसी ही भावनाएँ रही होगी, किन्तु उत्तरीय जनपदो मे यह बात नही थी जहाँ कि चर्च के प्रति सामन्तीय और धार्मिक भक्ति काफी मात्रा मे शेष थी।

विचारो के इस बवडर के सामने, जिसे कि राजा ने अब व्यावहारिक लक्ष्यो की ओर उन्मुख कर दिया था, इस प्रकार से सकटापन्न ओर आतकग्रस्त पादरियो का क्या रवैया रहा होगा ? भावी आग्ल समाज के विकास पर उनके आत्मसमर्पण अथवा प्रतिरोध के अत्यन्त महत्वपूर्ण परिणाम होते। यदि सम्पूर्ण पादरी-वर्ग— बिशप पुजारी, साधु और परिव्राजक—मध्ययुगीन चर्च के उच्च विशेषाधिकारो तथा स्वतत्रताओ के लिए सयुक्त रूप से उठ खडा होता और पोप के नेतृत्व मे सगठित हो जाता, तो उनको दबा सकना बहुत कठिन होता, कम से कम, इसके लिए अत्यन्त कठिन सघर्ष तो करना पडता ही, और वह सघर्ष इगलैंड को मटियामेट कर देता। किन्तु ये पादरी लोग न केवल राजा तथा उसकी प्रजा के बडे भाग के सगठन से ही बहुत आतंकित थे बल्कि उनके अपने आप मे भी वास्तव मतभेद थे। बहुत से पादरियो का लौकिको के साथ घनिष्ट दैनिक सम्पर्क था और वे उनके दृष्टिकोण को समझते थे। इगलैंड का पुजारी वर्ग एक जाति का सा पार्थक्य और अनुशासन नही प्राप्त कर सका था, जैसा कि आजकल के रोमन कैथोलिक पादरियो मे है।

उदाहरण के लिए, बिशप सर्वप्रमुख राजकीय तथा नागरिक अधिकारी थे। इसी प्रकार से, पादरी तथा चैपलेन प्राय ही सामन्तो तथा धनिको के व्यापारिक प्रतिनिधि तथा विश्वासपात्र सहायको के रूप मे कार्य करते थे। महन्त तक भी अपनी सम्पत्ति के प्रबन्ध के लिए लौकिको पर निर्भर करते थे और बहुत सी बातो मे अपने अभिभावको तथा सरक्षको के सम्बन्धियो की, जोकि बहुत बार मठो मे ही रहते थे, इच्छाओ के सम्मुख झुक जाते थे।

ईसलिए पादरी वर्ग के लिए आत्मरक्षा के लिए सगठित होना सहज नही था। बिशपो तथा पादरियो (पैरिश प्रीस्ट्स) की साधुओ तथा परिव्राजको के प्रति शताब्दियो से शत्रुता थी, और इसमे जरा भी कमी नही आई थी। इसी प्रकार से पोप के अधिकार के विरुद्ध भी, जिसने कि इगलैंड के चर्च का शोषण किया था, बहुत विद्रोह था और इधर के वर्षों मे वुल्से ने पोप के प्रतिनिधि के रूप मे पोप के अधिकार तथा पादरीपद की स्वतत्रता का आश्रय लेकर इगलैंड के पादरी वर्ग को रूद्ध कर लिया था। परिणामत उसके पतन के समय उनमे यह एक सामान्य भावना थी कि 'पोप से तो राजा ही अच्छा है।' पादरी-सभा के सम्मुख उस समय कोई तीसरा विकल्प नही था। वोल्से के जीवनी-लेखक का कहना है कि वह "एक निर्मम और

महत्वाकाक्षी व्यक्ति था और उसने पीछे के अधिकार का ऐसा दुरुपयोग किया कि उसके साथ ही उसका भी अन्त हो गया।"[1]

इसके अतिरिक्त, पादरियो मे बहुत से इरासमस तथा/अथवा लूथर के सुधारवादी सिद्धान्तो के गुप्त समर्थक अथवा प्रकट प्रचारक थे, अन्यथा इगलैड मे कभी भी क्रान्ति नही होती, केवल पादरियो के प्रभुत्व के विरुद्ध पादरी-विरोधियो का निर्मम सघर्ष होता, जैसाकि फिश के "सप्लीकेशन आफ दि बैगर्ज" मे पूर्वाभासित हुआ और जैसाकि सुधार का अस्वीकार करने वाले देशो मे बाद मे हुआ।

इगलेंड के पादरी-वर्ग मे अनेक भिन्न-भिन्न विचार-प्रवाह चल रहे थे। जिस प्रकार से हेनरी सप्तम् के राज्य मे आक्सफर्ड का सुधार आन्दोलन इरासमस के विचारो से प्रभावित हुआ उसी प्रकार से उसके पुत्र के राज्य मे कैम्ब्रिज सुधार-आन्दोलन, और साथ ही क्रानमर, लेटिमर, टिडेल तथा कवरडेल के सुधार-आन्दोलन सागर-पार से लूथर के विचारो से प्रभावित हुए थे। और स्पष्ट रूप से लूथरवादी हुए बिना ही बहुत से पादरियो की अपने व्यवसाय मे सुधार करने की हार्दिक इच्छा थी और वे अपने व्यवसाय के सब विशेषाधिकारो को पसन्द नही करते थे। एड्वर्ड षष्ठ के काल मे बहुत से साधु-सन्त लोग प्रोटेस्टेंट पादरी हो गये, और यह सोचने का कोई कारण नही है कि वे प्रवचक थे।

इगलैड का लोकमत, पादरी और अपादरी सभी, अब एक परिवर्तमान चित्रपट था। यह अभी स्पष्ट रेखाकित दलो, अर्थात् एक सुधारवादी और दूसरा प्रतिक्रिया-वादी—मे वर्गीकृत नही हुआ था। और इस घपले मे राजा की इच्छा ही चली। उसकी पोप तथा पादरी-विरोधी नीति को जिस वर्ष (१५३६) उत्तरी विद्रोहियो द्वारा, जो पिल्ग्रिमेज आफ ग्रेस (भगवत्कृपा की तीर्थयात्रा) के नाम से प्रसिद्ध थे, चुनौती मिली तब उसकी रक्षा नॉर्फोक तथा श्रूसबरी के समान प्रतिक्रियावादियो तथा गार्डिनर

---

[1] पोल्लार्ड आगे कहता है कि (द्रष्टव्य वोल्से, पृ० ३६९-७०) वोल्से तथा हेनरी अष्टम् मे मूलभूत अन्तर यह था कि कार्डिनल चर्च की सत्ता का समर्थक था और राजा राज्य-सत्ता का, रोमवादी चर्च तथा इगलैड के चर्च मे यही मुख्य भेद था। एक पादरी-शासित सस्था थी और दूसरी राजा शासित। वोल्से ने चर्च को एक त्रासक का रूप दे दिया था, जिसकी स्वतन्त्रताए लौकिको पर प्रशासन के सदर्भ मे तो थी किन्तु स्वय भीतरी प्रशासन मे नही थी। हेनरी की विजय ने इगलैड के चर्च को वोल्से की कल्पना के चर्च के रूप मे, जिसमे केवल एकतन्त्रता होती, जोकि उस काल की स्वशासन की भावना के साथ सगत नही थी, विघटित होने से बचाया, और इससे चर्च के शासन के भीतर विवाद तथा मतभेद के तत्वो का समावेश हो गया जोकि सार्वजनिक रुचि तथा बौद्धिक जीवन के चिह्न हैं।

और बोनर के समान बिशपो के सहयोग के कारण हुई, ये सब लूथरवादियो को जला डालने को उतने ही इच्छुक थे जितना स्वय हेनरी था। दूसरी ओर, अकादमिक पुनर्जागरण तथा सुधार के दो प्रमुख नेताओ मोर तथा फिशर ने, जोकि इरासमस के मित्र थे, पोप के प्रभुत्व तथा चर्च की स्वाधीनता को राज्य के अधीन होने देने के बजाय मरना अच्छा समझा।

साधुओ तथा परिव्राजको की समाप्ति धर्म-जीवन तथा समाज के प्रति उस दृष्टिकोण का स्वाभाविक परिणाम थी जिसको इरासमस तथा उसके आग्ल मित्रो ने प्रतिष्ठित करने का भरकस प्रयत्न किया था। शास्त्रीय तथा बाइबल विषयक अध्ययन के क्षेत्र मे नवीन शिक्षा सम्पन्न लोग, जोकि उस समय राज्य तथा विश्व-विद्यालय दोनो मे प्रमुख थे, साधुओ तथा परिव्राजको को नवीन आन्दोलन के ज्ञान-विरोधवादी शत्रु मानते थे, तथा प्राचीन युगो मे विहारो ने जो एक वैराग्य का आदर्श स्थापित किया था उसकी न तो लोक मे कोई प्रतिष्ठा थी और न साधु लोग उसका व्यवहार मे पालन करते थे। तब फिर इन मठ-विहारो को इतना धन व्यय करके क्यो रखा जाय ?

यह प्रश्न सामान्य बाजारू-लोगो ने उठाया, विशेषत लडन के लोगो ने, और इनके विरोधियो ने इसे और तूल दिया। इनमे सबसे अधिक दुर्बल लैटिमर जैसे सुधारवादी पादरी थे, जिन्हे आशा थी कि मठो की सम्पत्ति शिक्षा तथा धर्म की उन्नति की दिशा मे प्रयुक्त होगी, वे सबसे अधिक ठगे गये। पुन मठो के लौकिक पडौसी तथा सरक्षक इन मठो की सम्पत्तियो को सस्ते मूल्यो पर हथियाना चाहते थे और उन्हे प्राय ही सफलता मिलती थी। इसके अतिरिक्त, स्वय राजा, जिसकी अपव्यय-पूर्ण नीति तथा फ्रास मे लडे गये मूर्खतापूर्ण युद्धो के कारण कोश खाली हो गये थे, इनकी सम्पत्तियो को जब्त कर के उन कोशो को पुन भरना चाहता था। और अन्त मे, लोकसभा के सदस्य अपने मतदाताओ पर अप्रिय कर लगाने से बचना चाहते थे, इसलिए उन्होने मठो के अनुदान बन्द करने के विधेयको का सहर्ष समर्थन किया।

इस काल मे इगलैंड मे कर देने से निषेध की प्रवृत्ति बहुत सामान्य थी। नया कर, चाहे वह कितना भी अल्प क्यो न होता, और चाहे ससद द्वारा वह पारित भी होता, तो भी उससे देश के किसी न किसी भाग मे विद्रोह अवश्य खडा हो जाता था, और ट्यूडर राजाओ के पास कोई स्थायी सेना नही थी। इसलिए हेनरी ने अपने राज्य के अन्तिम काल मे दो स्रोतो से अपनी आर्थिक कठिनाइयो से मुक्ति खोजी, प्रथम मठो की सम्पत्ति से और, उसके बाद, सिक्के का अवमूल्यन करके। जैसाकि हम आगे देखेंगे, इन दोनो के परिणाम सामाजिक दृष्टि से बडे महत्वपूर्ण हुए।

कुछ समय के लिए मठो की भूमियो के विक्रय ने राजा के रिक्त कोश को पूर्ण किया। यदि हेनरी दिवालिया नही होता तो उसने मठो को कभी भी समाप्त नही

किया होता, अथवा उसने मठो की सम्पूर्ण भूमि तथा धन को राज्य-कोश के लिए सुरक्षित रख कर अपने उत्तराधिकारियो को इगलैड मे पूर्ण राजाशाही स्थापित करने का अवसर दिया होता, अथवा उसने अपना धन शिक्षा तथा निर्धनो की सहायता के लिए और अधिक मात्रा मे दिया होता, जैसाकि आरम्भ मे उसकी इच्छा भी थी। किन्तु ऐसी स्थिति होने पर भी उसने "ट्रिनिटी" को कालेज के रूप मे स्थापित किया, जो केम्ब्रिज के किसी भी कालेज से बृहत्तर था। सभवत उसे उत्तम कार्य के लिए वोल्से द्वारा आक्सफर्ड मे स्थापित कार्डिनल कालेज के उदाहरण से प्रेरणा मिली थी। यह कालेज भी मठो से छीने गये धन के द्वारा ही बनाया गया था, क्योकि मठो की भूमियो तथा भेटो को अन्य कार्यो के लिए लगाने की परम्परा हेनरी अथवा सुधारवाद ने आविष्कृत नही की थी। किन्तु राजा की महत् सामर्थ्य के अनुपात मे उसने जनता के लिए उपयोगी सस्थाओ को बहुत कम दान दिया। वास्तव मे उसने मठो से छीने गये धन का कुछ भाग निश्चित रूप से राज्य की बन्दरगाहो तथा रॉयल नौ सेना के आयुधागारो पर व्यय किया था।

कुछ लोगो का कहना है कि हेनरी ने मठो की भूमिया और धन बडी मात्रा मे अपने दरबारियो मे इनाम के रूप मे बॉट दिए थे, किन्तु यह बात ठीक नही है। वास्तव मे उसने उनका अधिकाश भाग बेचा था।[१] वह अपनी आर्थिक आवश्यकताओ के कारण उन्हे बेचने को बाध्य हो गया था, अन्यथा उसने ये सम्पत्तियॉ राज्य-कोश के लिये रखना अधिक पसन्द किया होता। उन जागीरो का भावी मूल्य, जिसका लाभ इनके क्रेता साधारण लोगो ने, अथवा उनके उत्तराधिकारियो ने उठाया, उससे बहुत अधिक था जितना कि उन्होने अभावापन्न (जरूरतमद) हेनरी अथवा उन व्यापारियो को दिया था जिन्होने येहेनरी से आगे बेचने के लिए खरीदी थी। इसलिए विलयन से वास्तविक लाभ धर्म को नही पहुँचा, शिक्षा को भी नही, न निर्धनो को ही इससे कुछ लाभ हुआ, अन्तत राजकोश को भी नही हुआ, बल्कि सम्पन्न जमीदारो को ही हुआ, जिनके सम्बन्ध मे और अधिक हम आगे चलकर कहेगे जब हम सामाजिक तथा कृषिगत जीवन मे होने वाले परिवर्तनो पर विचार करेगे।

मठो, पूजा-गृहो तथा अन्य धर्म-सस्थाओ की भूमियो और दशमाश करो का काफी बडा भाग कई सन्ततियो तक राज्याधिकार मे ही रहा। किन्तु आर्थिक अभावो ने एलिजाबेथ, जेम्स तथा चार्ल्स प्रथम को ये सम्पत्तियॉ व्यक्तिगत क्रेताओ को बेचने के लिए बाध्य कर दिया था।

कोयले की खाने, विशेषत डर्हम तथा नार्थम्बरलैड की, अधिकाशत धर्म-सघो के

---

[१] ए० एल० फिशर की पुस्तक दि पुलिटिकल हिस्ट्री ऑफ इगलैड, परिशिष्ट २, पृ० ४९७-४९९।

ही स्वामित्व मे थी। किन्तु हेनरी अष्टम् के कार्यो के कारण भावी सम्पत्ति का यह स्रोत, जोकि भविष्य मे स्टूअर्ट के काल से बहुत बडे स्तर पर विकसित होने वाला था, व्यक्तिगत जमीदारो के हाथो मे चला गया और इनके उत्तराधिकारियो ने इस कोयले से कुछ अत्यन्त शक्ति-सम्पन्न तथा उच्च घरानो की स्थापना की। तब भी, चर्च के पास जो थोडा शेष भी बच रहा था, उससे चर्च सम्बन्धी कमीशन को कुछ वर्ष पूर्व तक प्रति वर्ष ४०००,००० पौड की आय हो रही थी, जोकि कोयले मे मिलने वाली सम्पूर्ण रायल्टियो का सातवाँ भाग था।[1]

जमीदारो के अतिरिक्त, मठो के विलय से लाभ उठाने वाला दूसरा वर्ग सन्त अल्बास तथा बरी सत एडमड्स जैसे नगरो के नागरिको का था, जोकि अब मठीय प्रभुत्व के पजे से मुक्त हो गये थे, जिसके विरुद्ध कि वे शताब्दियो से भीषण विद्रोह कर रहे थे। दूसरी ओर, बडे मठो के ध्वस तथा तीर्थयात्रा के प्रमुख केन्द्रो के दमन से ऐसे कुछ नगरो तथा कुछ ग्रामीण जिलो की समृद्धि और महत्व कम हो गये जो स्वतत्र रूप से व्यापार तथा उद्योग के केन्द्रो के रूप मे इस क्षति की पूर्ति नही कर सकते थे। अनेक मठो के पुस्तकालय भी ध्वस्त कर दिये गये, जिनमे अत्यन्त मूल्यवान पाडुलिपियाँ सगृहीत थी। इससे साहित्य को महत् हानि हुई।

महन्तो और पुजारियो को व्यक्तिगत रूप से उससे कही कम क्षति पहुची जितना कि नवीन ऐतिहासिक अनुसधानो से पूर्व समझा जाता था।[2] उन्हे उपयुक्त पेशने दी गयी, उनमे से अनेक को रोजगार भी मिला, कुछ को पादरी नियुक्त किया गया और कुछ को बिशप भी बनाया गया। हेनरी, एड्वर्ड, मेरी तथा एलिजाबेथ के क्रमश कैथोलिक तथा प्रोटेस्टेट शासनो मे चर्च मे पुराने ही महन्त तथा साधु नियुक्त थे जोकि समय के परिवर्तनो के साथ परिवर्तित होने मे उतने ही कुशल थे जितने कि अन्य पादरी लोग। ध्वस्त मठो के जिन कुछ अध्यक्षो तथा अन्य निवासियो ने नवीन व्यवस्था का प्रतिरोध किया उन्हे राजा ने बुरी तरह से कुचल दिया था। किन्तु अधिकाश महन्तो तथा साधुओ ने परिवर्तनो को स्वीकार कर लिया जो उनमे से बहुतो के लिए वास्तव मे हानिकारिक भी नही थे, क्योकि वे उनके लिये व्यक्तिगत रूप से अपेक्षाकृत अधिक स्वतत्र जीवन तथा अधिक अवसरो का द्वार खोलते थे। उन्होने हेनरी के नवीन विचारो के विरुद्ध सगठित होने के कोई प्रयत्न नही किये, सिवाय उत्तरी भाग के जहा कि सामाजिक परिस्थितिया विगत सामन्त युग के अब भी अनुरूप थी।

महन्तो के साथ साथ वे उपदेशक साधु भी समाप्त हो गये जो कि अब तक चर्च

---

[1] नैफ-राइज ऑफ दि ब्रिटिश कोल इडस्ट्री १, पृ० १३४-१३५।

[2] द्रष्टव्य जी. वास्करविलो, दि इगलिश माक्स एड दि सप्रेशन ऑफ दि मोनास्ट्रीज, १९३८, उससे की ट्यूडर कोखाल भी द्रष्टव्य, अ. ७-९।

के पादरियो के स्पर्धी थे। फ्रासिस तथा डोमिन सम्प्रदायो के क्रमश मलेटी और काले रगो के चोगो वाले साधु, जोकि घरो के दरवाजो पर जाकर भीख मागते अथवा अशिक्षितो को उपदेश देते थे, अब प्राय इगलैड की सडको पर दिखाई नही देते थे। उनका स्थान अब धर्मोपदेशको अथवा प्रोटेस्टेट परिव्राजको ने ले लिया था, जिनमे मे कुछ चर्च के अधिकारियो के पक्ष मे और कुछ विपक्ष मे कार्य कर रहे थे। बर्नार्ड गिल्पिन ने, जो कि 'उत्तर का देवदूत' माना जाता था, मेरी तथा एलिजाबेथ के काल मे जो सीमान्तीय चर्च प्रदेशो की धर्म-यात्रा की वह एक ओर प्राचीनतर परिव्राजको का स्मरण दिलाती हे और दूसरी ओर उसमे आगे आने वाले वूसले की झलक मिलती है।

सब मिलाकर, लगभग ५००० साधुओ, १६०० परिव्राजका तथा २००० साधुनियो को पेशने देकर सासारिक जीवन की ओर भेजा गया। साध्वी विहारो की समाप्ति का समाज पर लगभग कोई प्रभाव नही हुआ। उनके पास धन, सम्पत्ति साधुओ की तुलना मे नगण्य थी, और न इनकी तुलना मे इनके सार्वजनिक कार्य ही विशेष थे। उस काल की साध्विया प्राय अच्छे परिवारो की स्त्रिया थी जिन्हे उनके सम्बन्धी उपयुक्त वर नही मिल पाने के कारण धार्मिक कार्यो के लिये दे देते थे। ये साध्वी-विहार इगलैड के जीवन मे विशेष महत्वपूर्ण नही थे।[1]

किन्तु मठो के विघटन के सामाजिक परिणामो पर और अधिक विचार करने की आवश्यकता है, अर्थात् कि इस परिवर्तन के परिणामस्वरूप इन मठो की रैयत इनके नौकर-चाकरो तथा निर्धन लोगो को क्या कष्ट भोगने पडे।

जहा तक सपत्ति के प्रबन्ध का प्रश्न है, यह समझने का कोई भी कारण नही हे कि ससारी अथवा नियमित पादरी विघटन से पूर्व अन्य सामान्य लोगो से अधिक सम्पन्न जमीदार थे। १५१७ मे जमीदारियो के विघटन की विवरणिका मे ज्ञात होता है कि मठो की सपत्तियो से बेदखलियो की सख्या साधारण लोगो की सपत्तियो से बेदखलियो की सख्या की तुलना मे कम नही थी, और "जबकि धार्मिक सम्पत्तियो के स्वामियो की भूमियो का किराये की दृष्टि से औसत मूल्य साधारण लोगो की सम्पत्तियो की अपेक्षा बहुत कम है, धार्मिक स्वामियो द्वारा किराये पर दी हुई भूमियो के किराये बहुत अधिक है।" सर थॉमस मोर ने मठो पर यह दोषारोपण किया था कि उन्होने कृषि-योग्य भूमियो को चरागाहो मे परिवर्तित कर दिया था, और जनकवियो के अनुसार ये बहुत अधिक किराये लेते थे

मठ अपना भुगतान कैसे लेते है ?
उन्होने एक नये ढग का आविष्कार किया है,

---

[1] पन्द्रहवी शताब्दी की साध्वियो के लिये द्रष्टव्य ईलन पॉवर की मैडीवल इगलिश नन्नरीज, पृ० ७२-७३।

कि वे एक दर्जन खेत एक ही को किराये पर दे देते है,
जिन्हे कि एक या दो धनी जमीदार
अकेले अपने ही अधिकार मे ले लेते है।

× × ×

जहा कि बीस पाऊड के लिये एक खेत बना था
वे अब उसे तीस मे भी नही देते है।

वास्तव मे, मठ-स्वामियो ने अधिकाशत अपनी संपत्तियो का प्रबन्ध साधारण लोगो को सौप दिया था। प्राय ही छोटे सामन्त अथवा बडे और छोटे जमीदार मठो की भूमियो का प्रबन्ध करते थे और उनका सचालन अन्य जमीदारियो के समान ही करते थे, अर्थात् जहा बाडा करने से लाभ होता वहा बाडा करते थे और कापी होल्डरो को यथेच्छ काश्तकारो या किरायेदारो के रूप मे परिणत कर देते थे तथा कीमते बढ जाने पर किराये बढा देते थे। जब विघटन के समय मठो की सपत्ति सामान्य लोगो के हाथो मे चली गयी तब तत्कालीन साधारण भूस्वामियो का रवैया किरायेदारो की ओर पहले के समान ही बना रहा। किन्तु क्योकि हेनरी अष्टम् द्वारा सिक्के के अवमूल्यन के कारण उसके पुत्र के राज्यकाल मे बहुत अधिक मूल्य-वृद्धि हुई इसलिए जब भी कभी नये या पुराने भूस्वामियो को नवीन पट्टेदारी अधिकार या कापी अधिकार मिले तब उन्हे आत्म-सुरक्षा की दृष्टि से भी किराये बढाने पडे। परिणामत 'नये लोगो' की निन्दा की गयी (और यह निन्दा अधिकाशत अनुचित रूप से की गयी थी) यद्यपि महन्त और साधु लोग भी मूल्यवृद्धि की वैसी स्थिति मे वैसा ही करने को बाध्य होते। समय बीतने के साथ अतीत एक स्वर्णिम आभा मे आवेष्टित हो गया और एक ऐसी परम्परा बन गयी जिसमे साधु लोग विशेष रूप से सरल जमीदारो के रूप मे आगे आये, यद्यपि इस परम्परा के होने की पुष्टि आधुनिक अनुसन्धान से नही होती है।[1]

मठो की जागीरो के किरायेदारो के अतिरिक्त, जिन्हे कि मठो की समाप्ति से न तो पूरी तरह से लाभ हुआ कहा जा सकता है और न हानि, एक विशाल वर्ग कर्मचारियो का भी था जिनकी सख्या स्वय साधुओ से भी अधिक थी। उनके सम्बन्ध मे यह एक सामान्य धारणा ही हो गयी थी कि वे "निठल्ले एब्बेलुब्बर" है, जो कुछ करते धरते नही है और केवल खाने-पीने मे कुशल है (स्टार्के का इगलैड, टेम्प एच ८, इ इ टी एफ पृ० १३०१) सम्भवत वे कर्मचारियो के उन बडे कुलो से न अच्छे थे और न बुरे ही जिन्हे कि उच्च कुलीन नागरिक और बडे जमीदार हेनरी अष्टम् द्वारा उनके

[1] इस अध्याय मे मैंने मठो के सम्बन्ध मे जो कहा है उसके लिए द्रष्टव्य बास्कर्विले, इगलिश मॉक्स एड दि सप्रेशन ऑफ मोनास्ट्रीज, सेवाईन, इगलिश मोनास्ट्रीज़ ऑन दि ईव ऑफ दि डिस्सोल्यूशन (आक्सफर्ड स्टडीज, एडिटिड बाई विनोग्रैंडोफ, १९०९) स्नेप, इगलिश मोनास्टिक फाईनेसिज, १९२६।

सैनिक रक्षको को नि शस्त्र कर देने के बाद बनाये रखना चाहते थे। ये कर्मचारी (सर्विगमैन) शैक्सपीयर के दिनो मे भी पसन्द नही किये जाते थे। मठो के इन आश्रितो मे से बहुत से नये स्वामियो ने, विशेषत जिन्होने मठो को जागीरगृहो (मेनर हॉउसिस) मे रूपान्तरित कर दिया था, अपना लिया था। किन्तु कुछ निस्सन्देह अपने आश्रय खो बैठे और 'पुष्ट भिखारियो' के वर्ग मे जा सम्मिलित हुए। स्वय महन्तो और साधुओ को ऐसी कठिनाई मे नही पडना पडा, क्योकि उन्हे पेशन मिलती थी।

मठो के बहुत से कर्मचारी मठो से सम्बद्ध भूमिपतिवर्ग के भले युवक थे जो "मठो की पोशाक पहनते, इनकी सपत्तियो की व्यवस्था करते, इनकी पचायतो की अध्यक्षता करते, तथा इनके व्यवस्थापक, बैलिफ और प्रमुख कृषको के रूप मे कार्य करते थे। इन उच्च वशज कर्मचारियो के अतिरिक्त, जो कि महन्तो से वेतन पाते थे, धनी अतिथि और पेशनभोजी लोग भी मठो मे रहते थे। इसी प्रकार से, नोबल लोग तथा भूमिपति भी, जोकि या तो सरक्षक होते थे अथवा सस्थापक के सबधी, मठ के प्रबन्ध पर बहुत प्रभाव डालते थे। उच्च वर्ग के लोगो का दखल मठो के प्रबन्ध मे इनके विलय से बहुत पहले से था। कुछ पक्षो मे मठो की भूमियो के लौकिको के हाथो मे जाने की प्रक्रिया काफी धीमी थी और उनका विलय इस प्रक्रिया का केवल परिणाम मात्र था।[1]

किन्तु भिखारी दरवाजो पर सदा से रहते थे। उन्हे भिक्षा मे भोजन अथवा पैसा दिया जाता था। यह प्रथा ईसाई कर्त्तव्य की एक बहुत उपयोगी प्राचीन परम्परा तथा सिद्धान्त का प्रतिनिधित्व करती थी। किन्तु हमारे "भिखारी कानून" के एक इतिहास-लेखक के अनुसार, मठो की इस भिक्षा-दान प्रथा ने, अनियोजित और पात्र-अपात्र विवेक से शून्य होने के कारण, जितना योगदान निर्धनो की सहायता करने मे किया उतना ही उनको बढाने मे भी किया।

स्वभावत मठो के द्वार पर भिक्षा मिलनी बन्द हो जाने से अन्यत्र भिखारियो की सख्या मे वृद्धि हो गयी, किन्तु इसके लिये कोई प्रमाण नही है कि भिक्षु-प्रथा ने जो समस्या उत्पन्न की वह विलय के बाद उससे अधिक गभीर हो गयी जितनी उससे पहले थी। एलिजाबेथ के राज्य के अन्त मे तो यह निश्चित रूप से अपेक्षाकृत कम थी।

जब नये प्रकार की व्यवस्था अच्छी तरह से जम गयी तब मठो की भूमियो के नये स्वामी कहा तक दान की प्रथा को जारी रख सके? क्या एलिजाबेथ के युग मे जागीर-गृह के स्वामी पहले के महन्तो की अपेक्षा कम दान देते थे या कि अधिक दान देते थे? यह कहना असभव है, सभवत कुछ अधिक देते थे और कुछ कम देते

---

[1] बास्करविले, अ २ तथा पैस्सिम, सेविने, इगलिश मोनास्ट्रीज, पृ० २४६-४५।

थे।[१] पहले स्टूअर्ट के युग मे बहुत से अभिजात जमीदारो की स्त्रिया गाव की देख-रेख करना अपना कर्तव्य समझती थी, कभी कभी तो पीयर (लार्ड आदि) की स्त्रिया भी—जैसे लेटिस, लेडी फाकलैड—इसे अपना कर्तव्य समझती थी और बीमारो को देखने, उन्हे दवाई देने तथा उन्हे कुछ पढकर सुनाने के लिये आती थी। जमीदार-गृह (मेनर हाउस) की 'लेडी बाउटीफुल' तथा उसका पति निर्धनो के लिये उतना ही कार्य करते थे जितना कि पीछे के मठो ने उनके लिये किया। मठो के विलय से निर्धनो को वास्तव मे कितनी हानि हुई यह स्पष्ट नही है, किन्तु यह पूर्णत स्पष्ट है कि निर्धनो को दान देने का तथा शिक्षा और सस्कृति का एक बडा अवसर खो दिया गया था। इस बात को उस समय बहुतो ने अनुभव कर लिया था, विशेषत लेटीमर और क्रोले जैसे पादरियो ने। १५५० के आसपास क्रोले ने लिखा था

"अकेले घूमते हुए जब मै उन कार्यो पर विचार कर रहा था जो कि मेरे काल मे महान् राजाओ ने सम्पादित किये थे, तब मुझे उन मठो-मन्दिरो के भवनो का ध्यान आया जोकि कभी मैने देखे थे और जिसका कि अब कानून द्वारा दमन कर दिया गया था। हे मेरे ईश्वर, (मैने तब सोचा) यहाँ भी महान् अवसर प्रस्तुत था, ज्ञान की प्राप्ति और दीन का दु ख हरने का! वह धन और भू-सम्पत्ति, जो यहा छीनी गई थी, वह उन दिव्य ज्ञान-गुरुओ को लानी थी जो पथ-भूलो को राह दिखाते थे और उनको भोजन देते थे जो अब भूखो मरते है।

उसके बजाय, एक ऐसी प्रवृत्ति को और अधिक बढावा मिला जो कि पहले से ही काफी सशक्त थी, वह थी ऐसे बडे जमीदारो के वर्ग का प्रभुत्व मे आना जिन्होने कि बडे सामन्तो को स्थानान्तरित किया और शताब्दियो तक जिनकी इच्छा ही कानून बनी।"

---

[१] १५३९ मे, जबकि मठो के विलय की प्रक्रिया अभी चल रही थी, तब रॉबर्ट पे ने थॉमस क्रामवैल को एक पत्र मे राजा द्वारा धार्मिक सस्थाओ मे किये गये परिवर्तनो पर लोकमत की चर्चा करते हुए लिखा था "मैने उनसे पूछा कि मठो के विलय के बाद उन्हे क्या लाभ है, तो उन्होने बताया कि इस बात को छोड कर कि भूस्वामी बहुत बडी सख्या मे कुत्ते रखते है और अपने असामियो को रखने के लिये बाध्य करते है, वे बहुत अच्छी हालत मे है। ये कुत्ते बचा हुआ भोजन तथा रोटी आदि खा जाते है, जोकि निर्धनो के काम आ सकती है। (ठीक यही शिकायत महन्तो और साधुओ के विरुद्ध की गयी थी)। वे कहते है कि उन्हे कुत्ते अवश्य रखने चाहिये, नही तो लोमडिया उनके मेमनो को खा जायगी। किन्तु मनुष्यो की सख्या इतनी है कि यदि उन्हे जाल दे दिये जाय तो वे एक लोमडी को नही छोडे। किन्तु वास्तव मे जमीदार उन्हे हमेशा लोमडिया पकडने से रोकते है, जिससे उनके शिकार का शौक पूरा होता रहे।

'हृष्ट-पुष्ट भिखारियो' के समूह, जिन्होने कि ट्यूडर काल के आरम्भ मे समाज को त्रस्त कर दिया था, अनेक स्रोतो से आये थे—जैसे सामान्य बेकार लोग, वे लोग जो किसी कार्य पर नियुक्त किये ही नही जा सकते, वे सैनिक जो फ्रास के युद्धो के बाद अथवा रोसेज के युद्धो के बाद सेवा-मुक्त कर दिये गये थे, वे अगरक्षक दल जिन्हे हेनरी अष्टम् के आदेश से भग कर दिया गया था, ऐसे नौकर जो धनहीन सामन्तो अथवा जमीदारो द्वारा निकाल दिये गये थे, डाकुओ के समूह, जो कि जगलो के कट जाने से या राजा द्वारा शान्ति व्यवस्था सुदृढ कर देने से अपनी कदराओ से निकलने को बाध्य हो गये थे, ऐसे कृषक जोकि चरागाहो के लिये भूमियाँ ले लिए जाने के कारण बेकार हो गये थे, तथा अन्य आवारा लोग जोकि दया के पात्र होने का अभिनय करते थे। ट्यूडर के सम्पूर्ण राज्य-काल मे नगरो की ओर आने वाले भिखारी अलग-अलग खेतो मे रहने वाले लोगो को डरा-धमका कर उन्हे लूट लेते थे और उनके कारण दण्डनायक (मजिस्ट्रेट), राज्य मत्री (प्रिवी काउसलर) तथा ससत्सदस्य चिन्ता मे पडे हुए थे। धीरे-धीरे निर्धनो की सहायता की एक सम्यक् योजना की गयी जिसके अनुसार इसके लिये एक अनिवार्य कर लगाया गया तथा निर्धनो को उसकी आवश्यकतानुसार विभिन्न वर्गों मे विभाजित किया गया। इगलैड की यह योजना यूरोप भर मे सर्वप्रथम थी। यह जल्दी ही अनुभव कर लिया गया कि 'पुष्ट भिखारियो' को पीटना मात्र समस्या का सुलझाव नही है। ट्यूडर काल के इगलैड ने यह अनुभव कर लिया था कि बेकारो को वृत्ति देना और पगुओ को दान देना यह दुहरा उत्तरदायित्व न केवल चर्च और दान देने वाली सस्थाओ का ही है बल्कि सम्पूर्ण समाज का यह उत्तरदायित्व है। हेनरी अष्टम् के राज्यकाल मे लडन तथा इप्सविच के समान कुछ बडे नगरो ने अपने यहाँ के निर्धनो के लिए शासकीय सहायता योजनाओ का सगठन किया। एलिजाबेथ के राज्य के अन्तिम काल मे तथा स्टूअर्ट राजाओ के युग के आरम्भ मे एक राष्ट्रीय कानून द्वारा स्थानीय दडनायको का यह एक उत्तरदायित्व निर्धारित कर दिया गया था और प्रिवी काउसिल इसका पूरा ध्यान रखती थी तथा इसके लिये एक अनिवार्य निर्धन-कर था।[1]

[1] १५५० के लगभग रॉबर्ट क्रौले ने अपनी एक कविता मे लिखा था—झाडी के नीचे बैठे दो भिखारियो को मैने बाते करते सुना जो कि अपनी अपनी हालत पर लम्बी चर्चा कर रहे थे, उन दोनो की टागो मे घाव थे और वे बडी खराब दीखती थी। पैरो से लेकर घुटनो तक वे बुरी तरह से मवाद से भरी थी। एक ने कहा, 'मेरी टागो के लिए मै ईश्वर का धन्यवाद करता हू।' दूसरे ने कहा, वही बात मेरी है, ठडी हवा मे यह बडी खराब दीखती है, और ऐसी लाल दीखती है जैसे मानो लोहू हो, मै तो इसका इलाज ससार की अच्छी से अच्छी वस्तु के बदले भी नही कराऊँगा। यदि मेरी यह टॉग खराब नही होती तो कोई मुझ पर दया नही

मठो के बाद प्रार्थना-मन्दिर ! हेनरी अष्टम् पहले से ही उन पर आक्रमण की तैयारी कर रहा था जबकि एकाएक उसे मृत्यु ने आ ग्रसा। एड्वर्ड षष्ठ के राज्यारोहण के अवसर पर (१५४७) प्रोटेस्टेटवाद को प्रोत्साहन मिला तथा मृतो के लिये प्रार्थना की प्रथा को अन्धविश्वास घोषित कर दिया गया। क्योकि प्रार्थना-मन्दिरो का यही एक प्रमुख कार्य था इसलिये इनको धार्मिक उत्साह की ओट मे किया जा रहा था। लोभी राजनीतिज्ञो, उनके परोपजीवी अधिकारियो और प्रार्थनागृहो के आस-पास रहने वाले जमीदारो द्वारा यह 'लूट', जैसाकि अब हम उनके इस कार्य को कहना चाहेगे, बालक राजा के राज्य मे उसके वृद्ध तथा प्रभावशाली पिता के राज्यकाल की अपेक्षा कही अधिक निर्लज्जतापूर्ण हो गयी थी। हेनरी ने कम से कम राज्य के स्वार्थो का तो ध्यान रखा ही था—जहाँ तक उसकी वित्तीय अयोग्यता के रहते यह सम्भव था।

ये प्रार्थना-मन्दिर विशुद्ध रूप से धार्मिक प्रतिष्ठान ही नही थे। इनमे से बहुत से ससारियो के सघो की सपत्तियाँ थे और इनके कोशो से केवल मृतो की ओर से प्रार्थना पर ही व्यय नही होता था बल्कि पुलो, बन्दरगाहो और स्कूलो की सभाल पर भी व्यय होता था। इसलिए जब इनके "अन्ध विश्वासपूर्ण उपभोग" को दबाना लक्ष्य था तब धर्मेतर लक्ष्यो को पृथक् रखना तथा उन्हे सुरक्षित रखना चाहिए था। कुछ अवस्थाओ मे यह किया भी गया लिन नगर के ससत्सदस्यो ने अपने ट्रिनिटी सघ के प्रार्थना-मन्दिर के स्तम्भो और सागर को रोकने वाली दीवारो की सम्भाल के लिए धन एकत्र किया था। किन्तु इस सघर्ष मे अनेक लोक-सेवा कार्यो को हानि पहुँची अपेक्षाकृत कम सम्पन्न तथा प्रभावशाली सघो और स्कूलो के कोशो को तो विशेष रूप से बहुत हानि पहुँची।

एड्वर्ड षष्ठ की, उसकी मृत्यु के बाद की तीन शताब्दियो तक, इस बात के कारण प्रतिष्ठा रही कि उस बालक ने अनेक स्कूलो की स्थापना की थी। किन्तु वास्तव मे 'एड्वर्ड षष्ठ व्याकरण विद्यालय' वे पुराने स्कूल थे जिन्हे उसके अधिकारियो ने नष्ट किया था और जिनके साथ उसे प्रसन्न करने के लिए उसका नाम जोड दिया गया था। प्रार्थना-मन्दिरो तथा सघो के अधिकाश स्कूलो को इस काल के विधान से हानि हुई, कुछ को अधिक हुई, कुछ को कम। भविष्य मे बहुत महगी होने वाली भूमियाँ उनसे छीन ली गयी और इसके बदले मे उनके लिए तीव्रता से अवमूल्यनोन्मुख मुद्रा मे एक निर्धारित वृत्ति बाँध दी गयी।[१]

करता, यदि मैं ठीक होऊ तो मुझे कोई भीख न दे। तब तो मुझे श्रम करने तथा पसीने से लथपथ होने को बाध्य होना पडे, और शायद कभी कोडे भी खाने पडे।

[१] ग्रे फ्रेयर्स मोनास्ट्री की भूमि पर क्राइस्ट अस्पताल वास्तव मे एड्वर्ड षष्ठ ने ही स्थापित किया था जोकि मूलत अनाथ बच्चो की सँभाल के लिये स्थापित किया

एक और बडा अवसर खो दिया गया था। यदि मृतको के निमित्त प्रर्थनाओ के लिए निर्धारित सम्पूर्ण, अथवा आधे भी, कोष स्कूलो पर व्यय किये जाते, और यदि इन स्कूलो की भू-सम्पत्ति उनके पास ही रहती, तो शीघ्र ही इगलैड माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र मे ससार भर मे सर्वोत्कृष्ट हो जाता और ससार भर पर इसका प्रभाव अच्छा पडता। लैटीमर ने इस सुयोग को खोने की निन्दा की और नवीन प्रकार के कोशो के निर्माण के लिए अपील की, जोकि उस युग की धार्मिक आवश्यकताओ के लिए अधिक उपयुक्त होते

"यहाँ मै आप लोगो से अभ्यर्थना करना चाहता हू कि आप लोग पुजारी-पद सभालने के लिए निर्धनो के बुद्धिमान बच्चो को पढाने पर तथा विद्वानो की सहायता करने पर उसी उदारता से व्यय करेगे जिस प्रकार ले आप तीर्थयात्राओ पर, टेटलो मृत पूजाओ पर, (तीस अखड मृत पूजाओ) पाप-शान्ति-कृत्यो पर तथा 'गति करवाने' पर व्यय करते हे।

ऐसी अपीलो का उन ससत्सदस्यो तथा अन्य राज्याधिकारियो की नीतियो पर कोई प्रभाव नही होना था जोकि एड्वर्ड षष्ठ के अल्पमत मे होने का बहुत लोलुपता के साथ लाभ उठा रहे थे। किन्तु इनका व्यक्तियो पर प्रभाव अवश्य पडता था। ट्यूडर काल के इगलैडवासी सब एक ही प्रकार के नही थे। उदीयमान जमीदार वर्ग के सदस्य व्यक्तिगत वकील, व्यापारी तथा बडे किसान शिक्षा की अवस्था को सुधारने मे काफी योगदान कर रहे थे। काम्डन ने एलिजाबेथ के राज्यकाल मे उपिंघम, ओक्खाम तथा अन्य नगरो मे नव प्रतिष्ठापित स्कूलो की चर्चा की है, एक जमीदार जोन ल्योन ने हैर्रो मे लडको के लिये एक स्वतत्र व्याकरण स्कूल की स्थापना की थी जहाँकि बडी कक्षाओ मे ग्रीक (प्राचीन यूनानी भाषा) पढाने की व्यवस्था की गयी थी। राजा जेम्स के शासन के प्रथम वर्ष मे यॉर्कशायर मे डेट की घाटी के सुदूर समृद्ध प्रदेश मे वहाँ के जमीदार 'राजनीतिज्ञो' से दान लेकर एक व्याकरण स्कूल स्थापित किया गया था और उसने शताब्दियो बाद तक कैंब्रिज विश्वविद्यालय ने तथा उत्तर के लोगो ने अनेक उत्कृष्ट व्यक्तियो को प्रोफेसर एडाम सिजविक के काल तक आकृष्ट किया था। हॉक्सहैड का व्याकरण-विद्यालय, जहाँकि वड्स्वर्थ ने शिक्षा

गया था, यद्यपि जल्दी ही यह 'ब्लू कोट स्कूल' मे रूपातरित हो गया था। कुछ प्रार्थना-मन्दिरो के अस्पताल हेनरी अष्टम् ने नष्ट कर दिये थे, किन्तु सेट थामस का 'बार्ट्स' तथा बेडलाम सुरक्षित रह रये थे तथा साधारण लोगो ने उन्हे पुन प्रतिष्ठित किया था। अस्पताल के कोशो की समाप्ति निर्धनो के लिए प्रार्थना-मन्दिरो के कोषो की समाप्ति की अपेक्षा अधिक हानिकारक थी। क्योकि अस्पताल निर्धनो की सहायता के लिये ही स्थापित किये गये थे और वहा ही बनवाये गये थे जहाँ उनकी सबसे अधिक आवश्यकता थी।

पाई थी, आर्क बिशप सैडी द्वारा एलिजाबेथ के राज्यकाल मे स्थापित किया गया था।

ट्यूडर युग का एक प्रतिनिधि 'नवमानव' निकोलास बेकन था जोकि फासिस बेकन का पिता तथा बरी सेट एडमड्स मठ के एक बडे अधिकारी का पुत्र था। निकोलास बेकन कानून तथा राजनीति के सहारे उन अनेक फार्मो का स्वामी बन बैठा जिनपर उसके पिता ने महन्तो के प्रतिनिधि के रूप मे कार्य किया था। उसने उन भूमियो पर एक निश्शुल्क व्याकरण-विद्यालय की स्थापना की और वहाँ से निकलने वाले विद्यार्थियो को कैम्ब्रिज मे पढने के लिए छात्रवृत्तियाँ दी तथा कॉपर्स क्राइस्ट नामक अपने पुराने कालेज को बहुत से दान दिये। पहली बार कैम्ब्रिज मे वह अपने आजीवन मित्रो मैट्थ्यू पार्कर तथा विलियम सेसिल से मिला था जोकि आगे चलकर एलिजाबेथ के राज्य मे चर्च तथा राज्य के नेता बने। यह अपेक्षाकृत नया, तथा तब तक अभी अल्पविकसित, विद्यालय तीव्रता से प्रमुखता प्राप्त कर रहा था और इसके स्नातक उस काल के परिवर्तन मे प्रमुख योगदान कर रहे थे।

नयी शिक्षा के प्रभाव मे उत्पन्न नये लोगो ने जिस शिक्षा-पद्धति और आदर्शो को जन्म दिया उससे स्कूलो तथा विश्वविद्यालयो की शिक्षा का महत्व बहुत बढ गया। सेट जोन् विद्यालय के ग्रीक भाषा पडित जोन् चेके तथा रोजर अस्चाम का कैम्ब्रिज पर बहुत गहरा और स्थायी प्रभाव पडा। शैक्सपीयर ने स्ट्रैटफोर्ड व्याकरण स्कूल मे नयी प्रणाली के अनुसार प्राचीन साहित्य का अध्ययन किया था। सौभाग्यवश यह शिक्षा उसे निश्शुल्क प्राप्त हो गयी, अन्यथा उसके पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी। इसके लिये हम लोग स्ट्रैटफोर्ड स्कूल के मध्ययुगीन सस्थापको के प्रति तथा इगलैड के नवोत्थान युग के सुधारको के प्रति हृदय से आभारी है।

यदि हेनरी अष्टम् तथा एड्वर्ड षष्ठ द्वारा चर्च से छीनी गयी सपत्तियो को कैथोलिक परिवार खरीदने से इन्कार कर देते तो सम्भवत उनके पुत्र-पौत्र उतनी अधिक सख्या मे प्रोटेस्टेट नही बनते। एलिजाबेथ के युग मे, जबकि विदेश से तीव्र कैथोलिक प्रतिक्रिया का इगलैड पर आक्रमण हुआ, तब मठो तथा प्रार्थना-मन्दिरो के स्वामियो ने अनुभव किया कि नवोत्थान आन्दोलन मे स्वय उनके स्वार्थ भी निहित है।[1]

शताब्दियो से चली आती प्रथा के अनुरूप ही ट्यूडर के सम्पूर्ण राज्य-काल मे भी भूमि को स्थायी आलवालो के घेरने की प्रथा विभिन्न रूपो मे जारी रही यथा, खाली

---

[1] एड्वर्ड षष्ठ के काल मे प्रार्थना-मन्दिरो की स्थिति के लिये द्रष्टव्य पोल्लार्ड लागमैन की—पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ इगलैड, जिल्द ६, १५४७ से १६०३, पृ० १५-२०, तथा लीच इग्लिश स्कूल्स एट दि रिफार्मेशन।

पडी भूमि तथा जगलो का खेती के लिये आवलयन, अच्छी व्यक्तिगत खेती के लिए खुले भू-खडो मे झाडियो की बाड लगा कर छोटे खेत बनाना, गाव की साझी भूमि को आवलयित करना, तथा कृषि-योग्य भूमि को चरागाह के लिये आवलयित करना। आवलयन के इन सब प्रकारो से सम्पत्ति की वृद्धि होने मे सहायता मिली, केवल कुछेक मे ही निर्धनो से छल हुआ, अथवा जनसख्या मे कमी हुई। कुछ तो स्वय कृषको के सक्रिय सहयोग से ही आवलयित किये गये थे। कुछ का, विशेषत साझी भूमियो के आवलयन का, प्रतिरोध किया गया और विद्रोह तथा उत्पात भी हुए।

हेनरी सप्तम् के शासन मे छोटे कृषको के खेतो को चरागाहो के रूप मे एकत्र कर देने के विरुद्ध बहुत हाहाकार मचा, क्योकि यह वहा के निवासियो के लिये हानिकारक था तथा इसके कारण बहुत से गावो को गिराना पडा। १४८६ तथा १५१५ मे इस प्रथा को रोकने के लिये कानून बनाये गये और स्पष्टत इनके कुछ परिणाम नही हुए। इसके बाद हेनरी अष्टम् के शासन के मध्य तथा अन्तिम वर्षो मे जारी किये गये घोषणा-पत्रो आदि से यह स्पष्ट है कि कृषि-योग्य भूमियो को चरागाहो मे रूपान्तरित करने तथा परिणामस्वरूप गावो की जनसख्या मे ह्रास के कारण बहुत चिन्ता उत्पन्न हो गयी थी। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि आलवाल बहुत विशाल स्तर पर नही लगाये गये, सिवाय कुछ मध्यप्रदेशीय जिलो मे जहाकि अनुसूचना के लिये राजकीय प्रतिनिधियो को भेजा गया था। और मध्य प्रदेश मे भी आलवाल, चाहे वे कृषि के लिये बनाये गये हो अथवा चरागाहो के लिये, बहुत कम बनाये गये होगे, क्योकि इन्ही जिलो मे अट्ठारहवी शताब्दी मे मध्ययुगीन सामन्तो के खुले क्षेत्र तथा साझी भूमिया, कुछ अपवादो को छोडकर, बिना आलवालो के ही पडी थी और हेनरी-काल मे ससत् के अधिनियमो द्वारा आवलयित किये जाने की प्रतीक्षा कर रही थी। (कोन्नर लैंड एड एन्क्लोयर)।

किसी आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन के प्रतिक्रियास्वरूप उत्पन्न हाहाकार की मात्रा का निर्धारण कभी परिवर्तन की मात्रा और महत्व से निर्धारित नही होता बल्कि उस समस्या के प्रति तात्कालिक जनमत से होता है। उदाहरण के लिये, हम जनसख्या-ह्रास का कोलाहल ट्यूडर के काल मे बहुत पाते है, क्योकि उस काल मे यह एक बहुत अनिष्टकर समझा जा रहा था। इसलिये चरागाहो के लिये आलवालो की मोर, लैटीमर तथा अन्य सैकडो लेखको व कैथोलिक और प्रोटेस्टेट दोनो सम्प्रदायो के नेताओ ने निन्दा की। "पहले जितने मे चालीस आदमियो की जीविका चलती थी उसे अब केवल एक आदमी और उसका चरवाहा सँभाले बैठा है"—ऐसा था उस काल मे इसके विरुद्ध हाहाकार। उस समय ऐसे कुछ उदाहरण निश्चय ही थे, और यदि इनके विरुद्ध प्रतिक्रिया नही होती और परिणामस्वरूप राज्य कोई प्रतिकार नही करता तो ऐसे आलवाल और अधिक बनते। किन्तु ट्यूडर के काल मे "ग्राम-जनसख्या-ह्रास" बहुत कादाचित्क तथा स्थानीय था और इसकी क्षतिपूर्ति दूसरी जगह हो जाती थी।

अमरीकन खाद्य-सामग्री के आयात के कारण जब १८८० मे "ग्रामीण-जन-ह्रास" राष्ट्रीय स्तर पर आरम्भ हुआ तब विक्टोरिया काल के लोगो को यह महत् सामाजिक विपत्ति एकदम स्वाभाविक और अतएव स्वीकार्य प्रतीत हुई और परिणामत इसके प्रति वे अत्यधिक उदासीन रहे और इसके प्रतिकार के लिये उन्होने कोई प्रयत्न नही किये। केवल हमारे काल मे युद्ध के समय इस द्वीप के भूखे मरने के भय ने ग्रामीण जन-ह्रास की समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया है, जोकि इस समय उससे बीस गुणा अधिक है जितनी यह आज से चार शताब्दिया पूर्व थी, यद्यपि उस समय इस समस्या ने हमारे पूर्वजो का मन उतना ही व्यग्र कर रखा था जितना कि शायद सुधार आन्दोलन ने किया था।

सामाजिक तथा धार्मिक कारणो से उत्पन्न आक्रोश ने नॉर्फोक मे (१५४६) केट्ट को जन्म दिया, जबकि विद्रोही किसानो ने मउस होल्ड हीथ पर खेमे गाड लिये और उन जमीदारो की बीस हजार भेडे मार दी जिन्होने कि साझी भूमि पर अनुचित रूप से बडी सख्या मे अपनी भेडे रख दी थी। किन्तु नार्फोक के लोगो मे कृषियोग्य भूमि को चरागाहो मे परिवर्तित करने के विरुद्ध कोई शिकायत नही थी, जहाकि एक ही पीढी के बाद काम्डन ने लिखा था कि 'यह जिला खुले क्षेत्रो को आवलयित करने के लिये लगभग उत्सुक था', यद्यपि वह 'यहा के भेडो की बडे झुडो' की चर्चा भी करता है।

मठो के विलय ने किसान-विद्रोह की समस्या को कठिन बनाने मे कोई बडा योगदान नही किया। किन्तु जैसाकि हम अभी देखेगे, यह समस्या हेनरी के अपनी आर्थिक विपत्ति से बचने के लिए उठाये गये एक दूसरे कदम के परिणामस्वरूप बिगड गयी, यह कदम था मुद्रा का अवमूल्यन। इस विपत्ति का मूल वास्तव मे अधिक गहरा था— यह निहित था ऐतिहासिक परिवर्तन की बढती हुई प्रसूति-पीडा मे। समाज अब किसानो मे थोडे किरायो पर वितरित विस्तृत खेतो की प्रणाली से, जो कि चौदहवी-पन्द्रहवी शताब्दियो मे प्रचलित थी जबकि श्रम की अल्पता थी, चको के क्रमश बडे तथा अधिक किराये वाले फार्मो मे विलयन की ओर बढ रहा था। परिणामस्वरूप, कृषि का 'जीवन-निर्वाह मात्र के लिये पर्याप्त' रूप समाप्त हो गया और बाजार के लिये उत्पादन इसका कार्य हो गया। यह श्रेष्ठतर जीवन-विधि से अश्रेष्ठ जीवन-विधि की ओर सक्रमण रहा हो या नही रहा हो किन्तु यह ग्राम-प्रदेश का अपेक्षाकृत निर्धन स्तर से सम्पन्न स्तर की ओर सक्रमण अवश्य प्रमाणित हुआ। और द्वीप की बढती जनसख्या को भोजन देने के लिये, राष्ट्र की सपत्ति बढाने के लिये तथा जीवन-स्तर उन्नत करने के लिये ऐसा कोई परिवर्तन आवश्यक था, और इस परिवर्तन को आधुनिक परिस्थितिया अन्तत पुरातन जीवन-विधि को समाप्त करके लायी।

सोलहवी शताब्दी का इगलैड लघु किसानो को दासत्व के स्तर से उबारने की दृष्टि से जर्मनी और फ्रास से बहुत आगे था जिसके बहुत थोडे चिह्न हेनरी सप्तम् के काल मे शेष रहे थे और एलिजाबेथ के राज्यकाल मे बिल्कुल समाप्त हो गये थे। किन्तु

उस युग के कृषि-सबधी परिवर्तन एक अन्य विकास-क्रम को आरभ कर रहे थे जोकि स्वय लघु कृषको के लिये कम लाभकर था, क्योकि ये लोग सत्रहवी-अट्ठारहवी शताब्दियो के क्रम मे धीरे धीरे इस स्थिति से ऊपर उठ रहे थे और या तो बडे कृषक हो रहे थे अथवा सामन्तो के घरो मे पदाधिकारी अथवा बडे फार्मो पर भूमिहीन श्रमिक, अथवा भूमि मे पृथक्कृत नगर-श्रमिक बन रहे थे। ट्यूडर के काल मे कृषि-जनो मे असन्तोष इस दीर्घ प्रक्रिया की आरभिक स्थितियो के विरुद्ध असन्तोष था। जिन परिस्थितियो मे यह आरभ हुआ उन पर यहा विचार करना आवश्यक है।

बहुत समय पहले, तेरहवी शताब्दी मे, लोगो मे एक 'भूमि की भूख' थी—बहुत जनसख्या थी और कृषि के लिये बहुत कम भूमि थी—और इसका भूमिपतियो को बहुत लाभ था। किन्तु, जैसाकि पहले कहा जा चुका है, अगली दो शताब्दियो मे मुख्यत प्लेग के कारण भूमि का आधिक्य हो गया और उस पर कृषि करने वालो की कमी हो गयी --और इसका लघुकृषको को लाभ पहुचा, जिन्होने कि इन अनुकूल परिस्थितियो मे अपने आपको दासता के स्तर मे उबार लिया। और अब सोलहवी शताब्दी मे पुन भूमि की भूख उत्पन्न हुई। मृत्यु दर के अनुपात मे उत्पत्ति दर की मन्द प्रगति ने अन्तत प्लेग के विनाशक प्रभाव की कुछ क्षतिपूर्ति की थी, यद्यपि इसके स्थानीय प्रकोप लदन तथा अन्य नगरो को आक्रान्त करते रहते थे। केवल धनियो को कुछ काम की चिकित्सा मिल पाती थी, किन्तु उनके बच्चे भी जिस दर से मरते थे वह आज के माता-पिता को त्रासित कर देगी। किन्तु उस समय यह एक स्वाभाविक बात समझी जाती थी। किन्तु इस 'काल-ताडव' के बावजूद, जोकि उस काल के कलाकारो का एक प्रिय विषय था, जनसख्या निरन्तर बढ रही थी, सम्भवत सम्पूर्ण इगलेंड मे यह चालीस लाख तक पहुच गई थी। परिणामत ट्यूडर काल मे पुन उपलब्ध भूमि की तुलना मे श्रमिको का आधिक्य हो गया था, और तबतक अतिरिक्त व्यक्तियो को कार्य देने के लिये न तो अभी उपनिवेश ही बने थे और न उद्योगो का ही पर्याप्त विकास हुआ था। इसीलिये 'पुष्ट भिखारी' अस्तित्व मे आए, इसीलिये वनो की बडे स्तर पर कटाई की गई और परती भूमियो को, जोकि पन्द्रहवी शताब्दी मे जोतने से रोक ली गयी थी, हल के नीचे लाया गया, इसीलिये जमीदारो को अधिक आर्थिक अवसर मिला कि वे भूमि का, जिसकी कि इतनी माग थी, जैसा चाहे लाभ उठाते, और अपने पट्टेदारो से, पट्टे की सीमा मे रहते हुए, अधिक लगान लेते।

जबकि भूमि की भूख ने जमीदारो को लगान तथा कृषि की विधि मे परिवर्तन करने का अवसर दिया, मूल्यो मे वृद्धि ने उसे इसके लिये बाध्य भी किया—यदि वह मरना नही चाहता था तो। १५०० तथा १५६० के बीच उन वस्तुओ के मूल्य, जो जमीदार की अपनी तथा अपने घर की आवश्यकताओ के लिये अनिवार्य थी, दुगने से भी अधिक हो गये थे, खाद्य सामग्री का मूल्य तिगुने से भी अधिक हो गया था। इसलिये

विनाश से बचने के लिये जमीदार के लिये यह आवश्यक था कि वह लगान बढाता, और उसका अन्य सब प्रकार से अधिक से अधिक लाभ लेने का प्रयत्न करता – कुछ अवस्थाओ मे उस पर कृषि करने के बजाय चरागाह के रूप मे उपयोग करता।[१]

किन्तु व्यापक क्रोध तथा धार्मिक भावुकता ने इस युक्ति को कोई महत्व नही दिया। कैथोलिक तथा प्रोटेस्टेट दोनो समान रूप से तब भी आर्थिक क्रियाओ को मध्ययुगीन कसौटियो पर कस रहे थे। उदाहरणत व्यापारियो द्वारा उधार दिये जाने वाले पैसे पर व्याज लगाने की दीर्घ-स्थायी परम्परा होने के बावजूद कानून तथा जनमत दोनो इसे अनुचित मानते थे। विधान वस्तुस्थिति से इतना पिछडा हुआ था कि १५५२ तक मे भी ससत् ने कानून द्वारा व्याज का "एक घृणीय पाप" के रूप मे अवैध घोषित किया। अन्तत, १५७१ मे इस कानून को हटा दिया गया और १० प्रतिशत तक व्याज को अपराध नही रखा गया।

इसलिये इसमे कोई आश्चर्य की बात नही है कि धर्मोपदेशको, प्रचार-साहित्य-लेखको तथा कवियो ने आलवालो को अनैतिक तथा अधिक लगानो को लूट और शोषण बताया। निस्सदेह, इनमे से कुछ अनुचित थे भी, किन्तु सामान्यत जमीदार परि-स्थितियो के दबाव मे ही यह सब कर रहे थे। 'आर्थिक अनिवार्यता' ने अत्याचारी को और अधिक दमन के लिये वास्तव मे एक बहाना ही दे दिया, और इस बहाने का पीछे की शताब्दियो मे, जबकि "राजनैतिक अर्थनीति" नामक एक अप-विज्ञान (डिस्मल साईस) ने लोगो का मन अपने कठोर शासन के नीचे दबा रखा था, बहुत ही अनुचित लाभ उठाया गया। किन्तु इन प्रश्नो पर ट्यूडर के लेखन का अधिकाश भाग इसके विपरीत दोष से दूषित था और वह पर्याप्त आर्थिक नही था। उसने केवल व्यक्तियो की कलुष प्रवृत्ति को ही इसके लिये दोषी ठहराया और रोग के मूल कारण और उसके निदान पर कोई विचार नही किया।

---

[१] ट्यूडरो के शासन मे मूल्य-वृद्धि तीन चरणो मे हुई (१) १५१०-१५४० जर्मनी मे चादी के उत्पादन के कारण तथा हेनरी अष्टम् द्वारा हेनरी सप्तम् के सचित कोष मुक्त कर देने के कारण खाद्य पदार्थो की ३० प्रतिशत मूल्य-वृद्धि हुई, अन्य पदार्थो के मूल्यो मे कम वृद्धि हुई। (२) १५४१-१५६१ हेनरी अष्टम् द्वारा मुद्रा का अवमूल्यन कर देने के कारण (और कुछ काल बाद अमरीका की चादी की कानो के उत्पादन आरम्भ कर देने के कारण) सब प्रकार की वस्तुओ के मूल्यो मे १०० प्रतिशत, अथवा अधिक भी वृद्धि हो गयी। (३) १५६१-१५८२ मेरी की अर्थव्यवस्था अपेक्षाकृत अच्छी होने के कारण तथा एलिजाबेथ द्वारा मुद्रा का मूल्य पुन निर्धारित करने के कारण मूल्य स्थिर हुए, और इनकी वृद्धि की गति बहुत मन्द हो गयी। उसके बाद स्टुअर्ट के राज्य-काल के आरभिक वर्षों मे चादी की अमरीकन कानो ने मूल्य पुन बहुत ऊचे कर दिये। १६४३-१६५२ उसके बाद मूल्यो मे ह्रास हुआ।

किन्तु इसके अपवाद भी थे। एड्वर्ड षष्ठ के राज्यकाल मे, जबकि सामाजिक अव्यवस्था पराकाष्ठा पर पहुँची हुई थी, लिखा हुआ "ए डिस्कोर्स आफ दि कामन वील" नामक एक सम्वाद उपलब्ध होता है। यह सवाद सब पक्षो के साथ उचित न्याय करते हुए सही वस्तुस्थिति का उद्घाटन कर सका और देख सका कि लगान पर मूल्य-वृद्धि का अनिवार्य प्रभाव क्या हो सकता था, और यह भी देख सका कि मूल्य-वृद्धि का कारण हेनरी द्वारा मुद्रा का अवमूल्यन करना था। एलिजाबेथ के राज्यकाल के आरम्भ मे थॉमस टस्सर बहुनिन्दित आलवालो की प्रशसा मे गीतात्मक हो उठा था

"विभिन्न आमिषो की तथा उत्तम प्रकार के धान्य, मक्खन और पनीर की अतिशयता, और (सक्षेप मे कहे तो) वह समृद्धि, और उतने समृद्ध तथा सुन्दर जन, जितने कि आप आवलयित भूमियो के क्षेत्र मे प्राप्त कर सकते है, अन्यत्र कहाँ प्राप्त कर सकते है? (फिर चाहे आप कही भी क्यो न घूम आएँ!)।

किन्तु उस समय हमे आवलयन की प्रथा का विरोध ही अधिक मिलता है, जो कि उचित रूप से उस वास्तव अन्याय के विरुद्ध लोगो को प्रकट करना चाहिए था जोकि सामन्त लोग निर्धनो पर उनकी साझी भूमियो को अपने आलवालो मे मिलाकर कर रहे थे। इसी प्रकार से जमीदारो पर भी व्यापक रोष था और उसमे कोई विवेक नही था। वे लोग उन्हे "गीधे और लोभी बगुले" कहते थे। किन्तु मूल्य-वृद्धि के कारण छोटे तथा बडे कृषक अपनी उपज को पुरानी मुद्रा के हिसाब से दुगुने या तिगुने मूल्य पर बेचते थे जबकि उनके भूस्वामी को अपनी सब क्रीत वस्तुओ के लिये अपेक्षाकृत अधिक मूल्य देना पडता था।[1] तब यह कैसे सम्भव होता कि लगान न बढते? किन्तु वह समाज, जोकि अपने दृष्टिकोण मे अभी मध्ययुगीन ही था, समझता था कि सामाजिक अर्थ-व्यवस्था का आधार प्रतियोगिता नही है बल्कि अनादि काल से चली आती प्रथाएँ है, यद्यपि मुद्रा के मूल्य मे ह्रास और मूल्यो की तीव्र गति से वृद्धि प्रतिदिन पुरानी प्रथाओ को असभव ही नही अनुचित भी बना रहे थे।

सामाजिक असन्तोष का कारण विभिन्न वर्गो पर मूल्य-वृद्धि के आपात की अनियमितता और आकस्मिकता थी। छोटे किसानो के एक वर्ग ने, जोकि सौभाग्यवश दीर्घकालिक पट्टेदारी की शर्तो पर अथवा कापीधारी शर्तों पर थे, और जिन्हे कानून से निकाला नही जा सकता था, अपनी उपज के इस तीव्रगति से बढते मूल्यो का पूरा लाभ उठाया, क्योकि उनके लगान नही बढाये जा सकते थे। क्योकि भूस्वामी सबके लगानो को उचित स्तर पर नही बढा सकते थे इसलिये वे पट्टों के पुनर्नवीकरण के समय उन छोटे तथा बडे किसानो के लगान अनुचित रूप से बढा कर तथा उन पर भारी

---

[1] यद्यपि इस तथ्य का उल्लेख **दि डिस्कोर्स ऑफ दि कामन वील** मे मिलता है, किन्तु उस काल मे अन्य लेखको ने इससे आँख ही मूँद रखी थी।

जुर्माने लगा कर इसकी क्षतिपूर्ति करते थे, जो या तो वार्षिक पट्टे पर थे, अथवा जिनके पट्टे मृत्यु के कारण समाप्त हो जाते थे, अथवा कुछ वर्षो मे समाप्त हो जाते थे। परिणाम यह हुआ कि किसानो का एक वर्ग तो लगान मे एक पैसा भी अधिक दिये बिना धनार्जन कर रहा था, जबकि एक दूसरा वर्ग, जोकि इस बात के अतिरिक्त कि उसकी पट्टे खरीदने की तारीखे भिन्न थी, अथवा उसके खेती करने के अधिकार का कानूनी रूप कुछ भिन्न था, इसलिए और भी अधिक दबाया जा रहा था कि कुछ अन्य किसानो से, उन्हे कानून का सरक्षण प्राप्त होने के कारण, अधिक लगान नही लिया जा सकता था। इस बीच मे बडे किसान, जोकि या तो कुछ लगान नही देते थे अथवा नही के बराबर लगान देते थे, अपने अनाज तथा पशुओ को उससे तीन गुणा मूल्य पर बेच रहे थे जितने मे कि उनके पितामहो ने ये बेचे थे।

इस प्रकार से एड्वर्ड षष्ठ तथा मेरी के राज्यकालो मे जबकि कुछ लोगो ने बहुत उन्नति की, अन्य, जिनमे अनेक सामन्त तथा अन्य कुलीन लोग भी थे, वास्तव कठिनाई मे थे, जिसका मुख्य कारण उनके पिता राजा का मुद्रा के साथ खिलवाड करना था। उसी कारण से भूमिहीन श्रमिको को भी बढते मूल्यो और वेतन के बीच की बढती खाई का शिकार होना पडा।[१] किन्तु उस समय भूमि-हीन श्रमिक आज की अपेक्षा श्रमिक वर्ग का बहुत छोटा भाग थे, और क्योकि एक सीमा तक उसको परिश्रमिक सामग्री के रूप मे मिलता था इसलिये मुद्रा का मूल्य गिर जाने का उस पर उतना प्रभाव नही पडा। दूसरी ओर, शिल्पी, उत्पादनकर्ता तथा व्यापारी को मूल्य-वृद्धि से उतना ही लाभ हुआ जितना कि उस कृषक को जिसका लगान नही बढाया जा सका था। अधिक सामान्य शब्दो मे कहा जा सकता है कि, मूल्य-वृद्धि से, जिसके कारण कि कुछ निर्धन हो गये और अन्य समृद्ध, नगरो तथा ग्रामो दोनो मे व्यापार, उत्पादन तथा उद्यम को प्रोत्साहन मिला। रूढि तथा स्थिर सम्बन्धो मे जकडे इगलैड को हटाकर एक साहस तथा स्पर्धा से आपूरित नवीन इगलैड को जन्म देने मे इस मूल्य-वृद्धि का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण था।

शताब्दी के समाप्त होने से पहले कुछ समय के लिये सतुलन स्थापित हो चुका था। एड्वर्ड षष्ठ के राज्य के अन्तिम वर्षो मे एक वास्तव आर्थिक सुधार आरम्भ कर दिया गया था, जिसे कि मेरी ने भी जारी रखा, और एलिजाबेथ ने उसे चरमता तक पहुँचाया। यह महान रानी अपने राज्य के दूसरे वर्ष मे ही (१५६०-१५६१) मुद्रा की शुद्धता को पुनस्स्थापित करने मे सफल हो सकी। कुछ समय के लिये मूल्यो मे स्थिरता लायी जा सकी। धीरे-धीरे, जैसे-जैसे पट्टो के समय समाप्त होते गये,

---

[१] १५०१ तथा १५६० के बीच खाद्य वस्तुओ के मूल्य १००-से २९०-तक बढ चुके थे, जबकि स्थापत्य व्यापार मे वेतन १००-से १६९-तक ही बढे थे। कृषि के वेतन नही बताए जा सकते।

लगान समजस रूप से स्थिर होते गये। परिणामत शैक्सपीयर के युग मे कृषि-क्षेत्र मे एक शान्ति का वातावरण था तथा समृद्धि और सन्तोष का सामान्य रूप से एक ऊँचा स्तर था, सिवाय ऐसे अवसरो के जबकि उपज अच्छी नही हुई होती थी।

जबतक यह नया सन्तुलन स्थिर हुआ तबतक कठिन परिस्थितियो के दबाव के कारण कुछ बडे महत्वपूर्ण परिवर्तन हो चुके थे। किसान, जिन्हे कि आधुनिक अर्थ मे किसान कहा जा सकता है, अर्थात् जिनके पास अस्थायी पट्टो पर काफी एकड भूमियाँ थी, पहले से अधिक सख्या मे थे, और मध्य युगो के वे टिपिकल छोटे किसान अब कम सख्या मे थे। तो भी छोटे किसानो की सख्या काफी थी और मध्य-भूमियो मे बढिया कृषि-योग्य-भूमि के अधिकाश भाग पर अब भी खुले क्षेत्र की विधि से ही खेती हो रही थी

ट्यूडर राजाओ के कानून और आयोगो तथा न्यायालयो की सहायता से निरन्तर प्रयत्नो के कारण आवलयन के दुरुपयोगो पर कुछ रोक रही तथा परम्परागत छोटे किसानो के स्वार्थ उनके विरुद्ध सुरक्षित रह सके। किन्तु ये अनिवार्य परिवर्तन की मन्द प्रक्रिया को नही रोक सके।

इन परिस्थितियो के परिणामस्वरूप "योमैन" नामक वर्ग पहले की अपेक्षा अधिक बृहत्, अधिक समृद्ध तथा अधिक महत्वपूर्ण था। योमैन नाम के अन्तर्गत कम से कम तीन भिन्न भिन्न वर्गो का समावेश होता था, और अब ये सभी समृद्ध थे जो अपनी निजी भूमि पर, जिसपर इनका पूर्ण स्वामित्व था, कृषि करते थे, पूजीपति किसान, जो कि स्वेच्छा से लगान पर कृषि करते थे, तथा वे किसान जिनके पास सौभाग्यवश अपरिवर्तनीय लगान पर पट्टेदारी अधिकार थे। इन तीनो प्रकार के योमैन सभवत या तो झाडियो से आवलयित भूमियो पर खेती कर रहे थे या खुले क्षेत्रो के खडो पर। इनमे से बहुतो की सपत्तिया पूर्णत या अशत उनकी भेडो की ऊन से अर्जित की हुई थी। योमैन की सर्वोत्तम प्रकार के अग्रेज (इगलिशमैन) के रूप मे प्रशसा तथा उसके ऐसे गुणो का आख्यान जैसेकि, "वह न तो सबलो के सामने झुकता है और न अपने दीन पडौसियो से घृणा करता है, कि वह प्रसन्न चित्त, अतिथि-सत्कार करने वाला तथा निर्भय है" —ट्यूडरो तथा स्टुअर्टों के काल के साहित्य का एक स्थायी विषय रहा है।

ये योमैन लोग राष्ट्र के वास्तव बल तथा रक्षा-स्रोत माने जाते थे। प्राचीन समयो मे उन्होने एगिकोर्ट को जीता था और हाल ही मे फ्लोड्डन को जीता था, और वे अब भी राष्ट्र की ढाल और कवच थे। "यदि इगलैड के योमैन लोग नही होते तो युद्ध-काल मे हम आततायियो के अधीन होते। क्योकि उन्ही के सहारे इगलैड की सुरक्षा सभव हो सकी।" इगलैड के लोग गर्व से कहते थे कि अन्य देशो मे ऐसा मध्य-वर्ग नही है, बल्कि उनके यहा केवल दमित कृषक वर्ग, सामन्त तथा उन्हे लूटने वाले सैनिक ही है।

अग्रेज लोगो मे व्यावसायिक सैनिको के प्रति पहले से ही एक घृणा की भावना थी जिसका मुख्य कारण सामन्तो के आरक्षको द्वारा शान्त किसानो पर अत्याचार की स्मृति थी। ट्यूडर राजाओ ने उस सब का दमन कर दिया था और उनकी अपनी कोई नियमित सेना नही थी इसी कारण से वे इतने जनप्रिय थे। इगलैड के लोग अपनी स्वाधीनता के प्रति सजग थे और उसके लिये गर्व का अनुभव करते थे। यह स्वाधीनता अभी इस रूप मे नही समझी जा रही थी कि उनका राजा लोकसभा के द्वारा शासन करता था, अथवा कि वे चर्च या राज्य किसी के भी विरुद्ध अपने विचार व्यक्त करने मे स्वतन्त्र थे, बल्कि केवल यह कि वे सामन्तो अथवा राजा के दमन से निर्बाध अपना स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करते थे। एड्वर्ड षष्ठ के राज्यकाल मे लिखी "दि डिस्कोर्स ऑफ दि कॉमन वील" पुस्तक मे "गृहस्थी" तथा "व्यापारी" विचार-विमर्श कर रहे है कि क्या इगलैड मे उपद्रवादि के दमन के लिये कोई नियमित सेना होनी चाहिए ?" गृहस्थ ईश्वर की कृपा है कि हम मे कोई ऐसे आततायी नही है, क्योकि, जैसाकि लोग कहते है, ये लोग फ्रास देश मे शान्त-सरल लोगो की मुर्गिया, मुर्गियो के बच्चे, सूअर तथा अन्य वस्तुए उठा ले जाते है और इनका कोई मूल्य नही देते, अन्यथा इससे भी अधिक अत्याचार हो सकता है क्योकि वे उनकी स्त्रियो तथा बहनो का ही सतीत्व हरण करने पर उतर आते है।

व्यापारी मेरी ! मै समझता हू कि यह तो विद्रोह की आग भडक उठने का कारण होना चाहिए, न कि लोगो को इससे दब जाना चाहिए, क्योकि इगलैड के लोग तो इस प्रकार के अपमान को कभी नही पचा सकते थे।

इगलैड का योमैन इस प्रकार की स्थिति को स्वीकार नही कर सकता था।

नवीन युग न केवल योमैन को प्रमुखता की स्थिति मे ही ला रहा था बल्कि छोटे भूस्वामियो (स्क्वायर्स) को भी प्रमुखता की स्थिति मे ला रहा था। ये लोग मूल्य-वृद्धि के युग मे अपने पारिवारिक आय-व्यय की कठिनाइयो के बावजूद समाप्त नही हुए और एलिजाबेथ के काल मे ग्राम्य-जीवन मे ये बडे महत्वपूर्ण हो गये। गावो के जमीदारो की सम्पत्ति और शक्ति दोनो ही काफी मात्रा मे बढ गयी थी, जिसका कारण अशत तो यह था कि उन्हे मठो की भूमिया सस्ते मे मिल गयी थी और अशत इस कारण से कि उनकी जागीरो की कृषिपरक अर्थ-व्यवस्था मे परिवर्तन आ गये थे। ये परिवर्तन वे एक ओर भूमि की माग बढ जाने के कारण से ला सके और दूसरी ओर मूल्य-वृद्धि के कारण लाने को बाध्य हुए। बहुत से अन्य लोगो के भूमियो के अतिरिक्त भी कुछ स्वार्थ थे, जैसे वस्त्र-व्यापार मे। इसके अतिरिक्त कि इनकी सम्पत्ति मे अत्यधिक वृद्धि हुई, इनसे उच्चतर वर्गो, जैसे सामन्तो, महन्तो और अन्य बडे मठाधिकारियो के समाप्त हो जाने से इनके सामाजिक महत्व मे भी अपेक्षाकृत वृद्धि हुई। जो भू-स्वामी जिलो पर राजा की ओर शान्ति-पालो के रूप मे शासन कर रहे थे उन्हे अब

अपने कार्यों मे "अत्यधिक महिमाशाली प्रजाओ" अथवा उनके सैनिको के हस्तक्षेप से डरने की आवश्यकता नही रही थी। पुराने सामन्त कुल, जिन्होने कि इगलैंड के राजाओ को विक्षुब्ध और त्रस्त कर रखा था, रोसेस के युद्धो मे राज्य द्वारा भूमिया जब्त हो जाने के कारण शक्ति और प्रभाव खो चुके थे, और ट्यूडर राजाओ की उनके वर्ग का निरन्तर दमन करने की नीति रही। पुराने ढग के अन्तिम बचे सामतो का प्रभाव स्कॉटलैंड की सीमा के पास बना रहा जहाकि यह प्रसिद्ध था कि "यहा कोई राजा नही है बल्कि केवल पर्सी है।" उन्हे भी एलिजाबेथ ने उत्तरी सामन्तो के १५७० विद्रोह के समय समाप्त कर दिया। इगलैंड के अन्य भागो मे ऐसे अर्ध-प्रभुत्व-सम्पन्न सामन्त बहुत पहले समाप्त हो चुके थे।

जिन कुलो को ट्यूडरो ने इनके स्थान पर ऊपर उठाया, जैसे रसल, केवेंडिश, सेमूर, बेकन, डुड्ले, सेसिल तथा हर्बर्ट वे इस कारण से महत्व मे नही आये कि वे बडे सामन्त थे बल्कि इसलिये कि ये राजा के उपयोगी सेवक थे। उनका सामाजिक भ्रातृत्व भूस्वामियो के उदीयमान वर्ग के साथ था, जिनमे से कि उनका उद्भव हुआ था और वास्तव मे अब भी जिनके वे एक भाग ही थे, चाहे अब वे राज्य के पीअर (लार्ड) भी बना दिये गये थे।

पुराने सामन्तो को राजनैतिक ही नही आर्थिक कारण भी कष्ट दे रहे थे। मुद्रा के अवमूल्यन से उन्हे भूस्वामियो से भी अधिक हानि हुई क्योकि वे अपनी सुदूर विस्तृत सम्पत्तियो की व्यक्तिगत रूप से सभाल कर सकने मे असमर्थ थे और वे अपनी भूमियो से असामियो को निकालने मे, पट्टो को समाप्त करने मे, जुर्माने लगाने मे तथा लगान बढाने मे छोटे भूस्वामियो की अपेक्षा मन्द थे। ट्यूडर काल मे, उसे समग्र रूप मे लेते हुए, छोटे भूस्वामियो ने उन्नति की जबकि सामन्तो का ह्रास हुआ।

इगलैंड के भूस्वामियो का एक विशिष्ट गुण, जिसने विदेशी यात्रियो को बहुत प्राचीन काल मे ही (अर्थात् हेनरी सप्तम् के युग मे) आश्चर्यान्वित किया था वह था उनका अपने छोटे पुत्रो को अपनी आजीविका खोजने के लिये अपने जागीरगृह से बाहर नगर मे या तो बडे व्यापारियो के पास अथवा शिल्पियो के पास शागिर्दी के लिये भेज देना। विदेशी लोग इस प्रथा का कारण इगलैंड के लोगो मे पारिवारिक स्नेह का अभाव समझते थे। सारी भूमि तथा अधिकाश धन बडे पुत्र को दे देने की प्रथा के कारण इगलैंड मे बडी सपत्तियो का निर्माण हुआ, जोकि क्रमश सचित होती हुई हेनरी-युग तक इगलैंड की ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण विशिष्टता बन गयी।

ट्यूडर-काल के जमींदारो के छोटे बेटो को भू-सपत्ति मे बेकार घूमने की आज्ञा नही दी जाती थी और इस प्रकार सपत्ति पर बोझ नही बनने दिया जाता था, जैसाकि यूरोप के अन्य देशो के सामन्तो मे था, जोकि कुलाभिमान के कारण कार्य नही कर सकते थे और इस प्रकार निरन्तर निर्धन होते चले जा रहे थे। इगलैंड के भूस्वामियो

के लडके व्यापार या कानून मे धनार्जन करते थे। वे प्राय ही अपने उन बडे भाइयो की अपेक्षा, जोकि अपने पिता की सपत्ति के उत्तराधिकारी होते थे, अधिक सम्पन्न तथा अधिक प्रभावशाली हो पाते थे। इन लोगो ने अपनी स्वय की भूमिया खरीदी और अपने घरानो की स्थापना की, क्योकि उनका लालन-पालन गावो मे ही हुआ था और इसलिये वे गावो को ही लौटना चाहते थे।

विदेशी लोग अग्रेज भूस्वामियो के ग्राम-जीवन से प्यार पर भी चकित थे। वे कहते थे कि, "प्रत्येक कुलीन अग्रेज गाव की ओर ही भागता है। बहुत कम ही नगरो या कस्बो मे रहते है, और बहुत कम ऐसे है जिन्हे इनके प्रति कोई आकर्षण है।"[१] लडन चाहे उस समय यूरोप का सबसे बडा नगर ही रहा हो, किन्तु इगलैड अपने व्यवहार तथा अनुभूति दोनो मे मूलत एक ग्रामीण समाज ही था, जबकि फ्रास तथा इटली मे उनकी नगर-सस्कृति को रोम की सस्कृति ने गभीर रूप से प्रभावित किया था। और यह आसपास के प्रदेश के जीवन को गभीर रूप से प्रभावित कर रही थी। इगलैड के भूस्वामी ब्राउनिग द्वारा वर्णित इटली के 'सस्कृत भूस्वामियो' के समान अपने ग्राम-निवास मे बाध्यतावश पडे व्यथित लोग नही थे—

"यदि वही मेरे पास पर्याप्त धन होता, इतना कि कुछ बचा कर भी रखा जा सकता, तब तो मै अपना घर किसी नगर के महत्वपूर्ण भाग मे बनाता।" इगलैड के भूस्वामी का स्थान, चाहे वह निर्धन था या धनी, अपने गाव की भू-सपत्ति मे ही था, और वह इस बात को जानता तथा इससे प्रसन्न था।

भूस्वामियो मे अपने छोटे लडको को शागिर्दी के लिये भेजने की प्रथा के कारण हमारा देश सामन्तो तथा विशेषाधिकार-रहित अन्य धनिको के बीच कठोर जाति-भेद की बुराई से बच गया, जिसने कि फ्रास के प्राचीन राजतन्त्र को १७८९ मे ध्वस्त कर दिया। फ्रास से भिन्न इगलैड के भूस्वामी अपने आपको 'नोबल' (कुलीन) नही कहते थे, सिवाय हाउस ऑफ लॉर्ड्स (राज्य सभा) मे बैठने वाले थोडे से लोगो के। भू-स्वामी परिवार, जिसका आतिथ्य अनेक विभिन्न वर्गो के पडोसियो और मित्रो को सहज उपलब्ध होता था, यह स्वीकार करने मे लज्जित अनुभव नही करता था कि उनका एक पुत्र व्यापार मे है, दूसरा न्यायालय मे वकील है, और तीसरा शायद पारिवारिक जीवन मे है। यह सभव है कि 'भूस्वामी' तथा 'पूजीपति' परस्पर स्पर्धियो के समान बात करते रहे हो, किन्तु वास्तव मे वे रक्त तथा स्वार्थों मे परस्पर सम्बद्ध थे। भूस्वामी वर्ग के लोग निरन्तर नगर-जीवन मे प्रवेश कर रहे थे जबकि नगर से धन तथा जन ग्राम-जीवन को समृद्ध बनाने के लिये निरन्तर उस ओर लौट रहे थे।

ट्यूडरो, स्टुअर्टो तथा हेनरियो के सम्पूर्ण राज्य-काल मे जो 'नवीन' लोग भूमिया

---

[१] **स्टार्केज इगलैड**, टेम्प एच ८, इ इ टी एस, पृ० ९३।

खरीद कर और भूसपत्ति-गृह-निर्माण कर गावो मे प्रवेश कर रहे थे उनमे बहुत बडा भाग उन वकीलो का था जो अपने व्यवसाय मे पर्याप्त सफल रहे थे। इगलैड के कुलीन वशो की स्थापना वकीलो ने वस्त्र-व्यापारियो से भी अधिक सख्या मे की। यह प्रक्रिया मध्य युगो मे आरम्भ हुई थी नार्फोक के पास्टनो की सपत्तिया हेनरी षष्ठ के जजो ने स्थापित की थी। और हेनरी अष्टम् तथा उसके उत्तराधिकारियो के अव्यवस्था, मुकदमेबाजी तथा लोलुपता से पूर्ण युग मे कानूनी पेशे के लोगो के लिये सम्पन्नता का पथ और अधिक प्रशस्त हो गया जबकि साहसिक स्वभाव के वकीलो को राज्य की सेवा करने के तथा उसका पूरा लाभ उठाने के अद्वितीय अवसर प्राप्त हो सके, विशेषत जबकि, जैसे बेकनो तथा सेसिलो के युग मे, कानून राजनीति तथा दरबारीपन से घुला मिला था। ट्यूडर युगीन सुन्दर घरो मे से बहुत से घर, छोटे और बडे दोनो, जोकि अब भी इगलैड के प्राकृतिक सौन्दर्य को अलकृत कर रहे है, कचहरियो मे कमाए धन से ही बनाये गये थे।

बडे भूस्वामियो, मध्यम श्रेणी के भूस्वामियो, वकीलो तथा व्यापारियो मे बहुत कुछ समानता थी। वे सब नये युग के लोग थे, और अतएव वे बीते हुए सामन्तयुगीन आदर्शो के पीछे नही भटकते थे। रुचि और विश्वास दोनो ही दृष्टियो से उनका झुकाव प्रोटेस्टेटवाद की ओर था। उन्होने एक प्रकार से गृह्य धर्म का विकास किया जोकि स्वरूपत एक 'मध्यवर्गीय' धर्म था और मध्ययुगीनता से बहुत भिन्न था।

प्रोटेस्टेट सिद्धान्त मध्ययुगीन 'धर्म' के ब्रह्मचर्य तथा ससार-त्याग के आदर्शा की प्रतिक्रिया मे गृहस्थ-जीवन तथा व्यापारिक जीवन को महत्व देता था। एड्वर्ड षष्ठ तथा एलिजाबेथ के काल मे पादरियो को विवाह करने के लिये दी गई स्वीकृति इस परिवर्तन का चिह्न थी। प्रोटेस्टेटो का आदर्श धार्मिक गृह था जिसमे चर्च के सत्सग-आदि के अतिरिक्त पारिवारिक प्रार्थना तथा व्यक्तिगत बाइबल-पाठ को प्रोत्साहन दिया गया था। ये विचार तथा कर्म-काड केवल विद्रोही शुद्धाचारवादियो तक ही सीमित नही थे ट्यूडर काल के अन्त मे तथा स्टूअर्ट काल मे ये इगलैड के चर्च के उन अनुगामी युगो के परिवारो के कार्य भी थे जोकि प्रार्थना-पुस्तक को प्यार करते थे और जो इसके लिये लडे भी थे। घर तथा बाइबल का धर्म इगलैड के सब प्रोटेस्टेटो की एक सामान्य सामाजिक परम्परा बन गया। इसका अधिकाश प्रचार सम्भवत बडे और छोटे भूस्वामियो तथा व्यापारियो मे था किन्तु यह निर्धनो की झोपडियो मे भी काफी मात्रा मे था।

नये प्रकार के आग्ल धर्म ने कार्य के आदर्शो की प्रतिष्ठा की तथा व्यापार और कृषि को ईश्वर को समर्पित किया। जैसाकि जार्ज हर्बर्ट ने सुचारु तथा उत्तम ढग से लिखा था

जो तेरा विधान मान कर कमरा साफ करता है

वह उसे तथा अपने कर्म दोनो को उत्कृष्ट बनाता है ।
दुकानदारो तथा किसानो के राष्ट्र के लिये यह एक बहुत उपयोगी धर्म था ।

इन विचारो का, जिनका प्रचार अनुगामी शताब्दी मे बहुत व्यापक रूप से हो गया था, बीजारोपण हेनरी षष्ठ तथा उसकी बडी बहिन के राज्यकाल मे हुआ जिस समय कि क्रान्मर बाइबल की सहगामिनी होने वाली प्रार्थना-पुस्तक का निर्माण कर रहा था तथा महारानी मेरी इगलैड के प्रोटेस्टेटवाद को बलिदान का इतिहास दे रही थी । हेनरी अष्टम् की पादर-विरोधी क्रान्ति, जिसमे कि चर्च की सम्पत्तियो का निरन्तर अपहरण हुआ, किसी नैतिक औचित्य से रहित थी, किन्तु फॉक्स की पुस्तक मे वर्णित बलिदानकारियो ने अव्यवस्था मे से उठते हुए नवीन जातीय धर्म को यह आधार प्रदान किया था । जब एलिजाबेथ ने राज्यारोहण किया तब नवीन सामाजिक व्यवस्था को बौद्धिकता तथा आध्यात्मिक आधार बाइबल और प्रार्थना-पुस्तक से प्राप्त हुआ ।

किसी देश की सस्थाएँ उसकी सैनिक व्यवस्था मे भी प्रतिबिम्बित होती है । शतवर्षीय युद्ध-काल मे इगलैड मे दो सैनिक व्यवस्थाए थी । भीतरी विद्रोह तथा स्काटलैड के आक्रमण के प्रतिरोध के लिये स्थानीय सैन्य-दल होते थे जो कि अनिवार्य भर्ती के द्वारा सगठित किये जाते थे । फ्रास के कठिनतर युद्ध के लिये, जिसके लिये अधिक व्यावसायिक सैनिको की आवश्यकता थी, सामन्तो तथा भूस्वामियो द्वारा सगठित युद्ध-दल थे जिन्हे वही वेतन देते थे । राजा इनके वेतन-दाताओ से इकरार-नामे पर आवश्यकतानुसार सैनिक लेता था और पैसा देता था । यह द्वैध व्यवस्था हेनरी सप्तम् तथा अष्टम् के काल तक जारी रही, सिवाय इस अन्तर के कि पुराने सामन्त वर्ग की भूसपत्ति तथा सैनिक शक्ति के रोसेज के युद्धो मे जब्त कर लिये जाने के बाद इस इकरारनामे का वास्तव मूल्य समाप्त हो गया था । वास्तव मे स्वतन्त्र व्यक्तियो से विदेशी युद्धो के लिये सेना लेने के सम्बन्ध मे सधि करने की नीति ट्यूडरो की शक्तिशाली व्यक्तियो की सेनाए तथा अन्य शक्ति-स्रोत समाप्त करने की नीति के उलट थी । किन्तु क्योकि राजा लोग अपनी स्वय की एक स्थायी सेना रखने की स्थिति मे नही थे इसलिये विदेशी युद्धो के लिये तत्काल अनिवार्य भर्ती से बनाई गयी सेनाए अनुशासन-रहित, विद्रोही और प्राय ही अनुपयोगी होती थी, जैसाकि ट्यूडर काल के यूरोप के युद्धो ने पीछे अनेक बार प्रमाणित किया था । स्थायी तथा वफादार सैन्यदल, जोकि क्रेसी तथा एगिकोर्ट के युद्धो मे महान् सामन्त-सेनापतियो के नेतृत्व मे लडे थे, अब नही बचे थे, और अभी तक कोई राजकीय सेना थी नही ।

इगलैड की धनुर्-सेना अभी तक इतनी अच्छी थी कि अब तक आग्नेयास्त्र उसे विस्थापित नही कर सके । फ्लोड्डन को धनुर्-सेना ने ही विजित किया था । पदाति सेना के लिये धनुष और एक प्रकार के गडासे, तथा अश्व-सेना के लिये भाले, यह अब

भी एकमात्र प्रचलन था। तोप सेना, जिस पर कि राजा का अपने शासित प्रदेश मे एकमात्र अधिकार था, अब एक महत्वपूर्ण सैन्य थी जोकि केवल घेरा डालने के लिये ही प्रयुक्त नही होती थी बल्कि विद्रोहियो और स्कॉटलैडवासियो के विरुद्ध भी प्रयुक्त होती थी, उदाहरणत लूसकोट फील्ड तथा पिकी क्ल्यूफ मे। इन परिस्थितियो मे प्रजातात्रिक अनिवार्य भर्ती से सगठित सैन्य राजा को आन्तरिक दृष्टि से सुरक्षित बनाने के लिये पर्याप्त थी, जब तक कि उसकी नीति बहुत अधिक लोक-अप्रिय हुई। किन्तु वह यूरोप मे विजयो के लिए अपर्याप्त थी।

जबकि राजकीय स्थल-सेना अस्तित्व मे नही थी, राजकीय नौ-सेना निरन्तर सशक्त हो रही थी। अब युद्ध के दिनो मे अनिवार्य भर्ती के व्यापारिक जहाजो से कार्य नही चल सकता था। हेनरी अष्टम् को 'इगलैड की नौ-सेना का पिता' कहा जाता है, यद्यपि सम्भवत हेनरी सप्तम् भी इस श्रेय के लिये दावा करे। नौ-सेना को अब पृथक् सरकारी विभाग के अधीन कर दिया गया था और राजकीय वेतन पर इसे एक स्थायी सेना बना दिया गया था। हेनरी अष्टम् ने इस योजना पर बडी मात्रा मे राजकीय तथा मठीय धनराशि व्यय की। उसने न केवल राजकीय जहाजो का निर्माण किया बल्कि वूलविच मे जहाजो के ठहरने के लिये स्थान बनवाए, जहाँकि थेम्स के सागर-सगम के कारण बनी खाडी होने से अकस्मात् आक्रमण कठिन था। उसने पोटर्स मौथ को नौ-सेना के अड्डे के रूप मे विकसित किया और फाल्मौथ रोड्स के समान बहुत सी बन्दरगाहो को सुरक्षित बनाया।

केवल युद्ध के लिये एक स्थायी नौ-सेना का निर्माण विशेष रूप से महत्वपूर्ण कार्य था, क्योकि अब २००० वर्ष बाद नौ-युद्ध कौशल एक नवीन युग मे प्रवेश कर रहा था। जहाज पर तोप रखना आरम्भ हो जाने के कारण अब नौ-युद्ध का स्वरूप मूलत ही बदल गया क्योकि अब केवल जहाजो की परस्पर मुठभेड का स्थान तोप-सेनाओ की पेतरबाजी ने ले लिया, जिन्होने कि अपना प्रथम शक्ति-परिचय १५८८ के स्पेन के नौ-सेना आक्रमण के विरुद्ध दिया। इस नवीन कौशल मे योग्यता प्राप्त कर लेने के कारण इगलैड निकट भविष्य मे सागर-शक्ति तथा साम्राज्य प्राप्त करने वाला था, और हेनरी अष्टम् की नौ-नीति ने सर्व-प्रथम इसे इस विजय के पथ पर अग्रसर किया।

बहुत आर्थिक कठिनाइयो के बावजूद ट्यूडर काल के आरम्भ से मध्य युगो तक जीवन-स्तर धीरे-धीरे ऊपर उठ रहा था। एलिजाबेथ के राज्य मे अधिक स्पष्ट प्रगति की एक व्यापक चेतना का प्रसार लोगो मे हो गया था। पार्सन विलियम हैरिसन ने १५७७ मे घर के सामान्य रहन-सहन का स्तर ऊँचा होने की सूचना दी है, जोकि उसके पिता के काल से ही हो चुका था, और यह "केवल सामन्तो और जमीदारो मे ही नही हुआ था बल्कि हमारे दक्षिण के ग्राम-प्रदेश के निम्नतम स्तर के लोगो मे भी हुआ था।" उसने लिखा

"हमारे पिताओ, तुम और स्वय हम भी प्राय सदा से फूस की छतो के नीचे फूस के बिस्तर पर सोते रहे है, और केवल ओढने के लिये एक चादर हमारे पास होती थी और सिर के नीचे सिरहाने के स्थान पर मोटी-गोल लकडी होती थी। यदि कभी घर के किसी बडे आदमी के पास नीचे बिछाने के लिये टाट होता या बुरादे से भरा सिरहाना होता तो वह अपने आपको अच्छे भू-स्वामी के बराबर समझता था। सिरहाने तो केवल छोटी लडकियो के लिये ही होते थे। जहाँ तक नौकर का प्रश्न है, यदि उनके ऊपर कोई चादर होती तो यही गनीमत समझा जाता, क्योकि धारण करने के लिये तो प्राय ही किसी के पास वस्त्र नही होता था जो उन्हे फूस की चुभन से बचा सकता, जो कि उनकी फूस की झोपडियो मे बिखर जाती थी और उनके सूखे शरीर मे चुभती थी।"

फूस ही फर्श पर होता था और फूस ही बिस्तर पर, जहाँ खटमल आदि को पलने और पनपने का उत्कृष्ट अवसर मिलता था। कुछ खटमल प्लेग के कीटाणुओ के वाहक भी होते थे।

हैरिसन ने यह भी उल्लेख किया है कि "झोपडियो मे भी चिमनियो की काफी बहुतायत हो गयी है जबकि उस गाव मे, जहाँ मै रहता हू, बूढे लोग याद किया करते थे कि 'उनकी जवानी के दिनो मे' दोनो हेनरी राजाओ के काल मे गाव मे दो या तीन से अधिक चिमनियाँ कभी नही होती थी। यदि इतनी भी कभी होती थी तो धार्मिक मन्दिर तथा भूस्वामियो के घरो मे तो चिमनी बिल्कुल ही नही होती थी। सभी लोग आग हाल कमरे मे बनी अगीठी मे जलाते थे जहाँकि वे खाना खाते थे। अगीठी मे लकडी के स्थान पर कोयले का प्रयोग बढ जाने के कारण चिमनी न लगाना और अधिक कठिन हो गया था, और ईंटे सुलभ हो जाने से चिमनियाँ बनाना आसान भी हो गया था, चाहे दीवारे किसी और चीज की भी बनी होती।"

सामान्य घर और झोपडिया अब भी लकडी के ही बने होते थे, अथवा आधी लकडी के बने होते थे, जिनमे लकडी के पट्टो और शतीरो के बीच गारा भर दिया जाता था। अच्छे घर, विशेषत पथरीले भागो मे, पत्थर ही के थे। किन्तु ईंट अब धीरे-धीरे पहुँच रही थी यह सर्वप्रथम उन प्रदेशो मे पहुँच रही थी जहाँ पत्थर स्थानीय रूप से उपलब्ध नही था और वन कट जाने के कारण इमारती लकडी की कमी थी—यह अवस्था मुख्यत पूर्वीय जिलो मे थी।

हैरिसन अपने स्वय के जीवन-काल मे भी परिवर्तन का उल्लेख करता है "लकडी की थालियो के बजाय जिस्त की प्लेटे तथा लकडी के चमचो के स्थान पर चाँदी या टीन के चमचे।"

छुरी काटो का युग अभी नही आया था, जहा चाकू और चम्मच से काम नही चलता था वहा महारानी एलिजाबेथ को भी मुर्गे की हड्डी हाथ मे जोर से पकड कर

चबानी पडती थी। उसके राज्यारोहण तक "एक किसान के घर मे जिस्त के चार बर्तन मिलना भी कठिन कार्य था। चीनी के बर्तनो का तो तब तक कोई प्रश्न ही नही था।

ट्यूडरो के आरम्भिक काल मे घर के सामान आदि की इतनी पिछडी हालत थी। पिछले सम्पूर्ण युगो मे वे ऐसी ही, या इससे भी बुरी अवस्था मे, रह रहे थे। किन्तु अब वस्तुस्थिति मे एक स्पष्ट उन्नति दिखाई दे रही थी, जैसाकि एलिजाबेथ काल के एक पादरी के विवरण से स्पष्ट है। हमे अतीत को, विशेषत सुदूर अतीत को चित्रित करते हुए उन सुख-सुविधाओ के अभाव का उल्लेख करना कभी नही भूलना चाहिए जिन्हे हम आज स्वाभाविक समझते है। किन्तु ये सुविधाए परिवर्तन की मद प्रक्रिया द्वारा सर्व-साधारण बन जाती है, जिसमे से कुछ को, जैसे नवीन कृषि-व्यवस्था को, हम अनुचित समझते है—इस दृष्टि से कि ये कुछ दृष्टियो से निर्धनो के प्रति अन्यायपूर्ण थी।

यह कहा जा सकता है कि, हेनरी अष्टम् के राज्य मे गोथिक वास्तुकला क्राइस्ट चर्च, आक्सफर्ड के वोल्मे हाल के निर्माण मे तथा केम्ब्रिज के किग्स कालेज के चैपल की गुम्बदाकार छत के निर्माण मे अपनी भव्यता के शिखर पर पहुँच कर ह्रास की ओर उन्मुख हो गयी थी। तब नये युग का प्रादुर्भाव हुआ। इटली के कलाकारो ने हैम्टन कोर्ट के नवीन वर्गाकार हाल को रोम के सम्राटो की टैराकोटा शैली मे बनी आवक्ष प्रतिमाओ (बस्ट्स) से अलकृत कर दिया।

ट्यूडर काल चर्च-निर्माण का काल नही था बल्कि भिक्षु-विहारो के चर्चो के पत्थर और काच 'बडे भूस्वामियो के आसन-मचो' के लिये अथवा मध्ययुगीय भूस्वामियो के नव युगीन फर्मो के लिये उपयोग मे ले लिये गये थे। जमीदार-प्रासादो मे, जोकि अब सभी जगह या तो नये बनाये जा रहे थे अथवा बडे किये जा रहे थे, बडे-बडे कमरे, प्रकाश के उत्कृष्ट प्रबन्ध से युक्त गलियारे, तथा छोटे गवाक्षो के स्थान पर जालीदार बडी खिडकियाँ ट्यूडर के युग की शान्ति तथा समृद्धि की घोषणा कर रहे थे। अधिकाश बृहत् जमीदार-प्रासादो का रूप अब इस प्रकार से था—एक घिरा हुआ आगन, जिसमे जाने का रास्ता प्राय ईंट के बने अत्यन्त बृहदाकार स्तूप मे से होता था। एक सन्तति के बाद, एलिजाबेथ के राज्यकाल मे, जबकि घरो की सुरक्षा का प्रबन्ध करने की आवश्यकता लोगो के मन से और भी अधिक अच्छी तरह से मिट गयी थी, केवल तीन ओर घिरा हुआ खुला आगन बनाने अथवा ईंट के आकार का बनाने का प्रचलन अधिक हो गया था।

कुछ थोडा भी इस स्तर का दावा करने वाले जमीदार-प्रासाद मे हिरणो का एक वन होता था जिसमे स्थान-स्थान पर सुन्दर वृक्ष लगे होते थे और जो सभी ओर से लकडी के आलवाल से धिरा रहता था। कुछ मे दो वन होते थे, एक भूरे रग के

हिरणो के लिए और दूसरा लाल रग के हिरणो के लिये, और परिणामत कृषि-योग्य भूमि कम रह जाती थी, अथवा, कुछ अवस्थाओ मे, साझी भूमि मे अपहरण की स्थिति भी आ जाती थी। शिकार की सुबहो को घटिया बधे हुए कुत्ते आलवाल के चौगिर्द चक्कर लगाते हिरणो का पीछा करते थे जबकि महल के भूस्वामी और स्त्रियाँ तथा उनके अतिथि घोडो की पीठ पर उनका आराम से पीछा करते थे—और वृद्धा माता घर पर ठहरती तथा प्लेटो की पुस्तक पढती थी। लाल हिरणो के बडे-बडे झुण्ड पेन्नाइन, केविग्रट तथा उत्तरी झाडीदार प्रदेशो मे मिलते थे। दक्षिण मे भूरे हिरण जगलो मे खुले घूमते थे और फसले खराब कर जाते थे। आलवाल का एक लाभ यह भी था कि रात के समय इनके आक्रमण से खेतो की रक्षा हो सकती थी।

सामान्यत लोमडी का शिकार नही किया जाता था अधिकाशत किसान लोग लाल चोर को जितना चाहे मारने के लिये स्वतन्त्र थे।[1] जमीदार लोग हिरणो का शिकार करते थे और सभी लोग, घोडे पर या पैदल, खरगोशो का शिकार करते थे। घुडसवार और शिकारी कुत्ते तीव्रगामी युवा हिरणो का दूर दूर तक पीछा करते थे। दूसरे के क्षेत्र मे हिरण का शिकार करना उस समय के जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष था, आक्सफर्ड के विद्यार्थी रैड्ले के पार्क मे खुले आम शिकार करते थे जबतक कि स्वामी सब आशाए छोडकर अपने आलवालो को गिराने को बाध्य नही हो जाता था। जहातक पक्षियो के शिकार का प्रश्न है, यद्यपि बाज और तीतर आदि अब भी इसके मुख्य साधन थे, किन्तु कभी कभी छर्रों की बन्दूक का प्रयोग भी किया जाता था।[2] पशु-पक्षियो के विविध ढग से शिकार न केवल उपभोग के लिये किये जाते थे बल्कि केवल मनोरजन के लिये भी किये जाते थे।

इगलैंड के लोग अनेक प्रकार के, और बडी सख्याओ मे, घोडे तथा कुत्ते रखने के लिये यूरोप भर मे बदनाम थे। किन्तु घोडा तबतक अभी एक भारी पशु था। पूर्वी जाति का पतला, तेज दौडने वाला और शिकार के लिये उपयोगी घोडा अभी इगलैंड मे नही आया था, और जमीदार का घोडा सशस्त्र सैनिक के वाहक के रूप मे ही उपयोगी था। यह शिकारी को लेकर पूरी तेजी से दौडने काम नही आता था। खेती के काम मे अब घोडे के साथ बैल का उपयोग भी होने लगा था।

अब भी यह क्रीडा-प्रतियोगिताओ का युग था, जिसमे समृद्ध लोग सहानुभूतिपूर्ण स्त्रियो तथा आलोचनापूर्ण जनता के सम्मुख खेलते थे। जैसाकि हेनरी अष्टम् के दरबारी

---

[1] हेरिसन के अनुसार एलिजाबेथ के युग मे कुछ प्रदेशो मे तो लोमडिया और बिज्जू शिकार करने तथा समय गुजारने के लिये सुरक्षित रखे जाते थे, अन्यथा वे समाप्त ही हो जाते। पुस्तक ३, अ० ४)।

[2] मैरि वाइव्ज, IV २, पृ० ५८।

कवि सर्री ने वर्णन किया है,

वे कँकरीली पृथिवी पर, फेन उगलते अश्वो पर आरोही
लिये लगाम करो मे, अरु सग लिये असि और हृदय अनुरागी ।

उसने दरबार मे खेली जाने वाली एक अन्य क्रीडा का भी अपनी कविता मे इस प्रकार से वर्णन किया है

लघु नृत्य, कथाए लबी उल्लासो की,
कटु शब्द, दृष्टि कटु ऐसी जिस पर चीता भी शरमाये,
करते जब थे स्वत्वो की हम चर्चा ।
कोर्टयार्ड टेनिस क्रीडा होती जब,
प्रेम भरी आखो से रमणी तकते, कि मिले एक चितवन—
हमको भी उसकी, जो स्फूर्तिदायिनी, जय से भूषित करती ।

दरबार की इस उल्लासपूर्णता का श्रेय क्रीडा-कुशल हेनरी को था जो कि अपने राज्य का सर्वोत्तम धन्वा था, और जो अभी उस समय तक उग्र अत्याचारी के रूप मे नही आया था, बल्कि जो स्वय फैशन मे अग्रणी और प्रसाधन मे कुशल था । शासन की देख-रेख का दायित्व तबतक अभी अपने विश्वासपात्र वूल्से पर छोडकर वह अपने विवेकी पिता द्वारा प्रजा की आवश्यकताओ के लिये सुरक्षित कोष को आमोद-प्रमोद और राग-रग पर व्यय कर रहा था । टच स्टोन के शब्दो मे, उस समय दरबार मे न रहे होने का अर्थ था, अवसीदित होना । दरबार मे इगलैड के ये उच्चवर्गीय लोग न केवल प्रेम तथा राजनीति की चाले ही सीखते थे, बल्कि सगीत तथा कविता और साहित्य तथा कला का भी ज्ञान प्राप्त करते थे और इनके बीज वे वापिस गावो मे लौट कर रोपित करते थे । पुनरुत्थान युग के इटली के दरबारो की सस्कृति, कला तथा विद्वत्ता का रोसेज के युद्धो तथा एलिजाबेथ के समय से इगलैड के दरबारियो और सामन्तो पर बडा गभीर प्रभाव था । विद्वान पादरी तथा असस्कृत योद्धा सामन्त (बैरोन) का मध्ययुगीन भेद अब क्रमश समाप्त हो रहा था और सर्वगुण-सम्पन्न 'भद्रजन' (जेटलमैन=जमीदार=शिष्टजन) का आदर्श उसका स्थान ले रहा था । पीछे सर फिलिप सिडनी मे निष्पन्न "दरबारी की, सैनिक की, विद्वान की दृष्टि तथा तलवार और गिरा" का एलिजाबेथ कालीन आदर्श दो सन्तति पूर्व (१५०३-१५४२) सर थोमस व्याट् मे पूर्वाभासित हो चुका था । यह व्यक्ति निर्दय तथा अविश्वासी दरबार मे एक सदस्य तथा विश्वासी जनसेवक था । वह अपनी भू-सपत्ति के एकान्त-निवास मे समान रूप से प्रसन्न था

यह मुझे शिकार की सुविधा और सुख देता है
और दुर्दिन मे अध्ययन का अवसर देता है,
कुहरे और हिम मे मै अपने तीर और धनुष के साथ
घोडे पर चढकर किधर जाता हू, यह कोई नही जान पाता ।

यहा मैकैट और क्रिस्टेडम मे बहुत कुछ व्याट् ही जैसे "सस्कृत ग्रामीण भद्र भू-स्वामी जन" पहले से ही विद्यमान थे।

दरबार मे, होल्बीन और उसका कला-भवन हेनरी तथा उसके प्रमुख दरबारियो के चित्र बना रहा था। वहा से गावो के सामन्तो और भूस्वामियो मे भी यह प्रथा पहुची और परिणामत दीवारो को अलकृत करने वाली महीन पच्चीकारी के साथ परिवार के चित्रो ने भी स्थान ग्रहण किया। इनमे से कुछ दरबारी चित्रकारो द्वारा बनाये सुन्दर चित्र भी थे, किन्तु अधिकाशत स्थानीय कलाकारो की कृतिया थी—श्वेत मुखाकृतियो वाले योद्धा और महिलाए चित्रित पटो पर से भावी सततियो की ओर ताकते हुए। यह एक ऐसे फैशन का श्रीगणेश था जो आगे चलकर गेस बोरोफ तथा रेनोल्ड्स मे परिपन्न हुआ।

चैपल रॉयल का सगीत सभवत यूरोप मे सर्वोत्कृष्ट था। और उस दरबार मे नीचे से राजा तक यह एक प्रथा ही हो गयी थी कि वे धुन और उसमे गायी जाने वाली कविता की रचना करते थे। ट्यूडर-काल इगलैंड मे सगीत तथा गीतिकाव्य का एक महान युग था, और इसकी प्रेरणा का उत्स अशत युवक हेनरी अष्टम् के दरबार को भी कहा जा सकता है। किन्तु सारा देश गीत गाते हुए, धुनो की रचना करते हुए तथा काव्य लिखते हुए स्त्री-पुरुषो से भरा था। यह पुनरुत्थान की स्वच्छन्द और उल्लासपूर्ण भावना थी जो इस रूप मे इगलैंड मे प्रकट हुई थी। किन्तु अभी यह भावना असस्कारित थी जोकि हरित-वनो मे पक्षियो के गीतो के साथ मिलकर शेक्सपीयर के पूर्ण विकसित सगीत के युग की ओर बढ रही थी।

जब ट्यूडर-युग आरम्भ हुआ तब पूर्व अभी तक वेनिस के अधिकार मे ही था। इडीज की कीमती वस्तुए, जोकि अभी तक ऊटो की पीठो पर लद कर आती थी, लेवेट मे पहुच रही थी। वहा से वेनिस के जहाज इगलैंड को मिर्चे ले जाते थे और वहा से एड्रियाटिक के लिये ऊन लाते थे। इसलिये वेनिस का व्यापारी हमारे द्वीप मे काफी परिचित व्यक्ति था। १४९७ मे इनमे से ही एक व्यापारी ने अपने देश के एक व्यक्ति जोन कैबोट द्वारा न्यूफौडलैंड (नवोपलब्ध प्रदेश) की खोज की सूचना दी थी, जोकि कोलम्बस की महानतर खोज के ५ वर्ष पीछे हुई थी

"वेनिसवासी, हमारे देश का एक आदमी, जोकि ब्रिसल से अपने जहाज (पोत) के साथ नये द्वीपो की खोज मे निकला था, लौट आया है, और वह कह रहा है कि यहा से ७०० लीग दूर उसे एक प्रदेश मिला है। वह तीन सौ लीग दूर किनारे-किनारे गया और तब भूमि पर उतरा, उसे कोई मनुष्य दिखाई नही दिया किन्तु कुछ गिरे हुए पेड मिले जिनसे उसने अनुमान किया कि यहा कोई रहता भी होगा। अब वह अपनी पत्नी के साथ ब्रिसल मे रहता है। उसे बहुत सम्मान दिया गया है, वह सिल्क पहनता है और अग्रेज लोग उसके पीछे पागलो की तरह दौडते हैं, इन स्थलो के इस नवोपलब्ध प्रदेश मे एक बडा क्रॉस इगलैंड तथा सन्त मार्क की ध्वजाओ सहित गाड दिया है, और इस प्रकार से हमारा ध्वज दूर-दूर प्रदेशो मे लहरा रहा है।"

किन्तु भविष्य के लिये यह एक बडी महत्वपूर्ण बात थी कि सन्त मार्क का ध्वज एक वेनीस के पोत मे 'सुदूर प्रदेशो' मे लहराया था।

इस अन्वेषण के बाद, जिसमे कि वेनिस के महत्व की समाप्ति तथा इगलैंड के महत्व की वृद्धि के बीज गर्भित थे, दो पीढियो तक इसका कुछ विशेष परिणाम नही हुआ, इस बात के सिवाय कि इगलैंड, फ्रास तथा पुर्तगाल के मछुए इस नवोपलब्ध प्रदेश के किनारो के साथ कॉड मछली का शिकार करते थे।[1] ट्यूडर युग के आरभिक तथा मध्यकालो मे, पहले के समान ही, हमारा व्यापार यूरोप के सागर-तीरो के साथ साथ बालिटक से स्पेन होते हुए पुर्तगाल तक होता था, सर्वाधिक व्यापार नीदरलैड के साथ, और उसमे भी मुख्यत एटवर्प के साथ, जोकि इस समय यूरोपीय व्यापार तथा वित्त का केन्द्र था, होता था। साहसिक व्यापारियो द्वारा वस्त्र का निर्यात-व्यापार कच्ची ऊन के निर्यात-व्यापार से अब पन्द्रहवी शताब्दी की अपेक्षा तीव्रता से बढने लगा तथा लडन के विदेशी व्यापार की मात्रा निरन्तर बढती रही। हेनरी सप्तम् तथा अष्टम् के राज्यो मे इगलैड के पोत भूमध्य सागर मे क्रेटे के सूदूरवर्ती प्रदेशो तक व्यापार करते थे। १४८६ मे पिसा मे इगलैड को व्यापार-दूतावास स्थापित किया गया था जहा पर कि इगलैड के व्यापारी वेनिस के एकाधिकार के विरुद्ध फ्लोरेस की स्पर्धा का लाभ उठा रहे थे। किन्तु इटली मे हमारी व्यापारिक वस्तुए मुख्यत इटली के पोतो मे ही पहुच रही थी।

इस बीच पुर्तगाली लोग केप ऑफ गुडहोप के चक्कर लगा रहे थे और पूर्वी व्यापार के लिये रास्ते बना रहे थे, जोकि वेनीस के लिये घातक बात थी। धीरे धीरे अग्रेजो ने अफ्रीका के पश्चिमी किनारे के साथ-साथ पुर्तगाल के एकाधिकार के दावे की उपेक्षा करते हुए, उनका अनुसरण किया। विलियम हॉकिस ने, जो नाविको की एक महत् परपरा का पिता था, १५२८ मे ही गायना के नीग्रो लोगो से हाथी दात के लिये मैत्री पूर्ण व्यापार आरभ कर दिया था। यह उसका पिता जोन था जिसने कि एलिजाबेथ के राज्यकाल मे स्वय नीग्रो लोगो को ही एक निर्यात सामग्री बना लिया और इससे स्थानीय निवासियो के साथ व्यापार की सभावनाए समाप्त कर दी, क्योकि

---

[1] सागर मे गहरे मे जाकर मछली का शिकार करने का प्रचलन ट्यूडर युग के आरभिक काल मे बढ गया था और परिणामत देश के मछुओ की सख्या मे भारी वृद्धि हो गयी। हैरिंग मछलिया अभी हाल ही मे बाल्टिक से उत्तर सागर मे आई थी, और परिणामत हमारा हैरिंग मछली का शिकार महत्वपूर्ण हो गया। कैम्डन ने लिखा है कि ये "हैरिंग मछलिया, जो कि हमारे पितामहो के काल मे केवल नार्वे के आसपास ही एकत्र रहती थी, अब ईश्वर की कृपा से प्रतिवर्ष हमारे अपने किनारो पर बडे झुडो मे आ जाती है।"

उन्होने श्वेत लोगो को अपना घातक शत्रु मानना आरभ कर दिया । एड्वर्ड षष्ठ तथा मेरी के राज्यकालो मे पश्चिमी अफ्रीका के साथ व्यापार अभी उचित रूप से विकसित किया जा रहा था और इसके साथ ही आर्केजल नामक केनारी द्वीप-समूह की यात्राए भी की जा रही थी, यहा तक कि वे मास्को तक जा पहुँचते थे । किन्तु नवोपलब्ध भूमि के आसपास कॉड मछली का शिकार करने के अतिरिक्त इगलैंड के लोगो ने एटलाटिक के पार कभी कुछ नही किया था ।

यद्यपि वस्त्र-व्यापार अभी तक पुराने ही रास्तो से और पुराने ही यूरोपीय बाजारो मे हो रहा था किन्तु यह निरन्तर बढ रहा था, जिसके लिये वस्त्र इगलैंड के नगरो से, और उससे भी अधिक गावो से आ रहा था । पन्द्रहवी शताब्दी के परिवर्तन-रहित युग के बाद वस्त्र-व्यापार पुन बडी तीव्रता से बढने लगा । 'चारागाहो के लिये आलवाल' इसका एक परिणाम था । ऐसे आलवालो के विरुद्ध विशेष चर्चा आरम्भ होने के पहले भी विदेशी लोग इगलैंड मे भेडो की इतनी अधिक सख्या से विस्मत थे ।

ऊन से कपडा तैयार करने की प्रक्रिया के बहुत से चरण है जोकि सभी के सभी एक ही लोगो द्वारा अथवा एक ही स्थान पर सम्पादित नही किये जा सकते । पू जी-पति व्यापारी कच्चा माल देता, उससे आधा तैयार माल अन्यत्र देता और वहाँ से पूरा तैयार माल कही और देता और इस प्रकार से इस प्रक्रिया मे अनेक प्रकार के श्रमिको को नियुक्त करता और अनेक प्रकार के स्वामियो से माल खरीदता था ।

बुनाई का अधिकाश कार्य अपने-अपने घर ही पर करने की प्रथा थी, करघा, जिसका स्वामी स्वय बुनने वाला होता था, छत के कमरे अथवा रसोई मे रखा जाता था । किन्तु पश्चिमी जलप्रपातो पर लगी कपडे की मशीनें सभवत फैक्टरियो के अधिक अनुरूप होगी, और कुछ बुनाई पहले से ही फैक्टरी व्यवस्था के अनुसार हो रही होगी । वस्त्र-उत्पादक जोन् विश्कोब इतना धनी तथा इतना शाही ठाठ से रहने वाला था कि १५२० मे उसकी मृत्यु के पश्चात् वह "जैक आफ न्यूबरी" के रूप मे आल्हा का एक महत्वपूर्ण नायक बन गया । उसकी कीर्ति स्वय डिक व्हिटिग्टन की कीर्ति से स्पर्धा करती थी । उसके बारे मे यह दन्तकथा थी कि वह अपने सैकडो शिक्षार्थियो को फ्लोड्डनफील्ड मे ले गया और राजा हैरीं को उसने अपने घर पर भोज दिया । एलिजाबेथ काल का एक आल्हा उसकी फैक्टरी का वर्णन निम्न प्रकार से करता है

एक कमरे मे, जोकि अति विशाल,
खडे रहे थे दो सौ, बृहदाकार करघे,
दो सौ व्यक्ति करते कार्य, सत्य यह निस्सदेह ।

बैठता प्रत्येक सग एक सुन्दर लडका
सीता रजाई-पाट मन मे सानन्द ।
अन्यत्र एक स्थान मे, निकट ही पर्याप्त,
एक सौ कामिनियाँ हर्षित और सोल्लास
कातती थी सूत, गाती एक स्वर,
एक लय, एक ताल, मधुर रूप ।

सम्भवत प्रसन्नभाव तथा बडी सख्या का वर्णन कवि ने अपने अतीत-प्रेम के कारण अतिशयोक्ति पूर्ण किया है (इ पावर, मैडीवल पीपल, पृ० १५८) न्यूबरी के जैक ने निश्चय ही एक प्रमुख घराने को जन्म दिया था। उसके पुत्र ने ग्रेस की तीर्थ-यात्रा के विरुद्ध राजा का समर्थन किया था, मठ की भूमि हथिया ली थी और ससद् मे बैठा था।

आन्तरिक व्यापार की मात्रा बाहरी व्यापार की अपेक्षा कही अधिक थी। इगलैड अब भी बाहर से केवल धनियो के विलास की वस्तुओ का आयात ही करता था। यहा के सामान्य लोग खाने, पहनने आदि मे केवल देशी वस्तुओ का ही उपयोग करते थे।

सचार के लिये, विशेषत बहुत भारी वस्तुओ के सचार के लिये, नदियाँ बहुत महत्वपूर्ण साधन थी। यॉर्क, ग्लौसेस्टर, नॉर्विच, आक्सफर्ड, केम्ब्रिज जैसे भीतरी भागो मे नगर भी, एक सीमा तक, नदियो पर बनी बन्दरगाहे थे।

किन्तु सडके आज के समान ही उस समय भी सब प्रकार के स्थानीय सचार और वितरण के लिये प्रयुक्त होती थी। सडके यद्यपि हमारे आज के स्तर से बहुत ही बुरी हालत मे थी, किन्तु तब भी कामचलाऊ थी। सूखे मौसम मे ये गाडियो के लिये उपयोग मे लायी जाती थी और लद्दू घोडे सभी मौसमो मे इन पर चलते थे। जहा तक सम्भव होता, व्यापारिक यातायात के लिये काम मे आने वाली सडके चाक या अन्य किसी सख्त पत्थर की बनाई जाती थी, जिससे कि इगलैड का अधिकाश भाग बना है। जहा कही उन्हे दलदली या चिकनी मिट्टी वाले प्रदेशो मे से लाघना पडता था वहा पुल आदि का सहारा लिया जाता था। सडको के लिये कोई उपयुक्त विभाग नही होने के कारण कुछ पुल आदि उन व्यापारियो द्वारा बनाए गये थे जिनकी उन्हे आवश्यकता थी। लेलैड ने वैडोवर तथा ऐलस्बरी के बीच एक सेतु-पथ का उल्लेख किया है "अन्यथा वर्षाकाल मे इन रास्तो को पार करना बडा कठिन होता।"

सूदूर प्रदेशो मे भी भारी वस्तुग्रो के व्यापार के लिये स्थल पर जल की प्रमुखता पूर्ण नही थी। उदाहरण के लिये, साउथेप्टन लण्डन की पोषक बन्दरगाह के रूप मे फल-फूल रही थी। कुछ प्रकार की वस्तुए नियमित रूप से साउथेप्टन पर पोतो से उतारी जाती थी और राजधानी को सडक द्वारा पहुँचाई जाती थी, नही तो पोतो को कैंट का चक्कर काट कर आना पडता था।

आगे अध्ययन के लिये पुस्तकें :

Darby's Historical Geography of England (1936), Chap IX, Miss Toulmin Smith's edition of Leland's England, Lord Ernle, English Farming, Chap III, Tawney, Agrarian Problem in the Sixteenth Century, and Religion and the Rise of Capitalism, Social England, ed Traill, Vols II and III, Baskerville, English Monks and the Suppression of the Monasteries Lipson, Ec Hist England, II इस अध्ययन पर कार्य करते हुए मुझे किग्स कॉलेज, कैम्ब्रिज के श्री जोन् साल्टमार्श के परामर्श तथा लेखो से बहुत सहायता मिली है।

अध्याय ६

शैक्सपीयर का इंगलैंड (१५६४-१६१६)

(महारानी एलिजाबेथ १५५८-१६०३ आर्माडा)

ट्यूडर युग की मध्यकालवर्ती आर्थिक तथा धार्मिक अशान्ति के बाद इगलैड मे स्वर्ण युग का आगमन हुआ। स्वर्णयुग कभी पूर्णत "स्वर्ण" के नही होते और न वे दीर्घस्थायी ही होते है। किन्तु शैक्सपीयर को मानव के उन्नततम गुणो के प्रदर्शन के लिये काल तथा देश दोनो दृष्टियो से अत्यन्त सुन्दर सयोग मिला। वन, खेत और नगर तीनो उस समय पूर्णता की स्थिति मे थे और इन तीनो की ही कवि की पूर्णता के लिये अपेक्षा होती है। उसके देशवासी, जोकि अभी यत्र की सेवा मे पशुवत् नियोजित नही किये गये थे, स्वेच्छानुमारी शिल्पी और सर्जक थे। उनके मन, जोकि मध्ययुगीन बधनो से मुक्त हो गये थे, अभी शुद्धाचारवाद अथवा अन्य आधुनिक मताधताओ के जाल मे नही पडे थे। एलिजाबेथ-काल के इगलैडवासी जीवन से प्यार करते थे, जीवन की किसी सैद्धान्तिक परछाई से प्यार नही करते थे। बडी सख्या मे सामान्यजन निर्धनता से अभूतपूर्व मुक्ति पाकर चेतना का उत्साह अनुभव कर रहे थे और इसे दर्शन, सगीत और काव्य मे व्यक्त कर रहे थे। अन्तत देश मे शान्ति तथा व्यवस्था की स्थापना हुई और इसे स्पेन के साथ सागर-युद्ध भी स्खलित नही कर सका। राजनीति, जोकि अभी तक भय तथा दमन का क्षेत्र थी और जो पुन शीघ्र अन्य प्रकार के भय तथा दमन के रूपो मे प्रकट होने वाली थी, कुछ दशाब्दियो के लिये उस स्त्री के प्रति वफादारी के सरल रूप मे परिणत हो गयी थी जोकि अपनी प्रजाओ के लिये उनकी एकता, समृद्धि तथा स्वतत्रता की प्रतीक थी।

नवजागरण, जोकि बहुत पहले अपने मूल स्थान इटली मे वसन्त देख चुका था, और जहाकि अब तीव्र तुषारापात ने उसे कली मे ही निर्जीव कर दिया था, बाद मे इस उत्तरी द्वीप मे उसे भास्वर ग्रीष्म का वरदान मिला। इरास्मस के काल मे इगलैड मे नवजागरण का प्रकाश केवल विद्वानो तथा राजा के दरबार तक ही सीमित था। शैक्सपीयर के काल मे यह एक सीमा तक सामान्य जन तक पहुचा। बाइबल तथा प्राचीन साहित्य का सपर्क अब केवल कुछ पढे-लिखे लोगो तक ही सीमित नही था। व्याकरण विद्यालयो के माध्यम से प्राचीन साहित्य और विचार शिक्षा से नाटक और वहा से बाजार मे, तथा पुस्तक से लोकगीत मे छन छनकर पहुच रहा था और साधारण-

तम श्रोता यूनान तथा रोम की 'न्यायाधीश एप्पियस का अत्याचार', 'राजा मीदास की दयनीय स्थिति' तथा अन्य कथाओ से परिचित हो रहे थे। हिब्रू तथा यूनान और रोम की प्राचीन जीवन-विधिया, जोकि सुदूर अतीत की कब्रो मे से अनुसन्धान और विद्वत्ता के जादू द्वारा निकाल ली गयी थी, एक साधारण अग्रेज की जानकारी के लिये प्रस्तुत कर दी गयी थी, जिन्होने कि उन्हे पुरालेख की मृत सामग्री के रूप मे ग्रहण नही किया बल्कि कल्पना तथा चेतना के व्यापार के ऐसे नये क्षेत्रो के रूप मे ग्रहण किया जिन्हे कि निर्बाध रूप से आधुनिक उपयोग मे लाया जा सकता था। जबकि शैक्सपीयर ने प्लूटार्च के जीवन को अपने "जूलियस सीजर" तथा "एटोनी" मे रूपान्तरित कर दिया था, अन्यो ने बाइबल को लिया और इससे एक नवीन जीवन-विधि का निर्माण किया और धार्मिक इगलैड के लिये नयी विचार-व्यवस्था दी।

एलिजाबेथ के इन सृजन-प्राण वर्षों मे सकुचित सिन्धु, जिनके तूफानो मे इगलैड के नाविक शताब्दियो से अभ्यस्त थे, विश्वव्यापी सागरो के रूप मे विस्तारित हो गये और इनमे साहसिक युवको ने नये नये देशो मे व्यापार और भ्रमण करते हुए रोमाच और सपत्तियो का अर्जन किया। युवक तथा उत्फुल्ल मन इगलेड, जोकि फ्रास को विजित करने की प्लाटाजेनेट उत्कठा से अभी ऊबरा ही था, अपने उस द्वीप रूप के प्रति चेतन हो उठा जिसकी कि नियति सागर से बँधी थी, और जो १५८८ मे स्पेन के विरुद्ध पोत-अभियान की सफलता से तथा सुरिक्षत सागर द्वारा प्रदत्त सुरक्षा से हर्षित था और जिस के कधो पर अभी सुदूर साम्राज्यो का उत्तरदायित्व नही पडा था।

निश्चय ही इस का एक दूसरा पक्ष भी है, जैसेकि मानव-सुख तथा मानवीय सुकर्म के सभी रूपो का है। शताब्दियो से जमे हुए निर्दयता के अभ्यास सहज मे तथा शीघ्र समाप्त नही हो सकते थे। एलिजाबेथ काल के लोगो की सागरपारीय कार्यवाहियो मे नीग्रो लोगो के सबध मे, जिनका कि वे दास-व्यापार के लिये निर्यात करते थे, तनिक भी यह चेतना दिखाई नही देती कि मानव होने के नाते उनके भी कुछ अधिकार थे, न ही आयरलैड-वासियो के प्रति ऐसी कोई चेतना दिखाई पडती है जिन्हे कि वे लूटते और वध करते थे, यहा तक कि गोल्डकोस्ट मे जोन हॉकिस तथा आयरलैड मे एड्मड-स्पेसर जैसे कुछ अत्यन्त उत्तम व्यक्ति भी यह नही देख पाए कि वे किन भयानक दैत्यो के दात रोपने मे योगदान कर रहे है। स्वय इगलैड के भीतर, पडौसियो द्वारा जादूगरनी कह कर और पकड कर मारी जाती हुई स्त्री, तख्ते पर चढा कर जीवित ही टुकडे-टुकडे किया जाता हुआ जीसस पादरी, लकडियो के ढेर पर जीवित जलाया जाता हुआ एकतावादी, फासी पर लटकाया जाता हुआ अथवा जघन्य प्रकार से लोहे की छडे खुभोकर मारा जाता हुआ मतविरोधी शुद्धाचारवादी, इन सब का इस महान् युग के आनन्द मे कोई भाग नही था। किन्तु एलिजाबेथ के इगलैड मे ऐसे प्रपीडितो की सख्या यूरोप के अन्य भागो के समान बहुत अधिक नही थी। हम उस आपद् के गर्त्त से बचे

रहे जिसमे कि अन्य जातिया ढकेली जा रही थी—जैसे स्पेन के धार्मिक अत्याचार तथा नीदरलैंड और फ्रास की धर्म के नाम पर हुई मारकाट। चैनल के उस पार इन चीजो के देखते हुए इगलैंड के लोग बहुत प्रसन्न थे कि वे द्वीपवासी है और सुमति एलिजाबेथ उनकी साम्राज्ञी है।

जिस प्रकार से हेनरी अष्टम् के काल के इगलैंड की यात्रा पुरातत्वविद् लेलैंड ने की थी और उसका विवरण लिखा था, उसी प्रकार से एलिजाबेथ के सुख-समृद्धिपूर्ण राज्य की यात्रा हमारे महानतम् पुरातत्वविद् विलियम गेम्डन ने की थी और उसका विवरण अपने ब्रिटानिया ग्रथ मे प्रस्तुत किया था। उसके कुछ ही पहले विलियम हैरिसन ने, जोकि एक पार्सन था, और उसके कुछ ही बाद फाइनेस मोरिसन ने, जोकि एक यात्री था, अपने अपने काल के आग्ल जीवन का चित्र प्रस्तुत किया है, जिनका शैक्सपीयर के अधिक स्पष्ट विवरण से मिलान करने मे बहुत आनन्द मिलता है।

सभवत साम्राज्ञी के राज्य के अन्त तक इगलैंड तथा वेल्स की जनसख्या ४० लाख से अधिक हो गयी थी, जोकि आज की जनसख्या से दस गुणा कम है। पाच चौथाई से अधिक सख्या ग्रामीण भाग मे रहती थी, किन्तु इनका काफी बडा भाग उद्योगो मे लगा हुआ था और गाव की आवश्यकता की लगभग सभी वस्तुओ का उत्पादन करता था और वस्त्र-निर्माता, धातु-खनिक तथा प्रस्तर-खनिक के रूप मे अधिक व्यापक बाजार के लिये भी कार्य कर रहा था। जनसख्या का बहुत बडा भाग कृषि और भेड-पालन मे लगा हुआ था।

नगर मे रहने वाली अल्प सख्या मे से बहुत से लोग, कम से कम अश-काल के लिये, कृषि-कार्य करते थे। साधारण आकार के एक छोटे नगर की जनसख्या साधारणत ५००० होती थी। नगर बहुत जनाकुल नही होते थे और दुकानो की पक्तियो के साथ साथ बाग, बगीचिया और छोटे खेत भी रहते थे। कुछ छोटे नगरो तथा बन्दरगाहो का धीरे धीरे ह्रास हो रहा था। सागर का हटना अथवा नदियो मे काई हो जाना (जिसने कि डी मे चेसर को बदरगाह के रूप मे धीरे धीरे अनुपयोगी बना दिया था), पोतो का आकार बढ जाने से बडे आकार के पोत-सश्रय-स्थानो की आवश्यकता होना, तथा वस्त्र और अन्य उत्पादित माल का निरन्तर ग्रामो की ओर प्रवास, ये सब उद्योग तथा व्यापार के कुछ प्राचीन केन्द्रो के ह्रास के कारण थे।

तो भी, द्वीप को समग्रत लेते हुए, जनसख्या बढ रही थी। यॉर्क, जोकि उत्तर की राजधानी था, नॉर्विच, जोकि वस्त्र-व्यापार का एक बडा केन्द्र था और जहा आल्वा के नीदरलैंड से कारीगर शरणार्थी आते रहते थे, ब्रिसल, जोकि भीतरी तथा विदेशी व्यापार के लिये लडन से पूर्णत स्वतत्र विकास कर रहा था—ये तीनो अपनी उपमा आप ही थे, जिनमे कि प्रत्येक मे सभवत २०,००० तक लोग रहते थे। और व्यापार की नवीन सागरीय परिस्थितियो ने बाइडफोर्ड के समान कुछ पश्चिमी बन्दरगाहो वाले नगरो को प्रोत्साहित किया।

किन्तु लडन देश तथा विदेश के व्यापार को निरन्तर अधिकाधिक आत्मसात् कर रहा था और इस प्रकार उसका आकार न केवल इगलैड के नगरो की तुलना मे ही, बल्कि यूरोप भर के नगरो की तुलना मे निरन्तर बढ रहा था। जब ट्यूडर की मृत्यु हुई तब लडन की जनसख्या एक लाख के लगभग थी, जब एलिजाबेथ की मृत्यु हुई तब सभवत यह सख्या बढ कर दो लाख तक हो गयी थी। यह अपनी पुरानी दीवारो के बाहर बहुत तेजी से फैल रहा था, नगर के मध्य भाग मे छोटे-छोटे खुले स्थान थे और घरो के साथ बगीचिया, खेलने के स्थान तथा अश्वशालाए थी। प्लेग का बार-बार प्रकोप होते रहने के बावजूद, तथा 'स्वेद-ज्वर' के नये आविर्भाव के बावजूद ट्यूडर-काल का लडन अपेक्षाकृत स्वस्थ था तथा मृत्यु-दर उत्पत्ति-दर से कम थी। यह अभी उतना जनसकुल नही था जितना कि यह अट्ठारहवी शताब्दी के आरभ मे हो गया था जबकि इसकी और भी घनी जनसख्या गदे कूचो मे अधिक ठूस कर भरी हुई थी, ग्राम प्रदेश से और अधिक दूर पड गयी थी तथा और अधिक अवस्थ थी, यद्यपि अब प्लेग का रोग विलुप्त हो गया था और उसका स्थान छोटी माता तथा टाइफाईड ने ले लिया था।

राज्ञी एलिजाबेथ का लडन अपने आकार, समृद्धि तथा शक्ति के कारण राज्य का सबसे प्रभावशाली ऐकिक था। सामाजिक, बौद्धिक तथा राजनैतिक दृष्टि से इसने जो प्रभाव डाला उसे बहुत सीमा तक सोलहवी शताब्दी की प्रोटेस्टेट क्रान्ति तथा सत्रहवी शताब्दी की प्रजातात्रिक क्रान्ति के लिये उत्तरदायी कहा जा सकता है। नगर का क्षेत्र अब पूर्ण रूप से नागरिक तथा व्यापारिक जन-समुदायो का एक किला था जिन्हे कि अपनी सीमाओ के भीतर किसी भी स्पर्धी प्रभाव का खतरा नही था। मध्ययुगीन लडन के विशाल मठ तथा विहार अब समाप्त हो गये थे, लौकिक-जन अब सर्वोपरि थे और अपने धर्म को अपने ही घरो मे प्रोटेस्टेट अथवा अपनी व्यक्तिगत पसन्द के ढाँचो मे ढाल रहे थे। नगर की सीमा मे न तो राजा का ही कोई विशेष प्रभाव था और न अभिजाततत्र का। राजकीय शक्ति नगर की सीमा के बाहर एक ओर व्हाइट हाल तथा वेस्टमिस्टर मे प्रतिष्ठित थी और दूसरी ओर टावर मे प्रतिष्ठित थी। बडे सामन्त तक नगर के भीतर के अपने मध्ययुगीन निवासो को छोड रहे थे और या तो स्ट्रैड मे बनी कोठियो मे अथवा वेस्टमिस्टर मे न्यायालय तथा सदन के पास जाकर बस रहे थे। नगर-प्रमुखो तथा नागरिको की शक्ति और अधिकार सर्वोपरि थे और उनके पास एक विशाल तथा सशक्त उपसैन्य (मिलिशिया) थी जिसके कारण लडन वास्तव मे राष्ट्र के भीतर एक राष्ट्र था—यह एक ऐसा समाज था जो विशुद्धत बुर्जुआ था, यद्यपि इगलैड का रूप अभी तक मुख्यत राजतत्रीय तथा सामतीय ही था। और लडन का प्रभाव सारे देश पर पडता था।

ट्यूडर कालीन लण्डन की भोजन सम्बन्धी आवश्यकताए लडन के पडौसी प्रदेशो की कृषि-नीति का निर्धारण करती थी और वही प्रभाव आगे दूर-दूर तक पडता था।

आवलयित क्षेत्रो वाला कैंट प्रदेश, जैसाकि इगलैड का बाग कहा जाता था, विशेष रूप से लडन का ही फलो का बगीचा था, जिसमे कि अपार सेव और चैरी उत्पन्न होती थी। पूर्व एग्लिका का जौ, जोकि रोएस्टन जैसे सुरा-उत्पादक नगरो के रास्ते आता था, लण्डनवासियो की दैनिक प्यास शान्त करता था, जबकि कैंट तथा एस्सेक्स अपनी बीअर को बढिया स्वाद देने के लिये हॉप फलो का उत्पादन कर रहे थे। गेहू तथा राई, जिनसे कि लण्डन वालो की रोटी बनती थी, सम्पूर्ण दक्षिण-पूर्वीय प्रदेशो मे उत्पन्न की जा रही थी।

इस प्रकार से राजधानी का विशाल बाजार विभिन्न जिलो को वही खाद्य उत्पन्न करने के लिये प्रेरित करके, जिसके लिये कि वे सर्वोपयुक्त थे, कृषि-विधि मे परिवर्तन लाने मे योगदान कर रहा था। मानचित्रकार नोर्डन ने लिखा है कि लण्डन के पास एक अन्य प्रकार का पशु-पालक, अथवा कहे-योमैन, उत्पन्न हुआ जिसके पास पशुओ के लिये बृहत् खाद्य-भडार होता था, वह अपने पुष्ट पशु स्मिथफील्ड मे बेच देता था और दुर्बल पशुओ को रख लेता था। "बहुत से लोग दूसरो के लिये सवारी गाडी रखकर जीविकोपार्जन करते है और लण्डन के लिये दूध, खाद्य-सामग्री तथा अन्य सामान लाते है।" इस प्रकार से सौभाग्यशाली प्रदेशो मे भूमि को वलयित करने के लिये बहुत प्रबल दबाव था।

कृषि उत्पादनो के लिये लडन के अतिरिक्त अन्य बाज़ार भी थे। शायद ही कोई ऐसा नगर रहा होगा जो अपनी आवश्यकता की सारी खाद्य सामग्री अपने ही खेतो मे उत्पन्न कर पाता होगा। ग्राम-प्रदेश मे भी, यदि एक जिले मे ऋतु के विपरीत रही होने से फसल खराब हो जाती तो वह दूसरे जिले से खरीद लेता, जब तक कि सारे इगलैड मे ही मौसम खराब नही होता। दशाब्द मे एक-एक बार मे ऐसा भी अवसर आता था जब कि देश मे उत्पादन की कमी के कारण विदेश मे बहुत मात्रा मे खाद्य-सामग्री का आयात करना पडता था। सामान्य वर्षो मे इगलैड कुछ अनाज का निर्यात भी करता था। हटिंग्डन शायर, कैम्ब्रिजशायर तथा औसे घाटी के अन्य प्रदेश लिन्न तथा वैश के रास्ते स्काटलैड, नार्वे तथा नीदरलैड को बडी मात्रा मे गेहू भेजते थे। केन्द्रीय इगलैड के धान्य भडार, दक्षिण पूर्वी वारविकशायर के खुले क्षेत्रो मे तथा 'फैल्डन' से, जो कि एवन तथा एजहिल के बीच मे पडता था, विशाल मात्रा मे गेहू ब्रिसल तथा अन्य पश्चिमी नगरो मे पहुँचते थे। किन्तु लेलैड तथा मामूडन के अनुसार वारविकशायर का शेषार्ध, जो कि एवन के उत्तर-पश्चिम मे पडता था, एक घना वन्य प्रदेश था और कही कही उसमे चरागाहे थी, यह आर्डन का जगल था। इस प्रकार से वर्तुल एवन, जिस पर कि स्ट्रैटफोर्ड का पत्थर के चौदह स्तम्भो वाला पुल बना था, एकान्त वन को घने बसे धान्य-उत्पादन प्रदेश से पृथक् करता था। इसके किनारो पर बसे नगर मे रहने वाला व्यक्ति अपने बचपन की मटरगश्तो मे इस

नदी के एक ओर वन्य सुषमा का उत्कर्ष देखता था और दूसरी ओर मानव की लीला।

अट्ठारहवी शताब्दी की अत्यन्त पूजीकृत कृषि से पूर्व यह सम्भव नही था कि सारे देश की जनता को खिलाने के लिये पर्याप्त गेहू का उत्पादन किया जा सकता। भूमि के अनुसार जई, गेहू, रे तथा जा भी गुन्, उगाया जाता था। उत्तर मे जई अधिक बोयी जाती थी, गेहू तथा रे इगलैंड के अधिकाश भाग मे उगाये जाते थे सिवाय दक्षिण-पश्चिम प्रदेश के, जहाँकि रे बहुत कम बोई जाती थी। जौ सभी प्रदेशो मे बहुत मात्रा मे बोया जाता था और इसका अधिकाश बीयर बनाने के काम मे आता था। पश्चिम प्रदेश मे जहाँ कि सेबो के बाग अधिक होते थे, साइडर शराब अधिक उपयोग मे लायी जाती थी तथा वोर्सेस्टरशायर के पीअर फल पैरी शराब बनाने के काम आते थे, जिसे कि माम्डन मे "नकली शराब कहा जाता है, जोकि ठडी और वायुविकार उत्पन्न करती है।" इगलैंड के सभी भागो मे गाँव अपने उपयोग के लिये विभिन्न फसले उत्पन्न करते थे और इनकी रोटी मे विभिन्न प्रकार के अनाजो का आटा मिला रहता था। फिनेस मौरिसन नें, जोकि यूरोप के प्रमुख नगरो को अच्छी तरह से जानता था, राज्ञी एलिजाबेथ की मृत्यु के शीघ्र बाद लिखा था

"इगलैंड के कृषक जौ और लाल जाति की राई का आटा मिला कर खाते थे और इसे सफेद राई से अधिक पसद करते थे, उनके अनुसार, लाल राई की रोटी से भूख जल्दी नही लगती थी इसलिए यह उनके परिश्रमी जीवन के लिये अधिक उपयोगी होती थी, किन्तु नगरवासी तथा भूस्वामी शुद्ध श्वेत रोटी ही खाते थे और इगलैंड मे सभी प्रकार का अनाज बडी मात्रा मे उत्पन्न होता था।"[1]

इगलैंड मे सफेद गेहू, मुर्गे और मछली तथा अन्य सब प्रकार का मास पर्याप्त मात्रा मे मिलता है। ये लोग बारहसिगे का मास बारह महीने खाते है, गर्मियो मे बकहरिण तथा सर्दियो मे डीअर हरिण खाते हैं, जिसे कि वे पेस्टियो मे पकाते है, और यह पेस्टी बहुत स्वाद होती है तथा अन्य किसी भी देश मे बहुत दुर्लभ है। इंगलैंड तुम शायद ससार मे एक देश हो जिसमे कि इतने बारहसिंगे हरिण है कि सारे यूरोप मे और कही इतने नही है। ससार मे इतने कबूतरो के पिंजरे और कही भी नही

---

[1] एक सतति पूर्व ही (१५७७ के आसपास) हैरिसन ने लिखा था कि "सारे इगलैंड मे उसी अनाज की रोटी बनाई जाती है जो उसकी भूमि उत्पन्न करती है, किन्तु तब भी भूस्वामी वर्ग और महाजन वर्ग अपने खाने के लिये पर्याप्त गेहू का प्रबन्ध कर लेता है, जबकि उनके घरो के नौकर चाकर और निर्धन पडौसी राई गेहू और जौ खाते है, और कमी के दिनो मे सेम, जई आदि कुछ गेहू के साथ मिलाकर खाते है।"

होगे जितने तुम्हारे यहाँ ! इगलैड के याचक अन्य देशो की तुलना मे भुना हुआ मास बनाने मे सर्वोत्कृष्ट माने जाते है।"

इस अनुभवी पर्यटक के अनुसार, हमारा गाय-मास तथा भेड-मास यूरोप मे सर्वोत्तम था और हमारा सूअर-मास वैस्टेफेलिया के अतिरिक्त अन्य सबसे उत्तम था।

वह आगे कहता है कि "इगलैडवासी मुर्गे से घटकर प्राय अन्य कोई मास नही खाते है, और जहाँतक बत्तखो का प्रश्न है, वे इनका मास केवल दो ऋतुओ मे ही खाते है, एक तो जब वे खेती की कटाई के बाद अनाज के भूसे को खाकर मोटे होते है और दूसरे मई के आस पास, जब वे हरे रग के होते है, और खरहो को चाहे कितना ही अनुपयोगी माना जाय किन्तु तब भी वे शिकार किये जीव के रूप मे भून कर और उबाल कर दोनो रूपो मे ही खाये जाते है। इगलैड के खरहो की अनेक जातियाँ है जिनका मास खूब मोटा, कोमल तथा उन सब आमिषो से स्वाद होता है जो मैंने कही भी अन्यत्र खाए है। जर्मनी के खरहो का स्वाद इगलैड के खरहो की अपेक्षा भूनी बिल्ली के स्वाद के अधिक निकट होता है।"

मास तथा रोटी मुख्य भोजन थे। सब्जियाँ मास के साथ लगभग बिल्कुल नही खाई जाती थी, साग पॉटेज नामक (एक सूप) बनाने मे प्रयुक्त होता था। आलू कुछ बागो मे अभी उगाये जाने आरम्भ हुए थे किन्तु अभी खेतो मे फसल के रूप मे नही उगाये जाते थे।

पडिग तथा उबले हुए फल अभी भोजन के रूप मे उतने महत्वपूर्ण नही हुए थे जितने बाद के समय मे, यद्यपि चीनी भूमध्य स्थित प्रदेशो से आती थी। मध्याह्न भोजन का समय, जोकि मुख्य भोजन होता था, ग्यारह या बारह बजे होता था, साय भोजन इसके लगभग पाच घटे बाद होता था।

क्योकि इगलैड का गाव, चाहे वह पुरातन आलवालो वाले पश्चिमी प्रदेश का हो और चाहे खुले क्षेत्र वाले उत्कृष्ट क्षेत्रो का, अभी भी अपने खाने की सामग्री स्वय उत्पन्न करता था, इसलिये आत्मनिर्भर कृषि आग्ल जीवन का आधार थी। किन्तु, जैसाकि हमने देखा है, अपने लिये उत्पादन करने वाला गाव देश अथवा विदेश के विशिष्ट बाजारो के लिये भी ऊन और खाद्य सामग्री उत्पन्न करता था। "औद्योगिक फसले" भी अब निरन्तर बढ रही थी लिकशाय के कुछ भागो मे सन खूब उत्पन्न किया जा रहा था, एस्सेक्स मे वस्त्रो की रँगाई के लिये मजीठ तथा केशर आदि भी बहुत मात्रा मे उत्पन्न किये जा रहे थे। उससे पहले इनके लिये विदेशो से आयात पर निर्भर करना पडता था।

बाजार के निमित्त इस प्रकार के विशेषीकरण के लिये आवलयित और व्यक्तिगत कृषि अपेक्षित थी। जगलो, दलदलो और खाली पडी भूमियो से बनाए गये खेत सभी

झाडियो से आवलयित किये जाते थे और व्यक्तिगत रूप से उन पर कृषि होती थी। कृषिगत भूमि के क्षेत्र के विस्तार के साथ खुले खेत और सार्वजनिक चरागाहो के क्षेत्र का विस्तार नही बढा। खुले खेत यद्यपि एकडो मे बहुत छोटे नही हुए किन्तु अब उनका क्षेत्र पहले की अपेक्षा इगलैंड की कुल कृषि-भूमि के अनुपात मे बहुत थोडा था।

इगलैंड तथा विदेशी बाजारो के लिये अतिरिक्त अनाज केवल महीन मिट्टी वाले निम्नतल प्रदेश ही उत्पन्न कर रहे थे। भेडे, जोकि ऊन तथा वस्त्र-व्यापार के लिये उत्पादन करती थी, अल्पोत्पादक उन्नततल भूमियो मे चरती थी। पथरीले प्रदेश—जैसे चिल्टर्न प्रदेश, डोर्सेट की पहाडियाँ, वाईट द्वीप, कोट्मवोल्ड्स, लिकल्न तथा नार्फोक के पठार—सदैव उत्कृष्टतम ऊन उत्पादन करते रहे। देश तथा विदेश के यात्री ट्यूडर काल मे इन पार्वत्य प्रदेशो मे इतने बडे भेडो के इज्जड देखकर चकित होते थे। इतने बडे इज्जड यूरोप मे अन्यत्र कही नही मिल सकते थे। कम उपजाऊ भूमियो मे भेडे प्राय ही आधी भूखी रहती थी, किन्तु उनकी ऊन के रेशे, भूमि की किसी विशेषता के कारण, ससार मे सर्वोत्तम थे।

ट्यूडर काल मे भेडो तथा अन्य पालतू पशुओ की बढती हुई माग के कारण उपजाऊ क्षेत्रो मे भी आवलयित चरागाहे बनी, जिनके विरुद्ध लोगो मे बडा रोष उत्पन्न हुआ, जैसाकि हम पहले लिख चुके है। घाटियो की ये भेडे मोटी थी किन्तु उनकी ऊन ऊँची भूमियो की उनकी दुबली बहनो की अपेक्षा कम अच्छी थी। तब भी ये निम्नतलीय भूमियो की चरागाहे हानिकर नही थी यद्यपि इन भेडो के रेशे कम अच्छे थे किन्तु मोटी ऊन की माग निरन्तर बढ रही थी और भेड तथा गाय के मास की खपत भी निरन्तर बढ रही थी। अपने भोजन मे अधिक धान्य का उपयोग करने वाले विदेशी लोग इस काल के इगलैंडवासियो के इतनी मात्रा मे मास-भक्षण पर हैरान थे। इस प्रकार से, मध्यप्रदेश एलिजाबेथ के काल मे गेहू के साथ मास भी देते रहे। रगबी "कसाइयो से भरा पडा है।" लीसेस्टरशायर तथा नार्थम्पटनशायर के पशु-मेले बहुत प्रसिद्ध थे। द्वीप मे पशुओ की बडी सख्या होने से चमडे के उद्योग को प्रोत्साहन मिला। दक्षिणी इगलैंड के लोग चमडे के जूते पहनते थे और विदेशियो द्वारा पहने जाने वाले जूतो से घृणा करते थे। तो भी क्लॉग (एक भारी जूता, जिसका तला लकडी का होता था) अल्पव्यायी उत्तर मे प्राय ही पहने जाते थे और स्कॉटलैंड के लडके-लडकियाँ नगे पैर चलते थे।

अश्वपालन के लिये निरन्तर बढती हुई मॉग के साथ कदम रखना आवश्यक था। अश्व धीरे-धीरे तागे और हल दोनो मे बैल को स्थानान्तरित कर रहा था, और देश की सामान्य समृद्धि के कारण सवारी के लिये घोडो की माग निरन्तर बढ रही थी, जैसे समृद्धिपूर्ण वर्षों मे हम अधिक मोटरकारो की मॉग करते हैं। यॉर्कशायर के अनेक भागो मे और उपद्रवपूर्ण सीमा-प्रदेश के ऊँचे घासो वाले भागो मे घोडो और

ढोरो का पालन भेडपालन की अपेक्षा अधिक प्रचलित था। मोमट्र पर रात के समय के धावो मे भेडे नही ले जाते थे बल्कि ढोरो को ले जाते थे।

यद्यपि इस समय इगलैंड मे भेडें तथा ढोर इतनी बडी सख्या मे पाले जा रहे थे, किन्तु हमारे आज के पैमाने से ये दुबले और छोटे थे। इनकी स्थिति मे सुधार १८वी शताब्दी मे हुआ, क्योकि उस समय तक, सर्दियो के महीनो को छोडकर, उन्हे खिलाने के साधन बडे अपर्याप्त थे। एलिजाबेथ काल के एक कृपि के कवि थॉमस टस्सर ने लिखा था

"क्रिसमिस (दिसम्बर २५) से मई तक,
दुबले ढोरो का क्षय होता है।"

और खुले क्षेत्र की प्रणाली, जोकि अभी तक आधे देश मे प्रचलित थी, पशुओ के लिये न तो उचित आवास दे सकती थी और न पर्याप्त चारा ही दे सकती थी।

इगलैंड का एक भाग अभी तक अपने आप मे एक पूरा ससार था, यह वह विशाल पकिल भूभाग था जो एक ओर लिकल्न से ~~कैम्ब्रिज~~ तक फैला था और दूसरी ओर किग्सलिन से पीटरबोरोफ तक। एलिजाबेथ के राज्य के अन्तिम वर्षो मे इगलैंड की ससद् मे पक-प्रदेश से पानी निकालने के नाले बनाने की योजना पर विचार हो रहा था, जैसे नाले डचो ने हालैंड मे बनाए थे, जिससे कि इसकी पकिल और रीड घास वाली भूमियो को कृषि और चरागाहो के योग्य बनाया जा सकता। किन्तु यह महत् योजना तब तक क्रियान्वित नही की जा सकी जब तक कि इस प्रकार के कार्य के लिये पर्याप्त पू जी उपलब्ध नही हो सकी। स्टुअर्ट के काल तक इसके दक्षिणार्ध तक और हेनरी के काल तक उत्तरार्ध तक। इस बीच पक-प्रदेश के निवासी इसके किनारो पर और इसके असख्य द्वीपो मे रहते रहे—द्विरूप जीवन जीते हुए, और बदलती हुई ऋतुओ के साथ अपने व्यवसायो को बदलते हुए। काम्डन लिखता है "कैम्ब्रिज शायर का सम्पूर्ण ऊपरी तथा उत्तरी भाग नदी के द्वीपो मे बटा हुआ है जिनमे सारी ग्रीष्म ऋतु मे बहुत सुन्दर दृश्य होता है, किन्तु शीत ऋतु मे लगभग सभी पानी मे डूबे रहते है और एक प्रकार से सागर का सा दृश्य उपस्थित होता है। इस, तथा शेष पक-प्रदेश के निवासी (जोकि सफ्फोक से लिकल्नशायर मे वेनफील्ड तक ६४ मील तक फैला हुआ है) अपने प्रदेश के समान ही हिस्र तथा असभ्य स्वभाव के है और ऊपरी प्रदेश-वासियो के प्रति बडे ईर्ष्यालु है, और सब लम्बी लाठियो पर, जोकि वे पशु चराने के लिये रखते है, ऊँचे चलते है। यह सम्पूर्ण प्रदेश शीत ऋतु मे, और कभी-कभी वर्ष के अधिकाश भाग मे, निकासी के नालो के अभाव मे औस, ग्राट, नैन, वेल्लैंड, ग्लेने तथा विदम नदियो के जलो मे डूबा रहता है। किन्तु जब ये नदिया अपने किनारो मे सीमित रहती है तब यह इतने अद्भुत रूप से समृद्ध घास तथा उत्कृष्ट भूसे से (जिसे कि वे लिड कहते है) भर जाता है कि वे लोग अपने उपयोग के लिये पर्याप्त

काट कर शेष को नवम्बर मे जला देते है जिससे कि दोबारा यह और घना उगे। इस समय कोई इस सम्पूर्ण मूर घास से भरी भूमि को हल्की आग से भरी देखकर आश्चर्यचकित हो सकता है। इसके अतिरिक्त, यह प्रदेश जलाने के लिये विभिन्न प्रकार के घास तथा छत बनाने के लिये फूस आदि उत्पन्न करता है। यहाँ अन्य पानी की झाडिया, विशेष रूप से बैत की, जो या तो स्वतत्र रूप से उत्पन्न होती है अथवा नदियो के किनारे उनकी बाढ को रोकने के लिये स्वयं लगाई जाती है, भी उत्पन्न होती है। इनकी प्राय ही कटाई होते रहने से ये और अधिक सघनतर होती रहती है। इन बैतो के ही टोकरे बनते है।[१] इस प्रदेश मे रहने वाले बेचने के लिये जगली पक्षियो का शिकार बडे पैमाने पर करते थे। जगली बत्तखे लोभ देकर अथवा घेरकर जाल के बने विशाल पिजरो मे सैकडो की सख्या मे पकडी जाती थी। ईल मछली हजारो की सख्या मे एकसाथ पकडी जाती थी।

सम्भवत यह सन्देहास्पद बात हो सकती है कि क्या पक-प्रदेश का वासी वास्तव मे ही उतना हिसक और असभ्य था जितना कि 'ऊपर के प्रदेशो' के लोगो ने काम्डन को बताया था। जो भी हो, यह स्वीकार करना नितान्त भ्रामक होगा, जैसाकि बहुत से लेखक करते रहे है, कि क्योकि उनका जीवन द्विरूप (पृथ्वी और जल मे बीतने वाला) था, क्योकि वे दोनो ओर भेडे चराते थे, क्योकि वे नावो पर मछलियाँ पकडते, पक्षियो का शिकार करते और रीड घास काटते घूमते थे इसलिये वे सूखी भूमियो के उस कृषक से अधिक "कानून भग करने वाले थे।" अभी हाल के अनुसन्धान से (एच एस डरबी, दि मैडीविअल इगलैड, १६४०) पता चलता है कि सम्पूर्ण मध्य युगो मे, डूम्स डे बुक के काल से लेकर, मेनर प्रथा के कानून तथा प्रथाओ का सम्पूर्ण पक-भूमि मे अनुसरण होता था, बडे मठो को, और उनकी समाप्ति के बाद उनके उत्तराधिकारियो को, शुल्क तथा सेवाए नियमित रूप से भेट की जाती थी, और कि मछली पकडने के अधिकार तथा स्वामित्व के अत्यधिक जटिल कानूनो का भी पालन होता था, तथा बाध लगाने और नहरे बनाने की समुचित व्यवस्था थी, जिनके बिना जल-मार्ग नावे चलाने के कार्य मे नही लाया जा सकता था और परिणामत लिकल्न, लिन, बोस्टन, विस्बैच, कैम्ब्रिज, सेट ईव्स, पीटरबोरफ तथा इस प्रदेश के अन्य छोटे नगर अपना व्यापार तथा सचार-सम्बन्ध खो बैठे थे। डरबी के अनुसार, फैन्लैड (पक-भूमि) के लगभग प्रत्येक स्रोत और कूल का कोई न कोई निर्माता अवश्य था। सक्षेप मे, इसके स्टुअर्ट तथा हेनरी के कालो मे कृषि-योग्य बनाए जाने से पूर्व यह प्रदेश वास्तव मे ही उभयवास (जल-स्थल) वाला था, किन्तु इसकी अत्यन्त विशिष्ट आर्थिक व्यवस्था थी।

वन्य प्रकृति के इन दृश्यो के बीच इली कैथेड्रल शताब्दियो तक पानी के ऊपर

---

[१] काम्डन ब्रिटानिया, पृ० ४०८, गिब्सन सस्करण।

पालो वाली नाव के समान तैरता रहा, इसके दो स्तभ और दो लम्बी चमकती छते दूर से क्षितिजो पर दिखाई पडती थी। इसकी छाया मे एक महल था जहा पर बिशप अपनी कचहरी लगाता था। अभी तक वह अपने मध्ययुगीन पूर्वजो के अधिकारो के अवशेषो का उपभोग कर रहा था। किन्तु वास्तव मे सुधार आन्दोलन ने पादरियो की स्वतत्र शक्ति को कम कर दिया था। राज्य अब चर्च को नियत्रण मे रख रहा था, कभी कभी तो यह इसमे धार्मिक स्वार्थो के प्रति बहुत उद्यततापूर्ण उपेक्षा भी दिखाता था। रानी एलिजाबेथ ने बिशप कोक्स को बाध्य कर दिया था कि वह होल्बोर्न मे अपना इली महल तथा विख्यात फलो के बाग अपने एक इष्ट जन क्रिस्टोफर हटन को समर्पित करदे। और जब कोक्स का देहान्त हो गया तब उसने राज्य के लाभ के लिये अट्ठारह वर्षो तक सागर को खाली रखा। किन्तु तब भी कभी इली मे बिशप को रहने का अवसर दिया गया, वही फैनलैड का प्रमुख शासक होता था जबतक कि पहले तो ओलिवर क्रॉमवैल ने और पीछे बैडफोर्ड के ड्यूक ने पोप से अधिक प्रभाव प्राप्त नही कर लिया।

फैनलैड के अतिरिक्त दो अन्य क्षेत्र, एक तो वेल्स का अधिराज्य क्षेत्र और दूसरा उत्तरी सीमात क्षेत्र एलिजाबेथ के इगलैंड से आर्थिक तथा सामाजिक सरचना मे भिन्न थे। किन्तु अब वे साधारण ढाचे के निरन्तर निकट आ रहे थे, और इन दोनो मे भी, वेल्स आधुनिक जीवन की ओर अधिक आगे बढ आया था।

सम्पूर्ण मध्य युगो मे वेल्स पहाडियो पर आदिम जीवन व्यतीत करने वाले वेल्स-वासियो तथा आग्ल सामतवाद के पोषक 'सेनानी सरदारो' के बीच सैनिक तथा सामाजिक सघर्ष का क्षेत्र रहा। रोसेस के युद्धो के युग मे सेनानी सरदार इगलैंड के उत्तराधिकार के लिये लडे जाने वाले युद्धो मे निर्णायक भाग लेने के लिये पूर्व की ओर मुडे, जिसका सुपरिणाम यह हुआ कि उनकी स्वतत्र शक्ति समाप्त हो गयी। पन्द्रहवी शताब्दी समाप्त होते होते उनके प्रमुख दुर्ग तथा सम्पत्तिया राजा के अधिकार मे जा चुकी थी।

ऐसी अवस्था मे राजा के अधीन इगलैंड तथा वेल्स के सयुक्त हो जाने का अवसर था, यदि यह कार्य वेल्सवासियो की राष्ट्रीय भावनाओ तथा परपराओ को हानि पहुचाए बिना किया जा सकता, क्योकि आयरलैंड वालो की भावनाए ट्यूडर की नीति के कारण बहुत घातक रूप से उभाडी जा चुकी थी। सौभाग्यवश वेल्स मे परिस्थितिया अधिक अनुकूल थी। पुराने मूलनिवासियो को इगलैंड वालो से पृथक् करने वाले न तो कोई धार्मिक मतभेद ही उत्पन्न हुए और न उनकी भूमि छीनकर उनके राज्य के अधीन करने का ही कोई प्रश्न था। सुयोगवश, बोस्वर्थ फील्ड ने इगलैंड की राज्यगद्दी पर एक वेल्स के कुल को प्रतिष्ठित कर दिया था और इस प्रकार से ट्यूडरो के प्रति वफादारी वेल्स के निवासियो के लिये एक राष्ट्रीय गर्व का विषय थी।

इन सुखद परिस्थितियो मे हेनरी अष्टम् ने दोनो देशो को वैधानिक, ससदीय तथा शासनिक रूप से एक मे मिला दिया । इगलैड की माडलिक व्यवस्था (काउटी सिस्टम), शान्ति के न्याय का नियम (रूल ऑफ दि जस्टिस ऑफ दि पीस) तथा अग्रेजी कानून सम्पूर्ण राज्य क्षेत्र पर लागू कर दिये गये । वेल्स के प्रमुख लोग अपने मडलो का इगलैड की ससद मे प्रतिनिधित्व करके गर्वित अनुभव करते थे । वेल्स की परिषद्, स्टार चैम्बर के अनुरूप राजकीय मत्रालय, तथा उत्तर की एक परिषद् इन तीनो ने पुरातन से नूतन की ओर सक्रमण के दीर्घ काल मे व्यवस्था बनाए रखने मे एक महत्व-पूर्ण योगदान दिया । घाटियो मे सामतवाद सेनानी सरदारो के साथ ही समाप्त हो गया था और पहाडो पर से आदिमता की भी समाप्ति हो गयी थी, और यह सब वैसे किसी भी सघर्ष के बिना हुआ जैसे सघर्ष दो शताब्दियो बाद स्कॉटलैड के पार्वत्य प्रदेशो मे इनकी समाप्ति के समय हुए थे । सरकारी ढाचा, और बहुत सीमा तक समाज का रूप भी, अग्रेजी आदर्श पर ढाले जा चुके थे । किन्तु वेल्स ने अपनी देशी भाषा, कविता तथा सगीत को नही छोडा, उसकी आत्मा अभी तक उसकी अपनी ही थी ।

वेल्स का भूस्वामी वर्ग, जोकि पहले के आदि-जातीय नेताओ, पुराने सेनानी सामत सरदारो तथा उस वर्ग के 'नये लोगो' का सम्मिश्रण था, ट्यूडर-शासन से बहुत सन्तुष्ट था । ट्यूडर शासक वेल्स के भूस्वामियो के साथ वही व्यवहार करते थे जो वे इगलैड के भूस्वामियो के साथ करते थे । उनमे से कुछ अभी हाल ही मे लागू हुए अग्रेजी कानून के अधीन बडी बडी सपत्तिया सचित कर रहे थे और आगामी वर्षों मे ये सपत्तिया बहुत बडी हो गयी थी । किन्तु एलिजाबेथ के काल मे और उसके कुछ काल बाद तक वेल्स के भूस्वामियो का एक बहुत बडा ऐसा वर्ग भी था जो अल्प सपत्ति तथा अल्प आडबर से युक्त था । जनरल बैरी ने ओलिवर क्रामवैल को वेल्म मे स्थित अपने सैन्य शिविर से लिखा था "यहा एक सौ पाऊड वार्षिक आय के पचास व्यक्ति मिलने आसान है किन्तु पाच सौ पाऊड की वार्षिक आय वाले पाच व्यक्ति नही मिल सकते है । इनमे से अधिकाश, जैसेकि इगलैड के सामन्त जमीदार (स्क्वायर) ट्यूडर तथा आरभिक स्टुअर्ट कालो मे समृद्ध हो रहे थे, किन्तु अट्ठारहवी शताब्दी मे वे धीरे धीरे समाप्त हो गये और वेल्स मे बडी भू-सपत्तिया ही अधिक रह गयी ।

किन्तु वेल्स के लोगो का मुख्य भाग भूस्वामी वर्ग न होकर छोटे खेतीहर किसान थे । वेल्स मे बडे बडे व्यापारिक प्रकार के उतने फार्म नही थे जितने इगलैड मे थे । न ही ये दुर्भाग्यपूर्ण आयरलैड के किसानो के खेतो की तरह अनावश्यक रूप से छोटे-छोटे टुकडो मे बँटे हुए थे । वेल्स के आधुनिक समाज का पुष्ट आधार कृष-कोचित तथा पारिवारिक प्रकार के छोटे खेतो पर टिका था, किन्तु ये खेत इतने छोटे भी नही थे कि किसान के लिये आत्मसम्मानपूर्वक जीवन बिताना भी सभव नही होता । भूस्वामियो से उनके सबध इगलैड के कृषक-भूस्वामी के सबधो जैसे थे, आयरलैड तथा

स्कॉटलैंड के पहाडी प्रदेशो जैसे नही थे जहाकि किसान भूस्वामियो के शोषण के कारण निर्धन थे ।

वेल्स मे मठो का विलय उसी प्रकार से हुआ और उसके सामाजिक परिणाम उसी प्रकार के हुए जैसे इगलैंड मे हुए । इसके विरुद्ध उत्तर की "धार्मिक तीर्थ-यात्रा" के समान विद्रोह नही हुआ । वेल्स के उच्च वर्ग को सुधार से लाभ हुआ था और किसान अपने अज्ञान के कारण इसके प्रति तटस्थ रहे । यदि वे इगलेंड की विदेशी भाषा मे लिखे प्रार्थना-ग्रन्थ तथा बाईबल को नही समझते थे तो वे लातीनी भाषा मे लिखे मास को भी नही समझते थे । अब तक उन्हे धर्म ने स्पर्श नही किया था । इससे पूर्व एलिज़ाबेथ के काल मे वेल्स का कृपक-वर्ग एक बौद्धिक जडता तथा शैक्षणिक उपेक्षितता की स्थिति मे था जोकि वास्तव मे ग्रामीण जीवन मे उपलब्ध अच्छाई तथा उसकी पुरातन परपरा के सर्वथा अनुकूल था किन्तु जिसकी यह स्थिरता शीघ्र ही किसी बाहरी प्रभाव से क्षुब्ध होने वाली थी । यह कौन सा प्रभाव होने वाला था ? यह प्रभाव था जीस्यूट मिश्नरी लोग जिन्होनेकि कुँवारी (अकृषित) धरती को क्षत किया होता किन्तु जिन्होने वेल्स को अक्षत ही छोड दिया । आखिरकार, एलिजाबेथ के राज्य के अन्तिम दस वर्षो मे चर्च ने 'अपना कर्तव्य करना आरभ किया और बाइबल तथा प्रार्थना-पुस्तक का वेल्टन भाषानुवाद तैयार किया । इससे वेल्स मे प्रोटेस्टेटवाद तथा अट्ठारहवी शताब्दी के महान धार्मिक तथा शैक्षणिक आन्दोलनो की नीव पडी ।'

ट्यूडर राजाओ के काल मे ट्रैंट के उत्तरी भाग के इगलैंड का जीवन अपनी तरह का एक विलक्षण जीवन था । स्कॉटलैंड की सीमाओ पर होने वाला निरन्तर उत्पात, वस्त्रोत्पादक घाटियो तथा कानो वाले जिलो को छोड कर सम्पूर्ण प्रदेश की निर्धनता, पुरानी सामन्तीय धारणाओ की दृढता तथा मठो और पुराने धर्म के प्रति अधिक आस्था ये सब हेनरी अष्टम् के युग मे इस प्रदेश को शेष इगलैंड से पृथक् करते थे और यह अवस्था एक सीमा तक एलिजाबेथ के काल मे भी रही ।

हेनरी युग के आरभिक वर्षो मे भी सीमा-प्रवेश अभी इस प्रदेश के योद्धा-परिवारो द्वारा ही शासित था, विशेषत पर्सियो और नेवेल्लियो द्वारा जिनके कि नोर्थम्बलैंड तथा वेस्टमोंलैड के अर्ल नेता थे । इन भेडो वाले प्रदेशो के इन सशस्त्र कृषको मे व्यक्तिगत स्वतत्रता की तीव्र उत्कठा के साथ परपरागत मुखियाओ के प्रति वफादारी की भावना भी विद्यमान थी, जो मुखिया न केवल स्कॉटलैंड के आकस्मिक आक्रमणो मे ही इनका नेतृत्व करते थे बल्कि स्वय ट्यूडर सरकार के विरुद्ध लडे गये युद्धो मे भी नेतृत्व करते थे । १५३६ की "धार्मिक तीर्थयात्रा" मठो की रक्षा के लिये तथा सीमा के सरदारो की अर्ध-सामतीय शक्ति के विरुद्ध आयोजित की गई थी । हेनरी ने उस विद्रोह के दमन के अवसर का उपयोग सामतवाद के दमन के लिये किया और राजकीय अधिकार का विस्तार सीमान्त के जिलो तक किया । इसके लिये उसने परपरागत सरदारो के

प्रभाव को हटा कर मार्चेस (एक प्रदेश का नाम) के नेताओ को राज्य की ओर से नियुक्त किया। हेनरी का किया अधिकाश कार्य कभी पीछे भी नही मिटा, विशेषत यॉर्कशायर मे। किन्तु नार्थम्बरलैड तथा कम्बर्लैड शायद ही कभी वास्तव शाति मे रह पाये होगे। हेनरी अष्टम् तथा एड्वर्ड षष्ठ की नीति स्काटलैड के प्रति बहुत मूर्खता-पूर्ण रूप से शत्रुता की थी, और दो जातियो के बीच यदाकदा चलने वाले सघर्षो तथा निरन्तर शत्रुभाव ने सीमान्तीय मडलो की अशाति को बहुत लबा कर दिया था। मेरी के राज्यकाल मे रोमन कैथोलिको का प्रभाव पुनरुज्जीवित हो गया था और इसके साथ ही पर्सी परिवार का प्रभाव भी, जिसेकि हेनरी अष्टम् ने ध्वस्त किया था।

इस प्रकार से, जब एलिजाबेथ ने राज्यारोहण किया तब नवीन तथा प्राचीन धर्मो के बीच, तथा राज्य और सामतवाद की शक्तियो के बीच सघर्ष सुदूर उत्तर के प्रदेशो मे अभी पूरी तरह से समाप्त नही हुआ था। इस प्रकार से उस समय सीमा पर के अधिक सभ्य प्रदेशो मे, पूर्व मे नॉर्थम्बर्लैड के सागर की ओर के प्रदेशो मे तथा पश्चिम मे कबरलैड के प्रदेशो मे ऐसी वस्तुस्थिति थी। इन प्रदेशो के मध्य मे थे मध्य मार्चेस तथा चेविअट जिले के पक्ति तथा पहाडी प्रदेश जहाकि रेडेस्डेल तथा उत्तरी टाइने के प्रदेशो मे अभी पर्याप्त अव्यवस्था तथा आदिमावस्था थी। इन डाकुओ की घाटियो मे, जोकि पथहीन तथा जगली घास से आकीर्ण वीरान् भूमियो के द्वारा सभ्य ससार से कटी हुई थी, वे आदिम जातिया बसी थी जो राजा के आदेश अथवा पर्सियो, नेविलो तथा डेकरो की सामतीय शक्ति की परवाह नही करती थी। वास्तव मे, इन वन्य प्रदेशो के योद्धाओ की एकमात्र वफादारी अपने कबीलो के प्रति ही थी। परिवार-प्रेम अपराधियो को बचाने तथा कानून तोडने मे सर्वाधिक सहायक था। चोरो की इन घाटियो मे चुरायी गयी सम्पत्ति का अनुसरण और इसको वापिस प्राप्त कर लेना सभव नही था, क्योकि प्रत्येक योद्धा हिस्र कबीले की प्रतिशोधपूर्ण स्पर्धा द्वारा सुरक्षित था। छोटे परिवारो को चार्लटनो के शासन मे सुरक्षा मिली। हाल, रीड, हेड्ले, रेड्सडेल के फ्लैचर, चार्लटन, हॉड, रोब्सन तथा उत्तर टाइने डेल के मैलबोर्न ऐसी असली राज-नैतिक इकाइया थे जो अन्य किसी प्रकार के राजनैतिक सगठन के प्रति अनभिज्ञ थी। जब राज्य ने कर बढाए तब वह कबीलो के मुखियाओ के द्वारा ही इन करो का सग्रह करता था।

राजकीय आयुक्तो (कमिश्नरो) ने १५४२ तथा १५५० मे इस सीमा की स्थिति का विवरण देते हुए लिखा था कि इन कानून-रहित घाटियो मे १५०० व्यक्ति सशस्त्र तथा स्वस्थ शरीर के है। अनुपजाऊ भूमि उनके परिवारो से लिये पर्याप्त खाद्य उत्पन्न नही कर सकती, इसलिये स्कॉटलैड के पार्वत्य प्रदेशवासियो के समान ये अपने पूर्वी तथा पश्चिमी प्रदेश के सम्पन्न पडौसियो के पशु आदि चुराकर अपनी जीविका चलाते है। वे स्कॉटलैड के लिडेस्डेल प्रदेश के लुटेरो के निकट सपर्क मे थे, जहाकि वैसी ही सामाजिक स्थिति थी। इन दोनो ही देशो के पक-स्थिति सैनिको पर जब कभी उनसे

त्रासित लोग आक्रमण करते तब वे दूसरी सीमा के पार भाग सकते थे और तबतक वहा सुरक्षित रह सकते थे जबतक कि खतरा टल नही जाता था। किन्तु सामान्य रूप से कोई अग्रेज अधिकारी इनका पीछा उत्तरी टैने अथवा रेडे तक करने का साहस भी नही करता था, लेडिम्डेल की तो बात ही क्या। डाकुओ के ये मजबूत गढ, जोकि शाह-बलूत वृक्षो के तनो से निर्मित होते थे, अत्यन्त दुर्गम और भयानक पक-भूमियो मे घने जगलो मे बने होते थे जिनके बीच से किसी व्यक्ति को रास्ता मिलना असभव होता था। हेनरी अष्टम् के आयुक्तो ने अपने राजा को यह बताने का साहस नही किया कि उत्तरी टैने तथा रेडे को जीतने और अधिकार मे रखने पर कितना व्यय होगा, बल्कि केवल आक्रमणो को रोकने के लिये चौकसी रखने और व्यवस्था रखने तथा अप्रशासित प्रदेशो की सीमाओ पर स्थित हार्बोटल तथा चिप्चेस किलो मे सैनिक रखने विषयक सुझाव ही इसके लिये दिये जिससे कि निम्नस्थ भूमियो के निरन्तर आक्रमणो पर नियत्रण रखा जा सकता।

सीमा के दोनो ओर इस प्रकार का समाज था जो उस समय वहा के लोकगीतो की सृष्टि कर रहा था, जो कि एक से दूसरी सतति को श्रुति से प्राप्त होते थे। बहुत से गीत, जो हमे आज उपलब्ध है, एलिजाबेथ तथा स्कॉटलैंड की रानी मेरी के काल मे लिखे गये थे। ये लोकगीत, जोकि प्राय सदैव अत्यन्त करुणापूर्ण होते थे, जीवन तथा मृत्यु सबधी ऐसी घटनाओ का वर्णन करते थे जो उन दिनो उस प्रदेश मे प्रतिदिन घटती थी। इस उत्तरी प्रदेश की ये असस्कृत सहज अभिव्यक्तिया शैक्सपीयर के शिष्ट सस्कृत इगलैंड के काव्य से नितान्त भिन्न थी। दक्षिणी इगलैंड के गीतो मे एक प्रेमी-युगल के लिये 'मरणोत्तर अमरता' की काफी सभावनाए होती थी। किन्तु सीमा-प्रदेश के आल्हा मे प्रेमी की भूमिका मे आना एक बडी खतरनाक बात थी। उस पर कोई पिता, माता, भाई या प्रतिस्पर्धी दया नही करता था। होमर-काल के यूनानियो के समान सीमा-प्रदेश के लोग क्रूर और हिंस्र थे जोकि वन्य पशुओ के समान एक-दूसरे को मारते थे, किन्तु ये गर्व, आत्मसम्मान तथा असस्कृत वफादारी मे बहुत दृढ थे, वे बिना सीखे ही एक प्रकृत कवि होते थे (जोकि आजकल लोग नही होते है) और पुरुष या स्त्री की अवार्य नियति को अत्यन्त सशक्त भाषा मे व्यक्त कर सकते थे, और उन क्रूरताओ से प्रपीडितो पर के दया व्यक्त करते थे जो क्रूरताए कि वे निरन्तर एक-दूसरे पर करते थे।

एलिजाबेथ के राज्य मे स्कॉटलैंड के साथ राजनैतिक सबध बहुत अधिक और स्थायी रूप से अच्छे हो गये थे क्योकि अब दोनो देशो की सरकारो का एक साझा स्वार्थ हो गया था, और वह था भीतरी और बाहरी शत्रुओ से सुधारवाद की रक्षा करना। स्कॉटलैंड तथा इगलैंड की सेनाओ के बीच सीमा-सघर्ष समाप्त हो गये और ढोरो के लिये आक्रमण भी कम तो हो ही गये। किन्तु रैड्स्डेल तथा उत्तरी टाइने के अगरेज लुटेरो द्वारा अपने अधिक सभ्य देशवासियो के फार्मो को लूटना जारी रहा। एलिजाबेथ के राज्य

के मध्यवर्ती काल मे कामडन "रोम की दीवार" पर स्थित हाउस्टैड्स मे अपनी पुरातत्व सम्बन्धी यात्राओ के लिये पक-क्षेत्रीय सेनाओ के डर के कारण नही जा पाया था जोकि उस प्रदेश को बलात् अपने अधिकार मे किए हुए थी। नीथरबी के ग्राहक लोग, जोकि एस्क और सोल्वे के सगम पर बसा हुआ एक कबीला था, अपने कम्बरी पडौसियो की भूमियो पर निरन्तर धावे करते रहते थे। लूट-खसोट की, और स्त्री-पुरुषो का अपहरण कर धन लेने के लिये उनको कैद रखने की घटनाए राज्ञी एलिजाबेथ के राज्य के अन्त तक एक बहुत सामान्य बात थी।

यद्यपि निम्न भूमियो (पक प्रदेशो) मे लूट की ये घटनाए जारी रही किन्तु १५७० के विद्रोह के दमन से पर्सियो, डेकरो तथा नेविल्लो की सामन्तीय शक्ति पूर्णत नष्ट हो गयी। उस सघर्ष के बाद नार्थम्बरलैंड तथा कबरलैंड पर केवल राजा के वफादार सामन्तो का शासन रहा।

अभी एलिजाबेथ के आरभिक काल मे इस सीमा से तीस मील तक की दूरी पर कैथोलिक सामन्तो और जमीदारो के सरक्षण मे चर्चो मे प्रार्थना (मास) होती थी। किन्तु धीरे-धीरे इस प्रदेश मे बर्नार्ड गिल्पिन जैसे धर्म नेताओ के प्रयत्न से इस प्रदेश मे प्रोटेस्टेटवाद का प्रचार बढा। किन्तु साम्राज्ञी के शासन के दृढ होने के साथ कार्लिस्ले के बिशप लोग क्रमश एकरूपता लाने के लिये बहुत उत्सुक हो उठे थे। किन्तु 'अश्वारोही' जिलो के योद्धा किसानो से बलात् किसी धर्म अथवा अन्य किसी बात को स्वीकार करवा लेना उतना सहज नही था। इसलिये उस प्रदेश मे परिवर्तन बहुत धीरे धीरे हुआ।

एलिजाबेथ के राज्य के अन्त तक कम्बरलैंड तथा नार्थम्बरलैंड के अनेक किसानो ने अपनी भूमियो पर अधिकार मार्चेस के अधिकारियो को आवश्यकता होने पर अपनी सेवाए अर्पित करके रखा था। उत्तर के ये तीव्र अश्वारोही, चाहे ये राजकीय सेवा मे होते और चाहे लूटने वाले कबीलो के साथ, चमडे के कोट तथा इस्पात की टोपी पहनते थे, भाले या धनुष पिस्तौल से सज्जित होते थे और एक स्थानीय नस्ल के तेज दौडने वाले घोडो पर, जोकि उस पकिल प्रदेश मे अपना रास्ता खूब अच्छी तरह से पहचानते थे, वे चढते थे।

१६०३ मे जेम्स प्रथम की हत्या के साथ होने वाले इगलैंड और स्काटलैंड के एकीकरण के बाद सीमा के दोनो ओर के अधिकारियो मे सहयोग सम्भव हो गया, और वे अन्तत पक-प्रदेश की सेनाओ को दबाने मे सफल हो गये और राजा का नियत्रण चोर-घाटियो के भीतर तक स्थापित कर सके। नेवर्थ के 'बेल्टेड विल होवर्ड' ने, जो कि यद्यपि एक कैथोलिक धर्म-विरोधी था, पश्चिमी सीमातो पर राजा जेम्स की उसके अंग-रक्षक के रूप मे सेवा की थी। उसने ग्राहमो तथा अन्य पक-सैनिक कबीलो को उनका पीछा करके मारा और शिकारी कुत्तो के साथ उनके घरो तक उनका पीछा

किया। उत्तरी टेने तथा रेडेस्डेल धीरे-धीरे कानून के अनुशासन मे लाए गये। सत्रहवी शताब्दी के आरभिक वर्षों मे नार्थम्बरलैड के भूस्वामी लोगो ने सर्वप्रथम छोटे किलो अथवा सुरक्षा-स्तभो के बजाय मेनर हाऊस बनाए। यह एक आश्चर्य की बात है कि सीमा का क्रूर असभ्य जीवन, जोकि इसका रूप एलिजाबेथ तक के युग मे था, अत्यन्त प्रगतिशील उद्योगो वाले प्रदेश तथा कोयलो की खानो वाले निम्न टाईने तथा पूर्वी डर्हम के प्रदेशो के बहुत समीपवर्ती प्रदेशो मे अपने पुराने ही ढर्रे पर चल रहा था। ऊपरी सतह के कोयले की प्राप्ति तो रोम द्वारा विजय के समय से भी पहले हो गयी थी, किन्तु अब काने अधिक गहरी होने लगी थी और कान के कार्यकर्त्ता के कार्य का रूप कान के आधुनिक कार्यकर्त्ता के पूर्वजो के बहुत निकट आ गया था। न्यू कैसल, जोकि लण्डन के कोयले के सागर-व्यापारी का बडा केन्द्र था, इस रूप मे विलक्षण था कि यहाँ पर्सियो का सामतीय विश्व, पक-सैनिको का आदिम विश्व तथा कोयला व्यापार, जोकि आधुनिक युग से बहुत भिन्न नही था, सब एकत्र स्थित थे।[1]

सुरक्षा स्तम्भो तथा दृढ किलो से युक्त सीमा-प्रदेश के, जोकि अभी भी एक अस्थिर हालत मे था, दक्षिण मे एलिजाबेथ युग का इगलैड सर्वत्र जमीदार प्रासादो (मेनर हाऊसो) का इगलैड बन रहा था जोकि आकार, सामग्री, और वास्तुकला की शैली सभी मे परस्पर बहुत भिन्न थे, किन्तु सभी उस युग की शान्ति और आर्थिक समृद्धि, प्रदर्शन, सौन्दर्य तथा पृथ्वी पर मानव-जीवन की महिमा मे रुचि के प्रतीक थे।

सम्पत्ति और शक्ति, तथा इनके साथ वास्तुकला के क्षेत्र का नेतृत्व अब चर्च के राजाओ के हाथ से जमीदारो के हाथ मे चले गये थे। धार्मिक भवनो का महान् युग, जो शताब्दियो तक जीवित रहा, अब अन्तत समाप्त हो गया था। नया धर्म पवित्र मठ-भवनो के बजाय "पुस्तक" (बाइबल), दिव्य सन्देश तथा धर्म-गीतो का पोषक था प्रोटेस्टेट इगलैड की धार्मिक आवश्यकताओ की पूर्ति के लिये पहले से ही काफी सख्या मे उत्कृष्ट चर्च विद्यमान थे।

एलिजाबेथ काल की वास्तुकला मे गोथिक तथा क्लासिकी, दूसरे शब्दो मे प्राचीन अग्रेजी और नवीन इतालवी, दोनो प्रकार के तत्वो का समावेश था। राज्य के आरभिक काल मे अपेक्षाकृत अधिक असमजस और चित्रात्मक वास्तुकला का प्रयोग होता था, विशेपत पुराने दुर्ग-मडित भूस्वामी-गृहो को अधिक शात और भव्य घरो मे परिर्वातत करने मे, जैसेकि पैनशर्स्ट और हैड्डन हाल थे। किन्तु उनके साथ-साथ, और जैसे-जैसे समय बीता, नये व्यक्तिगत महलो की इतालवी अथवा क्लासिकी शैली मे एक व्यवस्थित योजना होने लगी, जैसेकि लाग लीट, ऑड्ले इड, कैनिलवर्थ मे लीसेस्टर का

---

[1] ट्यूडरो के काल के सीमा-प्रदेशो के लिये द्रष्टव्य विक्टोरिया काउटी हिस्ट्री, कबरलैड, होजसस् हिस्ट्री आफ नार्थबरलैड तथा डा० रेशल रीड की नोर्थ पार्ट्स अडर दि ट्यूडर्स (ट्यूडर स्टडीज, स० सेटन बाट्सन, १६२६)।

भवन तथा भव्य मॉन्सेक्यूट—जो कि सोमर्सेट के सुदूर जिले मे केवल एक ग्रामीण भू-स्वामी का स्थानीय पत्थरो से बना हुआ घर था किन्तु तब भी निश्चित रूप से ससार भर के सर्वाधिक भव्य और सुन्दर घरो मे से एक था ।

ऑड्ले इड के समान नयी शैली मे बने ग्राम-घरो मे तथा ग्रेशाम के "रॉयल एक्स्चेज" जैसे सार्वजनिक भवनो मे एक जटिल पुनरुत्थान कालीन अलकार बाहरी भाग के पत्थर के काम को और भीतरी भाग के लकडी के काम को एक नया सौदर्य दे रहा था । इसका एक उत्कृष्ट तथा विशुद्ध नमूना गायस कालेज कैब्रिज मे १५७५ मे निर्मित "सम्मान-द्वार" (गेट ऑफ ऑनर) है । एलिजाबेथ युगीन बडे भवनो और प्रासादो की शैली तथा अलकरण की योजना अधिकाशत जर्मन कलाकार, जोकि इसी उद्देश्य से बुलाए जाते थे, निर्माण करते थे । क्योकि उनकी रुचि तथा परम्परा किसी भी प्रकार से बहुत उत्कृष्ट नही थी इसलिये यह सौभाग्य ही समझना चाहिए कि कुछ योग्य स्व-देशी निर्माता तथा कलाकार भी थे ।

अधिक भव्य ग्रामीण प्रासादो के साथ साथ असख्य छोटे भूस्वामी-गृह भी थे जो अनेक प्रकार की शैलियो मे और अनेक प्रकार की सामग्री से बने थे, कुछ पत्थर के, कुछ चेशायर के मोरेटन ओल्डहाल के समान काली और सफेद अर्ध लकडी (हाफ टिबर=भवन निर्माण की एक शैली) के, और कुछ लाल इट के, जहा न पत्थर ही पर्याप्त था और न लकडी ही पर्याप्त थी ।[1] यद्यपि खिडकिया काच की फट्टियो की बनी होती थी, बल्कि जालियो की बनी होती थी, तब भी वे पहले की अपेक्षा बहुत बडी होती थी और उनसे सुन्दर कमरो और एलिजाबेथीय गलियारो मे खूब प्रकाश और वायु आती थी । अब सादा-साफ काच जालियो मे प्रयुक्त होता था, जबकि ट्यूडर युग के आरभिक काल मे जैतून वृक्ष की बढिया छडे इनमे चौरस लगा दी जाती थी, अब केवल बहुत साफ काच ही लगाया जाता था ।

पहले तो बढिया काच विदेशो से आता था, किन्तु आरभिक एलिजाबेथ युग मे इगलैड के उद्योग नॉर्मडी तथा लोरइन के कारीगरो के कारण पहले से उन्नततर हो गये थे । वील्ड, हैम्पशायर, स्टैफर्डशायर तथा लडन के उद्योग अब न केवल खिडकियो के काच ही मुहय्या कर रहे थे बल्कि बोतलो तथा पीने के गिलासो के लिये भी काच दे रहे

---

[1] १५७७ मे हैरिसन ने लिखा था

हमारे जमीदारो के प्राचीन प्रासाद और घर अधिकाशत मजबूत लकडी के बने है, और हमारे वास्तुकलाकार अन्य देशो के वास्तुकलाकारो से किसी भी दृष्टि से पर्याप्त उत्कृष्ट है । ये प्रासाद ईट के, या पत्थर के, अथवा दोनो के बने होते थे, इनके कमरे बडे तथा सुरम्य होते थे, और कार्यालयो के भवन निवास-स्थानो से काफी दूर होते थे ।

थे। ये गिलास वीनस के मुरानो प्रदेश से आने वाले उन कीमती बर्तनो की नकल पर बनाए जा रहे थे जिन्हे केवल धनी लोग ही खरीद सकते थे।

उत्कृष्टतर प्रकार के कमरो मे सफेद चूने से रगी छतो पर प्लास्टर का काम अत्यन्त चटकीला होता था, और इसके मोड बहुत बार रग अथवा स्वर्ण से मडित होते थे। दीवारे पच्चीकारी के काम से अथवा चित्रित कपडो से सजी होती थी जिन पर या तो विभिन्न ऐतिहासिक कथाए चित्रित होती थी अथवा फूल-पत्तिया बनी होती थी, अथवा ये हमारे देश के जैतून की लकडी से अथवा पूर्वी देशो से (अर्थात् बाल्टिक प्रदेशो से) लायी गयी विशेष लकडी (वेन्स्कोट) से सजी होती थी। (हेरिसन)

दीवारो को सजाने का एक अपेक्षाकृत कम खर्चीला ढग था उन पर ही चित्र बना देने का। फ्रेम किये हुए चित्र, सिवाय पारिवारिक चित्रो के, जमीदारो तक के घरो मे बहुत कम होते थे। किन्तु अधिक सम्पन्न प्रासादो मे अवश्य वेनीस की शैली के चित्र लगे होते थे।

ग्राम या नगर के सामान्य लोगो के घरो मे धनियो की अट्टालिकाओ या महलो की अपेक्षा कम परिवर्तन हुए थे। अभी भी वे फूस की छतो वाली लकडी की कुटियाये थी जिनमे इधर-उधर खाली स्थान चिकनी मिट्टी, भूसा मिली मिट्टी तथा पत्थर के ककरो से भरे जाते थे।

हैरिसन ने लिखा है "राज्ञी मेरी के काल मे इस प्रकार की भोडी झोपडिया देख कर स्पेन के लोग हैरान होते थे, विशेषत इस बात पर कि उन अत्यन्त पारिवारिक माधुर्य से पूर्ण घरो मे खान-पान कितना समृद्ध था। यह जीवन इतना समृद्ध था कि ये लोग इस बात के लिये बहुत प्रसिद्ध थे कि "यद्यपि इनके घर मिट्टी और भूसे के बने होते है किन्तु रहते ये राजा के समान है।"

एलिजाबेथ युग का काव्य, सगीत और नाटक जिस उच्चस्तर तक पहुचे थे उतना उच्चस्तर चित्रकला ने सस्था के रूप मे प्राप्त नही किया था, यद्यपि कुछ योग्य कलाकारो ने व्यक्तिगत रूप से राज्ञी तथा उसके दरबारियो के उत्कृष्ट चित्र बनाये थे। निकोलास हिल्लिआर्ड ने, जोकि एक्सेटर के एक नागरिक का पुत्र था, अग्रेजी लघु-चित्र-निकाय (स्कूल ऑफ मिनिएचर्स) का प्रवर्तन किया था। यह सूक्ष्म-कोमल तथा सुन्दर कला उस समय बहुत माग मे थी—न केवल दरबारियो मे, जोकि राज्ञी के लघु-चित्रो के लिये परस्पर स्पर्धा कर रहे थे और एक चित्र के लिये चालीस, पचास और यहा तक कि एक सौ तक ड्यूकैक (एक सोने का सिक्का) देने को तैयार थे, बल्कि सामान्य लोगो मे भी अपने परिवार अथवा मित्रो के स्मारको के लिये इन चित्रो की बहुत माग थी। लघु-चित्रकला का प्रचलन इगलैड मे कोस्वे के युग तक (ज्योर्ज तृतीय के राज्य के अन्तिम वर्षो तक) रहा, वास्तव मे इस कला की हत्या केवल फोटोग्राफी ने की, जैसेकि विज्ञान ने अन्य भी अनेक कलाओ की हत्या की थी।

पुरुषो की पोशाक का खर्चीलापन तथा वैचित्र्य निरन्तर व्यग्य के विषय थे। 'गर्वीले इटली' के तथा फ्रास के फैशनो की अनवरत नकल की जा रही थी। और परिणामत, इस युग के जमीदारो और धनिको के जीवन मे दर्जी का भाग बहुत महत्वपूर्ण था। हीरे और सोने की लडिया तथा अन्य अनेक प्रकार के कीमती अलकार पुरुष उतने ही धारण करते थे जितने कि स्त्रिया करती थी। स्त्रिया और पुरुष दोनो अपने कठो मे अनेक आकारो और रूपो के कठाभरण धारण करते थे। ऐसे फैशन धनिको तक ही सीमित थे, किन्तु दाढी सभी वर्गो के लोग रखते थे। 'उस समय हाल मे बडा उत्सव होता था जबकि सबकी दाढिया लहराती थी।'

जमीदारो-भूस्वामियो को अपने नागरिक जीवन मे अपनी पोशाक के रूप मे तलवार धारण करने का अधिकार था। द्वन्द्व के कानून, जोकि शिष्टाचार-सहिता (कोड ऑफ ऑनर) द्वारा स्वीकृत थे, एक अधिक असभ्य रीति, 'हगामाईहत्या', भू-स्वामी या सामन्त के रक्षको या भृत्यो द्वारा शत्रु की हत्या की रीति, को स्थानान्तरित कर रहे थे।

व्यापार, कृषि तथा व्यापक समृद्धि के निरन्तर बढने के कारण मार्गो पर पहले की अपेक्षा कही अधिक आवागमन था। तीर्थयात्रा की मध्ययुगीन परपरा ने लोगो मे यात्रा तथा भ्रमण के लिये एक रुचि उत्पन्न कर दी थी जोकि धार्मिक प्रयोजन के लिये तीर्थ-दर्शन की परपरा समाप्त हो जाने पर भी बनी रही। औषधोपयोगी वन्य निर्भरो का महत्व अब पवित्र कूओ का स्थान ले रहा था। जैसाकि काम्डन ने लिखा है, सुदूर डर्बीशायर के बक्स्टर प्रदेश मे बहुत बडी सख्या मे धनी और जमीदार लोग भ्रमण के लिये तथा यहा के झरने का पानी पीने के लिये आते थे। धनी यात्रियो के ठहरने के लिये श्रुस्बरी के अर्ल ने सुन्दर निवास-स्थान बनवा रखे थे। स्नान का अभी बहुत प्रचलन नही हुआ था, क्योकि, यद्यपि इसका जल बहुत विख्यात था किन्तु यह स्नान के लिये स्थान बहुत अनुपयुक्त था। एलिजाबेथ युग की सरायो का एक वैशिष्ट्य इस बात मे था कि इनमे यात्रियो की सुविधाओ की ओर व्यक्तिगत ध्यान दिया जाता था। फिनेस मॉरिसन ने, जिसने कि आधे यूरोप की सरायो की योजनाए बनाई थी, अपने अनुभव के प्रकाश मे लिखा था

"ससार मे अन्यत्र कही वैसी सराये बनवाने की सामर्थ्य नही है जैसी इगलैड मे, चाहे इसे अतिथि की अपनी व्यक्तिगत रुचि के अनुसार भोजन तथा अन्य सस्ते मनोरजन के प्रबन्ध की दृष्टि से देखा जाय, चाहे उनकी सुविधाओ का ध्यान रखने की दृष्टि से देखा जाय, और यह बात निर्धन गावो की सरायो मे भी है। क्योकि, जैसे ही कोई यात्री किसी सराय मे आता है सेवक दौड कर उसके पास पहुँचते है और एक उसके घोडे को ले लेता है और चलाता है जबतक कि वह शीतल नही हो जाता, और तब उसकी मालिश करता है और चारा देता है। किन्तु यह मैं अवश्य कहूगा कि इस अन्तिम

बात मे उन सेवको पर बहुत विश्वास नही किया जाता और स्वामी को अथवा उनका ध्यान रखने वाले कर्मचारी को उन पर आख रखनी पडती है। दूसरा सेवक यात्री को कमरा देता है और उसकी आग जलाता है, और तीसरा उसके जूते उतारता है और उन्हे साफ करता है। तब सराय का स्त्री या पुरुष स्वामी आता है, यदि अतिथि सराय के स्वामी के साथ या अन्यो के साथ सार्वजनिक मेज पर खाना खाता है तब खाने पर छ पेस पैसा लिया जाता है, कही कही चार पेस भी, किन्तु यह कम सम्मानजनक माना जाता है और धनी लोग अकेले ही खाना खाते है। अलग कमरे मे खाने वाले को उसके आदेश के अनुसार खाना मिलता है, उसके लिये रसोईघर खुला रहता है और वह अपनी रुचि के अनुसार भोजन परोसने के लिये आदेश दे सकता है। जब वह खाने के लिये बैठता है तब स्त्री या पुरुष सराय-स्वामी उसके साथ रहता है, यदि अतिथि अधिक होते है तो वह कम से कम एक बार अवश्य उसके पास आता है और बैठने के लिये अनुरोध करता है। जब वह खाना खाता है, विशेषत यदि उसके साथ कुछ साथी हो तो, उसे सगीत की सुविधा दी जाती है, जिसे लेने या न लेने के लिये वह स्वतत्र होता है। और यदि वह अकेला हो तो गायक उसे प्रभात मे दिन के लिये शुभकामनाए देते है। कोई व्यक्ति अपने घर मे उससे अधिक अपनी इच्छा के अनुसार सुविधाए नही प्राप्त कर सकता जितनी सराय मे। और विदा होते समय यदि वह सेवक तथा घोडे को सभालने वाले को पुरस्कार के रूप मे थोडे से पेस दे दे तो वे उसकी यात्रा के लिये उसे शुभकामनाए भी देते है।"

सम्भवत, दुर्भाग्यवश इस सम्पूर्ण हार्दिक स्वागत के पीछे एक छल निहित था। शैक्सपीयर ने इन सरायो के दूसरे पक्ष का भी भेद, जैसाकि उसने देखा था, अपने एक पात्र द्वारा हमारे सम्मुख उद्घाटित किया है। रोचेस्टर की सराय के आगन मे पूर्वप्रभात वेला (प्रत्यूष) मे यह पात्र अकेले मे गुनगुनाते हुए कहता है "जबकि चार्ल का तागा अभी नयी चिमनी तक ही पहुँचा था और हमारे घोडे पर अभी ठीक तरह से सामान भी नही लदा था" तब यात्रियो को पता चलता कि वे ईमानदार चाकर आखिर उतने ईमानदार नही थे और न उन्होने उतनी पूरी नीद ही ली थी जितनी फिनेस मॉरिसन के भूस्वामी ने। और उन्हे पता चलता कि वह सेवक एक बदमाश आदमी था जो यात्रियो को अपने से अधिक साहसी चोरो को सौप कर पैसा कमाता था।

विलियम हैरिसन ने उस समय की सरायो का जो विवरण दिया है उससे शैक्सपीयर के चित्रण की पुष्टि होती है। उसने उनके भोजन, शराब, बीअर, बिस्तर तथा मेज पर बिछे पूर्णत स्वच्छ वस्त्र, दीवारो की पच्चीकारी, प्रत्येक अतिथि को उसके कमरे की चाभी देने की व्यवस्था और वहाँ उसे जो स्वतत्रता रहती थी उसकी प्रशसा की है और यूरोप के अन्य भागो मे जो सरायो मे अतिथियो के साथ दुर्व्यव्यवहार होता था उसकी तुलना मे इन सरायो को बहुत उत्तम बताया है। किन्तु, (वह कहता है

कि) "खेद की बात यह है कि ये विनीत सेवक और हँसमुख सराय-स्वामी प्राय ही लुटेरो के साथ मिले होते है। अतिथियो पर नियुक्त ये विनम्र सेवक मन मे यह जानने को उत्सुक होते है कि अगले दिन वह अतिथि किस रास्ते से जाएगा और क्या उसके पास पैसा है ?" बैको की व्यवस्था से पहले सोने और चादी की विशाल मात्रा व्यापार के लिये इन रास्तो पर से ले जायी जाती थी। सराय के नौकर यात्री के सामान के प्रत्येक नग को बडी सावधानी से पकड कर रखते थे जिससे कि उसके भार से अनुमान कर सकते कि उसमे सिक्के है या नही। तब वे अपने अनुसधानो के निष्कर्ष बाहर के अपने साथी लुटेरो को बता देते। सराये अपना अच्छा नाम बनाए रखती थी क्योकि इसकी सीमाओ मे कोई डाका नही पडता था, डाकू कुछ ही मील दूर जगल मे से आ झपटते थे।

हैरिसन लिखता है कि, इस चीज ने अनेक ईमानदार भूस्वामियो को उनकी यात्रा के बीच समाप्त कर दिया। इसी प्रकार से रोचेस्टर सराय के नौकर ने "एक छोटे भूस्वामी को, जोकि अपने साथ सोने की सौ गिन्नियाँ लाया था, कैट के जगल मे फाल्स्टाफ के लुटेरो के गिरोह के हवाले कर दिया था।"

किन्तु सराये केवल यात्रियो के ठहरने के ही उपयोग मे नही आती थी। प्राय ही जमीदार-प्रासाद के लोग तथा उनके अतिथि घर पर खाना खा चुकने के बाद पास की सराय मे जा पहुँचते थे और मुख्य कमरे मे शराब पीते और घटो बैठे रहते थे, क्योकि विदेशी शराब के कुछ कठिन मुआमले मे भूस्वामी अपने घर से सराय के स्वामी के शराब के कमरे को अधिक विश्वसनीय समझते थे। यह प्रथा भूस्वामियो मे एलिजाबेथ की मृत्यु के बाद भी कई सततियो तक जारी रही। ये शराबघर सभी युगो मे नगरो तथा गावो के मध्य तथा निम्न गर्वों के लिये सामाजिक समागम के स्थान होते थे।

एलिजाबेथकालीन इगलैड के इतिहास तथा साहित्य से ऐसा प्रतीत होता है कि उस युग मे विभिन्न वर्गों मे पहले और पीछे दोनो ही कालो की अपेक्षा अधिक समजसता और समरसता थी। यह किसानो के विद्रोहो का, समानतावादी सिद्धान्तो का, जेकोबा-विरोधी शकाओ का तथा उन्नत वर्ग के दर्प और ऐकातिकता का—जैसाकि पीछे जेन ऑस्टेन ने चित्रित किया—काल नही था। शैक्सपीयर के काल मे वर्ग-भेद एक स्वाभाविक वस्तुस्थिति के रूप मे देखे जाते थे, निम्न वर्ग मे इसके लिये कोई ईर्ष्या नही थी और उन्नत तथा मध्य वर्गों मे निम्न वर्ग को 'अधीनता का दिव्य कानून' सिखाने के लिये कोई बहुत व्यग्रता नही थी, जैसीकि हम अट्ठारहवी शताब्दी मे और उन्नीसवी शताब्दी के आरभिक वर्षों मे देखते है, उदाहरणत, दान से चलने वाले स्कूलो की शिक्षा मे। एलिजाबेथकालीन युग की शिक्षा की टिपिकल इकाई व्याकरण स्कूल (ग्रामर स्कूल) था, जिसमे कि सब वर्गो के कुशलतम विद्यार्थी एकत्र पढाए जाते थे अट्ठारहवी

तथा उन्नीसवी शताब्दी की शिक्षा की टिपिकल इकाइयाँ ये दान से चलने वाले स्कूल, ग्राम स्कूल तथा 'महान् पब्लिक स्कूल' थे, जिनमे कि वर्ग-भेद बहुत कडा था। एलिजाबेथ कालीन लोग समाज को उसी प्रकार से सहज भाव से लेते थे जैसे अन्य सब कुछ को, और ये सब चीज मे उस सम्बन्ध मे सचेत हुए बिना, एक समन्वय स्थापित कर देते थे।

वर्ग-भेद, जिसेकि सब बिना विशेष क्षोभ के स्वीकार किए हुए थे, कठोर नही थे और न पूरी तरह से वशपरम्परागत ही थे। व्यक्तियो तथा परिवारो दोनो का सपत्ति की प्राप्ति अथवा हानि के साथ, अथवा केवल जीविका मे परिवर्तन के साथ भी, एक वर्ग से दूसरे वर्ग मे सक्रमण होता रहता था। अब इनमे कोई ऐसी अलघ्य दीवार नही थी जैसी मध्य युगीन इगलैंड मे भूस्वामी तथा उसके कारिदो मे थी, अथवा जैसी फ्रास मे १७८९ तक सामन्तो को जन्मना तथा सबसे पृथक् करती थी। ट्यूडर-काल के इगलैंड मे बीच के वर्गो तथा जीविकाओ मे बडी सख्या मे तथा अनेक प्रकार के लोगो के होने के कारण, जोकि अन्य वर्गो के लोगो से व्यापार तथा दैनिक जीवन के मनोरजनो मे निकट रूप से सम्बधित होते थे, यह कठोरता सम्भव नही थी। इगलैंड का समाज समानता पर आधारित न होकर स्वतत्रता पर आधारित था—अवसर की स्वतत्रता और व्यक्तिगत आदान-प्रदान की स्वतत्रता। ऐसा था उस काल का इगलैंड जिससे कि शैक्सपीयर परिचित था और जिसे उसने स्वीकारा था। सब वर्गो के लोगो ने उसे बराबर आकर्षित किया, किन्तु उसने मानव-हित के लिये वर्ग चिह्न को आवश्यक आधार माना।

राजा के प्रमुख दरबारियो मे भूस्वामियो का एक छोटा वर्ग था जिसे कि महत् व्यक्तिगत प्रतिष्ठा तथा कुछ विशिष्ट कानूनी विशेषाधिकार प्राप्त थे, किन्तु ये लोग कर से मुक्त नही थे। इन लोगो के लिये घर का आडबर रखना तथा आश्रितो को उदारतापूर्वक दानादि देना एक सामाजिक अनिवार्यता थी और यह वे अपनी सामर्थ्य से बाहर जाकर करते थे। सामन्त वर्ग अब अपनी वह सैनिक तथा राजनैतिक शक्ति खो बैठा था जोकि उसे रोसेज के युद्धो तक प्राप्त थी। एलिज़ाबेथ के युग मे हाउस ऑफ लॉर्ड्स के सदस्यो के पास प्रति-व्यक्ति भूमि उसकी अपेक्षा कही कम थी जितनी उसके पास प्लेटाजेनेटो के अथवा हेनरियो के काल मे थी। उस समय कीमतो मे जो क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए उसका उन पर अन्य भूस्वामियो की अपेक्षा अधिक बुरा प्रभाव पडा था, और वह प्रक्रिया अभी आरम्भ नही हुई थी जिसमे कि इन पीअर लोगो ने, उदाहरणत बैडफ़ोर्ड के ड्यूको ने, पीछे छोटे जमीदारो की सम्पत्तियाँ खरीद ली थी, और न अभी कृषको के पूर्ण स्थायित्व की प्रथा ही आरम्भ हुई थी। इन सब कारणो से हाऊस ऑफ लॉर्ड्स ट्यूडर युग मे, विशेषत टोपी धारी बिशपो के समाप्त हो जाने के बाद, उसकी अपेक्षा कम महत्वपूर्ण हो गया था जितना कि अतीत मे यह था और

भविष्य मे दोबारा होने वाला था। पुराना अभिजाततत्र अब दुर्बल पड गया था और नया अभिजाततत्र इसका स्थान लेने के लिये अभी पूरी तरह से तैयार नही हुआ था।

किन्तु एलिजाबेथ का यह युग जबकि लार्डों के लिये अनुकूल नही था, जमीदारो के लिये यह बहुत अनुकूल था। पुराने सामन्त-वर्ग का ह्रास हो जाने से, मठो की भूमियो के वितरण से तथा व्यापार की उन्नति और भूमि-सुधार हो जाने से इन जमीदारो की सख्या, सम्पत्ति तथा महत्व बढ गया था। ट्यूडर तथा स्टुअर्टो के काल के अभिजात वर्ग का जीवन समाज से उतना विच्छिन्न और ग्रामीण नही था जितना कि कुछ इतिहासकार समझते है। वह एक सक्रिय समाज के व्यापक आन्दोलन का एक-मात्र भाग था। छोटे जमीदार, व्यापारी तथा वकील, जिन्होने कि बडी-बडी सपत्तिया बना ली थी, निरन्तर जमीदारो के वर्ग मे सम्मिलित हो रहे थे, जबकि जमीदार वर्ग के छोटे पुत्र उद्योग तथा व्यापार मे सम्मिलित हो रहे थे। इन विभिन्न विधियो से पुराने परिवार नये युग के साथ वैयक्तिक सम्पर्क स्थापित किए हुए थे और गाव नगर से सम्पर्क रख रहा था। इसमे सदेह नही कि उत्तर तथा पश्चिम मे देहात उन ज़िलो के देहात की अपेक्षा अधिक पृथक् था जो लडन के व्यापार से सम्बन्ति थे। किन्तु यह भेद केवल मात्रा-भेद ही था।

अभिजात कुलो द्वारा अपने छोटे पुत्रो को व्यापारिक शिक्षा के लिये भेजने की उपयोगी प्रथा हेनरी के काल मे कम हो गयी, जिसका एक कारण था छोटे जमीदारो की सख्या बहुत कम हो जाना। अट्ठारहवी-उन्नीसवी शताब्दियो मे कुछ जमीदारो का 'व्यापार मे हाथ गदे करने' के प्रति घृणापूर्ण रवैया विशेष रूप से मूर्खतापूर्ण था क्योकि लगभग ये सभी परिवार पूर्णत या अशत व्यापार के सहारे ही आगे बढे थे और बहुत से अब भी इसमे लगे थे, चाहे इन परिवारो की सुन्दर युवतियो को इस सम्बन्ध मे अधिक ज्ञान नही रहता है। किन्तु एलिजाबेथ के समय मे इस प्रकार का मूर्खतापूर्ण गर्व काफी कम हो गया था। लडन के व्यापारियो के शागिर्द अधिकाशत जमीदारो के ही बच्चे थे। ये अपने अभिभावक से अत्यन्त विनम्र व्यवहार करते थे कि वह उन्हे अपने व्यापार मे सहभागी बना ले, किन्तु अपने विश्राम के समय वे "कीमती कपडे पहनते, शस्त्र धारण करते तथा सगीत, नृत्य और तलवार चलाने के स्कूलो मे मनोविनोद के लिये जाते थे।"

"चर्चों मे पाये जाने वाले एलिजाबेथ तथा जेकोबकालीन स्मारको मे अनेक जमीदारो के सम्पत्तिशाली होने का विवरण दिया गया है, और इनका जिस प्रकार से "नागरिक तथा वस्त्र-व्यापारी", "नागरिक तथा पौशाक आदि का विक्रेता" आदि के रूप मे उल्लेख किया गया है उसकी तुलना पीछे के स्मारको मे मिलना कठिन है।"

जबकि जमीदार वर्ग इस प्रकार से व्यापारिक वर्ग के साथ निकट सपर्क मे था, "जैटल मैन" का सम्मानसूचक विशेषण केवल भूस्वामियो (जमीदारो) को ही नही

दिया जाता था। हैरिसन ने लिखा है कि शैक्सपीयर के शैशवकाल मे इस सम्बन्ध मे बडी शिथिलता और उदारता थी

'जो भी कानून का अध्ययन करता था, जो विश्वविद्यालय मे अध्ययनरत रहता था, अथवा भौतिक विज्ञान तथा अन्य विज्ञान पढाता था, अथवा युद्धो मे कैप्टन अथवा उसके सहायक के रूप मे कार्य करता था, अथवा अपने देश मे उपयोगी परामर्श देता था जिससे कि उसके देश को लाभ होता, जिसे आजीविका के लिये शारीरिक श्रम नही करना पडता था, उन सबको 'मास्टर' कहा जाता था, जो विशेषण कि वास्तव मे जमीदारो और सामन्तो का था। और इसमे कुछ ऐसी बात भी नही थी कि इसका प्रयोग निषिद्ध किया जाता।'

उससे (जमीदारो से) अपेक्षा की जाती थी कि वह सेवको आदि को उदारता से पारितोषिक (टिप) देगा, बिल की बहुत ध्यान से जॉच नही करेगा। आदान-प्रदान मे हानि उठाना, उदारतापूर्वक दान देना और प्रतिदान की परवाह न करना, उसकी प्रतिष्ठा का एक आवश्यक अग था। इन शर्तो पर ही उसे उसके आरामपसद तथा विनम्र ग्राम-जन अपनी टोपी उठा कर उसका सम्मान करते थे और उसे "स्वामी" (मास्टर) कहते थे—यद्यपि उसकी पीठ पीछे वे कहते थे कि "इसका पिता बडा ईमान-दार आदमी था और स्वय अपना धान्य लेकर बाजार जाता था।" इस प्रकार से सब प्रसन्न रहते थे। जैसा कि प्रोफेसर टॉने का कहना है, जमीदारो की प्रतिष्ठा किसी कानूनी भेद के कारण नही थी बल्कि लोगो मे साधारण सम्मान के कारण थी। केवल जाति (कास्ट) के कारण लगभग कोई सम्मान नही करता था—सत्रहवी शताब्दी के योद्धा जमीदारो मे जाति का सम्मान करने वाले उससे भी कम थे जितने कि अट्ठारहवी शताब्दी के विजेता जमीदारो मे। लोक-बुद्धि ने इस उक्ति का समर्थन किया कि "महाजनता (जैटेलिटी) पुरानी सपत्ति का दूसरा नाम है।"

हैरिसन जमीदारो के इस विवरण के बाद नागरिको की ओर आता है और उनके व्यापार के क्षेत्र-विस्तार का वर्णन करता है

और जबकि अतीत मे उनका व्यापार केवल स्पेन, पुर्तगाल, फ्रास, डैन्मार्क, नार्वे, स्कॉटलैड तथा आइलैड तक ही था, अब इन दिनो मे उन्होने ईस्ट तथा वैस्ट इडीज को खोज निकाला है, और न केवल केनारी तथा नव-स्पेन की यात्राए की है बल्कि कैथेडुआ, मॉस्कोविया, टार्टारिआ तथा इनके आसपास के प्रदेशो की यात्राए भी की है, जहा से कि, जैसाकि वे कहते है, वे विशाल सामग्री लाते है।

व्यापारी वर्ग के बढते हुए महत्व की सूचना हमे चर्चों तथा उनके स्मारको पर बनी मूर्तियो से मिलती है जिनकी भव्यता की तुलना सामन्तो के स्मारको से की जा सकती है। इनके साथ इनके पुत्रो, पुत्रियो की ससम्मान झुकी हुई मूर्तियाँ पक्ति मे

बनी होती है और आलेख्यो मे औषधालय, अनाथालय तथा विद्यालय स्थापित किये होने के विवरण रहते हैं। समाज इतना मिश्रित हो रहा है कि यदि कोई नाटक-घर का प्रबन्धक भी धनार्जन कर अपने जन्मस्थान मे प्रमुख नागरिक के रूप मे आकर बस जाता है तब उसकी भी अर्ध-मूर्ति (बस्ट) चर्च मे स्थान पा जाती है।

हैरिसन व्यापारियो के बाद छोटे जमीदारो (योमैन) को रखता है। इनमे से कुछ 'चालीस-शिलिंग भूमिधारी' थे, ये अपनी भूमियो पर स्वय कृषि करते थे और पार्लियामेट के लिये इन्हे मताधिकार-प्राप्त था।

किन्तु अधिकाशत योमन (छोटे जमीदार) बडे भूस्वामियो के लिये कृषक थे, और ये पशुचारण, नित्य बाज़ार-गमन तथा नौकर रखने के द्वारा (बडे जमीदारो के समान बेकार नौकर रखकर नही बल्कि ऐसे नौकर जो अपने खाने से अधिक कार्य करते थे) समृद्ध हो जाते थे। कुछ तो इतने सम्पन्न हो जाते थे कि अपव्ययी जमीदारो से उनकी भूमि खरीद लेते थे। ये प्राय ही अपने पुत्रो को विद्यालयो तथा विश्वविद्यालयो मे तथा न्यायालयो मे शिक्षणार्थ भेजते थे, अथवा उनके लिये पर्याप्त भूमि छोड जाते थे जिससे कि वे बिना श्रम के रह सकते और इन विभिन्न प्रकार के उपायो से उन्हे 'प्रतिष्ठित जन' (जेंटलमैन) के स्तर पर उठाने का प्रयत्न करते थे।

आजकल इगलैड के प्राय प्रत्येक भाग मे देहात न केवल एलिजाबेथ कालीन अट्टालिकाओ से भरा पडा है, बल्कि उसमे ट्यूडर तथा आरभिक स्टुअर्ट कालीन वास्तु-कला के अनुसार निर्मित अपेक्षाकृत छोटे घर भी बहुत विद्यमान हैं जिनमे कि अब असामी किसान रहते है। किन्तु ये पहले या तो छोटे जमीदारो के प्रासाद थे अथवा भूमिधारी बडे किसानो की अट्टालिकाए। ऐसे भवन इस बात के स्मारक है कि एलिजाबेथ के काल से लेकर १६६० मे राजतत्र की पुनस्स्थापना तक जमीदारो तथा योमन जमीदारो की सख्या निरन्तर बढ रही थी और सामन्तो की विशाल सम्पत्तिया समाप्त हो रही थी। यह युग ग्रामीण मध्य वर्ग के लिये एक महान युग था।

व्यापारियो तथा योमन जमीदारो के बाद 'चतुर्थ तथा अन्तिम प्रकार का वर्ग' आया, यह था नगर तथा ग्राम का दैनिक मजदूरी पर कार्य करने का वर्ग।

'दास हमारे यहा कोई नही हैं', हैरिसन गर्व के साथ कहता है, और गर्वोक्ति करता है कि हमारे द्वीप की यह विशेषता है कि इस पर जो भी आता है वह अपना स्वामी स्वय हो जाता है। जब लार्ड मैस्फील्ड ने एक भागे हुए नीग्रो-दास सोम्मरसैट के अभियोग मे अपना प्रसिद्ध निर्णय दिया तब इगलैड-प्रदेश पर स्वत स्वतन्त्रता के वरदान का सिद्धान्त दो शताब्दी बाद नीग्रो लोगो पर भी लागू हो गया।

किन्तु, जैसाकि हैरिसन ने लिखा है, रोजी कमाने वाले वर्ग को, जोकि अब यद्यपि दासता की छाया तक से भी दूर था, प्रजातत्र मे न कोई अधिकार था और

न उसकी कोई आवाज थी, किन्तु तब भी वह पूरी तरह से उपेक्षित भी नही था, क्योकि बडे नगरो तथा नगरपालिका वाले छोटे नगरो मे वह योमन जमीदारो के अत्याचार के विरुद्ध शिकायत कर सकता था । और गावो मे तो वे प्राय ही चर्च के अधिष्ठाता, उपाधिष्ठाता, नगरनिरीक्षक, पोलीम अधिकारी आदि तक बन जाते थे, कभी कभी तो वे नगरपालिकाव्यक्ष तक हो जाते थे । प्रजातात्रिक स्वशासन का यह सिद्धान्त मध्ययुगीन दास-कृषको तक मे विद्यमान था यह पचायती कचहरी, अथवा स्वशासन व्यवस्था जमीदारी न्यायालय मे पर्याप्त पुष्ट थी जहाकि छोटे-छोटे निर्णय किये जाते थे । पचायती कचहरी मे, खुले क्षेत्रो मे तथा सार्वजनिक चरागाहो मे अनुसरण की जाने वाली कृषि-नीति पर भी सब लोग सम्मिलित रूप से विचार करते थे । इगलैड के ग्रामीण को न केवल उस समाज मे अधिकार ही प्राप्त थे जिसका कि वह सदस्य था बल्कि उसके कुछ कर्त्तव्य भी थे । इनमे से अनेक बहुत निर्धन होते थे, किन्तु भूमि-लगान की पुरानी व्यवस्था के अन्तर्गत सब वर्गो मे एक स्वतत्रता की भावना विद्यमान थी और यह तब तक रही जबतक कि अट्ठारहवी शताब्दी मे आलवालो ने ग्रामो मे सामुदायिकता को भंग नहीं कर दिया ।

इगलैड के ग्रामीण जनसाधारण के आत्माश्रय तथा आत्मसम्मान का दूसरा चिह्न था सैनिक सेवा के लिये प्रशिक्षण । केवल वाटरलू के युद्ध के बाद की दीर्घ-कालीन शान्ति के दिनो मे ही इगलैड मे यह भावना उत्पन्न हुई कि सैनिक शिक्षा न लेना उनकी स्वतत्रता का अग है । पहले सब युगो मे इसके विपरीत और अधिक युक्तियुक्त विचार ही प्रतिष्ठित था । उत्तर मध्य काल मे धनुष्कौशल तथा ग्राम और नगर के रक्षक दल (मिलिशिया) मे अनिवार्य सेवा की प्रथा ने एक स्वतत्रता की भावना को जन्म दिया था जोकि, जैसाकि फ्रोएस्सर्ट, फोर्टेस्क्यू तथा अन्य लेखको ने लिखा है, इगलैड का एक विलक्षण गुण था । और यह स्थिति एलिजाबेथ काल मे भी यथावत् बनी थी, यद्यपि लम्बे धनुष का स्थान अब छोटी बन्दूक ने ले लिया था ।

हैरिसन ने लिखा है "इगलैड मे शायद कोई गाव इतना निर्धन नही होगा जिसके पास कम से कम तीन-चार सैनिको के लिये पर्याप्त सैन्य सामग्री नही हो, जैसे एक धनुर्धारी, एक बन्दूकधारी, एक भाले वाला और एक बर्छाधारी । उपयुक्त सैन्य-सामग्री सर्वसम्मति से एक नियत स्थान पर रखी जाती है जहा से कि तुरत उपलब्ध हो सके और एक घटे की सूचना के साथ सज्जित की जा सके ।"

१५५७ मे जिला अधिकारी के पद पर शैरिफ के स्थान पर लार्ड ल्यूटीनेट की नियुक्ति प्रत्येक जिला-रक्षा-दल के सेनापति के रूप मे हुई । वह तथा उसके छोटे अधिकारी लोग सैनिको, सैन्य सामग्री तथा शस्त्रागारो का नियमित रूप से निरीक्षण करते थे । एलिजाबेथ की सुयोजित वित्त-नीति ने स्थानीय तथा स्वैच्छिक अर्थ-स्रोतो पर अधिकाधिक उत्तरदायित्व डाल दिया, किन्तु यह व्यवस्था सफल रही । उत्तर के

सामन्तो (अर्ल्स) का विद्रोह बिना युद्ध के ही दबा दिया गया था, क्योकि २०,००० रक्षक दलो ने, जोकि शिक्षित और शस्त्र-सज्जित थे, पहले ही सकेत पर राज्ञी तथा प्रोटेस्टेट धर्म की रक्षा के लिये रणक्षेत्र सँभाल लिया था। जब हमारे युद्ध-पोत किनारो से चले उस समय उनसे दोगुणे वहा एकत्र थे और निरन्तर एकत्र हो रहे थे, जबकि तूफान हवा से पहले ही गुजर गया। इगलैड के पास कोई नियमित सेना नही थी, किन्तु तब भी वह असुरक्षित नही था। प्रत्येक मुहल्ले को रक्षा-दल के लिये बहुत सख्या मे शिक्षित और शस्त्र-सज्जित सैनिक देने होते थे, प्रत्येक धनी व्यक्ति को एक या अधिक व्यक्तियो का प्रबन्ध करना होता था। अशत तो स्वेच्छा से और अशत बाध्यता से राष्ट्रीय कर्त्तव्य का पालन हो रहा था।

दूसरे देश पर चढाई के लिये यह व्यवस्था बहुत दोषपूर्ण थी, वास्तव मे शत-वर्षीय युद्धो मे तथा क्रामवेल काल मे यूरोप महाद्वीप मे कुछ भी महत्व की विजय प्राप्त करने वाली एकमात्र सेनाए वे थी जोकि डचो या अन्य दूसरे देशो की सेवा मे थी।

यह भी सयोग की बात ही थी कि स्पेन के कुशल सैनिको ने इगलैड मे प्रवेश नही किया। क्योकि अब इगलैड की रक्षा-सेना पहले के समान दूसरो से उत्कृष्ट नही थी, जो उत्कृष्टता कि उन्हे पहले लबे धनुष के कारण प्राप्त थी। राज्ञी के सम्पूर्ण राज्य-काल मे लबे धनुष को छोटी हथ-बन्दूक उसी अनुपात मे स्थानान्तरित कर रही थी जिस अनुपात मे यह मार की दूरी, त्वरा तथा कवच को छेदने मे धनुष से उत्कृष्टतर हो रही थी। राज्ञी के राज्यकाल के आरभ मे अच्छा वेतन पाने वाले लडन-रक्षक सैनिको का भी अधिकाश भाग अभी धनुर्धारी ही था, किन्तु सर्वोच्च सैन्य-दल उस समय भी बन्दूक और भालो से सज्जित था। एक सन्तति बाद जब स्पेन पर नौ-आक्रमण किया गया उस समय लडन के ६००० शिक्षित रक्षा-सैनिको मे से एक भी धनुर्धारी नही था, यही अवस्था अन्य दक्षिणी जिलो मे थी। एक दशाब्द बाद शैक्सपीयर ने एक नाटक के दृश्य मे फालस्टाफ को शान्ति कानूनो के अधिकार के बल पर कॉट्स्वोल्ड के ग्रामीणो पर दबाव डालते हुए चित्रित किया है, उसमे वह धनुर्धारियो की माग नही करता है बल्कि केवल बन्दूकधारियो की माग ही करता है। १५६५ मे प्रिवी काउसिल (इगलैड की सर्वोच्च न्याय-सभा) ने घोषित किया कि आगे से युद्धास्त्रो के रूप मे धनुष कभी नही दिये जाय, और इस प्रकार इगलैड के इतिहास मे एक महान् अध्याय का अन्त हुआ। क्रीडा मे बन्दूक ने धनुष को अपेक्षाकृत मन्द गति से स्थानातरित किया। १६२१ तक मे कैंटर्बरी के आर्च बिशप ने एक हिरण पर तीर चलाया जो दुर्भाग्यवश वन-रक्षक के लगा और वह मर गया। किन्तु उस समय तक बहुत से शिकारियो ने जगली पक्षियो को छिप कर मारने के लिये लबी गन का प्रयोग आरभ कर दिया था, यद्यपि 'उडती चिडिया' मारना अभी तक एक अत्यन्त कठिन कार्य माना जाता था।

एलिजाबेथ के राज्य मे धार्मिक मतभेद तथा विदेशी भय के बावजूद जो सुव्यवस्था रही उसका कारण था प्रिवी काउसिल (जोकि ट्यूडर युगीन इगलैड की वास्तविक

शासन-सभा थी) तथा काउसिल के न्यायिक अधिकारो के प्रतिनिधि विशेष न्यायालयो के माध्यम से राजा का नियत्रण होना। ये न्यायालय—दि स्टार चैम्बर, वेल्स तथा उत्तर की न्यायसमितिया, दि चासरी न्यायालय, उच्च आयोग का धार्मिक न्यायालय—पीछे स्टुअर्ट-काल की ससदीय क्रान्ति (पार्लियामेटरी रेवोल्यूशन) द्वारा समाप्त कर दिये गये थे क्योकि ये साधारण कानून के न्यायालयो के प्रतिद्वदी थे और क्योकि ये अपनी दोषपूर्ण जाचविधि के कारण तथा राज्य के प्रति झुकाव के कारण व्यक्तिगत स्वतत्रता के लिये घातक थे। किन्तु ट्यूडर युग मे इन्ही परमाधिकार न्यायालयो (प्रीरोगेटिव कोर्ट्स) ने कानून के सम्मान के लिये बाध्य करके इगलैड के लोगो की स्वतत्रताओ की रक्षा की, तथा अधिकारियो को बिना किसी भय और रयायत के कानून लागू करने के लिये प्रोत्साहित तथा बाध्य करके साधारण अग्रेजी कानून को बचाया। प्रिवी काउसिल तथा परमाधिकार न्यायालयो ने स्थानीय समूहो तथा स्थानीय शक्ति-सम्पन्न लोगो द्वारा न्यायाधीशो तथा ज्यूरियो को आतकित करने से रोका ज्यूरी को आतक-रहित कार्य कर सकने का अवसर मिलने से जो लाभ समाज को हुआ वह उसकी तुलना मे कही महत् था जो प्रिवी काउसिल के राजनैतिक महत्व के अभियोगो मे इतस्तत हस्तक्षेप से होता था। इस प्रकार से साधारण कानून तथा इसके न्यायाधिकरणो को स्वय उन न्यायालयो से ही सरक्षण प्राप्त हो गया जो इसके प्रतिद्वदी थे। इसके अतिरिक्त, परमाधिकार न्यायालयो ने आधुनिक युगानुकूल अनेक नये कानून-सिद्धान्तो का समावेश किया जो पीछे देश की कानून-व्यवस्था मे समाविष्ट कर लिये गये।

दूसरे देशो मे सामतयुगीन कानून उतना अच्छा नही था जितना कि मध्ययुगीन इगलैड का साधारण कानून था, और उसे आधुनिक आवश्यकताओ के अनुकूल नही बनाया जा सकता था। इस कारण से यूरोप का सामन्तयुगीय कानून और इसके साथ ही यूरोप की मध्य युगीन स्वतत्रताए भी इस युग मे रोम के कानून की स्वीकृति की आधी मे, जोकि एक निरकुशतावादी कानून था, बह गयी। किन्तु इगलैड मे मध्ययुगीय कानून, जो मूलत स्वतत्रता तथा व्यक्तिगत अधिकारो की स्वीकृति पर प्रतिष्ठित था, सुरक्षित रहा, उसका आधुनिकीकरण हुआ, उसका सशोधन सवर्धन हुआ, और सबसे बढकर वह, 'ट्यूडर निरकुशता' के न्यायालयो तथा काउसिल द्वारा लागू किया गया जिससे कानून की पुरानी व्यवस्था तथा पुरानी पार्लियामेट नये युग मे एक नयी सप्राणता के साथ अतिजीवित रहे।

इसी प्रकार से, प्रशासन के क्षेत्र मे भी, ट्यूडर युग की प्रिवी काउसिल ने पुराने और नये का तथा व्यक्तिगत स्वतत्रता और राष्ट्रीय अधिकार का सामजस्य किया। इसी प्रकार से, केन्द्रीय अधिकार को स्थानीय शक्ति पर आरोपित किया गया, किन्तु यह फ्रास के समान स्थानीय जमीदारो या छोटे सामन्तो को दबा कर उनके स्थान पर बडे सामतो या उनके प्रतिनिधियो को भेज कर नही किया गया बल्कि स्थानीय जमीदारो

को ही राज्ञी के न्याय तथा शाति के प्रतिनिधियो के रूप मे नियुक्त करने का अधिक प्रभावशाली साधन उपयोग मे लाया गया। ये लोग राज्ञी के सभी कार्यो का सम्पादन करते थे। उनके लिये न केवल उनकी राजनैतिक तथा धार्मिक नीतियो को क्रियान्वित करना ही आवश्यक था बल्कि न्यायालयों के छोटे निर्णयो को लागू करना तथा स्थानीय शासन के सभी कर्त्तव्यो का निर्वाह करना भी था, जिनमे नया निर्धन-कानून (पूअर लॉ) तथा दैनिक मजदूरी और कीमतो का नियन्त्रण भी शामिल है। ये मुआमले न तो अहस्तक्षेप के सिद्धान्त के अनुसार स्वत व्यवस्थित होने के लिये छोड दिये जाते थे और न स्थानीय अधिकारियो की मनमानी पर ही छोडे जाते थे। ये राष्ट्रव्यापी ससदीय अधिनियम द्वारा निर्धारित होते थे और इन्हे प्रत्येक जिले मे लागू करना 'शान्ति पालको' का कार्य था। यदि वे अपने कठिन कर्त्तव्यो के पालन मे शिथिल होते तो प्रिवी काउ-सिल की सतर्क दृष्टि उन पर आ पडती और उसकी लबी भुजा शीघ्र उन तक पहुचती। 'शान्ति रक्षक' अभी तक आत्मपूर्ण कानून नही थे जैसेकि वे हेनरी-कालो मे हो गये थे। सामतीय शक्ति तथा स्थानीय स्वार्थ ऐसी शक्ति के नियन्त्रण मे थे जिनके लिये सम्पूर्ण राष्ट्र के हित समान थे। एलिजाबेथीय तथा आरभिक स्टुअर्ट युगो के इस पक्ष की प्रमुखतम विशेषता निर्धनो तथा बेरोजगारो की व्यवस्था थी। सब मिलाकर, उस समय (१५५६-१६४०) स्थिति आरभिक ट्यूडर युगो की तुलना मे अच्छी थी, किन्तु तब भी अनेक बार कठिन समय इन युगो मे भी आए। यद्यपि कृषि-क्षेत्र मे उपद्रव तथा आलवालो के प्रदेशो मे जनसख्या की कमी की शिकायते अब अपेक्षाकृत कम थी किन्तु ग्रामीण प्रदेशो मे बढते हुए उद्योगो मे नियमित बेकारी-चक्र चलता था, यह स्थिति विशेष रूप से गृह-उद्योगो मे थी। फैक्टरी व्यवस्था मे, जोकि उस समय तक अभी शैशव मे थी, एक पूजीवादी नियोक्ता अपने कार्य को यथासभव लबे समय तक जारी रखने मे समर्थ भी था और उत्सुक भी, उस अवस्था मे भी, यदि समय प्रतिकूल होता, वह माल सग्रह कर रख सकता था और ऐसे समय की प्रतीक्षा कर सकता था जबकि वह बेचा जा सकता। किन्तु गृह-उद्योगपति अपने माल की माग कम हो जाने पर अपना उत्पादन जारी करने मे उतना समर्थ नही था। एलिजाबेथ-काल मे जब कभी दुष्काल आये (जैसे नीदरलैड के स्पेन देशीय शासको के साथ सघर्ष होने पर हुआ जब-कि उन्होने इगलैड के माल के लिये एटवर्प को बन्द कर दिया था) तब वस्त्र-गृह-उद्योग के मजदूरो ने व्यापारियो से माग खतम होते ही अपने करघे खाली छोड दिये। चक्रिक बेरोजगारी वस्त्र-व्यापार का एक अग थी जो उस समय भी उसमे रही जबकि यह बहुत उन्नति कर रहा था।

ऐसे आपत्कालो का मुकाबला करने के लिये निर्धन-कानून ने प्रयोगो की एक दीर्घ शृखला के बाद निश्चित रूप लिया। स्थानीय रूप से ये प्रिवी काउसिल के कठोर आदेश के रूप मे शान्ति न्यायाधिकारियो द्वारा लागू किये जाते थे। काउसिल निर्धनो के स्वार्थो के प्रति सच्चा सौहार्द रखती थी, जिसके साथ कि जनजीवन की

व्यवस्था भी निर्भर करती थी। अब वैसे 'पुष्ट भिखारियो' के दल दोबारा नही होने वाले थे जिन्होने कि हेनरी अष्टम् के दिनो मे ईमान्दार नागरिको को त्रस्त कर रखा था। अब एक अनिवार्य निर्धन-कर लगा दिया गया था जोकि क्रमश अधिकाधिक कठोरता से लिया जा रहा था। इस कोश मे से न केवल निर्धनो को ही सहायता दी जाती थी बल्कि प्रत्येक प्रदेश मे निर्धनो के ओवरसीयरो को आवश्यक माल खरीदने के लिये भी बाध्य किया जाता था जिससे बेकारो को कार्य मिल सकते—सन, ऊन, सूत, लोहा तथा अन्य ऐसी वस्तुओ की इतनी मात्रा जितनी निर्धनो को कार्य पर लगाए रखने के लिये पर्याप्त होती। (१६०१ का अधिनियम)।

इसी प्रकार से अभाव के समय, जैसे १५९४ तथा १५९७ की फसले खराब होने पर, प्रिवी काउसिल सदैव के समान शान्ति-न्यायाधीशो के माध्यम से अनाज के भावो पर नियत्रण रखती थी और आवश्यक अनाज विदेशो से मगवाकर अकालग्रस्त क्षेत्रो मे उसका वितरण करती थी। इसमे सन्देह नही कि निर्धन-कानून तथा खाद्य सामग्री का वितरण अभाव के कालो मे अपर्याप्त होते थे, किन्तु सिद्धान्त तथा व्यवहार दोनो मे एक अनिवार्य राष्ट्रीय व्यवस्था विद्यमान थी, और निर्धनो के लिये जो व्यवस्था थी वह पुराने इगलैंड के किसी भी काल से उत्कृष्टतर थी और फ्रास तथा यूरोप के अन्य देशो मे उसकी तुलना मे भविष्य मे अनेक सन्ततियो तक कोई व्यवस्था नही हुई। (इ एम लिओनार्ड, इगलिश पूअर रिलीफ, डब्लू जे एश्ले, इकनोमिक आर्गेनाइजेशन ऑफ इगलैंड)।

शान्ति के न्यायाधीशो के न्यायिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा प्रशासनिक अधिकार इतने विविध तथा इतने महत्वपूर्ण थे कि ये लोग इगलैंड के सबसे अधिक शक्ति-सम्पन्न लोग हो गये। ये प्राय ही ससद के लिये निर्वाचित हो जाते थे, जहा पर ये उन कानूनो तथा नीतियो की, जिनको ये स्वय लागू कर चुके होते थे साधिकार आलोचना करते थे। ये राज्ञी के कर्मचारी होते थे, किन्तु ये न तो उससे वेतन पाते थे और न उस पर आश्रित थे। ये ग्रामो के जमीदार थे जो कि अपनी निजी सपत्तियो के सहारे ही रह रहे थे। ये सबसे अधिक मूल्य अपने पडोसियो तथा अपने प्रदेश के जमीदारो और सामान्य लोगो की अपने प्रति सम्मति को देते थे। इसलिये जब अपने प्रदेश के जमीदार राजा की राजनैतिक या धार्मिक नीतियो की तीव्र आलोचना करते, जैसाकि स्टुअर्ट के काल मे हुआ, तब राजा के पास ग्राम-प्रदेश पर शासन करने के लिये कोई व्यवस्था नही रह जाती थी। उदाहरण के लिये, यह १६८८ मे प्रमाणित हुआ, किन्तु ऐसा १५८८ मे नही था। कुछ जमीदार लोग, विशेषत उत्तर तथा पश्चिम मे, एलिजाबेथ की 'सुधार-नीति' के कडे विरोधी थे, किन्तु उनके वर्ग मे से निरन्तर अधिक से अधिक

सख्या मे लोगो ने नये धर्म का समर्थन किया, और परिणामत सरकार इस मत के शान्ति-न्यायाधीशो का, उनके अधिक विद्रोही पडोसियो को रोकने, और आवश्यकता होने पर कैद भी करने मे उपयोग कर सकी। ऐसा बल-प्रयोग यदि लडन से भेजे गये वेतन-भोजी अधिकारी करते तब गावो का जनमत उनका कही अधिक विरोध करता और यह राज्ञी के कोश पर अधिक बोझ भी होता।

अध्याय ७

शैक्सपीयर का इंगलैंड (१५६४-१६१६)

धर्म और विश्वविद्यालय। एलिजाबेथ के राज्य की समाज-नीति। उद्योग तथा सागर-जीवन। शैक्सपीयर। रानी एलिजाबेथ, १५५८-१६०३। स्पेन पर पोत आक्रमण १५५८।

सागर-यात्रा मे तथा खोज मे, सगीत, नाटक, कविता तथा सामाजिक जीवन के अनेक पक्षो मे हम शैक्सपीयर के इगलैड को बिना किसी झिझक के एक स्वर्णिम युग कह सकते है—एक सामजस्य तथा सृजन-शक्ति का युग। किन्तु इस काल का धार्मिक जीवन स्पष्ट अधिक धुँधला, कम आकर्षक, और निश्चित रूप से कम सामजस्यपूर्ण दिखाई देता है। 'विवेकी हूकर' के अतिरिक्त एलिजाबेथ कालीन धार्मिक जगत् का ऐसा एक भी नाम नही है जो ध्यान मे आता हो। तो भी, यदि उस काल के स्पेन, फ्रास, इटली और नीदरलैड के दुर्भाग्य पर विचार करे, जो धर्म के कारण उनका हुआ, तो हमे अपना भाग्य सराहना होगा कि महारानी की नीति तथा उसकी प्रजाओ की समझदारी के कारण धार्मिक कलहे बहुत नियत्रण मे रही और इन्होने एलिजाबेथ के इगलैड के जनजीवन को अस्तव्यस्त नही किया। इसके अतिरिक्त, शैक्सपीयर-युग के धार्मिक जीवन का यह केवल एक निषेधात्मक गुण ही नही है। स्वय शैक्सपीयर तथा एड्मड स्पेसर भी अपने युग की ही सन्तान थे और उन्होने इस युग के धार्मिक वातावरण को अपने सास के साथ आत्मसात् किया था, जैसाकि अन्य युगो के लैगलैड, मिल्टन, वड्र्स्वर्थ तथा ब्राउनिग अपने-अपने युगो की धार्मिक चेतना के उच्चतम सृजन थे। शैक्सपीयर के समकालीनो मे बहुत से अत्यन्त अनुदार शुद्धाचारवादी, रोमन चर्चवादी तथा बहुत से सकुचित आग्ल चर्च के अनुयायी भी थे। किन्तु कुछ और भी था जो एलिजाबेथ युग की विशेषता थी, यह ऐसी धार्मिक भावना थी जो न प्रमुखत कैथोलिक थी और न प्रोटेस्टेट, किन्तु जो रूढि और अधविश्वास से विमुख थी और मुख्य रूप से आध्यात्मिक थी।

एलिजाबेथ के राज्य के प्रथम वर्ष मे ही प्रत्येक पादरी-प्रदेश मे उपद्रव आरम्भ हो गये। अनुगामी सन्तानो के लिये क्रानमर की अग्रेजी-प्रार्थना पुस्तक को लेटिन भाषा मे लिखे मास के स्थान पर पढने का पुन विधान किया। किन्तु धर्म मे इस परिवर्तन के साथ चर्चों मे पुजारियो का परिवर्तन नही हुआ। लगभग ८००० पादरियो

मे से २०० से अधिक को पदच्युत नही किया गया। जिलाधीश लोग कानून-पालन परपरा से ही करते थे और उनके नागरिक, जोकि स्वय भी समान रूप से कानून का पालन करने वाले थे, कानून को कार्यान्वित करने के लिये उसका बुरा नही मानते थे। यदि कोई अधेड आयु का व्यक्ति होता तो वह इस बात के लिये अभ्यस्त होता था कि जो शक्ति मे है उसके अनुसार अपने धार्मिक व्यवहार को बदल ले। कुछ जिलाधीश तो पुजारी या पादरी भी रहे होते थे जिन्हे कि अनेक प्रकार के धार्मिक अनुभवो का परिचय होता था। जब रानी मेरी के बाद उसकी बहन राजगद्दी पर बैठी उस समय कोई ही जिलाधीश एक श्रद्धालु प्रोटेस्टेट होता था, किन्तु तब भी वह पोप की आज्ञा का कोई आदर नही करता था, उसके लिये अपने 'व्यक्तिगति निर्णय' के बारे मे दूसरे का परामर्श लेने का विचार उसके स्वभाव के अत्यन्त विपरीत था, और यदि वह ईमानदारी से चाहता कि वह चर्च का आज्ञापालक रहे तो वह उस आज्ञा को किस प्रकार सुन सकता था ? उसे यह विश्वास करना सिखाया गया था कि यह आज्ञा राजा के मुँह के माध्यम से ही प्राप्त होती है, और १५५९ मे यह आज्ञा और किसी स्रोत से आती भी नही थी। धार्मिक सेवाओ तथा सिद्धान्तो को इसलिये स्वीकार करना कि ये राजा, पार्लियामेट (ससद) अथवा प्रिवी काउसिल (सर्वोच्य न्याय सभा) द्वारा आदिष्ट है, उस समय पादरियो को न केवल लाभकर ही प्रतीत हुआ बल्कि पूर्णत उचित भी लगा।

धर्म के प्रति इस प्रकार का रवैया था उन इरास्मस मतावलबियो का जिन्होने कि इगलैड के लोगो को परिवर्तनो की उस आपद्पूर्ण शताब्दी मे से पार लगाया। हमारे आज के व्यक्तिगत स्वतत्रता के आदर्श के लिये यह एक अत्यन्त जघन्य विचार है, किन्तु उस समय इस धार्मिक सिद्धान्त को अधिकाश ईमानदार लोग स्वीकार करते थे। बिशप ज्यूएल ने, जोकि एलिजाबेथ युग के आरम्भिक वर्षों के विचारो का सर्वोत्कृष्ट व्याख्याकार था, कहा कि "यह हमारा सिद्धान्त है कि, कोई भी व्यक्ति, किसी भी वर्ग का चाहे वह हो—चाहे वह साधु हो, चाहे उपदेशक हो, नेता हो अथया धर्म-दूत हो—उसे राजा तथा उसके दड-नायको के शासन के अधीन होना चाहिये।"

राजा तथा दड-नायको के अधिकार-क्षेत्र मे धर्म का भी समावेश था। सब इस बात मे सहमत थे कि राज्य मे केवल एक ही धर्म हो सकता है, और रोमनवासियो तथा कठोर शुद्धाचारवादियो के अतिरिक्त सब इस बात मे सहमत थे कि राज्य को यह निर्णय करने का अधिकार है कि कौन सा धर्म हो।

यह सिद्धान्त, जोकि मध्ययुगीन धारणा के उतना ही प्रतिकूल था जितना आधुनिक धारणा के, एलिजाबेथ युगीन इगलैड के अनुकूल था। यह राज्ञी के पिता के काल मे पादरियो के विरुद्ध लौकिको के सामाजिक विद्रोह का स्वाभाविक राजनैतिक परिणाम था। ट्यूडर-काल के इगलैडवासी अधार्मिक नही थे किन्तु वे पादरी-विरोधी थे और

इसलिये वे इरास्मस मत के थे। इस मनोवृत्ति ने स्वय पादरियो को भी प्रभावित किया था, जोकि धार्मिक शिक्षा-केन्द्रो मे पुजारी के रूप मे शिक्षित नही हुए थे बल्कि अग्रेजी समाज ही के एक भाग थे।

इसलिये एलिजाबेथ-काल के आरभिक वर्षो मे पादरी लोग सामान्य रूप से आज्ञानुसारी और विनम्र थे। किन्तु उसमे कुछ ऐसे उत्साही प्रोटेस्टेट भी थे जो धर्म-परिवर्तन कराने मे सक्रिय रूप से सलग्न थे। इनमे से कुछ वे थे जो राज्ञी मेरी की आकस्मिक मृत्यु के कारण स्मिथफील्ड की आग से बच रहे थे, अथवा वे थे जो प्रवास काट कर लौटे थे और जिनेवा के जल-प्रपातो वाले प्रदेश से अर्जित काल्वेनवादी धर्मान्धता से परिपूर्ण थे। ये लोग मन से इरास्मसवादी नही थे। उन्होने पोप राजकुमार के आदेशो की उपेक्षा कर दी होती, किन्तु उन्हे ज्ञात था कि एलिजाबेथ ही वास्तव मे इगलैंड तथा पोप के अधिकार-विस्तार के बीच मे बाधक है, इसलिये उन्होने उसकी चर्च सम्बन्धी सन्धि को इस विचार से स्वीकार कर लिया कि जब उचित अवसर उपस्थित होगा उसमे सशोधन करवा लेगे। रोम तथा स्पेन के विपरीत, वे नवीन सधि के बलवत्तम रक्षक थे, किन्तु एक दूसरे दृष्टिकोण से देखा जाय तो, वे इसके भयानकतम शत्रु थे।

१६५५ के पुजारियो मे से अधिकाश, जोकि अपना धर्म पार्लियामेट-अधिनियमो से बना बनाया स्वीकार करने को तत्पर थे, किसी ऐसी परम्परा से रहित थे जो उनके मत्रीत्व को उत्साह तथा समर्थन प्रदान कर सकती। किन्तु अतिवादी प्रोटेस्टेटो मे एक सजीव श्रद्धा थी जिसके कारण वे कुछ दशाब्दो तक पादरियो मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण वर्ग रहा। यह ऐसा काल था जबकि साधारण लोग शिक्षा और उत्साह दोनो मे पिछडे हुए थे।

राजा हेनरी के काल से चल रही पादरी-विरोधी क्रान्ति के बाद से पुजारी अब स्वर्धा या घृणा के विषय नही रहे थे, किन्तु प्राय ही उनको तिरस्कृत और निरादृत किया जाता था। स्वय एलिजाबेथ भी चर्च की भूमियो तथा सम्पत्तियो का अपहरण करती रही और कभी-कभी वह बिशप-पदो को इसलिये रिक्त रखती थी कि मठो के किराये आदि राजा को मिल जॉय। उसके प्रमुख बिशप निरन्तर उसके मत्री विलियम सिसिल से विशुद्ध रूप से धार्मिक मुआमलो मे भी परामर्श लेते थे और शक्ति-सम्पन्न लौकिको द्वारा दमन या शोषण की अत्यन्त क्षुद्र घटनाओ की भी उससे शिकायत करते थे।" चर्च के साथ नागरिक सेवा के एक भाग के रूप मे व्यवहार किया जाता था, जो समादृत तो था किन्तु जो निर्धन राजा तथा शोषक दरबार का एक असहाय शिकार था। चर्च प्रदेश के छोटे क्षेत्र की राजनीति मे राज्याधिकारी धार्मिक अधिकारी को दबाता था। "लव्ज लेबर इज लास्ट" के युवक लेखक ने पुजारियो के प्रति लौकिको के दया तथा आक्रोश-मिश्रित व्यवहार को देखा था।

इस सब का अर्थ है कि हेनरी के काल मे पादरी-विरोधी आन्दोलन द्वारा उत्पन्न भू-उभार धीरे-धीरे ही कम हो रहा था। तो भी, यह कम हो रहा था। रानी के राज्य के अन्त तक आग्ल चर्च के पादरी अपेक्षाकृत अच्छी स्थिति मे हो गये थे। अब वे अपने पडौसियो द्वारा अधिक समादृत तथा अधिक आत्मविश्वास-पूर्ण थे। जब स्टुअर्ट राजाओ ने चर्च का अधिक सम्मानपूर्ण सहयोग के लिये हाथ पकडा तब लौकिक लोग एकबार पुन पादरियो के अभिमान के विरुद्ध शिकायत करने लगे। राज्य-सम्मान ने धर्माधिकारी को राज्याधिकारी के बराबर सिर उठाने को प्रोत्साहित किया।

एलिजाबेथ के राज्य मे सामाजिक जीवन मे यह एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ कि पादरियो को एकबार पुन, और इस बार अन्तिम रूप से, अपने साथ पत्नियाँ रखने का अधिकार मिल गया। बहुत से धर्माधिकारी, जोकि १५५३ मे रोमन कैथोलिक-वाद की पुन स्थापना को स्वीकार करने को तत्पर थे, मेरी के काल मे आजीविका से इस कारण से वचित कर दिये गये थे कि उन्होने एड्वर्ड षष्ठ के कानूनो के अनुसार विधिवत् विवाह किया था। एलिजाबेथ के काल मे उनकी स्वतन्त्रता उन्हे लौटा दी गयी। बडी चतुराई से यह कहा गया कि "क्योकि मठीय सम्पत्तियो के वितरण ने 'सुधार' के भविष्य को लेकर निहित स्वार्थो को जन्म दे दिया है इसलिये पादरियो पर से वैवाहिक प्रतिबन्ध उठा लेने से अल्प-सस्कृत पादरियो ने इसकी प्रगति की छाया मे पारिवारिक स्वार्थो का पोषण आरम्भ कर दिया है, जो स्वार्थ कि इसकी अन्तिम सफलता को असदिग्ध बनाने के लिये महत्व-रहित नही है। (कुमारी हिल्डा ग्रीव की स्टडी आफ दि पार्सन फार्बूँस् आफ दि क्लर्जी इन एस्सेक्स, डिप्राइव्ड अण्डर मेरी, आर एच एम १६४०)।

विवाह करने की स्वतत्रता से बहुत से ईमान्दार व्यक्तियो को बहुत सुविधा का अनुभव हुआ होगा, और इस प्रकार से बच्चो की एक उत्कृष्ट जाति का पोषण हुआ। अनेक पीढियो तक इगलैंड को उत्कृष्ट व्यक्तियो की एक परम्परा मिली। इस परपरा मे से इगलैंड की विभिन्न सेवाओ के लिये, जिनमे चर्च-सेवा भी शामिल है, अनेक उत्कृष्ट तथा ईमान्दार व्यक्ति आए। किन्तु आरम्भ मे पादरी-विवाह ने कुछ कठिनाइयाँ उत्पन्न की इनकी स्त्रियो को एलिजाबेथ तथा उसके अनेक प्रजाजन पिछली बद्धमूल धारणाओ के कारण तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से देखते थे। धार्मिक-अधिकारियो की पत्नियो को समाज मे समादृत तथा महत्वपूर्ण स्थान मिलने के लिये समय की जरूरत थी, और आगे जाकर वह उन्हे मिला।

पत्नी तथा बच्चो के पालन की आवश्यकताओ ने धार्मिक अधिकारियो की निर्धनता को और भी अधिक दुस्सह्य बना दिया। क्योकि वे निर्धन थे इसलिये उनके विवाह सामान्य रूप से जमीन्दारो की लडकियो से नही होते थे। स्वय क्लेरेंडन ने भी, जोकि आग्ल चर्च के प्रति श्रद्धालु था, इस बात को "महान् विद्रोह" द्वारा उत्पन्न

सामाजिक तथा नैतिक अव्यवस्था की प्रतीक माना कि उच्च कुलो और परिवारो की लडकिया पादरियो अथवा "अन्य निम्न तथा असमान" व्यक्तियो का वरण कर रही है।" पादरियो के आर्थिक तथा सामाजिक स्तर मे विशेष उन्नति केवल हेनरी के काल मे आकर ही हुई। जेन आस्टिन के उपन्यासो मे राज्याधिकारी तथा धर्माधिकारी एक ही सामाजिक वर्ग मे रखे गये है, किन्तु ट्यूडर तथा स्टुअर्ट कालो मे ऐसी स्थिति नही थी।

पादरियो की निर्धनता कृपा-विक्रय तथा चर्च मे एक से अधिक पद-ग्रहण की प्रथा को देर तक बनाए रखने मे सहायक हुई। ये व्यवहार पोप का अधिकार समाप्त हो जाने के साथ समाप्त नही हुए, यद्यपि फ्रास तथा इटली आदि मे रहने वाले विदेशियो द्वारा इगलैंड मे लाभ का पद रखने की प्रथा सदा के लिये समाप्त हो गयी।

एलिजाबेथ-युग के बीच के वर्षो मे जो सकट आन्तरिक तथा बाह्य दोनो ओर से चल रहा था, वह आगे चलकर स्पेन पर पोत-आक्रमण तथा स्काटलैंड की राज्ञी मेरी को प्राणदड मे जाकर परिणत हुआ। इगलैंड का समाज धार्मिक कलहो से बुरी तरह से अशान्त था, जेस्यूट मिशन को उन प्राचीन धर्मावलम्बी दुर्भाग्यपूर्ण ग्रामीणो के घरो मे सेवा कार्य मे बडी कठिनाई हो रही थी जोकि दो स्पर्धी अवस्थाओ मे विभक्त थे। देश भर मे आतक व्याप्त था। लोग प्रतीक्षा कर रहे थे और प्रतिदिन स्पेन के आक्रमण, कैथोलिक विद्रोह तथा राज्ञी की हत्या के समाचार आने की दुराशा उन्हे घेरे रहती थी। जीस्यूट लोग वेश बदल कर इधर-उधर भाग रहे थे और मठो की बडी-बडी दीवारो के भीतर 'पुजारी-बिलो' मे अपने आप को छिपा रहे थे, जबकि शान्ति के न्यायरक्षक उनका पीछा कर रहे थे और कभी-कभी, जब वे पकडे जाते तब, इनको प्राणदड दे रहे थे।

इस बीच शुद्धाचारवादी, जोकि अभी 'विरोधी' नही हुए थे बल्कि चर्च प्रदेश के पादरी और शक्ति न्यायरक्षको का कार्य कर रहे थे, जिन पर कि राजा इस सकट-काल मे अपने अस्तित्व के लिये निर्भर कर रहा था, चर्च-प्रतिष्ठानो को भीतर से बदलने और उसे नया रूप देने का प्रयत्न कर रहे थे। उन्होने बिशपो की उन्हे 'ईसाविरोधी' कह कर निन्दा की। वे अधिकारियो द्वारा वर्जित व्याख्यानो तथा प्रार्थना-सभाओ मे भाग लेते थे। एलिजाबेथ ने शिकायत की थी कि लडन के प्रत्येक व्यापारी ने "अपना एक स्कूल मास्टर रखा हुआ है तथा वह अवैध रात्रि-धर्मसभा करता है, वह अपने नौकरी तथा नौकरानियो को धर्म-ग्रथ पढाता और उनकी परीक्षा लेता है।" अनेक काउटियो मे शुद्धाचारवादी पादरियो ने मन्त्रियो की सभाए की, जोकि शीघ्र बिशपो से पार्लियामेट की सहायता से उनका अधिकार छीनने वाले थे।

शुद्धाचारवादियो मे चुनाव-प्रचार की और ससत्सदस्यो को प्रभावित करने तथा आन्दोलन आयोजित करने की योग्यता उसी समय स्पष्ट थी, जिसने कि अनुगामी

शताब्दी मे इगलैड के विधान को नया रूप दिया। १५८४ मे उन्होने पार्लियामेट मे पादरियो, नगर-परिषदो, शान्ति-न्यायाधिकारियो तथा सभी काउटियो के प्रमुख जमीदारो की याचिकाओ की बाढ ला दी। लोक-सभा मे, और प्रिवी काउसिल मे भी, आधा मत-परिवर्तन कर दिया गया था। किन्तु एलिजाबेथ दृढ रही। उसका दृढ होना अच्छी ही बात थी, क्योकि अन्यथा चर्च की शुद्धाचारवादी क्रान्ति निश्चित रूप से कैथोलिको और प्रोटेस्टेटो मे धार्मिक गृह-युद्ध का रूप ले लेती जिसमे स्पेन की विजय कोई असभव बात नही थी। १६४० मे इगलैड इतना सशक्त तथा प्रोटेस्टेट हो चुका था कि उसे धार्मिक क्रान्ति तथा प्रतिक्राति कोई हानि नही पहुचा सकती थी, जबकि आधी शताब्दी पूर्व यह उसके लिये अत्यन्त घातक होता।

राज्ञी एलिजाबेथ तथा उसके कठोर आर्कबिशप ह्विटगिफ्ट ने तूफान को टाल दिया, और एग्लिकन चर्च का पोत रोमन कैथोलिक मत तथा शुद्धाचारवादी चर्च की टकराती हुई शिलाओ के बीच सुरक्षित रूप से चलता रहा। एलिजाबेथ काल के अन्त तक इसकी कुछ प्रतिक्रिया हुई। कुछ समय के लिये शुद्धाचारवादियो को चर्च की मर्यादा के भीतर नम्रता से व्यवहार करने के लिये बाध्य होना पडा। 'ब्राउनवादियो' के समाज, जो कुछ थोडे से चर्च के बाहर थे, उनसे घृणा की जाती थी। उनसे काफी कठोर व्यवहार किया गया, कुछ अधिक कट्टर शुद्धाचारवादियो को फासी दी गयी और बहुतो को कैद किया गया। किन्तु तब भी शुद्धाचारवादी पादरियो की बहुत बडी सख्या, तथा जमीदार और व्यापारी लोग, राज्ञी के प्रति वफादार थे। वह अद्भूत स्त्री तब भी 'उनका प्रेम जीतती हुई राज्य कर रही थी।' किन्तु यदि कोई और अधिक दूरदर्शी और बुद्धिमान व्यक्ति एलिजाबेथ के स्थान पर होता तो उसे अवश्य इस बात मे सन्देह होता कि आखिर कितनी देर तक और राज्य-शक्ति इस हठवादी और विभक्त अगरेज जाति पर एक धर्म का आरोपण कर पाएगी, जहाकि नौकरानिया तक 'विद्वान उपदेशको का नियत्रण स्वीकार करने को तैयार नही थी।' इस प्रसग मे अन्तिम स्थिति 'समझौते का अस्वीकार' होने वाली थी और हमारा द्वीप 'सौ धर्मो' के लिये प्रसिद्ध होने वाला था। इगलैड मे धर्म के इस स्वरूप ने वाल्तेर को, जब वह इगलैड के भ्रमण के लिये आया था, बहुत विस्मित किया।

किन्तु एलिजाबेथ को तब भी आशा थी कि उसके सब प्रजा-जन एक मध्यममार्गीय धर्म को स्वीकार कर लेगे, जिसमे कि, जैसाकि हूकर ने अपने अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानो द्वारा बताने का प्रयत्न किया था, शास्त्र तथा चर्च के आदेशो के अतिरिक्त विचार तथा लोकानुभव को भी स्थान मिलेगा। निश्चय ही इगलैड के लोगो को इस प्रकार का धर्म अधिक सहज रूप से स्वीकार्य था बजाय शुद्धाचारवादियो की शास्त्रनिष्ठा वाले धर्म के, जोकि दैनिक जीवन के प्रत्येक कार्य को उचित सिद्ध करने के लिये कोई शास्त्र-प्रमाण खोजते थे या दमनकारी चर्च के आदेश की ओर देखते थे। तो भी सपूर्ण

इगलैंड पर किमी भी प्रकार का एक ही धर्म आरोपित करने का विचार अत्यन्त दर्प-पूर्ण था और परिणामस्वरूप सौ वर्ष ओर घृणा तथा सघर्षो, जेलो और जुर्मानो तथा हत्याओ का दौर रहा। और इस सब कष्ट और उत्पीडन मे से नियति हमे नागरिक स्वतत्रता तथा ससदीय विधान देने वाली थी। सचमुच मानव-इतिहास के ढग विचित्र है और जातियो के भाग्य मानवीय पहुँच से परे है। क्योकि हम अब भी "प्रार्थना पुस्तक" का उपयोग करते है इसलिये हमारे लिये एलिजाबेथ युग की प्रार्थना-सभा की कल्पना करना बहुत कठिन नही है। किन्तु इसके लिये हमे वेदी के स्थान पर लकडी के मेज की कल्पना करनी चाहिये। इसी प्रकार से, प्रार्थना साधारण रूप से बोली जाती थी और भक्तिगीत गाये जाते थे। प्रार्थना-सभा मे सम्मिलित गान प्रोटेस्टेट-पूजा का बहुत बडा आकर्षण था किन्तु आजकल चर्च मे गाये जाने वाले आधुनिक गीतो के स्थान पर उस समय निश्चित दिन के लिये निश्चित भजन स्टर्नहोल्ड तथा होप्किस छन्दो मे गाये जाते थे। वह पुरानी भजनो की पुस्तक, जोकि इगलैड की अनेक सत-तियो को अतीव प्रिय थी, अब पूरी तरह से भुला दी गयी है, केवल 'पुराना सौवा' भजन एक आधुनिक भजन के रूप मे अभी तक हमे ज्ञात है

> पृथिवी पर रहने वाले सब लोग
> ईश्वर के प्रति साह्लाद स्वर से गाते है,
> सभय करो उसकी सेवा, गाओ उसका यश-गान,
> आओ नमो उसके सम्मुख और बनो सानद।

एलिजाबेथ-युगीन भजन-पुस्तके, जिनके भजन सगीत-बद्ध होते थे, प्राय चार भागो मे स्वर-बद्ध की गयी होती थी कैंटस, आल्टस, टेनर तथा बासुस, जिससे कि अशिक्षित भी सरलता से अपनी आवाज के अनुकूल भाग को सरलता से सीख सकते थे। इन भजनो को गाते समय इनके साथ तार-वाद्य या वायुवाद्य आवश्यक रूप से नही बजाये जाते थे।

धर्मोपदेश पार्सन (धर्माधिकारी) के लिये एक बहुत बडा सुअवसर था, विशेषत यदि वह शुद्धाचारवादी होता। एक घटे की अवधि तक तो उसे सहन किया जाता था, स्वागत भी किया जाता, कभी कभी दो घटे भी चल जाता। किन्तु अल्पशिक्षित अथवा अधिक आत्मविश्वासी पादरी, विशेषत बूढे लोग, चर्च द्वारा दिये गये भजन गाने तक सीमित रहते थे। धर्मोपदेश तथा भजन दोनो, आध्यात्मिक शान्ति देने के अतिरिक्त, धार्मिक और राजनैतिक विश्वास बनाने मे भी सहायक होते थे।

चर्च मे साप्ताहिक उपस्थिति का नियम राज्य द्वारा आरोपित था, अनुपस्थित रहने वालो पर अधिनियम द्वारा जुर्माना लगाने का आदेश था, किन्तु व्यवहार मे इसमे कठोरता नही थी, सिवाय ऐसे व्यक्तियो के जिनका प्रोटेस्टेट धर्म से विरोध विदित होता था। यह बात के बिना सदेह के कही जा सकती है कि उस अत्यन्त

व्यक्तिवादी समाज मे प्रत्येक व्यक्ति को प्रति रविवार चर्च मे आने की बाध्यता नही होगी।

कोर्नवाल का एक जोन ट्रेविलियन नामक कैथोलिक भद्र पुरुष, जोकि जुर्माने से बचने के लिये चर्च जाता था, धर्म शिक्षा पढने तथा स्टर्नहोल्ड और हॉप्किन्स के भजनो को गाने का कष्ट सहन करता था, किन्तु सदैव उपदेश से पहले पीठिका पर बैठे धर्माधिकारी को ऊची आवाज मे कहता जाता था "जब अपना यह भाषण पूरा कर लो, तब मेरे यहा आकर खाना खाना।" वह बूढी प्रोटेस्टेट स्त्रियो को डराया करता था कि उससे कही बुरे दिन आने वाले है जैसे कि राज्ञी मेरी के काल मे उन्होने देखे थे। वह एक हसमुख बूढा भद्र व्यक्ति था जिसके बारे मे अनेक विचित्र बाते प्रचलित थी।

एलिजाबेथ के राज्य की दीर्घ कालावधि मे नयी सतति के लोग, जिन्होने बाईबल तथा प्रार्थना-पुस्तक की परपरा मे शिक्षा पाई थी, तथा जिसने स्पेन, पोप और जेस्यूटो के विरुद्ध राष्ट्रीय अस्तित्व के लिये सघर्ष मे भाग लिया था, अत्यन्त उत्साही प्रोटेस्टेट लोग थे। बाइबल का अध्ययन तथा पारिवारिक प्रार्थना अगरेजी-समाज के अग बन रहे थे। उसके राज्य के प्रथम दशाब्द मे ही रोजन एश्चाम ने अपनी पुस्तक 'स्कूल मास्टर' मे लिखा था "हमारे लडन नगर पर ईसा की कृपा रहे, ईश्वर के आदेशो की अधिक सुचारु शिक्षा होनी चाहिये तथा ईश्वर का सेवा-कार्य अधिक आदरपूर्वक होना चाहिये तथा उन्हे इटली के चर्चो मे साप्ताहिक उपस्थिति देने के बजाय सामान्य घरो मे प्रतिदिन जाना चाहिये।" निस्सदेह ऐसी पारिवारिक पूजा लडन के नागरिको मे इस समय अधिक प्रचलित थी, सारे देश मे नही थी, किन्तु इसका प्रचलन तेजी से व्यापक हो रहा था।

जिस वर्ष राज्ञी अपनी बहन मेरी के बाद राज्य गद्दी पर बैठी, उस समय शुद्धाचारवाद जिनेवा तथा र्‌हाइनलैड से आयात किया गया एक विदेशी सिद्धान्त था, किन्तु जब उसका देहात हुआ यह मूलत और स्वरूपत इगलैड के जातीय रग मे रग गया था और इसमे कुछ ऐसी विशेषताए आ गयी थी जो यूरोप के शेष भाग मे प्रचलित कैल्विनवाद के लिये एकदम अपरिचित थी। राज्ञी के राज्य मे आग्ल-चर्च-धर्म भी बद्धमूल हो गया था। १५५९ मे अभी आग्लवाद ठीक तरह से धर्म का रूप नही ले पाया था बल्कि चर्चो के विवाद मे एक समझौते का ढग था जोकि एक चतुर, विद्वान तथा सयत स्वभाव वाली युवती द्वारा दोनो सदनो की अनुमति से प्रचारित किया गया था। किन्तु उसके राज्यकाल के अन्त तक यह एक वास्तव धर्म बन गया था, चालीस वर्षों से भी अधिक समय तक इस देश के प्राचीन चर्चों मे प्रयुक्त हो चुकने के बाद इसकी सेवाए अनेको को प्रिय हो गयी थी तथा इसका दर्शन और भावना हूकर की "एक्लेसिआस्टिकल पोलिटी" नामक पुस्तक मे अत्यन्त उत्कृष्ट ढग से प्रस्तुत किया जा रहा था। ज्यार्ज हर्बर्ट (१५५३-१६३३) आग्लवादी धर्म का एक कवि हुआ, जोकि इस धर्म के पक्ष मे मात्र राज्य की सुविधा की अपेक्षा से अधिक महत्वपूर्ण बात थी।

एलिजाबेथ के राज्य के अन्त तक पादरियो के आचरण मे उन्नति तथा इनके और लौकिको के शिक्षा-स्तर मे उन्नति का मुख्य कारण व्याकरण-विद्यालय (ग्रामर स्कूल) तथा विश्वविद्यालय थे। सामन्य लोग या तो पूरी तरह से अपढ थे अथवा ग्राम-विद्यालय की अध्यापिकाओ द्वारा थोडा अक्षर-ज्ञान प्राप्त किये हुए थे। किन्तु समाज के अत्यन्त भिन्न भिन्न वर्गों के कुशल लडके व्याकरण-विद्यालयो मे एक साथ लातीनी (लेटिन) भाषा की शिक्षा पाते थे। कक्षाओ मे वर्ग-भेद नही किया जाता था, जैसाकि पीछे किया जाने लगा था।

अन्य अनेक सस्थाओ के समान विश्वविद्यालय को भी १५३०-१५६० की धार्मिक तथा आर्थिक अव्यवस्था का शिकार होना पडा। श्रमणो के विहार समाप्त हो जाने से इन विद्यालयो मे विद्यार्थी-सख्या तथा इनकी सम्पत्तिया कम हो गयी थी। वास्तव मे मध्ययुगीन केम्ब्रिज तथा ऑक्सफर्ड मे ये श्रमण ही मुख्यरूप से अध्ययन करते थे। इसके साथ ही ससद ने एक अधिनियम द्वारा अधेड आयु के उन पादरियो को उनके अपने चर्च-प्रदेशो मे भेजा जोकि अभीतक, शताब्दियो की परपरा के अनुरूप, विश्वविद्यालय मे ही निठल्ले पडे रहना चाहते थे। वहा उनके आचरण भी शोभनीय नही थे। इगलैड की इन दो विद्यापीठो का मध्ययुगीन स्वरूप परिवर्तन तथा निर्धनता के इन दु खपूर्ण वर्षो मे समाप्त हो गया था।

एलिजाबेथ के युग मे ऑक्सफर्ड तथा केम्ब्रिज अपेक्षाकृत अधिक धर्मनिरपेक्ष रूप मे पुनरुज्जीवित हुए और गृह-युद्ध आरभ होने तक इन्होने बहुत विकास किया। बडी सख्या मे अवर-स्नातक धर्मेतर कार्यो को आजीविका के रूप मे स्वीकार करना चाहते थे। एलिजाबेथ युग के महत्वपूर्ण लोगो की काफी बडी सख्या का केम्ब्रिज तथा आक्स-फर्ड विश्वविद्यालयो से आये होना इस बात का द्योतक है कि शासक वर्ग का रवैया अब शिक्षा के प्रति बहुत बदल चुका था। अब एक भद्र पुरुष के लिये किसी अच्छे विश्व-विद्यालय का स्नातक होना आवश्यक था, विशेषत यदि वह राज्याधिकारी होना चाहता था। इन विश्वविद्यालयो से वह लातीनी भाषा, प्राचीन पुराण, यूनानी भाषा, तथा अल्पाधिक मात्रा मे गणित और दर्शन से परिचित होकर निकलता था। सिडनी तथा रलीघ, काम्डन तथा हैक्लिट आक्सफर्ड मे थे, तथा सेसिल लोग, बेकन लोग तथा वाल्सिघम और स्पेसर तथा मार्लोवे कैम्ब्रिज मे थे।

विश्वविद्यालयो तथा शासक-वर्ग के बीच सम्बन्ध का एक कारण शैक्षणिक जीवन की स्थिति मे सुधार था। मध्ययुगीन छात्रावासो तथा आवासालयो को तीव्र गति से स्थानान्तरित करती हुई कालेज-व्यवस्था सतर्क माता-पिताओ को अपते बच्चो के सम्बन्ध मे कुछ आश्वस्त करती थी। यूरोप मे केवल आक्सफर्ड तथा कैब्रिज विश्व-विद्यालय ही ऐसे थे जहा अनुशासन तथा अध्यापन का उत्तरदायित्व कालेज सभाल रहे रहे थे, अन्यथा तो ये दोनो पहले बहुत बुरी तरह से उपेक्षित हो रहे थे। अभी तक कालेज सरक्षक (कालेज-ट्यूटर) जैसा कोई अधिकारी नही था, किन्तु विद्यार्थी अथवा

उसके माता-पिता व्यक्तिगत रूप से कालेज के किसी अध्यापक से सम्पर्क स्थापित करते थे और उसे एक अध्यापक तथा सरक्षक होने की प्रार्थना करते थे। इन व्यक्तिगत सरक्षको के पास ६ विद्यार्थी होते थे जिन्हे ये पढाते और सभालते थे। कभी कभी ये विद्यार्थी सरक्षक के कमरे मे ही सोते थे। इनमे सम्बन्ध बहुत कुछ उस्ताद-शागिर्द (मास्टर-एप्रेटिस) के समान थे।

सब मिला कर, व्यक्तिगत अध्यापक-सरक्षक की यह व्यवस्था अच्छी चल रही थी। किन्तु सरक्षको मे यह एक सामान्य प्रवृत्ति थी कि वे अपने उन शिष्यो की उपेक्षा करते थे जो उन्हे शुल्क नही दे पाते थे, और उनके साथ बहुत मैत्रीपूर्ण होते थे जो उन्हे अच्छा शुल्क दे सकते थे। उसके धनी शिष्य अधिक भडकीले तथा कीमती सिल्क आदि के वस्त्र पहनना तथा तल्वार अथवा बर्च्छी धारण करना पसद करते थे जोकि कालेज-नियमो के विरुद्ध था, और इसी प्रकार से सरायो मे ताश, शतरज तथा कुक्कुट-लडाई और रीछ-कुत्तो की लडाई जैसी अविहित खेलो मे अपना समय बर्बाद करते थे। १५८७ मे विलियम सिसिल लार्डबर्लीफ को, जिसकी कि पित-तुल्य आख राज्य के सब कोनो मे घूमती थी, सूचना दी गयी कि

सरक्षको के शुल्क बहुत अधिक होने से न केवल निर्धन माताए अपने बच्चो को विश्वविद्यालयो मे पढाने मे असमर्थ है बल्कि इसका परिणाम यह भी हो रहा है कि धनी विद्यार्थियो को ये सरक्षक नाराज करने से घबराते है, कि कही उनका शुल्क नही मारा जाय।

उन दिनो मे विश्वविद्यालय के अध्यक्ष भी, अन्य सब के समान ही, धनी लोगो का ही पक्षपात करते थे। एलिजाबेथ युग के आरभ मे ही धर्माध्यक्ष (पार्सन) हैरिसन ने लिखा था

"जमीदारो अथवा धनियो के लडके प्राय ही विश्वविद्यालय को बहुत दूषित करते है, क्योकि ये लोग अपनी प्रतिष्ठा तथा स्वतत्रता के कारण विश्वविद्यालय मे अव्यवस्था तथा अनुशासनहीनता उत्पन्न करते है। ये लोग महगे कपडे पहनते है और हुल्लडबाज़ी करते है, जिसका परिणाम होता है कि ये अपने अध्ययन मे रुचि नही ले पाते। और जब कभी उन्हे अनुशासन-भग के लिये दोषी ठहराया जाता है तो वे इतना कहना पर्याप्त समझते है कि वे ज़मीदार है, और बहुतो को इस पर कोई क्रोध नही होता।"

यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि यदि अधिकारियो की ओर से कुछ भी आक्रोश इस पर व्यक्त नही किया जाता तो ऐसे विद्यार्थी, जो जमीदारियो के बाहरी जीवन मे तथा दरबार के विलासितापूर्ण जीवन मे अभ्यस्त थे उस युग के कालेज के कठोर जीवन मे कभी नही रह पाते जोकि वातस्व मे स्कूल की आयु के लडको के अधिक उपयुक्त थे, बजाय अवरस्नातको के। १५७१ मे उप कुलपति ने विश्वविद्यालय

के मब लोगो के लिये कॅम्ब्रिजशायर के नदी या तालाबो मे तैरने तक की मनाही कर दी थी, जोकि एक बहुत ही निर्दोप मनोरजन है। सभवत इसके विरुद्ध आपत्ति यह थी कि यह एक खतरनाक व्यायाम हे, जैसेकि हमारे अपने अधिक साहसिक युग मे चैपल की छत पर चढने का खेल था। सगठित खेलो और दौडो आदि का उस समय प्रचलन नही हुआ था और क्रीडा-प्रतियोगिताओ को या तो निरुत्साहित किया जाता था अथवा वर्जित कर दिया जाता था, किन्तु क्योकि आखिर युवको के सन्तोष का ध्यान रखना भी आवश्यक होता था इसलिये नियमो का काफी उल्लघन भी होता था। किन्तु भग करने के लिये नियम अवश्य ये मध्ययुगीन विश्वविद्यालय मे इस सम्बन्ध मे कोई कुछ कहने वाला नही था।

सरक्षणता के युग मे पक्षपात स्वाभाविक था, और धनियो तथा प्रभावशाली लोगो के, अथवा उन वकीलो के जोकि कालेज के लिये कार्य या छलछद्म करते थे, लडको को बेझिझक शिक्षावृत्तिया दी जाती थी। कालेज धनी हो रहे थे जबकि विश्वविद्यालय निर्धन रहे। एलिजाबेथ के राज्य-काल मे ट्रिनिटी मे उसके पिता के प्रतिष्ठान का "ग्रेट कोर्ट" कालेज क्राइस्ट-चर्च के टोम स्क्वैड के प्रतिद्वद्वी के रूप मे अग्रसर हो रहा था।

एक सन्तति बाद, जेम्स प्रथम के राज्य-काल मे, जब सिमन डी यूस सन्त जोस कालेज कैम्ब्रिज मे पढ रहा था, तब अवरस्नातको के मनोरजन के मुख्य स्रोत भ्रमण, तैरना (निषिद्ध होने के बावजूद) घटी खीचना, फुटबाल खेलना (जोकि मुख्यत दो कालेजो के बीच लडाई के लिये एक बहाना मात्र होता) थे।

अधिकाश विद्यार्थी एक कमरे मे चार या अधिक के हिसाब से रहते थे। निर्धन विद्यार्थी सामान्य रूप से चर्च मे जाते थे और धनी दुनिया मे। पढाने वाले प्रमुख आचार्य अभी तक चर्च के आदेश स्वीकार करने को बाध्य थे, यहाँ तक कि जबकि अन्य पादरियो के लिये विवाह वैध हो गया था तब भी वे चर्च के आदेश पर विवाह करने से रोक दिये जाते थे। इस सीमा तक कैम्ब्रिज और आक्सफर्ड मे पादरियो का प्राधान्य रहा, बहुत कुछ ये धर्म-सस्थानो जैसे ही थे, जब तक कि अन्तत उन्नीसवी शताब्दी के अन्तिम भाग मे गोल्डस्टोन ने नया विधान लागू नही किया। सब के लिये कालेज के मन्दिर मे प्रतिदिन जाना अनिवार्य था।

अवरस्नातको मे से बहुतो की, जिनमे कोपर्स, कैम्ब्रिज मे किटमार्लो तथा क्राइस्ट चर्च आक्सफर्ड मे फिलिप सिडनी भी थे, काव्य तथा नाटको मे रुचि भी थी। वास्तव मे काव्य तथा नाटक उस युग के जीवन मे बहुत महत्वपूर्ण भाग ले रहे थे। नाटको तथा विष्कभको (बीच मे खेले जाने वाले छोटे नाटक) मे, जिनमे कुछ लातीनी भाषा मे होते थे, मुख्यत विद्यार्थी ही अभिनय करते थे। फुलर ने अपने "कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय

के इतिहास" मे स्नातको द्वारा नगर के सम्बन्ध मे एक अत्यन्त उपहास-व्यग्यात्मक नाटक खेले होने का उल्लेख किया है।

"विद्यार्थियो ने, यह अनुभव करते हुए कि नगरवासियो ने उनके प्रति अन्याय किया है, उनसे बदला लेने के लिये इगलिश मे एक अपमानपूर्ण हास्यनाटक बनाया (जिसका नाम उन्होने क्लब लॉ रखा)। इसका अभिनय क्लेयरहाल मे किया गया और इसे देखने के लिये मेयर, उसके भाइयो तथा उनकी पत्नियो को आमत्रित किया गया, इसमे स्वय उनका भी उपहास उडाया गया था। नगरवासियो ने बैठने के लिये एक ऐसा स्थान रखा गया जिसके चारो ओर विद्यार्थी इस प्रकार से बैठे थे कि वे उन्हे देख सकते और उन्हे दिखाई दे सकते। यहाँ नगरवासियो ने अपने ही कपडो मे (जोकि विद्यार्थियो ने उनसे उधार लिये थे) अपने को प्रस्तुत पाया। वह अभिनय उनके आचार-व्यवहार, आकार-इगितो का इतना सजीव चित्रण था कि वे चकित अनुभव कर रहे थे कि सही नागरिक वास्तव मे किसे कहा जाय—उन्हे जो बैठे देख रहे है या उन्हे जो अभिनय कर रहे है ? वे घिरे होने के कारण बाहर भी नही जा सकते थे, और परिणामत वे क्रुद्ध और क्षुब्ध भाव से तब तक चुपचाप बैठे रहे जबतक कि प्रहसन के अन्त मे उन्हे छोडा नही गया।"

ट्यूडर काल मे इगलैड के अन्य सब लोगो के समान कार्पोरेशन (नगर-निगम) को भी प्रिवी काउसिल के पास शिकायत करनी पडती थी। राज्ञी के सज्जन परामर्श-दाता 'कुछ प्रमुख अभिनेताओ पर कुछ व्यक्तिगत नियत्रण अवश्य रखते थे' किन्तु जब कभी नगर उन्हे और दड देने के लिये व्याकुल हो जाता था तब वे उस विवाद को समाप्त करने के लिये उन्हे स्वय कैम्ब्रिज आकर देखने का प्रस्ताव करते थे, जिससे कि वे स्वय वही आकर अपना निर्णय दे सकते।

यह विचित्र घटना न केवल विश्वविद्यालय तथा नगर मे परम्परागत ईर्ष्या को ही प्रकट करती है बल्कि इनमे निकटता भी प्रकट करती है। एलिजाबेथ युगीन कैब्रिज छोटा समुदाय था जिसमे कि सभी प्रमुख लोग परस्पर तथा बहुत से नागरिको और अवर-स्नातको से परिचित थे। १५८६ मे कैब्रिज की जनसख्या ६५०० थी जिनमे से १५०० विश्वविद्यालय मे रहने वाले थे।

काफी बडी सख्या मे व्यापारी लोग कैम्ब्रिज के बाहर भूमि जोतते थे और उनके अतिरिक्त बहुत से किसान भी थे। दुकाने तथा अन्य भवन लकडी के फ्रेम तथा मिट्टी के बने होते थे। इनके अवशेष अब भी कही-कही ईंट के बने आधुनिक बाजारो के अग्रभागो के पीछे छिपे है। ऐसा था वह नगर जिसमे कि १५६८ मे हाब्सन नामक टागा-चालक ने अपने पिता से उत्तराधिकार मे एक टागा और आठ घोडे प्राप्त किये थे और उस विनम्र आरम्भ से उसने घोडो तथा गाडियो द्वारा यातायात की एक बृहत् परिवहन-सेवा का निर्माण किया जोकि पूर्वी एग्लिका भर मे प्रसिद्ध थी और जिसके

नाम से इगलिश मे "हाब्सन चायस" एक पद ही प्रचलित हो गया और कैम्ब्रिज मे उसके नाम पर एक पानी की पाईप का नाम पडा, और अन्तत क्राइस्ट के युवक मिल्टन ने अपनी दो कविताओ द्वारा (जोकि बहुत अच्छी नही हैं) उसे अमरता प्रदान की।

कैब्रिज जितना अपने विश्वविद्यालय के कारण प्रसिद्ध था उतना ही मेले के कारण भी प्रसिद्ध था, जोकि नया बाजार की सडक तथा नदी के बीच नगर के खेतो मे कटाई के बाद सितबर मास मे तीन सप्ताह तक चलता था। इस मेले मे उत्तरी तथा दक्षिणी इगलैड जल और पृथ्वी भागो से लायी गयी वस्तुओ का विनियम करते थे। अस्थायी दुकानो के बाजार बनाये जाते थे जिनमे उत्तरी इगलैड अपनी ऊन तथा कपडा बेचता तथा हॉप नामक फल खरीदता था। नीदरलैड तथा बाल्टिक के व्यापारी तथा लडन के बडे व्यापारी कपडे, मछली तथा अनाज का व्यापार करते थे। व्यापारिक यात्रियो से पहले के दिनो मे इस प्रकार के मेले व्यापार के लिये आवश्यक थे, और इस प्रकार के मेलो मे स्टोब्रिज मेला इगलैड का सबसे बडा मेला था जिसमे कि सब प्रकार की वस्तुओ का छोटा और थोक दोनो तरह का व्यापार होता था। कृपण तथा उदार दोनो प्रकार की गृहणियाँ दूर-दूर से अपने घरो के लिये विविध वस्तुजात के क्रय और मेले की रौनक देखने के लिये आती थी। पूर्वी एग्लिका के किसान तथा राज्याधिकारी भी बहुत बडी सख्या मे वहा आते थे। इसमे जो बात हमारी आधुनिक धारणाओ के अनुसार बहुत विचित्र थी वह यह कि व्यापार का यह विशाल वार्षिक मेला कैब्रिज विश्वविद्यालय के अधीन आयोजित होता था। स्टूरब्रिज मेला तब तक आरभ नही होता था जब तक कि विश्वविद्यालय का उप कुलपति भव्य विश्वविद्यालीय आडबर के साथ आकर उसका उद्घाटन नही करता था।

एलिजाबेथ के अधीन राष्ट्रीय समृद्धि का पुनरुद्धार होने मे एक अनिवार्य कारण विश्वसनीय मुद्रा का होना था। जैसाकि पहले कहा जा चुका है, उसका पिता अवमूल्यन कर अपने पीछे कठिन विपत्ति की परम्परा छोड गया था और परिणाम-स्वरूप एड्वर्ड षष्ठ तथा मेरी के काल मे मूल्यो मे भारी वृद्धि हुई, जिसके बराबर न मजदूरी चल सकी और न किराये ही चल सके। १५५६ मे 'धर्म मे स्थिरता' स्थापित करने के बाद एलिजाबेथ का अगला महत्वपूर्ण कार्य था वित्तीय कठिनाई पर वीरतापूर्ण आक्रमण। सितबर १५६० मे उसने अवमूल्यीकृत मुद्राओ को वापिस लेने की घोषणा की और उनके स्थान पर नयी मुद्रा उनके वास्तव मूल्य से कुछ कम पर दी। यह खतरनाक कार्य जिस कुशलता और सफलता के साथ सम्पादित किया गया उससे स्पष्ट था कि नयी राज्ञी तथा उसकी मत्री परिषद् राज्य के आर्थिक पक्ष को पूर्ण सम्यग्ता के साथ समझती थी जिसमे कि, अन्यथा महान् शासक भी, पथभ्रष्ट हो गये थे। उस समय के बाद से मूल्यो मे स्थिरता आगयी। उसके सम्पूर्ण शासन-काल मे वे धीरे-धीरे बढते रहे, जेम्स तथा चार्ल्स प्रथम के काल मे इनमे अधिक तीव्रता से वृद्धि हुई।

इसका कारण था स्पेनीय अमरीका से नये सोने तथा चादी का बढता हुआ प्रभाव। किन्तु अब वेतन मूल्य-वृद्धि के साथ बढने मे समर्थ थे। मूल्यो मे क्रमिक वृद्धि, जोकि अब बहुत भयानक गति से नही हो रही थी, व्यापार तथा उद्योग की समृद्धि मे सहायक हुई। और इस समृद्धि के परिणामस्वरूप इन्होने नवीन प्रकार के उत्पादन आरम्भ किये तथा नवीन बाजारो की खोज की।

एलिजाबेथ के राज्य मे सब प्रकार की कानो--सिक्का, ताबा, टीन, लोहा तथा कोयला—मे प्रगति हुई। जर्मन खनिको ने ताबे तथा अन्य खनिजो के झीलो वाले सूदूर प्रदेश मे विभिन्न स्थानो पर खुदाई की। मैडिप पहाडियो से ब्रिसल के व्यापारियो को अधिकाधिक मात्रा मे सिक्का प्राप्त होने लगा। कोर्नवाल तथा डेवाने की टीन की छोटी असख्य कानें समृद्ध हो गयी। नमक का उत्पादन बढ गया। हमारा लोहा ससार भर मे सर्वोत्तम माना जाता था। १६०१ मे एक उत्साही व्यक्ति ने लोकसभा को बताया था "ऐसा लगता है कि ईश्वर ने इगलैड की रक्षा के लिये उसे लोहे के रूप मे एक अद्वितीय वरदान दिया है, क्योकि यद्यपि अधिकाश देशो के पास उनका अपना लोहा है किन्तु किसी के भी पास उतना कठोर और पक्का लोहा नही है जिससे हमारे शस्त्रो की तुलना मे बढिया शस्त्र बन सके। किन्तु नौ-सेना को केवल तोपो की ही आवश्यकता नही थी बल्कि बारूद की भी आवश्यकता थी, जिसको बनाने मे प्रयुक्त होने वाली चीजे तब तक इगलैड मे ही प्राप्त की जाती थी जब तक ये स्टूअर्ट के काल मे ईस्ट इडिया कपनी ने पूर्व के देशो से विशाल मात्रा मे लानी आरम्भ नही की।

ये औद्योगिक कार्य देश की ईमारती लकडी के लिये अपकारक हो रहे थे। लोहे, सिक्के तथा काच की वस्तुओ के निर्माण मे लकडी अथवा कोयले की विशाल मात्रा काम मे आ रही थी। वोर्सेस्टर के एक निवासी ने एलिजाबेथ के काल के अन्तिम वर्षो मे कहा था कि 'जैसे-जैसे लकडी का ह्रास होता जाता है वैसे-वैसे लकडी को काच, सस्तेपन के कारण, स्थानान्तरित करता जाता है। काम्डन ने लिखा है कि नमक के कारखानो ने अभी हाल ही मे वोर्सेस्टरशायर मे फैक्कनहैम जगल समाप्त कर दिया। सस्सेक्स, सर्रे तथा कैट मे वील्ड के जगल तक अब कम पड रहे थे, जिन्होने हजारो वर्षों से लोहे की भट्टियो के लिये लोहा तथा कोयला मुहैया किया था, क्योकि अब लोहे की भट्टियो के लिये भी कोयले की माग बढ गयी थी और कैट के कृषि-उद्योग के लिये शतीरो और खभो की आवश्यकता थी।

घर को गर्म रखने तथा खाना पकाने मे अधिकाशत लकडी का ही उपयोग होता था। पोतो की सख्या मे निरन्तर वृद्धि ने, तथा इस बात के स्पष्ट ज्ञान ने कि इगलैड का भविष्य सागर पर निर्भर करता है, इमारती लकडी उगाने को आवश्यक कर दिया था, किन्तु बदरगाहो की पहुँच मे उसकी बढती आवश्यकताओ के अनुसार यह कर सकना निरतर कठिन रहता था। पहले से ही यह अनुभव किया जा रहा था कि

सागर के पास की भूमियो मे, यहा तक कि पैम्ब्रोकशायर के सुदूर प्रदेशो तक मे, जगल समाप्त हो गये थे और खाली भूमियो मे खेती होने लगी थी या चरागाह बन गयी थी। इसमे सन्देह नही कि द्वीप मे अभी भी कुछ समय तक भट्टियो तथा पोत-यार्डो की आवश्यकताओ के लिये काफी वृक्ष थे। किन्तु उस समय अश्व-यातायात के कारण तथा सडके कमजोर होने के कारण इमारती लकडी का भारी बोझ वहन कर थोडी दूर भी चलना असभव था। केवल जल-मार्ग ही से यह सम्भव था। इसलिये अनेक उन्नत भू-प्रदेशो मे, विशेषत पश्चिम मे, इन पैसरेसो का "युवा कवि" अभी भी अक्षत और कँवारी वन-भूमियो को देख सका था

सफेदा-देवदारु के भीम वृक्ष है जहाँ,
सुना नही गया जहा क्रूर परशु-प्रहार
भीत हो छोडती जिससे वनदेविया,
वृक्षो मे अपने सुखद प्रकोटो को।

जबकि दूसरे जिलो मे इन्धन की लकडी के समाप्त हो जाने से कुटीरवासी की अगीठिया ठडी रहने लगी और औद्योगिक उत्पादन बुरी तरह से घट गया। वास्तव मे, अधिकाशत उद्योगो को ऐसे स्थानो पर ले जाना पडा जहा लकडी अभी बच रही थी। लौह उद्योग द्वारा आर्डेन का वन शीघ्र ही आक्रान्त और उपभुक्त होने वाला था।

लकडी की बढती हुई कमी की इन परिस्थितियो मे एलिजाबेथ-काल मे गृह तथा उद्योग दोनो मे कोयले का उपयोग निरन्तर बढने लगा। किन्तु वाहन की कठिनाइयो के कारण कोयले की पहुँच या तो कानो के समीपस्थ स्थानो तक अथवा नौपरिवहन के निकटस्थ स्थानो तक सीमित थी। 'सागर का कोयला', जैसाकि परिवहन के कारण इसका नाम पड गया था, सामान्य रूप से लडन और थेम्स-घाटी के निकटस्थ स्थानो मे सामान्य रूप से प्रयुक्त हो रहा था। मूलत लकडी के इन्धन के लिये बनाई गयी चिमनियाँ तथा अगीठिया दोबारा बनानी पडी, और जबतक यह नही कर लिया गया तब तक कोयलो का सल्फर गैस वाला धूआ एक निरन्तर मुसीबत बना रहा। एलिजाबेथ के काल मे चिमनियो की अत्यधिक वृद्धि मुख्यत कोयले के बढे हुए उपायो के कारण थी। परिणामत कोयले की आग के लिये क्रान्ति-लोहे (कास्ट आयरन) की अग्नि-प्लेटो का निर्माण सस्सेक्स की भट्टियो का एक मुख्य कार्य हो गया था। इस काल मे कोयले से लोहा पिघलाने का प्रयत्न किया गया था, किन्तु यह तब सफल नही हुआ। अनेक अन्य उद्योग उन प्रदेशो मे, जहा कोयला सस्ता था, पहले से ही कोयले का उपयोग कर रहे थे। १५७८ मे यह कहा जा रहा था कि "शराब बनाने वालो, रग साजो, हैट बनाने वालो, तथा अन्यो ने अपनी भट्टियो तथा अगीठियो को देर से बदल लिया है और उन्हे कोयला जलाने के योग्य बना लिया है।"

केवल लडन ही नही बल्कि नीदरलैंड्स तथा अन्य विदेशी प्रदेशो को भी टाइने-साइड तथा डरहम से कोयला मुहैया किया जा रहा था। बहुत मात्रा मे कोयला विदेशी जहाजो मे विदेश को जाता था। किन्तु टाइने के कोयला-वाहक उससे भी बडी मात्रा मे व्यापार लडन से करते थे। सडको की अपर्याप्तता के कारण सब लोग सब प्रकार का भारी सामान यथासभव जल-मार्ग से भेजने को बाध्य करते थे। एलिजाबेथ के राज्यकाल के अन्त तक भी इगलैंड का जल-परिवहन से होने वाला व्यापार बढते हुए निर्यात व्यापार से चार गुणा अधिक था।

इगलैंड के नाविको की दो मुख्य देने थी वे थी उत्तरी बन्दरगाहो तथा लडन के बीच कोयला-वाहो का बेडा, तथा कार्नवाल और डेवन के मछुए, जिनमे से बहुत से तो साहसपूर्वक नवोपलब्ध भूमि (न्यू फाउडलैंड) तक कॉड मछली के लिये भारी कोहरे से आच्छादित सागर मे भी चले जाते थे। ट्यूडर-काल मे पूर्वी किनारे पर हैरिग मछली पकडने के लिये नौ-बेडे का विकास भी कम महत्वपूर्ण नही था। काम्डन ने नार्विच की छोटी बन्दरगाह यारमौथ का उल्लेख किया है जोकि उस समय अपनी प्रतिस्पर्धी बन्दरगाह लिन्न के ह्रास का कारण हो रही थी, "क्योकि यहाँ अब बहुत मेला रहने लगा था और हैरिग तथा अन्य मछलिया बहुत अधिक थी।"

मछुए लोग सरकार को प्रिय थे क्योकि वाणिज्य तथा राजकीय नौ-सेना के लिये आदमी अधिकाशत इन्ही लोगो मे से आते थे। "मछली-दिन" मनाने के लिये कानून बनाये गये थे, राज्ञी की प्रजा का कोई व्यक्ति लैंट के दिन अथवा बृहस्पतिवारो को मछली नही खा सकता था—कभी कभी बुद्धवार भी इस सूची मे जोड दिये जाते थे। यह अत्यन्त स्पष्ट रूप से कहा जाता था कि इसका उद्देश्य धार्मिक न होकर राजनैतिक है—अर्थात् हमारे सागर पर रहने वाले लोगो की सहायता करना, सागरतीर के ह्रास-मान नगरो को पुनरुज्जीवित करना तथा गाय और भेड के मास का अत्यधिक उपयोग न होने देना। ये मछली-नियम दड द्वारा बलात् लागू किये जा रहे थे। हम १५६३ मे एक लडन की स्त्री को लैंट के दिनो मे अपने घर पर मछली रखने के अपराध मे दडित किये जाने का उल्लेख पाते है। १५७१ मे हम प्रिवी काउसिल को विभिन्न जिलो मे शान्ति तथा न्यायाधिकारी द्वारा इस कानून को लागू करने के विवरणो मे व्यस्त पाते है। क्योकि लोग शताब्दियो से चर्च द्वारा आदिष्ट उपवासो को करने के लिये अभ्यस्त थे इसलिये मछली खाने की आदत को नये युग मे राज्य के प्रयोजन से सयत करना अपेक्षाकृत सरल था। ऊँचे प्रदेशो मे "मछली दिन" शायद सदैव नही मनाये जाते रहे होगे, क्योकि वहाँ सागर से ताजी मछली प्राप्त करना कठिन था, किन्तु तब भी नमक मे सुरक्षित मछली दूर-दूर तक भेजी जाती थी, नॉर्थैट्स तथा बक्स तक मे न्यायाधिकारी १५७१ मे कानून को लागू कर रहे थे। यह चीज मछलियो के तालाबो के, जोकि मध्य युगो मे बहुत प्रचलित थे, उपयोग को देर तक जारी रखने मे

सहायक हुई। इनके सूखे जल अभी तक पुराने जागीरप्रासादो के पास देखे जा सकते है।

इस तथा अन्य सब प्रकार से सचिव ऐलिस ने मछुओ आदि को सरक्षण और प्रोत्साहन दिया। उसने इन लोगो को भूमि पर सैन्य-सेवा से मुक्त कर दिया और विदेशी पोतो के विरुद्ध नो-चालन विषयक कानून लागू किये, विशेषत किनारे के व्यापार के लिये। इगलैंड के पोत अभी इग्लैंड के सम्पूर्ण निर्यात को सँभालने मे समर्थ नही किन्तु नौ-चालन विषयक इन कानूनो का यही उद्देश्य था।

एलिजाबेथ के राज्यकाल मे ऐलिल तथा प्रिवी काउसिल के समर्थ नेतृत्व मे पार्लियामेट के समर्थन के साथ देश की औद्योगिक, व्यापारिक तथा सामाजिक व्यवस्था नगरपालिकाओ के नियत्रण से राष्ट्रीय नियत्रण मे आ गयी।

मध्ययुगा मे प्रत्येक मुहल्ला अपनी निजी समिति अथवा दस्तकारी सघ के द्वारा मजदूरी तथा कीमतो का, स्वामी तथा शागिर्द के सम्बन्धो का, किसी स्थान पर व्यापार करने के अधिकार का, तथा वहा व्यापार करने की शर्तो का निर्धारण करता था। चौदहवी शताब्दी मे राष्ट्रीय नियत्रण ने नगरपालिकाओ के नियत्रण मे हस्तक्षेप आरभ कर दिया था जबकि एड्वर्ड तृतीय की फ्रास तथा नीदरलैड मे विदेशी नीति ने आग्ल-व्यापार की सम्पूर्ण दशा को ही बदल दिया था और जबकि "श्रमिक अधिनियमो" द्वारा सम्पूर्ण देश मे अधिकतम वेतन-निर्धारण के कानून असमर्थ प्रमाणित हो रहे थे।

एलिजाबेथ के राज्य मे शान्ति-न्यायाधिकारो द्वारा मजदूरी तथा कीमतो पर राष्ट्रीय नियत्रण अधिक बुद्धिमत्ता के साथ रखा जा रहा था और इसके लिये एक नियत अधिकतम-वेतन आरोपित करने का प्रयत्न नही किया जा रहा था। साथ ही साथ, व्यापार तथा उद्योग पर से नगर-पालिकाओ का नियत्रण हटा कर उन्हे राज्य के नियत्रण मे लाया जा रहा था। इस महत् परिवर्तन के अनेक कारण थे: अनेक नगरो का ह्रास तथा उद्योगो का ग्रामीण प्रदेशो मे प्रसार, जोकि नगरपालिकाओ के अधिकार क्षेत्र से बाहर थे, व्यापार-सघो का क्रमिक क्षय, जिन्हेकि एड्वर्ड षष्ठ के इन सघो की सपत्ति जब्त करने के लिये बनाये कानून के कारण भारी धक्का लगा, राज्य की शक्ति मे वृद्धि, तथा राष्ट्रीयता की उल्लासपूर्ण अनुभूति, जोकि एलिजावेथ युग के इगलैड को व्याप्त कर रही थी। अब इगलैड का व्यक्ति अपनी पहली वफादारी अपने नगर के प्रति, अपने सघ के प्रति, अथवा अपने स्वामी के प्रति अनुभव नही करता था बल्कि राज्ञी तथा देश के प्रति अनुभव करता था।

इन परिस्थतियो मे एलिजाबेथ के शासन ने न केवल मजदूरी और कीमतो को ही अपने नियत्रण मे ले लिया बल्कि शागिर्दगी (एप्रेंटेसशिप) तथा व्यापार आरम्भ

करने और उसको चलाने की शर्तो को भी अपने नियत्रण मे ले लिया। इन मुआमलो मे नगर तथा सघो के निजी स्वार्थो का स्थान राष्ट्रीय नीति ने ले लिया और परिणाम स्वरूप व्यक्तिगत प्रयत्न को निर्बाध अवसर मिला।

विदेशी आवासियो को निवास का अधिकार देने मे एलिजाबेथ-शासन नगरो तथा सघो की अपेक्षा अधिक उदार था ये आवासी अधिकाशत प्रोटेस्टेट शरणार्थी होते थे और ये प्राय ही अपने साथ एक नया कला-कौशल तथा उत्पादन की नवीन विधि भी लाते थे। ट्यूडरो के आर्थिक राष्ट्रीयतावाद ने व्यक्ति को नगरपालिकाओ की पारस्परिक स्पर्धा से मुक्ति दिला कर स्वतत्रता का अवसर दिया।

किन्तु यह आर्थिक स्वतत्रता हस्क्षेप के पूर्ण अभाव की स्थिति नही थी। जो राज्य आग्ल-व्यक्ति को निर्माण तथा व्यापार का अधिकार देता था उसने ऐसे नियम भी बनाए जिनका पालन व्यक्ति के लिये सार्वजनिक हित की दृष्टि से आवश्यक था। और कारीगर को, जिसेकि वह नियुक्त करता था, शागर्दगी (एप्रेटिसशीप) की राष्ट्रीय व्यवस्था के अधीन रखा गया था।

कारीगरो सम्बन्धी अधिनियम (१५६३) द्वारा यह विधान किया गया कि नगर अथवा गाव के प्रत्येक कारीगर को एक शिक्षक के अधीन दस्तकारी की शिक्षा प्राप्त करनी चाहिये। इसका उद्देश्य जितना सामाजिक तथा शैक्षणिक था उतना ही आर्थिक भी था। यह कहा गया कि 'जबतक कोई व्यक्ति २३ वर्ष का नही होता तबतक वह अधिकाशत असयत, विवेक-रहित तथा अल्पानुभवी होता है, और अपना स्वामी आप नही हो सकता।' २५ वर्ष की आयु के बाद, अपनी शागिर्दगी की अवधि समाप्त कर चुकने पर, वह विवाह करने तथा यथेच्छया अपना निजी व्यापार करने अथवा किसी सहायक के रूप मे कार्य करने मे स्वतत्र था।

शागिर्दगी की उत्कृष्टता-निकृष्टता बहुत सीमा तक शिक्षक के ऊपर निर्भर करती थी। अवश्य ही बहुत से ऐसे अवाछनीय लोग भी रहे होगे जिनमे कुछ पर शान्ति के न्यायाधिकारियो को कार्यवाही करनी पडी होगी, जैसाकि "ओलिवर ट्विस्ट" के तीसरे अध्याय मे उल्लेख मिलता है। किन्तु सब मिला कर, शिक्षक तथा शागिर्द के सम्बन्ध—जोकि एक साथ घरेलू, शैक्षणिक तथा आर्थिक थे—समाज का प्रयोजन सम्यक् रूप से सिद्ध कर रहे थे। शताब्दियो से यह शागिर्दगी-व्यवस्था इगलैड के लिये स्कूल का प्रयोजन सिद्ध कर रही थी। यह व्यवस्था हमारे पूर्वजो द्वारा तकनीकी शिक्षा तथा 'स्कूलोत्तर आयु' सम्बन्धी कठिन समस्याओ का एक अत्यन्त व्यावहारिक समाधान था। यह शागिर्दगी व्यवस्था उन्नीसवी शताब्दी तक जारी रही। आखिर उन्नीसवी शताब्दी मे आकर औद्योगिक क्रान्ति ने इसे ध्वस्त कर दिया और इसका स्थान आरभ मे निर्बाध अव्यवस्था ने लिया, जोकि इगलैड के शिक्षण तथा अनुशासन से वचित बच्चो

तथा युवको के लिये बहुत हानिकारक हुई। इस स्थिनि से उत्पन्न ममस्याग्रो को ग्रभी तक पूरी तरह मे समाप्त नही किया जा सका।

किन्तु एलिजाबेथ के इगलैंड मे प्रमुखतम सामाजिक परिवर्तन विदेशी व्यापार का विस्तार था। उसके राज्य मे हमारे व्यापारियो ने नवीन तथा ग्रविक सुदूर बाजारो की खोज की, जिनमे से कुछ तो पृथ्वी के दूसरी ग्रोर थे। इससे पूर्व इगलैंड का व्यापार युगो से फ्राम तथा नीदरलैंड तक सीमित था। बाजारो मे परिवर्तन के माथ दृष्टिकोण मे भी परिवर्तन हुग्रा। दरबार मे ग्रौर नगर मे, पार्लियामेंट मे ग्रौर जमीदार-प्रासाद मे, वर्कशाप मे ग्रौर खेत मे सर्वत्र सागर ग्रौर उसके पार की भूमियो के सम्बन्ध मे चर्चा चलती थी। इगलैंड के लोग ग्रब नये क्षितिजो की ग्रोर झाक रहे थे। शैक्सपीयर के युग मे सबसे ग्रधिक प्रभावशाली लेखक, बलिदान के इतिहास-लेखक फोक्स के ग्रतिरिक्त, हैक्लूइट था, जिसने "नौचालन इगलैंड की यात्राए तथा खोजे" पुस्तक लिखी थी। यह पुस्तक स्पेन पर पोत-ग्राक्रमण के एक वर्ष बाद लिखी गयी थी, ग्रौर दस वर्ष बाद इसका तीन बृहत् जिल्दो मे सर्वावित सस्करण प्रकाशित हुग्रा। हैक्लुइट ने हमारे खोजियो ग्रौर नौचालको के साहसिक कार्यो के वर्णन द्वारा हमारे साहसिक युवको, विद्वानो, राजनीतिज्ञो तथा व्यापारियो तथा पूजीपतियो का ध्यान सागर-पार की ग्रोर ग्राकर्षित किया। यहातक कि उन्नत प्रदेशो के जमीदार तथा किसान भी ग्रनन्त विस्तृत भूमियो के सपने लेने लगे, जो भूमिया कि सृष्टि के प्रभात मे इगलैंड के हल से क्षत होने की प्रतीक्षा मे पडी थी।

एलिजाबेथ के जीवन-काल मे कोई उपनिवेश सफलता के साथ बोया नही गया था, यद्यपि सर हम्फ्रे गिल्बर्ट ने नवोपलब्ध भूमि तथा वर्जिनिया के रिलीफ प्रदेश मे प्रयत्न किया था। किन्तु राज्य उत्तरी ग्रमरिका के शीतोष्ण प्रदेशो पर ग्रधिकार करने को उत्सुक था। १५८४ तक मे हैक्लुइट ग्रपनी पुस्तक "पाश्चात्य कृषि की व्याख्या" मे इस बात का समर्थन करके राज्ञी की कृपा प्राप्त कर चुका था। इस बीच एट्लाटिक पर प्रभुत्व की प्राप्ति ने ग्रगली पीढी मे इगलैंड के लोगो के लिये ये यात्राए सहज कर दी।

स्पेन के साथ लडे जाने वाले युद्ध का स्वरूप तथा स्पेन पर पोत-ग्राक्रमण मे हमारी विजय का विचित्र ग्रौर सीमित उपयोग ग्राग्ल-भाषी देशो के विकास के लिये ग्राधारभूत प्रमाणित हुए ग्रौर स्वय इगलैंड को एक विशिष्ट रूप दिया। स्पेन वालो के ऊपर एलिजाबेथ के इगलैंड की विजय सिकन्दर, पिजारो ग्रथवा नेपोलियन के द्वारा ग्रायोजित एक सैनिक विजय जैसी नही थी। एलिजाबेथ मे इन वीर नायको जैसी, ग्रथवा उसके पूर्वज हेनरी पचम जैसी भी, कोई बात नही थी यद्यपि एगिंकोर्ट की कथा साधारण रगमचो को झकृत कर रही थी ग्रौर इगलैंड के लोगो को ग्रपने ग्रतीत के प्रति गर्व की भावना से भर रही थी, किन्तु ग्रब कोई भी महाद्वीप पर विजयो को दुहराना

नही चाहता था, यहा तक कि अमरीका के स्पेन-शासित प्रदेश मे नये क्षेत्रो की खोज के लिये हस्तक्षेप नही करना चाहता था। स्पेन पर हमारी विजय केवल स्पेन के पोतो पर हमारे पोतो की उत्कृष्टता की स्थापना थी। यह उत्कृष्टता व्यक्तिगत उद्यम और साहस तथा राज्य की सतर्क और बुद्धिमत्तापूर्ण अर्थ-नीति के सयोग से प्राप्त की गयी थी। ड्रेक की कीर्ति की अवधारणा सीजर से भिन्न थी। वह स्पेन की भूमि का एक इच भाग भी छीनना नही चाहता था। उसके उद्देश्य केवल लूट, व्यापार, समुद्र मे पोत-सचालन की स्वतत्रता तथा ईश्वर की पूजा का निर्बाध अधिकार, और अन्तत ऐसे खाली प्रदेशो को अधीन करना जिनमे केवल रैड इडियन लोग ही रहते थे, ही था। यदि एलिजाबेथ के प्रजा-जन कर देने के प्रति उतने अनिच्छुक नही होते और युद्ध के प्रति उनका थोडा और आकर्षण होता तब वह शक्ति, जो उत्तरी अमरीका मे बसने के रूप मे व्यक्त हुई, स्पेन के भूमध्य स्थित उपनिवेशो को जीतने और उन्हे विकसित करने मे अपव्यय होती। किन्तु सागर-विजय का इस प्रकार से दुरुपयोग नही हुआ।

यदि स्पेन के ऊपर हमारी उत्कृष्टता पोतो द्वारा ले जाई गयी विशाल सेनाओ द्वारा स्थापित की गयी होती और यदि स्पेन के उपनिवेश बलात् अग्रेजी शासन के अधीन लाये जाते, तो जिस रूप मे हम आज अमरीका, कैनेडा तथा ऑस्ट्रेलिया को पाते है उस रूप मे वे कभी अस्तित्व मे ही नही आये होते। और इस बात की पूरी सभावना है कि इस प्रकार का सैनिक प्रयत्न आग्ल समाज तथा राजनीति को सैनिकवाद तथा राज-तत्र की दिशा मे ले जाता।[१]

एलिजाबेथ कालीन सागर-युद्ध का विपरीत प्रभाव हुआ, इसने स्वतत्रता की ओर झुकाव को प्रोत्साहित किया। राजकीय जल-सेना राजा को अपनी प्रजा का दमन करने की शक्ति नही देती जिस प्रकार से कि राजकीय स्थल सेना दे सकती है। और चार्ल्स प्रथम के गृहयुद्ध मे राजकीय जल-सेना ने वास्तव मे पार्लियामेट का पक्ष ही लिया। नवीन आग्ल सागर-शक्ति का एक दूसरा पक्ष था व्यक्तिगत साहसिकता का अवसर—अमरीका के सागर मे ड्रेक, हॉकिस तथा उनके समान लोगो के कार्य तथा लडन मे बनाई गयी व्यापारिक कपनियो के विश्व के सुदूर स्थानो मे व्यापार प्रसारित करने के प्रयत्न इस प्रसग मे उल्लेखनीय है। इन कार्यों ने आत्म-निर्भरता तथा स्वशासन की भावना को प्रोत्साहित किया।

आग्ल समाज मे इन विलक्षण तत्वो ने—अर्थात् नवीन नगर-कपनियो तथा

---

[१] यह ठीक है कि १७५६ मे कैनेडा का फ्रास-शासित प्रदेश जीता तथा हथियाया गया था, किन्तु तबतक गृह तथा विदेश मे आग्ल राजनीति का स्वतत्र रूप निश्चित हो चुका था। एलिजाबेथ तथा स्टुअर्ट के कालो मे अभी हमारा राजनैतिक तथा सामाजिक विधान कुछ लचीला था और वह स्वतत्रता की ओर अथवा उसके विमुख किसी भी दिशा मे जा सकता था।

युद्धरत नाविको ने—देश को बहुत गभीरता से प्रभावित किया। ड्रेक तथा उसके स्पर्धी और सहयोगी राष्ट्रीय नायक हो गये। ये लोग तथा पूजीपति व्यापारी, जिन्होने कि इनका समर्थन किया था, बहुत पक्के प्रोटेस्टेट थे, और वास्तव मे उतने ही पक्के जितने उनके शत्रु स्पेन-निवासी थे और पकडे जाने का एक साधारण परिणाम उत्पीडन पूर्वक मृत्यु था। उनके मित्र फ्रास के रोचेले प्रदेश के ह्यूगनोट लोग तथा हालैड के सागर-भिक्षुक (सी-बैगर्ज) थे, जोकि आल्वा तथा गाइस की करुण-कथाए सुनाते थे। असस्कृतो की यह सागर-मैत्री, जिसने फिलिप तथा विधर्मियो को जीवित जलाने की विभीषिका से ससार की रक्षा की, प्रोटेस्टेटवाद के आक्रामक धर्म द्वारा प्रेरित थी जिसने कि आग्ल जमीदारो पर तीव्र प्रतिक्रिया की। जिन नाविको ने स्पेन को पराजित किया था वे असस्कृत ग्राम्य लोग थे, जिनका चर्च तथा शासक लोगो के प्रति कोई आदर भाव नही था, किन्तु जो अपने परीक्षित नेताओ के प्रति पूर्ण वफादार थे, जिनमे सबसे बडी नेता राज्ञी थी। वे अपने प्राण हथेली पर रखते थे, और उनमे से बहुत कम ही युद्ध, पोत-ध्वस तथा सागर-दुर्घटना से, और उन भयानक सक्रामक रोगो से जो पोतो पर चिकित्सा के अभाव, गदे भोजन तथा स्वास्थ्य-नियमो से अनभिज्ञता के कारण फैल जाते थे, बच पाते थे।

ट्यूडरो के काल मे इगलैंड ने अपना राष्ट्रीय शस्त्र बदल दिया। उसने अपना लबा धनुष छोड कर तोपखाने (ब्रॉड साईड) को अपना लिया था। लबे धनुष ने, जिसके कारण इगलैंड यूरोप के अन्य देशो से अधिक शक्तिशाली था, इसे फ्रास मे शत-वर्षीय युद्ध के लिये आकर्षित किया था। तोपखाने ने उसे और उत्कृष्ट रास्ता दिखाया, यह वह रास्ता था जो सागर के बीच से सुदूर देशो को ले गया। तोपखाने से सागर-युद्ध का स्वरूप बिल्कुल परिवर्तित हो गया था। १५७१ तक मे इगलैंड ने लेपैटो मे तुर्को को उसी प्रकार की सागर-युद्ध प्रणाली से हराया था जैसी प्रणाली से यूनानियो ने ईरानियो को सालामिस मे हराया था। इन प्राचीन तथा प्रतिष्ठित परपराओ ने स्पेन की नौ-शक्ति के विकास को रोका, और यह उसके बाद भी हुआ जब कि फिलिप ने इगलैंड को एट्लाटिक तथा चैनल मे जीतने के लिये जल-सेना का निर्माण कर लिया था। वास्तव मे उसका जहाजी बेडा पोतारूढ स्थल-सेना ही थी, सैनिको ने सख्या मे अधिक होने से नाविको पर प्रमुखता प्राप्त करली और उन्हे तुच्छ कारीगर कह कर तिरस्कारा और उनका कार्य केवल शत्रुओ से लडने के लिये स्थल सैनिको को ढोना मात्र निर्धारित किया।

किन्तु इगलैंड के बेडे मे—जिसका नेतृत्व होवर्ड, फ्रोबिशर, हॉकिस तथा ड्रेक आदि ने किया—एड्मिरल तथा उसके सहायक सेनापति नाविक थे और पोत पर उनका पूर्ण शासन था। स्थल सैनिक थोडे से ही होते थे और वे सागर मे अपनी स्थिति से अवगत थे। १५७७-१५८० मे ड्रेक ने भूगोल के चारो ओर अपनी यात्राओ के क्रम मे यह नियम बना दिया था कि नागरिक स्वयसेवको को भी नाविको के साथ

रस्सो को खीचना चाहिये। इगलैड के लोग सागर पर पोत-चालको की बराबरी को और अनुशासन को स्वीकार करते थे, जबकि स्पेन के लोग अपने सैनिक और अभिजात वश के होने के अभिमान को उस समय भी नही छोड सकते थे जबकि पोत की रक्षा खतरे मे होती।

आर्माडा के आने से पूर्व के बीस वर्षो मे इगलेड के नाविक सागर-यात्रा तथा तोप की युद्ध-प्रणाली को अधिक उत्कृष्ट मानते थे। उन्होने अनेक स्थितियो मे अपना कार्य सीखा था—राजकीय पोतो मे सेवा करते हुए, व्यापारियो के रूप मे, और अन्वेषको के रूप मे। ये कार्य-क्षेत्र आसानी से मिलाये जा सकते थे अथवा एक-दूसरे से बदले जा सकते थे। आक्रामक व्यापारिकवाद ने, जोकि अपनी रक्षा मे तथा ससार के सब सागरो मे बलात् अपना व्यापार फैलाने मे अभ्यस्त था, आर्माडा के विरुद्ध युद्ध मे प्रमुख भाग लिया। किन्तु राज्ञी के निजी नियमित सैनिक-पोतो मे भाग लिये बिना विजय सभव नही थी।

हेनरी अष्टम् ने राजकीय जल-सेना की स्थापना की थी। एड्वर्ड षष्ठ तथा मेरी के युगो मे इसका ह्रास हो गया। एलिजाबेथ के राज्य मे इसका पुनरुज्जीवन हुआ। तब भी उसके राज्य के आरभिक बीस वर्षो मे राजकीय गोदी-बाडो मे सुधार की प्रक्रिया बहुत मन्द थी। एलिजाबेथ को उत्तराधिकार मे एक दिवालिया राज्य-शासन मिला और उसे साहस नही हुआ कि वह अपनी क्षुब्ध और हठी प्रजाओ पर और कर लगा सकती। उसकी प्रसिद्ध मितव्ययिता, जो यद्यपि कभी कभी अनुपयुक्त रूप से भी व्यवहृत होती थी, सामान्यत उसकी सरकार के जीवित रहने मात्र के लिये भी आवश्यक थी। इसके अतिरिक्त, वह नौ-सना के लिये जो भी कुछ पैसा लोगो से निचोड पाती थी उसमे से अधिकाश बुरी तरह से अपव्यय होता था। सेसिल तथा सतर्क प्रिवी काऊसिल (सर्वोच्च न्याय-परिषद्) मे गोदी-बाडो मे व्याप्त पारपरिक भ्रष्टाचार को दूर करने के लिये सकल्प का अभाव नही था बल्कि उसे पकडने और दूर करने के लिये उपयुक्त विधि के ज्ञान का अभाव था। ऐसी अवस्था मे एक सुभग अवसर पर (१५७८) एलिजाबेथ ने जोन हाकिस् को अपने पोतो के निर्माण तथा सभाल के लिये नियुक्त किया। खुले युद्ध के पूर्व के दशाब्द मे, जिसेकि राज्ञी ने इतनी देर तक तथा इतनी बुद्धिमत्ता के साथ स्थगित रखा था, हॉकिस ने उतना ही महत्वपूर्ण कार्य किया जितना कि ड्रेक ने प्रशातमहासागर तथा एट्लाटिक मे किया था।

आखिरकार राज्ञी की सपत्ति ईमानदारी के साथ खर्च होने लगी और उसकी पूरी कीमत वापिस मिलने लगी। किन्तु हॉकिस ने भ्रष्टाचार दूर करने मात्र से अधिक कार्य किया। इस महान् जन-सेवक ने अपने अफ्रीका तथा स्पेन-अधिकृत अमरीका के बीच व्यापार और शत्रु-पोतो के साथ युद्धो के दिनो मे जो अनुभव प्राप्त किये वे ड्रेक के अतिरिक्त अन्य किसी से भी अधिक थे। इन अनुभवो के आधार पर वह सम्यग्रूप से

जानता था कि नवीन प्रकार के युद्ध के लिये किस प्रकार के पोत उपयोगी हो सकते है। उसके आलोचक, जोकि पुराने सम्प्रदाय के थे, आकार मे ऊँचे पातो के समर्थक थे, जो आक्रान्ता के लिये तो अवश्य ही अभेद्य थे किन्तु सैनिक पैतरेबाजी के लिये उपयुक्त नही थे। इनमे बडी सख्या मे सैनिक रखे जा सकते थे जो उपयोगी होने के बजाय भडार पर बोझ होते थे। हॉकिस ऐसे किलो को अब दोबारा नही बनने दे सकता था। विरोध के बावजूद उसने राज्ञी के पोत ऐसे बनाए जो ऊचाई मे कम, अपने तलो के अनुपात मे लम्बे, प्रयोग मे सहज तथा शस्त्रो से सुसज्जित थे। "रिवेज" एक ऐसा ही पोत था जिसने पीछे स्पेन की जल-सेना के साथ एक दिन और एक रात के युद्ध मे अपने निर्माताओ की सही सिद्ध कर दिया।

इगलैड के व्यापारी अधिक दूर के बाजारो की खोज करते हुए नाविक-जीवन की नयी सम्भावनाओ से तथा उस युग के साहसपूर्ण परिवेश से प्रोत्साहित हुए थे। किन्तु वे नये प्रदेश खोजने के लिये इस लिये भी बाध्य हुए थे क्योकि घर के पास के बाजार उनके लिये बन्द हो गये थे। केलेइस, जहाकि पिछली अनेक पीढियो से ऊन के सूत ने कार्य किया था, एलिजाबेथ के राज्यारोहण के कुछ मास पूर्व ही हाथ से निकला था। यह इगलैड के उन निर्यातकर्त्ताओ पर ऐसी भीषण चोट थी जिससे कि वे अभी भी पूरी तरह से उबर नही पाए थे, क्योकि अब परिस्थितियो का सामान्य झुकाव उनके विरुद्ध था और उनके स्पर्धियो, अर्थात् वस्त्र-उत्पादको और वस्त्र-व्यापारियो के पक्ष मे था।

कैलेइस का बाजार बद हो जाने के बाद भी नीदरलैड मे ब्रजिस तथा एटवर्प के पुराने व्यापार-केन्द्र बच रहे थे जोकि इगलैड के वस्त्र तथा ऊन के ग्राहक थे। किन्तु अगले कुछ वर्षो मे वे भी इनके लिये बद हो गये। युवती एलिजाबेथ तथा उसकी उच्चतम न्याय-सभा की नीदरलैड पर स्पेन के फिलिप द्वारा नियुक्त शासक ग्रेनवेले के साथ कलह धार्मिक, राजनैतिक तथा आर्थिक उद्देश्यो मे विरोध के कारण उत्पन्न हुई। चैनल मे अगरेजो द्वारा डाके डालने की घटनाए, अग्रेजो की व्यापार के केन्द्र-नगरो मे प्रोटेस्टेटो के साथ मित्रता, जिसेकि एटवर्प के दडाधिकारी तथा लोग प्रोत्साहित करते थे, तथा स्पेन की विधर्मी-विदेशियो के प्रति घृणा-भावना ये सब इस कलह मे कारण बने। किन्तु ग्रैनवेले तथा एलिजाबेथ की विरोधी व्यापारिक नीतियो के परिणम-स्वरूप आर्थिक कलह भी कम महत्वपूर्ण कारण नही थी। दोनो पक्षो का विश्वास था कि दूसरा पक्ष उसकी दया पर निर्भर करता है। ग्रेनवेले निश्चित था कि यदि अगरेजो को नीदरलैड्स मे कपडा बेचने से रोक दिया जाय तब ये अन्यत्र कही भी उसे बेच नही पाएगे और परिणामत वे अपनी कच्ची ऊन नीदरलैड्स के करघो पर कताई-बुनाई के लिये लाने को बाध्य होगे। अगरेज़ लोग निश्चित थे कि नीदरलैड आग्ल-व्यापार के बिना समृद्ध नही हो सकता। यह कलह एलिजाबेथ के राज्य के प्रथम

दशाब्द मे, अर्थात् इगलैड और यूरोप के बीच वास्तव युद्ध आरम्भ होने के बीस वर्ष पूर्व, उभर कर आई। इगलैड के वस्त्र-व्यापारी नीदरलैड्स से निकाले जाने पर १५६७ मे हम्बर्ग बन्दरगाह मे प्रविष्ट हुए, जोकि उनके लिये यूरोप मे प्रवेश का द्वार थी। किन्तु वहा से भी वे दस वर्ष बाद हास नगरो की व्यापारिक ईर्ष्या के कारण निकाल दिये गये।

बाजारो के इन परिवर्तनो के कारण इगलैड मे वस्त्र-उद्योग ने बहुत निराशा और बेकारी को जन्म दिया, किन्तु धीरे-धीरे दूर देशो मे नये बाजार खोज निकाले गये। लडन मे नवीन व्यापारिक कपनिया बनाई गयी जिन्होने रूस, प्रशा, बाल्टिका, तुर्की तथा लेवेट मे सफलता के साथ व्यापार का प्रसार किया। ईरान पहले पहल रूसी नदियो के रास्ते पहुँचा गया था और अन्त मे भारत केप आफ गुडहोप के रास्ते। १६०० ईस्वी मे बूढी राज्ञी ने ईस्ट इडिया कम्पनी को एक चार्टर दिया, जिसकी नियति एक ऐसा आर्थिक और राजनैतिक भविष्य उसे देने वाली थी जो ऊँची से ऊँची कल्पना के लिये भी अगम्य था। इन नवीन विश्वव्यापी साहसिक कार्यो ने इगलैड के व्यापार को उन अनिवार्य परिणामो से बचा लिया जो अन्यथा उसे किनारो के पास के देशो मे बाजारो के हाथ से निकलने के कारण भुगतने पडते। यह परिवर्तन लडन-नगर के पूजीवादियो, तथा जल-सैनिको की साहसिकता के कारण और इगलैड के साहसी खोजियो और अन्वेषको के कारण सम्भव हुआ।

हेक्लुइट ने १५८९ मे ही अपनी पुस्तक वायेजिस् (यात्राए) का प्रथम सस्करण वैल्सिघम को समर्पित करते हुए लिखा था कि

"महामहिम साम्राज्ञी से पूर्व इगलैड के अन्य किस राजा ने इस देश का झडा कैस्पियन सागर मे लहराते हुए देखा था ? इनमे से किस ने ईरान के सम्राट् के साथ कभी कोई व्यवहार किया था जिस प्रकार से कि साम्राज्ञी ने किया है और अपने व्यापारियो के लिये महत् और सुन्दर विशेषाधिकार प्राप्त किये है? इस सरकार से पहले अन्य किस सरकार ने अपने अधिकारियो को कास्टेटीनोपल मे राजकीय भव्यता के साथ देखा था ? किसने पहले कभी अगरेज राजदूतो तथा प्रतिनिधियो को सीरिया के ट्रिपोली नगर मे, एलेप्पो मे, बेबीलोन मे, बुखारा मे, देखा था, और सबसे बढकर, इससे पहले किसने कभी किसी अगरेज के गोआ मे पहुँचे होने की बात सुनी होगी ? अब से पहले कब कभी इगलैड के किसी पोत ने विशाल नदी प्लेट मे लगर डाला था ? अब से पहले अगम्य समझे जाने वाले मेगेसन के दुर्गम जलमार्ग को हम अब पार करते है और फिर-फिर पार करते हैं और चिली, पेरू और नोवाहिस्पातिया के सम्पूर्ण पृष्ठभाग के सागर-तटो की यात्राए करते हैं—जहाँकि पहले कभी कोई ईसाई नही पहुँचा था। इसी प्रकार से हम दक्षिण सागर की शक्तिशाली लहरो वाली चौडाई को पार करते है और शत्रु-बाधाओ के बावजूद ल्यूजोनेस की भूमि पर उतरते है और मालुकस तथा जावाद्वीप

के राजाग्रो मे सधि मित्रना ग्रौर व्यापार-सबध स्थापित करते है, बोनास्पेराजा के प्रसिद्ध ग्रन्तरीप को पार करते है, सेट हैलेना द्वीप पर पहुँचते ह, ग्रौर ग्रन्त मे चीन के माल से लदे हुए वापिस पहुँचते है।" एलिजाबेथ के राज्य के ग्रन्तिम चरण मे न केवल इगलैड का व्यापार तथा वित्त ही ग्राधुनिक ग्राधारो पर पुनरुज्जीवित ग्रौर विकसित हो रहा था बल्कि इसके पुराने स्पर्धी भी तेजी मे ह्रास की ग्रोर जा रहे थे।

इगलैड के व्यापार का स्पेनीय नीदरलैड्स से हटना मात्र उसके लिये घातक नही बना होता, किन्तु वहा जघन्य धार्मिक हत्याए ग्रौर उत्पीडन तथा ग्राल्वा शासन के युद्ध ग्रारभ हो गये। इन विभिन्न घटनाग्रो ने यूरोप के व्यापार ग्रौर ग्रर्थ-व्यवस्था मे एटवर्प की प्रमुखता समाप्त कर दी। इनके स्थान पर एम्स्टर्डम तथा विद्रोही डच प्रजातत्र के ग्रन्य नगर प्रमुखता मे ग्राए। शीघ्र ही हालैड के नाविक ससार के सब सागरो मे इगलैड के प्रमुख स्पर्धी होने वाले थे, किन्तु एलिजाबेथ काल के इगलैड को हालैट के नाविक युद्ध मे मित्र के रूप मे परिचित थे न कि प्रतिस्पर्धी व्यापारी के रूप मे।

इस बीच इटली के व्यापारिक नगरो का पूर्व की ग्रोर जाने वाले मार्गो की बढती हुई कठिनाइयो के कारण ग्रौर ग्रन्तरीप के रास्ते की प्रतिस्पर्धाग्रो के कारण, जोकि उनसे डचो, ग्रग्रेजो ग्रौर पुर्तगालियो ने छीन लिये थे, निरन्तर ह्रास हो रहा था। इटली के व्यापारियो ने विश्व-प्रतियोगिता का विशाल क्षेत्र छोड दिया था। वेनिस के व्यापारी ग्रब कॉट्सवोल्ड ऊन की खोज मे इगलैड नही ग्राते थे। १५८७ मे वेनिस द्वारा साउथैम्टन को भेजा गया ग्रन्तिम बडा व्यापारिक पोत नीडल्स के पास ध्वस्त हो गया था ग्रौर उसके साथ ही डूब गयी थी मध्ययुगीन व्यापार की व्यवस्था तथा वह सब जो इसके परिणामस्वरूप इगलैड ग्रौर इटली मे विद्यमान था। साउथैम्टन का, जोकि इटली का एक वस्तु-भडार था, ह्रास हो गया था ग्रौर भूमध्य तथा सुदूरपूर्व प्रदेशो का माल ग्रग्रेजी पोतो द्वारा थेम्स के रास्ते पहुँचने के साथ लडन ग्रौर ग्रधिक समृद्ध हो गया था।

ग्रगली शताब्दी मे इगलैड के ग्रौपनिवेशिक तथा व्यापारिक विस्तार मे तबाकू का योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा। तबतक ग्रभी इगलैड के पास कोई उपनिवेश नही थे, किन्तु १५९७ मे नया ग्रमरीकन तबाकू फ्रास, फ्लैडर्स तथा कार्नवाल के पोतो मे कार्नवाल की दरारो मे से बृहत् मात्रा मे चोरी मे ग्रथवा बलात् स्मगल किया जा रहा था। राज्ञी की मृत्यु के समय चिकनी मिट्टी की लबी नालियो मे तबाकू ले जाने का बहुत प्रचलन हो गया था।

सागर-पार साहसिक यात्रियो ग्रादि का विस्तार व्यापारिक पूजीवाद के साथ हुग्रा, जोकि पुरानी नगरपालिका-व्यवस्था तथा व्यावसायिक सघ-व्यवस्था का ग्रत्यन्त विरोधी था।

श्री फे ने लिखा है "व्यवसायी सघ-व्यवस्था पूजी-सग्रह के लिये ग्रनुकूल नही थी।

अपने कौशल मे तथा अपने जीवन के व्यवस्थापन मे मध्ययुगीन व्यापारी तथा शिल्पी सभवत अनुगामी शताब्दियो से उत्कृष्टतर थे। किन्तु व्यवसायी सघ का दृष्टिकोण नगरपालिका परक था और इसका ढाचा कठोर था, परिणामत इसे एक ऐसी व्यवस्था के लिये स्थान रिक्त करना पडा जिसमे विस्तार तथा परिवर्तन की सामर्थ्य थी। इसे हम व्यापारिक पूजीवाद कहते है जिसेकि पूरक गृह-उद्योग का सहयोग प्राप्त था। व्यापारिक पूजीपति ने सब पुरानी दीवारो को ध्वस्त कर दिया। उसने नगरपालिका-शासित नगरो की उपेक्षा कर ग्रामो मे कार्य किया, और बडी कपनियो के एकाधिकार को बिना लाईसेस व्यापार करके अपना रास्ता निकाला। उसने बहुत सी ज्यादतिया की, किन्तु वह आर्थिक वृद्धि का जीवनद रक्त था।"

व्यापारिक पूजीवाद का नगरपालिका तथा व्यवसायी सघ के आर-पार यह विस्तार ऊन के व्यापार मे चासर तक के युग मे स्पष्ट था। एलिजाबेथ के राज्य मे इसने नये प्रकार की सागर-पारीण व्यापार की कपनियो के उदय के रूप मे एक और बडा कदम आगे की ओर रखा। ये दो प्रकार की थी। एक "विनियमित पूजी कपनी", जिसमे कि प्रत्येक सदस्य कपनी के साधारण नियमो के अन्तर्गत अपनी निजी पूजी से व्यापार करता था ऐसी कपनिया मर्चेंट एड्वेचररस्, ईस्ट लैड अथवा बाल्टिक, दि रशिया तथा लेवेट, थी। दूसरा वर्ग मिश्रित पूजी कपनियो का था—ईस्ट इडिया कपनी, दि अफ्रीकन कपनी, तथा दो सतति के बाद, दि हड्स वे कपनी थी। इस दूसरे वर्ग मे, कम्पनी सयुक्त रूप से व्यापार करती थी और इसके लाभ और हानिया इसके साझीदारो मे विभक्त कर ली जाती थी।

इनमे से प्रत्येक कपनी को, चाहे वह विनियमित पूजी-कपनी हो या मिश्रित पूजी-कपनी, अपने व्यापार के लिये भौगोलिक क्षेत्र राजकीय चार्टर (प्रपत्र) द्वारा नियत करना होता था और उसमे इगलैड से कोई उसमे अतिक्रमण नही कर सकता था। ऐसा उचित और आवश्यक दोनो था, क्योकि कपनियो को किलो और बस्तियो के बनवाने और शस्त्रास्त्र रखने पर बहुत व्यय करना पडता था, और ये उनके लिये अनिवार्य थे, क्योकि राजकीय नौ-सेना उन्हे सुदूर प्रदेशो मे सुरक्षा नही दे सकती थी। ये एलिजाबेथ-युगीन कपनिया अनेक दृष्टियो से विशेषाधिकारो तथा कार्यों मे उन "चार्टर्ड कपनियो" से मिलती जुलती थी जिन्होने विक्टोरिया युग के पिछले वर्षों मे अफ्रीका के भीतरी भाग को विकसित और विक्षुब्ध किया। सभवत वह युग राज्ञी की प्रजा के स्वतत्र समुदायो को सैनिक शक्ति देने की दृष्टि से अनुपयुक्त था—जैसाकि जेम्सन के आक्रमणो ने प्रदर्शित किया। किन्तु एलिजाबेथ-काल मे सुदूर व्यापार को बढाने का और कोई ढग नही था, और यदि कोई कपनी सुदूर प्रदेशो मे अपनी नीति का ठीक व्यवहार नही करती थी तब इसके सदस्यो की ही इससे हानि होती थी, राज्य पर इसका कोई फल नही होता था।

लडन की ये महान कपनिया, जोकि राज्य पर बहुत कम निर्भर करती थी, जिन परिस्थियो मे कार्य करती थी उनसे स्वतत्र साहसिकता, स्वशासन तथा आत्मनिर्भरता की प्रवृत्तियो को प्रोत्साहन मिला। जैसेकि भारत तथा उत्तरी अमरीका के इतिहास मे इन कपनियो का महत्व सर्वोच्च और निर्णायक था उसी प्रकार से अपने देश मे भी आग्ल चरित्र तथा राजनैतिक और सामाजिक परिवर्तनो पर बहुत गहरा था, जैसाकि भविष्य मे स्टुअर्ट तथा हेनरी काल के इतिहास इस बात को प्रमाणित करने वाले थे। एलिजाबेथ की मृत्यु के एक पीढी बाद यात्री पीटर मडी ने यातायात तथा खोजो को, अर्थात् विदेश व्यापार के लिये व्यापारियो की उन कपनियो को, "जोकि अपने व्यापार की वृद्धि के लिये अपने विशाल साधनो तथा विवेक का उपयोग करती है तथा अपने माल और पोतो को विश्व के अधिकाश ज्ञात भागो मे भेजती है" ऐसी सात चीजो मे से एक बताया था जिनमे कि इगलैड श्रेष्ठतम था।[1]

सुदूर भविष्य की सन्तानो के लिये एलिजाबेथकालीन इगलैड के सबध मे स्मरणीय तथ्य यह होगा कि इन्होने शैक्सपीयर के नाटको की सृष्टि की। केवल इतना ही नही कि मानव-जाति का सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति उस काल मे उत्पन्न हुआ, उसकी कृतिया उत्तर एलिजाबेथीय और आरभिक जेकोबीय कालो मे लिखी जा सकती थी जिस काल मे कि सौभाग्यवश वह रहा। वह अपनी कृतियो का सृजन कभी नही कर पाया होता यदि वे स्त्री-पुरुष आचार-विचार मे उनसे भिन्न होते जिनके बीच कि वह रहा था, अथवा यदि लडन का रगमच आर्माडा के बाद विकास के एक ऐसे स्तर तक नही पहुच गया होता जिसमे कि उसके हाथ के आखिरी स्पर्श भर की अपेक्षा थी।

यह कोई आकस्मिक बात नही है कि शैक्सपीयर के नाटक गद्य की अपेक्षा पद्यात्मक है, क्योकि जिस दर्शक-समाज के लिये वह लिख रहा था, अर्थात् इगलैड के ग्राम और नगर दोनो के लोग, वे समान रूप से कथा, मनोरजन, इतिहास तथा समकालीन घटनाओ के समाचार सब को पद्य के माध्यम से सुनने के अभ्यस्त थे। गावो तथा नगरो मे सामान्य लोगो की त्रिपा शात करने के लिये समाचार-पत्र या उपन्यास नही होते थे बल्कि मडलियो द्वारा गाये जाने वाली गाथाए और गीत ही इस आवश्यकता थी पूर्ति करते थे। गाथाओ मे निरन्तर वृद्धि होती रहती थी और ये हजारो की सख्या मे बेची जाती थी। इनके कथानक या तो किसी बाइबल की कहानी से लिये गये होते, अथवा प्राचीन पुराण या इतिहास से, अथवा किसी मध्ययुगीन आख्यान अथवा समकालीन वृत्त से—जैसे आर्माडा (पोत आक्रमण), दस्यु षड्यत्र, नवीनतम हत्या अथवा भागे हुए प्रेमी। और लिरिक तथा प्रेम-गीत, जोकि हमारे आज के

---

[1] मडीज़ ट्रैवल्स (हैक्लुइट सोस १९१४) ४, पृ० ४७-४८, एन एकाउट ऑफ दि ऑरिजस।

साहित्यिक मकलनो मे उत्कृष्ट काव्य-रचनाग्रो के रूप मे सकलित हे, उस युग मे साधा-रग लोकगीतो के रूप मे पाये जाते थे ।

इन परिस्थितियो मे, शैक्सपीयर ने नाटको का ग्रभिनय होने के पहले के बीस वर्षो मे एक नवीन नाटक-ग्रान्दोलन एकाएक उदित हुग्रा, जिसमे नाटककारो के एक नये सप्रदाय का उद्भव हुग्रा जिनमे मार्लोवे प्रमुख था, ग्रौर नाटक कपनिया बनी जिनके ग्रभिनेता ग्रपने व्यवसाय को उचित महत्व की दृष्टि से देखते थे । मध्ययुगीन विदूषक तथा बार्न स्टोर्मर (एक ग्राम्य-पात्र जो ऊचे ऊचे गाता या बोलता था) के माथ मूक्ष्म कला-प्रवीण पात्र भी जोड दिये गये थे जिनमे बर्बेज शीघ्र ही सबसे ग्रधिक महत्वपूर्ण हो गया इन लोगो ने व्याख्यात्मक ग्रभिनय की कला को इसके उत्कर्ष पर पहुँचा दिया । इनके साथ शागिर्द लडके भी होते थे जोकि बचपन से स्त्रियो का उचित शालीनता ग्रौर शिष्टता के साथ ग्रभिनय करने के लिये शिक्षित किये जाते थे ।

एलिजाबेथ-काल के बीच के वर्षो मे ग्रभिनेता तथा नाटककार के लिये वैभव तथा सम्मान पूर्ण रास्ता खुल गया था । चलती-फिरती नाटक-कपनियो को साहित्यिक सामतो ग्रौर जमीदारो का सरक्षण मिलता था, ग्रोर ये लोग सम्मानित ग्रतिथियो के रूप मे इन के किलो या प्रासादो मे ग्रभिनय के लिये जाते थे ग्रौर हालो तथा गैलरियो मे नाटक करते थे । किन्तु "धन तथा सम्मान दोनो दृष्टियो से" ग्रधिक लाभकर थी वे रगशालाए जोकि राजधानी के जन-साधारण के लिये थेम्स नदी के दक्षिणी तट पर घास के मैदानो मे बनाई गयी थी, जिनमे कि नागरिक ग्रपनी पत्नियो के साथ तथा शिक्षार्थी (शागिर्द) ग्रपनी प्रेमिकाग्रो के साथ पुल लाघ कर ग्रौर उच्च पदाधिकारी तथा धनिक लोग नौकाग्रो मे नाटक देखने ग्राते थे ।

ग्रभिनय दिन के समय होता था ग्रौर न तो यवनिका ग्रादि होते थे ग्रौर न नीचे से दिया जाने वाला प्रकाश । रगमच का ग्रग्र भाग बिना छत का होता था । दर्शको मे उच्च वर्ग के लोग स्टूलो पर ग्रभिनेता के पास बैठते थे । साधारण दर्शक नीचे बैठे होते ग्रौर उन पर कोई छत नही होती थी । लकडी के वृत्त के चारो ग्रोर छत वाले गलियारे भी साधारण दर्शको से भरे रहते थे । यहा समाज के विभिन्न वर्ग, जोकि शिक्षा ग्रौर रुचि मे परस्पर भिन्न होते थे, एकत्र बैठते थे । यह शैक्सपीयर का कार्य था कि वह सब को प्रसन्न करता ।

जब पहले पहल उसका इस कठिन दर्शक-वृन्द से साम्मुख्य हुग्रा उस समय उसकी रुचि षड्यत्र ग्रौर चमत्कार, कोलाहल ग्रौर युद्ध, ग्रसस्कृत विदूषकता तथा दरबारी ग्रौर भद्र हास्य-व्यग्य तथा उत्कृष्ट प्रकार के सगीत मे थी, क्योकि उस समय का इगलैड सगीत तथा गीत में यूरोप मे सर्वाग्रणी था, ग्रौर उन लोगो की ग्राधुनिक सामान्य दर्शको से भिन्न, पद्य मे—प्रमोद ग्रौर वासना वाहन के रूप मे—रुचि भी थी । ये सब चीजे मार्लो

तथा उसके साथियो ने प्रस्तुत की थी, और इस प्रकार उन्होने कुछ ही वर्षो मे एक नये नाटक को जन्म दिया जो शैक्सपीयर के लिये आधार बना। उसने परपरा को स्वीकार किया और आगे बीस वर्षो मे उसे इतना विशाल बना दिया कि जो लोक-मनोरजन की विस्तृततम सीमा का भी अतिक्रमण कर बहुत आगे बढ गयी थी।

उसका काव्य मार्लो के "माइटी लाईन" से कही उन्नततर स्तर का था और उनसे जो गद्य-वार्तालाप रचा वह उतना ही विदग्ध, सशक्त और कभी-कभी उतना ही मधुर और लयपूर्ण है जितना कि उसका काव्य। उसने गद्य और पद्य दोनो का न केवल सौन्दर्य, भय, विदग्धता और उच्च दर्शन का ही वाहक बनाया बल्कि एक अन्य चीज का भी वाहक बनाया जोकि नाटक के लिये नवीन थी, और वह थी प्रतिरूपो (टाईप्स) और व्यक्तिकृत वासनाओ और आवेशो के स्थान पर वैयक्तिक चरित्रो का चित्रण। जैसाकि हेमलेट मे हम देखते है, कथावस्तु तथा घटनाए तक भी चरित्र की तुलना मे गौण हो जाती है और तब भी नाटक अच्छा लगता है। उसके स्त्री और पुरुष पात्र इतने वास्तव है कि हम उनके सम्बन्ध मे दृश्य के बाद भी निरन्तर बात करते रहते है, मानो वे कोई स्वतत्र जीवित व्यक्ति हो। वास्तव मे, पिछले दो सौ वर्षो मे उसके नाटक अध्ययन-कक्ष मे अधिक रहे है बजाय रगमच के। किन्तु तब भी वे नाटक ही है, चाहे उनका अभिनय मन के चित्रपट पर ही होता रहा हो, और केवल रगमच ही उन्हे पूर्ण सप्राणता के साथ व्यक्त कर सकता है, चाहे बहुधा यह उनके लिये अपकारक ही होता है। शैक्सपीयर के नाटको तथा उसकी अन्य सब कृतियो का श्रेय एलिजा-बेथीय रगमच को ही है। इसके लिये प्रशसा का पात्र रगमच है और है एलिजाबेथ के युग के लोग।

आज का सामाजिक इतिहासकार पिछले युगो के लोगो का यथोचित वर्णन नही कर सकता, अधिकतम वह जो कर सकता है वह यह कि वह उन परिस्थितियो की ओर सकेत कर दे जिनमे कि वे लोग रहे। किन्तु यदि वह यह दिखाने मे असमर्थ है कि उसके पूर्वज किस प्रकार का जीवन जीते थे, तो शैक्सपीयर इसमे समर्थ है। उसकी कृतियो मे हम उन दिनो के स्त्री-पुरुषो को पढ सकते है। उदाहरण के लिये, उसके नाटको मे वास्तव स्त्री-पुरुष सम्बन्धो को तथा एलिजाबेथ-काल की स्त्री के चरित्र को अधिक सम्यक् रूप मे देखा जा सकता है जितना कि एक सामाजिक इतिहास-लेखक दिखा सकता है।

जैसे-जैसे अगरेजी जीवन का हमारा अध्ययन मध्ययुगो से आधुनिकता की ओर आगे बढता है उसी अनुपात मे हमे प्रभूत मात्रा मे वह सहायक सामग्री प्राप्त होती है जिसका पूर्वाभास हमे चॉसर मे मिलता है, अर्थात् काव्य और कहानी जोकि लेखक के युग के लोगो के जीवन को और उनके आचार-विचार तथा भाषा को चित्रित करते है। समकालीनो के ये चित्रण समय बीतने के साथ अमूल्य महत्व के हो गये है। साथ ही

साथ सत्रहवी शताब्दी मे डायरियो तथा स्मृति-लेखो का भी प्रचलन बढा जैसेकि एवेलीन, पेपी, और पीछे बोस्वेल जोन्सन के स्मृति-लेख। ये तथा अगरेजी नाटक, फील्डिग, जेन ऑस्टिन, ट्रोपोल्लो तथा अन्य असख्यो के उपन्यास सामाजिक इतिहास को ठीक उस क्षेत्र मे सहायता देते हैं जिसमे कि कानून और अर्थ विषयक लेख अनुपयोगी रहते हैं।

जो लोग अपने पूर्वजो के सम्बन्ध मे जानना चाहते है कि वे कैसे थे, वे सब साहित्य मे आनन्द तथा ज्ञान का वह अजस्र स्रोत पाएगे जिसेकि समय ने एक ऐतिहासिक महत्व भी दे दिया हे, जिसका कि उनके लेखको को सपने मे भी ध्यान नही था। ये सब अतीत के सामाजिक अध्ययन की पुस्तके और काव्यकृतिया है और इनमे सबसे महत्व की है शैक्सपीयर की कृतिया।

अध्याय ८

चार्ल्स तथा क्रॉमवेल का इंगलैंड

औपनिवेशिक विस्तार का आरम्भ । ईस्ट इण्डिया कम्पनी । फैन ड्रेनिंग । महान् विद्रोह के परिणाम तथा सामाजिक परिस्थितियाँ, गार्हस्थ्य जीवन ।

•

आर्थिक तथा सामाजिक इतिहास के क्षेत्र मे महान् विद्रोह के आरम्भ होने तक इगलैंड मे स्टुअर्टो के राज्य-काल को एलिजाबेथीय युग का ही एक घटना-रहित प्रस्तार कहा जा सकता है । यह युग भीतर से भय तथा बाहर से आक्रमण के स्थान पर एक शान्ति तथा सुरक्षा का युग रहा । कृषि, उद्योग तथा व्यापार अधिकाशत उसी प्रणाली पर जारी रहे जिसका विवरण पिछले दो अध्यायो मे दिया जा चुका है । एक ग्राम-समाज, जिसमे भू-स्वामित्व, अवसर तथा अल्प-सम्पत्ति का व्यापक वितरण था, छोटी तथा बडी सम्पत्तियो वाले जमीदारो को तथा पूर्ण अधिकार और पट्टेदारी के अधिकार वाले योमैन किसानो को पर्याप्त अवसर तथा महत्व देता था । किन्तु बहुतो को कठिनाइयो का सामना भी करना पड रहा था, जोकि अशत मूल्य-वृद्धि के कारण था । उद्योग तथा व्यापार ट्यूडर-काल के अनुरूप ही प्रगति कर रहे थे । एलिजाबेथ-काल मे दूर देशो मे व्यापार के लिये स्थापित कपनिया वैभव तथा प्रभाव मे निरन्तर वृद्धि कर रही थी, और उनके साथ ही लडन भी बढा—अन्य सब नगरो को जनसख्या, वैभव तथा शक्ति के अन्य सब साधनो मे उससे कही अधिक पीछे छोडता हुआ जितना कि पहले कभी भी वह उन्हे पिछाड पाया था । देश मे अन्यत्र शागिर्दगी व्यवस्था, निर्धन कानून, मजदूरी तथा मूल्यो के निर्धारण के नियम, सर्वोच्च न्याय परिषद् के अधीन शान्ति के न्यायाधिकारियो के आर्थिक तथा प्रशासनिक कार्य ये सब दीर्घ ससद् (लाग पार्लियामेट) के अधिवेशन के समय लगभग उसी प्रकार के थे जैसेकि वे राज्ञी की मृत्यु के समय थे । जिस समय इगलैंड के प्रकटत स्थिर और निर्द्वन्द्व समाज की सतह के नीचे ससदीय तथा शुद्धाचारवादी क्रान्ति• जन्म ले रही थी उस समय कोई महत्वपूर्ण औद्योगिक, कृषीय अथवा सामाजिक परिवर्तन नही हुए ।

नयी शताब्दी के पहले ४० वर्षो मे इगलैंड के आर्थिक तथा सामाजिक जीवन की परिवर्तन-गति की मन्दता मे एलिजाबेथ के उत्तराधिकारी के अधीन इगलैंड तथा

स्कॉटलैड के राजत्व के विलय से भी कोई तेजी नही आई। दोनो के लोग, संसद, कानून, चर्च तथा व्यापारिक व्यवस्थाए एक और शताब्दी के लिये पहले के समान अलग और भिन्न रही। न राजा-पद के विलय से ही लोग एक से दूसरे देश मे जाकर बसे। स्कॉटलैड इगलैड के लोगो को निर्धनता के कारण आकर्षित नही कर पाता था, और उसमे ईर्ष्या-भाव भी इतना था कि वहा आगन्तुको को पसन्द भी नही किया जाता था। जब १६०३ मे स्कॉटलैड के षष्ठ तथा इगलैड के प्रथम जेम्स ने होलीरुड से व्हाईट हाल मे प्रस्थान किया तब उसके साथ या पीछे आने वाले दरबारी या साहसिक निर्धन लोग जो आए वे स्कॉट लोगो की विशाल धारा की पहली बूदे थे जोकि तब से सम्पत्ति की खोज मे सीमा पार कर निरन्तर आते रहे है। किन्तु अभी वह समय दूर था जब यह धारा इतनी मोटी हो गयी कि इसने कुछ राष्ट्रीय महत्व ग्रहण किया। अभी वह समय आने मे कई पीढियो का व्यवधान बाकी था जबकि स्कॉटलैड के किसान, व्यापारी, माली, प्रशासक, डाक्टर तथा दार्शनिक इतनी पर्याप्त मात्रा मे अपने कौशल, उद्योग तथा ज्ञान के साथ आए और इगलैड के जीवन को प्रभावित किया और उसकी सम्पत्ति को बढाने मे सहायक हुए। सम्पूर्ण सत्रहवी शताब्दी मे इगलैड के लोग धर्म, राजनीति, कृषि, सिचाई, व्यापार, नौ-परिवहन, दर्शन, विज्ञान तथा कला के क्षेत्रो मे नये विचारो के लिये स्कॉटलैड के बजाय हॉलैड की ओर देखते थे।

न ही स्टुअर्ट राजाओ के काल मे इगलैड के विचार और व्यवहार ने स्कॉटलैड के लोगो को ही प्रभावित किया, जिनका गर्व अपने बलवत्तर पडौसी के यहाँ से आने वाले विचारो के प्रति एकदम सतर्क हो उठता था। स्कॉटीय धर्म ने अपने आपको स्वदेशी सूत के मजबूत बुने कपडे मे लपेट रखा था, और यह प्रार्थना-पुस्तक वाले आग्लवाद तथा प्रगतिशील सम्प्रदायो वाले शुद्धाचारवाद के भी बहुत विरुद्ध था। इसी प्रकार से, स्कॉटीय समाज का विचित्र रूप भी, जिसमे कि एक ओर वास्सल की अपने स्वामी के प्रति सामन्तवादी वफादारी थी और दूसरी ओर विभिन्न वर्गों के बीच सामाजिक विनिमय मे साम्य था, इगलैड के लोगो के लिये एक पहेली था, जबतक कि सर वाल्टर स्कॉट के उपन्यासो ने पीछे इसका भेद नही दिया।

विदेशी व्यापार मे दोनो देशो के व्यापारी अभी तक प्रतिस्पर्धा मे ही थे। धन-गर्वित अग्रेज सब जगह स्कॉटो से ऊपर ही रहता था और उन्हे विदेशी या औपनिवेशिक सभी बजारो से खदेड रहा था। अपने देश मे भी दोनो भागो के लोग शान्त सीमाओ के आरपार से एक-दूसरे पर भवे चढाते थे। तीन सौ वर्षों से चल रहे सीमा-युद्धो का अन्त भले ही राजा-पदो के विलय से हो गया था, किन्तु पारस्परिक घात और प्रतिशोध की परम्परा ने जो शत्रु-भाव रोप दिया था उसका अन्त होने मे काफी समय लगा। स्टुअर्ट काल की नागरिक तथा धार्मिक कलहो मे इगलैड

तथा स्काटलैड के राजनैतिक दल, चर्च और सैनिक प्राय मिलकर ससद् तथा राजा की ओर से कार्य करते थे, किन्तु जितना ही वे एक-दूसरे के निकट आते थे उतने ही कम वे परस्पर सहमत होते थे, क्योकि दो जातियो के ये लोग अभी तक विचार तथा अनुभूति की दो पृथक् भूमियो पर रह रहे थे ।

सत्रहवी शताब्दी के प्रथम चालीस वर्षो मे स्वय इगलैड मे जबकि कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुए, और जबकि स्कॉटलैड के साथ राजा-पद की एकता ने उस समय के सामाजिक जीवन को जरा भी प्रभावित नही किया, इन शान्त वर्षों मे एक सबसे बडा परिवर्तन घटित हुआ, और वह था आग्ल जाति का सागरो के पार सदा के लिये प्रसार । वर्जिनिया, न्यू इगलैड, तथा बार्बाडोज के समान पश्चिमी इडियन उपनिवेशो की सफल स्थापना तथा हिन्दोस्तान के तट पर व्यापार के पडाव का निर्णय जेम्स प्रथम के राज्य तथा चार्ल्स के राज्य के आरम्भिक वर्षों की महत्वपूर्ण घटनाए थी ।

अग्रेज जाति ने एक बार फिर अपने द्वीप की सीमाओ के बाहर निकलना आरम्भ किया, और इस बार ठीक दिशा मे । शतवर्षीय युद्ध के दिनो मे फ्रास और इगलैड का एक प्रान्त बनाने का प्रयत्न उदीयमान राष्ट्रीय चेतना की पहली सहज अभिव्यक्ति था । इसके असफल हो जाने के बाद, अग्रेज लोग डेढ शताब्दी तक इगलैड मे बद रहे—अपने को सम्पत्ति, बुद्धि तथा नौ-शक्ति मे समृद्धतर करते हुए, इसके बाद उन्होने एक बार फिर विस्तार का प्रयत्न किया, इस बार बहुत भिन्न विधि से और उन दिनो के बहुत भिन्न प्रकार के नेतृत्व मे, जबकि

हमारा राजा नार्मेंडी को शौर्य-पूर्ण शालीनता और शक्ति के साथ जाता था ।

इस बार 'वह अच्छा यौमैन, जिसकी भुजाए इगलैड मे बनी थी' दोबारा आगे बढा, किन्तु इस बार शौर्य के साथ नही और राजा के नेतृत्व मे नही बल्कि हल और कुल्हाडी के साथ—जगलो और असभ्य प्रदेशो मे नयी सभ्यता की स्थापना के लिये ।

इस नव-निर्माण के लिये पहली आवश्यकता शान्ति थी । जब तक स्पेन के साथ युद्ध जारी रहा, इगलैड का धन और शक्ति का सीमित कोष सागर मे, आयरलैड तथा नीदरलैड मे लडने मे ही व्यय होता रहा । युद्ध की परिस्थितियो मे एलिजाबेथ युग के लोगो के वर्जिनिया की स्थापना के प्रयत्न असफल ही रहे । नये शासन के प्रथम वर्ष मे जेम्स प्रथम ने उत अच्छी शर्तो पर, जोकि सफल युद्ध द्वारा प्राप्त की गयी थी, शान्ति स्थापित करने की योग्यता दिखाई । बहुत सी बातो मे उसकी पीछे की विदेशी नीति निर्बल और अयोग्य थी उसने स्पेन को प्रसन्न करने के लिये नौ-सेना की शक्ति का निरादर किया और रिसीफ का सिर काट दिया । जो भी हो, उसकी शान्ति-प्रियता ने इगलैड को शान्ति का अवसर दिया और उसके प्रजाजनो ने उस थोडे से समय का उपयोग आग्ल साम्राज्य के बीज रोपने तथा अमरीका की स्थापना करने मे

किया। चार्ल्स प्रथम द्वारा एक उत्कृष्ट नौ-सेना की पुन स्थापना तथा अनुगामी शासको द्वारा उसको बनाए रखने के कारण इस गति को सुरक्षित रूप से अग्रसर होने का अवसर मिला। राज्य ने ऐसी परिस्थितियो का पोषण किया जिनमे कि उपनिवेश-प्रसार सम्भव था, किन्तु व्यक्तिगत प्रयत्न तथा पुरुषार्थ ने धन, जन तथा स्फूर्ति दी। लडन की कपनियो, जैसे वर्जिनिया कपनी तथा मैसेचुसेट्स बे कपनी ने प्रवास के लिये वित्त दिया तथा उसे सगठित किया। इस सहायता के बिना इसका विकास सम्भव नही था। इसके लिये पैसा देने वाले व्यापारियो, कुलीनो तथा जमीदारो का उद्देश्य अशत तो अपनी तात्कालिक लागत पर अच्छा सूद कमाना होता था, किन्तु उससे भी अधिक उनका उद्देश्य होता था एट्लाटिक के पार इगलैंड की वस्तुओ के लिये स्थायी बाजार प्राप्त करना और विनिमय मे इस नये ससार के उत्पादनो को, जैसे तम्बाकू को, प्राप्त करना, जोकि वर्जिनिया मे शीघ्र ही विशाल मात्रा मे उत्पन्न किया जाने लगा था। इन साहसिक अभियानो के लिये तथा व्यापारी के लिये धन तथा अन्य सामग्री देने वालो मे बहुत से लोग देश-प्रेम तथा धर्म-सम्बन्धी लक्ष्यो से प्रेरित थे। १६३० तथा १६४३ के बीच २० हजार पुरुष, स्त्री और बच्चो को २०० पोतो से भेजने पर दो लाख पौड व्यय किया गया था और इसी काल मे चालीस हजार व्यक्ति वर्जिनिया तथा अन्य बस्तियो को भेजे गये थे।

इस आन्दोलन के अत्यन्त योग्य पोषको मे कुछ अत्युन्नत कुलीन और प्रमुखतम धनाढ्य लोग भी थे, किन्तु स्वय उपनिवेशो मे बसने वाले लोग ग्राम तथा नगरो के मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय लोग ही थे। उनके भी मन मे इस उपनिवेश-विस्तार के उद्देश्य अशत स्वार्थपरक ही थे, किन्तु अशत आदर्शमूलक और धार्मिक थे। अधिकाश प्रवासी धार्मिक भावना से प्रेरित नही थे, किन्तु नये इगलैंड (न्यू इगलैंड) मे तीर्थयात्री पादरियो (१६२०) के समान कुछ नेताओ को इन आदर्शो ने प्रेरणा दी थी और उनके बाद जोन् विन्थ्रोप तथा उसके साथियो को प्रेरित किया था। उनके उत्साह ने उत्तरी उपनिवेशो को शुद्धाचावादी स्वरूप दिया जिसने आगे चलकर अमरीका के सामाजिक विकास को प्रभावित किया।

एट्लाटिक को धार्मिक कारणो से पार करने वालो का उद्देश्य, एड्रयू मार्लो के के शब्दो मे, "पुजारी के अत्याचार" से बचना था। जेम्स, चार्ल्स और लार्ड के काल मे इगलैंड मे केवल एक ही धर्म सहन किया जाता था, और यह शुद्धाचारवादी धर्म नही था। नवीन इगलैंड मे इन धार्मिक शरणार्थियो मे से कुछ लोग इस वीरान् प्रदेश मे जिनेवा के आदर्श पर ईश्वर का राज्य बसाना चाहते थे, और वे इसका शासन उन सब पर आरोपित करना चाहते थे जो इस ईश्वरवादी जनतन्त्र के नागरिक बनना चाहते थे। मेसाचुसेट्स वास्तव मे ऐसा ही एक नगर था। किन्तु शुद्धाचारवादियो की एक अन्य प्रकार की प्रवासी बस्ती, जैसे र्‌होडे द्वीप-समूह के सस्थापक रोजर विलियम्स

की बस्ती, तथा न्यू हैम्पशायर और कोनैक्टीकट मे बसने वाले प्रवासियो की अनेक बस्तिया न केवल स्वय ही धार्मिक स्वतत्रता का उपभोग करना चाहती थी बल्कि दूसरो को भी वह देना चाहती थी। मेसाचुसेट्स से विलियम्स को इसलिए निकाल दिया गया था कि उसका आग्रह था कि राज्य का लोगो की नैतिक भावनाओ पर कोई नियत्रण नही हो सकता। इस प्रकार से दो शुद्धाचारवादी आदर्शो—अनुदार और उदार—के बीच विरोध नव-इगलैड मे १६३५ में ही स्पष्ट प्रकट हो गया था। आग्ल वर्जिनिया तथा रोमन कैथोलिको द्वारा सस्थापित "लॉर्ड बाल्टिमोर" मे विभिन्न धर्मो के प्रति एक सहिष्णुता की भावना व्याप्त थी।

वर्जिनिया, पश्चिमी इण्डियन द्वीप-समूह तथा बडी सख्या मे नव इगलैड मे बसने वाले लोगो ने किसी धार्मिक उद्देश्य से प्रवास नही किया था। साधारण प्रवासी अग्रेज आग्ल-स्वभाव के अनुसार "आत्म-सग्रह" की प्रेरणा से सागर-पार गये थे, जिसका उन दिनो अर्थ था भूमि प्राप्त करना। प्रवास को विकसित करने वाली कपनिया बेमोल भूमियो का आकर्षण दे रही थी, स्वतन्त्र धर्म का आकर्षण नही दे रही थी। बहुत से जमीदार लोग न केवल भूमि की सभावना से ही आकर्षित हुए थे बल्कि अज्ञात और उद्भुत् से, तथा अमरीका मे अपार वैभव की कहानियो से भी, आकर्षित हुए थे जिनसे लाभान्वित वास्तव मे उनके सुदूर उत्तराधिकारी ही होने वाले थे। शुरू शुरू मे नव इगलैड महत् सपत्तियो का प्रदेश नही था, और न ही सम्पत्ति की महत् विषमताओ का प्रदेश था।

प्रवासियो के ये सब वर्ग स्वतत्र रूप से व्यक्तिगत उपक्रम तथा प्रोत्साहन से गये। सरकार ने केवल अपराधियो को ही, और बाद मे गृह-युद्धो के बन्दियो को भी, प्रवास मे भेजा था। इन अभागे लोगो तथा व्यक्तिगत उपक्रमियो द्वारा वर्जिनिया तथा बार्बाडोज मे दासो के रूप मे बेचने के लिये अपहृत युवको ने उन बस्तियो मे अधिकाशत अपने कार्यों द्वारा स्वतन्त्रता का अर्जन किया और समृद्ध परिवारो की स्थापना की, क्योकि शीघ्र ही इस सबध मे एक मूक सधि हो गयी थी कि केवल अफ्रीका के नीग्रो लोगो को ही स्थायी दासता मे रखा जाय। दास-व्यापार, जोकि हॉकिन लोगो ने स्पेन के उपनिवेशो के साथ आरभ किया था, अब वर्जिनिया तथा पश्चिमी इडियन द्वीपो मे भी होने लगा।

चार्ल्स तथा क्रॉमवेल के गृह-युद्धो के दिनो मे स्वेच्छा से प्रवास-गमन करने वालो की धारा क्षीण पड गयी। वर्जिनिया तथा मेरीलैड राजा के उदासीन समर्थक थे, और नव इगलैड के उपनिवेश भी, जोकि यद्यपि शुद्धाचारवादियो के समर्थक थे, व्यवहार मे तटस्थ ही रहे, क्योकि अमरीका मे यूरोप के मुआमलो मे तटस्थता की भावना काफी बल पकडती जा रही थी। तीन हजार मील का व्यवधान बहुत बडा व्यवधान था—कई महीनो की कष्ट-भरी यात्रा, जिसमे कि दुर्भाग्यग्रस्त पोतो मे मृत्यु अपनी बलि लेती

थी। और इस प्रकार से, कुछ आरभिक वर्षों के बाद, अमरीका का सामाजिक इतिहास सदा के लिये इगलैंड के सामाजिक इतिहास से पृथक् हो गया। नये समाज ने अपनी निजी विशेषताओं को जीवन की मार्ग-सर्जनात्मक परिस्थितियो मे क्रियान्वित करना आरभ किया। ये परिस्थितिया उनमे बहुत भिन्न थी जोकि इगलैंड के उद्यान मे शैक्सपीयर तथा मिल्टन के दिनो मे विद्यमान थी।

इसके बावजूद बस्तिया सत्रहवी शताब्दी के इगलैंड के जीवन की ही स्फुलग थी और उसमे ही उन्होने वे विचार और प्रेरणाए ग्रहण की थी जिन्होने कि उन्हे अपने लक्ष्य की ओर दूर तक आगे बढाया।

उस काल मे, तथा दो सौ वर्ष बाद भी, इगलैंड ठीक प्रकार से प्रवासी देने के लिये अद्भुत रूप से उपयुक्त था। यही कारण है कि इगलिश भाषा आज उत्तरी अमरीका तथा आस्ट्रेलिया मे बोली जाती है। उन्नीसवी शताब्दी के अन्तिम भाग मे पूर्वी इगलैंड मे कृषीय जीवन तथा परम्परा प्रमुखता थी। साधारण अग्रेज अभी नागरिक प्रकार का नही बना था, जोकि प्रकृति मे पूर्णत विच्छिन्न रहता है, वह अभी केवल एक ही व्यवसाय मे दक्ष क्लर्क अथवा विशेषज्ञ कारीगर भी नही बना था कि वह मार्गान्वेषी की जीवनचर्या के अनुकूल अपने आपको न ढाल पाता और घर पर उच्च स्तर के जीवन के लाभो को छोड कर अज्ञात देश मे कठिन परिश्रम नही कर सकता। इगलैंड तथा हेनरी के काल का अग्रेज अपने उत्तराधिकारियो की अपेक्षा अधिक सरलता से परिस्थितियो के अनुसार अपने को ढाल सकता था और उसके लिये प्रवास के लिये अधिक बडी प्रेरणाए विद्यमान थी। अपने देश मे उसे समाज या राज्य की ओर से जीवन-स्तर अथवा बुढापे मे पेंशन के लिये कोई आश्वासन नही था, जो वह अपने प्रयत्न से प्राप्त कर सकता था वही उसका भाग्य था। निर्धन-कानून उसे भूख से मरने से बचा सकता था, उससे अधिक कुछ उससे नही मिल सकता था। इसके अतिरिक्त, सत्रहवी शताब्दी के इगलैंड का नगरवासी अभी भी कृषि से कुछ परिचय रखता था और इगलैंड का ग्रामवासी भी अभी तक हस्तशिल्प मे न्यूनाधिक परिचय रखता था। नगरवासी अपने खेतो पर स्वय खेती करते थे। ग्राम मे न केवल कृषक लोग ही रहते थे बल्कि झोपडिया और खलियान बनाने वाले, जुलाहे और दर्जी, बढई तथा लुहार भी रहते थे। ग्राम-नारिया खाना बनाना, दूध दुहना, खेत की कटाई करने मे सहायता देना, कातना, बुनना, फटे कपडे सवारना तथा बच्चो की सभाल करना ये सब कार्य करती थी। ऐसे लोग पर्याप्त सख्या मे जब प्रवास करते थे तब उजाड मे भी वे गाव बसा सकते थे, चाहे वहा आवश्यक वस्तुए मुहय्या करने के लिये कोई नगर भी नही होता हो।

आरभिक अमरीकन बस्तिया बसाने वाले लोग अत्यन्त प्रशसनीय कौशल, सहन-शक्ति, कठोर परिश्रम तथा साहस युक्त लोग थे। प्रथम प्रवासियो का अधिकाश भाग—तीन चौथाई से अधिक—अकाल-मृत्यु मरा, इनमे से बहुत से तो यात्रा के कष्टो से ही

मरे और बहुत से अन्य रोग, दुष्काल, सर्दी या गर्मी से, अथवा आदिवासियो के साथ सघर्षो मे मरे। इन आरभिक वर्षो मे से बच कर निकले लोगो ने ही जगलो मे उन गावो को बसाया था। अनेक दृष्टियो से यह एग्लो सेक्सन ब्रिटेन की ही पुन स्थापना थी वही दुर्गम वनो तथा दलदलो के साथ सघर्ष तथा आदिवासियो के साथ युद्ध। अमरीका मे बसने वाले लोग सस्कृत और सभ्य थे और उनमे से कुछ तो सुशिक्षित भी थे। मेसेचुसेट्स मे उनका एक प्रथम कार्य विश्वविद्यालय की स्थापना करना था—नये प्रदेश मे एक "कैम्ब्रिज" का निर्माण, क्योकि सभ्य लोगो को आदिम जीवन की कठोरताओ को सहन करने के लिये उन्नत गुणो की अपेक्षा होती है, जोकि उस युग का इगलैड प्रदान करने मे सम्यक् रूप से समर्थन था।

नयी स्थापित बस्तियो ने, चाहे वे मुख्य भूमि मे हो और चाहे द्वीपो मे, चाहे लडन की कपनियो के अधीन हो और चाहे सीधे राजा के अधीन, एकदम से पर्याप्त स्वतत्रता ग्रहण कर ली थी। उन्होने सम्पूर्ण बस्ती के लिये ससदो का निर्वाचन किया और प्रत्येक नगर को एक स्वशासित इकाई बनाया। नव-इगलैड मे चर्च-सभा नगर को सुगठित रखती थी और उसकी नीतियो को प्रभावित करती थी। स्वदेश के सत्ताधिकार को, चाहे वह राजा द्वारा प्रयुक्त हो चाहे कपनी द्वारा, हटाने की प्रवृत्ति इन बस्तियो के पूर्वतन वासियो मे भी विद्यमान थी, विशेषत मेसाचुसेट्स मे, यद्यपि यह सपूर्ण महाद्वीप मे केवल जार्ज वाशिगटन के नेतृत्व मे ही व्याप्त हुई।

इगलैड के प्रथम प्रवासियो की स्वशासन की आकाक्षा का कारण केवल यूरोप से बहुत दूर होने को ही नही कहा जा सकता। स्पेन, हालैड तथा फ्रास की बस्तिया भी कोई कम दूर नही थी, किन्तु तब भी वे शासन-तन्त्र मे अप्रजातात्रिक रही और अपने देश के सत्ताधिकार को भी मानती रही। इगलैड की बस्तियो मे आत्मनिर्भरता की प्रवृत्ति अशत उनके उद्गम की परिस्थितियो के कारण थी वे राज्य के किसी अधिनियम के द्वारा स्थापित नही की गयी थी बल्कि स्वतन्त्र उपक्रम द्वारा स्थापित की गयी थी। बहुत से प्रवासी तो इगलैड की चर्च-शासित सरकार से बचने के लिये विद्रोह भरे हृदय से आए थे। दूसरी ओर, फ्रास का राजा फ्रास के किसी प्रोटेस्टेट को कैनेडा मे रहने की आज्ञा नही देता था।

इसके अतिरिक्त, पुराने आग्ल-समाज मे स्वशासन की आदते भी थी, जोकि सागर-पार आसानी से रोपी जा सकती थी। इस प्रकार से स्वदेश की अभिजात-तत्रीय परम्परा तथा शान्ति अधिकारियो द्वारा, जोकि स्थानीय जमीदार होते थे, मडलो के स्वशासन ने वर्जिनिया मे अनतिदूर भविष्य मे बडे जमीदारो की अश्वारोही आभिजात्यता को जन्म दिया, जिनका जीवन इगलैड के ग्रामीण जमीदारो से मुख्यत इस बात मे भिन्न था कि ये नीग्रो-दास रखते थे। यह आभिजात्य व्यवस्था तबाकू के बागो के साथ सहज रूप मे ही उद्भूत हो गयी, जोकि शीघ्र ही उन बस्तियो की मुख्य उपज हो गयी।

नव इगलैड मे किसानो तथा व्यापारियो का शुद्धाचारवादी प्रजातत्र अस्तित्व मे आया, इसकी भी जडे स्वदेश से आयी आदतो मे ही निहित थी। सत्रहवी शताब्दी के आरभ मे अग्रेजी जिलो तथा गावो मे अभी तक आभिजात्यो तथा शान्ति-अधिकारियो के व्यापकतर शासन की तह के नीचे स्थानीय स्वशासन के तत्व विद्यमान थे। स्थानीय शासन-सभा मे पूर्ण स्वामित्व वाले किसानो का भी प्रतिनिधित्व होता था। जमीदार के अधिकारान्तर्गत प्रदेश की शासन-सभा मे अभी तक किसान भी भाग लेते थे जोकि, नाम मात्र के लिये, और कभी कभी वास्तव रूप से भी, उस कार्यक्रम के न्यायाधीश भी होते थे। और, इगलैड के प्रत्येक गाव मे अनेक छोटे-छोटे अधिकार-पद थे —जैसे सिपाही, निर्धन-निरीक्षक, ग्राम-पचायत का अध्यक्ष, सडको की मरम्मत आदि का निरीक्षक, चर्च का अधिष्ठाता तथा अन्य छोटे पदाधिकारी—जोकि साधारण लोगो मे से या तो निर्वाचन द्वारा बनाये जाते थे अथवा बारी से। स्वदेश मे स्वशासन की इस परम्परा ने नव इगलैड मे नागरिक शासन तथा नगर परिषदो के निर्माण को प्रेरणा दी।

प्रवासी लोग अपने साथ जूरी व्यवस्था तथा आग्ल लोक-कानून को भी, जोकि एक मुक्ति का कानून था, साथ लाए। सबसे महत्वपूर्ण था लोक-प्रतिनिधि के रूप मे ससद् (पार्लियामेट) का कर लगाने अथवा हटाने का अधिकार, जोकि जेम्स तथा चार्ल्स प्रथम के कालो मे इगलैड मे, विशेषत विरोधी दलो के नेताओ मे, बहुमान्य हो चुका था। इन लोगो ने, जैसे एड्विन् शेडी ने, वर्जिनिया के बाग लगाने मे तथा पूर्वी एग्लीका के जमीदारो तथा योमैन लोगो मे बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया तथा नव इगलैड को बसाने मे प्रमुख भाग लिया।

स्वतन्त्रता की भावना को बाइबल-धर्म ने, जोकि प्रवासी लोग स्वदेश से अपने साथ लाए थे, और भी अधिक प्रेरणा दी। मेसाचुसेट्स तक मे, जहाकि मत्री तथा बडे अधिकारी साधारण लोगो पर अत्याचार करते थे और उन्हे भयभीत करते थे, उन्हे कोई धार्मिक या सामाजिक अधिकार नही प्राप्त थे। नव इगलैड के पादरी लॉड के एग्लिकन पादरियो के समान अधिकार का दावा भी नही कर सकते थे। उससे भी कम वे उस प्रकार के धार्मिक अधिकार का प्रयोग करने मे समर्थ थे जैसे अधिकार का प्रयोग फ्रास अधिकृत कैनेडा मे पादरी लोग करते थे। नव इगलैड अथवा वर्जिनिया मे चर्च की शक्ति का एकमात्र आधार लोकमत था। परिणामत अग्रेजी भाषी अमरीका का धर्म चर्च-रूप होने के बजाय सभा-रूप था और इसने एट्लाटिक-पारीण प्रजातान्त्रिक भावना को आगे बढाने मे सहायता दी।

इस प्रकार से इगलैड की अमरीकन बस्तियाँ स्वतत्र आर्थिक, व्यापारिक, कृषीय, राजनैतिक तथा धार्मिक उपक्रम से सस्थापित की गयी थी। साम्राज्य के विकास के प्रसग मे राज्य-नीति तथा सैनिक-शक्ति का प्रथम प्रयोग क्रामवेल द्वारा स्पेन से जनेवा

की विजय (१६५५) के रूप मे हुआ था, और उसका अनुसरण किया चार्ल्स द्वितीय ने, जिसने कि डचो से १६६७ मे वे प्रदेश छीने जोकि पीछे जाकर न्यूयॉर्क, न्यू जर्सी तथा पैन्सिल्वेनिया बने। उस समय तक इगलैड के औपनिवेशिक समाज के आत्मनिर्भर रूप को बदलना इगलैड के राज्य की शक्ति से बाहर की बात हो गया था। किन्तु एट्लाटिक मे औपनिवेशिक व्यापार को विदेशी शत्रुओ से बचाने के लिये इगलैड के नौ-सेना के बेडे की सहायता की आवश्यकता बढ जाने से उस व्यापार मे राज्य का हस्तक्षेप भी सम्भव हो गया। यह हस्तक्षेप नौ-परिवहन कानूनो के अन्तर्गत किया जाता था। क्रामवेल के समय मे लेकर ये कानून कम से कम आशिक रूप से व्यवहार मे लाये जाते थे। उनका उद्देश्य इगलैड के पोतो द्वारा इगलैड का व्यापार बढाना और आग्ल उपनिवेशो का व्यापार इगलैड के हितो के अनुसार रखना होता था, और इसमे उन्हे कुछ सफलता भी मिलती रही।

इस बीच, भूगोल की दूसरी ओर, लडन की एक अन्य व्यापारिक कपनी के पोत इगलैड की नियति के एक नवीन अध्याय का आरम्भ कर रहे थे। एलिजाबेथ के सन् १६०० के चार्टर द्वारा स्थापित ईस्ट इण्डिया कम्पनी को इगलैड के प्रजाजनो मे 'ईस्ट इडीज' मे व्यापार के लिये एकाधिकार प्राप्त था तथा सागरपार के अपने कर्मचारियो के लिये कानून बनाने और न्याय करने के, और परिणामत केप ऑफ गुडहोप के परे शान्ति और युद्ध सम्बन्धी, सब अधिकार प्राप्त थे। अनुगामी अनेक पीढियो तक राज्य की नौ-सेना के किसी पोत ने केप (अन्तरीप) का चक्कर नहीं लगाया। राज्य जिस प्रकार से एट्लाटिक मे अमरीकन बस्तियो के व्यापार की रक्षा कर रहा था उस प्रकार से इसने सुदूर पूर्व मे देश के व्यापार की रक्षा कर सकने का कोई दभ नही किया। इसलिये कपनी को अपने ही वेतन से सिपाही नियुक्त कर अपने कारखानो आदि की रक्षा का प्रबन्ध करना पडता था, और ससार मे हमारे महान् ईस्ट इण्डिया कम्पनी के लोग युद्ध और व्यापार दोनो के लिये सज्जित होते थे, तथा अपनी तोपो के साथ डचो, पुर्तगालियो और अन्य विदेशी दस्युओ के आक्रमणो का सामना करते थे। किन्तु कम्पनी भारतीय राजाओ के साथ सघर्ष को बडी बुद्धिमत्ता से टाल रही थी और उस समय उसकी भूमि हथियाने की या कोई राजनैतिक महत्वाकाक्षा नही थी।

प्रथम आग्ल-भारतीय राजनीतिज्ञ सर थॉमस रो ने, जोकि मुगल सम्राट् के दरबार मे जेम्स प्रथम का राजदूत तथा कम्पनी का एजेन्ट था, पूर्व मे अपने देश के लोगो के लिये जो नीति निर्धारित की उसने पीछे एक शताब्दी तक उनके कार्य व्यवहार का निर्धारण किया। इसके अनुसार

'युद्ध और व्यापार परस्पर विरोधी चीजे है। इस बात को हमे विधानत के रूप मे स्वीकार करना चाहिए कि यदि कोई लाभ प्राप्त करना है तो इसके लिये 'सागर' मे

इसकी खोज करो और वह शान्तिपूर्ण व्यापार के माध्यम से करो, क्योकि यह निर्विवाद रूप मे सही है कि हमे भारत मे मोर्चे-बन्दी और भूमि-युद्धो मे नही पडना चाहिए ।

जबतक मुगल साम्राज्य की अविकार-सत्ता बनी रही, और स्टुअर्ट काल मे उनकी सत्ता रही, कपनी रो के इस बुद्धिमत्तापूर्ण परामर्श का अनुसरण करती रही। केवल जब इस महान् प्रायद्वीप मे अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गयी तब अग्रेज व्यापारी क्लाईव के काल मे भारतीय तथा फ्रासीसी आक्रमणो से अपने व्यापार की रक्षा के लिये अनिच्छापूर्वक युद्धो और विजयो मे प्रवृत्त हुए ।

स्टुअर्ट युग के आरभिक दिनो मे कपनी ने मद्रास, सूरत,[1] तथा १६४० मे बगाल मे छोटे-छोटे व्यापार-केन्द्र खोले थे । इन लोगो को नगरो तथा कारखानो की सीमाओ मे जो अधिकार तथा सुविधाए प्राप्त थी वे उन्हे स्थानीय राजाओ से सन्धि के द्वारा प्राप्त हुई थी । उनके शत्रु एक तो पुर्तगाली थे, जोकि शीघ्र ही उतने शक्ति-सम्पन्न नही रहे, और दूसरे डचो की बढती हुई शक्ति थी, जिन्होने कि उन्हे काली मिर्चो के द्वीपो के अत्यन्त लाभप्रद व्यापार-क्षेत्र से पूर्व की ओर आगे धकेल दिया था (१६२३), और उन्हे अपनी स्थिति प्रायद्वीप पर विकसित करने को बाध्य कर दिया था । मद्रास तथा बम्बई मे अपने कारखानो से अग्रेजो ने कैंटन के साथ व्यापार करना सीखा, पूर्व मे और आगे की वस्तुस्थितियो से अपरिचित होने के कारण लडन के व्यापारियो ने चीन के साथ कोई सीधा व्यापार आरम्भ नही किया किन्तु भारत मे कपनी के व्यापारी स्थानीय वस्तुस्थिति से काफी परिचित थे और चीन के साथ व्यापार के विशाल स्रोतो का उपयोग कर सकते थे । लडन-कपनी ईरान की खाडी मे सीधे अपने पोत भी भेजती थी (पहला पोत उन्होने १६२८ मे भेजा था) और यह लेवेंट कपनी को पसन्द नही था, क्योकि वह भूमि-मार्गो से शाह के प्रदेश से व्यापार करना चाहती थी ।

भारत के साथ व्यापार ने, जिसका अर्थ था की एक वर्ष का समय लेने वाली दस हजार मील दीर्घ यात्रा, जल-यातायात तथा पोत-निर्माण को अमरीकी व्यापार से भी अधिक प्रोत्साहित किया । पहले ही ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने जेम्स प्रथम के राज्य मे इतने विशाल व्यापारिक पोत बनाए थे कि उससे पूर्व कभी वैसे पोत नही बनाए गये थे । जबकि भूमध्य प्रदेशो मे व्यापार के लिये लेवेंट कम्पनी के पोत १०० से ३५० टन तक के होते थे, भारत की ओर प्रथम यात्रा ६०० टन के पोत मे की गयी थी और छटी यात्रा (१६१० मे) ११०० टन के पोत मे की गयी थी ।

नियमित व्यापार के लिये भारत की दीर्घ यात्राए कभी सम्भव नही होती यदि

---

[1] पीछे पुर्तगाल की राजकुमारी के साथ चार्ल्स द्वितीय के विवाह मे स्वय बम्बई नगर भी दहेज के रूप मे रानी को प्राप्त हो गया था ।

यात्री और सचालक स्कर्वी रोग (जिसमे हरे साग नही मिलने और परिणामत विटामिनो की कमी हो जाने से मसूढो मे लहू आने लगता है) से और अधिक ग्रस्त होते। किन्तु आरम्भ मे ही (१६००) ईस्ट इण्डिया कम्पनी अपने पोत-चालको को निम्बू-पानी तथा सगतरे देती थी। स्टुअर्ट तथा हेनरी के काल की राजकीय नौ-सेना को यह उपाय ज्ञात नही था, और राजा के जल-यात्री भयानक रूप से रोगग्रस्त होते थे जबतक कि कप्तान कुक ने, जोकि उतना ही महान सागर का चिकित्सक था जितना वि वह नये प्रदेशो का अन्वेषक था, पोत के पेयो तथा भोजन मे बहुत महत्वपूर्ण परिवर्तन किये। स्टुअर्ट के काल मे ईस्ट इण्डिया कम्पनी के पास अन्तरीप के पार यात्रा के लिये तीस बडे पोत थे और अनेक छोटे पोत थे जो पूर्वी सागरो मे ही रहते थे। इनमे बहुत मे या तो नष्ट हो गये थे या फिर दस्युओ अथवा डचो द्वारा छीन लिये गये थे। किन्तु वे बृहत् पोत, जो बच रहे, इगलैंड की सागवान की लकडी से इतने पक्के बने थे कि वे तीस से साठ वर्षो तक सागर की उत्तान तरगो का सामना कर सकते थे। जेम्स प्रथम के काल मे ही कम्पनी ने एक ही समय तीन लाख पाउड पोत-निर्माण मे लगाए थे, जोकि उससे भी बडी राशि थी जितनी राजा जेम्स ने नौ-सेना मे लगा रखी थी। इस प्रकार से भारतीय व्यापार ने देश को विशाल पोतो तथा कुशल सागर-यात्रियो से समृद्ध कर दिया था।

इस स्वतत्र नौ सेना ने, जोकि बहु शस्त्रसज्जित थी, इगलैंड को बहुत शक्ति-सपन्न बना दिया। जल यातायात के अत्यन्त कठिन भागो का ज्ञान तथा सुदूर प्रदेशो मे समुद्री-उपक्रमो का अभ्यास इगलैंड मे अब बहुत व्यापक हो गये थे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के मुख्य केन्द्र के रूप मे लडन ने पूर्व के साथ इगलैंड के व्यापार को अपनी ओर आकर्षित किया। एट्लाटिक के पार तबाकू तथा दास-व्यापार मे ब्रिसल इसमे सहभागी था, और शीघ्र ही लिवरपूल भी इस क्षेत्र मे आ गया, किन्तु भारतीय तथा अमरीकी व्यापारो के साधारण प्रभाव तथा व्यापारिक पोतो के आकार मे वृद्धि के परिणामस्वरूप लडन की प्रमुखता मे और वृद्धि हुई तथा अन्य बन्दरगाहो का, जोकि पुराने समय के छोटे पोतो के ही उपयुक्त थी, क्रमश ह्रास हो गया।

भारतीय व्यापार ने न केवल इगलैंड के पोतो मे ही वृद्धि को प्रेरित किया बल्कि उसकी सम्पत्ति को भी बहुत बढाया। वास्तव मे पूर्व के गर्म देशो मे इगलैंड का कपडा एक सीमित मात्रा से अधिक बिकना असभव हो रहा था, और कम्पनी के शत्रु कम्पनी पर दोषारोपण के लिये सदैव इसका ही आश्रय लेते थे। किन्तु रानी एलिजाबेथ ने बडी बुद्धिमत्ता से कुछ मात्रा मे देश की मुद्रा के निर्यात की अनुमति कम्पनी को दे दी और उस पर यह शर्त लगा दी कि प्रत्येक यात्रा के बाद उतने मूल्य का सोना या चादी राज्य को लौटाया जायगा। १६२१ मे सराफे के रूप मे निर्यातित एक लाख पौंड के बदले मे पूर्व से उससे पाच गुणा मूल्य के बर्तन आदि आये, जिनमे से इगलैंड मे केवल

एक चौथाई ही खप पाये और शेष को बहुत बडे मूल्यो पर बाहर बेच दिये गये, और इस प्रकार से सराफा वालो की आलोचना को समाप्त करने के लिये राज्य के कोष को सम्पन्न किया गया ।

गृह-युद्ध से पहले कम्पनी के विशाल पोतो मे थेम्ज को भेजी जाने वाली वस्तुओ मे शोरा (जोकि युद्धरत यूरोप की तोपो के बारूद मे काम आता था), कच्चा सिल्क, और मुख्यत मिर्चे, विशेष रूप से काली मिर्चे, प्रमुख थी । हमारे पूर्वजो द्वारा मिर्चो को इतना पसन्द करने का कारण था सर्दियो मे ताजा मास की कमी हो जाना, और उन दिनो अभी साग-सब्जियो का प्रचलन हुआ नही था । ये मास को (आचार आदि के रूप मे) सँभाल कर रखने मे भी सहायक होती थी और उसको बासी होने पर जब इसमे कोई गुण नही रह जाता था तब इसे स्वाद बनाने के काम मे भी आती थी । शान्ति-स्थापना के बाद चाय और कॉफी, तथा यूरोप के बाजारो के लिये पूर्व मे बना सिल्क, और चीन का पोर्सलेन इस क्षेत्र मे आए । रानी एन्ने के समय तक पूर्व के व्यापार ने पेयो को, सामाजिक विनिमय की आदतो को, पहरावे को तथा धनिक वर्गो की कलात्मक रुचियो को, गम्भीर रूप मे बदल दिया था ।

ये दूर देशो मे व्यापार करने वाली कम्पनियाँ, जिनकी हानिया बृहद् थी और लाभ उनसे भी बृहत्तर थे, स्टुअर्ट के काल के सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन की महत्वपूर्ण अग थी । इनकी सपत्तिया तथा प्रभाव गृह-युद्ध मे साधारण रूप से राजा के विरुद्ध प्रयुक्त हुए । इसका कुछ कारण तो धार्मिक था, क्योकि लडन मे पार्लिया-मेन्ट-समर्थको अथवा शुद्धाचारवादी दल वालो का प्रभाव अधिक था, और अशत इसका कारण व्यापारियो का जेम्स तथा चार्ल्स प्रथम के व्यवहार से असन्तुष्ट होना था । इगलैंड मे अनेक सामान्य उपभोग की वस्तुओ के उत्पादन के लिये दरबारियो तथा कुछ विशिष्ट धूर्त लोगो को एकाधिकार दे दिया गया था । इस नीति पर, जोकि चार्ल्स प्रथम ने अपने विशेषाधिकार से पार्लियामेन्ट के अधिकार-क्षेत्र से बाहर राजस्व एकत्र करने के लिये अपनाई थी, साधारण वकील तथा पार्लियामेन्ट के लोग रुष्ट थे, और उपभोक्ता भी इससे बहुत अप्रसन्न थे क्योकि इससे उपभोक्ता वस्तुओ की कीमते बढ गयी थी । इसी प्रकार से व्यापारी भी इस पर क्षुब्ध थे क्योकि उनके व्यापार मे इससे बाधा पडी और वह अस्त-व्यस्त हो गया ।

किन्तु ईस्ट इण्डिया कम्पनी के व्यापारी इससे और भी अधिक असन्तुष्ट हुए क्योकि राजा ने जबकि देश के बाजार मे इस प्रकार के अनावश्यक एकाधिकार दिये, पूर्वी बाजार मे उसने उनके व्यापार के अत्यावश्यक एकाधिकार मे हस्तक्षेप किया, यद्यपि भूगोल के उस पार के सम्पूर्ण सैनिक तथा राजनैतिक कार्य के व्यय का बोझ पूर्णत कम्पनी पर ही था, राजा पर जरा भी नही था । चार्ल्स प्रथम ने भारतीय व्यापार के लिये एक दूसरी "कोटीन एसोसियेशन" नाम की कम्पनी बनाई, जिसने कि अपनी

प्रतिस्पर्धा तथा कुप्रबन्ध के कारण सुदूर पूर्व मे इगलैंड का लगभग सपूर्ण व्यापार नष्ट कर दिया था। यह उस समय की बात है जबकि "पार्लियामेट का दीर्घ अधिवेशन" हुआ था। इगलैंड मे व्यापारिक एकाधिकारवाद को समाप्त करने की तथा सागर पार इसे बनाये रखने की पार्लियामेट की नीति लडन मे बहुत अधिक पसन्द की गयी थी। लडन के गृहयुद्ध में पार्लियामेट-समर्थक सेनाओ की विजय का सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिणाम देश मे एकाधिकार की समाप्ति था। उसके बाद से, यद्यपि विदेशी तथा भारतीय व्यापार पर नियत्रण थे, किन्तु इगलैंड का उद्योग इनसे स्वतन्त्र था, विशषत यूरोप के अन्य देशो की तुलना मे, जहाकि मध्ययुगीन नियत्रण अभी तक इसके विकास मे बाधक हो रहे थे। अट्ठारहवी शताब्दी मे औद्योगिक क्रान्ति मे इगलैंड के सबसे आगे रहने का एक कारण यह भी था।

आरभ मे स्टुअर्ट राजाओ ने डचो द्वारा पूर्व की व्यापारिक कपनी के पोतो तथा कारखानो के ध्वस को रोकने के लिये कोई उपाय नही किये। "एम्बोयना का हत्या-काड" (१६२३), जबकि डचो ने अग्रेज-व्यापारियो को ससालो के द्वीपो से निकाल दिया था, एक ऐसी घटना थी जिसकी याद बहुत गहरी मन मे पैठ गई थी। तीस वर्ष बाद क्रामवेल ने इस पुरानी हानि तथा अपमान का बदला यूरोप मे युद्ध तथा राजनैतिक दावपेच से लिया। इस "रक्षक" ने वास्तव मे ससार मे आग्ल व्यापार तथा स्वार्थो की रक्षा के लिये बहुत कुछ किया, किन्तु उसकी नौ तथा स्थल-सेना का व्यय इतना भारी पड रहा था कि उसकी मृत्यु से पूर्व व्यापार के लिये इसका बोझ असह्य हो रहा था। शान्ति-स्थापना (रेस्टोरेशन) एक आर्थिक विश्रब्धता के समान हुई। मरणो-परान्त क्रामवेल की महान "साम्राज्य सस्थापक" के रूप मे ख्याति किसी भी प्रकार से अनुपयुक्त नही थी। अपनी जमैका की विजय से उसने सब भावी सस्कारो के लिये एक आदर्श स्थापित कर दिया, जोकि एलिजाबेथ ने कभी नही किया, और वह था यूरोप की शक्तियो मे सुदूरपूर्व के उपनिवेशो को छीन लेना, जिसके लिये युद्धो ने बहुत सुअवसर दिया।

कोर्टीन एसोसियेशन की प्रतिस्पर्धा ने, जिसका अनुसरण इगलैंड के गृहयुद्ध ने किया, ईस्ट इण्डिया कम्पनी को प्राय नष्ट ही कर दिया और भारत के साथ इगलैंड का सम्पर्क समाप्त हो गया। किन्तु "सरक्षण काल" मे पुरानी कपनी ने क्रामवेल की सहायता से अपनी खोई हुई समृद्धि को पुन प्राप्त कर लिया और स्थायी रूप से एक-मात्र मिश्र पूजी वाली व्यापारिक सस्था का रूप ले लिया। अबतक, प्रत्येक पृथक् यात्रा के लिये धन एकत्र किया जाता था (अधिकाशत मिश्र पूजी सिद्धान्तो के अनुसार)। बहुत आरभ की यात्राओ मे बीस से तीस प्रतिशत तक, कभी कभी ५ प्रतिशत ही, वापिस मिल पाता था, किन्तु कभी कभी तो युद्ध या पोत-नाश के कारण सारा ही धन डूब जाता था। किन्तु १६५७ मे 'दि न्यू जनरल स्टाक' नाम से एक स्थायी फड की स्थापना की गयी थी। शान्ति स्थापना के तीस वर्ष बाद तक मूल

स्टाक पर औसत बचत आरभ मे २० प्रतिशत से बाद मे ४० प्रतिशत तक हुई। १६८५ मे १०० पौड के (स्टाक) का बाजार भाव ५०० पौड तक हो गया था। अब मूल स्टाक की मात्रा बढाने की कोई आवश्यकता नही रही थी, क्योकि कपनी अब इतनी पुष्ट स्थिति मे थी कि इसे बहुत थोडे ब्याज पर ऋण मिल सकता था, कभी कभी तो तीन प्रतिशत पर ही, और वह इन अस्थायी ऋणो से अपार लाभ कमा लेती थी।

इस प्रकार से पूर्व के व्यापार से अर्जित विशाल धन-राशि बहुत थोडे से हाथो मे रही, मुख्यत बहुत धनी लोगो के हाथो मे। अन्तिम स्टुअर्ट राजाओ के राज्य मे सर-जोसिआ चाइल्ड कम्पनी के एकाधिकार को बनाये रखने के लिये १६८८ से पूर्व राज-दरबार को घूस देने के लिये अपूर्व धन-राशि अलग रखता था, और बाद मे पार्लियामेट को घूस देने के लिये भी। साधारण लोगो को या तो स्टाक मे भाग मिलता ही नही था या फिर बहुत अधिक मूल्य पर मिलता था, जिसके परिणामस्वरूप इनमे निरन्तर असन्तोष बढने लगा, क्योकि अन्तरीप के पार थोडे से साझीदारो को छोडकर अन्य किसी को व्यापार करने की आज्ञा नही दी जाती थी। ब्रिसल तथा अन्य स्थानो से अनधिकृत लोग 'स्वतन्त्र व्यापार' के लिये अपने पोत भेजते थे। किन्तु कपनी का एकाधिकार, चाहे वह कितना ही जन-अप्रिय था, किन्तु वैध था और इसके एजेन्ट ऐसे प्रदेशों मे भी कानून को बलात् आरोपित करते थे जो वेस्टमिस्टर से एक वर्ष की यात्रा की दूरी पर थे। इन सुदूर सागरो पर स्पर्धी अग्रेजो के परस्पर भयानक सघर्ष होते थे।

× × ×

चार्ल्स जेम्स, जेम्स द्वितीय तथा विलियम के कालो मे कम्पनी तथा अनधिकृत व्यापारियो मे बडे स्तर पर होने वाला सघर्ष केवल जेम्स प्रथम, चार्ल्स प्रथम तथा क्राम-वेल के कालो मे होने वाले छोटे सघर्षो की आवृत्ति मात्र थे। सम्पूर्ण स्टुअर्ट युग मे भारतीय व्यापार के लाभो मे हिस्से के लिये बडे आक्रोशपूर्ण राजनैतिक तथा आर्थिक सघर्ष होते रहे, इनका मुख्य कारण यह था कि पैसा लगाने के लिये अन्य कोई सरल तथा सामान्य मार्ग नही खुला था, यद्यपि बचतें तेजी से जमा हो रही थी। ऐसा कोई नियमित स्टॉक बाजार नही था जहा अनेक प्रकार के हिस्से बिकाऊ होते और कोई व्यक्ति बिना किसी भय के उनमे से अपनी इच्छा से चुनाव कर सकता। पैसा लगाने के लिये अधिक प्रचलित रास्ता उस समय भूमि खरीदना अथवा गहने पर लेना था। किन्तु भूमि बहुत कम थी, और इसके अतिरिक्त, इसके स्वामी आर्थिक के अतिरिक्त अन्य अनेक कारणो से यह भी बेचने को अनिच्छुक होते थे, भू-सपत्ति का सामाजिक तथा आर्थिक मूल्य इतना था कि उसे खरीदना कठिन होता था। इस प्रकार से यह कठि-नाई सदैव रहती थी कि पैसे का क्या किया जाय, सिवाय इसके कि घर मे किसी पक्की मजूषा मे रखा जाय, और इस स्थिति से बडे सामन्तो से लेकर अल्पव्ययी योमैन और कारीगर तक चिन्तित और क्षुब्ध थे।

जनसख्या का पाञ्च चौथाई भाग भूमि जोत रहा था, किन्तु धीरे धीरे व्यापार तथा उद्योग मे अनुपात निरन्तर अधिकाधिक बढ रहा था, विशेषत ग्राम-प्रदेश मे। यह छोटे उद्योगो की उन्नति का युग था और ये उद्योग सख्या मे निरन्तर बढ रहे थे। उन दिनो, एक योमैन अथवा क्राफ्ट्समैन, जोकि थोडा भी पैसा बचा पाता था, एकीकृत वार्षिकी, अथवा रेल्वे या शराब-उत्पादन मे हिस्से नही खरीद सकता था। वह इसका कुछ भाग अपनी लडकी के विवाह पर खर्च कर सकता था जिससे कि उसे जीवन भर के लिये आश्रय मिल सकता। अपनी शेष बचत को वह अधिकाशत अपने किसी निजी व्यापार मे लगाता था या तो वह कुछ थोडे से स्थायी कर्मचारी और कुछ दैनिक श्रमिक नियुक्त करके कोई छोटा उद्योग अथवा दुकान आरभ कर देता या फिर घोडे, इक्के तथा सामान ढोने की गाडिया खरीद कर इस पैसे का उपयोग करता था।

ऐसे छोटे उद्योगपतियो तथा व्यापारियो की सख्या निरन्तर बढ रही थी और वे, ईस्ट इण्डिया कपनी के समान, अधिकाशत अपने व्यापार के लिये पैसा ऋण लेते थे। इसी प्रकार से भू-स्वामी भी करते थे—ये केवल ऐसे अभिजात जमीदार ही नही होते थे जो अपव्यय के कारण कठिनाई मे पड जाते थे, बल्कि ऐसे जमीदार भी होते थे जो अपनी भूमि मे सिचाई का प्रबन्ध करने, तथा उसे सुधारने को उत्सुक होते थे और जगलो को काट कर कृषि-योग्य भूमि बढाने का प्रयत्न करते थे। इन नये साधन खोजने वालो के विभिन्न वर्ग अपने कार्य के लिये किस प्रकार से ऋण लेते थे ? किस प्रकार से वे उन लोगो से सपर्क स्थापित करते थे जो उधार देना चाहते थे अथवा अपना पैसा लगाना चाहते थे ?

ट्यूडरो के युग मे समाज ने अन्तत धीरे धीरे इस मध्ययुगीन सिद्धान्त को छोड दिया कि पैसा ऋण पर देना अनुचित है। अब उचित व्याज पर पैसा ऋण देने को पार्लियामेट ने वैध कर दिया था, इसलिये अब व्याज उतना अधिक नही होता था। आरभिक स्टुअर्ट युगो मे विचारक नेताओ ने स्पष्ट रूप से मुद्रा-बाजार का उपयोग अनुभव किया था। सेल्डन ने अपने मित्रो से कहा था "यह कहना गलत है कि पैसा पैसे को आकर्षित नही करता है, क्योकि यह स्पष्टत ऐसा करता है।" और अत्यन्त व्यावहारिक व्यापारिक-दार्शनिक थॉमस मन ने लिखा था कि "किस प्रकार से मुद्रा-व्यापारियो तथा दुकानदारो ने अपने पास कोई पैसा हुए बिना आरभ किया, और तब भी वे केवल दूसरो के पैसे से ही व्यापार करके समृद्ध हो गये ?"

अभी तक इगलैंड मे कोई बैंक नही थे। किन्तु कुछ ऐसे व्यक्ति थे जो आधुनिक महाजनो (बैंकर्स) के कार्य सपादित करते थे, जोकि व्याज पर पैसा लेते और देते थे। दलालो तथा मुनीमो को अपने साधारण व्यापार के सिलसिले मे अपने असामियो को इन चीजो मे सहायता करने के विशेष अवसर होते थे।

"शान्ति-स्थापना" के बाद कामनवैल्थ-काल मे (१६४९ से १६६० के बीच पार्लियामेट का शासन) पैसा ऋण पर देने की व्यवस्था लडन मे अधिकाधिक मात्रा मे

सुनारो के हाथ मे चली गयी थी। लण्डन के व्यापारी लोग अपना बचा पैसा टावर टकमाल मे रखना पसन्द करते थे, किन्तु चार्ल्स प्रथम के उसे वहा जब्त कर लेने पर उन्होने सुनारो पर विश्वास करना अधिक उचित समझा। नागरिक सघर्ष के आरम्भ हो जाने पर, जब दोनो पक्षो के धनिको ने अपनी तिजोरियाँ छुरो और भालो मे तथा गुडो की जेबो मे खाली करनी आरभ कर दी तब सुनार का सोने-चादी के बर्तन बेचने का कार्य उस काल के लिये स्थगित हो गया और वे अब उसके स्थान पर व्यापारियो की नकदी सँभालने वाले होने मे प्रसन्न थे, जबकि कोई भी इससे होने वाले लाभ को देख या उसका अनुमान नही कर सकता था। लाभ वास्तव मे इतना होता था कि सुनारो ने व्याज देकर इस प्रकार से पैसा जमा करने को लाभप्रद पाया। चार्ल्स द्वितीय के काल मे वे ६ प्रतिशत तक व्याज देते थे क्योकि वे इस राशि को दूसरो को व्याज देने मे लगाते थे और उन्हे इससे प्रभूत लाभ होता था। इस प्रकार का व्यापार करने वाले सुनारो मे लोबार्ट स्ट्रीट के सुनार प्रमुख थे।[1]

सुनारो का आरभिक बैंको के रूप मे यह व्यापार किसी प्रकार से भी नगर के व्यापारियो तक सीमित नही था। बहुत से जमीदार सीधे सुनारो को ही अपने किराये दिलवाते थे जबकि अन्य, सम्पूर्ण देश भर से, लोम्बार्ट स्ट्रीट मे ऋण लेने आते थे। इन नयी सुविधाओ का मूल्य उन व्यावहारिक विधियो के द्वारा देखा जा सकता है जिनके द्वारा एक अभिजात परिवार चार्ल्स प्रथम के काल मे अपना विस्तृत कार्य-व्यवहार सचालित करता था।

१६४१ मे, जिस वर्ष कि स्टेफ्फोर्ड को फासी का दण्ड हुआ, बैडफोर्ड के चतुर्थ अर्ल फासिस रसल का देहान्त हुआ।[2] ऐसा कोई बैंक नही था जिसमे रसल पैसा रख सकता, उस समय ऐसे चैक नही थे जिनसे उसके उत्तराधिकारी जमा किया धन निकलवा सकते। किन्तु स्ट्रैंड के बैडफोर्ड हाउस मे एक बडी मजूषा रखी थी जहाकि उसकी चालू नकदी परिवार के नौकरो के पास सुरक्षित पडी थी। किशोर अर्ल विलियम ने जब इस मजूषा को इसके स्वामी के रूप मे पहली बार खोला, तब उसने उसमे १५५७ १४ १ पाऊड पडा पाया। उसमे से उसने अपने पिता के अन्त्येष्टि सस्कार के

---

[1] चैको का मूल, या एक मूल, सुनारो अथवा अन्यो को भेजे गये रुक्के थे जिनमे अमुक व्यक्ति को विशेष मात्रा मे लिखने वाले के हिसाब से पैसा दिया जाने का आदेश लिखा होता था। सबसे पहले छपे हुए चैक "इगलैड के बैंक" ने अट्ठारहवी शताब्दी के आरभ मे जारी किये थे।

[2] यहा इस सबध मे नीचे जो लिखा जा रहा है उस प्रसग मे द्रष्टव्य मिस स्कोट थॉमसन द्वारा लिखित—
यह पुस्तक सामाजिक इतिहास के विभिन्न पक्षो पर एक उत्कृष्ट कृति है।

लिये तथा अन्य ऋण चुकाने के लिये पैसा दिया। किन्तु उस मजूषा मे बहुत शीघ्र उतना धन पुन डाल दिया गया गृह-युद्ध से एकदम पहले के अगले बारह महीनो मे इस मजूषा म ८५०० पाउड डाला गया, जोकि मुद्रा के आज के मूल्य की दृष्टि से बहुत बडी राशि थी। यह धन किरायो मे तथा पट्टे नये करने से प्राप्त हुआ था, जबकि एक हजार पाउड लकडी, यवरस, चरबी का तेल, भेडो का चमडा, भूसा तथा रसल के फार्मो की अन्य उपजो के विक्रय मे प्राप्त हुआ था।

अर्ल रसल का मुख्य अभिभावक बेडफोर्ड हाऊस मे रहता था, सब महत्वपूर्ण सन्दूको और मजूषाओ की कु जिया उसके पास थी, और वह वास्तव मे एक पारिवारिक कोषाध्यक्ष था और स्थायी रूप से लडन मे रहता था। अर्ल को दी जाने वाली सब चीजे इस अभिभावक के पास ही आती थी और वह उन्हे सन्दूको मे रखता और आवश्यकता होने पर वहाँ से निकालना था। १६४१ मे सबसे बडा एक मद डेवोन तथा कार्नवेल की जागीरो से प्राप्त हुआ था, इनसे उस वर्ष २५०० पाउड की आय हुई थी। इन पश्चिमी जागीरो के लिये—और केवल इन्ही के लिये—लडन को पैसा भेजने की एक आधुनिक तथा सरल विधि अपनायी गयी थी। पूर्वी एग्लिका की जागीरो तथा अन्य भागो ने नकदी के रूप मे आय भिजवाई जो डाकुओ और बटमारो से रक्षा के लिये अर्ल के सशस्त्र सेवको के सरक्षण मे लाई गयी। किन्तु एक्सेटर मे 'पश्चिम का अभिभावक' नियुक्त था। उसका कार्यालय पश्चिमी राजधानी मे रसल घराने का एक पुराना निवास था जहा कि डेवोव तथा कॉर्नवेल की विभिन्न जागीरो से नकदी लेकर आते थे और लेडी डे तथा माइरवेलमास लेखाधिकारी को हिसाब देते थे। पश्चिम का अभिभावक एक्सेटर मे इस प्रकार से प्राप्त राशि की हुडी लडन के लोम्बार्ट स्ट्रीट के थामस वीनर नामक एक सुनार के नाम लेता था। जब वीनर को हुडी मिलती तब वह बैडफोर्ड हाऊस के अभिभावक को सूचना देता और वह थैलो और वाहको के साथ पैसा लेने लोम्बार्ट स्ट्रीट जाता और वहा से पैसा लाकर सन्दूको मे रख देता।

किन्तु बैडफोर्ड के अर्ल लोग किसी भी तरह से किरायो के निष्क्रिय सग्रहकर्ता मात्र नही थे। अर्ल फ्रासिस, जिसकी मृत्यु १६४१ मे हुई, और उसके पुत्र प्रथम ड्यूक विलियम ने, जिसकी मृत्यु १७०० मे हुई, रसल कुल की सम्पत्ति पर एक सौ वर्ष तक स्वामित्व किया और इस रूप मे उन्होने इगलैंड के लिये अधिक महत्वपूर्ण कार्य किया, बजाय 'पुराने शुभ लक्ष्य' को सतर्क राजनैतिक सरक्षण देने के। उनके जीवन का लक्ष्य लडन, बैडफोर्ड शायर, दक्षिण-पश्चिम तथा फैन प्रदेश मे सुविस्तृत रूप से बिखरी हुई सम्पत्तियो का विकास करना था। उनका अत्यन्त सच्चा और शिष्ट शुद्धाचारवादी धर्म इगलैंड के एक ग्रामवासी सामन्त के कार्यों को राष्ट्रीय स्तर पर सपादित करने मे सहायक ही हुआ, बाधक नही हुआ।

फैनलैंड से जलनिकास की व्यवस्था करने का सर्वाधिक श्रेय किसी भी अन्य से

अधिक इन दो को ही मिलना चाहिए। इनके पूर्वजो मे से एक ने निम्न प्रदेशो मे एलिजाबेथ सरकार की सेवा करते हुए आश्चर्य प्रकट किया था कि फैन्लैंड किस प्रकार मे पानियो के बीच बना लिया गया, और वह अपने साथ हालैंड से एक इजिनीयर को फैन्स-स्थित रमला की जागीरो का निरीक्षण करने के लिये लाया था। यह स्थान पहले थॉर्नी साधुओ के पास था। इस परिवार के मन मे इस प्रकार से चालीस वर्ष पूर्व उत्पन्न विचार को पीछे अर्ल फासिस ने कार्य रूप मे परिणत किया। १६३० मे उसने एली द्वीप के पास दक्षिणी फैन्लैंड के एक बडे भाग मे जल-निकास के नाले बनाने के लिये 'साहसी लोगो' की एक कम्पनी का निर्माण किया था। अर्ल ने अन्यो से कही अधिक बडी राशि कम, से कम १००,००० पाउड, इसमे लगाई। प्रत्येक साझीदार को निकास-मार्ग बनाने के लिये उसके लगाये धन के अनुसार भूभाग दिया गया।

एक अन्य डच इजिनीयर वर्मूइडन के परामर्श पर यह निर्णय किया गया कि केवल घुमावदार नदियो के पुराने मार्गों को गहरा करना ही पर्याप्त नही होगा, इसलिये ७० फुट चौडी तथा २१ मील लम्बी एक सीधी नहर ईरिथ से डैन्वर स्लूइस तक बनायी गयी। बीस वर्ष बाद जब एक नवीन बैडफोर्ड नदी इसके सामानान्तर इसकी सहायता के लिये बनवाई गयी तब इसका नाम "ओल्ड बैडफोर्ड रिवर" (पुरानी बैडफोर्ड नदी) रखा गया। औज के विभिन्न सुदूर स्थित जलागम स्थानो से निरन्तर एकत्र होते हुए जल अन्तत इन नयी नहरो मे आकर बह जाते, बजाय फैन्लैंड मे ही बिखर जाने के, जैसेकि ये अनादिकाल से बिखरते आ रहे थे। मछली पकडने, जलपक्षी मारने तथा सरकडे उगाने मे काम आने वाले ये प्रदेश कृषि या चरागाह-योग्य भूमियो मे रूपान्तरित हो गये। इस परिवर्तन का फैन प्रदेश के लोगो ने, जिनके पूर्वज अनन्तकाल से एक स्थिर अर्थव्यवस्था मे स्थल-जलचरो का द्वैध जीवन जीने के लिये अभ्यस्त थे, विरोध किया। अब, एक ही धक्के के साथ, उनके व्यवसाय समाप्त हो गये। इस व्यवसाय-हानि के लिये उन्हे उचित क्षति-पूर्ति भी मिली या नही, इसका निर्णय करने के लिये हमे पर्याप्त साक्ष्य नही मिलता। जो भी हो, उन्होने नहरो के उठान तोडने के लिये रात्रि-आक्रमण आरम्भ किये और इस प्रकार से उस कार्य की प्रगति को बहुत हानि पहुँचाई।

गृह-युद्ध के काल मे जल-निकास का कार्य रुक गया, अथवा कहना चाहिए, उसको क्षति हुई, क्योकि शत्रुओ द्वारा किनारो को तोडने की क्रिया उस काल की अव्यवस्था के अनुसार और भी तीव्र हो गयी। किन्तु क्रामवेलो के काल मे एक महत्वपूर्ण स्थिति तक कार्य पूरा हो गया, जिसमे कुछ योगदान हालैंड तथा स्कॉटलैंड के युद्ध-बन्दियो के श्रम का भी था। इस सरक्षक (क्रॉवेल) के राज्य मे, जिसने कि इस उपक्रम को प्रोत्साहित किया था, उस प्रदेश की हजारो एकड भूमियो पर हल चलने

लगे और पशु चरने लगे, जहा कि पहले युगो मे सरकडे पैदा होते थे और जगली भेडे तथा डक पक्षी रहा करते थे। अर्ल ने अपने तथा अपने पिता के महान् उपक्रम का पूरा लाभ उठाया। १६६० के पूर्व उसने रसल जागीर के सम्पूर्ण ऋण चुका कर सम्पत्तियो को बधक से मुक्त करा लिया, जिनमे मे बहुत से ऋण तो इस जल-निकास बनाने के लिए ही लिए गए थे।

शान्ति-स्थापना के समय फैन की जल-निकास व्यवस्था, जिस भी सीमा तक यह पूर्ण हुई थी, एक शैल्पिक तथा आर्थिक सफलता प्रतीत हो रही थी। किन्तु शताब्दी के समाप्त होने से पहले ही कुछ अत्यन्त भयानक कठिनाइया उत्पन्न हो गयी थी, जिनका कारण मनुष्य न होकर प्रकृति थी। "आरम्भ मे नयी नहरो से आने वाले पानी तेज़ी से बहते थे और औस तथा नेने नदियो के मुहानो को खुला रखते थे, किन्तु समय बीतने के साथ-साथ सागर के लिये ये निकास-मार्ग बन्द हो गये। इसके अतिरिक्त, नयी व्यवस्था के द्वारा सुखायी गयी धरती की सतह अप्रत्याशित रूप से गिरने लगी, काली और पोली भूमि सूखने पर सिकुडने लगी, जैसे निचोड देने पर स्पज सिकुड जाता है। परिणाम यह हुआ कि बैडफोर्ड नदी तथा अन्य नहरे इसी प्रकार की हालैड नहरो के समान आसपास के प्रदेश से ऊपर निकल आई। इस प्रकार से नीची भूमियो पर से पानी खीच कर ऊँचे तालो मे और फिर वहा से और भी ऊँची नहरा मे पानी डालने की विधि खोजनी पडी जहा से पानी सागर मे पहुँचाया जाता। सम्पूर्ण अट्ठारहवी शताब्दी मे यह एक समस्या रही जिसका आशिक समाधान पानी उठाने के लिये सैकडो पवन-इजन लगा कर किया गया, किन्तु उससे समस्या का पूर्ण समाधान नही हुआ। इसका समाधान उन्नीसवी शताब्दी के आरम्भ मे हुआ जबकि पवन-इजनो के स्थान पर भाप के इजन लगे।

अट्ठारहवी शताब्दी मे भी, जबकि जल-निकास की कठिनाइया सर्वाधिक थी, दक्षिणी फैनलैड मे औस तथा नेने की घाटियो मे भूमि को जोताई के नीचे लाने के कार्य की सफलता इतनी अधिक हुई कि उसी प्रकार की योजनाए उत्तरी फैनलैड मे क्रियान्वित की गयी और वैल्लैड, विदम, स्पाल्डिग, बोस्टन तथा टैट्टरशैल द्वारा उनकी सिचाई की गयी। जहा-जहा जल-निकास हुआ वहा-वहा पीट के सिकुडने से नीचे की उपजाऊ मिट्टी ऊपर की सतह के पास आ गयी। अट्ठारहवी तथा उन्नीसवी शताब्दियो मे भूमि को खाद देने के लिये इस मिट्टी की बार-बार खुदायी की गयी, अथवा पीट के समाप्त हो जाने से यह पूरी तरह से भूमि की सतह पर ही आ गयी। आज यह फैनलैड इगलैड की सर्वोत्तम कृषि-योग्य भूमि है।

इस प्रकार से, प्राकृतिक कठिनाइयो के बावजूद, जोकि अभी तक पूरी तरह से हटाई नही जा सकी है, एक महान् कार्य सम्पन्न किया गया था और एक नवीन उपजाऊ प्रदेश, जोकि ८० मील लम्बा तथा १० से ३० मील चौडा था, देश की कृषि-योग्य भूमि

मे जोडा गया। यह प्रदेश इगलैड की पुरानी भूमियो के समान असख्य किसानो और जमीदारो द्वारा युगो से वीरान भूमियो मे से चप्पा-चप्पा अपना क्षेत्र बढाने की प्रक्रिया मे नही प्राप्त किया गया था। फेन्लैड मे प्रकृति के ऊपर विजय पू जी के सचय तथा उसको बृहत् स्तर के और दीर्घ-सूत्री उपक्रमो मे लगाने के साहस और विवेक के द्वारा प्राप्त की गयी थी, जिनके कि प्रतिफल के लिये बीस या उससे भी अधिक वर्षों तक प्रतीक्षा करनी पडती थी और जिनमे महत् हानिया होने की भी सभावनाए पूरी रहती थी। फैन्लड की जल-निकास व्यवस्था एक पुरानी कहानी है किन्तु यह आधुनिक आर्थिक विधियो का एक आरम्भिक उदाहरण है, और इस दृष्टि से इगलैड के सामाजिक इतिहास मे इसकी विशेष चर्चा उचित ही है।[1]

स्टुअर्ट युग के आरभिक कालो की ओर लौटने से पूर्व हम रसल घराने के आर्थिक इतिहास की—फैन्लैड मे उनकी इतनी अच्छी सफलता के बाद के चरणो की—कुछ और चर्चा करेगे। इस घराने की समृद्धि की नीव बहुत पहले चासर के काल मे बीमाउथ क्वे से मारकोनी को होने वाले व्यापार के द्वारा रखी गयी थी। तीन सौ वर्ष बाद, विलियम तृतीय के दिनो मे, रसल लोग ईस्ट इण्डिया कपनी के व्यवस्थापक परिवार के साथ विवाह-सम्बन्ध हो जाने के कारण सागर पार के देशो के साथ व्यापार मे प्रवृत्त हुए। बैडफोर्ड का प्रथम ड्यूक, जिसने कि १६४१ मे अपने पिता से अर्ल पद तथा सम्पत्ति को उत्तराधिकार मे प्राप्त किया था और जिसने कि फैन्लैड की जल-निकास-व्यवस्था को सफलता से कार्यान्वित होते देखा था, शताब्दी के अन्त मे एक सम्मानपूर्ण और सम्पन्न वार्धक्य का जीवन बिता रहा था, किन्तु वह अपने प्रिय पुत्र विलियम का देहान्त हो जाने से बहुत ही विषादपूर्ण जीवन बिता रहा था। विलियम राजनैतिक विचारो मे अपने पिता तथा पितामह से अधिक उग्र था, परिणामत वह एक 'उत्तम शुभ आदर्श' के लिये सघर्ष करते हुए कुल्हाडे से बलि हो गया था। इसके बारह वर्ष बाद वृद्ध ड्यूक ने अपने पौत्र तथा उत्तराधिकारी का विवाह ईस्ट इण्डिया कपनी के प्रशासक जोसिआह चाइल्ड की पौत्री तथा स्ट्रीथन के जोन् हाउलैड की पुत्री एलिजाबेथ से किया। दूल्हे की आयु तब चौदह वर्ष की तथा दुलहिन की आयु तेरह वर्ष की थी। यह एक बहुत ही भव्य-विवाह-समारोह था जिसमे अनेक रथ भी लाये गये थे। विवाह सस्कार बिशप बर्नैट ने करवाया। किन्तु भोज के बाद एक कोहराम मच गया—"दूल्हा और दूलहिन गायब थे। वे भोज के बाद एक साथ खेलने के लिये खिसक गये थे, और खेल-खेल मे उस किशोरी की पोशाक मे लगा कीमती झालर बुरी तरह से फट गया था। वह एक खलिहान मे छिपी मिली, और उसका

[1] एच सी डर्बी, हिस्टोरिकल ज्योग्रोफी आफ इगलैड, अ XII तथा उसकी पुस्तक दि ड्रेनिग ऑफ फैस्, १८७०, ग्लेडी की स्कॉट थाम्सन, लाइफ ऑफ ए नोबल हाउस होल्ड।

नया पति विवाह-मडप की ओर ऐसे लौटना हुआ मिला, मानो उसे कुछ पता ही नही हो।"

और इस प्रकार से, इस बाल-विवाह के द्वारा, जोकि समय बीतने के साथ एक सफल विवाह प्रमाणित हुआ, रसल लोग ईस्ट इण्डिया कपनी के भीतर प्रविष्ट हो गये। वहा से वे खाली हाथ नही लौटे। जिस प्रकार उन्होने पहले अपना पेसा फैन की जल-निकास योजना मे लगाया था उसी प्रकार से उन्होने रोदरहिथे मे नये गोदी बाडे (पोत-स्थान) बनवाने मे तथा अन्तरीप की यात्रा के लिये बडे पोत बनवाने मे लगाया। एक पोत का नाम टेविस्टोक रखा गया था। दूसरा पोत, जिसका नाम स्ट्रीथम रखा गया और जिसे वृद्ध ड्यूक ने अपनी मृत्यु के वर्ष—१७०० ई० मे—बनवाया था, इतने दीर्घ काल तक यात्राओ मे काम आया कि १७५५ नक मे वह क्लाईव को भारत वापिस लाया था।

यदि अट्ठारहवी शताब्दी के इगलेड के शासन मे बडे घरानो का भाग बहुत अधिक था तो वह उचित ही था, यह उन्होने अपने कार्यो से अर्जित किया था। राजनीति तथा प्रशासन के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रो मे भी अपने बुद्धिमत्तापूर्ण कार्यो से उन्होने जल और स्थल मे अपने देश के विकास के लिये बहुत महत्वपूर्ण कार्य किये। उनके मनो मे व्यापार के विकास के लिये उतनी ही लगन थी जितनी कि कृषि के विकास की, और उनकी धमनियो मे व्यापारियो तथा वकीलो का रक्त उतना ही प्रवाहित हो रहा था जितना सैनिको और ग्रामीण जमीदारो का। इसके विपरीत, फ्रास के अभिजात वशीय लोग, जिन्हे कि अधिक विशेषाधिकार प्राप्त थे, जिनमे एक कर-मुक्ति था, एक ऐसी जाति के लोग थे, जिनका परिवेश सकुचित था और परिणामत जिनके कार्य सीमित और दृष्टिकोण सकुचित थे।

× × ×

अब हमे उस पीढी की ओर लौटना चाहिये जो राज्ञी एलिजाबेथ की मृत्यु के एकदम पश्चात् आई। मूल्यो मे हो रही वृद्धि ने, जोकि मन्द गति मे किन्तु निरन्तर हो रही थी, जिसका मुख्य कारण यूरोप मे स्पेन-अधिकृत अमरीकी खानो से चादी का निरन्तर आगमन था, जेम्स तथा चार्ल्स प्रथम के लिये केवल मात्र अपने राजस्व के सहारे रह सकना असभव कर दिया और उनकी पार्लियामेट उनकी कमी-पूर्ति केवल कुछ राजनैतिक तथा धार्मिक शर्तो पर ही करने को तैयार थी और उन शर्तो को स्टुअर्ट राजा लोग स्वीकार करने को तैयार नही थे। और मूल्यो की वही वृद्धि, जोकि नियत आय वाले अथवा दैनिक मजदूरी पाने वाले लोगो के लिये विशेष रूप से कष्टकर थी, किन्तु उद्यमी जमीदारो तथा योमैनो, विशेष रूप से व्यापारियो के लिये यह बहुत लाभकर थी—और ये ही वे वर्ग थे जोकि धार्मिक तथा राजनैतिक कारणो से राजतन्त्र के विरुद्ध हो रहे थे। इन आर्थिक कार्यों का गृह-युद्ध लाने तथा इसका निर्णय करने मे बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा।

राजा की आर्थिक कठिनाइयो का राज्य की आर्थिक नीति पर बुरा प्रभाव पडा। हमने पीछे भी देखा है कि किम प्रकार से उत्पादन तथा वितरण के एकाधिकार प्रदान करने के द्वारा व्यापार पर नियत्रण करने की राजा की शक्ति का प्रयोग जनता के लाभ के लिये न होकर उसकी अपनी आर्थिक कठिनाइयो को दूर करने के लिये हुआ। ऐसी नीतिया व्यापार के लिये घातक थी तथा राजनैतिक दृष्टि से राजतन्त्र की जनप्रियता के लिये हानिकारक थी।

किन्तु सामाजिक तथा आर्थिक नीति की एक परपरा को—और वह थी निर्धन कानून—जोकि एलिजाबेथ के काल मे आरभ की गयी थी, जारी रखना तथा उसे व्यापकतर बनाना ऐसा कार्य था जिसके लिये राजा को श्रेय मिलना उचित था। इसी प्रकार से प्रशसास्पद था प्रिवी काउसिल-प्रशासन-व्यवस्था का होना, जिसके साथ कि स्ट्राफोर्ड तथा लॉड के नाम सयुक्त है। अग्रल निर्धन कानून के इतिहासकार ने लिखा है कि यूरोप मे केवल इगलैड मे ही निर्धनो को सहायता देने की एक उपयुक्त व्यवस्था की अतिजीविता का कारण

"मुख्यत यह था कि इगलैड मे एक ओर जबकि प्रिवी काउसिल थी, जोकि निर्धनो सम्बन्धी मुआमलो मे सक्रिय रहती थी, तो दूसरी ओर जिला प्रशासन तथा नगरपालिकाओ के अधिकारी थे, जोकि सदैव प्रिवी काउसिल के आदेश-पालन के लिये तत्पर रहते थे। एलिजाबेथ के राज्य मे भी प्रिवी काउसिल कभी कभी निर्धनो को सुविधाए देने के लिये हस्तक्षेप करती थी, किन्तु ये केवल वर्षों दीर्घ अभाव और कष्ट के अत्यन्त अस्थायी निदान मात्र होते थे। किन्तु १६२९ से १६४० तक उन्होने इस दिशा मे निरन्तर प्रयत्न किये और ये प्रयत्न आदेशो की पुस्तक (दि बुक ऑफ आर्डर्स) के द्वारा कम से कम बच्चो तथा पगु निर्धनो सम्बन्धी कानून को उचित रूप से कार्यान्वित भी करवा सके। प्रिवी काउसिल पुष्ट शरीर वाले निर्धनो को पूर्वी जिलो के अनेक भागो मे तथा कुछ अन्य जिलो के अनेक भागो मे कार्य देने के लिये शान्ति-न्यायाधिकारियो को प्रेरित कर सकी। कार्य का यह अवसर या तो सुधार-शालाओ मे होता था या फिर पादरी-प्रदेशो मे होता था। ऐसा प्रतीत होता है कि आदेशो ने विरोध को जन्म नही दिया। दोनो पक्षो के लोग प्रिवी-काउसिल को अपना कार्य-विवरण भिजवाते थे, किन्तु निर्धन कानून को लागू करने के लिये शुद्धाचारवादी जिलो मे इगलैड के अन्य किसी भी भाग से अधिक स्फूर्ति और प्रेरणा के साथ कार्य हुआ।

आगे के अध्यायो मे हमे अट्ठारहवी शताब्दी मे निर्धन-कानून प्रशासन के गभीर दोषो को देखने का अवसर भी मिलेगा। इनमे से कुछ तो प्रिवी काउसिल द्वारा स्थानीय दडाधिकारियो तथा पादरी-प्रदेशो के अधिकारियो पर लागू किये गये नियत्रणो मे शिथिलता आ जाने के कारण भी उत्पन्न हुए। यह एक अत्यन्त आवश्यक केन्द्रीय अधिकार-सत्ता का ह्रास था जिसे कि लोकतन्त्रीय सरकार तथा वैधानिक स्वतत्रता को

प्राप्त करने के लिये एक बडी कीमत के रूप मे समर्पित किया गया। किन्तु निर्धन कानून ने राजकीय उच्चतम स्वत्वो के दिनो मे ही इगलैड मे इतनी गहरी जडे पकड ली थी कि यह पार्लियामेट काल मे भी देश की एक राष्ट्रीय विशेषता के रूप मे बचा रहा।

इगलैड मे पहले पुलिस का कोई व्यवस्थित सगठन नही था, इसे व्यवस्थित रूप १८३० मे सर रोबर्ट पील ने दिया। स्थिति बडी विचित्र और खेदपूर्ण थी और इसके बडे अवाछनीय परिणाम होते थे। किन्तु आश्चर्य की बात यह है कि समाज किसी ऐसी सबल नागरिक सस्था के सरक्षण के बिना भी, जोकि भीड के नियत्रण तथा चोरी और अपराधो को पकडने के लिये सुशिक्षित होता, बना कैसे रहा। युगो तक बिना किसी पुलिस आदि के समाज का बना रहना इस बात का प्रमाण है कि हमारे पूर्वज औसत रूप से ईमानदार थे और कि, दोषो के होने हुए भी, निर्धन-कानून बहुत अच्छा था।

निर्धनो की व्यक्तिगत स्वतत्रता की ओर कोई ध्यान नही दिया जाता था। राज्य का यह लोक-हितार्थ कार्य ऐसे किसी विचार से प्रभावित नही होता था। निर्धन-कानून-व्यवस्था के अनुसार निकम्मो (कार्य-अयोग्यो) को सुधार-शाला मे भेजा जाता था और शराब पीने वालो को पकड कर बन्द कर दिया जाता था। शुद्धाचारवादियो द्वारा अपने साथी नागरिको की जीवन-विधि मे कुछ हस्तक्षेप, जोकि क्रॉमवेल के शासन मे बहुत ही असह्य हो गये थे, सब धार्मिक सप्रदायो तथा सब राजनैतिक मतो के लिये एक प्रकार के ही थे।

आज के युग मे अपराधो (राज्य द्वारा दडनीय कृत्यो) तथा पापो (राज्य-न्याय की सीमा मे नही आने वाले कृत्यो) के बीच किया जाने वाला स्पष्ट विवेक उस समय अभी लोगो को पर्याप्त स्पष्ट नही था। उस समय अभी मध्य युगीन धारणाए अति-जीवित थी और 'पापो' के दड देने के लिये चर्च के न्यायालय विद्यमान थे, यद्यपि उनके अधिकार काफी कम कर दिये गये थे। वास्तव मे स्कॉटलैड मे प्रेस्बिटेरियन चर्च यौन अपराधो के लिये इतने कठोर प्रायश्चित्तो का विधान करता था कि रोमन चर्च भी पहले कभी इतने कठोर दड नही दे सका था। लॉड के युग के इगलैड मे भी चर्च के न्याया-लयो ने भी वैसा ही कुछ करने का प्रयत्न किया था, किन्तु स्कॉटलैड के न्यायालयो से कही अधिक सतर्कता के साथ, और इस सतर्कता के बावजूद इसके परिणाम भयानक हुए। 'उन्मुक्ततावादी' लोग शुद्धाचारवादियो के साथ बिशप-न्यायालयो के विरोध मे सम्मिलित हो गये, यद्यपि इन दोनो के उद्देश्य भिन्न भिन्न थे। 'उन्मुक्ततावादी' तो जार-कर्म अथवा कुमारी-गमन के दड के लिये सफेद चादर के साथ सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत किये जाने के विरुद्ध थे, इसके विपरीत शुद्धाचारवादी लोग बिशपो से भी अधिक 'पापो' के दड देने के पक्षपाति थे, किन्तु वे चाहते थे कि यह दड देने का अधिकार बिशप को नही उन्हे हो। परिणाम यह हुआ कि इगलैड ने पहले तो बिशपो का जुआ उतारा

और उसके याद शुद्धाचारवादियो का, और 'पापो' का दड पुनस्स्थापना के बाद दड-विधान मे से समाप्त हो गया और सीमा के दक्षिण मे उसके बाद कभी दोबारा यह व्यवहार मे नही आया।

आग्ल शुद्धाचारवादी शासन के अधीन पापो के दड देने का अधिकार चर्च के न्यायालयो का नही था बल्कि साधारण न्यायालयो को ही था। १६५० मे एक अधिनियम पारित किया गया था जिसके अनुसार जार-कर्म का दड मृत्यु नियत किया गया, और यह अत्यन्त क्रूर दड दो-तीन अभियोगो मे वास्तव मे दिया भी गया था। इसके बाद शुद्धाचारवादी ज्यूरियो ने भी यह दड देने से इन्कार कर दिया, और परिणामत व्यवहार मे यह अधिनियम समाप्त हो गया। किन्तु इस काल मे जनमत ने द्वन्द्व-युद्ध की प्रथा को समाप्त करने के लिये कानून बनाने का समर्थन किया, और इन कानूनो को अधिक सफलता मिली, किन्तु पीछे 'पुनस्स्थापना' ने वीरतापूर्ण हत्या (ब्रेवो) की स्वतन्त्रता पुन प्रदान कर दी। ऐसे सैनिको की नियुक्ति की गई थी जोकि लडन के घरो मे जाकर यह देख सकते थे कि विश्राम-दिवस (सब्बाथ) का सही पालन हो रहा या नही, तथा कि पार्लियामेट द्वारा आदिष्ट उपवास किये जा रहे है या नही, और ये सैनिक रसोईघर मे पडे मासादि को उठा ले जाते थे। इसके विरुद्ध बहुत तीव्र रोष फैला। इसी प्रकार मे, अनेक स्थानो पर मई दिवस पर नाचने के लिये गाडे गये स्तम्भ काट दिये गये तथा रविवार के दिन शाम के खेल बन्द कर दिये गये। किन्तु सब्बाथ के दिन खेलो पर प्रतिबन्ध पुनस्स्थापना के अनेक दिन बाद तक बना रहा। १६६० की आग्ल चर्च (एग्लिकन चर्च) तथा उदार आन्दोलन की प्रतिक्रिया के बावजूद शुद्धाचारवादियो ने इगलैड के रविवारो पर अपना वेदना-चिह्न स्थायी रूप से छोड दिया।

जादूगरनियो की हत्या का राक्षसीय उन्माद, जोकि धार्मिक युद्धो के दिनो मे कैथोलिको और प्रोटेस्टेटो दोनो मे समान रूप से विद्यमान था, दूसरे देशो की अपेक्षा इगलैड मे कम भयानक था। किन्तु सत्रहवी शताब्दी के प्रथमार्ध मे यह उन्माद घोरतम स्थिति मे था। इसका कारण था सब लोगो का, शिक्षितो समेत, जादू-टोने मे विश्वास होना। यह उन्माद केवल उस समय कम हुआ जबकि शासक-वर्ग मे सत्रहवी शताब्दी के अन्तिम भाग मे तथा अट्ठारहवी शताब्दी के आरम्भ मे इसमे सन्देह उत्पन्न हुआ और उन्होने जादूगरनियो की हत्या को रोका, यद्यपि सामान्य लोगो का विश्वास उसमे बना रहा। इगलैड मे दो निकृष्टतम काल थे, एक तो अन्ध विश्वासी जेम्स प्रथम का काल, और दूसरा दीर्घ पार्लियामेट का काल (१६४५-१६४७) जबकि पूर्वी ज़िलो मे दो सौ जादूगरनियो को मारा गया था, विशेषत मैट्थ्यू हॉप्किस धार्मिक अभियानो मे। इस मूर्खतापूर्ण क्रूरता को रोकने का श्रेय चार्ल्स प्रथम की सरकार को है।

शान्ति-स्थापना से पूर्व बहुत कम ही लोग ऐसे मिल सकते थे जो ईसाई धर्म की चामत्कारिक बातो मे किसी न किसी रूप मे विश्वास नही करते थे। किन्तु ऐसे लोग

बहुत थे जो पादरियो के दभ मे, चाहे वे आग्ल चर्च के हो या शुद्धाचारवादी हो, बहुत घृणा करते थे, स्वय किसी धर्म मे उनकी कोई आस्था नही थी। हेनरी अष्टम् के राज्य मे मध्य युगीन चर्च के ध्वस मे पादरी-विरोधवाद एक महत्वपूर्ण प्रेरक शक्ति था। उसकी लडकी के दीर्घ राज्य-काल मे इस विरोध ने स्पेन के धार्मिक-दमन के विरुद्ध राष्ट्रीय निश्चय को दृढ किया जबकि देश मे उन लोगो का एलिजाबेथ के चर्च के नम्र तथा शान्त पादरियो से कोई झगडा नही था। किन्तु जब चार्ल्स प्रथम के सरक्षण मे बिशपो तथा पादरियो ने सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन मे पुन अपना सिर उठाया और मध्य युगो के समान एक बार फिर राज्य के पदो पर अधिकार किया तो लौकिक जन इसके विरुद्ध सतर्क हो उठे। बडे अभिजात लोग, जोकि शासन-सभाभवन तथा राज्य दरबार मे पादरियो की उपस्थिति से क्रुद्ध थे, तथा लडन की आक्रोशपूर्ण भीड, जोकि पैलेस यार्ड (महल के आगन) मे बिशपो की उपस्थिति से क्रुद्ध थी, दोनो के पादरी-विरोधवाद ने शुद्धाचारवादियो से समझौता कर लिया (१६४०-४१) और इस समर्थन के कारण दीर्घ पार्लियामेट लॉड चर्च को तोड सकी।

पार्लियामेट की सेनाओ की विजय के बाद 'साधुओ का राज्य' आया। ये लोग विचित्र प्रकार की साम्प्रदायिक भाषा का प्रयोग करते थे, साधारण लोगो के जीवन मे हस्तक्षेप करते थे और उन्होने नाटक-घर और खेल बन्द कर दिये थे। इन कारणो से उद्दीप्त पादरी-विरोधी भावना की इतनी भयानक प्रतिक्रिया हुई कि यह १६६० की पुनस्स्थापना का एक मुख्य कारण कही जा सकती है। एक पीढो बाद, १८८८ मे, इसी के कारण रोमन-विरोधी क्रान्ति हुई। अनुगामी अनेक पीढियो तक रोमन-विरोधी घृणा के साथ-साथ शुद्धाचारवादियो के विरुद्ध घृणा भी बहुत उग्र रही और इसने विहार-ध्वसक जनसाधारण तथा उच्च वर्ग मे भी बहुतो को अभिभूत किया।

क्रामवेल-क्रान्ति के कारण तथा उद्देश्य सामाजिक तथा राजनैतिक नही थे, यह उन लोगो के धार्मिक तथा राजनैतिक विचारो और आकाक्षाओ का परिणाम थी जिनकी समाज को बदलने अथवा सम्पत्ति के पुनर्वितरण मे कोई रुचि नही थी। इसमे सन्देह नही कि लोग राजनीति अथवा धर्म मे जो एक या दूसरे पक्ष का अवलबन करते थे वह कुछ अवस्थाओ मे एक सीमा तक सामाजिक तथा राजनैतिक परिस्थितियो से भी निर्धारित होता था, किन्तु इस सम्बन्ध मे स्वय वे लोग पूरी तरह से सचेत नही होते थे। राजा के समर्थको मे सामन्तो तथा जमीदारो की सख्या अधिक थी और पार्लियामेट के समर्थको मे छोटे योमैन किसानो तथा नगरवासियो की। किन्तु नगरो तथा ग्रामो मे भी प्रत्येक वर्ग अपने आप मे विभाजित था।

इगलैड मे १६६० मे जो आर्थिक तथा सामाजिक विकास की स्थिति प्राप्त हो चुकी थी वह उन राजनैतिक तथा धार्मिक आन्दोलनो की कारण नही थी जोकि एक स्फोट के साथ भास्वर प्रकाश के रूप मे दीप्त हो उठे थे, बल्कि उनके आविर्भाव के

लिये एक आवश्यक प्रागपेक्षा थी। पिम, हेम्पडन तथा अन्य ससत्समर्थक नेताओ (पार्लियामेंटरी लीडर्स) का राजतन्त्र से सत्ता छीन लेने का आश्चर्यजनक प्रयत्न तथा सैकडो सदस्यो की विवादरत ससद् के माध्यम से राज्य करने की योजना, और वह सफलता जो इस साहसपूर्ण क्रान्तिकारी विचार को राजनीति तथा युद्ध मे प्राप्त हुई, यह न केवल इसलिये ही हुई कि इसके पीछे पुरानी ससदीय परम्परा विद्यमान थी बल्कि इसलिये भी कि एक ऐसा शक्तिशाली बुर्जुआ वर्ग—जमीदारो और योमैन किसानो का—विद्यमान था जो धार्मिक तथा सामन्तीय नियत्रण से बहुत देर से मुक्ति पा चुका था और राज्य-सचालन मे राजतत्र के साथ भाग ले रहा था। इसी प्रकार से बैप्टिस्ट और काग्रेगेशनिस्ट (दो धार्मिक सम्प्रदाय) जैसे अनेक सम्प्रदायो का तीव्र गति से राष्ट्रीय महत्व प्राप्त करना केवल ऐसे देश तथा समाज मे ही सम्भव था जिसमे कृषक तथा शिल्पी वर्गों मे पर्याप्त व्यक्तिगत तथा आर्थिक स्वतन्त्रता विद्यमान थी तथा जिसमे लगभग एक शताब्दी से बाईबल का व्यक्तिगत अध्ययन धर्म का एक महत्वपूर्ण अग हो चुका था और जन-साधारण की कल्पना और विचार को उद्दीप्त कर रहा था। यदि कही उस समय जमीदार-प्रासादो मे बाईबल की प्रतियोगिता के लिये समाचार-पत्र, पत्रिकाए तथा उपन्यास आदि होते तब इगलैड मे कोई शुद्धाचारवादी क्रान्ति नही हुई होती—और जोन् बुन्यान ने कभी पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस (तीर्थ-यात्रियो की प्रगति) पुस्तक नही लिखी होती।

वास्तव मे स्वय शुद्धाचारवादी क्रान्ति भी, अपनी मूल प्रेरणा मे, 'तीर्थ यात्रियो की प्रगति' ही थी। बुन्यन ने लिखा था, "मैंने एक सपना देखा कि एक मनुष्य एक स्थान पर गूदडी पहने और अपने घर के दूसरी ओर मुँह किये, हाथ मे एक पुस्तक लिये तथा पीठ पर बहुत बोझा उठाए खडा है। मैने उसकी ओर देखा और पाया कि वह उस पुस्तक को खोल कर पढने लगा, पढते हुए वह रोने और कापने लगा, और देर तक अपने को इस स्थिति मे नही सँभाल पाकर वह करुण क्रदन कर उठा "मुझे क्या करना चाहिए !"

हाथ मे बाईबल तथा पीठ पर पापो का बोझ उठाए हुए यह एकान्त व्यक्ति केवल जोन् बुन्यन ही नही था, यह इगलैड के शुद्धाचारवादी युग का प्रतिनिधि एक शुद्धाचार-वादी व्यक्ति था। जब नेस्बाई के पीछे के वर्षो मे बुन्यन अभी युवक था उस समय शुद्धाचारवाद शक्ति तथा उत्साह के चरम उत्कर्ष पर था और यह युद्ध, राजनीति, साहित्य तथा सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन सभी को व्याप्त कर रहा था। किन्तु इस यत्र की भीतरी धमनी, जोकि इस सम्पूर्ण अद्भुत शक्ति का राष्ट्रीय जीवन के आर-पार वहन कर रही थी,

पुराने राजतत्रो को
नये साचे मे ढालने के लिये,

वह वही एक एकान्त प्रतिभा थी जिसका चित्र "तीर्थ यात्री की प्रगति" के पहले अनुच्छेद मे हमे मिलता है—आखो मे आँसु भरे मुक्ति का अन्वेषक एक दीन व्यक्ति, जिसके पथ-प्रदर्शन के लिये बाईबल के सिवाय और कोई सहारा नही था। यह व्यक्ति अनेक होकर, सगठित होकर, सैन्यरूप धारण कर एक अद्भुत शक्ति बन गया था—ध्वस के लिये भी और निर्माण के लिये भी।

किन्तु यह समझना भूल होगी कि व्यक्तिगत तथा पारिवारिक धर्म का यह उत्साह केवल शुद्धाचारवादियो तक ही सीमित था। वर्ने घराने के स्मृति-लेखो तथा उस काल के अन्य अनेक अभिलेखा से पता चलता है कि एक सैनिक का परिवार उतना ही धार्मिक था जितना कि शुद्धाचारवादी का, यद्यपि इसमे जीवन की प्रत्येक क्रिया के लिये किसी दुरूह शास्त्र-मत की अनुमति खोजने की वैसी प्रवृत्ति नही थी जैसी शुद्धाचारवादियो मे। बहुत से छोटे जमीदार और किसान, विशेषत इगलैड के उत्तरी तथा पश्चिमी भागो मे, जोकि अत्यन्त नम्र तथा शालीन थे, (जैसेकि एलिसथोर्बटन) ऐसा अनुभव करते थे मानो इगलैंड का उस समय स्थापित किया गया चर्च इतना उत्तम, शुद्ध तथा महिमामय था कि मानो श्रद्धा तथा सिद्धान्त की उत्तमता मे धर्मदूतो के काल से अन्य कोई इसके समतुल नही था। जैसाकि ऐलिस के जीवनी-लेखक ने लिखा था

"उसके अपने परिवार के धार्मिक जीवन के विवरण से यह स्पष्ट है कि इगलैड का चर्च होने का अर्थ किसी भी प्रकार से धर्म को उपेक्षा से देखना नही था। सारा परिवार एक छोटी घटी से तीन बार प्रार्थना पर बुलाया जाता था—प्रात छ बजे, मध्याह्नोत्तर दो बजे तथा रात्रि को नौ बजे। (वैल्लेस नोटेस्टीन, इगलिश फोक पृ० १८६)।

अनेक परिवारो मे, जोकि समाज के सब स्तरो से आए थे और जिन्होने चर्च तथा प्रार्थना-पुस्तक के लिये सघर्ष किया था तथा कष्ट उठाए थे, इन सघर्षो के कारण इगलैड के चर्च के प्रति ऐसी श्रद्धा का सचार हुआ जो गृह-युद्ध के पूर्व कभी अनुभव नही किया गया था। चर्च के प्रति यह श्रद्धा, जिसेकि लॉड ने एक नया रूप दिया था, उन्नीसवी शताब्दी के आरम्भ तक जारी रही। उन्नीसवी शताब्दी मे आकर यह पारिवारिक तथा वैयक्तिक पवित्रता के साथ तथा बाईबल के अध्ययन के साथी जोकि सभी श्रद्धालु प्रोटेस्टेट करते थे, सम्मिलित हो गया।

किन्तु "तीर्थयात्री की प्रगति" मे प्रोटेस्टेट धर्म की सर्वोत्तम व्याख्या के अतिरिक्त भी बहुत कुछ है —तीर्थ-यात्रियो की जीवन-चर्या, प्रार्थना-पुस्तक पढने वालो का उन गीतो से भाव-विभोर होना, ग्राम-प्रदेश का विवरण, तथा लोगो के मधुर तथा हास्य-विनोदपूर्ण वार्तालाप। यह इजाक वाल्टर के एगलर का इगलैड था। अभी भी यह

बहुत हद तक शक्सपीयर का इगलैड था, यद्यपि यह काल मानसिक सघर्ष का काल था, जिससे शैक्सपीयर काल का इगलैड उससे कही कम सन्तप्त था जितना कि बुन्यन काल का इगलैड। किन्तु मानवीय पृष्ठभूमि मे कोई परिवर्तन नही हुआ था। हमे इस बात म कोई विसगति नही देखनी चाहिए कि ऑटोलाइक्स ने पगडडी के एक ओर तीर्थ-यात्रियो को प्रदर्शनार्थ बर्तन रखे, अथवा फाल्स्टाफ ने बर्डोल्फ को भेजा कि वह तीर्थ-यात्रियो को रास्ते के एक ओर हटाने को तथा विशेष सार्वजनिक स्थान पर उसके साथ मिलने को कहे।

जिस प्रदेश मे से होकर तीर्थ-यात्री निकलते थे, और वे मार्ग जिन पर वे चलते थे, ग्राम प्रान्त मे थे—इगलैड के मध्य-प्रदेशो के मार्ग, जिनके साथ कि बुन्यन अपने यौवन-काल मे परिचित था। दलदले, लुटेरे, तथा मार्गो की अन्य दुर्घटनाए तथा खतरे सत्रहवी शताब्दी के इगलैड की यात्राओ मे बहुत सहज थे। दैत्योपम सरीसृपो (ड्रैगस) तथा विशालकाय राक्षसो आदि का प्रश्न अवश्य ही उपस्थित नही होता, किन्तु बुन्यन को इनके वृत्तात भी साउथेम्पटन के सर बीविस से तथा अन्य पुरानी अग्रेजी ग्राम-गाथाओ तथा पुराण-कथाओ आदि से प्राप्त हुए, थे बजाय समाचार-पत्रो के ठीक-ठीक समाचारो की बाढ मे, जिसने कि आधुनिक युग की कल्पनाशीलता को भारी आघात पहुँचाया है।

उन युगो मे मनुष्य को निज, प्रकृति तथा ईश्वर के उपसग मे निर्बाध रहने का पर्याप्त अवसर था। जैसाकि ब्लैक ने लिखा है

जब मानव और पर्वत मिलते हे तब अनेक महत् कार्य होते है,

ये बाजारो मे कधे से कधा भिडाती भीड मे सम्पन्न नही होते।

प्रकृति के साथ मानव के प्रशान्त सम्पर्क के परिणामस्वरूप होने वाली उपलब्धियो और गुणो का यह काव्यमय आख्यान न केवल पर्वतो के सम्बन्ध मे ही सत्य है, जिन्होने कि वर्ड्स्वर्थ के काव्य को अनुप्राणित किया था, बल्कि फेनलैड तथा कैम्ब्रिजशायर के विस्तृत क्षितिजो के सम्बन्ध मे भी सत्य है जिनके ऊपर कि उदय और अस्त होते सूर्य की छवि तथा मेघाच्छादित आकाश की भव्यता को लोग रहस मे देखते थे—जैसे जमीदार क्रामवेल तथा उसके योमैन कृषक। पूर्वी एग्लिया के विस्तृत प्रदेशो मे इनमे से प्रत्येक व्यक्ति ने, सैन्य-दल मे प्रवेश करने से पूर्व, अपने आपको एकान्त ईश्वर के साथ अनुभव किया था। यही बात चरागाहो, निकुजो तथा बैडफोर्ड शायर के वनो के लिये भी सत्य है, जिनकी गोदी मे कि बुन्यन बडा हुआ और जिनमे उसने अपने यौवन के आदर्शो और स्वप्नो को प्राप्त किया।

सौभाग्यवश, अधिकाश सामान्य लोग, जो शैक्स्पीयर ग्राम-प्रान्त मे भेडे पाल रहे थे, अथवा जो इजाक वाल्टन के झरनो के आसपास मछली पकडने के काटे लिये घूमते

थे, वे स्वर्ग और नरक की उन कल्पनाओं से अछूते थे जोकि बुन्यन तथा क्रामवेल को विकल कर रही थी। किन्तु साधु और पापी, सहर्ष मछुए तथा आत्म-पीडक तपस्वी वे सब उस काल के समग्रतापूर्ण प्रभाव तथा प्राकृतिक सौन्दर्य से प्रभावित थे। उनकी भाषा पटु तथा शुद्ध अग्रेजी थी जिससे कि उस काल के बाईबल के अनुवादको ने अपनी शैली प्राप्त की, जोकि इस समय अलभ्य है। जहा तक साधारण लोगो के गीतो का प्रश्न है, उनका वर्णन इजाक वाल्टन ने अपने सवाद मे बहुत ही सुचारु रूप से किया है

"पिस्काटर—मेरा अनुरोध है कि हमारे पर आप एक अनुग्रह करे जिसमे कि आपको तथा आपकी पुत्री को कोई भी कठिनाई नही होगी किन्तु जिसके लिये हम अपने आपको आपके ऋणी मानेगे। यह और कुछ नही केवल वह गीत गाने का अनुरोध है जो गीत कि आपकी पुत्री ने आठ-नौ दिन पूर्व उस समय गाया था जबकि मै आपकी चरागाह के पास से निकल रहा था। मिल्क-वोमन—वह कौनसा गीत था? क्या यह 'आओ गडरियो, अपने इज्जड को सभालो' था याकि 'जबकि दोपहरी मे डल्किना विश्राम कर रही थी' था, याकि 'फिल्लिडा मेरी उपेक्षा करती है' था अथवा 'चिवी चेस,' 'जोन् आर्मस्ट्रोग' था, अथवा 'ट्रॉय टाऊन' था?

पिस्काटर नही, वह इनमे से कोई नही था, उस गीत का पहला भाग आपकी पुत्री ने गाया था और उसका उत्तर आपने।

मिल्क वोमन आओ माड्लिन, तुम प्रसन्न चित्त से इनके लिये गीत का पहला भाग गाओ, और तुम्हारे गा चुकने पर मै दूसरा भाग गाऊगी।"

तब फिर गीत गाया गया यह था "आओ, मेरे साथ रहो, और मेरी प्रेमिका बनो।" जब यह समाप्त हुआ तब वेनेटर ने कहा

"सच जानो, गुँसाई, यह एक बहुत सुन्दर गीत है, और माड्लिन ने इसे बहुत मधुर गाया है। अब मुझे समझ पडा कि हमारी अच्छी राज्ञी एलिजाबेथ मई मास मे प्राय ही ग्वालिन क्यो होना चाहती है।"

ऐसे थे सामान्य ग्रामीण लोग शुद्धाचारवादी ससद् के राज्यकाल मे, इनमे से अधिकाश इसके हस्तक्षेपो तथा क्रूरतापूर्ण महत्वाकाक्षाओ से अप्रभावित थे।

नीचे हम जून १६५३ मे एक सुन्दर लडकी डोरोथी ओस्बर्न द्वारा लिखित एक पत्र को उद्धृत करेगे जिसमे उसने एक गाव के 'खुले क्षेत्र' के पास एक सुबह जो सुना और देखा उसका विवरण अपने प्रेमी को दिया है

"तुम पूछते हो कि मै यहा अपना समय कैसे बिताती हू दिन का गर्मी का समय मै घर पर पढते हुए या कोई कार्य करते हुए बिताती हू, और लगभग

छ या सात बजे साय समय एक पास के सार्वजनिक मैदान मे चली जाती हू जहाकि बहुत सी युवक लडकिया अपनी भेडे या गाये लेकर आती है और गीत गाती है। मै उनसे बात करती हू और पाती हू कि वे ससार मे सर्वाधिक आनदित है और उन्हे अन्य किसी वस्तु की आवश्यकता नही है सिवाय इस बात के कि वे यह जान पाए कि वे ससार मे सबसे अधिक सुखी है। अधिकाशत जब हम बात कर रहे होते है तब उनमे से कोई आसपास दृष्टि डालती है और पाती है कि उसकी गाये किसी खेत मे घुस रही है, और तब वे सब ऐसे उनके पीछे भाग जाती है मानो उनकी एडियो मे पख लगे हो।

इज्जड चराने वाली ये लडकिया सारा वर्ष ही इस प्रकार से छाया मे बैठी गाथा-गीत नही गा सकती थी, और राज्ञी एलिजाबेथ केवल मई मास मे ही ग्वालिन होना चाहती थी। उन सुन्दर-सुखद गावो और खेतो मे काफी विपत्तिया तथा निर्धनता थी और सर्दी पडती थी, किन्तु प्रकृति के सपर्क मे जीवन की सरलता तथा सुन्दरता एक ऐतिहासिक सत्य था, केवल एक कवि का सपना मात्र नही था।

उन लोगो की एक महान सन्तति ने, जिसने कि प्रोटेस्टेटो तथा वीर सैनिको के उच्च कोटि के दु खान्त नाटको का सृजन किया, बाईबल के वातावरण मे बडे नही हुए थे और न केवल ग्रामीण प्रभाव मे ही पले थे—यद्यपि बुन्यन के लिये ऐसा कहना उचित ही होगा। मिल्टन, मार्वल तथा हैरिक के युग मे कविता तथा विद्वत्ता का काफी निकट सम्बन्ध था। न केवल सरल और सुन्दर गीत लिखे और सगीतबद्ध ही किये जा रहे थे और सब वर्गो द्वारा गाये जा रहे थे बल्कि सुसस्कृत घरो मे विद्वत्तापूर्ण और अलकारमय काव्य भी, मुद्रित होने या नष्ट होने से पूर्व, हस्तलिखित रूप मे प्रचारित होने थे। जब लावेस का सगीत मिल्टन के अमर काव्य "कोमस" के साथ सयुक्त होकर ब्रिजवाटर परिवार की व्यक्तिगत रगशाला के लिये प्रस्तुत हुआ उस समय इगलैड की गृह-सस्कृति अपने उच्चतम उत्कर्ष पर थी, और उस काल की शिक्षा का भी, वह ईसाई धर्म-सबधी हो या प्रतिष्ठित ग्रथो सबधी, बहुत प्रचार था।

राजनैतिक तथा धार्मिक वादविवाद आज की दृष्टि से बहुत ही दुरूह पाडित्यपूर्ण ग्रन्थो अथवा पैम्फ्लेटो द्वारा किया जाता था, किन्तु इस दुरूह पाडित्य-प्रदर्शन के बावजूद उन्हे पाठक उत्सुकता से पढते थे और इनमे प्रभावित होते थे। अत्याचारी शासक की हत्या का समर्थक वह प्रसिद्ध पेम्फ्लेट भी, जिसका लेखक एक रिपब्लिकन था और जिसे पीछे राजतत्र के समर्थको ने क्रॉमवेल की हत्या के लिये उकसाने के निमित्त पुन प्रचारित किया था, प्रतिष्ठित प्राचीन ग्रन्थो तथा बाईबल से लिये गये उद्धरणो से खचित था। शुद्धाचारवादियो के राज्य मे भी यूनानियो और रोम वालो द्वारा अत्याचारी शासक की हत्या के समर्थन मे लिखे विचार सामान्य पाठक के लिये उतने ही मान्य थे जितने हिब्रू न्यायाधीशो तथा धर्मनेताओ के वचन।

वास्तव मे उच्च तथा मध्य वर्ग मे नगरो तथा गावो मे बहुत से विद्यार्थी थे। वास्तव मे, प्रत्येक पाठक के लिये किसी न किसी प्रकार से विद्यार्थी रहा होना आवश्यक था, क्योकि कविता तथा नाटक को छोडकर ऐसा साहित्य दुर्लभ था जो पर्याप्त दुरूह नही होता था। गाथा काव्य तथा 'ग्रोड सिरिस' जैसे फ्रासीसी रोमास के बृहत् 'गुबदो' के सिवाय कथा-साहित्य दुर्लभ था किन्तु उन दिनो ये फ्रासीसी रोमास-ग्रन्थ सस्कृत युवतियो, जैसे डोरीथी ग्रोस्बर्न, को ही रोचक लगते थे।

हमारे युग मे प्रोफेसर नोटस्टीन ने ऐडम ईर नामक यार्कशायर के एक योमैन की दैनदिनियो (डायरीज) का अनुसन्धान किया है। ऐडम ईर एक समय पार्लियामेट की सेना मे नियुक्त था, किन्तु १६४७ तक वह डेल्स स्थित अपने घर के खेतो पर लौट आया था। इसमे सन्देह नही कि उसका अध्ययन और मनन अपने वर्ग के अधिकाश लोगो से अधिक था, किन्तु उसके अध्ययन का विस्तार और स्वरूप उस काल के बौद्धिक स्वभाव का अच्छा परिचय देता है और उससे पता चलता है क्योकि योमैन लोग राजनीति तथा धर्म मे अपने लिये उचित पक्ष का चुनाव कर सकने मे समर्थ थे, जोकि प्राय ही पडौस के जमीदारो द्वारा निर्वाचित पक्ष से भिन्न होता था।

ऐडम ने अपने अध्ययन-कक्ष मे अल्मारिया आदि बनाने के लिये एक बढई रखा हुआ था और उसके मित्र (उसके वर्ग के योमैन) सदैव उससे पुस्तके ऋण लेते रहते थे। शायद ही कभी ऐसा होता होगा कि वह किसी बडे नगर मे जाने पर बिना वहा से कोई पुस्तक लाये लौटा हो। कभी कभी उसके साथ पुस्तको का पूरा बडल ही आता और वह बडे ध्यान से उनका अध्ययन करता। "उस दिन मै सारा दिन घर पर ही रहा और अधिकाश समय अध्ययन मे ही बिताया" ऐसा प्राय ही उसकी दैनदिनी मे लिखा मिलता है। उसने 'दि स्टेट आफ यूरोप' नामक एक पुस्तक की सारणी बनानी आरभ की। उसने 'ए डिस्कोर्स आफ दि काउसिल आफ बेसिलस' नामक पुस्तक पढी "जिसमे कि, मनुष्यो के अन्य सब कार्यो के समान, भ्रष्टाचार के अतिरिक्त और कुछ नही है।" यह टिप्पणी हमे ऐडम के इतिहास-दर्शन का कुछ आभास देती है। उसने ली की लिखी भविष्यवाणियो की एक विचित्र पुस्तक पढी तथा वाल्टर रिलीफ की "विश्व का इतिहास" पुस्तक पढी, जोकि उस समय इगलैड मे बहुत पढी जा रही थी। वह इरासमस की 'मूर्खता की प्रशसा' (प्रेज आफ फोल्ली) तथा जेम्स होवेल्स की डेड्रोलोशिया (जोकि १६०३ से १६४० तक की राजनैतिक घटनाओ का रूपकात्मक प्रस्तुतीकरण था) मे निमज्जित रहा। उसके पास डाल्टन की कट्री जस्टिस पुस्तक भी थी, जिसमे कि न्यायाधिकारियो तथा अन्य स्थानीय अधिकारियो के कर्त्तव्यो का विवरण था।

उसका अधिक अध्ययन धार्मिक ग्रन्थो का था। उसके पुस्तकालय मे इतनी बडी सख्या मे धार्मिक ग्रन्थो को देखकर आश्चर्य होता है। "आज मै सारा दिन घर पर

ही रहा और अनेक प्रकार के लोगो के मत पढने के कारण अनेक प्रकार के विचार मन मे आए।' निश्चय ही यह विभिन्न मतो के ऊपर बौद्धिक मनन का आरभ था। ऐडम बहुत आध्यात्मिक व्यक्ति नही था, वह उन पुस्तको को इसलिये पढता था क्योकि उस समय धर्म वातावरण मे व्याप्त था। धर्म उन दिनो के समाचार-पत्रो तथा पैम्फ्लेटो को आच्छादित किये था, जैसेकि हमारे आज के समाचार पत्र खेलो और हडतालो के समाचारो से भरे रहते है। वैस्ट राइडिग मे धर्म गरूवो की कलहो मे लिपटा था और वैस्टमिन्स्टर मे राजनैतिक दलबदियो मे (नोटेस्टीन, इगलिश फोक, पृ० २५०--२५१)।

ऐसा था उस क्रामवेल युगीन योमेन का अध्ययन। जमीदारो के प्रासादो मे काव्य तथा शास्त्रीय ग्रन्थ या तो एक से दूसरे हाथ मे घूमते थे अथवा धर्मोपदेशो तथा पेम्फ्लेटो के साथ उनके पुस्तकालयो की अलमारियो मे टिक जाते थे। इसमे सन्देह नही कि अधिकाश योमैन, अधिकाश जमीदार तथा अधिकाश व्यापारी बहुत कम पढते थे, किन्तु उनमे से अधिकाश बहुत अधिक पढते थे।[१] गृह-युद्ध वास्तव मे विचारो का युद्ध था, और ये विचार मुद्रित अथवा हस्तलिखित रूप, मे तथा उपदेशको और प्रचारको के उपदेशो तथा व्याख्यानो के रूप मे, प्रसारित किये जाते थे।

चार्ल्स तथा क्रॉमवेल के गृहयुद्ध रोसेस के युद्धो के समान दो अभिजात परिवारो मे सत्ता हथियाने के लिये लडे गये युद्ध नही थे, जिन्हे कि अधिकाश लोग, विशेषत नागरिक, एक निराशापूर्ण तटस्था से देखते थे। १६३२ मे नगर तथा ग्राम दोनो ने समान रूप से शस्त्र धारण किये थे। तो भी यह नगर का ग्राम के विरुद्ध युद्ध नही था। यद्यपि एक सीमा तक यह ग्रामीण उत्तर तथा पश्चिम के विरुद्ध लडन तथा उसके सलग्न प्रदेशो के लिये युद्ध ही हो गया था।

लोग अपने पक्ष अधिकाशत निस्वार्थ उद्देश्यो से तथा बिना किसी बाध्यता से चुन रहे थे। उनके निर्णयो के आधार उनके धार्मिक तथा राजनैतिक विचार थे, और उनमे से अधिकाश सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टियो से ऐसी परिस्थिति मे थे कि वे इस सबध मे स्वतन्त्रता से अपना निर्णय कर सकते थे। ग्रामीण प्रदेशो मे सामतीय प्रकार की निर्भरता एक अतीत की चीज थी और विशाल समूहीकृत भूमिया अभी भविष्य की बात थी। यह छोटे जमीदारो तथा योमैनो के लिये एक स्वर्णिम युग था जिन्हे कि अपनी राजनैतिक स्वाधीनता पर गर्व था, जबकि एक-दो शताब्दी पूर्व बडी

---

[१] १६४० से १६६० के बीच मुद्रित पैम्फ्लेटो की बाढ सी आ गयी थी, किन्तु मुद्रित दैनिक समाचार पत्र आरभ नही हुए थे। समाचार लडन मे लिखी समाचार चिट्ठियो द्वारा प्रसारित किये जाते थे, जोकि हस्तलिखित रूप मे इनके ग्राहको को गावो मे भेजी जाती थी और वे अपने पडोसियो मे इन्हे प्रचारित करते थे। शताब्दी के अन्त तक मुख्यत इसी प्रकार से समाचार प्रसारित किये जाते थे।

जागीरो पर काश्तकार किसान व्हिग अथवा टोरी पक्ष के लिए मतदान करने के लिये अपने जमीदार का अनुसरण करने मे गर्व अनुभव करते थे। किन्तु १६४० मे अनेक योमैन किसानो ने अपने पडोसी किसानो के विरुद्ध तलवार खीच ली थी।

नगरो मे भी यह एक स्वतन्त्रता तथा व्यक्तिवाद का युग था। सामुदायिकता का अब ह्रास हो रहा था। व्यक्ति की अपने नगर के प्रति नगरपालिका-परक वफादारी राजनैतिक दल के प्रति उसकी राष्ट्रीय वफादारी की तुलना मे (चयन वह स्वय करता था) पहले ही घट चुकी थी। छोटे स्वामियो तथा उसके कर्मचारियो से निर्मित समाज मे व्यक्तिगत विचारो के प्रति बहुत आग्रह था। इस प्रकार से नगरवासी अपने देश के वाद-विवाद मे स्वतत्रता तथा विचारपूर्वक रुचि लेते थे।

किन्तु गृह-युद्ध आरभ होने पर बहुमत के लिये अल्प-मत से सत्ता छीनना और उसका दमन करना नगरो मे अधिक सहज था, बजाय विशाल ग्राम-प्रदेश के। इस प्रकार से प्रोटेस्टेट लोग राजतत्र के समर्थकों का लडन, बन्दरगाहो तथा औद्योगिक नगरो मे तुरन्त दमन करने मे समर्थ हो सके। किन्तु इगलैड के अनेक जिलो मे स्थानीय गृह युद्ध अनेक वर्षों तक चलता रहा। यह युद्ध मुख्य सेवाओ के सग्रामो से पृथक् था, यद्यपि ये सेनाए भी कभी कभी इन स्थानीय सघर्षो मे सम्मिलित हो जाती थी।

जबकि स्थानीय युद्ध ऐसे जमीदारो के नेतृत्व मे चला रहे थे जोकि पहले एक-दूसरे से पडौसी के रूप मे, और कभी कभी तो मित्रो के रूप मे भी, परिचित थे, (यद्यपि तब नीतियो को लेकर उनमे मतभेद हो गये थे) इसलिये उनमे कटुता कम थी और परस्पर सम्मान का भाव भी था, विशेषत प्रथम एक या दो वर्षो मे। किन्तु कुछ स्थानीय युद्ध अधिक हिंस्र थे, जहा कि समाज के दो अत्यन्त विरोधी वर्ग एक-दूसरे के गलो पर झपट रहे थे। उदाहरणत, लकाशायर मे अधिकाश जमीदार लोग रोमन कैथोलिक थे जोकि "भगवत् कृपा के लिये तीर्थ" की अर्ध सामतीय सस्कृति के प्रतिनिधि थे। इसलिये नये औद्योगिक नगरो मे इनमे तथा इनके शुद्धाचारवादी पडौसियो मे दुर्भावना की खाई चौडी ही होती गयी।

किन्तु इगलैड के बहुत से जिलो मे राजा के समर्थक एग्लिकन थे और इस प्रकार से निश्चित रूप से प्रोटेस्टेट थे, इनमे से बहुत से लॉड के विरोधी थे। इनमे से एक सर एड्मड वर्ने था जोकि राजा का प्रमुख प्रतिनिधि था और जो अपने स्वामी के लिये एजहिल मे बलिदान हुआ किन्तु जिसने घोषणा की कि "मेरे मन मे बिशपो के प्रति कोई सम्मान नही है, जिनके लिये कि यह सघर्ष चल रहा है।"

सामान्य रूप से, जहा पिछली एक शताब्दी के आर्थिक तथा सामाजिक परिवर्तनो के प्रभाव अल्पतम थे वहा राजतन्त्र सर्वाधिक सशक्त था। ग्रामो तथा राजधानी से सुदूरवर्ती मडियो मे, जिनका सागरपारीय व्यापार से कोई सबध नही था, राजा तथा

चच के प्रनि पर्याप्त श्रद्धा शेष थी। इसके विपरीत, ऐसे प्रदेशो मे, जहा नवीन आर्थिक परिवर्तन काफी प्रगति कर चुके थे, पार्लियामेट तथा प्रोटेस्टेट धर्म का बहुत प्रभाव था उदाहरणत जैसे एलिजाबेथ कालीन महान् व्यापार-कपनियो से प्रभावित लडन मे, बन्दरगाहो मे (स्वय राजा के अपने गोदीबाडो मे भी) तथा नये औद्योगिक नगरो मे, जैसे टाउटन, और पैन्नाइनो के दोनो ओर की वस्त्र-उत्पादक घाटियो मे। ऐसे बडे ज़मीदार लोग, जिनके कि लडन के साथ, अथवा अन्य भी किसी औद्योगिक केन्द्र के साथ निकट व्यापार-सबध थे, धर्म तथा राजनीति दोनो मे प्रोटेस्टेटो की ओर अधिक झुके हुए थे। लडन का क्षेत्र, केन्ट, सर्रे तथा एस्सेक्स समेत, एकदम से पार्लियामेट के लिये जीत लिया गया था और यहा फिर कभी भी राजा-समर्थक अल्पमत अपना सिर ऊचा नही कर सका। यही पूर्वी एग्लिका के जिलो मे भी हुआ, जोकि 'पूर्वी सघ' के रूप मे सगठित किये गये थे और ओलीवर क्रामवेल के पुष्ट पजे मे थे। इस प्रदेश से एक ही सतति पूर्व अधिकाश शुद्धाचारवादी प्रवासी निकल कर नये इगलैड मे जा बसे थे, जहाकि अब बाईबल पढने वाले योमैनो मे क्रामवेल के समर्थक उत्पन्न हुए थे।

क्रामवेल स्वय एक अच्छे परिवार का था और लोकसभा के बहुत से अत्यन्त महत्वपूर्ण सदस्यो से सम्बन्धित था। वह एक जमीदार किसान था और हुटिग्टन के निकट उसकी एक छोटी सी सम्पत्ति थी जिस पर कि वह स्वय ही कार्य करता था। १६३१ मे उसने अपनी भूमि बेच कर सेट ईव्स के पास नदी के समृद्ध चरागाह ठेके पर ले लिये। अपनी पैतृक सम्पत्ति का यह विक्रय प्रदर्शित करता है कि वह भूमि को केवल आजीविकोपार्जन का साधन ही समझता था बजाय एक ऐसे पैतृक उत्तराधिकार के जो समाज तथा परिवार मे सम्मान का सूचक है। वह केवल एक अभिजात ज़मीदार होने के बजाय एक कर्मठ किसान तथा व्यापारी होना, तथा जन-साधारण के बीच मिलना-जुलना अधिक पसन्द करता था। और वास्तव मे विभिन्न प्रकार के स्थानीय झगडो मे वह इन साधारण लोगो का नेता बना। यह दृष्टिकोण उस व्यापारी कृषक वर्ग की विशिष्टता थी जोकि आगे जाकर शुद्धाचारवादी होने वाला था, जबकि पुराने ढर्रे के पश्चिमी जिलो के जमीदार लोग जिनका जीवन तथा समाज के प्रति दृष्टिकोण अपेक्षाकृत सामन्तवादी था, राज-भक्त थे। यहा तक कि शुद्धाचारवादी दल के बडे ज़मीदार भी, जैसे बैडफोर्ड तथा मैचेस्टर के अर्ल, अपनी सपत्तियो को आधुनिक पूजीवादी ढग से बढाना चाहते थे। शुद्धाचारवादियो को, चाहे वे उच्च वर्ग के, होते, व्यापार तथा कर्मठता को आदर्श मानना सिखाया जाता था। राज-भक्त लोग सामान्यत अपेक्षाकृत आराम-पसन्द तथा आमोद-प्रमोद मे रुचि लेने वाले थे।

इसलिये गृह-युद्ध एक सामाजिक युद्ध नही था बल्कि एक ऐसा सघर्ष था जिसमे दल-विभाजन राजनैतिक तथा धार्मिक विवादो को लेकर उत्पन्न हुआ था, यद्यपि इनकी विभाजक-रेखा सामाजिक विभाजनो के अनुसार थी। गृह-युद्ध के बाद के वर्षों मे,

प्रोटेस्टेटो की पार्लियामेट के काल मे (१६४९-१६६०), वर्ग-सघर्ष और भी अधिक स्पष्ट हो गया। जमीदार वर्ग प्रोटेस्टटवाद तथा उसके नेताओ के विरुद्ध हो गया। इस बीच, पद और सम्पत्ति से निरपेक्ष, मानव की समता के प्रजातात्रिक विचारो ने उस युग की राजनैतिक घटनाओ को प्रभावित किया। किन्तु ये 'ममतात्मक' विचार राजनैतिक अधिक थे, सामाजिक कम। "नव्य आदर्श सेना" के नेताओ मे सिद्धान्त-प्रतिपादको ने पार्लियामेट (समन्) के लिये मतदान का अधिकार बालिग मात्र को देने का समर्थन किया था किन्तु सम्पति के समान वितरण का सिद्धान्त प्रतिपादित नही किया। केवल विस्टेले के नेतृत्व मे खनिक मजदूरो के एक सम्प्रदाय ने यह दावा किया कि इगलैंड की धरती इगलैंड की जनता की है और जमीदार केवल उसके अपहर्ता है। इन लोगो को सैनिक नेताओ ने तुरन्त दबा दिया। खनिको ने राजा की हत्या करने वाली सरकार को चेतावनी दी थी कि राजनैतिक क्रान्ति तबतक स्थायी नही होगी जबतक कि इसे सामाजिक क्रान्ति का आधार नही मिलेगा। और उनका यह कथन ठीक ही था, जैसाकि शीघ्र ही बाद पुन स्थापना ने यह सिद्ध कर दिया।

यहा तक कि राजनैतिक प्रजातन्त्र का विचार तक विजयी सेना के आमूल परिवर्तनवादियो तक ही सीमित था। सामान्य जनता मे इस दिशा मे कोई प्रगति नही हुई। यदि उस समय व्यापक स्तर पर निर्वाचन किया जाता तो उसमे राजा-समर्थको की विजय होती।

यद्यपि यह ठीक है कि बडी जमीदारिया प्रजातात्रिक आधारो पर छोटे खेतो के रूप मे खडित नही हुई, किन्तु कुछ समय के लिये कुछ भूमि राजा के समर्थको के हाथो से शुद्धाचारवादियो के हाथ मे अवश्य गयी। ये भूमिया मुख्यत चर्च तथा राजा की थी जिनका विक्रय "क्रान्तिकारी सरकार" ने अपनी आर्थिक आवश्यकताओ की पूर्ति के लिये किया था, जैसेकि एक शताब्दी पूर्व विहारो की भूमिया राज्य द्वारा बेची गयी थी। अधिकाशत इनके क्रेता प्रगतिशील रिपब्लिकन दल के लोग थे। किन्तु पुन स्थापना के समय ये सब सपत्तिया राजा तथा चर्च के पास लौट आई और इस प्रकार से इन भूमियो से किसी नये अभिजात कुलो की स्थापना नही हुई। और वास्तव मे, सैनिको तथा व्यापारियो ने, जिन्होने कि इन भूमियो को एक दशाब्द तक अपने असुरक्षित अधिकार मे रखा था, इन ग्रामीण जमीदारो के रूप मे बसने का कोई प्रयत्न ही नही किया। ये भूमिया उन्होने मुख्यत व्यापारिक दृष्टि से खरीदी थी।

और फिर, बहुत कम भूमिया एक से दूसरे हाथो मे गई थी। राजा-समर्थक लोगो से जिलो का शासन छिन गया था और उन्हे अपनी इस वफादारी के लिये दड भुगतना पडा। किन्तु ये जुर्माने काफी कठोर होने पर भी इनकी अदायगी लकडी काट कर, ऋण लेकर, खर्च घटा कर तथा परिवार और मित्रो के साथ अन्य अनेक प्रकार

मे प्रबन्ध कर, कर दी गयी थी,[1] क्योकि सामन्त-जमीदार लोग अपनी भू-सपत्तियाँ बनाए रखने के लिये बहुत बडे बलिदान करने को तैयार थे। सत्रहवी शताब्दी मे अनेक मध्यप्रदेशीय जिलो मे पूर्ण स्वामित्व वाली भूमियो विषयक विस्तृत अनुसन्धान से पता चलता है कि पार्लियामेट के शासन म भूमि के स्वामित्व मे बहुत कम परिवर्तन हुए। वास्तव मे पुन स्थापना के बाद उस काल की आर्थिक परिस्थितियो के कारण छोटी जमीदारियो का अधिक क्रय-विक्रय हुआ था। किन्तु यह भी पूरी तरह से सभव ह कि पार्लियामेट-शासन के जुर्मानो ने कुछ छोटे जमीदारो को स्थायी रूप से कठिनाई मे डाला हो और अगली पीढी मे उनके विक्रय मे ये कारण बने हो।

जो भी हो, यह सही प्रतीत नही होता, जैसाकि बहुत बार समझा गया है, कि चार्ल्स द्वितीय के राज्य-काल के व्हिग लोग एक नये प्रकार के जमीदार थे जिनका अभ्युदय पार्लियामेट के शासन-काल मे हुआ था। पुरानी जमीदारी की व्यवस्था को काफी अपमान तथा विपत्तियो का सामना करना पडा था, किन्तु उसका उन्मूलन नही हुआ था। जब १६५४ की पतझड मे राजा-समर्थक दैनदिनी-लेखक (डायरिस्ट) जोन ईवलिग ने मध्य प्रदेश स्थित अपने ग्राम-वासी मित्रो के घरो का दौरा किया तब उसने बहुत से अभिजात जमीदारो की सपत्तियो को फलते-फूलते पाया। उसने उनके स्वामियो के नाश अथवा अनुपस्थिति की कोई चर्चा नही की है, न स्वामित्व-परिवर्तन का ही कोई उल्लेख किया है।

वास्तव मे, सामन्त वर्ग जमीदारो की अपेक्षा अधिक ह्रासोन्मुख था, क्योकि शुद्धाचारवादियो द्वारा राजा की हत्या के काल के बाद उनका शायद ही कोई घराना पुन प्रतिष्ठित हुआ होगा। साधुओ तथा सैनिको के शासन के नीचे इगलैड के लार्डों (सामन्तो) का कोई महत्व नही रहा। डोरोथी ओस्बर्न ने, जोकि बहुत समझदार और प्रसन्न स्वभाव की थी, अपने भतीजे के एक लडकी के साथ, उसके एक अर्ल की लडकी होने के कारण, विवाह करने पर टिप्पणी की थी कि वह उसकी मूर्खता थी, जो कि "मेरे ख्याल मे एक बहुत सुन्दर भ्रम है किन्तु जिसमे कोई अर्थ नही है, क्योकि उसका अर्ल की लडकी होना उसके व्यक्तित्व मे कुछ वृद्धि नही करता और, यदि कुछ यह ऐसा करता हो भी तो भी आज इसका कोई मूल्य नही है।" निस्सदेह पुन

---

[1] चार्ल्स प्रथम के अत्यन्त सम्पन्न और वफादार समर्थको मे से एक साउथेम्प्टन के अर्ल को (जोकि ब्लूम्सबरी की सम्पत्तियो का स्वामी था, जो सपत्तिया कि पीछे उसकी पुत्री, वेशल का विवाह रसल परिवार मे हो जाने से इस परिवार के पास चली गयी) ६४६६ पाउड जुर्माना हुआ था, जो कि उसकी सम्पत्ति का दसवा भाग था। उसने यह दे दिया और कुछ समय के लिये वह अपनी ग्राम-स्थित सपत्तियो मे चला गया, और पुन स्थापना के समय उसका एक अत्यन्त वैभवशाली सामन्त के रूप मे पुन. अभ्युदय हुआ।

स्थापना के 'अच्छे युग' ने अर्ला का खोया सम्मान पुन प्रतिष्ठित किया और उनकी लडकियो के साथ विवाह करने की अधिक व्यापक महत्वाकांक्षा को भी दोबारा जन्म दिया।

दूसरी ओर पार्लियामेंट की सेनाओ की विजय के बहुत से महत्वपूर्ण परिणाम पुन स्थापना के बावजूद समाप्त नही हुए। इनमे से एक था, ऊँची राजनीति मे व्यापारियो तथा लंडन की शक्ति की वृद्धि। दूसरा था, प्रतिस्पर्धियो पर आग्ल साधारण कानून की विजय।

ट्यूडरो के काल मे राजकीय सर्वोच्चाधिकार को पुष्ट करने के लिये तथा उस युग की वास्तविक आवश्यकताओ को पूरा करने के लिये स्वतत्र-न्यायालयो की शक्ति तथा सख्या मे बहुत वृद्धि हुई, और ये न्यायालय साधारण कानून की तनिक भी परवाह न करके अपनी ही कानून-व्यवस्था को लागू करते थे। किन्तु जिस पार्लियामेंट ने महान् अग्रेज वकील एड्वर्ड कोक के परामर्श से जेम्स तथा चार्ल्स प्रथम का विरोध किया था उसने साधारण कानून की प्रमुखता को स्थापित करने का पूर्ण प्रयत्न किया, और वह १६४१ मे विधान द्वारा इसे लागू करने मे सफल भी हुई। उस समय स्टार-चैम्बर, एक्लेसियास्टिकल कोर्ट आफ हाई कमीशन तथा वेल्स और उत्तर की न्याय-सभाओ के अधिकार समाप्त कर दिये गये। एड्मिरेल्टी न्यायालय को पहले ही महत्वपूर्ण व्यापारिक कानून के विकास के रूप मे साधारण कानून का नियत्रण स्वीकार करने को बाध्य कर दिया गया था।

इस प्रकार से इगलैंड की न्याय-व्यवस्था खड-खड होने से बच गयी। एकमात्र जो द्वैत बचा था वह था चासरी न्यायालय की स्वतत्रता। किन्तु वह भी अब राजकीय सर्वोच्चाधिकार का साधन नही रहा और न्यायाधीश द्वारा निर्मित कानून का पूरक मात्र बन गया—सामान्य न्यायालयो मे कार्य मे लाये जाने वाले सिद्धान्तो मे अत्यन्त बुद्धिमत्ता से जुडा हुआ।

साधारण कानून की विजय ने इगलैंड मे अन्य देशो मे बहुत पहले उत्पीडन को समाप्त कर दिया और अभियोग के बाद सरकार के राजनैतिक शत्रुओ के साथ अपेक्षाकृत अच्छा व्यवहार करने की प्रथा के लिये इसने पथ प्रशस्त किया। मुख्य बात यह है कि परमाधिकार न्यायालयो के ऊपर साधारण कानून की विजय ने सर्वोच्चता की मध्ययुगीन अवधारणा के उस रूप की रक्षा की जिसके अनुसार कानून को सरकार की सुविधानुसार एक ओर नही रखा जा सकता, और जिसके अनुसार केवल पूरी पार्लियामेंट ही उसमे परिवर्तन कर सकती है, राजा अकेले ही उसमे परिवर्तन नही कर सकता। वास्तव मे यह महान् सिद्धान्त, कि कानून प्रशासन से ऊपर है, कामनवेल्थ (पार्लियामेंट के शासन) तथा प्रोटेक्टोरेट काल मे भग हुआ था। किन्तु पुन स्थापना के समय इसका पुनरुज्जीवन हुआ और १६८८ की क्रान्ति ने इसे और पुष्ट किया।

वास्तव मे यह क्रान्ति जेम्स द्वितीय के विरुद्ध हुई थी और केवल यह स्थापित करने के लिये ही हुई थी कि कानून राजा से ऊपर है। कानून की सर्वोच्चता का यह मध्य-युगीन सिद्धान्त, जोकि कानून को प्रशासन की इच्छा से स्वतन्त्र कुछ मानता है, यूरोप के अन्य देशो मे लुप्त हो गया था किन्तु इगलैड मे यह हमारी स्वतन्त्रताओ का सहारक बन गया और इसका आग्ल समाज तथा उसके विचार पर गम्भीर प्रभाव पडा।

कामनवैल्थ तथा प्रोटैक्टोरेट के काल मे वैधानिक कानून क्रान्ति के पैरो तले कुचला जा रहा था, किन्तु उस काल मे भी साधारण कानून तथा वकील बहुत शक्ति-सम्पन्न थे, दुर्भाग्यवश इतने शक्ति-सम्पन्न कि वे कानून मे सुधार की जनता की उत्कट माग को भी पूरा होने से रोक सके। क्रामवेल ने इस आवश्यक सामाजिक माग को पूरा करने का भरसक प्रयत्न किया, किन्तु वह इसमे सफल नही हो सका। वकील इतनी सख्या मे थे कि वह उनका शासन करने मे असमर्थ था। वह भी पूरी तरह से तानाशाह (डिक्टेटर) नही था सैनिक एक ओर और वकील दूसरी ओर उसका समर्थन और नियन्त्रण दोनो करते थे। जब पुनस्स्थापना के समय सेना को भग कर दिया गया तब वकील एकमात्र प्रभावशाली वर्ग हो गया।

यह अनुमान करना उचित ही होगा कि १६४० और १६६० के बीच जमीदार-प्रासादो की रचना बहुत अल्प मात्रा मे हुई। किन्तु गृह-युद्ध से पूर्व के दो शान्त दशाब्दो का वातावरण, सब मिला कर, बडे और छोटे सब प्रकार के जमीदारो के लिये एक सम्पन्नता का समय था। इन लोगो ने इगलैड के ग्राम-प्रदेश को निरन्तर अधिकाधिक सुन्दर और विशाल भवनो और प्रासादो से समृद्ध करने की एलिजाबेथीय परम्परा को निरन्तर जारी रखा।

नव-निर्मित घरो के रूपाकारो मे कुछ परिवर्तन हो रहे थे। विशाल, तथा बालो की छतो वाले हाल कमरे, जोकि सेक्सनो से एलिजाबेथ के युग तक ग्राम-प्रासादो के एक अनिवार्य भाग थे, अब अप्रचलित हो गये। अब एक-मजिले 'खाने के कमरे' तथा 'बैठने के कमरे' बनने लगे थे, क्योकि अब पुराने हाल के विभिन्न प्रयोजन साधारण आकार के विभिन्न कमरो मे विभक्त कर दिये गये थे। पुराने ढग के जमीदार-गृह (प्रासाद) के केन्द्रो मे बने आगन, जहाँकि गृह-जीवन का अधिकाश भाग बीतता था, जैकोबीय योजनानुसार बने निवासो मे या तो छोटे हो गये थे अथवा लुप्त ही हो गये थे। आगन अब घर के बीच मे न बनाये जाकर पीछे की ओर बनाये जाते थे।

पुराने ढग के कगूरे तथा भित्ति-स्तभ बाह्य भाग को अलकृत करते थे। अन्दर सीढिया चौडी होती थी तथा कटहरे की छड पर खुदाई का काम किया रहता था। दीवारो पर जैकोबीय ढग के दिलहे पच्चीकारी तथा भित्ति-चित्रो का स्थान ले रहे थे, यद्यपि अत्यन्त उत्कृष्ट प्रकार की पच्चीकारी का काम अब भी होता था और उसका सम्मान भी था। कला-प्रिय चार्ल्स प्रथम तथा उसके महान् सेवक अरुडल के अर्ल के

अनुकरण पर फ्रेम किये हुए चित्र तथा सगमरमर की मूर्तियो का प्रचलन बहुत बढ रहा था। रयू-बश और वान्डाइक ने, तथा डच चित्रकारो ने, अपने आग्ल सरक्षको के लिये बहुत महत्वपूर्ण कार्य किये।

छतो पर प्लास्टर का कार्य अत्यधिक अलकारपूर्ण था। फर्शो पर रशो (विशेष घास) का स्थान गलीचे और दरिया ले रही थी, जिसका अर्थ था खटमलो का कम होना और परिणामत इनके साथ आने वाले प्लेग के कीटाणुओ का कम होना। अच्छे गलीचे अब या तो इगलैंड ही मे बनते थे या फिर कुछ तुर्की तथा ईरान मे भी मँगाए जाते थे। किन्तु १६४५ मे वर्ने ने क्लाइडन मे खाने तथा बैठने के कमरो के लिये चमडे के गलीचे बनाए, हरे रग के मखमली गद्दो वाला फर्नीचर, तथा पीले पत्तरे से मढी टागो के अग्र भाग वाले स्टूल तैयार करवाए अधिकाश घर के लोग स्टूलो पर ही बैठते थे, कुर्सिया बडो तथा सम्मानित अतिथियो के लिये रखी जाती थी। तिरछी टागो वाले मेज का स्थान चित्रकारी की हुई सीधी टागो वाले मेज़ ले रहे थे। उस काल मे बचे हुए भव्य खुदाई के काम वाले देवदारु की लकडी के बहुत से पलग तथा अन्य फर्नीचर आज भी उपलब्ध होते है।

दरवाजे से बाहर, इगलैंड के लिये उद्यानो की दृष्टि से यह एक महान् युग था, और उसके बाद से यह सदैव वैसा रहा है। बेकन ने कहा था कि "सर्व शक्तिमान ईश्वर ने सबसे पहले एक बाग लगाया था।" एलिजाबेथ-युग के अन्तिम भागो मे तथा स्टुअर्ट युग के आरभिक भाग मे फूलो के बाग सब्जियो के बागो से स्वतत्र रूप लेने लगे (जिसमे कि अब अमरीका से आयातित आलू और जुड गया था)। और पुन, हरियाली से घिरे भागो वाले सेबो के बाग थे, और सघन निकुज थे

जिनमे सूर्य से पके हनीस फल,

सूर्य को भीतर नही आने देते।

फूलो का बाग सीधा और चौकोर बनाया जाता था और इसमे मार्ग चौडे रखे जाते थे। यह बाग घर से अच्छी तरह से दिखाई देता था। बाक्स तथा लेवेंडर पौधो की कटाई-छँटाई कर उनसे सजावट के लिये आकृतिया बनाई जाती थी।

इस समय इगलैंड मे बहुत से नये वृक्ष, पौधे तथा फूल लाये गये जिनमे से कुछ हैं—क्राउन इपीरियल, ट्यूलिप, लेबर्नम, नेस्टुर्टियम, सदाबहार (एवर लास्टिग) लव-इन-ए-मिस्ट, आनेस्टी ट्यूलिप वृक्ष, रेड मेपल। बागबानी तथा फूलो का शौक, जोकि अब इगलैंड की एक मुख्य विशेषता हो गया था, एक सीमा तक ह्यूग्नॉट शरणार्थियो के कारण इगलैंड मे आया था। ये शरणार्थी निम्न प्रदेशो से आये थे और नॉर्विच तथा लडन मे आकर बस गये थे। स्टिलफील्ड के ह्यूग्नॉट जुलाहो ने इगलैंड मे प्रथम उद्यान-सस्थाओ का आरम्भ किया। चार्ल्स प्रथम के राज्यकाल मे "पैराडिसस" जैसी

पुस्तकों ने जिनमे फूलो की प्रशसा तथा वर्णन किया गया था, बाग लगाने की कला सिखाई तथा उसे जन-प्रिय बनाया। (इलीनर रोह्डे, स्टोरी आफ दि गार्डन, १९३२)।

इस काल के फूलो के अतिरिक्त, जोकि अब भी हम उगाते है, हमारे पूर्वजो मे बूटिया लगाने का शौक भी था, जोकि अब उस सीमा तक नही बचा है। बूटियो का प्रयोग औषधियो तथा आग आदि बनाने मे बहुत होता था। फूलो तथा बूटियो से केलि-कुज तथा घडिया भी बनाई जाती थी।

उस काल के, जिसका अन्त शुद्धाचारवादियो तथा राजा के समर्थको के बीच क्रूर राजनैतिक सघर्ष के साथ हुआ, 'आदर्श पारिवारिक जीवन का" विवरण हमे "वर्ने परिवार के स्मृति-लेखो" मे मिलता है। बक्स प्रदेश के क्लेडन नगर मे उनका घर शुद्धाचारवादियो तथा राजा-समर्थको की जीवन-विधि मे जो भी सर्वोत्तम था उस सब का प्रतिनिधित्व करता था, जिसे कि सम्मिलित रूप से सर एड्मड वर्ने तथा उसका पुत्र राल्फ अपने आचरण मे लग रहे थे, जबतक कि राजा की हठवादिता तथा उसके शत्रुओ की हिसा ने इन दो मिताचारी व्यक्तियो को भी गृह-युद्ध मे विरोधी पक्षो मे सम्मिलित होने को बाध्य नही कर दिया। किन्तु तब भी उनमे न तो परस्पर के लिये प्यार ही कम हुआ था और न उस भयानक समय मे अपने परिवार तथा घर को बनाए रखने तथा उसकी सपत्तियो को अक्षुराण रखने की प्रवृत्ति ही कम हुई थी।

चार्ल्स प्रथम के राज्य मे हमे क्लेडन के वर्ने कुल का जो चित्र मिलता है उससे ज्ञात होता है कि इगलैंड के ग्रामीण घराने न केवल जागीरो की व्यवस्था के ही केन्द्र थे बल्कि गृह-उद्योग के भी केन्द्र थे, जिसमे कि परिवार के सदस्यो के साथ-साथ भृत्यो की बडी सख्या तथा परिवार के स्त्री और पुरुष के आश्रित भी भाग लेते थे।

वर्ने कुल का इतिहास-लेखक लिखता है 'यह एक महान घराना अपनी आवश्यक वस्तुओ की पूर्ति अधिकाशत स्वय ही करता था। ये लोग स्वय ही शराब बनाते थे और भोजन पकाते थे, स्वय ही बिलोते तथा आटा पीसते थे, वे अपनी भेडो तथा गायो को स्वय ही पालते तथा मास के लिये उन्हे काटते थे और स्वय ही अपने कबूतरो तथा मुर्गियो को पालते थे। घर पर ही वे अपने घोडो के खुरिया लगाते थे, शहतीरो को चीरते थे तथा लोहे के अनगढ औजार बनाते थे। इस प्रकार से चक्की, कसाई-घर, लौहार, बढई तथा रग-साज की दुकानें, शराब आदि बनाने के स्थान, बडी-छोटी सब प्रकार की इमारती लकडियो से भरे लकडी-घर, अनेक प्रकार से कटे-गढे पत्थर, लोहे तथा लकडी के टुकडे, धोबी-घर, दूध मथने की अश्व-चालित बडी मशीन वाली डायरी, सब प्रकार के ढोरो और सूअरो के लिये शालाए, सेबो तथा अन्य जडियो-बूटियो के रखने के स्थान, इन सबसे पता चलता है कि आत्मनिर्भरता उस समय कितनी पूर्ण थी।

कबूतरों के बठने के स्थान तथा मछलियो से भरे तालाब, तथा जल-पक्षियो के तालाब भी कम महत्वपूर्ण नही थे तथा बाज अथवा लम्बी बन्दूक द्वारा मारे गये पक्षी सर्दियो मे तो बहुत ही मूल्यवान थे, क्योकि अन्यथा उन दिनो एकमात्र उपलब्ध मास वही होता था जो पतझड के दिनो मे अचार के रूप मे सुरक्षित रखा जाता था। चमडी के रोग ऐसे नमकीन भोजन के अधिक प्रयोग के परिणामस्वरूप ही होते थे। क्योकि सर्दियो की साग-सब्जियाँ कम थी, आलू तथा सलाद अभी केवल आरम्भिक अवस्था मे थे।

"सुई तथा चर्खे के कार्य स्त्री की शिक्षा के बहुत आवश्यक अग थे, और क्योकि परिवार के कुछ अपेक्षाकृत निर्धन सम्बन्धी बडे घरो मे स्त्री-सहायक के रूप मे रहते थे, इसलिये वे घर के इन कार्यो के सम्पादन मे उपयोगी होते थे। वर्ने-परिवार से सम्बद्ध ऐसी पाच-छ स्त्रियो के पत्र मिलते है जो अच्छे परिवारो की थी, उनका अच्छा पालन-पोषण हुआ था और उतनी ही सुचारु रूप मे शिक्षित थी जितनी उनकी पडौसी स्त्रिया। ऐसा प्रतीत होता है कि ये अत्यन्त सम्मान के साथ भी रह रही है।

क्लेटन मे घर की स्त्रियो के कार्य थे ऊन तथा सन को कातना, सुई का कार्य, कढाई, उत्तम भोजन बनाना, अचार डालना, डाक्टर के आदेश अथवा परिवार की परम्परा के अनुसार बूटियो से औषधिया बनाना और फलो के शर्बत तैयार करना—जोकि पुन स्थापना काल मे, चाय तथा काफी के आने से पहले, जीवन के महत्वपूर्ण अग थे।

श्रीमती वर्ने के दस बच्चे बडे हुए। यह बडा तथा स्निग्ध परिवार, जिसमे कि कोई भी निष्कर्मण्य नही था अनुपस्थित सदस्यो के साथ लम्बे पत्र-व्यवहार के लिये समय निकालता था। वर्ने परिवार के पुरालेखागार मे एक ही वर्ष मे लिखे चार सौ पत्र उपलब्ध है। सर एड्मड तथा उसके बच्चे प्राय राजा अथवा पार्लियामेट के कार्यो से अथवा व्यक्तिगत या पारिवारिक कार्यो से बाहर यात्राओ पर जाते रहते थे। वे घोडो की पीठो पर अच्छी गति से कच्चे मार्गो पर भी जाने के अभ्यस्त थे। १६३६ मे सर एड्मड ने राजा के साथ र्बविक से लदन तक की २६० मील की यात्रा चार दिनो मे तय की थी। पारिवारिक सवारी की चाल बहुत धीमी थी। यह एक स्प्रिगो से रहित, चमडे के पर्दो वाली अत्यन्त असुविधाजनक सवारी थी, जिसका उपयोग केवल ऐसे पगु पुरुष तथा सुकोमल स्त्रिया ही करती थी जो घुडसवारी के अयोग्य थी।

कामनवेल्थ काल मे (पार्लियामेट के शासन मे) सार्वजनिक सवारियो का प्रचलन बढ रहा था। किन्तु ये अभी तक बहुत महगे और मद चलने वाली थी। १६५८ मे ज्यॉर्ज इन, एल्डर्सगेट तथा लडन से विभिन्न नगरो को निम्नलिखित कियायो पर जाती थी—

"सालिसबरी को, दो दिन मे, बीस शिलिग मे ।
एक्सीटर को चार दिन मे, बीस शिलिग मे ।
प्लाईमौथ को पच्चास शिलिग मे,
और डर्हम को ५५ शिलिग मे (पहुँचने के समय की कोई गारटी नही),
और प्रत्येक शुक्रवार को वेकफील्ड की ओर,
चार दिन मे, चालीस शिलिग मे।"

सब प्रकार के घोडो का पालन तथा क्रय क्लेडन केवर्ने लोगो की जीवन-विधि का एक आवश्यक अग था। इगलैड के उस भाग मे सवारी तथा हल दोनो मे घोडे बैलो का स्थान ले रहे थे। सर एड्मड वर्ने के सवारी के घोडे फैनलैड स्थित अपनी जागीर मे 'सस्ते भाव मे मास लाने के लिये' भेजे जाते थे।

जब हम चार्ल्स प्रथम के राज्य मे वर्ने परिवार की जीवन-विधि तथा पत्रो की तुलना हेनरी षष्ठ के काल के पास्टनो से करते है तब हम इनमे एक सामान्य अनुरूपता देखते है, किन्तु हम उच्चत्तर नैतिक प्रवृत्तियो तथा परम्पराओ को, पारिवारिक सम्बन्धो मे अधिक कोमलता तथा कम कठोर दृष्टिकोण को, तथा पडोसियो के प्रति कर्तव्य भावना को भी इनमे पाते है। ग्राम-जीवन मे शान्ति तथा व्यवस्था को, और सभवत अन्य परिवर्तनो को भी, दीर्घ परपरा ने जीवन को बहुत शिष्टता-पूर्ण तथा न्याय-प्रिय बना दिया था। सर टोबी मैट्थ्यू ने, जोकि चार्ल्स प्रथम का एक दरबारी था और जो अन्य बहुत से देशो को उतना ही सम्यक् रूप से जानता था जितना कि अपने देश को, और रोमन कैथोलिक धर्म को स्वीकार किये होने के नाते जो अपने देश के लोगो को आलोचनात्मक और निष्पक्ष दृष्टि से देख सकता था, अपने पत्र-सग्रह की भूमिका मे लिखा है कि "इगलैड के लोगो के पास 'सत्स्वभाव नामक चीज का एकाधिकार सा था' और कि इगलैड एकमात्र ऐसा इडीज है जहा कि इस शुद्ध स्वर्ण की अथाह खान विद्यमान हे। कोई भी जाति एक दीर्घ-स्थायी प्रतिशोध की नीच भावना से उतनी दूर नही मिलेगी जितनी अग्रेज जाति।" इन उत्तम गुणो को उस समय एक कठोर परीक्षा का सामना करना पडा जबकि गृह-युद्ध प्रत्येक व्यक्ति के अपने द्वार पर आ उपस्थित हुआ—एक ऐसा युद्ध जोकि अपने क्षेत्र तथा प्रभाव मे रोजेज के युद्धो से भी अधिक भयानक था, किन्तु जो कम स्वार्थपूर्ण तथा आर्थिक उद्देश्यो से लडा गया था।

अध्याय ९

पुनर्जागरण कालीन इंगलैंड
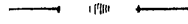
चार्ल्स द्वितीय, १६६०-१६८५; जेम्स द्वितीय, १६८५-१६८८ (क्रान्ति, १६८८-१६८९); विलियम तृतीय, १६८९-१७०२ ।

राजनैतिक दृष्टि से १६६० की पुन स्थापना से सैनिक अधिनायकवाद की 'आरोपित शक्ति' के स्थान पर राजा, समद और कानून की पुन स्थापना हो गई। धार्मिक दृष्टि मे इससे शुद्धिवाद (प्यूरिटैनिज्म) के स्थान पर पादरियो, प्रार्थना-पुस्तक और धर्म के प्रति अग्रेजी दृष्टिकोण की भी पुन स्थापना हो गई। परन्तु सामाजिक दृष्टि से—और प्रस्तुत पुस्तक मे हमारे लिए इमके सामाजिक पहलू का सर्वाधिक महत्व है—पुन स्थापना ने मभ्रान्तवशजो और जमीदारो को स्थानीय और राष्ट्रीय जीवन के प्रनिष्ठित नेताओ के रूप मे उनकी वशानुगत स्थिति मे पुन स्थापित कर दिया। अग्रेज नागरिक का जनविश्रुत 'स्वामी के प्रनि प्रेम', तथा 'जागीरदार और उसके सम्बन्धियो' मे उसकी समादरपूर्ण और प्रशसात्मक रुचि को पुन पूर्ण रूप से व्यक्त होने का अवसर मिलने लगा। वस्तुत, जैसा कि भविष्य मे सिद्ध होने वाला था, सामन्तो, जागीरदारो और जमीदारो तथा उनकी पत्नियो की सामाजिक महत्ता राजा की शक्ति की अपेक्षा अधिक पूर्ण रूप से पुन स्थापित हुई थी। आधरत अग्रेज लोग स्वभाव से दर्पपूर्ण थे, किन्तु दरबारी कार्य उनके स्वभाव के अनुकूल नही थे।

ससदीय शासन के युग मे, जिसके अपने लोकतान्त्रिक आदर्श और सैनिक यथार्थ-ताये थी, वशानुगत 'उच्चवर्ग' का बहुमन, जो अश्वारोही थे, निहित हो गया जिसका हमारे सामाजिक इतिहास मे कोई पूर्व उदाहरण नही है। एक वर्ग के रूप मे उनका विनाश नही हुआ था प्रत्युत् उन्हे दबा दिया गया था। न तो उनकी भूमि छीनी गई थी और न अर्थदडो द्वारा उनकी सपदा का एक अश स अधिक लिया गया था। किन्तु राष्ट्रीय और स्थानीय शासन के उनके स्थान और सामाजिक महत्ता को सफल सैनिको अथवा राजनीतिज्ञो ने कुछ समय के लिये छीन लिया था जो क्रान्ति-युग के तीव्र परिवर्तनो के अनुरूप अपने आपको ढाल चुके थे। उनमे से कुछ, जैसे अल्ग्रेनॉन सिडनी और ऐशले कूपर, अच्छे कुटुम्बो के व्यक्ति थे। कर्नल प्राइड और बर्क जैसे दूसरे लोग ऐसी चुस्त पोशाक वाले कप्तान थे जिन्हे क्रामवेल चाहता था और जिन्हे उसने अपने साथ देश का

शासन-सूत्र सभालने के लिये ऊँचा उठा दिया था। पुन स्थापना होते ही बहुत से शुद्धिवादी नेता या तो प्रभावहीन हो गए अथवा देश छोडकर भाग गए। मॉन्क, ऐशले कूपर कर्नल बर्क और ऐन्ड्रयू मारवेल जैसे दूसरे लोग ससदीय अथवा शासकीय पदो पर बने रहे। जब एक बार राजा की हत्या कर दी गयी तो भूतपूर्व शुद्धि-वादियों को निषिद्ध करना (गैर कानूनी घोषित करना) आवश्यक नही था। उनमे से केवल उन लोगो को निषिद्ध किया जाता था जो जिद्द करके शुद्धिवादी केन्द्रो मे जाते रहते थे।

चार्ल्स द्वितीय के पूर्ण शासनकाल मे धार्मिक विद्रोहियो का "क्लैरेण्डॉन कोड" के कानूनो के अधीन रुक-रुक कर गभीरता से दमन हुआ। मुख्यतया नगर के रहने वाले मध्यम और निम्न वर्ग के लोग ही इस दमन के शिकार थे। उनमे से बहुत धनिक व्यापारी और उससे भी अधिक परिश्रमी दस्तकार थे। शीघ्र ही राजनयिको ने यह शिकायत करना शुरू कर दी थी कि इस धार्मिक प्रपीडन मे व्यापार ने गभीरता से हस्तक्षेप किया है। प्रपीडित लोगो मे बहुत कम लोग भूस्वामी सभ्रान्त जन थे। धनी भूस्वामियो मे शुद्धिवादी भावना उदारतावादी आन्दोलन मे (व्हिग दल मे) परिवर्तित हो गई थी जो शुद्धिवादी धर्म के बहुत अधिक कठोर अनुसरण मे अपनी सासारिक महत्वाकाक्षाओ को प्रतिबिम्बत करने से इनकार करते थे। व्हिग का एक साधारण प्रकार वह था जो शकालु शैफ्ट्सबरी अथवा कुख्यात व्हार्टन मे प्रकट होता था यद्यपि अश्वारोही दरबारियो और ससद के टॉरी नेताओ मे भी ये मनोवृत्तिया कम प्रचलित नही थी। फिर भी अनेक ऐसे व्हिग थे जो अच्छे ईसाई थे यद्यपि वे गिरजा-घरो मे कभी भी वे उच्चाधिकारी नही थे। रसेल और अन्य व्हिग परिवार ऐंग्लिकन प्रार्थना मे निष्ठायुक्त धार्मिकता से सम्मिलित होते थे। दूसरी ओर वे अपने निजी कार्यों के लिए पूजाकरो तथा बच्चो के लिए शिक्षको के रूप मे शान्त शुद्धिवादी पादरियो को नियुक्त करते थे। सभी लोगो के लिए दोनो प्रोटेस्टैंट धर्मो मे कभी-कभी पूर्ण भेद करना कठिन था।

पुन स्थापना के पश्चात् भूस्वामियो के वर्ग के सदस्यो की, जो शुद्धिवादी धार्मिक स्थलो पर जाते थे और उल्लघनकारियो के रूप मे प्रपीडन सहते थे, सख्या बहुत थोडी थी। ऐंग्लिकनवाद स्पष्टत उच्च वर्ग का धर्म अधिक पूर्णता से बन गया था। यह स्थिति एलिजाबेथ अथवा लॉड के समय मे नही थी। निश्चय ही अब भी कुछ रोमन कैथोलिक ग्रामीण सभ्रान्तजन थे, विशेषकर लकाशायर और नार्थम्बरलैण्ड मे। स्थानीय अथवा राष्ट्रीय शासन मे उनके हर प्रकार के भाग लेने पर कानूनी प्रतिबन्ध था, जिसे राजा कभी कभी उनके लाभ के लिए तोड सकने मे समर्थ हो जाता था। वैसे तो इगलैंड के सभ्रान्तवर्ग तथा उच्च वर्ग ऐंग्लिकन पूजा के प्रति सामान्य अनु-रूपता से सामाजिक दृष्टि से सगठित थे। इस समय के पश्चात पादरी-प्रदेश के

गिरजाघर की सवाए गिरजाघर म सुरक्षित स्थान पर बैठने वाले पुरुषो और स्त्रियो के विशेष सरक्षण मे थी। गिरज की पूजा मे सम्मिलित होने वाले जनसमूह मे अधिकाशत उनके आश्रित और गाव के किसान और मजदूर रहते थे। आगे की कई पीढियो तक रहने वाली ग्रामीण पूजा के सामाजिक पहलू का एक सुन्दर उदाहरण गिरजा मे सर रोगर डि कावर्ली सम्बन्धित कृति मे एडिसन ने निम्नलिखित शब्दो म दिया है —

"गिरजाघर जाने वाल एक अच्छे व्यक्ति के रूप मे मेरे मित्र सर रोगर ने अपने गिरजा के भीतरी भाग की सुन्दरता अपनी पसन्द की कई पुस्तको मे बढाई है। इसी प्रकार उन्होने अपने खर्च से प्रार्थना-मच को एक सुन्दर कपडे तथा सत्सग-मेज को घेरे से अलकृत किया था। बहुधा वे बताया करते थे कि अपनी सपदा का भार सभालने के समय बहुत से निवासी गिरजा मे कभी कभी आया करते थे। उन्हे घुटने टेकने और अनुक्रियाओ म शामिल होने के लिये सर रोगर ने उन सबको एक पीठ (स्टूल) तथा एक सामान्य प्रार्थना-पुस्तक दी थी। साथ ही उन्होने एक भ्रमणकारी गायक को नियुक्त कर लिया जो गाव-गाव म घूमकर लोगो को धार्मिक भजनो को सही ढग से गाने की शिक्षा देता था। चू कि गिरजा मे जाने वाले जन समूह के रोगर भूस्वामी थे अत वे उन्हे सदैव सुव्यवस्थित रखते थे और स्वय के अतिरिक्त किसी को सोने की आज्ञा नही देते थे। क्योकि यदि उपदेश के समय वे अचानक ऊघ जाते तो जागते ही खडे होकर चारो ओर देखते और यदि कोई दूसरा ऊघता होता तो या तो स्वय अथवा अपने नौकर को भेजकर उसे जगा देते।'

दूसरी ओर, सहिष्णुता और प्रपीडन के समय मे समान रूप से, प्रार्थना सभाओ मे विरोध प्रकट करने वाले जनसमूहो मे ऐसे लोग सम्मिलित थे जिन्हे अपनी स्वतत्रता पर गर्व था और जिन्हे यह महसूस करना रुचिकर लगता था कि गिरजा और उसका पादरी उनके है। कम से कम सामाजिक दृष्टि से वे जिओन मे सुरक्षित थे, वे भद्र-महिला और उसके मार्गरक्षक की अत्यन्त शकालु नजर से बच सकते थे। वेस्लेयान आन्दोलन तक विरोध प्रकट करने वाले प्रार्थना-समूह और सभाए बहुधा नगरो, विपण-कस्बो और औद्योगिक केन्द्रो तक सीमित थी यद्यपि बहुत से गावो मे क्वेकरो और बैप्टिस्टो के कुछ छितपुट परिवार रहते थे। जॉन बून्यान जैसे कुछ विरोध प्रकट करने वाले गरीब दस्तकार थे, दूसरे विशेषकर लदन और ब्रिस्टल मे धनिक व्यापारी थे जो प्रपीडन करने वाले भद्र भूपतियो को खरीद सकते थे। और ऐसे व्यापारी वस्तुत बहुधा जरूरतमन्द भद्रजनो को खरीद भी लेते थे जैसे ही उनकी भूमि पर बधक बढ जाते थे। अगली पीढी मे विरोध प्रकट करने वाले व्यापारी का बेटा स्वय ही भद्र भूपति और गिरजा का स्वामी हो जाता था। और फिर इससे अगली पीढी मे तो इस कुटुम्ब की महिलाए सभागृहो मे उपस्थित होने वालो अथवा व्यापार करने वालो के बारे मे निरादर से बाते करती थी।

इस प्रकार पुन स्थापना के समय अग्रेजो की धार्मिक श्रेणियो का सामाजिक स्वरूप रूढिबद्ध था और विक्टोरिया के काल तक वस्तुत अपरिवर्तित रहा।

धार्मिक आचरण मे यद्यपि उच्चवर्ग अधिकाशत एक सा था, राजनैतिक दृष्टि से यह व्हिगो और टोरियो मे विभक्त हो गया था। टोरियो की सख्या बहुत अधिक थी, वे धार्मिक विरोध (असहमति) को समाप्त कर राष्ट्र और ऐंग्लिकन चर्च को समानरूपी बना देना चाहते थे। किन्तु व्हिगो के पियँर और भद्रजन, जो एक योग्य और धनी अल्पसख्यक वर्ग था, कम से कम सभी प्रोटेस्टैटो के लिए सहिष्णुता के सिद्धान्त का उद्घोष करते थे। वे अपनी राजनैतिक शक्ति की पुष्टि औद्योगिक और व्यापारिक क्षेत्रो के शुद्धिवादियो से साठगाठ करके करते थे। ये शुद्धिवादी अनेक जिला खण्डो (बाराज) मे स्थानीय निकायो तथा ससद् के चुनावो को नियत्रित करने मे सक्षम थे। अपने पूर्वगामी कैवेलियरो की भाति टॉरी ऐसे समाज के खड थे जो ग्रामीण इगलेड के पुराने ढगो का अनुसरण अत्यधिक तन्मयता से करते थे। अपने राउडहेड पूर्वजो की ही भाति व्हिग अधिकतर भूस्वामी वर्ग के ऐसे सदस्य होते थे जिनका व्यापारिक लोगो और हितो से निकट का सम्पर्क था। इसलिए दीर्घकाल मे टॉरी नीतियो की अपेक्षा व्हिगो की नीतिया आर्थिक परिवर्तन की अनवरत प्रक्रिया से सफल होती थी क्योकि यह प्रक्रिया धीरे धीरे एक ऐसी कृषि और औद्योगिक क्रान्ति की गति को बढाती थी जिससे पुरातन ढगो का न्यूनतम शेष रह जाये।

पुन स्थापना का ससार, क्रामवेल के समय के इगलैंड मे धार्मिक मामलो मे जो अधिक दिलचस्पी थी, उससे कही आगे निकल गया था। जन-प्रतिक्रिया, जिससे शुद्धिवादियो को उखाड फेका, धार्मिक कम और ऐहिक अधिक थी। 'हुडिब्रास' ऐंग्लिकन दया का परिणाम नही था। वास्तव मे, अग्रेजो ने पुराने धर्म की स्थापना को अधिक सन्तोष से देखा, इसका प्रधान कारण यह था कि यह जीवन के साधारण अवसरो पर धार्मिक उत्साह से पूर्ण व्यवहार की कम स्थिर और प्रकट माग करता था। शुद्धिवादियो ने लोगो के लिए धर्म और भोजन मे कोई भेद न छोडा था जिससे उन्हे धर्म से वितृष्णा सी हो गई थी।

१६६० के पश्चात् एक शताब्दी तक शुद्धिवादियो का बहुधा बहुत क्रूर प्रपीडन हुआ जिसका कारण शुद्ध धार्मिक न होकर अधिकतर राजनैतिक और सामाजिक था। 'क्लैरेडन कोड' का उद्देश्य राउडहेड पार्टी को पुनर्जीवित होने से रोकना और ऐंग्लिकन और कैवेलियर्स के साथ हुए अन्यायो का प्रतिशोध लेना था। किन्तु प्रपीडन की भावना न तो धार्मिक थी और न धर्म विरोधियो को कुचलना। भूस्वामियो के कठोर कर्मचारी पडोसी कस्बे के प्रेसबिटेरियनो से घृणा इसलिए नही रखते थे कि वे काल्विन के सिद्धान्तो के अनुयायी थे बल्कि इसलिए कि वे नाक से बात करते थे और ईमानदारी से शपथ खाने के स्थान पर धर्म ग्रन्थो के उद्धरण देते थे और टोरियो की अपेक्षा व्हिगो के पक्ष मे मतदान करते थे।

१६६७ मे 'डि हेरटिका कबूरडो' नामक याचिका समाप्त कर दी गई और धर्म सबधी दोषारोपण के लिये मृत्युदड भी कानूनी तौर पर समाप्त कर दिया गया, किन्तु यथार्थ मे इगलैंड मे एकतावादियो (यूनिटैरियनो) के बाद किसी भी धर्म-विरोधी को मृत्युदड नही दिया गया था जिनको शेक्सपीयर के जीवनकाल मे जीवित जला दिया गया था। शुद्धिवाद अपनी प्रभुता के समय मे धार्मिक कट्टरता का पोषक नही था। क्रामवेल के काल मे इगलैंड मे अनेक सिद्धान्त और सम्प्रदाय प्रचलित थे और पुन स्थापन के राजाओ के काल मे भी सैकडो धर्म विद्यमान थे। जहा धर्मो की अनेकता और विभिन्नता हो तो वहा अधार्मिकता के लिए प्रपीडन की कम सभावना होती है। किन्तु प्रेस्बिटेरियनो के काल के स्काटलैंड मे, जहा जनसाधारण मे मतो का कम प्रभाव था और सिद्धान्तो मे कट्टरता की भावना अधिक लोकप्रिय थी, सन् १६६७ मे धर्मग्रन्थो की अधिकारिता का विरोध करने पर एक १८ वर्षीय युवक को फासी दे दी गई थी, जबकि गृह युद्ध के बाद किसी भी समय इगलैंड मे 'नास्तिकता' के लिये प्रसिद्ध किसी भी व्यक्ति के जीवन अथवा स्वतन्त्रता को कोई खतरा नही था यद्यपि उसे सामाजिक हानि उठानी पड सकती थी। इस शताब्दी की समाप्ति पर, एकतावादी (यूनिटैरियन) सिद्धान्त, जिनके लिए एक शताब्दी पहले लोग फासी पर लटका दिए जाते थे, सर्वोच्च भूपति सम्मान प्राप्त अग्रेज प्रेस्बीटेरियन धार्मिक सभाओ मे प्रचलित मिलते थे। फिर भी बहुत से अग्रगण्य राजनीतिज्ञ अधिक हर्ष के मनोभावो मे, स्वय राजा चार्ल्स भी, शकालु थे और उन सिद्धान्तो की खिल्ली उडाते थे।

यह तथ्य अधिक गभीर महत्व का था कि इगलैंड मे प्रयोगात्मक विज्ञान का तेजी से विस्तार हो रहा था। समत्-शासन के अन्तर्गत लदन तथा विश्वविद्यालयो मे रहने वाले वैज्ञानिको का एक समूह था जिनका कार्य पुनर्स्थापन के समय के राज-दरबार मे विश्रुत और अनुमोदित था। राजा चार्ल्स और उसके चचेरे भाई राजकुमार रुपर्ट के सरक्षकत्व मे रॉयल सोसाइटी की स्थापना हुई थी, राजकुमार रुपर्ट स्वय रासायनिक प्रयोग करता था।

अग्रेजो के व्यावहारिक मस्तिष्क को कृषि, उद्योग, सागर-यात्रा, चिकित्सा और इजिनियरिंग जैसी चीजो मे विज्ञान का उपयोग आकर्षित करता था। विज्ञान के उत्पादन के नियोजन के परिणामस्वरूप होने वाली औद्योगिक क्रान्ति के पूरे बल के साथ आने मे अभी एक शताब्दी का समय शेष था। किन्तु चार्ल्स द्वितीय के शासन काल मे पहले ही दैनिक महत्व के बहुत से विषयो का वैज्ञानिक भावना से अध्ययन किया जाता था और इस नई भावना का इगलैंड के शिक्षित वर्ग पर पहले ही बडा प्रभाव हो चुका था। राबर्ट बायल, आइजक न्यूटन और रॉयल सोसाइटी के प्रारभिक सदस्य धार्मिक व्यक्ति थे जो हाब्स के सन्देहास्पद सिद्धान्तो का खण्डन करते थे। किन्तु उन्होने ब्रह्माण्ड मे एक नियम के विचार तथा सत्य की खोज के लिये जाच-पडताल की वैज्ञानिक विधि से स्वदेशवासियो को परिचित करा दिया था। यह विश्वास किया जाता था

कि इन नीतियो से बाइबिल के इतिहास और करिश्मायुक्त धर्म के विपरीत कोई निष्कर्ष नही निकलेंगे। न्यूटन का जीवन मृत्युपर्यन्त इसी आस्था पर टिका रहा। किन्तु उसके सार्वभौमिक गुरुत्वाकर्षण के नियम और कलनगणित (कैल्कुलस) से सत्य के अन्वेषण की ऐसी विधिया विकसित हुई थी जिनका अर्थशास्त्र से कोई सबध न था। वैज्ञानिक अन्वेषण के प्रसार मे धार्मिक आस्था का स्वभाव प्रभावित हुआ यद्यपि उस समय तक उसका कलेवर अप्रभावित रहा। १६८८ की क्रान्ति के अनन्तर जो उदारतावादी-दया का युग आया उसकी तैयारी पुन स्थापना के इन बौद्धिक आन्दोलनो ने की थी।

चार्ल्स द्वितीय के शासन के प्रारभ मे स्प्रैट ने 'रॉयल सोसाइटी का प्रथम इतिहास' तथा उसके स्वरूप और उसके उद्देश्यो के सबध मे लिखा। कुछ वर्ष पश्चात् स्प्रैट रोकेस्टर का बिशप हो गया। इस व्यक्ति मे नये युग की उच्च प्रकार की विशेषता थी क्योकि उसका मस्तिष्क बडा विलक्षण था और उसकी राय मे राजनैतिक लोच थी। हाई चर्च का देवता जिस 'विद्वतापूर्ण और जिज्ञासु युग' मे रहता है उसकी सराहना करता है। वह रॉयल सोसाइटी के सदस्यो के व्यावहारिक ध्येयो की प्रशसा करता है क्योकि वे 'सम्पूर्ण मानवता की शक्तियो मे वृद्धि करने और त्रुटियो की दासता से मुक्त करने' की ओर उन्मुख है। वह देवता इन नये दार्शनिको के लिये अन्वेषण का विस्तृततम आयाम घोषित करता है, 'केवल ईश्वर और आत्मा के दो विषय उनके विचार क्षेत्र से बाहर थे।' शेष सभी विषयो पर स्वेच्छा से विचार कर सकते थे। ईश्वर की प्रशसा उसकी सृष्टि की योजना का अध्ययन कर की जा सकती थी। किन्तु विज्ञान के निष्कर्षो को धर्मशास्त्र मे पच्ची करने का कोई प्रयास नही किया जा सकता था। विद्यालयो के अध्यापको ने बहुत लम्बी अवधि तक और बडे कष्ट से इस परम्परा को बनाये रखा था। 'ईश्वर और आत्मा' को निश्चित मान लिया जाता था और उनके विषय मे सोचना निरर्थक माना जाता था। यद्यपि यह स्थिति बडी रूढिवादी थी किन्तु मूलत धार्मिक नही थी। ईश्वर अब सब कुछ नही रह गया था। ऐसे (वैज्ञानिक) अध्ययनो से शासित ससार मे मिथ्या विश्वासो का निर्मूल सिद्ध होना स्वभाविक था। और जो सम्मानपूर्ण स्थान अभी तक कविता को मिलता था, उसके स्थान पर गद्य को प्रस्थापित होना था। और यह भी सदिग्ध हो चला था कि क्या धर्म अपने पूर्व के गौरव को कभी बनाए रख सकेगा ?

स्प्रैट पुन स्थापन युग के उन श्रेष्ठ लेखको मे था जिन्होने सुप्रभ गद्य का निर्माण किया किन्तु वह एक मौलिक विचारक नही था और इस कारण से रॉयल सोसाइटी पर उसकी पुस्तक (१६६७) नये युग के मस्तिष्क की लाक्षणिक प्रतिनिधि थी। कुछ वर्षो पश्चात् लॉक और न्यूटन की भाति बिशप ने बाइबिल के समय के "प्राचीन करिश्मो" को विशेषाधिकारपूर्ण घटनाए माना जिनमे ईश्वर अपनी सृष्टि मे असामान्य हस्तक्षेप करता था। किन्तु प्रोटेस्टैट, ऐग्लिकन वातावरण मे आधुनिक करिश्मो की अपेक्षा

नहीं की जा सकती थी। स्प्रैट ने घोषणा की कि 'वस्तुओ का व्यापार शान्तिपूर्वक प्राकृतिक कारणो और प्रभावो के अपने स्वय के सत्य मार्ग पर चलना है।' अब यह शैक्सपीयर के समय का ससार नही था। इस दार्शनिक बिशप के लिए राजा ओबरेन और परियो की उसकी सेवा केवल असत्य मिथ्या कल्पना थी। जब क्रान्ति युग के अग्रेज 'पोप के करिश्मो' पर हसते थे तो इसलिए नही कि वे पाप मे सबधित थे किन्तु इसलिये कि वे करिश्मे थे। स्प्रैट ने अपने अति सहजविश्वासी देशवासियो को सचेत किया कि वे नाउनो, आगो अथवा बाढो के कारणो को पाप के लिए ईश्वर के निर्णय न माने। अन्तत भौतिक विज्ञानो का 'नया दर्शन' मनुष्य के लिए उपयोगी आविष्कारो की मा होगी जिससे उसका जीवन अधिक समृद्ध और सुविधापूर्ण बनेगा। 'जबकि प्राचीन दर्शन मे हमे केवल कुछ बन्ध्य पद और विचार मिल सकते है, तो नये दर्शन से हमे सभी प्राणियो के उपयोग की शिक्षा मिलेगी और उससे फलकारिता और बहुलता के सभी लाभो से हम सम्पन्न होगे।'

यद्यपि विज्ञान की प्रश्नमूलक भावना को बिशप का उत्साहपूर्वक आशीर्वाद मिला, फिर भी यह आश्चयजनक नही है कि शताब्दी के बाद वाले वर्षो मे जादू-टोना के दोषारोपणो के प्रति शिक्षित लोगो की प्रतिक्रिया उससे बहुत भिन्न थी जो कुछ समय पहले होती थी। न्यायाधीशो द्वारा ऐसी विचित्र कहानियो के साक्ष्य की बहुत सूक्ष्म और कभी कभी घृणापूर्ण ढग से समीक्षा की जाती थी। जनसाधारण मे इस विषय पर अब भी घोर मिथ्या-विश्वास फैला था किन्तु सभ्रान्त लोगो मे इसके प्रति बडी शकालु दृष्टि थी।

जादू-टोना करने वाली अभियुक्त स्त्रियो को अब दो लाभ उपलब्ध थे। इगलैंड अब एक ऐसा देश था जहा सामान्य कानून के अन्तर्गत अपराध स्वीकार करने के लिए प्रताडना वर्जित थी। मुकदमो के सचालन और न्याय देने मे न्यायाधीशो को लगभग उतना ही नियत्रण प्राप्त था जितना कि पचो को। अधिक साधारण रूप से, जादू-टोना करने की दोषी स्त्रियो का यह सौभाग्य ही था कि इगलैंड पर अब भी कुलीन-तत्रीय शासन था। बहुत से ग्रामीण क्षेत्रो की जनता को यदि सभ्रान्त जन नही रोकते थे तो वे उन्नीसवी शताब्दी तक जादूगरनियो को या तो डुबा देते थे अथवा जला डालते थे। किन्तु १७३६ मे, बहुत से सरल लोगो के रोष प्रकट करने के बावजूद ससद् ने पहले से उस प्रभावहीन कानून को समाप्त कर दिया जिसमे जादूगरनियो को मृत्युदड देने का प्रावधान था।

लोगो की राय मे जो क्रमश परिवर्तन हुआ, जिससे पहले शिक्षित वर्ग प्रभावित हुआ, उसका सबध हम यार्क के न्यायालय मे १६६७ मे हुए जादूगरनी के उस मुकदमे की सुनवाई से कर सकते है जिसका विवरण सर जॉन रेरेस्बी ने दिया था क्योकि वे स्वय वहा उपस्थित थे।

'एक अभागी बूढी स्त्री को डायन घोषित कर दिया गया था। मेरी अपेक्षा कुछ लोग, जो ऐसी चीजो पर अधिक विश्वास करते थे, उस स्त्री के विरुद्ध मिले साक्ष्य को प्रबल मानते थे। वह लडका, जो कहता था कि उस डायन ने उस पर जादू कर दिया था, न्यायालय मे ही उसे देखकर मूर्छित हो गया। किन्तु इस सब काण्ड मे यह देखा गया कि लडके मे कोई विकृति नही आई और न उसके मुह से झाग गिरा और न उसका मूर्छा धीरे धीरे उतरा वरन् वह एकदम दूर हो गया था। इस पर न्यायाधीश ने उस बूढी स्त्री को दोषमुक्त घोषित कर दिया।

फिर भी इस विचित्र कहानी को सुनाना उपयुक्त है। मेरा एक सिपाही क्लिफोर्ड टावर के द्वार पर रात्रि के ग्यारह बजे पहरे पर था जिस रात को डायन को दोषी ठहराया गया था। किले मे बहुत शोर सुनकर वह दालान मे आया। वहा पर उसे दरवाजे के नीचे से एक लपेटा हुआ कागज खिसकते हुए दिखा। चन्द्रमा के प्रकाश मे उसकी कल्पना ने पहले तो उसे एक बन्दर की शक्ल मे बदलते देखा, और फिर एक मुर्गा जो इधर-उधर चलने लगा। इस पर वह सिपाही जेल पर गया और उपजेलाधिकारी को पुकारा। उसने भी आने पर लपेटे हुए कागज को दरवाजे के नीचे से खिसकते हुए और नाचते हुए देखा। आश्चर्य की बात तो यह थी कि दरवाजे के नीचे बहुत ही सकरी साक थी। मुझे यह बात सिपाही और जेलरे दोनो ने स्वय बतलाई।"

यहा यह द्रष्टव्य है कि सर जॉन रेरेस्बी और न्यायाधीश दोनो पढे लिखे व्यक्ति थे फिर भी वे पचो, सिपाही और उपजेलाधिकारी की अपेक्षा अधिक सदेहशील थे।

विज्ञान को सरक्षरण प्रदान करने के लिए चार्ल्स द्वितीय और उसके दरबारी भरपूर प्रशसा के पात्र थे। इसी प्रकार शुद्धिवादियो की मूर्खतापूर्ण कट्टरता से जिस रगमच को दबा दिया गया था, और जो पुनर्जीवन के लिए सघर्षरत था, उसे सरक्षण प्रदान कर चार्ल्स शासन ने राष्ट्र की एक सामयिक सेवा की किन्तु सरक्षण के ढग की उतनी ही भरपूर प्रशसा नही की जा सकती।

पुनर्जीवित नाट्यशालाए उन नाट्यशालाओ मे, जिनमे पहले शैक्सपीयर के नाटक अभिनीत हुए थे, कई महत्वपूर्ण पहलूओ मे भिन्न थी। आज सम्पूर्ण नाट्यशाला पर छत होती थी। और मच को मोमबत्ती के कृत्रिम प्रकाश से दीप्त किया जाता था। उसमे पाद-प्रकाश, पटाक्षेप और चित्राकित दृश्य रहते थे। इसके अतिरिक्त गृह युद्ध के पूर्व की भाति स्त्रियो की भूमिका सुप्रशिक्षित लडके नही करते थे वरन् स्त्री अभिनेत्रिया ही। दर्शक अभिनेत्रियो को देखने मे उतनी ही उत्सुकता दिखाते थे जितनी नाटक को देखने मे। उस समय की एक प्रसिद्ध अभिनेत्री नेलगिन्ने थी जिसकी वैयक्तिक सजीवता और आकर्षण शायद उसकी व्यावसायिक पटुता से अधिक प्रभावी सिद्ध होते थे। एक विस्तृत सीमा मे यह एक नयी नाट्यशाला थी, और एक नयी नाटकीय कला भी, जिसमे कई नई सभावनाए और खतरे निहित थे।

बहुत वर्षों तक लडन मे केवल एक बिना छत वाली नाट्यशाला थी जो ड्रुरी लेन मे स्थित थी और जिसका नाम था थियेटर रायल। कभी कभी एक या दो अन्य नाट्यशालाए भी खुल जाती थी। किन्तु प्रान्तो मे कही भी स्थिर नाट्यशालाए न थी और भ्रमणकारी कपनिया बहुत कम और बडी बुरी हालत मे थी। पुर्सेल के काल मे सगीत एक राष्ट्रीय मनोरजन था किन्तु अभिनय नही। इस कला का अभ्यास बहुत से शौकिया लोग अपने घर पर ही करते थे। नाटक केवल लडन तक सीमित था और वहा भी इसमे जनसाधारण की रुचि नही थी वरन् केवल राजघराना और नगर के सभ्रान्त लोग इसमे रुचि लेते थे। पुन स्थापना के प्रारभिक वर्षो मे नाटक से केवल उपरोक्त वर्ग की विकृत रुचि का सतोष होता था।

उस समय सम्पूर्ण इगलैंड की अपेक्षा व्हाइट हाल और वेस्टमिस्टर मे एक कठोर-हृदयी और उदासीन क्षुद्रता व्याप्त थी। चार्ल्स द्वितीय के राज दरबार मे आने-जाने वाले लोग, जो पोप के षड्यन्त्र और पृथकतावादी अधिनियम के समय के प्रथम व्हिग और टोरी नेता थे, सभी प्रकार के गुणो को आडम्बर कहकर उनका उपहास उडाते थे और यह मानते थे कि किसी भी व्यक्ति को खरीदा जा सकता था।

"हर सिद्धान्त के बारे मे इतना स्पष्ट और निर्भ्रान्ति है कि उसका वार्षिक मूल्य केवल दो सौ पौड है। और यदि कोई सिद्धान्त पहले से सत्य सिद्ध हो गया है तो उसे पुन असत्य सिद्ध करने के लिए दो सौ पौड अतिरिक्त चाहिए।" (हुडिब्रास)

इसलिये वे अपने को बिक्री योग्य समझते थे। फिर भी दो हजार शुद्धिवादी पादरियो ने अपनी जीविका को छोडकर अन्तरात्मा के लिए प्रपीडन सहने का निर्णय किया। इस कार्य मे उनके समक्ष उनके शत्रुओ, ऐंग्लिकन पादरियो, का उदाहरण था जिन्होने बीस वर्ष पूर्व अपने धर्म का चरम रूप मे परित्याग करने की अपेक्षा अनेक यातनाए सही थी। शुद्धिवादी और ऐंग्लिकन पादरी, जिन्होने अपने पूर्व धर्म का त्याग कर जीविका की रक्षा करना अस्वीकार कर दिया था, कैथोलिक और प्रोटेस्टैंट पादरियो की तुलना मे दस गुनी सख्या मे थे जिन्होने ट्यूडरो द्वारा बार बार धर्म परिवर्तन की अवधि मे इसी प्रकार की यातनाए सही थी। अन्तरात्मा का अर्थ पुरातन की अपेक्षा अधिक था, कम नही। इगलैंड पर्याप्त सुदृढ था। किन्तु उसके राज-दरबारी और राजनीतिज्ञ सड गये थे। क्योकि स्वय राजा और कुलीनवर्ग की युवा पीढी अपनी शिक्षा और पारिवारिक जीवन के विघटन के कारण नैतिकता-हीन हो गए थे। उनकी इस स्थिति मे अन्य कारक भी सहायक थे, जैसे देशनिकाले और सम्पत्ति की जब्ती से उत्पन्न अपमानजनक निर्धनता, धर्म के नाम पर उनके साथ किए गए अन्याय की एक लबी अवधि, अनुबधो और शपथो को गैरजिम्मेदारी से बनाने और बिगाडने का निरन्तर दृश्य, और क्रान्ति तथा प्रतिक्रांति के सभी निकम्मे पहलू जिनके वे शिकार थे।

उन्ही कारणो मे राजनीति और फैशन के पुन स्थापित नेताओ मे किसी भी प्रकार के सद्गुण मे कठोर अविश्वास की भावना विद्यमान थी। प्रारभिक पुन स्थापन के नाटक मे, जो उपरोक्त नेताओ के सरक्षण पर आश्रित था, उपरोक्त भावना परिलक्षित होती थी। एक सबसे अधिक सफल नाटक वाइकरले का 'देहाती पत्नी' (कण्ट्री वाइफ) था। इसके प्रमुख पात्र ने हिजडा होने का बहाना करके स्त्रियो के अन्तरग स्थानो मे प्रवेश पा लिया था जिससे वह स्त्रियो को फुसलाने मे सफल हो गया था। एक ऐसे पात्र का चरित्र और उसकी कार्यवाही की प्रशसा की जाती थी। किसी भी दूसरे युग मे, भूत अथवा भविष्य मे, अग्रेजी श्रोताओ को ऐसे कथानक मे कोई रुचि हो सकती थी।

फिर भी रगमच की पुन स्थापना हो चुकी थी और उसका बहुत सा कार्य अच्छा था। इसने शैक्सपीयर और बेल जॉन्सन के नाटको को पुनर्जीवित किया। इसकी शोभा को ड्राइडेन के नाटको की कवित्वपूर्ण प्रतिभा और पुरसेल की आकस्मिक धुनो की गीतमय प्रतिभा तथा ओपरा मे खेले जाने वाले नाटको ने बढाई। अगली पीढी के वाइकरले की क्रूरताए कतई प्रचलन से बाहर हो गई। उनका स्थान कान्ग्रेव और फरकुहर की नई अग्रेजी हर्षप्रधान नाटिकाओ ने ले लिया। साधारणतया इन महान् लेखको को वाइकरले के साथ ही 'पुन स्थापना' कहा जाता है किन्तु सही कालक्रम की दृष्टि से कान्ग्रेव और फरकुहर को 'क्राति युग का नाटककार' कहना अधिक समीचीन होगा क्योकि उन्होने विलियम और ऐन्नी के शासनकाल मे लिखा था।

इस प्रकार अग्रेजी रगमच का वाइकरले युग अल्पजीवी रहा। किन्तु इसने स्थायी क्षति कर डाली थी क्योकि इसने बहुत से पवित्र और सद्विचारी परिवारो, और उच्च और निम्न वर्ग के धर्म मे नाटक के प्रति एक विरोधी दृष्टिकोण उत्पन्न कर दिया था वैसा ही जैसाकि शैक्सपीयर के समय मे शुद्धिवादियो मे था।

उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध तक सभ्रान्त परिवारो मे पले थोडे भी नवयुवको को नाटक देखने की अनुमति नही थी। और यदि ऐसी कठोरता नियम होने की अपेक्षा अपवाद मात्र होती तो यह कहना सत्य था कि राष्ट्र का गभीर विचारक भाग कभी भी नाटक के प्रति गभीरता से विचार नही करेगा। इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति के लिए शुद्धिवादी धर्मान्धता और उसके परिणामस्वरूप प्रारभिक पुन स्थापन युग के नाटक (रगमच) की अनर्गलता बहुत हद तक उत्तरदायी थे। ये दु खद दशाए विशेषत इगलैड मे व्याप्त थी। यहा वाइकरले का युग था और फ्रास मे मोलियर, कार्नील और रेसिन का युग था। वहा 'दोनो' हर्षप्रद और दुखद नाटक सुप्रवृत्त और गभीर थे। एलिजाबेथ युग के अग्रेजो ने उन्हे इस उद्देश्य से अपनाया कि उनका सभ्यता मे वृद्धिकारक प्रभाव और जीवन की एक आलोचना होगा।

जिस युग ने न्यूटन की 'प्रिसिपिया', मिल्टन की 'पैराडाइज लास्ट', ड्राइडन की

'ऐब्सेलम और ऐकीटेफेल' जैसी कृतियां, पुसल के संगीत और रन के गिरजाओं को जन्म दिया और दैनिक जीवन की अन्य अनेक विविध रुचियों और उत्सुकताओं को भी, जिनका उल्लेख एवीलियन और पेपीज ने किया है, ऐसा युग अंग्रेजों की प्रतिभा और सभ्यता के लिए एक सबसे महान युग था। इसका इतना गौरव मुद्रण यंत्रों के बिना नहीं हो सकता था किन्तु यह ध्यान देने की है कि इस काल में बहुत कम मुद्रण कार्य हुआ।

इसका प्रथम कारण था कठोर संचार-नियंत्रण। अधिकारियों की बिना आज्ञा प्राप्त किए कोई भी पुस्तक, पत्रिका अथवा सम्वाद-पत्र कानून नहीं छापा जा सकता था। धर्म अथवा राज्य में विद्यमान संस्थान के विरोधी (शत्रु) गुप्त मुद्रणालयों में ही अपने विचार छपा सकते थे। ऐसे छापेखाने हताश व्यक्तियों द्वारा लंदन की अट्टालिकाओं में चलाये जाते थे। इनके पीछे रोगर लेस्ट्रेंज की खुफिया पड़ी रहती थी और पकड़े जाने पर उन्हें बर्बरतापूर्ण दण्डित किया जाता था।

किन्तु वादविवाद को कुचलने वाले इस संवाद-नियंत्रण का राजकीय विशेषाधिकारों में सम्मोदन न होकर संसद के एक नये अधिनियम द्वारा हुआ। सर्वप्रथम १६६३ में कैवेलियर संसद ने प्रथम अनुज्ञप्ति-अधिनियम पारित किया था। उसका उद्देश्य राजद्रोह तथा धर्मोल्लंघन सम्बन्धी प्रकाशनों को रोकना था। उस समय ऐसे प्रकाशन राउन्डहेड तथा शुद्धिवादी रचनाएं थी। व्हिग नियंत्रित 'हाउस आफ कामन्स' के युग में, तथा १६७९ से १६८५ के बाद उन वर्षों में, जब संसद विघटित कर दी गई थी, उपरोक्त अधिनियम का समय-समय पर पुनरीक्षण किया गया। जेम्स द्वितीय की संसद द्वारा अनुज्ञप्ति-अधिनियम का पुनरीक्षण किए जाने के बाद क्रान्ति द्वारा उद्घाटित एक अधिक उदारवादी युग में इस अधिनियम को समाप्त हो जाने दिया। १६९६ के पश्चात् किसी भी अंग्रेज नागरिक को स्वेच्छानुसार गिरजा अथवा राज्य के किसी भी अधिकारी को अनुमति के बिना छापने और प्रकाशित करने की अनुमति मिल गई थी किन्तु यदि उसमें किसी प्रकार की मानहानि अथवा राजद्रोह का प्रयास पाया जाता तो उसे अपने देशवासियों के पंचों के समक्ष उत्तर देना पड़ता था। इस प्रकार मिल्टन का 'अनुज्ञप्ति रहित मुद्रण की स्वतंत्रता' का स्वप्न उसकी मृत्यु के एक शताब्दी पश्चात् साकार हो गया।

संवाद-नियंत्रण के प्रतिरोधों के चालू रहते हुए राजनैतिज्ञों की अपेक्षा साहित्यकारों और वैज्ञानिकों को मुद्रणालयों का प्रयोग करने की अधिक स्वतंत्रता थी। यद्यपि धार्मिक अनुज्ञापक[1] विमतिसूचक विशेष सिद्धान्तों की अनुमति देते थे फिर भी उन्होंने

[1] १६६३ के अनुज्ञप्ति अधिनियम में राजनैतिक सन्धियों को सेक्रेटरी आफ स्टेट, विधि की पुस्तकों को लार्ड चांसलर, हेराल्ड्री की पुस्तकों को अर्ल मार्शल अथवा किंग्स आफ आर्म्स, और अन्य सभी प्रकाशनों को कैंटरबरी के आर्क बिशप और लन्दन के

'पैराडाइज लास्ट' और 'पिल्ग्रिम्स प्राग्रेस' के प्रकाशन को न रोक कर सुधारो को न दबाने की अपनी प्रवृत्ति का परिचय दिया। न्यूटन की 'प्रिसिपिया' के प्रकाशन मे १६८६ मे रॉयल सोसाइटी के अध्यक्ष के रूप मे सैमुअल पेपीज की भावना का प्रादुर्भाव था।

इतने पर भी प्रकाशित पुस्तको और पत्रिकाओ की सख्या बहुत अधिक नही थी। अनुज्ञप्ति अधिनियम के प्रावधानो के कारण राज्य भर मे उत्कृष्ट मुद्रको की सख्या केवल बीस थी और उनके द्वारा प्रयोग किए जाने वाले मुद्रणालयो की सख्या कठोरता से सीमित थी। दो विश्वविद्यालय-मुद्रणालयो के अतिरिक्त, सभी उत्कृष्ट मुद्रक लडन मे ही थे। जिसका परिणाम देश मे बौद्धिक जीवन के लिए बाधक था। अगली शताब्दी मे जब अनुज्ञप्ति अधिनियम लागू नही था, मुद्रण का व्यापक विस्तार हुआ जिससे प्रान्तो के वैज्ञानिक और साहित्यिक जीवन को बडा लाभ हुआ। किन्तु स्टुअर्ट के काल मे लदन और दो अन्य विश्वविद्यालयो के मुद्रणालयो का मुद्रण और प्रकाशन पर एकाधिकार था। जब ओरेंज के विलियम ने टोरबे से अपनी प्रसिद्ध यात्रा पर इक्ज़टर को अपने अधिकार मे लिया तो पश्चिम की राजधानी मे न तो कोई मुद्रक था और न उसके घोषणा-पत्र की प्रतिया छापने के लिये कोई यत्र ही था। चार्ल्स द्वितीय के शासन काल के कुछ वर्षो के अतिरिक्त, जब सवाद-नियत्रण लागू नही था, कोई भी समाचार-पत्र नही थे क्योकि साधनहीन "शासकीय गजट" को समाचार-पत्र नही कहा जा सकता था। लदन मे प्रकाशित हस्तलिखित 'समाचार-पत्रो' को दूरस्थ नगरो और गावो के सवाददाताओ के पास भेजा जाता था। इन पत्रो के प्राप्तकर्ता अपनी इच्छानुसार अपने पडोसियो को या तो इन्हे दे दिया करते थे अथवा उन्हे पढ कर सुना दिए करते थे। मोटे तौर पर इसी साधन से व्हिग और टोरी दलो का निर्माण हुआ था और चुनाव क्षेत्रो मे उनका सगठन चलता था। प्रत्येक प्रकार के समाचार—खेल-कूद, साहित्यिक और साधारण—इसी तरह प्रसारित किये जाते थे। इन समाचार-पत्रो की रचना और सख्या वृद्धिमे लदन के लेखको की एक सेना लगी रहती थी जो पत्रकारो और कालान्तर के समाचार पत्र-मुद्रको की आवश्यकता पूर्ति करती थी।

निजी पुस्तकालयो की वृद्धि अधिक सामान्य होती जा रही थी। इन पुस्तकालयों की प्रकृति और आकार सैमुअल पेपीज और काटन परिवार के समृद्ध सग्रहो से लेकर भूमिपति के घर के साधारण पुस्तकालय तक भिन्न भिन्न थे। यह विचार शीघ्रता मे फैलता जा रहा था कि गाव के एक सुन्दर घर मे एक सुन्दर पुस्तकालय भी

बिशप के द्वारा अनुज्ञापित करने का प्रावधान किया गया था। ये अधिकारी पुस्तको को पढने के लिए अनुज्ञापक नियुक्त करते थे।

होना चाहिए। किन्तु अभी यह उतनी साधारणतया व्यवहार में नहीं आया था जितना कि हैनोवरियन समय में।

दूसरी ओर, आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज के बाहर सार्वजनिक पुस्तकालयों के अत्यधिक कम होने के कारण थोड़े साधन वाले पाठकों के लिए पुस्तकों को उपयोग के लिये प्राप्त करना कठिन था। १६८४ में टेनीसन ने लंदन में एक सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना की; तब सेन्ट मार्टिन के रेक्टर ने फील्डस में और तत्पश्चात् कैण्टरबरी के आर्कबिशप ने सार्वजनिक पुस्तकालय स्थापित किए। इवलिन ने अपनी डायरी में लिखा है —

"सार्वजनिक उपयोग के लिए सैन्ट मार्टिन के पैरिस में एक पुस्तकालय बनवाने का इरादा डा० टेनीसिन ने मुझ पर प्रकट किया और उन्होंने उसके स्थान और रचना के बारे में सर क्रिस्टोफर रेन के साथ मेरी भी सहायता चाही। यह एक प्रशंसनीय और योग्य योजना थी। उन्होंने मुझे बताया कि उनकी पैरिस में तीस या चालीस युवक थे जो या तो युवा सज्जनों के प्रशासक थे अथवा उच्च जनों के पादरी थे[1] और जो कहवाघरों और सरायों में जाकर अपना समय बिताने के लिए डा० टेनीसन द्वारा फटकारे गए थे, उन्होंने उनसे कहा था कि यदि पुस्तकें हों तो वे अपना समय उन्हें पढ़कर अधिक अच्छी तरह बिता सकेंगे। इस घटना ने पवित्र-विचार वाले डाक्टर को इस योजना के निर्माण के लिए प्रेरित किया। और दरअसल लंदन जैसे बड़े नगर के लिए उसके गौरव के अनुकूल एक सार्वजनिक पुस्तकालय का न होना एक निन्दनीय बात थी"

डा० टेनीसन ने सेन्ट मार्टिन के गिरजाघर के आहाते में एक बड़ा मकान बनवाया और उसका ऊपरी भाग पुस्तकालय के लिए उपयोग किया। इमारत का निचला भाग निर्धनों के लिये कार्य-स्थान था। देखिए स्ट्राइप का **स्टोज लंदन,** १७२०, अध्याय ४, पृ० ६८)।

दस वर्ष पूर्व कैम्ब्रिज के मास्टर ऑफ़ ट्रिनिटी, इजाक बैरो, ने अपने मित्र रेन को सर्वोत्तम कालेज पुस्तकालय भवन की योजना बनाने के लिये नियुक्त किया था। इस पुस्तकालय के पुस्तक-कोष्ठों को ग्रिनलिंग गिबन्स द्वारा तराशी हुई लकड़ी से सजाया गया था। यदि कुछ पुस्तकें अधिक दुर्लभ होती थीं तो उन्हें राजकुमारों की भांति और भी अधिक सम्मान से रखा जाता था।

दूरस्थ देहातों में रहने वाली जनता को मिला कर लोगों का एक अच्छा अनुपात

---

[1] उदाहरणतया, संरक्षकत्व के युग में बिशप अथवा डीन के पदों तक उन्नति कर पहुँचने वाले पादरियों का वर्ग।

पट-लिख लेता था। हिसाब-किताब लगाये जाते थे और व्यापारिक पत्र, गपशप तथा स्नेह का आदान-प्रदान होता था। जैसाकि हमे ज्ञात है डायरिया पूर्ण भाषा और सकेत लिपि मे लिखी जाती थीं। किन्तु यद्यपि साधारण जीवन-व्यापार मे यह एक पढने और लिखने का युग था कम पढे लिखो को बहुत थोडी मुद्रित सामग्री उपलब्ध हो पाती थीं। इस कारण प्रवचनो का महत्व अधिक बढ जाता था क्योकि उनमे राजनैतिक एव धार्मिक सिद्धान्तो की चर्चा समान स्वतत्रतापूर्वक हो सकती थी। बीते हुए शुद्धिवादी युग मे हुडिब्रास के अनुसार 'प्रवचन मच और धार्मिक डका लकडी का अपेक्षा मुट्ठी मे बजाया जाता था।'

अब समय बदल गया था। यह कहा जाता था कि पुन स्थापित गिरजा के देहाती लोग जैसे क्राइस्ट के बलिदान की अपेक्षा राजा चार्ल्स के बलिदान का अधिक उपदेश दिया करते थे। यद्यपि इन उपदेशो मे एक उग्र राजनैतिक आक्रोश अधिक सामान्य था किन्तु फिर भी देहात के पादरी राजनीति से अधिक अच्छी बातो का भी उपदेश किया करते थे। इसके अतिरिक्त मुख्यतया लन्दन मे ऐग्लिकन पादरियो की एक प्रभावशाली अल्प सख्या ऐसी थी जिनके प्रवचन बहुधा मानवीय विद्वतापूर्ण और वाक्-पटु, गिरजा की ख्याति को बटाते थे और उसके मच को सभी लोगो के लिए उच्च-सम्मान का बनाते थे। ऐसे मनुष्य थे टेनसिन, स्टिलिग फीट, और इजाक बैरो और सबसे ऊपर टिलाट्सन।

इनके अतिरिक्त पुन स्थापना और क्राति के गिरजा (धर्म) ने विद्वता मे महान् योगदान किया। उस समय के धार्मिक-राजनैतिक विवाद, जिसमे सभी पक्ष अतीत के अभ्यास का सहारा लेते थे, ऐतिहासिक अन्वेषण को बडा महत्व देते थे। इससे इगलैड मे मध्य-कालीन विद्वता का प्रथम महान युग विकसित हुआ। इससे पादरियो और **मोनेस्टिकन** के विलियम डुग्डेल, ऐन्थानी वुड, आक्सफोर्ड के हीर्न, जेरेमी कोलियर निकॉल्सन, बुरनेट, सुधार का प्रथम गम्भीर इतिहासकार, **एग्लिया साकरा** का व्हारटन, **फोयडेरा** का राइमर, और **कन्सीलिया** के बेक और विल्सन जैसे साधारण धार्मिक व्यक्तियो के अनुसधानो को प्रेरित किया। १६६० और १७३० के बीच इन व्यक्तियो द्वारा ऐंग्लो-सेक्सन और मध्यकालीन पुरातनताओ का अध्ययन और मध्यकालीन पुस्तको का प्रकाशन परिमाण और आयतन दोनो मे आश्चर्यजनक दे। तत्पश्चात् वॉल्टेयर के युग मे विश्वकोपात्मक प्रबोधन के प्रभाव मे मध्यकालीन इतिहास मे लोगो की रुचि समाप्त हो गई जिसका स्थान **इवानहो** के युग के पुरातत्ववादिता के भावनात्मक रोमॉस ने ले लिया। किन्तु जब उन्नीसवी शताब्दी के मध्य और उसके बाद के वर्षो मे दो मेटलैण्डो, स्टब्ज और अनेक विद्वानो ने मध्यकालीन जीवन और विचार की यथार्थताओ का उद्घाटन किया। इन आधुनिक विद्वानो का कार्य स्टुअर्ट काल के बाद के वर्षो के विद्वानो के कार्य पर आधारित था। इनके सही और विशद् अध्ययनो की प्रेरणा

रोम और जनेवा के विरुद्ध इंगलैंड के चर्च की रक्षा करने की इच्छा से स्फूर्त थी। अथवा हो सकता है इसकी प्रेरणा नानजूरर और कान्वोकेशन के विवादों के पक्ष अथवा प्रतिपक्ष की पुष्टि के उत्साह मे निहित हो। (प्रो० डेविस डगलस की कृति **इंग्लिश स्कालर्स**, १६३६ देखिए)।

शास्त्रीय विद्वता मे कैम्ब्रिज के देवविद्या के प्रोफेसर और ट्रिनिटी **के मास्टर** रिचार्ड वेन्टले न केवल अपने समय के वरन् सभी समयो के सभी विद्वानो मे सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हुए थे। १६६६ मे उनकी कृति **फैलेरिस** का प्रकाशन ग्रीक अध्ययनो मे युगान्तकारी था। लगभग १० वर्ष पहले न्यूटन की कृति प्रिंसिपिया को भी यही सम्मान मिला था। इस तथ्य ने कि वेन्टले और उसके विरोधियो ने **फैलेरिस** से संबंधित अपने पांडित्यपूर्ण वादविवाद लैटिन के स्थान पर अंग्रेजी मे प्रकाशित किए साधारण जनता के अधिकाधिक सदस्यों को इस विद्वतापूर्ण वादविवाद मे बौद्धिक रुचि लेने का अवसर प्रदान किया। परन्तु स्वय वेन्टले ने लैटिन की शास्त्रीय कृतियो के अपने संस्करणो की टिप्पणियां लैटिन भाषा मे उसी तरह प्रकाशित की जैसे न्यूटन ने अपनी **प्रिंसिपिया।** कारण यह था कि अभी तक विद्वता और विज्ञान सार्वदेशिक पहले और बाद मे राष्ट्रीय माने जाते थे।

इसी काल मे, अन्य सभी प्रपीडित सम्प्रदायो की तुलना मे क्वेकर समुदाय का प्रभाव अधिक तेजी से फैल रहा था। जिस समय क्रामवेल की तलवार महन्तो और पादरियो से 'भविष्यवाणी के स्वातन्त्र्य' की रक्षा मे उठी थी जार्ज फाक्स नामक व्यक्ति ने इस विचित्र धर्म की स्थापना की थी जिसकी जडे जम चुकी थी। परन्तु प्रथम मित्रो की असाधारण कार्य प्रणालियो और रीतियो का इस समुदायवादी स्वतत्रता मे भी बहुत दुरुपयोग हुआ। और जब पुन स्थापन मे धर्म के प्रति विमति (असहमति) का खुलकर उत्पीडन होने लगा, 'क्लेरेण्डन कोड' के प्रावधानो के कारण सभी सम्प्रदायो की तुलना मे क्वेकरो को सर्वाधिक अत्याचार सहना पडा। संस्थाकृत धर्म मे विमुख, संस्कारो का तिरस्कार कर, पादरियो और धर्म सिद्धान्तो से दूर क्वेकर यदि पचास वर्ष पहले अस्तित्व मे आ गये होते तो उन्हे समूहो मे जला डाला गया होता। किन्तु इस समय उन्हे जिस प्रकार के सम्पत्ति छिन जाने और बन्दी बनाने के जुल्मो को सहना पडा, उन्होने मुसीबतो को जिस सहिष्णुता और धैर्य से सहा उससे वे बहुत से धर्म-परिवर्तनो को जीतने मे सफल हो सके।

क्वेकरो की इस सहिष्णुता मे एक हल्की जिद का एक अंश था जो जानबूझ कर स्वय महत्वपूर्ण छोटे अधिकारी वर्ग को क्रुद्ध करने के लिए विचित्र ढग से अपनाया जाता था। जैसे फ्रेण्डस न्यायाधीशो के सामने, जो उन पर मुकदमा चलाते थे, अपना हैट उतारने से इनकार कर देते थे। उनका उस युग के दिखावटी ठाठ-बाट और मनुष्य-पूजा का विरोध बहुत महत्वपूर्ण था परन्तु कभी कभी यह सब बडी मूर्खता भरी बात लगती थी।

प्रारभिक क्वेकरवाद की प्रकृति उसके सस्थापक के जीवन काल मे (फॉक्स की मृत्यु १६६१ मे हुई) एक लोकप्रिय पुनर्जीवनवाद था। इसका तेज प्रचार बहुत अधिक था और साधारण लोग हजारो की सख्या मे इसके अनुयायी हो जाते थे। विलियम और ऐन्नी के शासन कालो मे, सभी अग्रेजी सप्रदायो की तुलना मे फ्रेण्ड्स की सख्या सर्वाधिक हो गई थी। अठारहवी शताब्दी मे वे एक उच्च सम्मान वाले सप्रदाय के रूप मे स्थापित हो गये थे और एक विशिष्ट मत के रूप मे अब धर्म परिवर्तन कराने मे उनकी कोई रुचि नही थी। उन्हे केवल अपनी आत्माओ से सम्बन्ध था और वे अपने जीवन को एक ऐसे प्रकाश से प्रदीप्त करते थे जो वस्तुत प्रत्येक स्त्री और पुरुष मे अशत आन्तरिक प्रकाश था। किन्तु उनके पास एक ऐसी परम्परा और असाधारण शक्ति से पूर्ण आध्यात्मिक नियमो की व्यवस्था थी जो फ्रेण्ड्स के परिवारो मे पिता से पुत्र और माता से पुत्री को हस्तातरित होती रहती थी।

अपने प्रथम आवेशपूर्ण पुनर्जीवनवादी शिष्यो और बाद मे शान्त फ्रेण्ड्स के जार्ज फाक्स की विचित्र शिक्षाओ का सूक्ष्म सार निश्चित रूप से यह था कि ईसाइयो के सिद्धान्तो की अपेक्षा उनके गुण अधिक महत्वपूर्ण है। किसी भी गिरजा अथवा सम्प्रदाय ने इसके पहले इस प्रकार के नियम को अपना जीवित नियम नही बनाया था। व्यापार के सस्कार और पारिवारिक जीवन मे ईसाई गुणो को बनाये रखना, और ऐसा बिना किसी दिखावे अथवा आडम्बर के करना, इन असाधारण लोगो की एक महान उपलब्धि थी। इगलैड को ऐसे लोगो को उत्पन्न करने और उन्हे लबी अवधि तक कायम रखने मे गर्व का अनुभव होना चाहिए। शुद्धिवादी आन्दोलन बहुत शोर और क्रोध के साथ अपनी चरम सीमा को पहुच कर अब शिथिल पड गया था। उसके पूर्णतया शान्त हो जाने पर ही क्वेकरवाद जैसी उत्कृष्ट उत्पत्ति का सृजन हो सका था।

सर जॉन रेरेस्बी, यार्कशायर के वेस्ट राइडिग मे थ्रीबर्ग के बैरोनेट, के आत्म-चरित मे एक कैवेलियर के भूपति परिवार के उत्थान-पतन के उदाहरण का उल्लेख है। नेसबी के बाद वाले वर्ष १६४६ मे सर जॉन के पिता की मृत्यु हो गई। उनकी सम्पदा पर १२०० पौड का ऋण था जिसका कारण बुरा गार्हस्थ्य न होकर युद्ध था। मृत्यु के दो वर्ष पूर्व राउन्ड हेड्स ने उसको बन्दी कर लिया था और 'स्वय उसी के घर मे बन्दी बना दिया था' और उसे 'अपने पार्क मे खडे हुए पेडो की बहुत सी लकडी जुर्माना लगाकर बेचने पर विवश कर दिया था।' उत्तराधिकार के समय उसका बारह वर्षीय पुत्र, सर जॉन, अपनी माता के सतर्क निर्देशन मे, अपने परिवार की बिगडी हुई स्थिति को सभालने का प्रयास करने लगा। अगले २० वर्षो मे उसने ऋण को धीरे धीरे चुकता कर दिया। और १६६८ मे सर जॉन अपने ग्रामीण निवास मे सुधार प्रारभ करने की स्थिति मे आ गया।

उसने निवास के बाह्य ऊबड-खाबड भाग के स्थान पर पत्थर से बनवा दिया, कई

कमरो म सुन्दर खुदे हुए लकडी के काम रखवा दिए। हिरगा के पार्क को उसने खेती योग्य भूमि का शामिल कर विस्तृत किया और उसकी चहारदीवारी पत्थर की बनवा दी। इस स्थान की चहारदीवारी की लकडी कठिनाई के समय बेच दी गई थी। उसने अच्छे किस्म के पेडो के स्थान पर उस भूमि के उपयुक्त पेड लगवाए। उसने बगीचे को बहुत अच्छी तरह से विकसित किया, पुष्पवाटिका और गर्मी के मौसम मे प्रयुक्त होने वाला तहखाना के बीच उसने एक फव्वारा लगवा दिया और सीसे के नलो मे पानी लाया, बगीचे की दीवार की ऊचाई भी बढा दी। इन क्रियाओ को कई वर्षो तक मितव्ययिता से किया गया। अन्तत क्रान्ति के ठीक पहले 'वह गिरजा घर और उसकी खिडकियो की मरम्मत करने और सुधारने तथा गिरजा के मीनार म नये घटे की व्यवस्था करने वाला था।'

इसलिये एक 'निरक्षक भूपति' न होकर सर जान एक अच्छा लैटिन विद्वान था और थोडी ग्रीक भी जानता था। वह इटली भाषा मे धारा-प्रवाह बोलता था और फ्रासीसी फ्रास निवासी की भाति बोलता था। युवाकाल मे उसने कुछ समय वेनिस के पडुवा विश्वविद्यालय मे सगीत और गणित सीखने मे बिताया था। अपने मूल निवास स्थान मे वह एक सक्रिय शाति न्यायाधीश था। उसने लिखा है कि उसका मुशी (क्लर्क) अपने स्थान मे ४० पौड प्रति वर्ष कमाता था। यह धनराशि बहुत से पादरियो की जीविका की धनराशि से अधिक थी। सर जॉन यार्क्स के आल्डवारो के तुच्छ बारो का अधिपति था जिसमे केवल नौ निर्वाचक थे जो 'किलेबन्दी वाले नगरो के घरानो' के विशेषाधिकारी मालिक थे। सर जॉन एक सयत विचार का (मध्यमार्गी) और सतर्क टोरी था और वह हाउस ऑफ कामन्स का सदस्य बन गया। बाद मे वह राजदरबारी और कुछ समय के लिये सम्राट का वैतनिक कर्मचारी हो गया। किन्तु वह इस सब काल मे सदैव एक प्रथम और अन्तिम रूप से ग्रामीण भद्रजन बना रहा।

इस प्रकार के भूस्वामी, जिनकी मध्य आकार की सम्पदाए थी और जिनके लाभकारी बाहरी सम्पर्क भी थे, पुन स्थापन काल मे अपनी स्थिति की तुलना मे अधिक सम्मानीय माने जाते थे। किन्तु छोटे-छोटे जमीदार, जो स्वय खेती करके जीवन यापन करते थे और जिनको न तो लगान मिलता था और न कोई अन्य सम्पत्ति थी, जो कम शिक्षित थे और अपने ग्रामीण क्षेत्र से बाहरी ससार के ज्ञान से रहित थे, सत्रहवी शताब्दी के प्रारभ मे शक्तिहीन होने लगे थे। धीरे धीरे उनकी आर्थिक स्थिति खराब होती जा रही थी क्योकि भूमि सुधार की नई पद्धतियो को अपनाने के लिए पूजी की जरूरत थी। सपदाओ के ऊपर अत्यधिक बोझ था। और इस समय पहले की अपेक्षा सबसे अधिक बडे भूस्वामी और अन्य लोग, जिन्होने कानून, राजनीति अथवा व्यापार की शक्ति से नया धन एकत्र कर लिया था, नई जमीन की तलाश मे थे, जरूरतमन्द छोटे भूस्वामियो को आकर्षक कीमते देकर खरीदने को तैयार थे। इस तरीके से बेडफोर्ड के

ड्यूको ने धीरे धीरे एकड-एकड और प्रतिष्ठित लोगो की एक भूमि के बाद दूसरी को खरीदकर एक विशाल सपत्ति बना ली। सारा बेडफोर्ड-शायर उन्ही का लगता था।

छोटी सम्पदाओ की समाप्ति और बड़ी सम्पदाओ की वृद्धि की यह प्रक्रिया जॉर्ज तृतीय के शासन काल मे चरम सीमा को पहुची किन्तु इसका प्रारभ पहले ही चार्ल्स द्वितीय के शासन काल मे हो चुका था। १६८८ की क्रान्ति के तुरन्त पश्चात् धनवानो और बडे व्हिग जागीरदारो के विरुद्ध टोरियो मे व्याप्त कटु भावना का बहुत कुछ स्रोत उपरोक्त स्थिति मे था। साधारणतया छोटा भूस्वामी एक टोरी होता था और वह अपनी घटती हुई पैतृक सम्पदा पर कर के बोझ को नापसन्द करता था जिसे विलियम और मार्लबारो के युद्धो के व्यय के लिए बढ़ाया जाता था। उसे यह बात इसलिए और भी खलती थी कि वह जानता था कि उस पर लगाये गए कर का एक बडा भाग नीचघरानो मे जन्मे सेना के ठेकेदारो, धनवान् विमतिको और लन्दन तथा डचवासियो की जेबो मे जाता था जो सरकार को कर्ज दिया करते थे। यद्यपि हमारे आधुनिक काल के आयकर और मृत्युकर की तुलना मे उस समय का भूमि कर भूस्वामियो के लिए कम विनाशक था फिर भी वह बहुत सी छोटी सम्पदाओ (अचल सम्पतियो, इस्टेट्स) के लिए दुखदायी बोझ था।

निश्चय ही युद्ध और कर-प्रणाली से परिवर्तन की गति तीव्र हुई, परन्तु आधार-तया छोटी सम्पदाओ के टूट कर बडी सम्पदाओ का निर्माण एक स्वाभाविक आर्थिक प्रक्रिया थी। यह हमारे आधुनिक औद्योगिक काल मे छोटे व्यापार के स्थान पर विशाल व्यापार स्थापित होने की प्रक्रिया के समान थी। यदि एक बार कृषि को राष्ट्रीय धन उत्पन्न करने का एक साधन मान लिया जाता, केवल समाज की एक निर्दिष्ट स्थिति को बनाए रखने के लिए ही नही, तो यह परिवर्तन अटल था। बडे धन-सग्रही भूस्वामियो के पास की पूजी, और व्यापार तथा भूस्वामित्व के लोगो के प्रति उनकी लगन, उस कृषि सबधी क्रान्ति के लिये आवश्यक दशाए थी जिसने अठारहवी शताब्दी मे अग्रेजी भूमि की उत्पादकता सम्पूर्ण घेरेबन्दी और साधारणतया नई कृषि-पद्धतियो के उपयोग से बढ़ा दी थी।

चार्ल्स द्वितीय के शासन काल मे ये परिवर्तन अभी भी परीक्षणात्मक अवस्था मे थे। कृषि समस्याओ के लेखक कृषि सुधार की रीतियो को अपनाने का प्रचार कर रहे थे और कुछ जागृत भूस्वामी और कृषक इन्हे अपना रहे थे। अगली पीढी मे यह अधिक साधारण बात हो गई। फसलो का वैज्ञानिक चक्र, कृषि पशुओ को जाडे मे उचित खाना देना, गाजर, शलगम, तिपतिया घास, आलू की खेती, खली और हरि-तालय तथा पानी को जमा करना आदि मुख्यतया कृषि सुधार मे सम्मिलित थे। पुन स्थापना युग में ये सभी बाते मालूम थी किन्तु उनका सर्वसाधारण द्वारा उपयोग मुक्त खेत व्यवस्था, जो सामुदायिक थी, छोटे जागीर स्वामियो तथा स्वतत्र भूअधिपतियो मे,

जिनके पास अभी भी बहुत सी भूमि थी, पू जी और ज्ञान के अभाव मे प्रतिबाधित हो गया था। गृह-युद्धो के ठीक बाद वाली पीढियो के बडे भूस्वामियो मे पर्याप्त विश्वास नही था और न पर्याप्त पू जी अथवा ऋण, न व्यापक भूमि सुधार मे अगुआई करने के लिये व्यक्तिगत रुचि थी वैसे ही जैसे टरनिप टाउन्शेण्ड, नार्फोक के कोक और आर्थर यग के काल मे उनके पूर्वजो मे ये सभी कमिया थी।

पुन स्थापना के पश्चात् लगान बढ रहे थे किन्तु जमीदार उनमे से बहुत थोडा पुन भूमिसुधार मे व्यय करते थे। वे अच्छे किसानो को प्रोत्साहन देने मे विफल रहे। बर्कशायर मे उस समय एक कहावत प्रचलित थी 'जो सुधार करेगा, भागेगा, और जो विनाश करेगा, जमा रहेगा।" पेपीज ने भी लिखा था "हमारे सभ्रान्तजन अच्छी खेती बाडी से अनभिज्ञ हो गये है।" नेतृत्व एव पू जी के अभाव मे परिवर्तन का युग आगे टल गया।

इस प्रकार उल्लासप्रिय राजा चार्ल्स के शासन काल मे पुरानी ग्रामीण व्यवस्था, भूमि मे व्यापक रूप से प्रसारित अधिकारो, तुलनात्मक आर्थिक समता, मुक्त खेतो और थोडे उत्पादन के साथ, अब भी जीवित थी। किन्तु विपुल सम्पदाओ, घिरे हुए खेतो, और कृषि पद्धतियो मे सुधार का आन्दोलन पहले ही प्रारम्भ हो गया था।

इतना तो स्पष्ट था कि राष्ट्रीय नीति से घरेलू और विदेशी बाजारो के लिए उत्पादन मे वृद्धि को प्रोत्साहन मिलने लगा था। समद् के अधिनियमो ने आयरलैंड से पशुओ तथा अन्य देशो से अनाज के आयात पर प्रतिबन्ध कर दिया था और किसानो को निर्यात के लिये सहायता दी। चार्ल्स द्वितीय से लेकर ऐन्नी द्वारा क्रमश इस नीति को लागू करने का आशिक उद्देश्य भूमि कर के भारी आपात को घटाना था जो निश्चय ही छोटे भूपतियो और स्वतत्र किसानो मे लोकप्रिय थी। फिर भी यदि देश-वासी उपभोक्ताओ को नुकसान पहुँचाकर वह नीति उपरोक्त वर्ग की सहायता करती थी, इससे भी अधिक वह बड़े जमीदारो और पू जी तथा साहस वाले लोगो को बाजार के लिये उत्पादन बढाने मे भी सहायक थी क्योकि यही लोग धीरे-धीरे छोटी-छोटी सपदाओ को खरीद रहे थे।[1]

---

[1] निर्यात किये गये गेहू पर दी जाने वाली ५ शिलिग की सहायता के वास्तविक कार्यान्वयन को १६७५ मे लिखे गये फालमाउथ के निम्नाकित पत्र मे देखा जा सकता है -

'कनारीज और हालैंड के उन भागो मे बहुत-सा अनाज खरीदा जाता है ताकि फसल कट जाने के बाद बीस गैलनो पर ३ शिलिग कीमत बढ जाये और अनाज महगा हो जाय, क्योकि व्यापारी ने उनको चु गी घर मे जो प्रति चतुर्थ भाग पर ५ शिलिग दिया है उससे उन्हे खरीदने का प्रोत्साहन मिले, जिसमे कि उपरोक्त

हनरी युगो नक इन सरक्षणात्मक अनाज कानूनो और सहायताओ का पूर्ण प्रभाव नही पडा था किन्तु बाद के स्टुअर्टो के समय मे इनको लागू करना उन सामाजिक शक्तियो के लिए महत्वपूर्ण था जो हमारी राष्ट्रीय नीति को मोड रही थी। यह और भी इस कारण था कि अनाज पर निर्यात सहायताएँ उस समय दूसरे देशो मे साधारणतया प्रचलित नही थी। अकेले इगलैंड मे इसके लागू करने का कारण आर्थिक नीति का नियत्रण था जिसमे गृह-युद्ध के परिणाम स्वरूप सम्राट् के विरुद्ध ससद् की विजय हुई थी। देश के व्यापारिक कारोबार पर हाउस ऑफ कामन्स का नियत्रण पुन-स्थापना मे परिपुष्ट हो गया था और क्रान्ति से उसमे और अधिक विस्तार हुआ था। और हाउस ऑफ कामन्स भूपतियो के हितो की रक्षा के लिये बहुत सजग था क्योकि इसी वर्ग से नब्बे प्रतिशत उसके सदस्य थे। ससदीय पुरो, जिनमे कि अधिकाश देहाती कस्बे थे, मे मतदाता स्वय अपने वर्ग के वास्तविक पुरनिवासियो की अपेक्षा अपने पडौस के सभ्रात जनो को प्रतिनिधि बनाना पसद करते थे। इस प्रबन्ध से, जो अग्रेजो के मिथ्या बडप्पन की एक बडी विशेषता थी, वेस्टमिन्स्टिर मे नगरवासियो के हितो पर अधिक ध्यान केन्द्रित हो जाता था और साथ ही इससे हाउस आफ कामन्स की राजनैतिक और सामाजिक शक्ति मे भी वृद्धि होती थी। उदाहरण के लिये यदि आल्डवारो से सर रेरेस्बी को न चुना जाकर वहा से कोई छोटा दुकानदार चुनकर ससद् मे जाता तो उसके कथन या विचार की परवाह न तो राजा करता और न लार्ड और मत्री। केवल लदन और कुछ अल्प नगर अपने यहा से उच्चासीन व्यापारियो को राष्ट्रीय विधानसभा मे बोलने के लिये प्रतिनिधि चुनकर भेजते। क्योकि ऐसे प्रतिनिधि जो कहते थे उसमे वजन होता था।

परन्तु यद्यपि एक सदैव बढते हुए अश मे हाउस आफ कामन्स जमीदारो के मडल मे बदलता जा रहा था किन्तु यह मानना गलत होगा कि वह व्यापार और उद्योग की उपेक्षा करता था। उसके पाच सौ सदस्यो मे से चार सौ सदस्य नगरो के प्रतिनिधि थे। इसलिये ऐसा मडल (परिषद्), जिसके अधिकाश सदस्य भूपति थे, जिनके निर्वाचक नगरवासी थे, स्वाभाविकतया राष्ट्र की कृषि और व्यापार सम्बन्धी आवश्यकताओ पर यथोचित ध्यान देता था। इसके अतिरिक्त, ससद् के दोनो सदनो के जमीदारो का एक बडा अनुपात, विशेषकर उनमे से अधिक धनी और प्रभावशाली, व्यक्तिगत रूप से औद्योगिक और व्यापारिक मामलो मे रुचि रखते थे। इसलिये यह जानकर आश्चर्य नही होना चाहिए की इसी अवधि मे ससत् ने कपडे के उत्पादन और अनाज की उपज को समान गभीरता से सरक्षण दिया। उसने विदेशी कपडे का आयात और कच्ची ऊन का निर्यात रोक दिया, अग्रेजी कपडा-निर्माताओ के हित की

अधिनियम जैसाकि किसानो के लिए लाभदायी है वैसा नगरवासियो और व्यापारियो के लिये लाभदायक न रहे।' (स्टेट पेपर्स, डोम १६७५, पृ० ४०३)।

रक्षा के लिए आयरलैंड के कपडे के व्यापार को विनाश कर दिया और यह कानून बना दिया कि प्रत्येक मृतक को अग्रेजी कपडे म ही दफनाया जाये।[1]

जहाजरानी अधिनियम, जिसका उद्देश्य देश के व्यापार को डचो की अपेक्षा अग्रेजी जहाजरानी के लिए सुरक्षित करना था, १६५१ मे दीर्घकालीन ससद् ने पारित किया था। यह वह समय था जब राज्य की नीति लदन के व्यापारिक समुदाय के बहुत अधिक प्रभाव मे थी। पुन स्थापना से इस मामले म कोई परिवर्तन नही हुआ। जहाजरानी सम्बन्धित कानूनो, इगलैड और उसके उपनिवेशो के व्यापार को अग्रेजी जहाजो द्वारा ही करने और प्रतिद्वन्दी डच व्यापारियो के प्रति विरोध की सहगामी नीति के मामले मे ससद् और सम्राट् एकमत थे।

चार्ल्स द्वितीय के दरबार के मत्री और राजा, और ससद् मे उनके आलोचक भी, नगर के उन प्रमुख व्यापारियो के निकट सम्पर्क मे थे जो विदेशी व्यापार मे महान् साहसिक कार्य करते थे। भारत, अफ्रीका और अमरीका के समुद्रो मे व्यापार करने वाली सयुक्त स्कन्ध कपनियो मे सर्वोच्च व्यक्तियो के हिस्से थे। जेम्स, ड्यूक ऑफ यार्क, लार्ड हाई एडमिरल और राज्य का उत्तराधिकारी रॉयल अफ्रीकन कपनी का प्रशासक और ईस्ट इण्डिया कपनी का हिस्सेदार था। प्रिस रूपर्ट के उत्तराधिकारी के रूप मे वह हडसन बे कपनी का प्रशासक बना और फिर मार्लबॉरो को उत्तराधिकारी हो गया।

इस प्रकार जो प्रमुख व्यापारी अग्रेजी कूटनीतिज्ञ जल और थल सेना की नीति का नियत्रण करते थे वे व्यापारिक समुदाय से निकटतम रूप मे सम्बन्धित थे और स्वय भी उसके स्वार्थो और दृष्टिकोणो मे भी भागीदार थे। चार्ल्स द्वितीय के शासन-काल मे हालैण्ड और विलियम और ऐन्नी के शासन काल मे फ्रास के साथ लडे गये युद्ध बहुत दूर तक व्यापारिक और औपनिवेशिक युद्ध थे और उनकी आवश्यकता और लाभ पर राज दरबार, ससद् और नगर सभी एकमत थे।

शान्तिवादी और छोटी मालगुजारियो तथा देहाती दृष्टिकोण वाले भूपतियो की "छोटे इगलैड" की भावना ने टोरियो के चुनाव प्रचार में अपनी भूमिका अदा की किन्तु वेस्टमिन्स्टिर और व्हाइट के राजनीतिज्ञो पर उसका अधिक प्रभाव नही था। पहले डचो और फ्रासीसियो के विरुद्ध व्यापारिक और औपनिवेशिक विस्तार के युद्धो की एक श्रृखला से अमरीका मे अग्रेजो के प्रवेश का विस्तार हुआ और यूरोप तथा ससार के बाजारो मे अग्रेजी व्यापार फैल गया। इन युद्धो का व्यय अधिकॉशत भूमि

[1] एक दरिद्र व्यक्ति, नरीसा ने अन्तिम शब्द ये कहे थे—कि मेरा दुर्भाग्य है कि मैं सूती कपडे के कफन मे दफनाया जाता हू। ऊनी कपडे का कफन तो एक साधु को भी मरने के लिए प्रेरित कर देगा। (पोप, मारल एसेज, १)

कर न पूरा किया गया। इसलिये यह नही कहा जा सकता कि चार्ल्स द्वितीय से ऐन्नी तक अग्रेजी नीति मे व्यापारिक अथवा राष्ट्रीय हितो की उपेक्षा हुई और भूमि को अधिक प्रोत्साहन मिला अथवा न ऐसे भूपतियो (जमीदारो) की बहुसख्या के मतो को आवश्यकता से अधिक ध्यान देकर ही हुआ।

औद्योगिक क्रान्ति और सम्पूर्ण बाडो के ठीक पूर्व के ग्रामीण इगलैड के दो प्रतिद्वन्द्वी चित्रो मे से एक अथवा दूसरा बाद की पीढी के सामने प्रस्तुत होता है। एक ओर तो हमे ऐसे स्वतत्र और आत्मसम्मानी किसानो के देश की कल्पना करने को कहा जाता है जिनमे मे अधिकाश भूमि से छोटे व्यक्तिगत अधिकारो से सम्बन्धित थे और देहाती क्षेत्र की शान्ति और आनन्द से, जो उसके उपरान्त समाप्त हो गये है, से सन्तुष्ट थे तथा जो 'हारवेस्ट होम' (फसल के घर) के बारे मे शराब के घरो मे गाने गा-गा कर ग्रामीण आनन्द का उत्सव मनाते थे। इन गानो को हमने आज अपने ड्राइग रूमो (बैठको) मे सुरक्षित कर रखा है। हमे इस बात का स्मरण है कि यही भूमि गावो और विपण (हाट) कस्बो मे रहने वाले दस्तकारो की थी। यद्यपि वे उद्योग मे लगे थे किन्तु फिर भी ग्रामीण आनन्दो से वचित नही थे। समय-मापी यत्रो की अपेक्षा वे ओजार इस्तेमाल करते थे और इसलिये अपने दैनिक कार्य मे उन्हे वैयक्तिक कलाकार का आह्लाद मिलता था जिसके लिये हमारे आधुनिक आमोद-प्रमोद की ज्वरपूर्ण उत्तेजना केवल एक छुद्र विकल्प है। इन आमोद-प्रमोदो का विशाल स्तर पर आयोजन यात्रिक एव लिपिक परिश्रम की नीरसता को हटाने के लिए होता है। दूसरी ओर हमारे समक्ष एक विरोधी चित्र है। हमे पूर्व यात्रिक युग की कटु, एव पीठ-तोड मेहनत का स्मरण दिलाया जाता है जो प्रतिदिन तेरह-चौदह घटे तक होती थी। प्राथमिक विद्यालयो के स्थान पर बच्चो से काम लिया जाता था, चिकित्सालय की सुविधाओ अथवा चिकित्सा विज्ञान के अभाव मे रोग एव अल्पायु मे मृत्यु, स्वच्छता और आराम का अभाव जो आज के जीवन मे आवश्यकताए मानी जाती है, केवल अपराधियो और कर्जदारो के प्रति उपेक्षापूर्ण और अकाल्पनिक ही नही बहुधा स्त्रियो, बच्चो और निर्धनो के प्रति भी, और अन्तत इगलैड और वेल्स की पचपन लाख जनसख्या को १६३६ की जनसख्या, जो पहले की अपेक्षा सात गुनी से भी अधिक थी, की तुलना मे कम सुविधाए।

इन दोनो चित्रो की पुष्टि उस काल के अध्ययन के आधार पर हो जाती है। किन्तु यह घोषित करना खतरनाक होगा कि उन दोनो मे कौनसा चित्र अधिक सत्य है। अशत इसका कारण है अदृष्य मूल्यो के प्रति विवाद। हम अपने पूर्वजो के मस्तिष्क मे जाकर नही बैठ सकते और यदि ऐसा कर भी सके तो भी हम द्विविधा मे पडे रहेगे। उसका अशत यह कारण है कि जहा साख्यिकी की सहायता ली जा सकती है वहा साख्यिकी उपलब्ध नही है।

यह सत्य है कि क्रान्ति के आस पास योग्य प्रचारक ग्रेगरी किग ने समुदाय के विभिन्न वर्गो मे चूल्हा कर और सभाव्य सख्याओ की अन्य सूचनाओ के आधार पर गणना की थी। उसके द्वारा दिये हुए आकडे अधिक से अधिक अनुमान मात्र थे। इनकी उपयोगिता वास्तव मे नकारात्मक है, क्योकि ये अतीत के प्रति अधश्रद्धा पर नियत्रण करते है और इस तथ्य को सम्मुख लाते है कि महान आवलयन काल तथा औद्योगिक क्रान्ति से पहले भी भूमि पर किसानो और छोटे जमीदारो की सख्या कम थी और कृषि मजदूरो की सख्या बहुत अधिक थी।

किग द्वारा प्रस्तुत राष्ट्र के विवेचन मे दो बृहत्तम वर्ग "झोपडियो के निवासियो और अकिचनो" तथा "मजदूरो और निजी सेवको" को सम्मिलित किया गया है। हमारे अनुमान मे प्रथम श्रेणी उन लोगो की प्रतिनिधि है जिन्होने मजदूरी से स्वतत्र होने का प्रयास किया था। किग के अनुसार उन लोगो को अपने प्रयास मे बहुत थोडी सफलता मिली। फिर भी ऐसे लोग, जिन्होने साधारण लोगो से भिन्न अपने रहने के स्थान अथवा अपनी झोपडी के पीछे की छोटी सी भूमि से पृथक् जीविका अपना ली, किग की जानकारी से अधिक प्रसन्न रहे हो। हो सकता है कि अतीत को आदर्श मानने वाले आधुनिक लोगो के अनुमान से वे अधिक दरिद्र हो। किग का द्वितीय बडा वर्ग "मजदूर और बहिर्कर्मचारी" मजदूरी करके जीविका चलाने वाले है। किन्तु उनमे से भी बहुतो को साधारण भूमि, किसी छोटे से बगीचे और छोटी सी जोत, पर अधिकार था जिससे जीवन मे दिलचस्पी और सम्मान बढता था किन्तु इसमे ऐसा मालिक अग्रेज सज्जन के सम्मानित पद पर आसीन नही हो जाता था। उद्योग के नौकरो मे से भी बहुतो के पास छोटे बगीचे अथवा खेत होते थे जिन्हे वे अवकाश के समय जोतते थे। द्वीप के सभी भागो मे ऊन के बुनकरो की विशेषत ऐसी स्थिति थी। हेलीफैक्स के आसपास चट्टानी ऊचाइयो पर प्रत्येक कपडे के मजदूर के पास एक खेत मे दो गाये होती थी, जिसकी दीवार पहाडी के ढाल की ओर होती थी और जहा पर उसकी झोपडी होती थी।

दूसरी ओर, खेती और उद्योग दोनो मे कर्मचारियो की बहुत बडी सख्या होती थी जिनके मजदूरी के अतिरिक्त न तो खेती मे कोई अधिकार होते थे और न जीविका का कोई अन्य साधन।

कृषि और उद्योग मे मजदूरी का नियमन प्रत्येक काउटी के 'जस्टिसेज ऑफ पीस'[1] द्वारा जारी की गई अनुसूचियो से होता था। यही अधिकारी यदा कदा कीमतो की सीमाये निर्धारित करते थे जिन पर वस्तुए बेची जा सकती थी। ये अनुसूचिया मूल्यो अथवा मजदूरी को सही-सही निर्धारित करने के उद्देश्य से कभी जारी नही की जाती थी। वे केवल ऐसी अधिकतम सीमाए निर्धारित करती थी जिनका अतिक्रमण नही होना चाहिए था। इसलिए प्रत्येक काउटी मे भिन्नताए हो सकती थी और एक शायर

---

[1] शान्ति स्थापनार्थ-न्यायाधीश।

तथा दूसरे शायर मे भी भेद हो सकते थे। उसके पश्चात् भी बहुधा व्यवहार मे घोषित अधिकतम सीमाओ का उल्लघन होता था।[१]

नकारात्मक साक्ष्य के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुच सकते है कि उस समय मजदूरी बढाने के लिये सगठित हडताल और सयोजन साधारण बात नही थी। चार्ल्स द्वितीय के शासन काल की अपेक्षा एडवर्ड तृतीय के शासन काल मे हुई हडतालो के विषय मे हम अधिक सुनते है।

दस्तकारो से सबधित एलिजाबेथ के अधिनियम, जो अशत अभी भी लागू था, मे कार्य को अधूरा छोडने तथा जस्टिस ऑव दि पीस द्वारा निर्धारित अधिकतम मजदूरी का उल्लघन करने पर दड का प्रावधान था किन्तु जब सेवायोजक और कर्मचारी दोनो के लिये लाभकर होता था तो अधिकतम दर मे ऊची मजदूरी बहुधा दी जाती थी। यद्यपि श्रमिक सघवाद नही था फिर भी मजदूरी के विषय मे बहुत सौदेबाजी होती थी।

यदि उस ससय के मूल्यो के निम्न स्तर को भी ध्यान मे रखा जाय तो भी आधुनिक मानदडो से उस समय दी जाने वाली मजदूरिया कम थी। किन्तु तत्कालीन योरुप की तुलना मे वे ऊची थी। अग्रेजो की राष्ट्रीय विशेषता, जो तब थी वह आज भी वह है मितव्ययिता के बजाय रहन सहन का उच्च स्तर होना। एक नियोक्ता की हैसियत से डेफो ने लिखा था

"मितव्ययी गार्हस्थ्य अग्रेजो का गुण नही हे। अग्रेज मेहनतकश लोग ससार के उसी स्तर के किसी अन्य विदेशी वर्ग की तुलना मे तिगुने मूल्य का खाते पीते है, विशेषकर पीते अधिक है।"

उनका मुख्य भोजन रोटी थी, अथवा हम कहे रोटी, जौ की शराब और अधिकाशत

---

[१] भिन्न भिन्न जागीरो मे मजदूरी की दरे भिन्न भिन्न थी। १७०१ मे यार्कशायर के एक भूपति ने लिखा था

'एक अच्छे हलवाहे का बार्नस्ले और वोर्टले के कुछ भागो मे मजदूरी ३ पौड से अधिक नही है। सर गाडफ्रे अपने सेवक को केवल ३ पौड १४ शिलिग देते थे और अपने मुशी को केवल ४ पौड, इससे स्पष्ट है कि ऊची मजदूरी के बारे मे हमारी स्थिति अत्यन्त दयनीय है। वोर्टले के नजदीक सभी हलवाहे अपने जानवरो को लेकर ३ बजे प्रात जग जाया करते थे और हमारे घरो मे वे ७ बजे तक सोये पडे रहते है। किन्तु सबसे अधिक मुझे वार्न द्वारा अपने सेवको को दिया जाने वाला २० पौंड का वेतन चिंतित करता है।' मै अपेक्षा करता हू कि मजदूरो की उल्लिखित मजदूरी के अतिरिक्त उनके खाने और रहने की व्यवस्था भी की जाती थी। उस साल गेहू की कीमत अन्य अनाजो की अपेक्षा बहुत कम थी अर्थात् १/४ तौल केवल ३४ शिलिग मे बिकती थी और वेस्ट राइडिग मे एक मुर्गी की कीमत केवल २ पेंस थी।

मास था। उस काल के अग्रेजी भोजन मे साग-सब्जी और फल की बहुत कम मात्रा तथा मास की बहुत अधिक मात्रा होती थी। मध्य और उच्च वर्गो मे 'प्रात काल के नाश्ते' मे बहुधा जौ की शराब, थोडी रोटी और मक्खन शामिल रहता था। वह दोपहर के भोजन तक काफी माना जाता था, जिसमे विभिन्न प्रकार की मछलियो और मास की भरमार होती थी। ग्रेगरी किग ने लिखा है कि निर्धन परिवारो मे आधी जनसख्या प्रतिदिन मास खाती थी और शेष आधी का अधिक भाग सप्ताह मे दो बार मास खाता था। 'भिक्षा पर जीविका चलाने वाले लाखो लोगो को सप्ताह मे एक बार से अधिक मास नही मिलता था।'

१८०१ की जनगणना के पूर्व इगलैड की जनसख्या तथा विभिन्न वर्गो मे उसके विभाजन के बारे मे विश्वसनीय सूचनाए (आकडे) नही उपलब्ध थी किन्तु ग्रेगरी किग ने क्रान्ति के समय (१६८८) चूल्हा कर अथवा अन्य सूचनाओ के आधार पर जो गणनाए की, अथवा अनुमान कहिए, वे परीक्षा करने योग्य है। कम से कम उस समय के एक सुविज्ञ विद्वान के विचार के अनुरूप उस समय के समाज का एक मानचित्र तो उनसे मिलता ही है। यह जानते हुए कि वे आकडे सही नही है किन्तु किस दिशा मे उनमे अशुद्धिया है न जानते हुए पाठको को इन आकडो का अध्ययन करना अच्छा होगा।

ग्रेगरी किंग की सारणियां, १६८८

परिवारो की सख्या	श्रेणिया, मात्राए, पद और योग्यताए	प्रत्येक परिवार मे मुखिया	व्यक्तियो की सख्या	प्रति परिवार वार्षिक आय (पौड)
१६०	साधारण लार्ड	४०	६,४००	३२००
२६	आध्यात्मिक लार्ड	२०	५२०	१३००
८००	बैरोनेट	१६	१२,८००	८८०
६००	नाइट	१३	७,८००	६५०
३,०००	इस्क्वायर (भूपति)	१०	३०,०००	४५०
१२,०००	सभ्रान्तजन	८	९६,०००	२८०
५,०००	उच्च स्थानो और पदो पर व्यक्ति	८	४०,०००	२४०
५,०००	निम्न स्थानो और पदो पर व्यक्ति	६	३०,०००	१२०
२,०००	प्रख्यात सामुद्रिक व्यापारी और दुकानदार	८	१६,०००	४००
८,०००	छोटे सामुद्रिक व्यापारी और दुकानदार	६	४८,०००	१९८
१०,०००	कानूनी पेशे मे लगे व्यक्ति	७	७०,०००	१५४

परिवारो की सख्या	श्रेणिया, मात्राए, पद और योग्यताए	प्रत्येक परिवार मे मुखिया	व्यक्तियो की सख्या	प्रति परिवार वार्षिक आय (पौड)
२,०००	प्रसिद्ध पादरी	६	१२,०००	७२
८,०००	निम्न स्थिति के पादरी	५	४०,०००	५०
४०,०००	अच्छी स्थिति के पूर्णस्वामित्वधारी	७	२,८०,०००	९१
१,२०,०००	निम्न स्थिति के पूर्णस्वामित्वधारी	५½	६,६०,०००	५५
१,५०,०००	कृषक	५	७,५०,०००	४२ ५
१५,०००	उदार कलाओं और विज्ञानो मे लगे व्यक्ति	५	७५,०००	६०
५०,०००	दुकानदार और व्यापारी	४½	२,२५,०००	४५
६०,०००	शिल्पकार और दस्तकार	४	२,४०,०००	३८
५,०००	नोसेना अधिकारी	४	२०,०००	८०
४,०००	सैनिक अधिकारी	४	१६,०००	६०
५०,०००	साधारण नाविक	३	१,५०,०००	२०
३,६४,०००	श्रमिक और घरेलू नौकर	३½	१२,७५,०००	१५
४,००,०००	झोपडियो के निवासी और दरिद्र	३¼	१३,००,०००	६ ५
३५,०००	साधारण सैनिक	२	७०,०००	१४
	घुमक्कड, नट, चोर, भिखारी आदि		३०,०००	
		योग	५५,००,५२०	

(चार्ल्स डवेनेन्टर्स की कृतियो मे मुद्रित (१७७१), खण्ड २, पृष्ठ १८४, अन्य आकडो के साथ)।

इस सारणी का अर्थ-निर्धारण (निर्वचन) करने का लिए कुछ बातो पर विचार कर लेना चाहिए 'प्रति परिवार व्यक्तियो' का अर्थ है एक घर मे रहने वाले व्यक्ति, 'परिवार' मे घर के नौकर और बच्चे भी शामिल है। इसलिये अमीरो की तुलना मे निर्धनो के 'परिवार' बहुत छोटे है। फिर भी सभी वर्गो मे जीवित और घर पर रहने वाले बच्चो की औसत सख्या समान हो। निश्चित रूप से 'परिवार और आमदनिया' औसत अको पर आधृत अनुमान है, प्रत्येक वर्ग मे कुछ गृहस्थो के परिवार और आमदनिया निर्धारित अको से बडे होगे जबकि उसी वर्ग के दूसरे अपेक्षतया छोटे पैमाने पर रहते होगे। 'स्वतत्र अधिपतियो' मे अपने खेतो के स्वामियो के अतिरिक्त आजीवन कृषक और स्वत्वाधिकारी भी सम्मिलित है। अन्त मे यह अवश्य स्मरण रखना चाहिए कि "मेहनतकश लोगो और बाह्य नौकरो" तथा 'झोपडियो के निवासियो और दरिद्रो', जो

समुदाय के दो सबसे बड़े वर्ग थे, में ऐसे अनेक लोग शामिल थे जो किसी न किसी प्रकार से भूमि पर छोटे अधिकार रखते थे।

ग्रेगरी किंग के अनुसार दस लाख लोगों से अधिक, सम्पूर्ण राष्ट्र का लगभग पांचवा भाग, यदाकदा भिक्षा प्राप्त करते थे जो अधिकांश पैरिश (जिला) द्वारा प्रदत्त सार्वजनिक सहायता के रूप में होती थी। निर्धनों को दी जाने वाली सहायता सारे देश में लगभग ८ लाख पौंड वार्षिक होती थी जो ऐन्नी के शासन काल में बढ़कर १० लाख तक हो गई थी। लोग इस बाह्य सहायता को प्राप्त करने में तनिक भी लज्जित नहीं होते थे और यह सहायता एक शरारतपूर्ण प्रचुरता से दी भी जाती थी। रिचर्ड डनिंग ने कहा था कि १६९८ में पैरिश में प्राप्त सहायता उस व्यय की तिगुनी होती थी जो एक श्रमिक स्वयं, अपनी पत्नी और तीन बच्चों का पालन पोषण पर करता था। जिन लोगों को एक बार सार्वजनिक सहायता मिल जाती थी वे फिर काम करने से ही इनकार करते थे और 'कभी भी तीक्ष्णतम शराब के अलावा दूसरी शराब नहीं पीते थे। वे सर्वोत्तम आटे की बनी रोटी के अलावा अन्य आटे की रोटी भी नहीं खाते थे'। यद्यपि इस कथन को स्वीकार करने में सतर्कता अवश्य बरतनी चाहिए फिर भी इससे इतना तो स्पष्ट हो जाता है कि दरिद्र-अधिनियम (या निर्धन कानून) के बारे में नियोक्ताओं और करदाताओं की शिकायत की प्रकृति क्या थी।

सभी युगों में बाहर से मिलने वाली सहायता की एक समान समस्याएं होती हैं। किन्तु पुनःस्थापना युग और अठारहवीं शताब्दी के दरिद्र-अधिनियम की एक विलक्षणता चार्ल्स द्वितीय के कैवेलियर संसद् द्वारा पारित बस्ती-अधिनियम था। इस अधिनियम के अधीन प्रत्येक पैरिश अपने यहां आकर बसने वाले व्यक्ति को उसके मूल पैरिश को वापस भेज सकता था क्योंकि उसको भय रहता था कि यदि वह व्यक्ति अपने नये घर में ठहर गया तो भविष्य में किसी सहायता को पाने का दावेदार हो जायेगा। इंगलैंड की जनसंख्या का ९० प्रतिशत, वस्तुतः वे सभी जो भूपतियों के एक छोटे से वर्ग के सदस्य नहीं थे, अपने पैरिश के अतिरिक्त किसी भी पैरिश से बाहर निकाले जा सकते थे। उनका चरित्र चाहे जितना अच्छा होता अथवा किसी कमाई वाले काम में भी लगे होते तो भी उन्हें गिरफ्तार होने अथवा अपमान सहने की परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता था। कुछ पैरिशों के अधिकारियों में नये लोगों के आकर बस जाने का इतना भय बना रहता था कि वे इस अनुचित शक्ति का उपयोग बिलकुल अनावश्यक मामलों में भी कर बैठते थे। अतएव उपरोक्त अधिनियम श्रम की गतिशीलता को रोकता था और उसी प्रकार से लज्जाजनक था जैसे कि अंग्रेजों की गर्वयुक्त स्वतंत्रता पर प्रेस प्रतिबन्ध। किन्तु फिर भी इसका विरोध नहीं किया गया जब तक कि बहुत वर्षों बाद ऐडम स्मिथ ने कटु शब्दों में इसकी आलोचना नहीं की। इसके कार्यान्वयन का सही अंश में अनुमान लगाना कठिन है और ऐसा प्रतीत होता है कि ऐडम स्मिथ ने इस अधिनियम

स हुई हानि और अन्यायपूर्ण मामला की सख्या का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है। किन्तु सब मिलाकर यह एक बडा अनिष्ट था। स्टुअर्ट काल के इगलैड मे स्थानीय सार्वजनिक अधिकारियो द्वारा निर्धनो के पालन-पोषण के लिये जो प्रशसनीय प्रयास हुआ उसका यह दूसरा पक्ष है। सब मिला कर वह प्रयास विफल नही हुआ था और अग्रेजी समाज के शान्तिमय चरित्र (स्वभाव) का अधिकाशतया कारण रहा।

हाउस आफ कामन्स और राज्य मे सभ्रात महिलाओ के सरक्षको की बढती हुई शक्ति का सबसे अच्छा लक्षण पुन स्थापन युग के शिकार सम्बन्धी कानून थे। नार्मन और प्लैन्टेजेनेट के कालो मे बनो के कानूनो ने प्रजा के सभी वर्गो के हितो की बलि देदी जिसमे राजा को शिकार करने के लिए लाल हिरन प्रचुरता से मिल सके। किन्तु अब छोटे भूपतियो और किसानो के हितो की बलि इस कारण दी गई थी कि महिलाओ के सरक्षक प्रचुरता से तीतरो का शिकार कर सके। राजनीति की अपेक्षा तीतरो के कारण पडौसी एक दूसरे को शका की दृष्टि से देखा करते थे। क्योकि स्वतत्र भूपति अपने छोटे मे फार्म पर वे शिकार मार लेता जो आस पास के सुरक्षित शिकारगाहो से बहक कर वहा आ जाते थे। और इसलिये १६७१ मे कैवेलियर ससद् ने एक कानून बनाया जो एक सौ पौण्ड से नीचे वाले सभी स्वतत्र किसानो अर्थात् इस वर्ग की एक बडी बहुसख्या को शिकार मारने से रोकता था चाहे फिर वह अपनी भूमि पर ही हो। इस प्रकार बहुत से निर्धन परिवारो को अनेक अच्छे भोजनो से, जो अधिकाशत उनके थे, वचित कर दिया गया। और वे थोडे से भूपति भी, जो इस विलक्षण कानून की सीमा से परे अपनी सपदा के कारण आ जाते थे, इस कारण से शका की दृष्टि मे देखे जाते थे। अच्छे हृदय वाले सर रोगर डि कैवेलरी ने भी लगभग १०० पौड वार्षिक वाले भूपतियो, जो शिकार कानून की सीमा मे है, के बारे मे कहा "वह एक अच्छा पडोसी होगा जो बहुत तीतरो को नष्ट नही करेगा"—अर्थात् स्वय अपनी भूमि पर।

आगे की कई पीढियो तक ग्रामीण सभ्रान्तजनो की शिकार के पशु-पक्षियो की सुरक्षा के बारे मे अत्यधिक उत्कठा से बहुत से गम्भीर सामाजिक परिणाम हो सकते थे। कारतूसी बन्दूक के उपयोग के कारण इस विषय पर उनकी चिन्ताए बढ गई थी। स्टुअर्ट के युग मे शिकार की सहायता से शिकार खेलने के स्थान पर गोली से मारना धीरे धीरे प्रतिष्ठित हो गया था। परिणामत चिडियो का विनाश अधिक शीघ्रता से होने लगा था और यह प्रतीत होने लगा था कि उनकी पूर्ति असमाप्य नही है। चार्ल्स द्वितीय के शासन मे पहले ही उडते हुए पक्षी को गोली से मारना साधारण बात थी। किन्तु यह एक कठिन कला मानी जाती थी, और तब और भी अधिक जब कभी-कभी घोडे की पीठ पर से उसका अभ्यास होता था। किन्तु एक अन्य प्रकार की शिकारी चिडियो 'फैजैन्ट' का छिप कर पीछा करना और उन्हे शाखो पर बैठते ही गोली से मारना भद्रजनो मे अब भी प्रचलित था।

भूमि पर चिडियो का जाल म फसाना एक फैशनेबुल क्रीडा थी जिसमे बहुधा कुत्तो की सहायता भी ली जाती थी जो घास मे छिपी हुई चिडियो की ओर सकेत कर देते थे। यह उल्लिखित है कि सर रोगर ने अपने यौवन काल मे शायद इसी ढग के एक मौसम मे तीतरो के चालीस झुण्डो का शिकार किया था। जगली बतखो को बीसो और सैकडो की सख्या म ललचाकर के किनारे के गड्ढे म फसा लेना दलदलो मे एक व्यापार था और ग्रामीण अभिजनो के घर मे फसाने वाले पाखरो पर यह एक क्रीडा थी। विभिन्न प्रकार की चिडियो और जलपक्षियो को फसाने के लिये टहनियो की लास लगाना और जाल फैलाना आदि अभी तक 'जमीदारो के मनोरजन' के एक प्रमुख साधन थे। किन्तु स्पष्टतया कारतूसी बन्दूक की प्रतिष्ठा बढ रही थी और इसके साथ ही विशेष रूप से शिकार के लिए निर्दिष्ट कुछ चिडियो तक ही शिकार को सीमित करने की प्रवृत्ति भी बढ रही थी। इस पवित्र वर्ग मे अभी हाल ही मे देश के कानून द्वारा तीतर तथा काले मुर्गे को स्थान दिया गया था। और जो गडरिया इस कानून का उल्लघन करता था उसके कोडे लगाये जा सकते थे। एडिसन के टोरी सरक्षक ने घोषित किया था कि क्रान्ति के बाद पास किए गए कानूनो मे शिकार कानून ही अच्छा कानून था।[1]

स्टुअर्ट युग के पीछे के काल मे लोमडी के शिकार मे वे लक्षण आ गए थे जिनमे स्पष्ट रूप मे अधुनिकता की छाप थी। ट्यूडर काल मे किसान लोमडी को जमीन के भीतर से खोदकर निकालते थे और थैले मे डालकर कोकड के समान उसका उत्पीडन करते थे, अथवा चूहे के समान निर्दयता से मारते थे। क्योकि उन दिनो मे हिरन की शिकार करना सबसे अच्छा माना जाता था। किन्तु गृहयुद्ध की गडबडियो से हिरन-उद्यान खुल गए थे और हिरन इस सीमा तक नष्ट हो गए थे कि विवश होकर पुन-स्थापना काल मे बहुत से जिलो मे हिरन के स्थान पर लोमडी का शिकार होने लगा था। अभी तक जिला अथवा क्षेत्रीय स्तर पर सार्वजनिक चन्दे मे पोषित कुत्तो के दल नही थे किन्तु निजी भद्रजनो के अपने कुत्ते-दल होते थे और वे पडोसियो को शिकार के समय आमन्त्रित कर लेते थे। वहा पहले यह विचार प्रचलित था कि भद्रजन अपने ही कुत्तो के दल से हिरन और लोमडी का अपने ही जगलो मे शिकार करे। अब इसके स्थान पर धीरे धीरे यह चलन होने लगा था कि विस्तृत स्तर पर देहातो मे शिकार खेला जाये चाहे फिर वहा पर स्वामित्व किसी का भी हो।

कुछ जिलो (काउन्टीज) मे लोमडी को बिल मे बन्द कर देना रोक दिया गया था और लोमडी को खुले मैदान मे भगा कर शिकार करने मे कुछ सफलता प्राप्त की गई थी। इन दशाओ मे कभी कभी १० से २० मील तक की दौड हो जाती थी।

---

[1] शिकार के दो प्रमुख कानून चार्ल्स द्वितीय के २२-२३, केप २५, और ४ डब्लु और एम कैप २३ कहे जाते है।

किन्तु लकाशायर और शायद अन्यत्र भी लोमडी को पहले बिल मे घुसने पर मिट्टी से दबा देते थे फिर खोदकर उसका शिकार करते थे। यदि लोमडी बिल मे नही घुसती तो साधारणतया वह बच कर भाग जाती थी। यह सम्भव है कि तब तक आज जैसे न थकने वाले शिकारी कुत्तो का विकास नही हो पया था।[1]

आखेट के सभी सुप्रतिष्ठित सस्कारो के साथ हिरन का पीछा करना अब भी सर्वोत्तम शिकार समझा जाता था। किन्तु धीरे धीरे इसका ह्रास हो रहा था ज्यो ज्यो खेती के बढने से जगलो की सख्या कम हो गई थी। इससे भद्रजन द्वारा अपने निवास के चारो ओर बनाय जाने वाले हिरन-उद्यान के आकार की सीमा भी निश्चित हो गई थी।

हिरन अथवा लोमडी की शिकार से भी अधिक लोकप्रिय खरगोश का पीछा करना था जिसमे शिकारी कुत्तो को घोडे पर सवार भद्रजन धीरे धीरे ललकारा करते थे और साधारण लोग पीछे पीछे भागते थे। सबसे आगे शिकारी एक बास लेकर भागता था। इस दृश्य मे एक लोकप्रिय ग्रामीण क्रीडा की भी प्रवृत्ति पाई जाती थी। अवश्य ही अगुआ भद्रजन रहते किन्तु इसमे सभी छोटे बडे पडोसी भाग लेते थे।

अन्य लोकप्रिय क्रीडाए भी थी। देश के भिन्न भिन्न भागो मे विभिन्न नियमो और परम्पराओ से कुश्ती प्रचलित थी। फुटबाल के विभिन्न अनगढ (अपरिष्कृत) प्रकार और 'फेकन' भी प्रचलित थे। बहुधा दो गावो की सम्पूर्ण पुरुष जनसख्या हसते-खेलते एक दूसरे को उठाकर फेकने मे व्यस्त हो जाती थी। अकेले लाठी चलाना, घूसेबाजी, तलवारो से लडाई, साड और रीछ की लडाई लोग बडी प्रसन्नता से देखते थे और अभी भी उनमे चोटो से उत्पन्न दर्द को नापसद करने की मनोवृत्ति नही आई थी। वास्तव मे राटकाकर कोडे लगाने जैसी कम क्रीडा-पूर्ण क्रियाओ मे लोग बहुत आनन्द लेते थे। परन्तु सभी क्रीडाओ मे मुर्गों की लडाई सबसे लोकप्रिय थी जिसमे घुडदौड की तुलना मे सभी वर्गों के लोग रुपये की बाजी अधिक लगाते थे। किन्तु राष्ट्रीय चेतना मे घुड-दौड को अधिक महत्वपूर्ण स्थान मिलने लगा था जिसका कारण था चार्ल्स द्वितीय द्वारा नई बाजार को सरक्षण देना और सवारी के घोडो की नस्ल मे सुधार होना तथा अरबी और बार्ब नस्ल के घोडो का प्रवेश।

बाद के स्टुअर्ट राजाओ के काल मे फैशन और स्वास्थ्य के प्रयोजनो के लिए स्पैस पर बहुत से लोग आया-जाया करते थे। रोमन समय के पश्चात् सर्वप्रथम बाथ की

---

[1] इस प्रकार थामस टिलूडेस्ली ने अपनी डायरी मे लिखा था—'मैं तडके लोमडी का शिकार खेलने और अपने भाई डाल्टन और फ्रास्ट से मिलने गया, दो लोमडिया मिली लेकिन उनमे से किसी को भी नही मार पाया' (**नोटेस्टीन इगलिश फोक**, पृष्ठ १७२)। लोमडी के शिकार के इस वर्णन की तुलना ब्लूम लिखित जेन्टलमैन्स **रिक्रियेशन**, १६८६, २, पृष्ठ १३७-१३६ मे वर्णित लोमडी के शिकार से कीजिए।

नदियों की ओर बड़े लोगों का आकर्षण बढ़ा था किन्तु अभी तक ब्यूनैश और जेन आस्टिन के सुन्दर नगर नहीं बने थे। उत्तरी प्रान्त के भद्रजन और उनके परिवार बक्सटन और हैरोगेट की ओर बहुत आकृष्ट होते थे। किन्तु राजघराना और लन्दन के फैशनेबुल लोग बहुधा अत्यधिक संख्या में टुनब्रिज वेल्स के चारों तरफ ग्रामीण झोपड़ियों में आते थे जहां १६८५ में राजदरबारियों ने अपने प्रयोग के लिए गिरजे का निर्माण कर शहीद चार्ल्स द्वितीय को समर्पित कर दिया था।

इस समय तक समुद्र तट के प्रेमी नहीं थे। डाक्टरों को उसकी वायु के स्वास्थ्यवर्द्धक गुण नहीं ज्ञात हुए थे। न कोई समुद्र के जल में नहाना चाहता था और न किनारे पर उसके दर्शन से आनन्द-बिभोर हो उठता था। अंग्रेजों के लिए समुद्र साधारण मात्र था; यह उसके लिये व्यापार का मार्ग, मछलियों का घर, युद्ध स्थल और उसकी विरासत था। किन्तु अभी तक कोई भी समुद्र तट अथवा पर्वतों पर मनुष्य की आत्मा की तुष्टि के लिए नहीं जाता था।

स्टुअर्ट के शासन काल की एक शताब्दी में इंगलैंड की काउन्टियों के वित्तीय उद्देश्यों के लिये बार-बार आकलन किये गये। सबसे धनी काउन्टी मिडिलसेक्स की थी क्योंकि उसमें लंदन का बहुत भाग सम्मिलित था और कम्बरलैंड सबसे निर्धन थी। लंदन और उसकी बाजार के विस्तार के कारण सर्रे १६९३ में द्वितीय स्थान पर आ गया था जबकि १६३६ में उसका अठारहवां स्थान था। धनवानता के इस क्रम में नीचे वर्क्स तथा टेम्स नदी के उत्तर ओर स्थित कृषिबहुल काउन्टियां—हर्ट्स, बेड्स, बक्स, आक्सफर्ड-शायर तथा नार्थेन्ट्स आती थीं। उनमें बड़े कस्बे, औद्योगिक केन्द्र या कोयले की खानें नहीं थी और उनमें कृषि भी मुख्यतया खुले हुए खेतों में होती थी। इस पर विचार करने पर उनकी सम्पदा अद्भुत लगती थी; किन्तु यह लंदन की बाजार से दूर नहीं थी। इस प्रकार से औसतन केन्द्रीय काउन्टियां सबसे धनवान थीं। इसके बाद केण्ट और ससेक्स की दक्षिणी काउन्टियां आतीं थी जिनमें पुराने घेरों वाली भूमि, फलों के उद्यान और भेड़ों के ढालू चरागाह थे। इसके बाद पूर्वी ऐंग्लिया, जिसमें कम वर्षा किसानों को वरदान थी, तथा लंदन से सटी हुई इसेक्स थी। सम्पदा की दृष्टि से इससे नीचे क्रम में राजधानी से दूर वेस्ट थी जिसकी जलवायु अधिक नम थी। इस क्रम में सबसे अन्त में उत्तरी भाग था जो कुछ समय पहले तक उपद्रवग्रस्त और निर्धन था। इंगलैंड में निर्धनतम सात काउंटियां चेशायर, डर्बीशायर, यार्कशायर, लंकाशायर, नार्थम्बरलैंड, डरहम और कम्बरलैंड थीं। उत्तरी शायरों की निर्धनता और भी वलिक्षण थी क्योंकि उन सभी में कोयले की खानें थीं और यार्कशायर और लंकाशायर में सूती कपड़ों के कारखाने भी थे। किन्तु इन उद्योगों में उत्पादित सम्पदा का बृहत् मात्रा में उपयोग इन उत्तरी भागों में कृषि के विकास के लिये इस समय तक नहीं किया गया था। ऐसा आने वाली शताब्दी में किया गया जब टेनेसाइड की खानों की सम्पदा

को भूमि पर पडोसी काउटियो के मैदानी फार्मो को उपजाऊ बनाने के लिये अधाधुध व्यय किया गया।

यदि ग्लूसेस्टर से बोस्टन तक एक रेखा खीची जाय तो वेल्स को निकालने पर इगलैंड का क्षेत्रफल लगभग दो समान भागो मे—पूर्वी-पश्चिमी तथा दक्षिणी-पूर्वी अर्द्धाशो मे—विभक्त हो जाता है। आजकल बहुसख्यक जनसख्या इस रेखा के उत्तरी-पश्चिमी ओर बसी है। इसका कारण भारी उद्योगो का विकास है यद्यपि कुछ समय पूर्व से दक्षिण की ओर जनसख्या का दबाव बढना प्रारभ हो गया है। परन्तु यह सभव है कि चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल मे रेखा के उत्तर पश्चिम मे केवल चौथाई जनसख्या रहती हो। भूमि-कर विवरणो से यह सकेत मिलता है कि उत्तरी-पश्चिम आधे भाग की सम्पदा केवल ५ १४ थी जबकि आबकारी के विवरणो मे यह केवल १ ४ थी। (ऑग **इगलैंड इन दि रेन ऑफ चार्ल्स द्वितीय,** पृष्ठ ५१)।

सत्रहवी शताब्दी की अवधि मे वार्विकशायर मे औद्योगिक प्रगति और कृषि पर उसकी प्रतिक्रियाओ को दर्शाने वाले परिवर्तन हो चुके थे। एलिजाबेथ के शासन मे कैमडेन ने अपनी कृति **ब्रिटेनिया** मे लिखा था कि ऐवन ने वार्विकशायर का दो भागो मे विभाजन किया था फेल्डन अथवा नदी के दक्षिण-पूर्व मे खुले हुए खेतो का सम्पन्न सिचित क्षेत्र, और उत्तर-पश्चिम मे जगली क्षेत्र (आर्डेन का जगल)। विलियम तृतीय के शासनकाल मे, गिब्सन, जो बाद मे लदन का सुप्रसिद्ध बिशप हो गया था, ने **ब्रिटेनिया** का एक नया सस्करण प्रकाशित किया जिसमे कैमडेन के समय के उपरान्त होने वाले परिवर्तनो पर टिप्पणिया जोड दी गई थी "तब आर्डेन का जगल समाप्त हो गया था और उसके स्थान पर एक धनी सिचित क्षेत्र विकसित हो गया था "पडोस की काउटियो, जैसे बिरमिघम और ब्लैक कट्री, मे लोहे के कारखानो ने लकडी की इतनी विशाल मात्राओ को नष्ट किया कि उससे शीघ्र ही ग्रामीण क्षेत्र कुछ अधिक खुला हुआ हो गया और धीरे धीरे खेती होने लगी। इतने पर निवासियो ने कुछ तो अपने परिश्रम से और कुछ रेह मिट्टी की सहायता से बहुत से जगल और बजर भूमि को खेती और चरागाह के लिए इस्तेमाल कर लिया जिसमे उन्होने इतना अनाज, पशु, पनीर और मक्खन पैदा किया जो न केवल उनके उपयोग के लिये पर्याप्त थे प्रत्युत् अन्य काउटियो को भी दिये जाते थे।"

इसी अवधि मे ऐवन के दूसरी ओर फेल्डन, जो किसी समय महान खेतिहर क्षेत्र था और ब्रिस्टल को अन्न की पूर्ति करता था, मुख्यतया घास का मैदान हो गया था और गिब्सन के अनुसार, बहुत से गावो की जनसख्या कम होकर कुछ गडरियो तक सीमित हो गई थी। उसके विचार से फेल्डन मे चरागाह मे परिवर्तन हो जाने के कारण ऐवन के दूसरी ओर हाल मे खेती के अधीन लायी गई पुरानी जगली भूमियो का श्रेष्ठ खेती योग्य गुण था। यहा तब वार्विकशायर के दोनो ओर घेरेबन्द खेतो मे

विशाल वृद्धि हुइ थी—उत्तर पश्चिम की ओर पुराने जगत ओर बजर का घेरा था और दक्षिणपूर्व की ओर पहले के खुले हुए खेतो की बाडे। यह सब कुछ स्टुअर्ट काल मे हुआ क्योकि घेरो के विरुद्ध ट्यूडरकाल मे जो तीव्र भावना थी वह उस काल मे समाप्त हो गई थी।[1]

स्टुअर्ट के काल मे बिरमिघम और उसके पश्चिम मे ब्लैक कण्ट्री मे लोहे के व्यापार मे तीव्र वृद्धि होने के बावजूद लोहे मे कोयले की आग (भट्टियो) का इस्तेमाल होता था और लदन तथा अन्य सभी क्षेत्रो मे जहा यह आसानी से पानी के रास्ते भेजा जा सकता था तो यह नियमित रूप से घरेलू ईधन बन गया था। इन दशाओ मे स्टुअर्ट काल मे कोयले का व्यापार बढ गया था जो उस पहले के काल के लिये उतना ही आश्चर्यजनक था जितना कि उन्नीसवी शताब्दी के प्रारभ मे जो कोयला और लोहे का युग कहलाया।[2] इस प्रकार की दूसरी वृद्धि थी।

---

[1] कम्डन के काल के पश्चात 'एडिशन्स टु वारविकशायर' नामक अपने लेख मे गिब्सन ने **ब्रिटेनिया** के १६६५ के सस्करण (पृ० ५१०-१२) मे यह उल्लेख किया है कि स्ट्रैटफोर्ड के गिरजाघर मे वेदी के नीचे उसी स्थान का निवासी विलियम शेक्सपीयर लेटा हुआ है जिसकी प्रतिभा और महान् योग्यताओ का प्रमाण उसके उन ४८ नाटको मे मिलता है जिन्हे छोडकर वह मरा था। वर्तमान मे केवल ३७ नाटको की जानकारी है किन्तु उपरोक्त उल्लेख मे यह स्पष्ट हो जाता है कि शेक्सपीयर को पहले ही अपने देशवासियो की ओर से पर्याप्त सम्मान प्राप्त हो गया था।

[2] श्री नेफ ने अपनी कृति **राइज ऑफ दि ब्रिटिश कोल इण्डस्ट्री,** पृ० १९-२०, (रुतलेज) मे जो निम्नाकित आकडे दिये है वे इस बात को दर्शाते है कि एलिजाबेथ और विलियम तृतीय के शासनकालो के बीच कोयले के उत्पादन मे कितनी तीव्र वृद्धि हो चुकी थी। ये आकडे कोयले की खानो का भौगोलिक वितरण भी दर्शाते है, जो लगभग वैसा ही था जैसाकि वर्तमान काल मे है।

अनुमानित वार्षिक उत्पादन (टनो मे)

	१५५१-६०	१६८१-९०	१७८१-९०	१९०१-१०
डरहम तथा नार्थम्बरलैंड	६५,०००	१२,२५,०००	३०,००,०००	५,००,००,०००
स्काटलैंड	४०,०००	४,७५,०००	१०,००,०००	३,७०,००,०००
वेल्स	२० ०००	२,००,०००	८,००,०००	५,००,००,०००
मिडलैंड्स	६५ ०००	८,५०,०००	४०,००,०००	१०,०१,८०,०००
कम्बरलैंड	६,०००	१,००,०००	५,००,०००	२१,२०,०००
किंग्सवुड चेज तथा सोमरसेट	१०,०००	१,००,०००	१,४०,०००	११,००,०००

सम्पूर्ण सत्रहवी शताब्दी मे राष्ट्रीय सम्पदा की वृद्धि के साथ-साथ समुदाय के बहुत से वर्गो के कल्याण मे कोयले का बहुत महत्वपूर्ण भाग रहा किन्तु दूसरी ओर स्वय खनिको के जीवन मे औद्योगिक क्रान्ति के कम सुखदायी लक्षणो का विकास भी किया। उनके पूजीवादी मालिक उनके जीवन और श्रम की दशाओ को देखते नही थे और उनके बारे मे कम ध्यान देते थे। जैसे गड्ढे अधिक गहरे हो जाते थे खनिको को जमीन के भीतर अधिक समय व्यतीत करना पडता था और वे अधिकाधिक शेष मानव समाज मे पृथक होते जाते थे। आग की नमी के कारण विस्फोटो की सख्या बढ जाती थी और वे अधिक भयानक होते थे। जमीन के भीतर कोयला ढोने के लिए स्त्रियो और बच्चो को अधिकतर नौकर रखा जाता था। डरहम और नार्थम्बरलैंड मे हजारो खनिको और टाइन की कोयला ढोने वाली नावो के मल्लाहो के महान सगठन बहुत थोडी सफलता पाकर अपनी जीवन दशाओ को सुधारने का प्रयत्न करते थे। स्काटलैंड मे खनिको की स्थिति खानो की सेवा करने के लिये बाध्य बिके हुए मजदूरो जैसी हो गई थी। इगलैंड मे ऐसा नही हुआ था किन्तु खनिको और उनके परिवारो की दशा कई बातो मे समुदाय के अन्य किसी बडे वर्ग की तुलना मे अधिक खराब थी।

श्री नेफ, जिसने स्टुअर्ट और हैनोवरो के प्रारभिक कालो मे कोयला खनन की दशाओ से सम्बन्धित बहुत से तथ्य सग्रह किये थे, ने लिखा है

"कोयले के कारण वर्गो के बीच एक नई खाई पैदा हो गई थी। अनेक कठिनाइयो और निर्योग्यताओ के बावजूद मध्यकालीन किसानो और दस्तकारो को अपने पडोसियो मे अलग नही किया जाता था जैसा कि सत्रहवी शताब्दी मे अधिकाश कोयले की खानो के क्षेत्रो मे कोयला खनिको की स्थिति थी।"

इसके अतिरिक्त स्वय कोयला-खनन उद्योग मे पूजीवादी मालिको और शारीरिक श्रमिको के बीच सम्पूर्ण अलगाव था। यह स्थिति वैसी ही थी जैसी आगे चलकर कई अनेक दूसरे-रोजगारो मे सामान्यत हो गई थी। वास्तव मे बाद के स्टुअर्ट राजाओ के काल मे भट्टियो के लिये कोयले की आपूर्ति के कारण स्थापित होने वाले अनेक उद्योगो का वही वृहताकार और पूजीवादी स्वभाव हो गया। (नेफ **राइज ऑफ दि ब्रिटिश कोल इण्डस्ट्री**, पुस्तक २, अध्याय ४)।

	१५५१-६०	१६८१-९०	१७८१-९०	१९०१-१०
फोरेस्ट ऑफ डीन	३,०००	२५,०००	९०,०००	१३,१०,०००
डेवन तथा आयरलैंड	१,०००	७,०००	२५,०००	२,००,०००
योग	२,१०,०००	२९,८२,०००	१,०२,९५,०००	२४,१९,१०,०००
निकटतम वृद्धि		१४ गुनी	३ गुनी	२३ गुनी

मिडलैंड कोयला क्षेत्र मे यार्क्स, लैंक्स, चेशायर, डर्बीशायर, श्रोपशायर, स्टाफ्स, नाट्स, वारविकशायर, लीसिस्टशायर और वोरसेस्टशायर की खाने सम्मिलित थी।

किन्तु ऐसे बहुत से जिले थे जिन्हे नदी अथवा समुद्र के मार्ग से कोयला नही मिल पाता था। जगली लकडी मे कमी हो जाने के कारण इनमे से कुछ क्षेत्रो मे खाना बनाने और गर्म करने जैसी प्रारंभिक आवश्यकताओ के लिये भी इधन का अभाव हो गया था। वे इस स्थिति मे तब तक बने रहे जब तक अच्छी सडको, नहरो और अन्तत बाद के समय की रेलगाडियो द्वारा कोयला घर घर नही पहुचाया गया। इस तरह विलियम तृतीय के शासनकाल मे साहसिक यात्री कुमारी सेलिया फेन्नेस[1] ने दक्षिणी वेल्स को घोडे पर यात्रा की थी। पेन्जन्स मे उन्हे रात का जो भोजन मिला वह ऐसी आग पर उबाला गया था जो झाडियो को जला कर बराबर प्रज्जवलित रखी जाती थी और इसी पर मास भी पकाया जाता था। कारण यह था कि कार्न के जगल नष्ट हो गए थे। युद्ध के समय फ्रासीसी सैनिक दक्षिणी कार्निश बन्दरगाहो मे वेल्स से आये हुए कोयले को उतारने नही देते थे। लीसेस्टरशायर मे राज्य के गोबर को खेतो मे खाद न डाल कर उसे सुखा कर ईधन के लिये सुखा लिया जाता था।

१६६५ मे भी कैमडेन की **ब्रिटेनिया** के अपने सस्करण मे गिब्सन ने 'जगलो मे ढकी हुई' आक्सफोर्डशायर की पहाडियो के एलिजाबेथ कालीन पुरातत्वान्वेषी के वर्णन पर टीका करते हुए लिखा है 'पिछले गृह-युद्धो के समय तक यह इतना अधिक बदल गया है कि चिल्टर्न के अतिरिक्त ऐसे स्थान बहुत कम है जिनमे आज भी उपरोक्त वर्णन के अनुकूल विशेषता मिलती है। क्योकि उन भागो मे इधन इतना महगा है कि वह आक्सफोर्ड और उस क्षेत्र के उत्तरी भाग के अन्य शहरो मे आम तौर पर तोल कर मिलता है।" परन्तु आक्सफोर्ड के नागरिक और विश्वविद्यालय के सदस्य टेम्स नदी की नौकाओ द्वारा लाये गये कोयले से खाना पकाते थे और अपने कमरो को गर्म करते थे जबकि उस क्षेत्र के उत्तरी भाग मे नगरो मे लकडी के ईधन का अधिक गभीर अभाव था।

अगली शताब्दी मे बहुत से अग्रेजी परिवारो का भोजन रोटी-पनीर था जो ऐसा रसोई के ईंधन के अभाव के कारण करते थे। सर्दी मे उनके निर्धन घरो मे अवश्य ही भयानक ठड रहती होगी। देश के उन भागो मे जहाँ लकडी युग और कोयले-युग मे कालान्तर था वहाँ गरीबो के लिए बडी मुसीबत थी और अमीरो को कुछ असुविधा होती थी।

---

[1] क्रिस्टोफर मारिस द्वारा सपादित **दि जर्नीज आॅफ सोलिया फेनीज** (१६४७)। यह दिलचस्प और महत्वपूर्ण अभिलेख अशत विलियम तृतीय और अशत रानी ऐन्नी के शासनकालो मे किये गये भ्रमणो पर आधारित है। कुमारी फेनीज एक साधन-सम्पन्न और विमतिवादी महिला थी। वह तृतीय वाईकाउन्ट सेयी और सैले की बहिन थी। वह इगलैड मे आमोद-प्रमोद और जिज्ञासा के लिये घोडे पर भ्रमण करती थी।

परन्तु पक्की सडक बनने के काल मे पूर्व, भीतरी भागो मे दूरस्थ खानो से बहुत दूरी तक कुछ व्यय करके कोयला नही ले जाया जाता था जहा यह सेवा सुसगठित होती थी। इस प्रकार कुमारी फिन्नेस ने लिखा है कि ब्रिस्टल से कोयले से लादी नावे नदी के मार्ग मे ब्रिजवाटर होते हुए टाउटन से तीन मील की दूरी तक आ जाती थी 'जहा वे नाव कोयला उतार देती थी और वहा से चारो ओर घोडो पर बोरो से लाद कर कोयला भेजा जाता था। एक घोडे पर एक बार मे दो बुशल कोयला ले जाया जाता था जो उतारने के स्थान पर अठारह पेंस का होता था। जब यह टाउटन लाया जाता था तो उसका दाम दो शिलिंग होता था। कोयला ढोने वाले आते-जाते घोडो से सडके भरी रहती थी।

अन्य सभी नगरो की तुलना मे लदन की वृद्धि अधिक थी जो बिना किसी अवरोध के पुन स्थापना काल के बाद भी कायम रही। सन् १७०० मे इस राजधानी मे इगलैड की ५५ लाख जनसख्या का लगभग १/१० भाग रहता था।[1] इससे छोटे आकार के नगर ब्रिस्टल और नार्विच थे जिनमे से प्रत्येक की जनसख्या लगभग ३०,००० थी। आनुपातिक दृष्टि से लदन का व्यापार बडा था। १६८० मे लदन के बन्दरगाह के आबकारी विभाग के प्रशासन पर २०,००० पौंड, ब्रिस्टल मे २००० पौंड तथा न्यूकैसल, प्लाईमाउथ और हल मे से प्रत्येक मे ६०० पौंड व्यय होते थे। शेष नगर कही भी नही थे। न्यूकैसल बन्दरगाह की सारी आमदनी कोयले के निर्यात से होती थी जिसका एक तिहाई लन्डन को जाता था। व्हेल के शिकार और मछलियो के उद्योग के कारण तथा उत्तरी इगलैड का प्रमुख फौजी नगर होने के नाते हल तरक्की पर थी। विशाल ब्रिस्टल और उदीयमान लिवरपूल की भाति प्लाईमाऊथ ओर अटलाटिक सागर के पार के उपनिवेशो से बढते हुए व्यापार से लाभ होता था। दूसरे, यह रॉयल नेवी (शाही समुद्री सेना) का पश्चिमी केन्द्र होने के कारण भी महत्वपूर्ण था।

जहाजी कारखानो के कारण भिटबी, यारमाउथ और हारविक की तरक्की हो रही थी। किन्तु अन्य बहुत से बन्दरगाहो, जैसे किंग्ज लिन तथा पूर्वी ऐंगलिया के छोटे बन्दरगाहो, का ह्रास हो रहा था क्योकि टेम्स नदी के मुहाने मे व्यापार बढ रहा था अथवा अमरीकी व्यापार पाने के लिये वह पश्चिम की ओर मोड दिया जाता था।

---

[1] दीक्षाओ के रजिस्टरो से यह अनुमान लगाया गया है कि सन् १७०० मे जब इगलैड और वेल्स मे ५५,००,००० से भी अधिक जनसख्या थी, मेट्रोपोलिटिन मे ६,७४,३५० निवासी थे। इनमे से मुख्य नगर मे लगभग २,००,००० निवासी थे (श्रीमती जार्ज, **लडन लाइफ,** आदि, पृष्ठ२४-२५, ३२९-३३०)। इगलैड और वेल्स मे जनसख्या के आकडो के लिए देखिये तालबोट-ग्रिफिथ, **रायल स्टैटिसटिकल सोसाइटी जर्नल,** खण्ड ९२, भाग २, पृ० २५६-२६३

जहाजरानी के कानूनो का प्रभाव अटलाटिक सागर के पार इगलैड के औपनिवेशिक व्यापार को बढाना था और स्कैन्डीनेविया तथा बाल्टिक से उसके विदेशी व्यापार को कम करना था। इससे पूर्वी तट के सभी बन्दरगाहो, लन्डन को छोडकर, पर हानिकर प्रभाव पडा। लम्बी समुद्री यात्राओ की आवश्यकता की पूर्ति के लिए बडे बडे जहाज बन जाने से पश्चिमी तट के फौवी तथा बाइडफोर्ड जैसे छोटे बन्दरगाहो की भी क्षति हुई। इसके अतिरिक्त दूसरे नगरो के व्यापार पर लन्डन के व्यापारियो और पूजी का नियत्रण था।

विदेशो मे सम्पदा एव आवासियो के निरन्तर आते रहने से लदन मे एक जीवन्त और आरोग्यप्रद (पुन पूर्ण) शक्ति थी जिसकी १६६५-६६ के ताउन और अग्निकाड ने कठिन परीक्षा ली थी। ये बडी भयकर विपदाये थी किन्तु फिर भी राजधानी की शक्ति, सम्पन्नता और जनसख्या की भावी वृद्धि पर इसका शायद ही कोई प्रभाव पडा।

लन्डन का विख्यात ताउन तीन शताब्दियो मे ताउनो की एक शृंखला मे केवल अन्तिम था जो शायद सबसे अधिक विनाशकारी नही था। क्रेसी और पाईटियर्स के अभियानो के बीच मे सुदूर पूर्व के किसी अनजाने स्रोत से आकर काली मौत पहले यूरोप भर मे फैल गई थी। वह साधारणतया किसी भी नई बीमारी की भाति सर्व-व्यापी और हिसात्मक थी। छोटे छोटे गाव भी इससे नहीं बचे थे। बाकेसियो, फ्रायसार्ट और चासर के देशवासियो के एक तिहाई, और सभवतया आधे लोग, तीन वर्षो के भीतर मर गए थे। यह काली मौत इगलैड की भूमि मे बनी रही थी और ताउन के नाम से विख्यात हो गई थी। पुन यह कभी भी सम्पूर्ण देश मे एक साथ नही फैली किन्तु लगातार भिन्न भिन्न स्थानो पर फैलती रही 'विशेपकर कस्बो बन्दर-गाहो तथा नदी किनारे की आबादियो मे' जहा जहाजो द्वारा लाये गए पिस्सू से पीडित चूहो की वृद्धि हो जाती थी। लडन मे लकास्टर और ट्यूडर के राजाओ के काल मे ताउन दीर्घ काल तक स्थानीय और प्राय निरन्तर बना रहा। स्टुअर्ट के शासनकाल मे यह बीमारी यदा कदा किन्तु भयानक रूप मे फैली। जेम्स प्रथम के शासनारुढ होने पर लडन मे उल्लास की अवधि ताउन फैल जाने के कारण कम हो गई थी। इसमे तीस हजार व्यक्ति मरे थे। जब चार्ल्स प्रथम शासनारूढ हुआ था तो दूसरी बार ताउन फैला जो पहले की अपेक्षा कम विनाशकारी था। १६३६ मे इससे भी कम गभीर ताउन फैला। उसके पश्चात् लगभग तीस वर्ष तक लडन इस रोग से अपेक्षतया मुक्त रहा। इस काल मे ऐसी दूसरी अनेक घटनाए घटी जिनसे लन्डनवासी अपने बाप-दादो द्वारा भुगती हुई ताउन की विपत्तियो के बारे मे बाते करना भूल गए। इसलिए जब अन्तिम बार १६६५ मे ताउन फैला, यद्यपि पहले की अपेक्षा इससे लडन-वासियो का कम सहार हुआ था, लोगो की कल्पना पर इसका अधिक आघात हुआ क्योकि तब यह महानतर सभ्यता, सुविधा और सुरक्षा के युग मे फैला था और जब

ऐसी विपदाओ का लोग कम स्मरण करते थे और उनकी कम उपेक्षा करते थे। और ऐसा लगता था कि भगवान के आदेश पर इस विपत्ति के ठीक बाद दूसरी विपत्ति आ गई जिसकी तुलना लदन के सबसे प्राचीन अभिलेखो मे उल्लिखित किसी भी विपत्ति से नही की जा सकती थी।[1]

महान अग्नि (१६६६) पाच दिनो तक जलती रही जिससे टावर और टेम्पल के बीच का सम्पूर्ण मुख्य शहर नष्ट हो गया। फिर भी सभवतया राजधानी की आधी जनसख्या भी बेघरबार नही हुई थी। नगर की प्राचीरो के बाहर स्वतत्र बस्तियो को नाम मात्र को हानि हुई थी और इन्ही मे नागरिको का अधिकाश भाग रहता था। पिछले साठ वर्षो मे लदन की बडी तीव्र वृद्धि हो रही थी। जनसख्या पाच लाख से कुछ ही कम थी। इगलैड के अन्य सभी नगरो मे नगरवासी देहातो के अति निकट रहते थे। वे दशाये वास्तव मे नगर-गाव की मिली जुली दशाये थी। केवल लन्दन मे महान-नगर का जीवन बढ रहा था। कई पहलुओ मे यह विचित्र ढग से अस्पृहनीय था। नगर के बाहर स्वतत्र बस्तियो से परे गरीबो की भीड गन्दी बस्तियो मे रहती थी। ये गन्दी बस्तिया सेट गाइल्स की, क्रिपलगेट, व्हाइट चैपल, स्टेपनी, वेस्टमिन्स्टर, लैम्बेथ नाम की थी जहा उनकी जनसख्या मे अत्यधिक वृद्धि होती थी यद्यपि उनके शिशुओ मे अत्यधिक ऊँची मृत्यु दर थी।

आग और इमारतो के पुनर्निर्माण से लन्दन की गन्दी बस्तियो की जनसख्या की नैतिक दशाओ और स्वच्छता मे कोई सुधार नही हुआ। क्योकि ताउन की उत्पत्ति और उसका केन्द्र सदैव नगर के बाहर स्वतत्र बस्तियो मे होता था जहा सबसे अधिक निर्धन लोग रहते थे। चूकि इस आग से ये क्षेत्र नही जले थे इसलिए इनका पुनर्निर्माण भी नही हुआ। १७७२ मे डेफो ने घोषणा की थी कि 'उनकी वही स्थिति है जो पहले थी।' इसलिए यह स्पष्ट है कि आग से विनष्ट होने के बाद 'लन्दन के

---

[1] गृहयुद्ध (१६४२-१६४६) की अवधि मे द्वीप के अन्य भागो मे भी ताउन फैल गया था, विशेषकर दक्षिण और पश्चिम मे, कुछ नगरो मे, जैसे चेस्टर, लगभग चौथाई निवासी इससे मर गये थे। 'लन्दन का ताउन' (१६६५) केवल राजधानी तक सीमित नही रहा। ईस्ट एजिलिया इससे बहुत बुरी तरह ग्रस्त था किन्तु यह रोग पश्चिम और उत्तर मे दूर तक नही फैला। लैगडेल और वेस्टमोरलैड मे परम्परा से अब भी यह सकेत मिलते है कि एकाकी कृषक घरो के खडहर वे है जहा के निवासी ताउन से मर गये थे क्योकि वहा एक सैनिक के कपडे भेजे गये थे जो उक्त रोग के कीटाणुओ से दूषित थे। परन्तु घाटी का शेष भाग और जिला इस रोग से दूर रहा। अनुमान है कि सैनिक के कपडो मे ताउन के पिस्सू छिपे हुए थे।

पुर्ननिर्माण का ताउन की समाप्ति, इंगलैंड में अपने अन्तिम महाविनाश के बाद, का हम प्रमुख कारण नहीं मान सकते।

लन्दन के जिस भाग में आग के कारण परिवर्तन आया था वह उसका केन्द्रीय व्यापारिक और आवासीक क्षेत्र था। इसमें वे महान व्यापारिक गृह सम्मिलित थे जहां व्यापारी और उनके सुव्यवस्थित तथा सुपोषित परिवार कार्य करते और सोते थे। मध्यकाल से चलते आये धन, व्यापार और आतिथ्य सत्कार के इन गृहों, जिनके पिछवाड़े बगीचे थे और भीतर आंगन की सिली-पुती दीवार तंग और टेढ़ी-मेढ़ी गलियों के किनारे खड़ी थी। कहीं कहीं द्वार और खिड़कियों के छज्जे दूकानों के सामने वाले भाग के ऊपर तक इतना निकले होते थे उनकी अट्टालिकाओं में काम करने वाले नव-शिक्षित रास्ते चलते हुए हाथ मिला लेते थे। जब भयानक आग हवा में भी तेज भागने लगी तो इन पुराने तथा दुर्बल मकानों ने उसकी लपटों को खूब बढ़ाया। उन थोड़े से स्थानों में जहां ईंटों के मकान बने थे आग रुकी तथा उसे बुझाने का प्रयास किया जा सका। व्यापारियों ने इस अवसर का उपयोग ईंटों के मकान बनाने में किया। इस बार उनके मकानों तथा सड़कों का सुन्दर होने की अपेक्षा अधिक व्यावहारिक सम्बन्ध था। बहुत सी प्राचीन इमारतों को गिरा कर उनके स्थान पर नई इमारतों को बनवाने की बाध्यता के कारण नगर की सफाई में भी सुधार हो गया।

इंगलैंड में पुनः ताउन नहीं फैला। इसका अंशतः कारण था ईंटों की इमारतों में वृद्धि, दरवाजों और खिड़कियों से खर-फूस और कपड़े की लटकती हुई चटाइयों के स्थान पर दरियों और चोखटों का प्रयोग, क्योंकि इससे पिस्सुओं और पिस्सुओं वाले चूहों को छिपने का स्थान ही नहीं मिलता था। किन्तु यह सम्भव हो सकता है कि ताउन की समाप्ति में किसी मानव प्रयास का स्थान न रहा तो प्रत्युत् पशुजगत में एक अदृश्य क्रान्ति इसके लिए उत्तरदायी हो। इस समय तक मध्ययुगीन काले चूहों का उन्मूलन कर उनका स्थान भूरे चूहों ने ले लिया था। जिस सीमा तक काले चूहों पर पिस्सू पलते थे उतना भूरे चूहों पर नहीं। (**कैम्ब्रिज हिस्टॉरिकल जर्नल,** १९४१ में साल्टमार्श का लेख)।

लन्दन नगर का पुर्ननिर्माण ऐसी गति से हुआ जिससे संसार चकित हो गया।

"सर जॉन रेरेसबी ने लिखा है कि आग के प्रभाव इतने आश्चर्यजनक नहीं थे जितना की इस नगर का पुनः निर्माण। राजा और पार्लियामेन्ट की देखरेख और स्वयं नगर कि विशाल धन तथा सम्पन्नता के कारण सारा नगर ईंटों से बड़ी शान-शौकत के साथ चार-पांच वर्ष में पुनः बनकर खड़ा हो गया। पहले नगर का अधिकांश भाग तख्तों और चूने से बना था।"

ताउन से लन्दन की जनसख्या का पाचवा भाग नष्ट हो गया था। यह क्षति भी धीरे धीरे अदृश्य रूप से पूरी हो गई क्योकि इगलैड के सभी शायरो से तथा यूरोप के आधे देशो मे आव्रजक आकर यहा बस गए थे।

नगर का मध्ययुगीन और ट्यूडरकालीन भाग आग की लपटो मे जलकर नष्ट हो गया था। केवल सडको और गलियो की भूमि योजना के चिन्ह शेष बचे थे। ससार के सबसे विशाल नगर की निर्माण योजना सबसे रद्दी थी और शायद मनुष्य की दृष्टि रेन के सेट पाल जैसी इमारत पर अभी तक नही पडी थी।[1]

पुराने गोथिक कैथेड्राल को मिलाकर ८९ गिरजाघर जलकर भस्म हो गए थे। यदि उन्हे नष्ट ही हो जाना था तो इससे अच्छा कोई दूसरा समय नही हो सकता था। क्रिस्टोफर रेन की शक्ति बहुत बढ गई थी। वह नगर और राज दरबार मे विख्यात हो चला था। नवीन लन्दन की धार्मिक इमारतो पर उसकी प्रतिभा की स्पष्ट छाप थी। आज भी (१९३९) जिन सडको के पुनर्निर्माण के बावजूद जहा उसके बनाए हुए गिरजे खडे है वे उस युग की चिर प्रतिष्ठा गरिमा एव मध्ययुग के गिरजो के स्थान पर नये गिरजो के निर्माता व्यक्ति की गरिमा के साक्षी है।

एक महान् राष्ट्र की मर्यादा के अनुकूल सामुदायिक प्रयास से सेट पाल गिरजे का पुनर्निर्माण किया गया। ससद ने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए लन्दन के बन्दरगाह मे आने वाले कोयले पर कर लगा दिया। यह महान् कार्य साल व साल दृढता से चलता रहा और इसमे पोप-षड्यन्त्र, क्रान्ति एव मार्लबारो के युद्धो के कारण उत्पन्न आवेश से कोई अवरोध नही आया। रानी ऐन्नी के उच्च गौरव काल मे, अपने निर्माता की मृत्यु के बारह वर्ष पहले, यह कार्य सम्पूर्ण हो गया था।

पोर्टलैण्ड के विचित्र प्रायद्वीप की खानो से सीधे लाए गए सफेद पत्थर से सेट पाल के गिरजे का निर्माण किया गया था। यद्यपि लोग बहुत पहले से इन खानो से परिचित थे किन्तु स्टुअर्ट काल मे ही पोर्टलैड पत्थर का व्यापक स्तर पर उपयोग होना प्रारम्भ हुआ था। रेन के अतिविशाल कार्य की आवश्यकताओ ने पोर्टलैड द्वीप तथा उसके निवासियो को नया जीवन दिया। विशाल पाषाण-खाने खुल गई थी और सडके तथा पुल बन गए थे। "एजेन्टो के वेतनो, घाट-समूहो तथा मार्गो की मरम्मतो, पुलो तथा क्रेनो और उनके निरीक्षण तथा सचालन, पाषाण खानो के कार्य के नियमन तथा द्वीप निवासियो से मामले तय करने के लिए, लन्दन से भेजे गए अनेक व्यक्तियो के खर्चों पर विशाल धनराशि व्यय की गई थी।" **इकनामिक हिस्टारिकल रिव्यू,** नवम्बर, १९३८)।

---

[1] यह वाक्य भयानक अग्निकाड के पूर्व लिखा गया था।

इस काल के पश्चात् इगलैंड के स्थापत्य इतिहास मे पार्टलैंड पत्थर का महत्वपूर्ण स्थान हो गया। विशेषकर यह रेन तथा गिब्ज़ के महान् कार्य की शीतल भव्यता से सम्बन्धित है वैसे ही जैसे उस काल की साधारण निवास की इमारतो मे उष्मता युक्त लाल ईंट सुविधाजनक ग्राहस्थ्य सरलता के अनुकूल थी।

अतिरिक्त अध्ययन के लिए पुस्तके :

इस अध्याय की टिप्पणियो मे उल्लिखित पुस्तको के अतिरिक्त देखिए—पेपीज़ एव इवेलिन की **डायरिया**, आर्थर ब्रियाट, **लाइफ ऑफ पेपीज़**, डेविड ऑग, **इगलैंड इन दि रेन ऑफ चार्ल्स सेकण्ड** (१९३४) अध्याय २, ३, बेसिल विली **दि सेवेन्टींथ सेन्चुरी बैकग्राउण्ड** (१९३४)।

अध्याय १०

डिफो कालीन इंगलैंड[1]

रानी ऐन्नी, १७०२-१७१४—जार्ज प्रथम, १७१४-१७२७—मार्लबारो के युद्ध, १७०२-१७१२—स्काटलैंड के साथ संसदीय एवं आर्थिक एकता, १७०७

जब रानी ऐन्नी के काल के इगलैड और उसके दैनिक जीवन के सर्वेक्षण की आवश्यकता होती है तो हमे डैनियल डिफो का स्मरण हो जाता है जो घोडे पर सवार होकर अकेला देहाती क्षेत्रो मे निरीक्षण करता घूमता था। पर्यवेक्षण के लिए ऐसे भ्रमणो पर ब्रिटेन की यात्रा करना उसका एक कार्य था। दिन की यात्रा समाप्त कर रात्रि मे किसी बाजार के कस्बे मे वह अपने स्वामी राबर्ट हार्ले के बारे मे स्थानीय राय पर अपना प्रतिवेदन लिखा करता था। उसका स्वामी उसी के समान एक रहस्यप्रिय व्यक्ति था जो गोपनीय ढग से एकत्र सही सूचना का प्रेमी था। रविवार को वह 'डिसेन्टर्स चैपल' (असहमतिवादियो के गिरजाघर) मे जाता था और वहा अन्य पूजा करने वालो का पर्यवेक्षण करता तथा उनके कार्यकलापो को जानने को उत्सुक रहता था। एक व्यापारी होने के अतिरिक्त वह नानकन्फार्मिस्ट (प्रचलित धर्म-विरोधी) भी था। परन्तु वास्तव मे वह एक कठोर नैतिक भावना से युक्त नही था क्योकि वह सभी लोगो के लिए सभी कुछ हो सकता था। वह फैशनेबुल प्रदर्शन की अपेक्षा सादगी तथा ठोस कार्य की तरजीह देने वाला शुद्धिवादी तो नही ही कहा जा सकता था। उसके सौ वर्ष पश्चात् इगलैड मे घूमने और उसके बारे मे लिखने वाले कोबट की भाति वह एक यथार्थवादी था और जनसाधारण मे लोकप्रिय था, किन्तु अपने उत्तराधिकारी के विपरीत वह तत्कालीन सत्ता के विरुद्ध क्रोध से अधा नही रहता था। ऐन्नी का काल सतोष के एक लम्बे युग की पूर्वसूचना थी और स्विफ्ट से भी अधिक डिफो अपने समय का विशिष्ट व्यक्ति था। जहा एक और प्रतिष्ठित भूपति कोबेट

---

[1] केवल कुछ वर्ष पूर्व मैंने रानी ऐन्नी के शासनकाल मे इगलैड के सामाजिक जीवन पर कुछ अध्याय उसके शासनकाल के इतिहास मे लिखे थे जो प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशक ने ही प्रकाशित किये थे। चू कि अब मैं उनमे कोई सुधार नही कर सकता, अत सामग्री प्रस्तुत पुस्तक मे सम्मिलित है।

ग्रामीणता से ओतप्रोत अर्तात के लिए बहुत दु खी होता था वहा डिफो व्यापारिक समृद्धि के युग के आगमन पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करता था । पहले उसने विवरणात्मक लेखन की कला मे निपुणता प्राप्त की । उसके उपन्यास, उदाहरणत राबिन्सन क्रूसो और मॉल फ्लेडर्स भी दैनिक जीवन के काल्पनिक विवरण है, चाहे फिर उमका सम्बन्ध एक रेगिस्तानी द्वीप से हो अथवा चोरो के अड्डे से । इसलिए इस व्यक्ति ने ऐन्नी के शासन काल के इगलैड का जो भी विवरण दिया है वह वस्तुत इतिहासकार के लिए एक विधि है । इसका कारण यह है कि डिफो प्रथम व्यक्ति था जिसने प्राचीन ससार को आधुनिक पैनी नजर से देखा था । उसके विवरण का अन्य साक्ष्यो की विशाल मात्रा से नियत्रण और विस्तार हो मकता है । किन्तु हमारे विचार और दृष्टि मे इसका केन्द्रीय स्थान है ।[1]

डिफो ने साधारण से साधारण बातो का ब्यौरा शामिल कर इगलैड का जो चित्र प्रस्तुत किया है उससे वहा के एक स्वस्थ राष्ट्रीय जीवन की हमारी धारणा बनती है जिसमे कि नगर और देहात, कृषि, उद्योग एव व्यापार एक सगठित अर्थ प्रणाली के सामजस्यपूर्ण भाग थे । सरकार के प्रशासनिक तत्र का बहुत भाग, विशेषकर निर्धन तथा ह्रासग्रस्त बौरो के कस्बे जिन्हे डिफो हेय समझता था, केवल पुरातन काठ-कवाड था जिसे बडी कठोरता से सरक्षित किया गया था किन्तु आने वाले कई वर्षो तक सुधार के लिए कोई माग नही उठी क्योकि उस समय के इगलैड की विशिष्टता स्वतत्रता का सिद्धान्त था जिसके कारण व्यक्तिगत व्यापार की खूब उन्नति हुई और पुराने वन मे अनेक नये अकुर फूटे । आर्थिक क्षेत्र मे नवीन कल्पना और क्रिया की उस सहज प्रवृति को, जोकि इस द्वीप के स्वभाव का अग थी, उस समय के अधिकारी लोग नही दबा सके ।

इस प्रकार की व्यवस्था से युक्त इगलैड समृद्ध था और युद्ध के समय मे भी सतुष्ट रहता था जो अशत ऐन्नी के शासनकाल के पूर्वार्द्ध मे अच्छी फसलो और सस्ते खाद्य पदार्थो के कारण था । १७०२ से लेकर १७१२ के अन्तिम तीन वर्षो मे, जब फ्रास के साथ युद्ध छिडा रहा, युद्ध की दशाओ के कारण सकट और असतोष के चिन्ह प्रगट होते थे । अन्यथा कृषि, उद्योग और व्यापार मे निरन्तर वृद्धि होती रही । समाज अचेतन अवस्था मे ही औद्योगिक क्रान्ति की ओर बढता गया । जो आगे के सौ वर्षो

---

[1] जार्ज प्रथम के शासनकाल मे उसने अपनी कृति **टूअर थ्रू ग्रेट ब्रिटेन** मे प्रकाशित की थी । किन्तु जिन भ्रमणो पर उसके प्रेक्षण आधारित थे वे अधिकाशतया रानी ऐन्नी के शासनकाल के प्रारम्भिक और मध्य के वर्षों मे किये गये थे । उपरोक्त कृति के प्रथम सस्करण (१७२४-२७) को पुन श्री जी डी एच कौल के सम्पादन मे १९२७ मे प्रकाशित किया गया ।

मे डिफो द्वारा वर्णित-दशाओ से विकसित हुई। समुद्री व्यापार, नदियो मे यातायात, विशेषकर कोयले का, भेड़ो का पालना और कपड़ा व्यापार आढतियो द्वारा कृषि की उपजो का राष्ट्रीय क्रय विक्रय—इन बातो पर डिफो ने बल दिया था। इन्ही बातो के कारण बहुत से भूस्वामी भू—कर देने योग्य हो पाये थे जो मार्लबारो युद्धो का प्रधान अवलम्ब था। वे खिन्न रहते हुए भी कर तब तक देते रहे जब तक युद्ध मे विजय नही हो गई जब उन्होने अपना कार्य सभालने तथा शान्ति स्थापित करने के लिए व्हिग्ज को भेजा।

यह सत्य है कि अक्टूबर मास की शराब पीकर ग्रामीण क्षेत्रपति धनिको तथा व्यापारियो को आर्थिक शोषक, (परजीवी) युद्धकाल मे मुनाफाखोर और विरोधी (विमति-वादी) कहकर कोसा करते थे। वे उनके राजनैतिक जीवन मे सभाव्य प्रवेश से भी खीझते थे क्योकि उसे वे केवल भूस्वामियो अथवा क्षेत्रपतियो का उचित अधिकार मानते थे। किन्तु आर्थिक दृष्टि से इन अवाछित लोगो के कार्यकलापो से बहुत से क्षेत्रपतियो की मालगुजारी दूनी हो गई थी और डिफो को भी अशत इस बात का ज्ञान था। यद्यपि पतन के काल के किसी भी उल्लेख मे सहिष्णुता के अधिनियम (दि ऐक्ट ऑफ टालरेशन) पर खेद प्रकट किया जाता है, फिर भी इस कानून से ही देश मे धन और शान्ति आई।

ऐन्नी और जार्ज प्रथम के शासनकाल मे किसान और दस्तकार की पुरानी जीवन-विधि अब भी कायम थी किन्तु अब यह विलक्षण रूप से अनुकूल परिस्थितियो मे थी। व्यापारी और अन्य मध्यवर्तियो (आढतियो) की साहसिकता ने किसानो तथा दस्तकारो के श्रम से उत्पादित वस्तुओ के लिये नये बाजार खोज लिये थे। इससे उनकी मध्य-युगीन निर्धनता तो दूर हो गई थी परन्तु उनके सरल देहाती तरीके अब भी समाप्त नही हुए थे। व्यापार से कमाये हुए धन का अधिकाश भाग उन्नत जमीदारो द्वारा खेती मे लगाया जाता था जिन्होने व्यापार मे धन लगाकर नया धन कमाया अथवा अपने पुराने धन मे वृद्धि कर ली थी। कस्बो तथा देहातो की इस अन्त क्रिया से जो पुरानी सामाजिक व्यवस्था पर अभी चोट नही करती थी, ऐन्नी को इगलैड मे एक आधारभूत सामजस्य तथा शक्ति उत्पन्न हुई। किन्तु सतह पर मतान्तरो और गुटो से उत्पन्न भयकर विभ्रान्तकारी विरोध व्याप्त थे।

जबकि धर्म राष्ट्र मे भेदभाव उत्पन्न कर रहा था व्यापार उसमे एकता ला रहा था। अत व्यापार की सापेक्षिक महत्ता बढ रही थी और खाता-पुस्तक (बही) अब बाईबल से होड ले रही थी। साठ वर्ष पूर्व शुद्धिवादी धर्म का प्रतीक तलवार का प्रेमी क्रामवेल था और तीस वर्ष पहले जेल मे भजन गाने वाला बुनयान, किन्तु अब शुद्धि-वाद का प्रतीक व्यापारी पत्र-कार डिफो था। क्वेकर भी अब सार्वजनिक स्थानो पर गिरजाघरो के बारे मे भविष्यवाणी करने की अपेक्षा एक मितव्ययी व्यापारी हो गया था

जो शान्त रहने का प्रयास करता था। परन्तु पुरानी आदत की वजह स शुद्धिवादी तथा क्वेकर आम बोलचाल मे अब भी 'धर्मांध' कहे जाते थे। किन्तु यदि बाहर भी धर्मांध लोग थे तो उनमे से एक निश्चित ही न्यायाधीश श्रेडगेट था जो घोडे पर सवार होकर लुटरवर्थ की एक सभा मे गया और वहा उपदेशक को झूठा बताया। फिर भी उच्च पादरियो का क्रोध भरा उत्साह निरन्तर देश भक्ति सम्बन्धी और आर्थिक विचारो के कारण दब जाता था जो टॉरी लोगो के मस्तिष्क मे बहुत प्रबल रूप से कार्य करते थे जिनका अगुआ हार्ले था और जिसके गुप्त नौकर डिफो था इस प्रकार मे इस समय यह द्वीप (इगलैंड) ऐसी स्थिति मे था कि यह भाग्य का साथ तथा अच्छा नेतृत्व मिलने पर युद्ध काल मे पर्याप्त एकता, धन तथा शक्ति का प्रदर्शन कर सकता था और फ्रास के शक्तिशाली लुई को घुटने टेकने पर विवश कर सकता था। लुई अभि-जातो तथा निर्धन कृषको का निर्विवाद स्वामी था और उसने विमातिवादियो (नोन-कन्फोर्मिस्ट्स) को नेन्टेज के इडिक्ट्स (विशिष्ट राजघोषणाओ) को समाप्त कर सदैव के लिए कुचल दिया था।

ब्रिटेन मे कृषि का इतना सुधार हो गया था कि अब मध्यकाल की अपेक्षा गेहू अधिक पैदा होता था। सम्पूर्ण जनसख्या के भोजन का ३८ प्रतिशत भाग गेहू होता था, राई का द्वितीय और जई का तीसरा अथवा चौथा स्थान होता था। अत कीमतो का निर्धारण गेहू अथवा राई के आधार पर होता था।

रोटी बनाने मे गेहू का जो अनुपात था उसकी तुलना मे समस्त अनाजो की उपज मे गेहू का बहुत कम अनुपात था। सम्पूर्ण द्वीप भर मे शराब के लिए सामग्री बनाने के लिए जौ की विशाल मात्रा उगाई जाती थी। उदाहरण के लिए इली के दक्षिण मे कैम्ब्रिजशायर पूर्णतया अनाज उत्पादक क्षेत्र था और जैसा डिफो ने लिखा है "उस अनाज का ५/६ भाग जौ होता था जो साधारणतया जौ की शराब बनाने वाले वेयर, रॉयस्टन तथा अन्य बडे नगरो मे बेचा जाता था।" पश्चिम के सेव की शराब वाले जिलो को छोडकर पुराने काल मे अग्रेज निवासियो, स्त्रियो, पुरुषो और बच्चो का प्रत्येक भोजन के साथ सर्वोत्तम पेय जौ की शराब थी। इस समय इसकी प्रतियोगिता मे शक्तिशाली शराबो तथा चाय और काफी का प्रयाग प्रारभ हो गया था। जौ की शराब अभी भी स्त्रियो का पेय था। १७०५ मे श्रीमती कार्नार्विन ने कुमारी कोक के विषय मे कहा था कि चूकि वह सारी गर्मी बासी जौ की शराब पीती रही थी इसलिए वह बिल्कुल बेहोश रहती थी और उसकी आवाज धीमी तथा अन्तर्मुखी रहती थी। अब तक बच्चे भी थोडी मात्रा मे जौ की शराब पीते थे और बहुधा गन्दे पानी के स्थान पर इसे पीना उनके लिए लाभदायक भी था।

लगभग प्रत्येक स्थान पर जौ की शराब (बार्ली) प्रधान पेय था किन्तु कुछ जिलो मे जो यह प्रधान भोजन भी था। वेल्श की पहाड़ियो के छोटे कृषक उत्तम जौ की रोटिया खाते थे। उत्तरी क्षेत्रो की कृषक जनता जई और राई के विभिन्न प्रकार के

खाद्य पदार्थ बनाकर खाती थी। डा० जान्सन ने बहुत वर्षो पश्चात् लिखा था कि स्काटलेड मे लोगो का प्रधान भोजन जई था। इगलैड के केन्द्रीय जिलो मे राई और जो की उतनी ही प्रतिष्ठा थी जितनी गेहू की। केवल दक्षिण-पूर्व के शुष्क जलवायु वाले जिलो मे गेहू सर्वप्रधान था।

ऐन्नी के राज मे विभिन्न जिलो मे कृषि उत्पादनो का आदान-प्रदान होता था, विशेष रूप से जहा नदियो के मार्ग से यातायात हो सकता था। व्यापक रूप से यही कारण था कि इस अवधि की विशेषता नदियो को गहरा करना और जलद्वार बनाना था। इसके दो पीढियो पश्चात् ड्यूक ऑफ ब्रिजवाटर का कृत्रिम नहरो का निर्माण युग आया।[1] आक्सफोर्ड से लेकर नीचे तक टेम्स नदी तथा उसकी सहायक वे, ली तथा मेडवे सभी मे सक्रिय और भारी यातायात होता था। खाद्यपदार्थ, लकडी तथा पेय पदार्थ लन्दन को जाते थे और वहा से टिन साइड का कोयला तथा विदेशो से आयात किया गया माल नदी के रास्ते ऊपरी भाग मे जाता था। एक विशाल कृषि जिले की प्रमुख बाजारे ऐबिगडन और रीडिग मे लगती थी जो उसकी उपजो को जलमार्ग से राजधानी को भेजती थी। ससेक्स और हैम्पशायर के सागरतट अपना अनाज तथा चेशायर तथा अन्य पश्चिमी काउण्टिया अपना पनीर समुद्री मार्ग से लन्दन भेजती थी जिसमे उन्हे डकिर्क के निजी फासीसी सैनिको द्वारा दिया गया दड भी भुगतना पडता था। वर्ष के कई भागो मे सडके इतनी कमजोर होती थी कि उन पर माल के डिब्बे नही चल सकते थे किन्तु वर्ष की अधिकाश ऋतुओ मे उत्तरी तथा बीच के शायरो से भेडे तथा पशु, हस और पातालमयूर (एक सुन्दर पर वाला खाया जाने वाला पक्षी) राजधानी की ओर हाक लाये जाते थे। सडको के किनारे उगी हुई घास पर चलते हुए वे उसे चरते जाते थे। १७०७ के सघ निर्माण के पहले से ही स्कॉटलैड से प्रतिवर्ष ३०,००० पशु इगलैड मे आते थे। वेल्स के पशुपालको की विचित्र बोली लन्दन के निकट सडको पर सुनाई पडती थी। चार्ल्स द्वितीय द्वारा घोषित एक कानून से केवल आइरलैड के पशु व्यापार का अन्त हो गया था। अग्रेज पशुपालको की ईर्ष्या के कारण इसकी बलि हुई थी।

पहले ही इगलैड और वेल्स को मिलाकर योरप मे आन्तरिक व्यापार के लिए

---

[1] ऐन्नी के शासनकाल के **स्टेट्यूट्स** और **कामन्स जर्नल्स** तथा स्थानीय इतिहासो मे इस बात का पर्याप्त साक्ष्य मिलता है। इनमे से एक उदाहरण को उद्धृत किया जा सकता है, १६९९ मे विसबैंच के निवासियो ने लोकसभा (हाउस आफ कामन्स) को एक याचना-पत्र दिया था ताकि लार्क नदी मे नौकाए और जहाज चलाए जा सके, क्योकि सडको का प्रयोग अव्यवहारिक था। और उनके जिले मे, जहा केवल मक्खन, पनीर और ओट पैदा होता था, गेहू, राई और माल्ट सफोक से मगाया जा सके। इस काल मे जिन नदियो को गहरा किया गया और उनके पानी को उचित रूप से रोकने का काम किया गया वे थी ब्रिस्टल ऐवन, यार्कशायर डरवेन्ट, स्टूर और काम जो क्लेहाइथ घाट से कैंब्रिज मे स्थित क्वीन्स मिल के बीच मे बहती थी।

एक विशाल क्षेत्र हो जाता था जिसमे स्कॉटलैंड को ऐन्नी के शासन के बीच मे मिला दिया। डिफो ने लिखा था, 'इगलैंड मे हमारा यह बडा सौभाग्य है कि इटली तथा योरप के अन्य देशो की भाति अनाज पर आज तक कर नही लगा है।" वेनिस के चतुर राजदूत, मोसोनिगो ने हमारे द्वीप मे अपने वास के अन्त मे १७०६ मे अपने शासको को सूचित किया था कि आन्तरिक करो से मुक्ति इगलैंड मे उद्योग की प्रगति मे ससार के किसी अन्य क्षेत्र की तुलना मे एक कारण था लन्दन तथा प्रत्येक प्रान्तीय नगर मे दैनिक आवश्यकता की चीजे स्वतत्र रूप से बिकती थी और उन पर नगर के द्वारो पर किसी प्रकार की चुगी नही लगती थी। इस स्वतत्रता का लाभ उठाकर सारे द्वीप मे कृषि के अनाज के व्यापारी तथा मध्यस्थ फैले हुए थे। वे खेतो मे उगी हुई फसलो अथवा खलिहान मे पडी कटी फसलो को सट्टे पर खरीद लेते थे। इस काम के लिए वे बहुत दूर दूर तक देहातो मे, पठारी प्रदेशो की खतरनाक उपत्यकाओ मे भी, जैकब के अनुयाइयो एव दुधारी तलवारो की परवाह किए बिना इगलैंड के पार्को मे पलने वाले पशुओ की तलाश मे चले जाते थे। इससे सभी जगह दूरस्थ छोटे छोटे गावो तथा बस्तियो की फसलो के लिए भी नई बाजारो की स्थापना से कृषि-प्रगति के आन्दोलन की उन्नति हुई।

उद्यम तथा सुधार के इस शासनकाल मे निर्यातो पर राज-सहायता के कारण इगलैंड से अन्न की विशाल मात्रा का निर्यात समुद्र के पार के देशो को होता था। ऐन्नी के शासनकाल के मध्य मे ग्लूसेस्टरशायर के कोयले के व्यापार के कर्मचारियो ने अनाज की ऊची कीमतो के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। अनाज की ऊची कीमतो का कारण ब्रिस्टल के व्यापारियो द्वारा स्थानीय उत्पादन की बडी मात्रा का विदेशो को निर्यात करना था। ट्रेण्ट के उत्तर मे भी भूपतियो के विचार मे विदेशो मे अनाज की बिक्री का उनके तथा उनके किसानो के भाग्य (कमाई) मे एक महत्वपूर्ण स्थान था।[1]

तथापि, कृषि तथा वितरण-प्रणाली के हर्षयुक्त चित्र से हमे यह भ्रम नही होना चाहिए कि अठारहवीं शताब्दी के अन्त मे इगलैंड की जो स्थिति कृषि तथा यातायात के

---

[1] जुलाई १७०६ मे राबर्ट मोलेसवर्थ ने डोनकास्टर के निकट एर्डलिग्टन से अपनी पत्नी को लिखा था 'यदि ईश्वर की दया से अच्छी फसल का मौसम आ गया तो राज्य भर मे अनाज का विशाल भडार बनाया जा सकेगा, और फिर भी विदेशो की मागे इतनी अधिक है कि आने वाले कई वर्षों तक इस अन्न की अच्छी कीमत मिल सकेगी। इससे हमारे किसान धनी होगे।' और अगले साल उसने लिखा 'अनाज की कीमतें निश्चित बढनी चाहिए और वह भी बहुत अचानक रूप से हमें डच लोगो को बाल्टिक प्रदेश मे व्यापार रोक देने को विवश कर देगी क्योकि उस क्षेत्र मे ताउन फैल गया है और तब हमे डच लोगो को अपने यहा से अनाज भेजना पडेगा।'

सुधार मे थी वह शताब्दी के प्रारभ म ही उत्पन्न हो गई थी। नदियो मे व्यस्त याता-यात सडको की खराब स्थिति का परिचायक था। इगलैड के मभवत सर्वोत्तम अनाज-क्षेत्र—मध्य क्षेत्र तथा उत्तरी पूर्वी ऐग्लिया अभी भी अधिकाशत घिरे हुए नही थे। उन क्षेत्रो मे विशाल, बाडा रहित ग्रामीण खेतो की जुताई मध्ययुगीन ढग मे होती थी जिन्हे प्रलयदिवस के नियोजक तो पसन्द करते किन्तु आर्थर यग जैसो की आधुनिक बुद्धि को तो निश्चित ही उनसे बडा आघात पहुचता।

इन ग्रामीण खेतो पर उन्नतिशील जमीदार अथवा किसान का अभिक्रम और उद्यम-शीलता प्रतिबाधित हो जाते थे, क्योकि इनमे व्यक्तिगत कृषको की बिखरी हुई पट्टियो की बुवाई-जोताई आदि सम्पूर्ण ममुदाय द्वारा स्वीकृत योजना के अनुसार ही करनी पडती थी। कोई भी व्यक्ति अपनी बाडा रहित खेत की पट्टियो पर शलजम अथवा कृत्रिम घासे को लाभकारी ढग से नही उगा सकता था। अनाज कटते ही सम्पूर्ण खेत गाव के पशुओ के लिए चरागाह के रूप मे खोल दिया जाता था। ये पशु व्यक्तिगत किसानो की फसलो को खा जाया करते थे और किसान की कोई सुनने वाला नही था। खुला खेत एक समरूप योजना के आधार पर जोता-बोया जाता था। उदाहरण के लिए गॉड-मैनचेस्टर जैसे एक छोटे से काउण्टी मे एक पुरानी प्रथा के अनुसार सभी कृषक कोर्ट-हाल मे एकत्र होते थे और निर्णय करते थे कि शुक्रवार २१ मार्च १७०० से पूर्व कोई भी किसान जौ नही बोयेगा। केवल उसी दिन बुवाई शुरू होती थी।

जिन खेतो मे नया बाडा लगा था और जिनकी सख्या लगातार बढती जाती थी और जो पुराने बाडो वाले दक्षिणी, पश्चिमी और उत्तरी इगलैड मे आते थे, व्यक्तिगत किसान अधिक स्वतत्र निर्णय ले सकते थे अत अधिक प्रगति सभव थी परन्तु ऐसा अवश्यभावी नही था। किन्तु जिन जिलो मे बाडो का सर्वाधिक प्रचलन था वे द्वीप के औसतन कम उपजाऊ भागो मे थे और उनकी जलवायु सबसे खराब थी। यह सत्य है कि केन्ट की ऊची खेती, पश्चिमी काउण्टी के बगीचे तथा फलो के बगीचे ऐसे क्षेत्र थे जहा प्रारभ से ही बाडाबन्दी थी किन्तु पश्चिम और उत्तर के जलवायु प्रताडित बजर-भूमि की कृषियोग्य पट्टिया भी बाडो से युक्त थी। मध्य मैदानी भागो के सर्वोत्तम अन्य उत्पादक क्षेत्रो मे अभी भी बाडो का प्रचलन नही था।

क्योकि अधिकाश भेडे और पशु ठूठी वाले खेतो, झाडो तथा सामान्य भूमि पर चरते थे और जाडे की ऋतु के लिए जडो तथा कृत्रिम घासे उपलब्ध नही होती थी इसलिए वे दयनीय रूप से आकार मे छोटे और पतले होते थे। १७९५ के साधारण पशुओ तथा भेडो की तुलना मे १७१० मे स्मिथफील्ड बाजार मे उनका वजन आधा होता था। इस शताब्दी के प्रारभ मे जाडे की ऋतु मे पशुओ को जीवित रखना इतना कठिन हो जाता था कि गर्मी की ऋतु की घास समाप्त होते ही बच्चे देने वाले पशुओ को छोडकर शेष सभी को मारा डाला जाता था और मास को नमक लगाकर रख

लिया जाता था, और बसत ऋतु तक जिन्दा पशुओ को थोडे भोजन पर रखा जाता था। १७०३ मे जब नमक की कीमते बढी तो हाउस ऑफ कॉमन्स' (लोकसभा) मे इस आधार पर आवेदन प्रस्तुत किया गया कि कीमतो की उपरोक्त वृद्धि निर्धन लोगो के प्रति हानिकर कदम है क्योकि इन लोगो का अधिकाश भोजन नमक लगाकर सुरक्षित किए गए खाद्य पदार्थ होते है।

वह समय बहुत देर मे आया जब लार्ड टाउन्सहेण्ड की शलजम की खेती होती थी अथवा कोक ऑफ नारफोक की भेडे तथा पशु स्वस्थ थे। परन्तु फिर भी विल्टशायर तथा काट्सवोल्ड के पहाडी क्षेत्रो मे, जहा पश्चिमी ऊनी कपडा निर्माताओ के लिए भेडे पाली जाती थी, आश्चर्यजनक दृश्य मिलते थे। मनोरम वृक्षहीन खुले स्थानो पर, डोरकेस्टर के ६ मील के व्यास मे डिफो को ज्ञात हुआ था कि ५ लाख से अधिक भेडे चरा करती थी। उसने लिखा है कि सैलिसबरी के मैदान, डोरसेट की खुली नीची भूमि का प्रदेश भेडो के झुण्डो के रात्रि मे ठहरने से इतना समृद्ध हो रहा था कि खडिया मिट्टी के मैदान, जो अब तक केवल चरागाह योग्य माने जाते थे, शीघ्रता से खेती योग्य बनते जा रहे थे।

ट्यूडर के काल से और विशेषकर पुन स्थापन के बाद से कृषि की उन्नत पद्धतियो पर मुद्रणालयो से नई नई पुस्तके प्रकाशित हो रही थी। रॉयल सोसायटी के क्षेत्रो से प्रारभ होकर वैज्ञानिक अन्वेषण की प्रवृत्ति साधारण जीवन मे फैलती जा रही थी। उससे कृषक को निरन्तर प्रेरणा मिलती थी किन्तु बहुधा वह व्यवहारिक कृषक के लिए कष्टदायी पहेली भी साबित होती थी। इसका कारण यह था कि विशारद तथा आधुनिकतावादी बहुत कम एक दूसरे से सहमत होते थे जेथ्रो टुल एक महान उन्नतिशील व्यक्ति था। ऐन्नी के शासनकाल मे उसने अपनी खेती मे 'ड्रिल' तथा घोडे से चलने वाले हल का सर्वप्रथम प्रयोग किया। बाद के अनुभव से यह स्पष्ट हो गया था कि वह स्वय कई बातो से बिल्कुल गलती पर था। किन्तु जैसे ही नई पद्धतियो की उपयोगिता सिद्ध हो जाती थी उन्हे अपनाने को लोग उत्सुक रहते थे। विशेषकर जहा घिरी हुई भूमि मे परिवर्तन करने की स्वतत्रता थी।

कृषि मे उन्नति का विचार व्याप्त हो रहा था। सामान्य भूमियो तथा झाड से युक्त भूमियो को बाडो से घेरने का न केवल अधिक चलन हो गया था जैसाकि शताब्दियो से होता आया था। प्रत्युत आधुनिक सिद्धान्तकार राष्ट्रकुल के प्रति। इसे एक कर्त्तव्य कहकर प्रचारित करने लगे थे। किन्तु जब ऐन्नी शासनारूढ हुई तो कृषि सबधी लेखक सामान्य भूमियो को अकर्मण्य और कामचोर लोगो के स्थल कहकर उनकी भर्त्सना करते थे। ऐसे लोगो की भेडे 'निर्बल, जीर्ण तथा क्षय से विसाक्त' होती थी तथा झाडो पर पले हुए उनके पशु भूख से मरते हुए लोमडी से पेट वाले नाटे बैल-गाय थे जो न दूध दे सकते थे और न हल मे चल सकते थे। सामान्य भूमि पर अधिकारो के

सामाजिक मूल्य से सम्बन्धित एक शाश्वत (स्थायी) वादविवाद का यह एक अन्य पहलू था। इसके सौ वर्ष पश्चात् पराजित सामान्यवादियो का समर्थन कोबेट ने किया था। उस विवाद के औचित्य के सबध मे हमारे समय के इतिहासकारो मे भी मतभेद है। ऐन्नी के शासनकाल मे पार्लियामेट (ससद) के कानून के अधीन अधिक जमीनो को बाडो से नही घेरा गया था किन्तु सामान्य कानून के अन्तर्गत सहमति अथवा अन्य प्रकार से बाडो के निर्माण मे उन्नति हो रही थी।[१]

डिफो का युग अग्रेज मौरूसी (पूर्ण स्वामित्व युक्त) किसान के लिए समृद्धि का काल था तथा आसामी कृषको के बढते हुए भाग्य के लिए, बुरा समय न था। देश की जनसख्या का आठवा भाग मौरूसी किसान तथा उनके पारिवारिक सदस्य थे और स्थिर आसामी कृषको की सख्या इससे कुछ कम थी। क्रान्ति के समय की गई गणना के अनुसार मौरूसी किसान औसतन एक आसामी किसान की तुलना मे अधिक धनी था। इसके सौ वर्ष पश्चात् यह स्थिति सभवतया उलटी हो गई थी क्योकि अब मौरूसी किसान समाप्त हो गए थे। जार्जियन युग मे कृषि सुधारो के कारण आसामी कृषक को अपने जमीदार द्वारा भूमि मे लगाए गये प्रचुर मात्रा मे पूजी का लाभ मिल गया जबकि छोटे स्वतत्र कृषक के पास समय के अनुसार काम चलाने के अतिरिक्त कोई वित्तीय साधन न थे। किन्तु फिर भी ऐन्नी के शासन काल मे इन दो वर्गों मे गहरी आर्थिक विषमताए उभर नही पाई।

इन वर्गो के बीच राजनैतिक और सामाजिक अन्तर था। स्वतत्र कृषक को ससद मे मत देने का अधिकार था जिसे वह बहुधा मन चाहे ढग से इस्तेमाल करने की स्थिति मे था। आसामी कृषक को मताधिकार नही प्राप्त था। यदि उसे यह अधिकार होता तो वह अपने जमीदार की इच्छानुसार इसे प्रयोग करने को बाध्य रहता। सर रोगर डी कोवर्ली जैसे आदर्श जमीदार के बारे मे भी एडिसन ने लिखा है कि अपने आसामियो पर उसका सम्पूर्ण पितृत्मक प्रभुत्व था।

---

[१] गर्मी की ऋतु मे मार्लबारो ने अपनी पत्नी को लिखा जबकि वह यार्कशायर के एक ब्लेनहीम नामक भूपति के पास जा रहा था 'जैसाकि मेरा अनुभव है इगलैड का कानून है कि प्रत्येक पूर्ण स्वत्ताधिकारी कृषक अपनी सामान्य भूमि का केवल उतना ही भाग घेर सकता है जितना कि उसके अधिकार क्षेत्र मे आता है (बहुत अधिक भूमि का स्वामी इससे अधिक घेर सकता है), यदि वह सामान्य भूमि का उतना भाग उन लोगो के लिए छोड देता है जिन्हे उसके उपयोग का अधिकार है और इस प्रकार छोडी हुई भूमि पर वह फिर अपने पशुओ को चराने के लिए अधिकार जमाने का प्रयास नही करता। यह उदाहरण हमारे पडौसी हैलेबी के श्री फ्रेटवेल का है, जिसने कि मुकदमा चलने पर सर्वोच्च भूपति लार्ड कैसलटन के विरुद्ध भी ऐसा ही किया। और हमारे तथा गन्सबारो के बीच भी ऐसा ही मामला है'

परन्तु स्वतत्र कृषक की स्वतन्त्रता सघनता स सजोयी और सबलता से बनाये रखी जाती थी। ऐन्नी के शासनकाल मे ग्रामीण सभ्रान्तजनो के बीच मे निर्वाचन सम्बन्धी पत्र व्यवहार मे हमे ऐसे वाक्य देखने को मिल जाते हैं जैसे "स्वतन्त्र कृषक दृढता से यह नही कहते कि मतदान मे वे अपनी स्वतन्त्रता बनाये रखेगे।" भूपति सभी स्थानो पर स्वतन्त्र कृषको को अपने अधीन रखता था। सबसे अधिक उसे चिन्ता स्वतत्र कृषको को राजनैतिक तथा शिकार सम्बन्धी कारणो से खरीद लेने की रहती थी। ज्यो ज्यो यह शताब्दी समाप्त हो रही थी स्वतत्र कृषक तथा छोटे सभ्रान्त जन अच्छी शर्तो पर ग्रामीण क्षेत्र छोडकर जाने को उद्यत हो जाते थे। इस स्थिति मे बडे जमीदार तथा उसके आसामी कृषको की बढती हुई घनिष्टता से उन्हे खतरा उत्पन्न हो जाता था। छोटे स्वतत्र कृषको को खरीदकर विशाल एकत्र जागीरो के बनने की प्रक्रिया पुनस्स्थापन के उपरान्त शुरू हुई और अगले १०० वर्ष या अधिक समय तक चलती रही।

किन्तु स्वतत्र कृषको तथा आसामियो के वर्गों के बीच भेद कभी भी सम्पूर्ण नही हुआ क्योकि एक मनुष्य बहुधा एक खेत पर तो आसामी था परन्तु दूसरे खेत का वह स्वय स्वामी था।

मध्ययुगीन गाव की गन्दगी बहुत दिन पहले ही समाप्त हो गई थी—क्योकि ग्रामीण मध्यम वर्ग सम्मानपूर्वक और सुविधापूर्ण जीवन बिताने लगे थे। ऐन्नी के शासनकाल मे सर्वत्र लोग फार्म-घरो को बनाते थे अथवा उनका विस्तार कर रहे थे। परम्परा अथवा जिले मे उपलब्ध सामग्री के अनुसार इन घरो के निर्माण मे पत्थर, ईंटे अथवा आधी लकडी का प्रयोग किया जाता था। उन अनुकूल क्षेत्रो मे ग्रामीण-समृद्धि के फलस्वरूप भवननिर्माण सबसे अधिक दिख रहा था। जहा वस्त्र निर्माता स्थानीय ऊन की बहुत माग करते थे जैसा कि पन्द्रहवी से लेकर अठारहवी शताब्दी तक काट्सवोल्ड्स के भव्य पत्थर के फार्मों मे था अथवा जैसा कम्बरियन एव वेस्टमोरलैड के पहाडी निवासियो की बस्तियो मे, जिनका भाग्य अभी हाल मे स्थानीय कपडा व्यापार की उन्नति के कारण ऊँचा उठा था।

लेक डिस्ट्रिक्ट मे आज के यात्रियो को परिचित सुन्दर पुराने फार्म-गृहो के अतिरिक्त उस समय वहा बहुतसी झोपडिया भी थी जो अब तक नष्ट हो चुकी हैं, जहा कि घाटी के अपेक्षाकृत निर्धन लोग कडे तथा पुष्टाग परिवारो का पालन-पोषण करते थे। मा अपने बच्चो को घुटनो पर लिटाए हुए वस्त्र निर्माताओ के लिए सूत कातती रहती थी। यदि ये बच्चे बडे होते थे तो वृक्ष कटे हुए स्थानो पर जाकर भेडो को हाकते थे और खडी चट्टानो के किनारे पत्थर की विशाल दीवाले खडी करते थे जो कि हमारे कम परिश्रमशील युग मे आश्चर्य कहे जा सकते है। अठारहवी शताब्दी मे ही वर्ड्सवर्थ द्वारा वर्णित जन्मभूमि के सौन्दर्य को प्रकृति एव मनुष्य के बीच न्यायपूर्ण सतुलन प्राप्त हो सका। पहले की शताब्दियो मे घाटियो मे घुटन, उलझाव,

दलदल तथा रूप-हीन थी। हमार युग मे मनुष्य मशीन की सहायता से प्रकृति के रूप को अति सफलता से नियमित कर रहा है। किन्तु ऐन्नी के शासनकाल मे घाटियो मे ग्रामीण रमणीयता को सक्षिप्त पूर्णत्व प्राप्त होना शुरू हो गया था जो ऊपर और आसपास के पर्वतो की भव्यता की तुलना मे व्यवस्थित होते हुए भी अनुशासित नही थी।

तथापि इगलैड के सबसे जगली-सर्वाधिक बजर तथा भयानक लेक डिस्ट्रिक्ट मे अत्यधिक कम पर्यटक आते थे। डिफो तथा उसके समकालीनो को यही प्रतीत हुआ था। जो थोडे अजनवी किसी कार्य अथवा उत्सुकतावश विण्डरमेयर से आगे और हार्डनाट के ऊपर ढालू पथरीले मार्ग पर घोडे मे आते थे वे लेक वैलीज (झील की घाटियो) की "अत्यधिक काली, खुरदरी और कठोर रोटी" की शिकायत करते थे। उनके अनुसार वहा के घर ऊबड-खाबड पत्थर के बने हुए छोटे, दरिद्र झोपडे थे जो मनुष्यो की तुलना मे पशुओ के रहने के लिए अधिक उचित थे। किन्तु उस समय कही कही लेस लगे चिकने घर भी होते थे तथा कभी कभी चतुराई से सेकी हुई स्वादिष्ट जई की रोटी भी मिल जाती थी। उस समय विण्डरमेयर का एक स्वादिष्ट भोजन, चार्स-नामक मछली, बर्तनो मे बन्द करके लन्दन भेजी जाती थी। यात्रियो के इन विवरणो से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते है कि इस सुखी पशुपालक क्षेत्र की समृद्धि मे महान उन्नति (इसकी घाटियो की तलहटियो मे पानी के निकास की सुव्यवस्था थी तथा सुदृढ फार्म-इमारते थी जिनमे बलूत लकडी का फर्नीचर था) ऐन्नी के शासनकाल मे किसी तरह भी पूर्णता नही प्राप्त हुई थी, यद्यपि पुन स्थापना के पश्चात् केण्डल मे कपडे के निर्माण के कारण उसकी तीव्र उन्नति हो रही थी।

पडोस मे नार्थम्बरलैंड की काउण्टी मे जिसमे हाल मे युद्ध और बर्बरता का वातावरण था, यात्रियो ने समुद्रतट पर तथा दक्षिणी टाइन नदी की घाटी मे प्रचुर मात्रा मे अच्छी रोटी तथा जौ की शराब तथा मुर्गिया और हस देखे थे। वहा पर क्लैरेट (हल्के लाल रग की अगूरी शराब) की भी भारी मात्रा उपलब्ध थी जो पडोस के स्कॉटलैड से वहा आती थी जहा सभ्रान्त लोग उसका फ्रास से, युद्ध के बावजूद, आयात करते थे। जब ऐन्नी शासनरूढ हुई तो उस समय भी नार्थम्बरलैड के लिए एक काउटी-कीपर था जिसका वेतन ५०० पौड था और जिसमे से वह चोरी गए हुए पशुओ के लिए क्षतिपूर्ति करता था। यद्यपि "रेडेस्डेल' तथा 'रोमन वाल' के बीच के सुनसान बजर प्रदेश अब भी कुख्यात थे फिर भी 'काउण्टी-कीपर' इससे अपना सर्वोत्तम लाभ कर लेता था। वह यात्रियो को यह सूचित करने योग्य हो गया था कि 'यद्यपि दलदली भूमि के दस्युओ का आतक बहुत कुछ समाप्त हो गया था फिर भी यात्रियो से लिया गया थोडा थोडा धन काउण्टी मे वर्ष भर की सभी डकैतियो की क्षतिपूर्ति के लिए काफी हो सकेगा।" स्काटलैड के साथ शान्ति, टिनसाइड खानो की सम्पदा और न्यूकैसल का व्यापार पहले ही सीमा प्रदेश के जीवन-स्तर मे उन्नति के लिए उत्तरदायी थे। किन्तु दूरस्थ क्षेत्रो के ग्रामीण जिले-नार्थम्बरलैड, कम्बरलैड तथा डरहम अब भी

बहुत निर्धन थे और उनकी आबादी भी बहुत घनी थी जो बाद म कम हो गई। आज बहुत से कस्बो में केवल एक समृद्ध भेड फार्म होता है। उस समय पीलटावर के आसपास आधी दर्जन झोपडिया होती थी जिनमे सीमावासियो की परिश्रमी जनसंख्या बहुत कष्टप्रद जीवन बिताते हुए बजर भूमि को जोतकर थोडी सी जई की उपज पैदा कर लेती थी।

स्टुअर्ट काल मे विशेषकर पुनःस्थापना के पश्चात्, उपद्रवग्रस्त अतीत मे जिन प्रासादो मे सीमाप्रान्त के सभ्रान्त लोग रहते थे उनके स्थान पर सुन्दर ग्रामीण घर बनते जा रहे थे। इनमे से कुछ स्टुअर्टकालीन प्रासाद जैसे चिपचेज, कैपहीटन, वालिंग्टन तथा प्रथम फॉलोडन ऐन्नी के शासनकाल मे पहले ही विद्यमान थे। किन्तु सडको का निर्माण कार्य, नार्थम्बरलेंड के बजर प्रदेशीय फार्मो मे बाडे बनाना तथा पानी के निकास की व्यवस्था करना, उसके किनारे पर वनो का लगाना तथा ईट की दीवार से घिरे उनके सुव्यवस्थित बगीचो का निर्माण बाद मे आने वाले हैनोवर युग मे मुख्यत किया गया था। दीर्घकाल तक पिछडे एव बर्बर क्षेत्र की उत्पादकता एव उसके रूप मे इन विशद् परिवर्तनो का क्रियान्वयन अठारहवी शताब्दी मे हुआ जिसके लिए १७०७ के सघ की स्थापना मे स्कॉटलेंड के साथ स्वतत्र व्यापार अनुकूल था। इस पर व्यय के लिए धन टिनसाइड से प्राप्त हुआ था जो कोयले की आमदनी थी और खेती मे लगा दिया गया था। इस भूमि के पुराने जैकॉबी तथा कैथॉलिक सामन्तो को औद्योगिक तथा व्यापारी परिवारो द्वारा अपदस्थ करने की आर्थिक प्रवृत्ति मे १७१५ के आन्दोलन जैसी राजनैतिक घटनाओ ने सहायता की। रॉब रॉय मे ओस्वाल्डीस्टोन्स की ऐसी ही घटना थी। नवागन्तुक अपने साथ औद्योगिक धन लाये और उसे खरीदी हुई जायदादो मे भरपूर लगा दिया जिससे उनके खेतो की मालगुजारी (लगान) तथा आसामियो की समृद्धि मे वृद्धि हुई और उनके नये ग्रामीण घरो मे सुख-सुविधाए भी बढी।

इगलैंड के अधिक दक्षिणी जिलो मे जहा सभ्यता कुछ अधिक पुरानी थी, गृह युद्ध के पश्चात् निरन्तर शान्ति रहने से जीवन की सुविधाओ मे अतीव वृद्धि हो रही थी। सर्वत्र मनुष्य एव प्रकृति के बीच सम्पूर्ण सुन्दर सतुलन जो अठारहवी शताब्दी के भूदृश्य की विशेषता थी, धीरे धीरे स्थापित हो रहा था। वन्य प्रान्तो मे बाडे की झाडिया तथा फलो के बगीचे लगाए जा रहे थे, ग्राम्य घरो की सख्या वृद्धि तथा सुधार हो रहा था, परम्परात्मक शैलियो के अथवा भव्य किन्तु सरल ढग से फार्म-इमारते तथा सभाभवन बन रहे थे। जो रानी ऐन्नी की शैली के परिचायक थे। जिसे हम आज मौलिक अग्रेजी शैली कहते है उसकी उत्पत्ति पर कुछ डच प्रभाव पडा था। वास्तुकला की गरिमा के अनुरूप ही भीतरी सजावट थी। १७१० मे एक विदेशी यात्री ने लिखा था कि "अब इगलैंड मे दीवारो आदि पर सजावटी पर्दे टागने का फैशन नही था, परन्तु कमरे के भीतरी भाग को बहुत अधिक व्यय करके सजावटी लकडी से ढका जाता

था।" लकडी के बडे बडे तख्ते, जो पाच फीट ऊँचे होते थे और उसी अनुपात मे चौडे, पूर्व प्रचलित छोटे तख्तो के स्थान पर लगाये जाते थे। गोथिक तथा एलिजाबेथ युग की झाझरियो के स्थान पर इधर उधर खिसकने वाली खिडकिया, जिनमे बडे बडे काच लगे थे, लगाई जाने लगी थी। ऊँचे, सुप्रकाशित कमरे नये फैशन के अन्तर्गत आते थे।

डच तथा अग्रेजो की पूर्वी भारत कम्पनियो द्वारा यूरोप को लाये गए चीनी के बर्तन महिलाओ को अत्यधिक प्रिय थे। रानी ऐन्नी के अनेक ग्रामीण तथा शहरी प्रासादो मे सजावट की योजना की धारणा बनाई जा सकती है। दीवारो मे लगे लकडी के तख्तो के अन्तरो मे नीले और सफेद कलश रखे रहते थे। पितामह के समय की ऊँची घडियो को पूर्वी देशो से मगाई गई नक्काशीयार वस्तुओ मे सजाया जाता था। लकडी के नक्काशी के कार्यों मे ग्रिनलिंग गिबन्स आज भी आश्चर्यजनक ख्याति पा रहा है। अमरीकी द्वीपो से महोगनी की लकडी आनी प्रारम्भ हो गई थी और इससे अठारहवी शताब्दी की रुचि के अनुकूल अधिक सुन्दर और हलका फर्नीचर बनने लगा था। विदेशी कलात्मक वस्तुओ के विक्रेताओ को यहा मिलने वाले अवसरो पर आश्चर्य हो रहा था। कुछ कलात्मक वस्तुओ को वे फ्रॉस और इटली मे बहुत कम कीमत पर खरीद कर यहा भारी कीमतो पर बेचते थे और इस प्रकार अग्रेजो से बडी धनराशि ले लेते थे। विदेशी कलाकारो ने घोषित किया था कि रानी ऐन्नी के शासनकाल मे कुलीन एव सभ्रान्त परिवारो के ग्रामीण हाल कमरो मे विख्यात इटालवी कलाकारो की कृतियो सख्या मे रोम नगर के समस्त सग्रहालयो और प्रासादो मे उपलब्ध कृतियो से होड लेती थी।

वानब्रुघ के ब्लेनहीम हाउस को, जो योजना मे भव्य और निस्सदेह सुविस्तृत था, ऐन्नी के शासनकाल की वास्तुकला की विशेषता कदापि नही कहा जा सकता। साधारणतया धार्मिक, शैक्षणिक एव सार्वजनिक भवनो मे एक अधिक शुद्ध रुचि प्रचलित थी जबकि साधारण घरेलू इमारतो मे लालित्य मे सरलता को प्रमुखता दी जाती थी। रेन अभी जीवित था और वह लन्दन के गिरजाघरो तथा हैम्पटन के राजप्रासाद की भव्यता मे वृद्धि करने मे सक्रिय था। गिब्स उस कौशल को सीख रहा था सिससे निकट भविष्य मे ही आक्सफोर्ड मे रेडक्लिफ केमरा का निर्माण हुआ था। उन दोनो ने मिलकर भारी पीढियो को स्थापत्य मे चिरप्रतिष्ठित सौन्दर्य तथा स्थानीय शक्ति का एकीकरण करना सिखा दिया था। इन महापुरुषो द्वारा निर्दिष्ट समानुपात के नियम स्थानीय स्थापत्यकारो और भवन निर्माताओ द्वारा प्रयुक्त पाठ्यपुस्तको मे स्थान पा गये थे जिसके आधार पर अठारहवी शताब्दी के लिए छोटे ग्रामो एव देहाती कस्बो मे सामान्य अग्रेजी भवन निर्माण के एक दीर्घ और सुखद युग का निर्माण किया जा सका। जब उन्नीसवी शताब्दी के लोगो ने प्राचीन एथेन्स तथा मध्ययुग की स्थापत्य

कला को पुनःस्थापित करना चाहा तो अग्रेजी परम्परा समाप्त हो गई और उसके स्थान पर अपरिपक्व भावुकता तथा कामुक जीवन-विधि की भद्दी अराजकता घुस बैठी।

देहाती क्षेत्रो के सभ्रान्त लोगो मे वैभव तथा सस्कृति की दृष्टि से विभिन्न स्तरो के लोग थे। सामाजिक पद-सोपानात्मक सगठन के शिखर पर ड्यूक थे जो किसी भी अन्य देश मे राजा कहला सकते थे। इगलैड मे वेतन पाने वाले सम्बन्धित राजाओ के दरबारो की विशालता मे भी अधिक बढ चढ कर ड्यूको का रहन-सहन था। इस सगठन की निचली सीढी पर भूपति (छोटा जागीरदार) था जिसे दो-तीन सौ पौड वार्षिक मिलते थे। वह अपनी भूमि के एक भाग पर खेती करता था और सर्वाधिक प्रचलित प्रान्तीय भाषा बोलता था। परन्तु कुलीन अथवा राजघरानो के सेवक-सभ्रान्तो से वह पृथक था यद्यपि उनके बीच मे अधिकाश समानता के स्तर पर मिल जुलकर वह रहता था। एक छोटा सा शिकार प्रतिष्ठान् तथा सभी लोगो की ओर से मिलने वाला सम्मान परिचय चिन्ह, यही उसकी विशिष्टता थी। यदि वह जीवन मे एक बार भी लन्डन जाता तो वहा शहर की भीड मे अपने अश्वकेशी शिरस्त्राण, अश्वारोही पेटी तथा पुराने ढग के बिना आस्तीनो के कोट के कारण अलग ही चमकता था। उसके पुस्तकालय मे, परम्परा के वशीभूत, बाइबिल, बेकर का 'क्रानिकल' (काल-विवरण), हुडिब्रास और फॉक्स का मार्टर्स (शहीद) पुस्तके होती थी। वह चाहे इन पुस्तको को पढता अथवा नही, शुद्धिवादियो तथा पोप-वादियो के बारे मे उसके विचार साधारणतया अन्तिम दो ग्रन्थो मे व्यक्त विचारो के अनुकूल होते थे।

परन्तु इस प्रकार के पुराने तौर-तरीको वाले छोटे सभ्रान्त व्यक्ति को समय के दबाव का अनुभव होने लगा था। एक पौड मे चार शिलिग की दर से व्हिग युद्धो के लिए दिया गया भारी भूमि कर उसके लिए बड़ा कष्टदायी था और इससे टोरी-वाद के प्रति उसका उत्साह बढ जाता था। देहाती क्षेत्रो मे रहन-सहन कम सुविधाजनक और अधिक खर्चीला हो गया था। उस पर शहरी जीवन का अधिक व्यापक प्रभाव पडने लगा था। ऐसी स्थिति मे यदि छोटे भूपति के लिए जीविका निर्वाह करना कठिन हो जाता तो उसके लिए अपनी भूमि को अच्छे मूल्य पर बेच लेना आसान था। अनेक बडे जमीदार अपने पडोसियो की भूमि खरीदकर अपनी बडी जमीदारियो (जायदादो) को सुदृढ करने की ताक मे रहते थे।

यह उल्लेखनीय हे कि समुदाय के धनी सदस्यो मे भूमि की भूख अब भी इतनी तीव्र थी जबकि विनियोग के अन्य दूसरे रूप उपलब्ध थे जिन्होने भूमि के लगभग अद्वितीय मूल्य को समाप्त कर दिया था। इसके पूर्व के विनियोग का सबसे अधिक स्पष्ट उपयोग भूमि मे ही होता था। ट्यूडर काल मे मैदानी भागो के व्यापारियो के पास स्थायी भूमि होती थी अथवा वे बच्चो पर लगान या उपज का दसवा भाग लेते थे। अब वे अपनी पूजी को कोषो मे लगाते थे। सामाजिक और राजनैतिक महत्वाकाक्षा के

उद्देश्यो के अतिरिक्त पहले के सभी कालो की अपक्षा अब भूमि का स्वामी बनना अधिक आकर्षक था। श्री हबा कुक ने १६८० और १७४० के बीच नार्थम्पटनशायर तथा बेडफोर्डशायर मे भूस्वामित्व मे परिवर्तनो का बडा सघन अध्ययन किया था। उन्होने लिखा है 'ऐसे लोग भूमि खरीदते थे जो सामाजिक प्रतिष्ठा एव राजनैतिक शक्ति के विचारो के प्रति विचित्र ढग से सवेदनशील थे। उनमे से कुछ बडे व्यापारी भी थे, जो मुख्यत ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अध्यक्ष थे, जो राजनीति मे प्रविष्ट हो गए किन्तु अधिकाश नवागन्तुको का या तो कोई न कोई सम्बन्ध सरकार से था अथवा वे न्यायाधीश थे, जिन्हे समाज मे वह महत्त्व प्राप्त करने की इच्छा थी जो केवल भूमि स्वामित्व से ही मिल सकता था। देश के विभिन्न भागो मे उन्होने भूखण्डो को खरीद लिया और कुछ अडोस-पडोस के सभ्रान्त लोगो को भी खरीद लिया। इसके अतिरिक्त उन्होने कई स्थानो पर गिरजाघर को दान मे देने के अधिकारो तथा ससदीय बारो के भूपतित्वाधिकारो को खरीद लिया था? वे भूमि खरीदने मे अपने धन का विनियोजन इतना नही कर रहे थे जितना एक सामाजिक वर्ग की विशेष सुविधाओ को खरीदने मे। वास्तव मे इससे उन्हे एक पडोस के जीवन पर निरापद नियत्रण करने का अवसर मिल जाता था। वे चाहते थे कि जिधर भी उनकी दृष्टि जाये उधर केवल उनके ही खेत दिखे। बडे जागीरदारो, चाहे वे नये हो अथवा पुराने, जिन्होने छोटे भूपतियो तथा सभ्रान्त लोगो की जायदाद खरीद ली थी, के प्रति घृणा कई तात्कालिक नाटको का विषय था।' (**इकानामिक हिस्ट्री रिव्यू**, पृष्ठ १२, फरवरी १९४०, **इगलिश लैंड ओनरशिप**, १६८०-१७४०)।

यदि हम उस समय के ग्रामीण घरो के जीवन का चित्रण करे तो सर्वप्रथम हम उन अत्यधिक प्रतिष्ठित कुलीनो के बारे मे सोचते है जिनके ग्रामीण प्रासादो मे इटली के चित्र, फ्रास का फर्नीचर और इटालवी, फ्रासीसी अथवा लैटिन लेखको की पुस्तके भरी थी। इन पुस्तको का वे केवल सग्रह ही नही करते थे प्रत्युत् उन्हे पढते थे। १७२६ से १७२९ मे इगलैंड की यात्रा पर आये वॉल्टेयर ने इन मनुष्यो की अनुकूल तुलना फ्रासीसी कुलीनो से की थी जो साहित्य और विज्ञान के सरक्षक के। उनमे दार्शनिक लार्ड थे जैसे शैफ्टबरी के थर्डयर्ल, सोमर्स एव माण्टेगु जैसे विद्वान राजनेता, और पुरात्व-सग्रहको मे सबसे महान् राबर्ट हार्ले, जो राष्ट्र के बडे सहायक के रूप मे जब पुस्तको और पाण्डुलिपियो की खोज मे अत्यधिक व्यस्त रहता था तब अपने निजी अभिकर्ताओ (एजेण्टो) को सर्वत्र इस कार्य के लिए नियुक्त करता था। व्हिग जुण्टो के लार्डों और उनके अनुयाइयो तथा वेस्टमिन्स्टर एव सेण्ट जेम्स मे उनके शत्रुओ, सभी को ग्रामीण सभ्रान्त जन होने मे गर्व था फिर चाहे वे अपने प्रयत्नो से इस स्थिति मे पहुचे हो अथवा जन्मजात हो। प्रत्येक के पास अपना ग्रामीण स्थान था जिस पर चिन्ताग्रस्त राजनेता सदैव कम से कम सिद्धान्तत वापस लौटने के लिए व्यग्र रहता था।

जून के प्रथम सप्ताह तक लन्दन का मौसम समाप्त हो जाता था और तब फैश-नेबुल लोग या तो अपने ग्रामीण घरो को चले जाते थे अथवा गरम स्रोतो के नगर को। लन्डन मे अधिक लम्बी अवधि तक रहने मे उन बहुत से परिवारो की तबाही आ जाती जिन्होने लन्डन के विवाह बाजार मे अपनी कन्याओ को लाने मे बडी कठिनाई का सामना किया था। उनके पडौसी काउटी की राजधानी पहुच जाने मे ही सतोष कर लेते अथवा केवल ऐसी ग्रामीण यात्राये करते जहा गर्मी मे उनकी महिलाये घोडा गाडी मे उनके साथ जा सकती थी अथवा क्रिस्मस पर धूल कीचड से भरी गलियो मे अपने भाइयो के पीछे घोडे की पीठ पर बैठ कर जा सकती थी।

एक प्रखर विदुषी, लेडी वोर्टले माण्टेगु, ने अपने एक पत्र मे, जिसमे सबसे नीरस भाग टोरी का एक उद्धरण है, किसी दक्षिणी काउटी के भूस्वामियो की यह कहकर निन्दा की है कि वे सुरापान और शिकार के अतिरिक्त दूसरे प्रकार के सुखो के प्रति सवेदनशील नही थे। परिवार की बेचारी महिलाओ को घोडा-गाडी मे बैठने का कोई अवसर नही मिलता था। उनके जमीदारो तथा मालिको को ऐसे यन्त्र का अवसर ही कहा था। प्रात काल वे अपने कुत्तो को लेकर शिकार पर निकल जाते थे और उनकी राते ऐसे ही पशुवत साथियो तथा उपलब्ध शराब के साथ बीतती थी। तथापि उसी पत्र से वह नार्थम्पटन शायर मे भूस्वामियो के समाज के प्रति खेद प्रकाश करती है और उसकी प्रशसा भी करती है। ग्रामीण (अशिष्ट) भूस्वामी वेस्टर्न की तुलना मे कम वास्तविक विद्वान ग्रामीण सज्जन नही था जिसकी प्रशसा सोमरविल की इन सूत्रबद्ध 'पक्तियो' मे देखने को मिल सकती है—

'एक ग्रामीण भूस्वामी, जिसे न भीडे जानती है और न राजदरबार। वह केवल अपने कक्ष मे बैठता है, किन्तु अकेले नही, उसके चारो ओर ग्रीक तथा रोमन विद्वान होते है ये उसके बुढापे के विनम्र साथी थे।'

फिर भी ऐन्नी के शासन काल के अधिक खुशहाल सभ्रान्त जनो को लिखे गए सैकडो पत्रो को उलटने से यह धारणा बन जाती है कि न तो वे ग्रामीण विद्वान थे और न ग्रामीण भोदू। हमने भूस्वामियो के वास्तविक विचारो को पढा जिनमे वे अपने हिसाब किताब की बहियो, अपनी पुत्रियो के विवाहो, अपने पुत्रो के ऋणो तथा व्यव-सायो के बारे मे चिन्तित रहते थे। वे अपनी जायदादो तथा मजिस्ट्रेटो के न्यायालयो मे अपनी काउण्टी से सबधित मुकदमो की देख रेख करते थे। वे अपने घोडो तथा शिकारी कुत्तो की भी निगरानी रखते। किताबे पढने की अपेक्षा उन्हे अपने बागो तथा परिवारो की देख भाल की अधिक लगन रहती थी। इस प्रकार हमारी अपेक्षा के अनुकूल वे स्वस्थ और लाभप्रद जीवन बिताते थे जो आधा सार्वजनिक और आधा निजी होता था और पूर्णतया अवकाशपूर्ण, स्वाभाविक एव गरिमामय होता था। अधिक सम्पन्न सभ्रान्त जनो मे बहुतो की, जैसा उनके पत्रो एव डायरियो से ज्ञात होता है, अपनी जायदादो से कई हजार वार्षिक आमदनी होती थी।

एक ग्रामीण सभ्रान्तजन से, चाहे धनी हो अथवा निर्धन, एक दृष्टि से बहुत कम खर्च करने की अपेक्षा की जाती थी। उस समय सभ्रान्तजनो के लिए अपने पुत्रो को अभिजात वर्ग के विद्यालयो मे बहुत व्यय करके भेजना अनिवार्य नही माना जाता था। सबसे निकट के स्थानीय ग्रामर विद्यालय मे भूस्वामियो के बच्चे, स्वतत्र कृषको एव दूकानदारो के बच्चो के साथ ही बैठते थे जिन्हे पादरी का जीवन बिताने के लिए चुना जाता था। नही तो युवा सभ्रान्तजनो को पडोस का पादरी घर पर पढाने आया करता था। धनी परिवारो के बच्चो को निजी गिरजाघरो का पादरी पढाया करता था। जहा घरेलू शिक्षक को विशेष रूप से नियुक्त किया जाता था तो वह बहुधा ह्यूनाट का शरणार्थी होता था। देश मे इस प्रकार के शिक्षित लोगो की भरमार थी। सावधानी बरतने वाले माता-पिता इन शिक्षित व्यक्तियो को उनके फ्रासीसी भाषा के ज्ञान के कारण बहुत चाहते थे। ह्विग परिवारो मे तो उनके त्याग तथा सिद्धान्तो के कारण उनका दुगुना स्वागत होता था। ईटन, मिन्चेस्टर तथा वेस्टमिन्स्टर (विद्यालयो) को वास्तव मे बहुत से कुलीन घरानो के कच्चे पढने आते थे। ऐन्नी के शासनकाल के अन्त मे वेस्ट-मिन्स्टर मे ऐसे मकान पाये जाते थे जहा लडको को रहने के लिए २० पौड प्रति वर्ष तथा पढाई के लिए केवल ५ या ६ गिन्नी देने पडते थे। एलिजाबेथ के शासनकाल मे स्थानीय तथा साधारण (अकुलीन) बच्चो की शिक्षा की आवश्यकता की पूर्ति के लिए स्थापित हैरो विद्यालय की फैशनेबुल विद्यालयो की श्रेणी मे जार्ज प्रथम के शासनकाल मे उन्नति होना प्रारभ हो गया था।

इससे हम इस निष्कर्ष पर पहुचते है कि जहा आज के युग का मध्यवित्त का एक सभ्रान्त व्यक्ति अपनी आय का छठा भाग अपने एक बच्चे की पढाई पर व्यय करता है वहा उस समय का ऐसा व्यक्ति अपनी आय का सौवा भाग व्यय करके सतोष कर लेता था। जब भूस्वामी मोल्स्वर्थ को मालगुजारी मे केवल २००० पौड वार्षिक मिलता था वह अपने प्रत्येक पुत्र पर २० पौड वार्षिक व्यय करता था जिसमे रहने, शिक्षण, कपडो तथा अन्य बातो पर व्यय शामिल थे। उसकी भारी पैतृक देयताए (उत्तरदायित्व) तब प्रारभ हुई जब उसके दो लडको ने विद्यालय छोडा और उनमे से छोटे ने सेना मे नौकरी करली। तब वास्तव मे डिक को सौ पौड देना आवश्यक था नही तो वह कतई उन्नति नही कर सकता था। उसे घोडे, कपडे तथा अन्य सामान खरीदना पडता था। क्योकि वह ब्लेनहीम के गत गौरवमय युद्ध मे मारे गये अधिकारियो की सूची मे नही था, जो एक दु.खद अर्थ व्यवस्था रही होती, और न लिली पर हुए हताश आक्रमणो मे से किसी मे, इसलिए बहुत वर्षों तक डिक अपने यार्कशायर परिवार की शान रहा और उस पर निरन्तर बढते हुए व्यय का बोझ डालता रहा। बडे पुत्र जैक ने दौत्य सेवा का पेशा चुना था, राज्य की सेवा का यह कम खर्चीला ढग नही था। १७१० मे उनके पिता ने लिखा "मेरा यह निश्चित विश्वास है कि हमारे दोनो पुत्रो ने गत सात-आठ वर्ष मे १०,००० पौड व्यय किए है। वे तथा पुत्रिया सभी ऋणी है। यह अच्छी

बात है कि रहने बसने के लिए उनके अच्छे पिता का घर है ।" पाच वर्ष के उपरान्त डिक के अपने रेजिमेन्ट के लिए उत्साह ने उसे मिलने वाली धनराशि मे ६००० पोड व्यय करने को बाध्य किया, उसे इतनी अधिक यह नौकरी प्रिय थी ।

छोटे भूस्वामि अपनी क्षमता के अनुसार अपने पुत्रो की शिक्षा पर कम धन व्यय किया करते थे । और तब सेना अथवा दौत्य सेवा की अपेक्षा उन्हे सस्ते व्यवसायो मे अप्रैन्टिस लगवा देते थे । कान्ग्रेव और फर्कुहर के नाटको मे जागीरदार का छोटा लडका शायद श्रिउसबरी मे फेल्ट (टोपी) बनाने वालो के यहा अपैरन्टिस होने की अपेक्षा कर सकता था । स्टील ने लिखा है कि जागीरदार के छोटे भाइयो के भाग्य मे तो दुकानो, कालिजो और राजदरबारो की सरायो मे नौकरी करना निश्चित था । इन्ही दशाओ मे सभ्रान्त लोग बडे परिवारो का पालन-पोषण कर पाते थे । यद्यपि उनके बहुत से बच्चे बाल्यकाल मे ही मर जाते थे फिर भी वे लन्दन को उच्चाकाक्षी नवयुवको को निरन्तर भेजते रहते थे जिनकी बदौलत वह आन्तरिक तथा सागर-पार की प्रगति मे आगे बढता जाता था । यौरोप महाद्वीप के कुलीन सैनिक प्रशिक्षार्थियो के विपरीत जागीरदारो के छोटे पुत्र मनुष्यो के सामान्य व्यवसाय कर सकते थे और उन्हे अपनी सभ्रान्तता का गर्व नही रहता था । जागीरदारो के छोटे लडके सेना, वकालत उद्योग अथवा व्यापार मे अपनी जीविका उपार्जित करने जाते थे । ह्विगो तथा जागीरदारो की घनिष्टता के अनुकूल सामान्य कारणो मे से यह एक कारण था । इसके विपरीत उच्च टॉरियो की इच्छा भूस्वामी सभ्रान्तो को एक विशिष्ट तथा प्रबल वर्ग बनाये रखने की थी । अगली शताब्दी भर यह वर्ग प्रबल बना रहा किन्तु इसे नवागन्तुको को अपने मे प्रवेश करने के द्वारा खोल देना पडा । साथ ही कृषि से सम्बन्धित लोगो के अतिरिक्त अन्य वर्गो से इसे सैकडो प्रकार से घनिष्टता बढानी पडी । इन क्रियाकलापो को स्थल जागीरदार के निवास और ग्रामीण गिरजाघर से बहुत दूर स्थित थे । अठारहवी शताब्दी के इगलैड पर ग्रामीण सभ्रान्तजनो का शासन था किन्तु उन्होने अधिकाशत व्यापार और साम्राज्य बडाने के शिए शासन किया था ।

उच्च एव मध्य वर्ग के सामान्य शिक्षण की उसके कठोर पुरातन पाठ्यक्रम के कारण पहले ही आलोचना हो रही थी । कुछ लोग तो यहा तक कहते थे कि केवल लैटिन जानने वाले सोलह वर्षीय लडके की तुलना मे अपनी माता के पास पढने वाली बारहवर्षीय लडकी अधिक बुद्धिमान होती थी । फिर भी दूसरी शास्त्रीय भाषा स्कूल और कालेज मे इतने बुरे ढग से पडाई जाती थी कि क्राइस्ट चर्च (कालेज) मे सर्वोत्तम लैटिन जानने वालो को पर्याप्त ग्रीक भाषा नही आती थी जिसके कारण बेन्टले उन्हे "लेटर्स आफ फैलेरिस" न जानने के कारण मूर्ख कहता था । केवल उन्नीसवी शताब्दी

का आदर्श अग्रेज विद्वान समान योग्यता मे अरिस्टोफेन्स और होरेस की रचनाओ को पढ सकता था।

इतने पर भी बेन्टले कालीन इगलैड मे शेष योरप की तुलना मे ग्रीक विद्वान का स्तर ऊँचा था। तत्कालीन जर्मनी मे न केवल शास्त्रीय ग्रीक का अध्ययन नही होता था प्रत्युत वहा हेलास के इतिहास और पुराण की कहानिया भी कोई नही जानता था।[1] परन्तु यह मानना गलत होगा कि शास्त्रीय (पुरातन) भाषाओ के अतिरिक्त कही कुछ अन्य नही पढाया जाता था। सभ्रान्त लोगो के सरक्षण मे चलने वाले विद्यालयो मे पर्याप्त विविध विषय पढाये जाते थे। इस प्रकार राबर्ट पिट, जो एक महान पुत्र का पिता था, ने अपने उतने ही महान पिता, मद्रास के गवर्नर पिट, को १७०४ मे लिखा था

"इगलैड मे सबसे प्रतिष्ठित श्रीम्यूरे की एकेडेमी मे, जो सोहो स्क्वायर के निकट है, मेरे दो भाई शिक्षा पाते हे। वे लैटिन, फ्रासीसी तथा लेखा और स्वरक्षा मे तलवार चलाना, नृत्य करना तथा रेखा-चित्रण की शिक्षा पाते है। अगली गर्मी मे मैं उन्हे अधिक अच्छी शिक्षा के लिए हालैण्ड भेजना चाहता हू और यदि मेरे ससुर, लेफ्टीनैण्ट जनरल स्टेवार्ट मार्लबारो के ड्यूक के साथ गए तो उन्ही के अधीन एक अभियान देखने के लिए रखना चाहूगा।"

बुद्धिमान लाक तथा मृदुस्वभाव वाले स्टील हमारी शैक्षणिक पद्धतियो के आलोचको मे से थे। उन दोनो का आग्रह था कि निरन्तर कशाघात न तो ज्ञान प्रदान करने की सबसे अच्छी पद्धति है और न अनुशासन बनाये रखने की। सर्वत्र यह स्वीकार किया जाता था कि उच्च वर्ग की शिक्षा मे सुधार आवश्यक है किन्तु उसमे सुधार लाने के लिए कुछ नही किया गया था। स्कॉटवासियो को सब प्रकार से घृणा करने वाला स्विफ्ट एक बार ब्रूस से सहमत हो गया था कि स्कॉटलैंड के जमीदार धनी और आलसी अग्रेजी की तुलना मे अपने लडको को अधिक ठोस किताबी शिक्षा प्रदान करते थे।

फिर भी अपने शैक्षणिक दोषो के बावजूद अठारहवी शताब्दी ने स्कूलो की शिक्षा के अनुपात मे अधिक सख्या मे प्रख्यात और मौलिक अग्रेजो को उत्पन्न किया। उसकी तुलना मे हमारा उच्च शिक्षापूर्ण तथा सुयोजित युग ऐसे कम लोग उत्पन्न कर पाया

---

[1] १७१८ मे बर्खाड ने एक घोषणा की कि जर्मनी मे बहुसख्यक विश्वविद्यालय विद्यार्थी प्लेटो, अरस्तू, होमर, थ्यूसिड्डाइडिस तथा य्यूरीपाइडिस का नाम भी नही जानते थे। यदि ऐसा कथन इगलैड के बारे मे किया जाता तो वह पूर्णतया बेहूदा माना जाता। हम्फ्री ट्रेवेलयान, दि **पापूलर बैकग्राउण्ड आफ गेटेस् हेलेनिज्म,** १९३४, पृ० ८ और आगे।

है। अनुज्ञापित अत्याचारी अध्यापको की क्रूर कोडे बाजी और 'उद्दड सहपाठियो की अविहित क्रूरता द्वारा आतंकित होने पर भी बाल्यकाल मे एक बडा आनन्द था, क्योकि उस समय बडा अवकाश मिलता था जिसे ग्रामीण क्षेत्र मे उन्मुक्त रूप से व्यय किया जा सकता था। और फिर यह कठोरता भी सब विद्यालयो मे सामान्य नही थी। ईटन (विद्यालय) मे नवीन प्रवेश लेने वाले एक युवक जागीरदार ने अपने घर लिखा था "मेरे विचार मे ईटन के स्कूल मे बडा सुखकर जीवन है। मेरी निश्चित धारणा है कि जब तक आप किसी को अपशब्द न कहे तब तक कोई भी नही सतायेगा।"

स्त्री शिक्षा की बडी दु खद स्थिति थी। निम्नतर वर्गो मे सम्भवत इसकी स्थिति पुरुषो की शिक्षा से अधिक खराब नही थी किन्तु सम्पन्न परिवारो की पुत्रिया अपने भाइयो की अपेक्षा कम शिक्षित होती थी। यह स्थिति महिलाओ की एकेडेमिया स्थापित होने तक बनी रही और यद्यपि लड़कियो के लिए आवासीय विद्यालय थे किन्तु वे बहुत कम और असुविधापूर्ण थे। अधिकाश महिलाए अपनी माताओ से पढना-लिखना, सीना और गृहस्थी का प्रबन्ध करना सीखती थी। हमे प्राचीन समय मे लेडी जेन ग्रे तथा रानी एलिजाबेथ जैसी महिला यूनानी विद्वानो का पता नही है। किन्तु कुछ महिलाए इटली के कवियो की रचनाये पढ लेती थी अत उनके ग्रामीण प्रेमी उनसे भय खाते थे। कम से कम दो स्त्रिया ऐसी थी जो स्विफ्ट से समान बौद्धिक स्तर पर मुकाबला कर सकती थी। फिर भी स्विफ्ट को इस बात का पाश्चाताप था कि सभ्रान्त लोगो की एक हजार पुत्रियो मे एक भी ऐसी नही थी जो अपनी मातृभाषा को पढ सके अथवा उसमे लिखी सरलतम पुस्तको पर अपना अभिमत दे सके। स्त्रियो मे शिक्षा के अभाव को एक मान्य तथ्य मानकर उस पर विचार विमर्श होता था। एक पक्ष इस अभाव को पत्नियो को अधीन बनाए रखने के लिए आवश्यक मानता था। दूसरा पक्ष, जिसके अगुआ उस काल के साहित्यक व्यक्ति थे, फैशनेबुल स्त्रियो मे प्रचलित समय के अपव्यय-निरर्थकता, छिछोरपन तथा जुए की आदतो का कारण उनका पालन-पोषण मानता था जो उन्हे अधिक गम्भीर अभिरुचियो के अनुगमन से वचित करता था। तथापि, उस काल के ग्रामीण घरानो के पत्रो से हमे ज्ञात होता है कि पत्निया और पुत्रिया अपने पुरुषो को बुद्धिमत्तापूर्ण परामर्श दिया करती थी। इस प्रकार के पत्र लिखने वाली स्त्रिया मूर्खतापूर्ण आमोद सामग्री अथवा घरेलू सेवको की तुलना मे कुछ अच्छी थी। उस काल का एक सम्पूर्ण साहित्य, स्पेक्टर से नीचे तक, महिलाओ तथा उनके पिताओ और भाइयो के लिए समान रूप से लिखा गया था। इसका भी उल्लेख मिलता है कि महिलाए, बहुधा अत्यधिक उत्साह से, व्हिगो तथा टोरियो के पारस्परिक झगडो मे भाग लेती थी जो गावो तथा नगरो मे विभाजन उत्पन्न कर देते थे। ग्रामीण मनोविनोद को लीजिये। 'रॉब रॉय' मे डायना वरनॉन की मूलाकृति फर्कुहर के नाटक मे बेलिण्डा मे मिलती है जो अपने मित्र से कहती है,

"मै सारे प्रात काल शिकार के पीछे घोडे पर चढकर दौड सकती हू और सारी शाम नाच सकती हू। सक्षेप मे, मै अपने पिता के साथ शराब पीने और उडते पक्षियों को मारने के अतिरिक्त प्रत्येक कार्य कर सकती हू।"

उच्च और मध्य वर्गो मे लडकियों के लिये पतियो को स्पष्ट वस्तु-विनिमय के के सिद्वान्त पर खोजा जाता था। भूस्वामी मोलसवर्थ ने अपनी लडकी क्लॉटी के विषय मे लिखा है "हमारे पास यहा उसका विवाह करने के लिये पर्याप्त धन नही है अत हम उसे आयरलैंड मे सस्ती दर पर पति खोजने भेज देंगे।" गाइज नाम के एक अन्य भूस्वामी ने, जो विवाह करना चाहता था, लिखा हे "लेडी डायना ने एक बहुत सम्मानित व्यक्ति को मेरी जायदाद (जागीर) देखने को भेजा और उसके विवरण से बहुत सतुष्ट हुई और मेरे विचार से मेरे साथ अपनी पुत्री ब्याहने की उसकी उत्कृष्ट इच्छा है।" किन्तु पुत्री का भिन्न विचार था इसलिये गाइज को अन्यत्र सन्तोष करना पडा।

"त्रैमासिक सत्र मे शाति के एक न्यायाधीश ने मुझे एक ओर ले जाकर कहा कि क्या मै एक २६ हजार पौड के मूल्य की स्त्री से विवाह करना चाहूगा ? इस महिला को मैने देखा था किन्तु कभी उससे बाते न हुई थी। सभी बाते सोचते हुए मैने उसके प्रस्ताव को तुरन्त स्वीकार कर लिया।"

ऐसी ही स्पष्टता से अश्वारोही सेना का एक पताका-वाहक (जमादार) लिखता है—

"अन्य किसी वस्तु की अपेक्षा न करते हुए मैने इस अभियान को दूसरे विचार से, प्रेम के देवता के अधीन अपना भाग्य आजमाने के लिए, चलाया था। तदनुसार एक पक्ष पूर्व कुछ मित्रो ने एक बहुत अच्छी सम्पत्ति की अधिकारिणी महिला से मेरे विवाह का प्रस्ताव किया। किन्तु मै यह नही कह सकता कि पहले ही हो गए एक अनुकूल साक्षात्कार के आगे मै इस प्रस्ताव को कैसे आगे बढाऊगा।"

क्योकि प्रत्येक व्यक्ति अविवाहित रहना एक बडा दुर्भाग्य मानता था इसलिए दूसरो के द्वारा उनके विवाह का निर्णय वे एक सार्वभौमिक कष्ट नही मानती थी। किन्तु उनके भाग्यनिर्णय के पूर्व साधारणतया उनकी राय ले ली जाती थी जिसकी मात्रा स्वभाव और परिस्थिति के अनुसार कम या अधिक हो सकती थी। एक नवयुवती के विवाह के अवसर पर उसे स्विफ्ट ने इस प्रकार लिखा "तुम्हारे माता-पिता ने जिस व्यक्ति को तुम्हारा वर चुना है वह दूरदर्शिता (व्यवहारकुशलता) और सामान्य अच्छी पसून्द मे तुम्हारा उत्तम साथी है और इस सूत्र मे रोमानी प्रेम के हास्यास्पद आवेश का तिलमात्र समिश्रण नही है।" उस काल मे माता-पिता अथवा अन्य उत्तरदायी सम्बन्धियो द्वारा निश्चित किए गए अधिकाश विवाह शायद उपरोक्त वर्णन के अनुकूल होते थे। किन्तु चूकि बहुधा हास्यास्पद आवेश भी प्रबल हो जाता, इसलिये घर से भाग कर विवाह करना भी एक साधारण घटना थी,

जैसा कि लेडी मैरी वोर्टल माटेगु के मामले मे हुआ था। और जिन बहुत से मामलो मे यह निराशाजनक घटना नही होती, साधारण विवाहो का एक सदैव बढता हुआ अनुपात पारस्परिक प्रेम का परिणाम होता था।

विवाह-विच्छेद लगभग अज्ञात था। इसे केवल गिरजाघर के न्यायालयो के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता था, और ऐसा तभी हो सकता था जबकि ससद द्वारा एक विशेष अधिनियम पारित किया जाता। रानी ऐन्नी के शासनकाल के बारह वर्षो मे तलाक छह मामलो से अधिक को वैध नही किया जा सका।

स्त्री-पुरुष दोनो बेरोक-टोक जुआ खेलते थे। ग्रामीण जागीरदारो की तुलना मे शिष्ट महिलाए और सभ्रान्त जन अधिक जुआ खेलते थे। लन्दन, बाथ और टुन ब्रिज वेल्स मे जुआ खेलने की मेज मनोरजन का केन्द्र-बिन्दु थी। जागीरदारो के भवनो मे अस्तबलो और कुत्ता-खानो मे जुए की अपेक्षा अधिक दिलचस्पी ली जाती थी। जुए और क्रीडा पर तथा भवन-निर्माण, बाग लगाने और सडको के किनारे वृक्षो की पक्तिया लगाने के श्रेष्ठ उत्साह पर किए गए व्यय के कारण जागीरदारो पर रहनो का बोझ बढता जाता था जो कृषि सुधार और पारिवारिक आनन्द के लिए एक बडी बाधा थी। ताश और जुआ खेलने मे बहुत बडी धनराशि का हेर-फेर होता था।

सभी वर्ग के अग्रेज पुरुषो का एक प्रचलित राष्ट्रीय दुराचार (व्यसन) मदिरा-पान था यद्यपि ऐसे समय मे जब प्रत्येक घर मे चाय अथवा काफी नही मिलती थी और पीने के लिए शुद्ध पानी भी नही मिलता था तो स्त्रिया इसकी दोषी नही ठहराई जाती थी। सम्पूर्ण मद्य-निषेध के लिए आन्दोलन चलाने का विचार ही नही आ सकता था। किन्तु धार्मिक सगठनो एव चिन्ताग्रस्त देशभक्तो ने कम शराब पीने के पक्ष मे लघु पुस्तिकाओ का अबाध रूप से प्रचार कराया था जिनमे मदिरा पीने के विभिन्न भयानक परिणामो का आकर्षक ब्यौरा दिया जाता था। इन विवरणो के अनुसार, कुछ मदिरा पीने वाले तो घोडे पर सवार होकर घर आते समय मार्ग मे ही मर जाते और कुछ मदिरा पीकर पापाचार मे लीन हो जाने पर मूर्छित हो जाते। सभी सीधे नरक को चले जाते। साधारण जनता मे जौ की शराब सर्वाधिक प्रचलित थी, किन्तु जौ की शराब की एक खराब प्रतिद्वन्दी मदिरा थी, जिसकी गन्ध मे भयानक आकर्षण होता था। जार्ज द्वितीय के शासनकाल मे होगार्थ की 'जिन लेन' थी। इसके पूर्व मदिरा-पान अपनी चरम सीमा पर नही पहुँचा था यद्यपि इस दिशा मे स्थिति आगे बढने लगी थी।

इस समय उच्च वर्ग कभी शराब पीता था और कभी जौ की शराब। यह कहना कठिन है कि फैशनैबुल लोग सबसे अधिक शराब पीते थे अथवा ग्रामीण सभ्रान्तजन। किन्तु शायद घर से बाहर के कार्य, जैसे लोमडी का शिकार, अन्य शिकार खेलना और कृषि करना, भूस्वामी को अधिक मात्रा मे शराब पीने के योग्य बना देते थे। इसकी तुलना मे सेण्ट जेम्स स्क्वायर के जुआरी (खिलाडी) तथा राजनीतिज्ञ अनगिनत हि्वग

तथा टॉरी दावतो मे प्रयुक्त विभिन्न प्रकार की देशी तथा फ्रासीसी शराबो के दुष्प्रभावो से बच सकने मे योग्य थे। मजिस्ट्रेट बहुधा न्यायालयो मे शराब पीकर आते थे। अत म्यूटिनी ऐक्ट (देश-द्रोह अधिनियम) के एक बुद्धिमत्तापूर्ण प्रावधान के अन्तर्गत 'कोर्ट मार्शल' केवल रात्रि के भोजन के पूर्व ही हो सकते थे।

मृत्तिका निर्मित सुदीर्घ नलो मे तम्बाकू अब भी पी जाती थी। कुछ ग्रामीण घरो मे तम्बाकू पीने के लिए एक पृथक कक्ष रहता था। किन्तु बाथ (गरम पानी के चश्मो के नगर) मे सार्वजनिक कमरो मे तम्बाकू पीना ब्यू नैश ने निषिद्ध कर दिया था क्योकि यह महिलाओ को अखरने वाला और उनके प्रति अभद्रता-सूचक था। दक्षिणी पश्चिमी जिलो के साधारण लोगो मे पुरुष, स्त्री और बच्चे शाम को पाइप (नलो मे तम्बाकू) पिया करते थे। जब १७०७ मे चर्च आफ इगलैड की सुरक्षा के लिये एक विधेयक ससद मे पारित हो रहा था तो सेण्ट डैविड का हाई चर्च बिशप, डा बुल, जिसे कुछ बिशप सदस्यो मे ह्विगो की ओर झुकाव होने का सदेह था, हाउस आफ लार्ड्स के गोष्ठी कक्ष मे बैठा बराबर पाइप पीते हुए उसे देखता रहा। उस समय के पादरी अपने प्रिय ट्रुबी काफी हाउस मे बैठकर जैसे स्विफ्ट के चरित्र पर आक्रमण करते थे इसका वर्णन निम्नाकित पक्तियो मे किया गया है

"पाइप पीते हुए थोडा रुककर वह सदेहपूर्ण ढग से सर हिलाता है।
ऐसे सकेत देना है कि कवि ईश्वर मे कदापि विश्वास नही करते।"

ऐन्नी के शासनकाल के प्रथम वर्ष मे इगलैड मे सुघनी तम्बाकू का प्रयोग आम बात हो गई थी। विगो खाडी मे एक अभियान मे सुघनी तम्बाकू से लदा हुआ एक स्पेनी जहाज अधिकार मे करने के बाद लन्दन के बाजारो मे विशाल मात्रा मे तम्बाकू के पहुँच जाने का यह परिणाम था।

समाज की जुआ खेलने और शराब पीने की आदतो तथा राजनैतिक गुटबन्दी की भयानकता के कारण बहुधा झगडे (द्वन्द) होते थे जिनमे से बहुतो की दुष्परिणामपूर्ण समाप्ति होती। जीवित बचा हुआ व्यक्ति यदि अपने कार्य की न्यायपरकता सिद्ध कर देता तो मानव-हत्या के अभियोग मे उसे थोडी अवधि के कारावास का दण्ड दिया जाता। अथवा शायद अपने पादरी की अभ्यर्थना पर ठडे लोहू से छूकर मुक्त कर दिया जाता था। ड्यूक से लेकर नीचे तक के सभी सभ्रान्त लोगो का तलवार रखना और एक दूसरे की नियम से हत्या कर देना विशेषाधिकार माना जाता था। जब शाम को लोग शराब के नशे मे धुत होते थे तब वे लडने लगते थे। और झगडा करते ही कमरे मे अपनी तलवारे निकाल लेते थे। यदि उसी समय हत्या नही करते तो घर के पीछे वाले बाग मे पुन लडने के लिए स्थगित कर देते। उसी रात को गर्म रुधिर तथा डगमगाते हाथ से अपने झगडे का फैसला कर डालते। यदि लोगो के पास तलवार न होती तो या तो झगडा होता ही नही अथवा भुला दिया जाता

अथवा फिर दूसरे दिन प्रात को उसे निपटाने का निर्णय होता जब शराब का नशा उतर जाता। लन्दन मे लोग ग्राम तौर पर अपनी पोशाक के आवश्यक भाग के रूप मे तलवार अपने साथ रखते थे किन्तु सौभाग्य मे सुदूर ग्रामीण क्षेत्रो मे अग्रामीण परन्तु अच्छे स्वभाव के भूस्वामियो मे यह ग्राम बात नहीं थी। वास्तव मे उनकी धमकी ही अधिक आतकपूर्ण थी। बाथ मे ब्यू नैश अपनी निरकुश सत्ता मे फैशनेबुल लोगो को भी अपनी तलवारे एक ओर रखने को बाध्य कर देता ज्योही वे लोग उसके अधिकार-क्षेत्र मे प्रवेश करते। इस कार्य मे वह समुदाय की उतनी ही अच्छी सेवा करता जितनी सायकालीन समाजो और नृत्यो मे ग्रामीण घामडो को ऊँचे जूते पहनने और भोडी भाषा बोलने से मना करने मे। उत्सवों के आयोजक की हैसियत से नैश को ऐन्नी तथा प्रथम एव द्वितीय जार्जो के शासनकाल मे जो सर्वोच्च सत्ता प्राप्त रही उससे उसने मानवता के उपेक्षित आचरणो को सुसभ्य बनाने का उतना ही काम किया जितना अठारहवी शताब्दी के किसी व्यक्ति ने किया। किन्तु उसने सार्वजनिक जुआ को प्रोत्साहित किया और वह स्वय विजयी पक्ष से एक निश्चित प्रतिशत धन लिया करता था।

लन्दन और काउण्टियो की राजधानियो मे इस प्रकार के द्वन्दो के दृश्य बहुत आम घटना थी जिनको थैकरे ने अपनी कृति **एस्माड** मे अमर कर दिया। लीसेस्टर फील्डस की तुलना मे कही अधिक माण्टेगू भवन के पीछे खुले ग्रामीण क्षेत्र को, जिस स्थान पर कि वर्तमान ब्रिटिश अजायबघर (सग्रहालय) बना है, द्वन्द करने वाले इसलिए चुनते थे क्योकि यह उस समय के लन्दन के किनारे पर था। निम्नाकित पक्तियो मे वर्णित दोहरी घटना जैसी घटनाओ से नगर के जीवन का विक्षुब्ध हो जाना कोई असाधारण बात न थी।

"जैसी सूचना मिली है, नेड गुडईयर ने ब्यू फील्डिंग की हत्या कर दी है और फरार हो गया है। ड्रूरी लेन मे प्लेहाउस (जुए घर) मे झगडा शुरू हुआ था। उसी रात को उसी स्थान पर एक कैप्टन ने नवयुवक फुलवुड के साथ वैसा ही व्यवहार किया जिससे वार्विकशायर के दो ब्यू कम हो गए। कैप्टन न्यूगेट मे है।"

पुनस्स्थापन के पश्चात् से ही विदेशी लोग उन मैदानो की प्रशसा करते थे जहा अग्रेज गेद फेक कर खेला करते थे। वे कहा करते थे कि वे मैदान इतने समतल है कि उन पर अग्रेज वैसे ही आसानी से गेद फेक सकते है जैसे बिलियर्ड की बडी मेज पर, क्योकि ग्रामीण क्षेत्रो मे सभ्रान्त लोगो का यह साधारण मनोविनोद था इसलिए वे हरे-भरे मैदानो पर बडे गोल पत्थरो को घुमाकर उन्हे चिकना (समतल) रखते थे। ऐन्नी के शासनकाल मे ग्रामीण खेल-कूदो मे अत्यधिक प्राचीन फुटबाल के साथ एक पिछडे प्रकार के क्रिकेट का प्रवेश प्रारम्भ हो रहा था। इस नये खेल मे केट का जिला सर्वाधिक विख्यात था और केण्टवासियो मे डार्टफोर्ड के पुरुषो का इस खेल मे सर्वाधिक कुशल होने का दावा था।

कुक्कुट-युद्ध मे सभी वर्ग अपने-अपने बाजी लगे पक्षी को लघु दगल स्थल के आस पास घूमकर चिल्ला चिल्लाकर प्रोत्साहित करते थे। यदि दैवयोग से कोई विदेशी वहा आ जाता तो वह निश्चय ही सारे जमघट को पागल मान लेता, क्योकि वे लोग निरन्तर छह के विरुद्ध चार, पाच के विरुद्ध एक चिल्लाते थे और इसे बडी मुस्तैदी (लगन) से दोहराते थे। प्रत्येक दर्शक अपने प्रिय मुर्गे के साथ उस दृश्य मे भागीदार था जैसेकि वह मानो उसका दलगत हित हो। एक अधिक खुले हुए क्षेत्र मे घुड-दौड का दृश्य बहुत कुछ ऐसा ही होता था। दर्शक, अधिकाश घोडो पर सवार होकर, घुड-दौड के रास्ते पर तेज भागते थे और आवेश से चिल्लाते थे। ये सभाये अभी भी क्षेत्रीय अथवा जिलास्तरीय होती थी। केवल न्यूमार्केट मे एक राष्ट्रीय सभा होती थी। वहा निश्चय ही मैदानी भाग के घुड-सवारो की विशाल सख्या एक प्रतियोगिता के लिए एकत्र होती थी, जिसमे ड्यूक से लेकर गामीण कृषक तक सभी समान स्तर पर माने जाते थे। किसी भी व्यक्ति के पास तलवार नही होती थी, वे सभी लोग अश्वक्रीडाओ के लिये निर्धारित स्थान के स्वरूप और परिस्थिति के अनुसार कपडे पहनते थे। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे से घुड-सवारी मे बाजी मारने का कठिन प्रयास करता था। रानी ऐन्नी गुप्त सेवा के कोष मे से न्यूमार्केट तथा विण्डसर के निकट डैचेट मे प्लेटे पुरस्कार मे दिया करती थी। इस क्रीडा के कतिपय कुलीन सरक्षको तथा गोडोल्फिन द्वारा अरब और बार्ब नस्ल के घोडो का प्रवेश किया जा रहा था। इस परिवर्तन मे इगलैड मे घोडो की शक्ल और चरित्र से सम्बन्धित महान भावी परिणाम निहित थे।

जब हम यह कल्पना करने का प्रयास करते है कि हमारे समस्त पूर्वज किस प्रकार से बस्तियो के बाहर अपना मनोरजन करते थे तो हमे यह स्मरण रखना चाहिए कि उनमे से अधिकाश ग्रामीण क्षेत्रो मे दूर-दूर बिखरे हुए रहते थे। अधिकाश लोगो के लिए ग्राम ही सामाजिक अन्त क्रिया की सबसे बडी इकाई थी। एक ग्रामीण क्रिकेट मैच अथवा फुटबाल के मैदान का कोलाहल अथवा हरे मैदान मे दौडे आधुनिक क्रीडा-क्षेत्रो के सगठित खेलकूद से बहुत भिन्न होते थे। परन्तु अधिकाश लोग अपनी 'कसरत' स्वाभाविक रूप से अपना दैनिक कार्य करते हुए खेत जोतने, टहलने अथवा घुड-सवारी करने मे, कर लिया करते थे। उच्च और मध्य वर्ग मे सर्वसामान्य दैनिक कार्य घुड-सवारी था।

बहुत से लोगो के दरवाजो पर सर्वसाधारण क्रीडा (मनोरजन) मछली मारना, सभी प्रकार की चिडियो को जाल मे फसाना और गोली से मारना था। विशेषकर लोग जानवरो का शिकार खेलते थे किन्तु अन्यतम रूप से नही। इगलैड मे शिकारी पशुओ और बहुत से पक्षियो की भरमार थी, जो कि अब अत्यल्प बचे हैं, अथवा विनष्ट हो गए है। बहुत सी भूमि की कठोरता से रक्षा की जाती थी और केवल स्वामी ही (खेत के) वहा गोली चलाते थे। परन्तु विशाल भू-भाग ऐसे किसी भी मनुष्य के लिए खुला था जिसके पास जाल अथवा बन्दूक होती अथवा जो लासा लगाने मे बडा

कुशल होता। गेन्नी के शासनकाल मे और वास्तव मे शेष शताब्दी भर, कैम्ब्रिज के चारो ओर पकभूमि और बिना जुती हुई भूमि पूर्वस्नातको के लिये सामान्य शिकार-गाह थी जहा से वे तीतर, बतख आदि अनेक प्रकार के पक्षियो को मारकर साथ लाते थे। उन्हे वहा कोई रोक-टोक नही थी। इस मनोरम द्वीप के प्रत्येक भाग मे बीहड, झाड-झखाड तथा दलदल थे जिन पर मनुष्य का कोई ध्यान न गया था और जहा सुदीर्घ काल के उपरान्त जल-निकासी, जुताई अथवा इमारतो का निर्माण होना था। वे हर प्रकार के वन्य जीवन के छिपने के स्थल थे। अंग्रेज अपने घर के द्वार से कुछ कदम आगे जाते ही सर्वोत्तम प्रकृति के सम्पर्क मे आ जाता था। विस्तृत क्षेत्र मे आमोद-प्रमोद के लिए वह दूर-दूर घूमने निकल जाता।

बहुत कम ग्रामीणो ने किसी प्रकार का शहरी जीवन देखा था। अधिकाश लोग जीवन पर्यन्त ग्राम देवता (यूनान के) और उसके जादू के प्रभाव मे रहते थे। अंग्रेजी बच्चो का मानसिक भोजन घरो मे आग के पास बैठकर कही गई उन परियो, भूत-प्रेतो तथा डायनो की कहानिया होती थी जो हाल-हाउस को आते थे। सभवत बच्चे इन पर अर्ध-विश्वास करते थे किन्तु उन्हे सुनकर थर्रा जाते थे। अब केवल डायन की ओर सकेत किया जा सकता था, न तो उसे फासी दी जा सकती थी और न डुबाया जा सकता था। इस प्रकार सासारिक पुराण कथा से भरपूर मनोरजन होता था। नगर की शकालुता से अप्रभावित जनसाधारण को अब भी विश्वास था कि जगलो मे परिया नाचती है जो किसी राहगीर के निकट आते ही अदृश्य हो जाती है।[1] गावो मे थोडी पुस्तके थी। साधारण किसानो अथवा झोपडी-वासियो ने बाइबिल तथा प्रार्थना पुस्तक के अतिरिक्त कोई छपी सामग्री नही देखी थी। उन्होने दीवालो पर चिपके हुए फ्रास की जोन तथा अंग्रेजी माल के शौर्यगीत देखे थे जिनमे सुन्दर रोजामण्ड तथा रॉबिन हुड और बन मे छोटे बच्चो का बखान होता था। अत 'तर्क की शताब्दी' की समाप्ति पर भी तथा शासक वर्ग मे नागरिक कविता के प्रचलन के बावजूद अंग्रेजी जनता मे आश्चर्य करने की प्रवृत्ति मरी नही थी। वर्ड्सवर्थ ने अपने मस्तिष्क मे कल्पना की वृद्धि का कारण उन परीकथाओ तथा ग्रामीण उत्तरी आचल के शौर्य-गीतो को माना है जिनको उसने अपनी बाल्यावस्था मे सुना था, न कि उन्नीसवी शताब्दी की कक्षा के बुद्धिवाद को। (**प्रील्यूड,** पुस्तक ५, १, पृष्ठ २०५ आदि)। राष्ट्र मे समरूप मानसिकता

---

[1] शिक्षित उच्च वर्ग साधारणतया परियो के वास्तविक अस्तित्व मे विश्वास नही करता था। १७०७ मे दार्शनिक शैफ्टेस्बरी ने अपनी पुस्तक **लेटर कन्सर्निंग इन्थ्यूजियाज्म** मे लार्ड सोमर्स को लिखा था, 'मै आप जैसे महानुभाव को एक प्रसिद्ध, विद्वान और सच्चे ईसाई पादरी, जिसे आप एक बार जानते थे और जो परियो मे अपने विश्वास के बारे मे आपको एक पूरा विवरण दे सकता था, के मस्तिष्क मे रख सकता था' जैसेकि ऐसा विश्वास करना असामान्य और स्पष्टरूप से बेहूदा हो।

गढने के लिए नगरो मे प्रकाशित समाचार पत्र अथवा पत्रिकाए नही थी। विस्तृत ससार से इस प्रकार के अलगाव मे प्रत्येक शायर, प्रत्येक गाव की अपनी परम्पराये, स्वार्थ और चरित्र होता था। ब्लेनहीम के युद्ध अथवा डा० सेकवेरेल पर मुकदमा चलने जैसी कतिपय असामान्य घटनाओ के अतिरिक्त ग्रामीण लोगो को अपने मामलो के सिवा बात करने का कोई अन्य विषय नही होता था। जाने-समझे विषयो पर वे अपनी चातुर्यपूर्ण देहाती टीकाओ को अपने ग्रामीण क्षेत्र की बोली मे सक्षिप्त रूप से व्यक्त करते थे। स्वय उनके ग्राम-जीवन का दैनिक मानव-नाटक गपशप और सनसनी-खेज बातो के लिए सतोषप्रद था जिसमे चोरी से सम्बन्धित झगडे, तस्करी की साहसिक घटनाये, सघर्ष और प्रेम, भूत-प्रेत तथा आत्म-हत्याए, सराय के स्वामी तथा पनचक्की वाले और पादरी तथा जागीरदार के झगडे, सभी कुछ होते रहते थे।

सडको के निर्माण एव मरम्मत के लिए यथेष्ट प्रशासकीय तत्र के अभाव मे सडको की अब भी खराब दशा थी। जिस पैरिश से होकर सडक जाती थी वह वर्ष मे छह दिन बिना मजदूरी दिए किसानो के श्रम से उसकी देख-रेख करने को कानूनन बाध्य होता था। इस कार्य का बाह्य निरीक्षण नही होता था। उन्ही मे से एक को सर्वेक्षक चुन लिया जाता था। विशद सडको के प्रयोगकर्त्ताओ पर उनकी मरम्मत का भार न डालकर उन पैरिशो पर, जिनसे होकर सडक जाती थी, भार डालने का अनौचित्य केवल उस मूर्खता से तुलनीय था जिसमे किसानो को सडको के निर्माण के लिए मुफ्त ही कुशल कारीगर मान लिया जाता था जबकि इस कार्य मे उनकी कोई रुचि नही थी। इसका अर्थ यह हुआ कि द्वीप से रोमनो के चले जाने के पश्चात से बहुत अपर्याप्त सख्या मे सख्त सडके निर्मित हुई थी अथवा बनी हुई थी। मध्य युगो मे जब व्यापार नही था तो इसका कम महत्व था। उत्तरकालीन स्टुअर्टो के काल मे जब व्यापार विशाल था और शीघ्रता से बढ रहा था इसका महत्व बढ गया था। अच्छी सडको का अभाव एक राष्ट्रीय अपमान माना जाने लगा था। सडको के प्रयोगकर्त्ताओ द्वारा उसके रख-रखाव के लिए धन देने के लिए चौकियो की स्थापना की नई व्यवस्था ससद के अधिनियमो की कुछ सबसे खराब धाराओ द्वारा लागू की गयी थी। ऐन्नी के शासनारूढ होने पर शान्ति के स्थानीय न्यायाधीशो की प्रणाली का चुगी—चौकियो के प्रबन्ध के लिए प्रयोग किया गया किन्तु शासन के अन्तकाल मे चुगी चौकी के न्यासिको की विशेष समितियो की कभी-कभी सविधान द्वारा स्थापना की गई। परन्तु जब तक हैनोवर घराना शासनारूढ नही हुआ तब तक इस साधन द्वारा किसी प्रकार का सामान्य सुधार नही किया जा सका। लकाशायर के एक प्रमुख मार्ग का डिफो ने इस प्रकार वर्णन किया है "हम अब ऐसे प्रदेश मे है जहा सडको की पटरी पर छोटे-छोटे ककड बिछाये जाते है जिससे हम इस सडक की उस पटरी पर, जो साधारणतया डेढ गज चौडी होती थी, पैदल अथवा घोडे पर सवार होकर चल सके। किन्तु सडक का मध्य भाग, जहा गाडियाँ चलने को बाध्य थी, बहुत बुरा होता था।"

शीत ऋतु और बुरे मौसम म गाडिया सडक पर चलने का प्रयास नही करती थी। घुडसवार भोर म ही चल निकलते थे, जिससे लद्दू घोडो की लम्बी पक्तियों के आगे रह सके, जिन्हे सकडे रास्ते पर पिछाडना कठिन होता था।

ऐसी दशाओ मे, समुद्री या नदी—यातायात, चाह वह कितना ही धीमा हो, सडक यातायात की अपेक्षा विशेपकर भारी सामानो के लिए बहुत सुविधाजनक था। तेज-दौडने वाले घोडो की टोलियो द्वारा लाइम, रेगिस से लन्दन को मछलिया भेजी जा सकती थी किन्तु वहा कोयला समुद्र के मार्ग से आता था। इतने पर भी जबकि टिनेसाइड की खान के मुँह पर एक चाल्ड्रन (कोयले की नाप—३६ बुशल) का मूल्य केवल पाच शिलिग होता था, लन्दन मे आने पर इसका दाम ३० शिलिग हो जाता था। ऊपरी टेम्स नदी के नगरो मे तो कोयले का दाम पचास शिलिग तक हो जाता था। यह अशत इस कारण था कि कोयले के समुद्री यातायात पर सेंट पॉल गिरजा के पुनर्निर्माण तथा फ्रासीसी युद्ध का व्यय-भार उठाने के लिए कर लगाया जाता था। यार्कशायर, लकाशायर तथा पश्चिमी मिडलैड के उन नगरो मे कोयला सस्ता था जहा खान के मुँह से काल्डर और सेवेर्न जैसी नदियो द्वारा वह लाया जा सकता था। देश के भीतरी भाग मे नदियो द्वारा ढोये गये कोयले पर समुद्री मार्ग से ढोये गए कोयले की भाति कर नही लगता था, न ही इस पर डकर्क के निजी सैनिको का आक्रमण होता था और न ही टाइन तथा टेम्स नदियो के बीच रॉयल नेवी द्वारा प्रदत्त अपर्याप्त निगरानी व्यवस्था के प्रतिफल प्रतिबन्धो मे परेशान किया जाता था।

खानो का स्वामित्व तथा उनके सचालन मे दिलचस्पी लेना देश के उच्चतम कुलीनो के गौरव के प्रतिकूल नही माना जाता था क्योकि योरुप के अधिकाश देशो के विपरीत इगलैड मे सोने और चादी के अतिरिक्त सभी खनिज पदार्थ भूमि के स्वामियो की सम्पत्ति माने जाते रहे है। उस काल के कोयले के जागीरदार मालिको मे लार्ड डार्टमाउथ था जो सैण्डवेल मे अपने ग्रामीण निवास के निकट स्टैफर्डशायर की कई खानो का स्वामी था। उसी ग्रामीण क्षेत्र का एक सभ्रान्त व्यक्ति, जिसका नाम विल्किन्स था, उसका प्रतिद्वन्द्वी था जिसने लीसेस्टरशायर की कोयले की खानो को हडप लिया था।

उस समय लकडी के लट्ठो से सहारा न देकर कोयले की खानो मे छत को रोकने के लिये कोयले के खबो को छोड देने का चलन था। ४०० फीट अथवा अधिक गहराई तक खान की सुरगे बनाई जाती थी और लकाशायर मे १७१२ मे इजीनियरो ने खान से पानी बाहर निकालने की एक ऐसी मशीन बनाई थी जिसे प्रथम वास्तविक वाष्प-इजिन कहा गया था। टाइन साइड नदी पर जहाजो मे कोयला लादने के लिए भारी गाडियो के जाने के लिये लकडी की पटरिया इस्तेमाल की जाती थी। अकेले न्यूकैसल के आसपास के क्षेत्र मे कोयले के यातायात मे बीस हजार घोडे लगे रहते थे।

मध्य युग की तुलना मे बडी खाने बहुत अधिक गहरी होती थी, अत अग्नि आर्द्रता के कारण अधिक विस्फोट होने लगे थे। उदाहरण के लिए १७०५ मे गेटशेड तथा १७०८ मे चेस्टर-ले-स्ट्रीट की दुर्घटनाए, जिनमे एक सौ खनिक मारे गये थे। इसके अतिरिक्त कई मील के घेरे मे अनेक घरो तथा व्यक्तियो को भारी नुकसान हुआ था। एक आदमी तो तीन सौ फीट की गहरी सुरग के मुँह के भीतर से उड गया था और उस स्थान से बहुत दूर जाकर गिरा था। उसी उत्तरी डरहम जिले मे दो वर्ष पश्चात् एक दूसरा विस्फोट हुआ था जिसमे अस्सी व्यक्ति मरे थे। परन्तु इस समय भी सतह पर खनिजो को निकालने की काफी बडी मात्रा थी। पश्चिम मे अनेक बीसियो छोटी-छोटी खाने थी जहा दो-तीन खनिक काम करते थे और कभी-कभी तो अकेला खनिक ही।

इस कथन, कि प्राचीन इगलैड मे उद्योग की विधि घरेलू थी, का एक महत्वपूर्ण अपवाद हमे सभी प्रकार के खनिको और प्रत्येक काउन्टी के ककड-पत्थर की खानो के खनिको मे मिलता है। कुछ अन्य अपवाद भी थे किन्तु उनको निश्चित करना और परिभाषित करना अधिक कठिन है। अनेक कार्यशालाओ के आहाते इतने बडे होते थे तथा उनमे प्रशिक्षित होने वाले नौसिखिए एव वेतनभोगी कर्मचारी इतने अधिक थे कि उन्हे घरेलू पद्धति तथा औद्योगिक पद्धति के बीच मे खडा माना जा सकता था। उद्योग का सामान्य आधार अब भी शिल्पशिक्षण व्यवस्था थी, लडके और लडकियो दोनो के लिए उद्योग मे प्रवेश का यही वैधानिक द्वार था। क्रूर स्वामी अथवा स्वामिनिया शिल्पशिक्षण पद्धति का बहुधा दुरुपयोग करते थे। निर्धन शिल्पशिष्यो के प्रति उतना ही बुरा व्यवहार किया जाता था जितना कि बाद वाली कारखाना पद्धति के निकृष्टतम दिनो मे बच्चो के प्रति। उस समय न तो निरीक्षक थे और न दुरुपयोग पर रुकावटे (नियत्रण)। दूसरी ओर शिल्पशिष्य अपने मालिक के 'परिवार' का अग माना जाता था और औसत आदमी अपने ही परिवार मे तथा अपने ही भोजनस्थल पर दु खी चेहरे नही देखना चाहता था। इसके अतिरिक्त शिल्पशिक्षण पद्धति उस अनुशासन तथा दक्ष प्रशिक्षण के लिए अति मूल्यवान थी जिसे यह महत्वपूर्ण 'विद्यालयेतर आयु' की अवधि मे प्रदान करती थी। हमारे समय मे इस आयु के लोगो की बहुत उपेक्षा होती है। मोटे तौर पर इससे विद्यालय-शिक्षा की कमिया पूरी हो जाती थी। शिल्पशिक्षण पद्धति शिल्पकौशल एव चरित्र-निर्माण का प्राचीन अग्रेजी विद्यालय था।[1]

---

[1] रानी ऐन्नी के शासन मे पहले से ही इस प्रकार की शिकायते थी कि प्रचलित कानून के अनुसार काम सीखने सम्बन्धी व्यवस्था सार्वभौमिक रूप से अनिवार्यत नही लागू की जाती थी। १७०२ मे केन्डल के कारपोरेशन ने एक नये और कठोर कानून को लागू करने की याचना की थी क्योंकि उस समय तक यद्यपि कुछ ऐसे कानून विद्यमान थे

शिल्पशिक्षण मे प्रवेश करने के लिए पर्याप्त बडा होने के पूर्व बच्चे कभी-कभी अपने पिता की कुटीर मे ही उस अवस्था मे कार्य सीखने लगते थे जिसमे कि बाद के समय के कारखाना के बच्चे काम करते थे। इस शैली मे विशेषकर कपडे के उद्योग के लिए सूत काता जाता था। डिफो ने कोलचेस्टर और टौन्टन कपडे के क्षेत्र मे इस स्थिति पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए लिखा था "इस क्षेत्र के आस-पास पाच वर्ष की आयु से अधिक का ऐसा कोई बालक नही था, यदि उसके माता-पिता ने उसकी उपेक्षा न की हो अथवा पढाया न हो, जो अपनी जीविका स्वय न कमा लेता।" पुन वेस्ट राइडिग की कपडे की घाटियो मे तो उसे सभी बच्चे चार वर्ष की आयु से नीचे के ही मिले थे किन्तु वे सभी कमाने मे सक्षम थे। बेचारे छोटे कीडे ! किन्तु कम से कम जब कभी उनके माता-पिता उन्हे खेलने देने जाते थे वे गन्दी बस्तियो के असीम वीरानो की अपेक्षा निकट के खेतो मे ही खेल सकते थे।

ग्रामीण कुटीरो मे मुख्यत स्त्रिया और बालक सूत कातते थे, और गावो तथा कस्बो मे मुख्यत पुरुष कपडे बुना करते थे। यद्यपि ये दोनो प्रक्रियाये घरेलू परिस्थितियो मे चलती थी फिर भी सेवायोजको अथवा मध्यस्थो, जो कुटीर स्वामियो से निर्मित माल खरीदते थे, द्वारा पूजीवादी सगठन और निरीक्षण की स्थापना आवश्यक थी। इगलैंड के विभिन्न क्षेत्रो मे, जहा कपडे का व्यापार प्रगतिशील था, इस व्यापार के सगठन की पद्धतिया भिन्न-भिन्न थी।

उस समय का प्रमुख उद्योग कपडे का व्यापार था। अग्रेजी निर्यातो का २/५ भाग इगलैंड मे बुना कपडा होता था। हमारे बहुत से आन्तरिक (घरेलू) कानूनो तथा आर्थिक एव विदेशी नीति के बहुत से उपायो का उद्देश्य कपडे का निर्माण तथा घरेलू व विदेशी बाजारो मे उसकी बिक्री को प्रोत्साहित करने का महान राष्ट्रीय लक्ष्य था। यह अनुभव किया जाता था कि ससार के यातायात व्यापार मे डच प्रतिद्वन्दियो की तुलना मे उपरोक्त लक्ष्य की सिद्धि मे हमारा वास्तविक लाभ था। क्योकि हमारे यहा कपडे का विशाल उत्पादन होता था, जिसे हम विदेश जाने वाले जहाजो मे लादकर भेज सकते थे, जब कि डचो के पास हेरिग मछली (उत्तरी अतलातक सागर मे मिलने वाली) के अतिरिक्त निर्यात करने के लिए अन्य कुछ न था, जिससे वे दूसरे राष्ट्रो के बीच मे केवल माल ढो सकते थे।

कि सात साल तक काम का प्रशिक्षण प्राप्त किये बिना लोग किसी भी व्यापार को स्थापित कर सकते थे फिर भी जब कभी ऐसे लोगो पर उक्त कानूनो के उल्लघन करने का मुकदमा चलाया जाता तो उनके साथ दया बरती जाती और उनमे से किसी को दण्ड नही दिया जाता। (एच एम सी बैगोट, आर, दम, भाग ४, पृष्ठ ३३६)।

ससार के महान बाजारो को अग्रेजी कपडे के लिए खुला रखने की इच्छा ने अग्रेजो को फ्रासीसी-स्पेनी शक्ति के विरुद्ध १७०२ मे युद्ध छेडने के लिए मुख्यत प्रेरित किया था जो उस समय लुई चौदहवे के नेतृत्व मे स्पेन, नीदरलैड, दक्षिणी अमरीका तथा भूमध्यसागरीय देशो मे हमारे माल के प्रवेश को रोकने की तैयारी मे थी। १७०४ मे जिब्राल्टर पर अधिकार करना और उस पर आधिपत्य बनाए रखना केवल थल सेना अथवा जल सेना की महत्वाकाक्षा न थी। भूमध्यसागर तथा टर्की व्यापार मे निर्बाध प्रवेश कपडे के उद्योग के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण था। उन प्रदेशो मे न केवल हमारे कपडे की विशाल मात्रा बिकती थी अपितु हमारे व्यापारी स्पेन तथा दक्षिणी इटली से यहा कपडे के निर्माण मे प्रयोग होने वाला तेल लाते थे। स्पेन की मेरिनो भेडो का ऊन यहा आता था जिसके बने कपडे पुन स्पेन मे बेचे जाते थे। जिसका अपना देशी उद्योग ह्रास की अन्तिम अवस्थाओ मे था। कुछ वर्षो पूर्व से स्वय इगलैड मे अच्छी किस्म की ऊन बहुमात्रा मे पैदा की जाती थी जिसके लिए भेडो के चारे मे सुधार के कई प्रयोग किए गए थे। हमारे अमरीकी उपनिवेशो को हमारे कपडे की बिक्री के लिए साधारणतया बहुत महत्वपूर्ण माना जाता था। उसी शताब्दी मे रूस मे भी उसकी माग मे भारी वृद्धि हो रही थी।

केवल सुदूरपूर्व मे भारी अग्रेजी कपडे को बेचना असभव था, और यही सबसे हानिकारक तर्क था जिसके विरुद्ध ससद मे अपने हितो की रक्षा के लिए ईस्ट इडिया कम्पनी को दलील देनी पडती थी। किन्तु वह इगलैड को जितना चाय और रेशम लाती थी उससे अग्रेजी कपडे की बिक्री मे असफलता का उसका गभीर अपराध तथा कपडे के स्थानापन्नो को खरीदने के लिए सोने अथवा चादी की ईंटो के निर्यात का उसका दुस्साहस क्षमा हो जाते थे। प्रतिद्वन्द्वी टर्की कम्पनी के व्यापारियो की यह दलील व्यर्थ हो जाती थी कि "यदि भारत से रेशम लाया जाय, जहा इसे सोने-चादी की ईंटो से सस्ता खरीदा जाता है, तो इससे टर्की के साथ हमारा व्यापार नष्ट हो जायेगा जहा से रेशम लेकर बदले मे हम कपडा भेजते है।" कपडा-निर्माताओ, टर्की व्यापारियो तथा कट्टरवादी (रूढिवादी) अर्थशास्त्रियो की दलीले फैशन और ऐश-आराम (विलासिता) की आवश्यकताओ के सामने फीकी पड जाती थी। 'हमारे वैभवशाली बाके स्पिटलफील्डस मे निर्मित कपडो की अपेक्षा भारतीय ड्रेसिग गाउन पहनकर आत्म-प्रशसा करते है।' इसके अतिरिक्त, सब महिलाय 'टी' पीती थी। अत भारतीय व्यापार को उन्नति करने की अनुमति मिली और उसके बावजूद कपडे के व्यापार मे भी उन्नति हुई।

ईस्ट इडिया कम्पनी के भारी जहाजो के कारण ही यह सभव हो सका था कि अब कम से कम धनी वर्गों मे चाय ही नही काफी भी एक साधारण पेय हो गया था। चार्ल्स द्वितीय के शासन से लेकर जार्जो के प्रारभिक काल तक लन्दन काफीहाउस सामाजिक जीवन का केन्द्र था। उस समय प्रचलित अत्यधिक सुरापान की आदतो से बहु-अपेक्षित निवृत्ति इसी से मिलती थी क्योकि काफीहाउस मे शराब पीना वर्जित था। रानी

ऐन्नी के काल मे काफीहाउसो (कक्षो) की सूची मे लगभग पाच सो नाम सम्मिलित थे। प्रत्येक प्रतिष्ठित लन्दनवासी का अपना प्रिय काफीघर था जहा उसके मित्र अथवा ग्राहक निश्चित समय पर उसे पा सकते थे। जब कोई दूकानदार दूकान छोडकर काफीघर जाता था तो अपने शिल्प-शिष्य (ऐप्रेन्टिस) से बतलाता था कि वह जब लोयड काफी हाउस मे होता है तो पत्रो को पढने और बिक्री करने मे वह कभी नही चूकता।[1]

ठाट-बाट से रहने वालो (बाको) की मडली जेम्स स्ट्रीट मे व्हाइट के चाकलेट हाउस मे एकत्र होती, जहा युवा श्रेष्ठियो को फैशनेबुल जुआडी तथा दुराचारी (व्यसनी) भ्रष्ट करते तथा उनका सारा धन व्यय करा देते थे। इस पर हार्ले ने घोर आपत्ति की थी। टॉरी दल के सदस्य क्रोको ट्री चाकलेट हाउस तथा व्हिग दल के सदस्य सेण्ट जेम्स काफीहाउस जाते थे, कावेन्ट गार्डेन के निकट विल्स काफीघर मे कवि, आलोचक तथा उनके सरक्षक एकत्र होते थे। टर्बी के काफी हाउस मे पादरी आते थे। विद्वान मडली का प्रिय काफी हाउस ग्रेशियन था। इसी प्रकार डिसेन्टर्स (असहमतिवादियो), क्वेकर्स, पैपिस्टो और जैकोबाइट्स के लिए भी विशिष्ट काफीघर उपलब्ध थे। तम्बाकू के धुए के बादलो के वातावरण मे अग्रेजी राष्ट्र की भाषण की सार्वभौमिक स्वतत्रता सरकार अथवा गिरजाघर (धर्म) अथवा अपने शत्रुओ के विरुद्ध समान प्रबलता से व्यक्त होती थी जिस पर बहुत समय तक विदेशियो को आश्चर्य होता रहा। काफीहाउस के जीवन का यही सारतत्व था।

आज के जीवन मे जो स्थान क्लब को प्राप्त है उस समय वही काफी हाउस को प्राप्त था, किन्तु वह एक अधिक सस्ता और अनौपचारिक ढग का था जिसमे अजनबियो (अपरिचितो) को प्रवेश की अधिक स्वतत्रता थी। जिन दिनो लोगो को अपने पद का सदैव ध्यान रहता था, काफीहाउस के जीवन का समतादायी प्रभाव था। काफी हाउस मे नीली धारियो और तारो से सुशोभित उच्च-पदासीन लोग अशासकीय सभ्रान्त जनो के साथ इस प्रकार बैठे देखे जा सकते थे जैसे कि उन्होने अपने गुणो तथा दूरी के अशो को घर पर ही छोड दिया हो, किन्तु यही सब कुछ नही था। उन दिनो जब तारो तथा

---

[1] १७०६ मे प्रकाशित नेड वार्ड की पुस्तक **वैल्दी शापकीपर** मे उसकी दैनिक दिनचर्या का इस प्रकार वर्णन किया गया है सुबह ५ बजे उठना, ८ बजे तक गणनागृह मे रहना, तब रोटी और मक्खन का नाश्ता करना, दो घटे तक अपनी दूकान मे रहकर फिर पडोस के काफीघर मे समाचारो के लिए जाना, पुन दूकान मे घर पर बारह बजे भोजन करने के पूर्व तक रहना, एक बजे चेञ्ज नामक स्थान पर जाना, ३ बजे कार-बार के सिलसिले मे लायड के काफीघर मे जाना, पुन १ घटा दूकान पर, तब किसी अन्य काफीघर मे मनोरजन के लिए जाना, उसके बाद दूकान बन्द कर अपने परिचितो के साथ शाम के हल्के भोजन के समय से पूर्व तक शराब पीना और तब ९ बजे रात्रि के पहले सोने के लिए जाना।

प्रभावपूर्ण पत्रकारिता का चलन नही था, काफीहाउस मे सबसे सरलता से समाचार ज्ञात हो जाते थे। चेरिग क्रास पर स्थित विडसर काफीहाउस तो स्वय विज्ञापन करता था कि "बारह पेंस प्रति क्वार्ट की दर से सर्वोत्तम चाकलेट देने के साथ डाक आते ही वहा 'हार्लेम कूरैण्ट' का अनुवाद भी दिया जाता है।" समाचार पाने का प्रयास केवल उसके राजनैतिक, सैनिक एव सामान्य रुचि के लिए ही नही किया जाता था अपितु व्यापार के उद्देश्य से भी, विशेषकर लोयर्ड्स हाउस मे, होता था। एडवर्ड लोयड, जिसका नाम जहाजरानी के सबध मे लोगो की जबान पर तुरन्त आ जाता है, अपने जीवन काल मे रानी ऐन्नी के शासन मे लोम्बार्ड स्ट्रीट पर काफीहाउस का मालिक था। उसके प्रतिष्ठान मे व्यापारी सबसे ताजा खबरे पाने तथा विभिन्न प्रकार के क्रिया-कलापो के लिए आवश्यक वैयक्तिक आदान-प्रदान और परामर्श के लिए आया करते थे। उस समय के समाचार-पत्रो मे व्यापार स्तभ नही होता था और न जहाजरानी के बारे मे ब्यौरे। जो महत्व आज प्रकाशित समाचारो का है वही कई मामलो मे मौखिक समाचारो का था। और व्यापारियो के लिए लोयड मे होने वाली बात-चीत बडे महत्व की थी। रानी ऐन्नी के शासन की समाप्ति के पूर्व लोयड मे नीलामो तथा जहाजरानी की खबरे पढने के लिए एक मच बना दिया गया था। 'हाई चर्च का लो चर्च' तथा 'डिसेन्ट' के प्रति झगडा राजनैतिक तथा धार्मिक क्रोध एव वाक्चातुर्य के प्रदर्शन का मुख्य विषय था। इतने पर भी, दूसरे पक्ष मे, विलियम और ऐन्नी के शासनकालो मे शुद्ध धार्मिक क्रिया और पुनर्जीवन का बोलबाला था जिनका देश के जीवन पर स्थायी प्रभाव पडा तथा जिन्होने भविष्य के महान् विकासो का बीजारोपण किया था। जिस युग की देन, धर्मार्थ विद्यालय तथा ईसाई ज्ञान-सवर्द्धन सभा है वह हाई चर्च तथा लो चर्च के झगडो मे ही समाप्त नही हो गया। इनमे से कुछ अच्छी क्रियाओ मे दोनो दलो के सदस्यो का परस्पर सहयोग रहा तथा उन्होने 'डिसेन्टर्स' (विमतावलबियो) से भी सहयोग किया।

धार्मिक पुनर्जीवन का सूत्रपात जेम्स द्वितीय के सक्षिप्त एव तूफानी शासनकाल मे हुआ था। डेवेनाट नामक टॉरी पुस्तिका लेखक ने रानी ऐन्नी के प्रारभिक वर्षो मे पुराने समय की उन बातो का वर्णन किया जिन्होने लोगो की आत्माओ को हिला दिया था।

"राजा जेम्स द्वितीय ने देश के धर्म मे परिवर्तन करने के लिये जो उपाय किये उनसे सभी प्रकार के मनुष्यो के मस्तिष्को मे ताजा उत्साह जागृत हुआ। जिसे खोदने का उन्हे भय था उसे उन्होने अधिक आग्रहपूर्वक पकड लिया। दरबारियो ने चर्च आफ इगलैड को असतुष्ट करने का कोई कार्य करने की अपेक्षा अपने पदो को त्यागना अधिक अच्छा समझा। न ही जहाजी बेडो तथा सेनाओ मे रहने के निन्दनीय ढगो से हमारे नौसैनिको तथा थल-सैनिको के सिद्धान्तो मे कोई अन्तर आया। वे सब अपरिवर्तित बने रहे। पादरियो ने अपने अनुयाइयो के साथ मर मिटने मे सन्नद्धता दिखलाई तथा उन्होने देवत्व के विवादास्पद भागो की व्यवस्था आदिमकालीन साहस

और प्रशसनीय विद्वता क साथ की। सर्वत्र गिरजाघरा मे भीड रहने लगी और धार्मिक प्रपीडन की मभावनाओ ने यद्यपि कभी कभी दुस्साहस के कारण ही होती थीं, भक्ति को जन्म दिया।"

जिस सकटकाल ने धार्मिक पुनर्जीवन को जन्म दिया था उसकी समाप्ति के साथ नैतिकता तथा धार्मिक पुनर्जीवन के लक्षण नही मिट सके। इसका प्रथम उदाहरण यह है कि इसने 'चर्च ऑफ इगलैड' के भीतर पूर्व स्थित धार्मिक सगठनो के कार्य को बडा महारा दिया। ये सगठन गम्भीर युवा पुरुषो के समूह थे जो साधारणतया किसी सक्रिय पादरी के प्रभाव मे आकर एक दूसरे को धार्मिक जीवन एव अभ्यास मे सुदृढ करने के उद्देश्य मे सगठित होते थे। अनेक वर्षो पश्चात्, जॉन वेसले का मूल विचार चर्च के भीतर ऐसे सगठनो का निर्माण करना था जो उनसे मिलती-जुलती हो जिन्हे उसके उत्साही पादरी पिता ने विलियम और ऐन्नी के शासनकालो मे सहायता दी थी और जिनकी रक्षा की थी। इन समूहो का प्रथम उद्देश्य व्यक्तियो और परिवारो मे ईसाई जीवन का प्रवर्तन करना था तथा गिरजाघरो मे उपस्थिति, पारिवारिक प्रार्थनाओ तथा बाइबिल के अध्ययन को प्रोत्साहित करना था। किन्तु इस प्रेरणा से शीघ्र ही अधिक सार्वजनिक क्रियाओ की वृद्धि हुई। इन क्रियाओ मे कुछ को डिसेन्टर्स (विमतावलबियो) की प्रतिद्वन्द्विता मे चलाया जाता था और कुछेक को उनके सहयोग से।

विमतावलबियो का दोनो विश्वविद्यालयो मे कानूनन प्रवेश विपिद्ध था तथा बहुत से विद्यालयो मे उन्हे कानूनन अथवा प्रथानुसार प्रवेश नही मिलता था। अत उन्होने सम्पूर्ण देश भर मे अपने अनेक उत्तम विद्यालय तथा विद्यापीठ स्थापित कर डाले थे। जिनमे प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्चत्तर शिक्षा देने की व्यवस्था थी। इससे बहुत ईर्ष्या उत्पन्न हुई और ऐन्नी के शासन के अन्त काल मे अतत 'हाई चर्चमेन' उन्हे दबाने के लिए 'शिज्म ऐक्ट' पारित कराने मे सफल हुए। यह अधिनियम धार्मिक उत्पीडन के लक्ष्य से पारित हुआ था जिसे जार्ज प्रथम के काल मे समाप्त कर दिया गया। किन्तु चर्च ने अधिक उदारता से 'नानकन्फार्मिस्ट' स्कूलो की चुनौती का उत्तर दिया। ऐन्नी के शासन मे सैकडो धर्मार्थ विद्यालयो की स्थापना सारे इगलैड मे हुई थी जिनका उद्देश्य निर्धनो के बच्चो को पढने-लिखने तथा नैतिक अनुशासन एव इगलैड के चर्च के सिद्धान्तो की शिक्षा देना था। उनकी बहुत आवश्यकता थी। राज्य निर्धनो की शिक्षा के लिए कुछ भी नही करता था और साधारण पैरिश मे किसी प्रकार के धर्मस्व विद्यालय न थे, यद्यपि बहुत से गावो मे वृद्धाओ तथा गैर-सरकारी व्यक्तियो द्वारा थोडी फीस लेकर ग्रामीणो को पढना सिखाया जाता था। कही-कही धर्मस्व 'ग्रामर स्कूल' मध्यम वर्ग को माध्यमिक शिक्षा प्रदान करते थे।

धर्मार्थ विद्यालयो के आन्दोलन के योग्य सचालको ने शैक्षणिक धर्मस्वता के क्षेत्र

मे जनतत्रीय सहयोग के सिद्धान्त का प्रवेश कर दिया था। वे केवल कुछ धनवान सस्थापको की सहायता पर निर्भर नही रहते थे। मुख्यालयो की यह नीति थी कि एक पैरिश के स्थानीय लोगो को विद्यालय की स्थापना के लिये प्रेरित किया जाय। छोटे दुकानदारो तथा दस्तकारो को स्वय चन्दा देने तथा अन्य लोगो से चन्दा एकत्र करने को प्रोत्साहित किया जाता था तथा उन्हे सफलता मे व्यक्तिगत रुचि लेने एव प्रति वर्ष सहायता-प्राप्त स्कूल के नियत्रण मे व्यक्तिगत भाग लेने की शिक्षा दी जाती थी। "सयुक्त स्कध उद्यम" के सिद्धान्त को उस युग मे जीवन के अनेक पक्षो मे अपनाया जा रहा था। अन्यो मे परमार्थ (परोपकार) तथा शिक्षा भी सम्मिलित थी। ऐन्नी के शासन के अन्तकाल तक लन्दन क्षेत्र मे लगभग ५००० बालक-बालिकाए नए धर्मार्थ विद्यालयो मे पढते थे। लगभग २०,००० शेष इगलैड मे पढते थे। 'जनरल एसेम्बली आफ चर्च' द्वारा प्रेस्बीटेरियन स्काटलैड म भी इस आन्दोलन का प्रचार किया जा रहा था। इस योजना के मुख्य अग स्कूल मे बच्चो को साफ-सुथरी पोशाक पहनाना तथा स्कूल छोडने के बाद अच्छे रोजगारो मे अपरेन्टिस बना देना था। १७०८ मे लन्दन के एक विद्यालय मे एक निर्धन बालक की पोशाक पर ६ शिलिग २ पैस तथा एक निर्धन बालिका की पोशाक पर १० शिलिग ३ पैस व्यय किया जाता था।

इस युग का एक अन्य विशेष सगठन "आचरण-सुधार समाज था"। उस युग की उच्छृ खलताओ के विरुद्ध इस सगठन मे चर्चमैन तथा विमतावलबियो दोनो का सहयोग था। मदिरा पीकर बेहोश होने, पाखडपूर्ण शपथ लेने, सार्वजनिक अभद्रता एव रविवार को व्यापार करने के विरुद्ध हजारो अपीले जारी की जाती थी। किन्तु हमे ज्ञात नही है कि लन्दन मे भाडे पर चलने वाली घोडा-गाडियो के कोचवानो तथा पश्चिमी काउन्टी के नाविको मे झूठी शपथ खाने के विरुद्ध शिष्टाचार अपीलो को कितनी सफलता मिली थी। सभवत इस दिशा मे चलाए जाने वाले अनेक मुकदमे अधिक प्रभावशाली थे। निष्प्रभावपूर्ण कानूनो को लागू करने मे मजिस्ट्रेटो को निर्लज्ज बाध्यता का सहारा लेना पडता था। इन क्रियाओ का तीव्र विरोध हुआ। हाई चर्चमैन मे से कुछ लोग जैसे सैकरवेल, पापाचार, अनैतिकता, धर्मोल्लघन तथा फूट को दबाने के लिये, धर्म के प्राचीन अनुशासन को लागू करने पर जोर देते थे। उनके विचार से, आचरण मे सुधार के लिए नये प्रकार का समाज, जिसमे साधारण जनता तथा विमतावलबी (डिसेन्टर्स) भी भाग लेने को स्वतत्र थे, चर्च न्यायालयो को आवेदन न करके साधारण मजिस्ट्रेटो से आवेदन करता था, जिसका असफल होना स्वाभाविक था। कुछ बुद्धिमान विषयो, जैसे शार्प तथा होल्ट जैसे न्यायाधीशो को यह भय था कि सगठित दोषारोपण से दुर्भावना, भ्रष्टाचार एव धमकी देकर घूस लेने जैसी प्रवृत्तियो को बढावा मिलेगा। अनेक मजिस्ट्रेट तो परोपकारी सूचनादाताओ के साक्ष्य को निश्चय ही अस्वीकार कर देते थे, कई स्थानो पर उग्र भीड बडी खतरनाक हो जाती थी और

शिष्टाचार समाज का कम से कम एक सक्रिय सदस्य तो तत्काल मार डाला गया था।

इतना होने पर भी हजारो मुकदमे सफल हुए थे। यह कहा जाता था कि एक गुणवान व्यक्ति के अतिरिक्त कोई भी सार्वजनिक स्थान मे सुरक्षित होकर शपथ नही ले सकता था। इन मुकदमो को एक प्रबल जनमत से सहायता मिलती थी। अनेक शान्तिप्रिय नागरिको ने पाया कि पुनर्स्थापना के पश्चात् से पियक्कडो द्वारा सौम्य नागरिको को तग करने, स्त्रियो की अपमान से रक्षा करने तथा भद्रता एव व्यवस्था के किसी भी प्रदर्शन को सुरक्षित रखने मे मजिस्ट्रेट निन्दनीय ढग से शिथिल रहते थे। समुदाय के अधिकाश सदस्य रविवार के व्यापार के इच्छुक नही थे। डील के मेयर, एक साहसी और कर्मठ व्यक्ति, ने नगर के व्यवहार के विरुद्ध अकेले ही एक अभियान चलाया और अपने कई उपायो मे सफल हुआ, वह १७०८ मे पुन मेयर निर्वाचित हो गया। यह निश्चय ही सम्भव हो सकता है कि झूठी शपथ खाने एव रविवार के दिन यात्रा करने से सम्बन्धित बहुत से मुकदमे केवल परेशान करने वाले हो और जार्जो के काल मे एक समय ऐसा आ गया था जब शिष्टाचार समाज लाभ के साथ ही बडी हानि भी पहुँचा रहा था और सरलता से समाप्त हो सकता था किन्तु ऐन्नी के शासनकाल मे इसके कार्यकलापो से सडको तथा मदिरालयो मे भद्र लोगो को अधिक सुखकर वातावरण मिला। इससे मदिरापान कर हुडदग करने मे कमी हुई तथा रविवार के दिन श्रमिको तथा व्यापारियो को शान्ति मिली।

अग्रेजो के रविवार की अधिक निराशाजनक दशा का वर्णन १७१० मे एक जर्मन यात्री ने इस प्रकार किया है

"तीसरे पहर सेण्ट जेम्स पार्क मे भीडे देखने जा सकते है। रविवार को अन्य कोई मनोरजन करने की अनुमति नही है। इस नियम का अन्यत्र इतनी कठोरता से पालन नही होता होगा। न केवल सभी प्रकार के खेल वर्जित है तथा सार्वजनिक गृह बन्द हैं अपितु नौकाए तथा सार्वजनिक घोडा गाडिया भी नही चल सकती है। मेरी आतिथ्यकर्त्री तो किसी परदेशी को बासुरी भी नही बजाने देती है, नही तो उसे दण्ड मिलेगा।" उसने खिन्न होकर कहा था कि रविवार को काम-काज ठप करना ही केवल एक दृश्य चिह्न है जिससे अग्रेज ईसाई मालूम होते है।

किन्तु धार्मिक पुनर्जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और स्थायी प्रभाव 'ईसाई ज्ञान सवर्द्धन समाज' तथा उसकी शाखा "विदेशो मे धर्म प्रचार समाज" ने डाला। दोनो के उन्ननायक एक ही लोग थे। उन सब मे अनथक डा० टॉम्स ब्रे था। जो प्रेरणा बाद मे स्त्रियो के व्यापार तथा दासता के उन्मूलन के आन्दोलन की विशेषता बनी उसी ने धर्म-प्रचारको, पादरियो तथा सामान्य लोगो की इन स्वय सेवक समितियो को प्रेरित किया जिसमे हाई तथा लो चर्च, नानजरर तथा नानकन्फार्मिस्ट सभी थे। विलियम के

शासन के अन्तिम वर्षो तथा ऐन्नी के शासन के प्रथम वर्ष मे ये लोग पूर्णतया सक्रिय रहे। बाइबिल तथा अन्य धार्मिक साहित्य का प्रचार उनका प्रमुख उद्देश्य था। अतएव वे धर्मार्थ विद्यालयो के महान् समर्थक थे, जहा निर्धनो को उन्हे पढने की शिक्षा दी जा सकती थी। ये दोनो आन्दोलन साथ-साथ चले इस 'समाज' के प्रकाशनो का सेना मे मार्ल बारो तथा जहाजी दस्ते मे बेनवो तथा रूके ने स्वागत किया। देश के जिलो मे सस्ती बाइबिले तथा प्रार्थना पुस्तके वितरित की गई। तथा अमरीका को बाइबिल तथा अन्य पुस्तको को बडी मात्रा मे भेजना प्रारभ किया गया। शेष ससार को भी इससे कम मात्रा मे पुस्तके भेजी गई। इसकी तुलना मे बाद के वर्षो मे 'समाज' ने विशाल मात्रा मे यह कार्य किया था। विदेशो मे इगलैंड की बढती हुई शक्ति और समृद्धि के साथ इस क्रिया मे वृद्धि होती गई। ये क्रिया-कलाप अग्रेजी धार्मिक जगत् के एक सहज-स्फूर्त्ति आन्दोलन के परिचायक थे जिससे एक ओर तो वह साम्प्रदायिक तथा राजनैतिक झगडो से निकलकर व्यापक दृष्टि के ऐसे क्षेत्र मे प्रवेश करना चाहता था जहा उत्साह से घृणा की तुलना मे कोई अधिक अच्छी वस्तु उत्पन्न हो सके।

ऐन्नी के शासनकाल मे, और उसके बहुत पूर्व और पश्चात् भी, राजनैतिक आवेशो का मूल कारण धार्मिक मतभेद थे। अत यदि कोई अग्रेज इतिहासकार अन्य विषयो की व्याख्या करना चाहता है तो उसे धर्म की उपेक्षा करनी दुगुनी असभव है। परन्तु उसे यह भुलाने का लोभ नही करना चाहिए कि राष्ट्र की धार्मिक भावना मे झगडो की तुलना मे बहुत कुछ था यद्यपि दैवयोग से झगडो से राजनैतिक स्वतत्रताओ का बडा भाग उत्पन्न हुआ। हाई अथवा लो चर्च की दलगत भावनाओ से अछूता रहकर अनेक शातिप्रिय पैरिशो तथा विनम्र परिवारो का धार्मिक जीवन चलता रहता था। अग्रेजी धर्म मुख्यतया प्राचीन जगत के जीवन का एक स्वस्थ और स्वतत्र कार्य था। एक ओर मिथ्याविश्वास तथा धर्मान्धता तथा दूसरी ओर भौतिक बर्बरता के बीच सुचारु रूप से अपना पथ निर्धारण करते हुए धार्मिक जीवन चलता था।

और दलगत सघर्ष की कटुता के बावजूद शिक्षित लोगो की मनोदशा मुख्य रूप से शाति, उदारतापूर्ण आशावाद से समन्वित थी जोकि अठारहवी शताब्दी के ब्रिटेनवासी की विशेषता कही जाती है। यह उचित ही कहा गया है कि

"एडिसन के काल के इगलैंड का सौभाग्य था कि न केवल (१६८८) की गौरवमयी क्रान्ति ही उसके पीछे थी वरन् मिल्टन जैसे कवि, न्यूटन जैसे भौतिकशास्त्री तथा लॉक जैसे दार्शनिक भी थे।"

ब्रिटेनवासियो तथा मनुष्यमात्र की सर्वप्रिय महत्वाकाक्षाए पूरी हो गई थी, सविधान की स्थापना हो गई थी और स्वतत्रता प्राप्त हो गई थी। होमर तथा वर्जिल से बढ चढ कर नही तो कम से कम उनके समकक्ष कवि हो चुके थे। ग्रह-नक्षत्रो को पथ-भ्रान्त होने से बचाने वाले नियम को खोज लिया गया था तथा मस्तिष्क की यथार्थ क्रिया का

भी उद्घाटन हो चुका था। ये सब चीजे अग्रेजो ने नही वरन् ईसाइयो ने की थी। न्यूटन तथा लाक की प्रतिभाशाली व्याख्याओ ने एक रहस्यमय ब्रह्माण्ड मे रहने के मानसिक तनावो को ही दूर नही किया था प्रत्युत् उनसे धर्म के सिद्धान्तो की परिपुष्टि हो गई थी। (बैसिल विल्ले, **सेवेन्टीन्थ सेन्चुरी बैंकग्राउण्ड,** पृष्ठ २६४)। वेस्टमिन्स्टर मे ससद सेण्ट जैम्स मे क्वीस कोर्ट से दो मील की दूरी पर ससार के महानतम नगर का केन्द्र स्थित था जो इगलैंड के किसी अन्य भाग की तुलना मे ससद तथा कोर्ट के अधिकार-क्षेत्र से कम प्रभावित था। लडन का शासन स्वतत्र रूप से निर्वाचित मजिस्ट्रेटो द्वारा होता था। पुलिस व्यवस्था (शान्ति और व्यवस्था) भी उस नगर के सिपाही करते थे। उसकी अपनी निजी सेना रक्षा के लिए नियुक्त थी। पडोस की राजधानी के लिए, द्वीप भर मे विशालतम तथा सबसे कम व्यवस्थित भीड वाला यह नगर दुर्जेय (भयकर) था। यद्यपि उस समय लन्डन की जनसख्या तथा क्षेत्र आज के लन्डन की जनसख्या तथा क्षेत्र के केवल दसवा अश थे किन्तु फिर भी उसके आज के सापेक्षित महत्व की तुलना मे उसका उस समय अधिक महत्व था। अपने निकटतम अग्रेजी प्रतिद्वन्द्वियो, ब्रिस्टल तथा नार्विक, से वह कम से कम पन्द्रह गुने निवासियो के कारण बढ-चढ कर था। इगलैंड के गावो तथा नगरो का अधिकाश व्यापारिक कार-बार उसके व्यापारियो तथा बाजारो द्वारा नियत्रित होता था। वस्तुत व्यापार की जीवनी-शक्ति वह स्वय चूस लेता था। ब्रिस्टल के लोगो का यह विचित्र दम्भ था कि वे अपने व्यापार को लन्डन से स्वतत्र रखते थे। अमरीकी माल उसके बन्दरगाह पर आता था जहा से वह उनके स्वय के वाहको तथा एजेन्टो द्वारा ले जाकर पश्चिम मे बेचा जाता था। अन्य सभी स्थानो पर व्यापार का नियत्रण राजधानी (लन्डन) से होता था। नार्विक एक्सेटर की बनी सर्जे तथा एक्सेटर नार्विक का माल खरीदता था, परन्तु यह सब लेन-देन लन्डन मे ही होता था प्रत्येक काउटी लन्डन को खाद्य, कोयला अथवा कच्चा माल भेजने के महान् राष्ट्रीय व्यापार मे सहयोग देती थी। बदले मे लन्डन अपने विलासिता के व्यापारो के बने हुए मालो तथा अपने विदेशी व्यापार के दूरस्थ उत्पादनो को प्रत्येक काउटी को भेजता था। देश का लगभग सम्पूर्ण ईस्ट इण्डिया व्यापार लन्डन के बन्दरगाह से होता था और यही स्थिति अधिकतम यूरोपीय, भूमध्यसागरीय, अफ्रीकी तथा अधिकाश अमरीकी व्यापार की थी।

राजधानी की जनसख्या का निम्न स्तर, एक महान् बाजार तथा बन्दरगाह के गोदी मजदूर तथा अकुशल आकस्मिक मजदूर भीड-भाड की अत्यन्त गन्दी दशाओ मे रहते थे जहा न सफाई थी और न पुलिस तथा डाक्टर थे तथा जो परमार्थ, शिक्षा तथा धर्म के विस्तार के बहुत परे रहते थे। डिफो के समय मे उनकी यही स्थिति मुख्य नगर तथा बाहर की स्वतत्र बस्तियो मे थी। उनमे मृत्युदर भी भयकर थी तथा उस समय भी बढ रही थी, क्योकि वे जौ की शराब के स्थान पर स्प्रिट पीना सीख रहे थे। 'एलास्टिआ' मे अपराधियो का विशिष्ट अड्डा था जो 'टेम्पल' के पडोसी वकीलो के सम्मान के लिए

बहुत घातक था। वास्तव मे ऐन्नी के शासनारूढ होने के कुछ वर्ष पूर्व उसका उन्मूलन कर दिया गया था। किन्तु वहा से चोरो, राहजनी करने वालो तथा वेश्याओ के समुदाय केवल इधर-उधर बिखरकर सारे महानगर के क्षेत्र मे फैल गए थे। उनका गुप्त सगठक, कुख्यात जोनैथन वाइल्ड, इस काल मे बहुत उन्नति कर गया था, जो प्रकट रूप से एक उत्साही न्यायाधीश था किन्तु वास्तव मे वह विशाल मात्रा मे चोरी के माल का प्राप्त-कर्त्ता था। अपने अधीनस्थो मे अनुशासन कौयम रखने के उसके कुछ तरीको को "बेगर्स ऑपेरा" के प्रारभिक दृश्य मे 'पीचम' से सम्बद्ध कर दिया गया है। इस ऑपेरा को वाइल्ड के विलम्ब से हुए रहस्योद्घाटन, अभियुक्त बनने तथा १७२५ मे फासी लगाए जाने के तुरन्त बाद मे लिखा गया था। उसके जीवन की कथा मजिस्ट्रेटो तथा पुलिस कर्मचारियो की असमर्थता को तर्कत सिद्ध करती है। इस असमर्थता का निराकरण मध्य शताब्दी मे होना प्रारभ हुआ जब सुप्रसिद्ध फील्डिग भाइयो ने "बौ" सडक पर अपना कार्यालय स्थापित कियाँ। लन्डन के अकुशल श्रमिको मे ईमानदार मजदूर भी पूर्णतया अशिक्षित थे। माझियो मे एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व, जोनैथन ब्राउन, ने विमतावलबी उपदेशक कैलमी से स्वय कहा था कि उसने तथा उसके साथियो ने यह कभी नही सुना था कि ईसा कौन और कैसा था। यद्यपि उनके नेता उन्हे सरलता से सभा-गृहो तथा पोपवादी गिरजो को तात्कालिक राजनैतिक आवश्यकता के अनुसार जला देने के लिए तैयार कर लेते थे। इस दुर्दशा को समाप्त करने के लिए सार्वजनिक चन्दो मे धर्मार्थ विद्यालयो की स्थापना की जा रही थी और १७११ मे ससद ने करदाताओ के धन को उपनगरो मे पचास नए गिरजे बनवाने के लिए व्यय करने का प्रस्ताव स्वीकार किया था। इसका उद्देश्य ऐसे हजारो व्यक्तियो के बैठने की व्यवस्था करना था जिनके लिए प्रतिष्ठित गिरजा (इस्टेबलिश्ड चर्च) कुछ नही करता था। ससद की एक समिति ने उस जिले मे भिन्न धर्मावलम्बियो की सख्या एक लाख बताई थी। उन लोगो ने पहले ही अपने गिरजे स्थापित कर लिए थे।

पर सबसे बढकर बात तो यह है कि लन्डन विषमताओ का एक नगर था। बन्दरगाह और बाजार मे, जहा इगलैड तथा विश्व के सामानो का विनियम होता था, न केवल अकुशल श्रमिको के कठिन परिश्रम की जरूरत पडती थी अपितु फौरमैनो, क्लर्कों, दूकानदारो तथा हर प्रकार के दलालो का निरीक्षण करने वाली सेना की भी जरूरत पडती थी। इसके अतिरिक्त, लन्डन केवल एक बाजार न था, यह सामानो के उत्पादन, निर्माणान्त प्रक्रियाओ, तथा विलास-सामग्री के व्यापार का एक केन्द्र भी था जहा द्वीप के सर्वाधिक कुशल कारीगर काम मे लगे थे। कई हजार ह्यूगनट रेशम निर्माता हाल मे स्पाइटलँ फील्डस मे बस गए थे और अनेक कुशल व्यापार जो पहले फ्रास मे होते थे, अब शरणार्थियो द्वारा 'लॉग ऐकर' तथा 'सोहो' मे किए जा रहे थे जो शीघ्रता से अग्रेज बनते जा रहे थे तथा व्हिगो को इसलिए अपना मत देते थे ताकि उन्हे काल्विनवादी पूजा करने के लिए स्थानीय जनता से सहिष्णुतापूर्ण व्यवहार मिल

सके । सम्पूर्ण देश के सर्वोत्तम दस्तकार इगलैंड मे आकर एकत्र हो गए थे । नगर की सर्वोत्तम दूकानो मे देहात के सभ्रान्त जनो के पुत्र शिल्पशिष्य के रूप मे काम करते थे जिन्हे अपने बडे भाइयो की अपेक्षा अधिक समृद्ध जीवन बिताने की आशा थी तथा जो अवकाश के समय अच्छे गहरे बालो के टोप पहनते थे । बृहत्तर लन्डन अग्रेजी साहित्यिक तथा बौद्धिक जीवन और फैशन, कानून तथा प्रशासन का केन्द्र था । इन सभी कारणो से राजधानी मे जहा एक ओर दुर्भेद्य अज्ञान था तो दूसरी ओर विशाल तथा विभिन्न प्रकार की दक्षता एव बुद्धिमत्ता थी, लन्डन निवासियो की बुद्धि न केवल राष्ट्रीय प्रक्रियाओ तथा विश्व-व्यापार से तीक्ष्णतर होती थी वरन् वकीलो तथा वेस्टमिन्स्टर के राजनीतिज्ञो के दैनिक सम्पर्क मे आने पर भी वह पैनी होती थी । इसका एक अन्य कारण सेण्ट जेम्स के कुलीनो तथा फैशनेबुल व्यक्तियो से सम्पर्क होना था । मौसम की अवधि मे समाज के नेता निजी प्रासादो तथा टेम्पल बार के पश्चिम मे स्थित यात्री-गृहो मे ठहरते थे और उतने ही लन्डनवासी हो जाते थे जितना कि प्रतिवर्ष लौटने वाली प्रवासी अबाबील को अग्रेजी कहा जा सकता है ।

लन्डन मे इगलैंड की सम्पूर्ण जनसख्या का लगभग दसवा भाग तथा देश की प्रशिक्षित विचार-शक्ति का आधे से भी अधिक भाग बसा था । यह नगर सरकार के केन्द्र वेस्टमिन्स्टर के इतना सटकर बसा था कि दोनो मिलकर एक महानगर हो जाते थे । ऐसी स्थिति मे इस नगर का अग्रेजो के इतिहास-प्रवाह पर निर्णायक प्रभाव पडना अनिवार्य था, विशेषकर जिन दिनो यात्रा की कठिनाई के कारण ससद तथा राजघराने देश के दूसरे नगरो तथा क्षेत्रो से पृथक रहते थे । किन्तु वास्तव मे किसी भी समय लन्डन ने इगलैंड पर शासन करने का वैसा प्रयास नही किया जैसा कि रोम ने इटली पर तथा एथेस ने यूनान पर किया था । उसने इगलैंड मे राजतत्र अथवा ससद के शासन को स्वीकार किया जब तक कि शासक उसकी सीमाओ के बाहर वेस्टमिंस्टर मे स्थित रहे तथा जब तक उन्होने उसकी प्राचीन नगरपालिका व्यवस्था की स्वतन्त्रताओ मे हस्तक्षेप नही किया, अथवा जब तक वे देश के धार्मिक एव विदेशी मामलो का सचालन लन्डन मे लोकप्रिय सिद्धान्तो के अनुरूप करते रहे । जिन राजा-रानियो-हेनरी अष्टम, एलिजाबेथ, विलियम तृतीय तथा ऐन्नी-को वह (लन्डन) पसन्द करता था, वे ऐसी राजनैतिक सस्थाए छोड गए थे जो बाद मे बहुत दिनो तक जीवित रही । और जो उससे झगडे उनका शासन केवल अल्पकालिक राजनैतिक प्रणालिया बना सका, ऐसे शासको मे मेरी ट्यूडर, दोनो चार्ल्स तथा जेम्स और प्रोटेक्टर थे । यद्यपि ऑलिवर तथा चार्ल्स द्वितीय दोनो की शक्ति मे वृद्धि अधिकाशत लन्डन की सहायता से हुई ।

लन्डन के टॉवर (स्तभ) को, जिससे नागरिको को अभिभूत होना चाहिए था, विजयी विलियम ने वेस्टमिन्स्टर से दूर नगर की ओर बनवाया था । अशत इस कारण से नागरिक दीर्घ काल तक इससे अभिभूत नही हुए । अपनी एकान्त की स्थिति मे

स्टुअर्ट काल मे वेस्टमिन्स्टर तथा व्हाइट हाल की लन्डन की क्रुद्ध भीड के अपमानो से यह रक्षा नही कर सकता था। ऐन्नी के शासन मे स्तभ आग्नेय अस्त्रो का विशाल भडार था जहाँ से तोपे तथा बारूद विदेशो के युद्धो के लिए भेजे जाते थे। इसमे टकसाल तथा शासित क्षेत्र के लिए मुद्रा ढालने के यन्त्र भी रहते थे जिनका अध्यक्ष स्वय न्यूटन था। टॉवर की बाहरी दीवारो से एक ऐसा जाल बन जाता था जहा उपरोक्त दो प्रतिष्ठानो के अधिकारी रहते थे। अवसर पड़ने पर यह राज्य-कारागार मे बदला जा सकता था। किन्तु सदैव से इसका एक मनोरजनात्मक पक्ष भी था, क्योकि यह राजधानी का चिडियाघर तथा सग्रहालय भी था। दर्शको को मुकुटो मे लगने वाले जवाहरातो और नवसज्जित शस्त्रागर भी, जहाकि युद्ध की साज-सज्जा मे घोडो पर सवार राजाओ की परम्परा चित्रित थी, दिखाया जाता था। जिन दिनो स्तभ मध्य-युगीन राजाओ का प्रिय आवास रहा था उन्ही दिनो से शेरो तथा अन्य वन्य पशुओ का समूह वहा रखा जाता था। इसमे रानी ऐन्नी को उत्तरी अफ्रीका के बर्बर राजाओ से प्राप्त भेटे सुन्दर ढग से सजाई गयी थी। इन्ही राजाओ के साथ अग्रेज व्यापारी व्यापार करते थे तथा उन्ही के साथ जिब्राल्टर के विजेताओ ने फ्रास तथा स्पेन के विरुद्ध मैत्री की सधिया की थी।

प्रसिद्ध स्तभ तथा टेम्पल बार (विधि-वेत्ताओ का सुप्रसिद्ध स्थान) के बीच मुख्य नगर लम्बाई मे फैला था, नदी के उत्तर की ओर इसकी चौडाई बहुत कम थी जो स्मिथफील्ड, हालबोर्न तथा व्हाइटचैपल नामक बैरिस्टरो के कार्यालयो तक सीमित थी।[१] किन्तु इमारतो के निर्माण के प्रसार ने नगरपालिका की सीमाए, मुख्यत पश्चिम दिशा मे, पार कर दी थी क्योकि इस ओर वेस्टमिंस्टर पर राष्ट्रीय शासन की राजधानी का आकर्षण था। समुद्र तट से ही नगर का अधिकार-क्षेत्र प्रारभ होता था। किन्तु लन्डन तथा वेस्टमिंस्टर के नगरपालिका सम्बन्धी विशेषाधिकारो मे कोई प्रतिस्पर्धा नही थी न तो लन्डन और न राजा अथवा ससद ने कभी भी वेस्टमिस्टर के लार्ड मेयर (नगरपालिका का अध्यक्ष) के साथ कारबार करने की इच्छा की थी। अतएव वेस्टमिस्टर को स्वायत्त शासन अथवा निगम बनाने के लिए कभी अनुमति नही मिली। उच्च व्यवस्थापक द्वारा आजीवन काल के लिये नियुक्त बारह नगर-प्रतिनिधियो द्वारा उसका शासन होता था और शान्ति के न्यायाधीशो तथा विभिन्न पैरिशो के प्रबन्धको द्वारा उनकी शक्तिया अधिग्रहण करली जाती थी। यह सत्य है कि वेस्टमिन्स्टर मे ससदीय मताधिकार जनतत्रीय होता था और उन दिनो, जब अधिकाश कस्बो मे सकुचित मताधिकार होता था, तो वेस्टमिंस्टर के लिए एक ससदीय सदस्य का चुनाव असामान्य

---

[१] विधि-वेत्ता केन्द्र (बार) की सीमाए वास्तव मे मूल नगर की दीवारो और दरवाजो की सीमा से अधिक विस्तृत थी। उदाहरण के लिए लुडगेट के पश्चिम के बहुत दूर टेम्पल बार स्थित थी।

राजनैतिक उत्तेजना उत्पन्न कर देता था। यह स्थिति चार्ल्स फाक्स के काल में भी पहले पाई जाती थी, उदाहरणत: जब १७१० में व्हिग हित में जनरल स्टैनहोप कठिन संघर्ष और अत्यधिक चुनाव प्रचार के पश्चात् पराजित हो गया था। किन्तु वेस्टमिंस्टर की स्थानीय सरकार मात्र नौकरशाहीपरक थी, इस तरह यह प्रतिस्पर्धी अधिकार-क्षेत्रों की एक अराजकता में कुछ अच्छी थी।

दूसरी ओर लन्दन नगर एक असाधारण लोकतंत्रीय रूप में पूर्ण स्वायत्त-शासन प्राप्त था। उस समय इप्सविच तथा नार्विक के अतिरिक्त इंगलैंड के बहुत कम कस्बे अभिजाततंत्र से मुक्त थे। लन्दन में १२००० करदाता गृहस्थ अपने-अपने वार्डों (खंडों) में २६ उपनगरपालों तथा २०० सामान्य पार्षदों का चुनाव करते थे। वार्डों के ये करदाता ८६ कम्पनियों तथा कर्मिक-संघों के विशेष वर्दी वाले सदस्यों के बिल्कुल समान थे। वे अपनी दोहरी क्षमता में अपने मतों से प्राचीन कला तथा लन्दन के स्वायत्त शासन के जटिल तंत्र पर नियंत्रण रखते थे। दुकानदारों के निर्वाचक अपने वर्ग के प्रतिनिधियों को सामान्य परिषद के लिए चुनते थे। उच्च वित्त अथवा राजनीति के जगत में बड़े व्यापारी-श्रेष्ठियों को वे इस कार्य के लिए नहीं चुनते थे। नगर के बड़े व्यापारी बहुधा उपनगर-पाल चुने जाते थे। लन्दन की शक्ति और विशेषाधिकारों में सामान्य गर्व तथा उसके स्वातंत्र्य के लिए ईर्ष्यालु सावधानी ने व्यापार-विनिमय के श्रेष्ठ व्यक्तियों तथा जनतंत्रीय दुकानदारों में गंभीर मतभेद या विद्वेष को रोका। किन्तु यदा-कदा कुछ मनमुटाव हो जाता था और ऐन्नी के शासनकाल में जनतंत्रीय सामान्य परिषद के टोरी होने तथा नगराधिपति (मेयर), उपनगरपालों तथा धनी के श्रेष्ठियों के नगर व्हिग होने की प्रवृत्ति अधिक स्पष्ट हो गई थी।

लन्दन के निर्वाचित मजिस्ट्रेटों (न्यायाधीशों) का अधिकार-क्षेत्र उन्हीं के नगर तक सीमित न था। यद्यपि वेस्टमिंस्टर पर उनकी कोई शक्ति नहीं थी किन्तु उसे उन्होंने प्रत्येक ओर से दबा रखा था। मिडलसेक्स की श्रीवैल्टी तथा साउथ वार्क की बैलीविक पर उनका अधिकार था। लन्दन के बन्दरगाह पर कर लगाना तथा उसका प्रशासन करना उन्हीं के अधिकार में था। ग्रेव्जेण्ड और टिलबरी से लेकर स्टेन्स पुल तक लगभग साठ मील तक नदी का संरक्षण लार्ड मेयर करता था। बारह मील के अर्धव्यास में लन्दन कोयले पर कर लगाता था और सात मील के अर्धव्यास में सभी बाजारों पर उसका एकाधिकार स्थापित था।

इंगलैंड भर में मुख्य लन्दन नगर की जनसंख्या का प्रति एकड़ घनत्व सर्वाधिक था। जैसा बाद के कालों में हुआ उस समय नगर रात्रि को 'बिल्लियों तथा रखवालों' के लिए नहीं छोड़ दिया जाता था। व्यापार श्रेष्ठी तथा दूकानदार सभी अपने व्यापार स्थल पर अपने परिवार के साथ सोते थे। नौकर तथा शिल्पशिष्य ऊपर के छत के कमरों में तथा कुली और संदेशवाहक कहीं भी कोठारों अथवा गोदामों में सो जाते थे। विशेषकर ओल्ड ज्यूरी तथा बेसिंगहाल स्ट्रीट इंगलैंड में सर्वाधिक धनी लोगों के मकानों

के लिए प्रख्यात थी। किन्तु राज्य भर के कुलीन घराने भीड-भाड वाले नगर मे तथा समुद्र-तट पर बने हुए अपने पूर्वजो के घरो को छोड चुके थे, जहा से बाग शीघ्रता से नष्ट हो रहे थे। मौसम के भीतर अभिजात लोग कावेण्ट गार्डन, पिकैडिली, ब्लूम्सबरी अथवा सेण्ट जेम्म स्क्वायर अथवा वेस्टमिस्टर के किसी भाग मे रहते थे। ग्रामीण क्षेत्रो मे सभ्रान्त लोग, राजकीय कर्मचारी, ससद सदस्य तथा व्यावसायिक लोग इन्ही क्षेत्रो मे छोटे मकानो मे रहते थे जो कुलीन लोगो के प्रासादो के चारो ओर होते थे। लन्डन के अनेक विख्यात स्क्वायरो (आयताकार पार्को) की उत्पत्ति इसी प्रकार से हुई थी।[१]

किन्तु धनी व्यापारी अपनी भावनाओ तथा व्यापार के कारण अब भी अपने प्रिय नगर मे रहते थे। लन्डन नगर के २० मील के अर्धव्यास मे जगलो, मनोरम ग्रामो तथा खेतो के मध्य उनके ग्रामीण घर तथा कुटीरे भी थी। उपनगरीय तथा नदी तट के अपने आवासो (अल्पकालीन) मे—जो हैम्पस्टेड, वेस्ट हैम, बालथाम्सटो तथा एप्सम घाटियो के नीचे और विशेषकर चेल्सी से लेकर ऊपर तक टेम्स नदी के हरे-भरे तटो पर थे लन्डनवासी उतना ही अच्छा भोजन और मदिरापान करते थे जितना कि स्वय नगर मे निर्धन लोग छुट्टी का आनन्द लेने ग्रामीण क्षेत्रो को, डुलविक जैसे प्रिय स्थानो को, चले जाते थे।

लन्डन के सभी सार्वजनिक मार्गो मे नदी मे सबसे अधिक भीड रहती थी। भारी व्यापारिक यातायात के बीच नावो मे सवार यात्री निरन्तर बहुत धीरे-धीरे आगे बढ पाते थे। इस समय यात्री-नावो के माझियो तथा भारवाही नौकाओ के मल्लाहो के बीच परम्परागत गाली-गलौज तथा तकरार चलती रहती थी। उत्तरी तट पर लन्डन

---

[१] इस प्रकार ब्लूम्सबरी स्क्वायर, जिसे मूलत साउथैम्पटन स्क्वायर, कहा जाता था एक फेशनेबुल चौकडी थी। उसका निर्माण पुनःस्थापन काल के बाद हुआ था। साउथैम्पटन के पिछले अर्ल की ब्लूम्सबरी नामक सम्पत्ति पर बनी हुई उक्त चौकडी सबसे पहली नियोजित रूप से विकसित चौकडी थी। उक्त अर्ल की मृत्यु के पश्चात् यह अधिसम्पत्ति उसकी पुत्री और उसके प्रिय स्वामी के अधिकार मे आई। उसका पति १६८३ मे व्हिग नेता होने के कारण फासी चढा दिया गया था। ब्लूम्सबरी स्क्वायर लडन की सबसे पहली चौकडियो मे से एक था और उसको खुला इसलिए छोड दिया गया था ताकि साउथैम्पटन हाउस (जो बाद मे बेडफोर्ड कहलाया) नामक विशाल प्रासाद के सामने खुला हुआ क्षेत्र पडा रहे। उक्त प्रासाद इस चौकडी के उत्तरी सिरे पर स्थित था। इसके पश्चात् एक शताब्दी बीत जाने पर उक्त विशाल प्रासाद के उत्तर मे स्थित मैदानो पर समान नियोजित रूप से रसेल स्क्वायर का विकास किया गया था। स्काट टाम्सन, **दि रसेल्स इन ब्लूम्सबरी**, अध्याय २ और ३।

पुल तथा ससद की सीढियो के बीच म लगभग तीस घाट थे जहा नावे सीढियो के पास यात्रियो को नदी के पार अथवा अन्यत्र ले जाने के लिए प्रतीक्षा करती थी। राजनयिक और लैम्बेथ जाने वाले व्यक्ति, अथवा शिल्पशिष्य और निकट के क्यूपिड गार्डन को हल्के सदेश ले जाते हुए युवा बैरिस्टर ये सभी नावो से नदी पार करते थे। ऐसी भी नौकाए थी जिनके मचो पर गाडी तथा घोडा समा जाते थे। जब तक १७३८ मे वेस्टमिस्टर पुल का निर्माण नही हुआ था, लन्डन पुल नदी के ऊपर से एक मात्र मार्ग था। वहा जो सडक थी उसे भयकर अग्नि द्वारा की गई हानियो के पश्चात् एक अधिक आधुनिक शैली मे पुनर्निर्मित कर दिया गया था। किन्तु उसके प्राचीन स्तभो (पुलो के खभो) के बाहर निकले हुए भाग यातायात मे बाधक होते थे तथा खतरनाक भी थे। पुल पर से निकल जाना अब भी एक साहसिक कार्य माना जाता था। यह कहा जाता था कि लन्डन पुल पार कर ना बुद्धिमानो का कार्य है और उसके नीचे गिर जाना मूर्खों का।

अत बडे जहाज पुल से अधिक ऊचे नही हो सकते थे। उसके नीचे लन्डन के खड्ड (पूल ऑफ लन्डन) मे जहाजो के मस्तूलो का एक बन दिखाई पडता था। इस दृश्य की तुलना केवल ऐम्सटर्डम के बन्दरगाह के दृश्य से की जा सकती थी। चूकि उस समय डेप्टफोर्ड की गोदी के अतिरिक्त शायद ही कोई विशाल गोदी खोदी गई थी अत जहाज चलाने योग्य मार्ग मे बडी भीड रहती थी। ब्लैकवेल मे जो एक गोदी थी वह ईस्ट इडिया कम्पनी के जहाजो के काम मे आती थी।

टेम्स नदी के तट पर शुष्क घास के मैदान मे अपनी निराली गरिमा के साथ चेल्सी का अस्पताल स्थित था जिसमे सेजमूर, लैन्डेन तथा बोयन के चारसौ लालकोट-धारी क्रीत सैनिक रहते थे जो कारपोरल ट्रिम की व्यावसायिक एकाग्रता से मार्लबारो की क्रियाओ की साप्ताहिक खबरो पर विचार-विमर्श करते थे। थोडी दूर पर चेल्सी का ग्राम स्थित था जहा कुछ फैशनेबुल लोगो के मन भा गई थी कि वे लन्डन और वेस्टमिस्टर के हलचल से उतनी ही दूर अपने एकान्तवास बनवाये जितना दूर स्वय केंसिग्टन राजमहल था।

चूकि लन्डन के प्रत्येक रसोईघर मे कोयला जलता था अत वायु इतनी दूषित रहती थी कि एक विदेशी विद्वान ने शिकायत की थी कि "जब कभी मै लन्डन की पुस्तको को पढता हूँ मेरे कलाई के मोड (आस्तीन के) कोयले जैसे काले हो जाते हैं।" जिन दिनो उत्तरी-पूर्वी हवा कोयले के बादलो को उडाती थी चेल्सी के दमा पीडित व्यक्तियो के लिए बडा खतरा उत्पन्न हो जाता था। सौम्य दार्शनिक शैफ्टबरी के अर्ल को कुछ ऐसी ही शिकायत थी। यह भी कोई आश्चर्य की बात नही है कि दुर्बल फेफडो वाला राजा विलियम साधारणतया हैम्पटन कोर्ट मे रहता था किन्तु आवश्यकता पडने पर केन्सिग्टन चला जाता था। शासनारूढ होते ही रानी ऐन्नी ने

सरलता से राजप्रासाद को ग्रामीण क्षेत्र मे नगर और केन्सिग्टन से सेण्ट जेम्स राज-प्रासाद को स्थानान्तरित किया था। किन्तु वह अपनी प्रिय जनता को इतना ही सतोष दे सकती थी। बहुधा वह 'बाथ' मे रहती थी और उससे भी अधिक विण्डसर मे। किन्तु जब कभी वह नगर मे प्रवेश करती थी सेण्ट जेम्स राजभवन के द्वार केवल उसके मत्रियो और उसकी महिला कृपा-पात्रो के लिए खुलते थे। कुछ लोग आगे अथवा पीछे की सीढियो से प्रवेश कर जाते थे जिन्हे मत्री अथवा कृपा-पात्र चाहते थे। अपने सम्पूर्ण शासनकाल मे वह अपग रही। विलियम दमा पीडित था और ऐन्नी वात-रोग तथा जलशोथ से ग्रस्त रही। ससद के सत्र का उद्घाटन करने घोडा-गाडी मे बैठकर वेस्टमिस्टर जाने अथवा किसी विख्यात विजय के उपलक्ष्य मे जनता को धन्यवाद देने के लिए सेण्ट पाल जाने के अवसरो को वह प्रायश्चित मानती थी जिन्हे सहन करने के लिए वह यदा-कदा ही सहमत होती थी।

अतएव रानी ऐन्नी का मन्त्रि-परिषद उतना ही छोटा था जितना विलियम का। अलकारिक और यथार्थ दृष्टि से सम्राज्ञी मेरी का व्हाइटहाल खडहर हो गया था जिसके पुनर्निर्माण की कोई सभावना न थी। दु खद स्मृतियुक्त प्रीतिभोज भवन के अतिरिक्त सम्पूर्ण राजप्रासाद १५६८ मे भस्म हो गया था और उसकी छतविहीन दीवारे नदी तट पर अब भी खडी थी। बकिंघम हाउस इस समय भी प्रजा का एक निवास था। फैशनेबुल लोग सेडान की कुर्सियो तथा छ अश्वबाही-गाडियो मे बैठे 'माल' मार्ग पर घूमा करते थे अथवा सेण्ट जेम्स राजप्रासाद की खिडकियो के ठीक नीचे अधिक निजी बाग मे निरुद्देश्य भ्रमण करते थे। उन्हे केवल इस स्मरण मात्र से सतोष हो जाता था कि वे अदृश्य रानी के निकट है। यह इसलिए अधिक उल्लेखनीय है कि दूसरी दिशा मे थोडी ही दूर पर ससद के दोनो भवन थे।

एल्फ्रेड के काल से ही राजसभासद्-निकाय इगलैंड का सूक्ष्मस्वरूप और स्पदित हृदय रहा है, नार्मन एव प्लैन्टैजेनेट के कालो मे, हेनरी के सुविस्तृत दिनो एव एलिजाबेथ से लेकर चार्ल्स द्वितीय के काल तक ऐसी ही स्थिति रही है। उसका राजसभासद्-निकाय प्रभूत आनन्द, स्वच्छदता एव सार्वजनिक निन्दा का स्थल ही नही था वह राजनीति, फैशन, साहित्य, कला, विद्वता, आविष्कार, कम्पनी की स्थापना और कुख्याति अथवापुरस्कार चाहने वाली राजा की उत्सुक प्रजा की ऐसी ही सैकडो गतिविधियो का केन्द्र भी था। किन्तु क्रान्ति के उपरान्त राजसभा सद्-निकाय की गरिमा धूमिल हो गई थी। न तो 'ताज' की राजनैतिक स्थिति और न उसे पहनने वालो का वैयक्तिक स्वभाव ही पुराने समय के 'ताज' और राजाओ के समान था। कठोर विलियम, अपग ऐन्नी, जर्मनी के जार्ज, कृषक जार्ज, घरेलू विक्टोरिया मे से कोई भी रानी एलिजाबेथ की भाति राजसभासद्-निकाय रखना चाहते थे। इसके पश्चात् राजसभासद्-निकाय एकान्तप्रिय राजवश का निवास हो गया था जिसकी ओर दूर से ही सकेत किया जा सकता था क्योंकि केवल अकथनीय नीरसता के औपचारिक अवसरो के अतिरिक्त वहा पहुचना

कठिन था। अब सरक्षण दूसरे स्थानो पर, जैसे ससद के गोष्ठी-कक्षो मे, मत्रियो के पार्श्व-कक्षो मे तथा ससार मे सबसे मनोहर सभ्रान्त वर्ग के ग्रामीण निवासो मे खोजा जाता था और अतत ऐसा शिक्षित जनता से अपील करके किया जाता था। राजदरबार के इस पतन के अग्रेजो के जीवन पर अनेक प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष परिणाम हुए। समकालीन फ्रास मे इसका कोई सादृश्य न था जहा वार्सेल्स का लोगो के लिए अब भी चुम्बकीय आकर्षण था तथा जिसने जागीरदारो (सामन्तो) की गढियो और प्रान्तो को निर्धन बना दिया था।

अध्याय ११

डा. जॉन्सन के काल में इंगलैंड (१७४०-१७८०)[1]

[१]

जनसंख्या—चिकित्सा और परोपकारिता—न्याय—स्थानीय प्रशासन—धर्म—शिक्षा—विश्वविद्यालय—वेल्स

अठारहवी शताब्दी के प्रथम चालीस वर्षो, ऐन्नी तथा वालपोल के शासनकाल, को एक सक्रमरण युग कहा जा सकता है जिसमे स्टुअर्ट युग के पारस्परिक झगडे और आदर्श, जो कि चिरकाल से लावा की एक बाढ के समान सारे देश मे विनाशकारी ताप का प्रकोप फैला रहे थे, अब एक स्थिर तथा स्थायी हेनरी-युगीन पद्धतियो मे नियोजित किये जा रहे थे। इस पकार मार्लबारो तथा बोलिग ब्रोक, स्विफ्ट और डिफो का काल दो युगो का सधिस्थल था। केवल इसके बाद आने वाले वर्षो (१७४० से १७८०) मे हमे अठारहवी शताब्दी की स्वाभाविक प्रकृति की विशेषताओ से युक्त मनुष्य मिलते है। इस शताब्दी के समाज का एक अपना मानसिक दृष्टिकोण था, यह आत्म-सतुलित, आत्म-आलोचक तथा आत्म-अनुमोदित और अतीत के विशेषाकारी आवेशो से मुक्त तथा अभी तक एक अत्यन्त भिन्न प्रकार के भविष्य की चिन्ताओ की विकलता से रहित था जो फ्रासीसी तथा औद्योगिक क्रान्तियो के कारण शीघ्र ही आ पहुँचने वाली थी। अतीत की धार्मिक हठधर्मिताओ और वर्ग तथा प्रजाति की हठधर्मिताओ, जो शीघ्र ही उत्पन्न होने वाली थी और आने वाले समय मे प्रबल हो जाने वाली थी, के बीच मानव को शान्ति का एक लघु क्षरण देवो ने दिया था। इगलैंड मे यह कुलीनतत्र और स्वाधीनता का युग था, और कानून के शासन और सुधार की अनुपस्थिति का, व्यक्तिगत पहल तथा सस्थागत ह्रास का, ऊपर से धार्मिक सहिष्णुता का और नीचे वेस्लेवाद का, मानवतावादी तथा परमार्थवादी अनुभूतियो एव प्रयत्न का, मनुष्य के जीवन मे उपयोगी और अलकारक सभी व्यवसायो और कलाओ मे सृजनात्मक ओज का युग था।

यह एक "चिरप्रतिष्ठित युग" है, या दूसरे शब्दो मे निर्विवाद मान्यताओ का युग है जब सर्वसाधारण के दार्शनिको, जैसे डा जॉन्सन, के पास मानव परिस्थितियो पर

---

[1] जार्ज द्वितीय, १७२७-१७६०, जार्ज तृतीय, १७६०-१८२०, डा जॉन्सन, जन्म १७०६, मृत्यु १७८४। सप्तवर्षीय युद्ध, १७५५-१७६१। अमरीकी स्वातत्र्य युद्ध, १७७६-१७८२।

नैतिक उपदेश देने का प्रचुर अवकाश था। उन्हे यह सुखद विश्वास था कि समाज की जिस दशा और विचार के ढगो से वे अभ्यस्त है वे सतत परिवर्तनशील वस्तुस्थिति के अल्पकालिक पक्ष नही है वरन् वे स्थायी व्यवस्थाए है और बुद्धि एव अनुभव का अन्तिम परिणाम है। ऐसा युग प्रगति का आकाक्षी नही होता यद्यपि यथार्थ मे वह प्रगति कर रहा हो। वह अपने को यात्रा पर न मानकर गन्तव्य स्थान पर आ पहुँचा मानता है। जो कुछ उसके पास है उसके लिए वह कृतज्ञ है, सहायतार्थ मिली हुई वस्तुओ के प्रति गहरी पृच्छावृत्ति न रख कर वह केवल जीवन मे आनन्द मनाता है। अतएव इस चिरप्रतिष्ठित युग के मनुष्य सुदूर प्राचीन ससार की ओर एक रुचिर-सबध की भावना से देखते थे। उच्चवर्ग ग्रीसवासियो और रोमवासियो को अग्रेज सम्मानित मानते थे जो स्वाधीनता और सस्कृति मे उनके पूर्वगामी थे, वे रोमन सिनेट को ब्रिटिश पार्लियामेट (ससद) का आदि रूप मानते थे। अपनी अपरिष्कृत आकाक्षाओ एव बर्बरताओ के कारण मध्ययुग कुछ समय के लिए अध्ययन एव सहानुभूति के क्षितिज के नीचे चला गया था। जिससे सुरुचिपूर्ण दृष्टि बिना किसी बाधा के समय की खाडी के पार जा सके और उसके दूसरे किनारे पर केवल ऐसी सभ्यता पर विचार कर सके जो इस युग की सौभाग्यशाली (सभ्यता) के समान ही चिरप्रतिष्ठित, सतुलित, प्रबुद्ध एव कलात्मक हो।

अठारहवी शताब्दी के मध्य की आत्मश्लाघा की तुलना मे विक्टोरिया के युग के लोगो की लोक-प्रसिद्ध आत्मश्लाघा स्वय विनयशीलता है क्योकि कुछ सीमाओ के साथ विक्टोरिया काल के लोग उत्साहपूर्ण और सफल सुधारक थे और जो सुधार उन्होने किए थे उनके लिये आत्मप्रशसाशील थे। किन्तु ब्लैकस्टोन, गिब्बन और बर्क के समय के विशेष लोगो को एक अपूर्ण (त्रुटिपूर्ण) ससार मे इगलैंड यथासभव सर्वोत्तम देश प्रतीत होता था। केवल उसी स्थिति मे छोड देने की आवश्यकता थी जिसमे दैव और १६८८ की क्रान्ति ने सौभाग्य से उसे रखा था। इगलैंड के बारे मे उनकी आशावादिता का आधार मानव प्रजाति के विषय मे एक सर्वसाधारण निराशावादिता थी न कि एक सर्वकालीन एव विश्वव्यापी 'प्रगति' का विश्वास जो कि उन्नीसवी शताब्दी के सरल-हृदय लोगो को प्रमुदित करता था।

यह सत्य है कि जिन लोगो को कम से कम सतोष था वे लोग ऐसे थे जो अग्रेजी जीवन की यथार्थताओ को निकटतम रूप से देखते थे। ये लोग थे होगार्थ, फील्डिग, स्मॉलेट और लोकोपकारी लोग। वे डिकन्स की भाति ही विशिष्ट दोषो का निर्भयता-पूर्वक अनावरण करते थे। किन्तु उनकी कडी आलोचनाए भी उस समय के चिर-प्रतिष्ठित एव रूढिवादी दर्शन की सीमाओ के भीतर ही रहती थी। उस युग का आत्म-सतोष पूर्णतया अनुचित नही था यद्यपि वह दुर्भाग्यपूर्ण था क्योकि उससे एक ऐसा वातावरण कायम हो रहा था जो एक सामान्य सुधार आन्दोलन का विरोधी था।

यह एक ऐसा समाज था जो अपने तमाम गम्भीर दोषो के बावजूद ऊपर मे उज्ज्वल था और नीचे से स्थिर।

अठारहवी शताब्दी मे इगलैंड और वेल्स की जनसख्या, जो रानी ऐन्नी के शासनारूढ होते समय ५५ लाख थी, बढकर १८०१ मे ९० लाख हो गई। हमारे द्वीप के जीवन मे महान् परिवर्तनो की अग्रदूत जनसख्या की इस अप्रत्याशित वृद्धि का कारण आव्रजन न था। आयरलैंड के सस्ते श्रमिको का प्रवेश यद्यपि हमारे आर्थिक एव सामाजिक जीवन की प्रथमतया एक महत्वपूर्ण विशेषता थी परन्तु उसके बराबर ही हमारे देशवासी समुद्रपार के देशो को चले जाते थे। जनसख्या मे वृद्धि प्रधानतया उच्च जन्मदर तथा न्यून मृत्युदर के कारण हो रही थी। आधुनिक युग प्राचीन काल से इस बात मे भिन्न है कि आज बहुत अधिक बच्चे जीवित रहते है और प्रौढो के जीवन काल मे वृद्धि हो गई है। इस महान परिवर्तन का प्रारम्भ अठारहवी शताब्दी मे हुआ था। यह सब मुख्यतया चिकित्सा सेवाओ मे सुधार का परिणाम था।

अठारहवी शताब्दी के प्रथम दशको मे मृत्युदर मे तीव्र वृद्धि हो गई थी और वह जन्मदर से भी बढ गई थी। किन्तु १७३० मे लेकर १७६० के बीच इस भयकर प्रवृत्ति मे प्रत्यावर्तन हो गया था। १७८० के पश्चात् मृत्युदर मे बहुत शीघ्रता से गिरावट आई।

मृत्युदर मे वृद्धि और तत्पश्चात् उसमे गिरावट आने का कारण अशत जौ की शराब की अपेक्षा सस्ती जिन पीने की लोगो की आदत मे वृद्धि और ह्रास बताया गया था। निर्धन लोगो की आदत मे इस परिवर्तन के भयानक परिणामो का अमर एव प्रसिद्ध वर्णन होगार्थ ने किया जिसने "जिन लेन" के भयो की भिन्नता समृद्ध 'बियर स्ट्रीट' से दर्शायी। अठारहवी शताब्दी के तीसरे दशक मे, जो "बेगर्स ऑपरा" का युग था, विधायको एव राजनयिको ने जिन के उपभोग को सप्रयास प्रोत्साहित किया, क्योकि इस समय शराब निकालने के व्यापार को मुक्त कर दिया गया था और स्प्रिटो पर अत्यधिक कम कर लगता था। डिफो के कथनानुसार, शराब निकालने मे अन्न का उपयोग होता था, और यह बात भूपतियो के हित मे थी। भूपतियो (जमीदारो एव जागीरदारो) के ससद का भी ऐसा ही विचार था। किन्तु उस युग के प्रबुद्ध परोपकारियो ने जैसे-जैसे ससद का ध्यान गम्भीर सामाजिक परिणामो की ओर आकृष्ट किया, वैसे ही इस दुर्गुण को कम करने के लिये शीघ्र ही अनेक उपाय किये गए। फिर भी १७५१ तक इसको न रोका जा सका। इस वर्ष स्प्रिटो पर भारी कर लगाया गया और शराब निकालने वालो तथा दुकानदारो को उनकी खुदरा बिक्री करने से मना कर दिया गया (२४ जी II, सी ४०)।

"अठारहवी शताब्दी इगलैंड" के इतिहासकार ने लिखा है कि १७५१ का अधिनियम वास्तव मे स्प्रिट पीने की अधिकताओ को कम करने मे सफल हुआ। लडन के

सामाजिक इतिहास म यह एक परिवर्तन-स्थल था और उस युग के लोग इसका स्मरण इसी रूप मे करते रहे। उस शुभ तिथि के बीत जाने पर भी चिकित्सक लदन के प्रौढो की मृत्युओ के १/८ भाग का कारण स्प्रिट पीने का आधिक्य बताया करते थे। किन्तु दुर्दिन अब समाप्त हो गया था। अर्धशताब्दी के वर्षो मे राजधानी एव बाहर देहातो मे सभी वर्गों मे शराब का शक्तिशाली प्रतिद्विन्द्वी चाय हो गई थी।

'जिन युग' के सर्वोत्तम काल मे (१७४० और १७४२ के बीच) लन्दन क्षेत्र मे नामकरण सस्कारो की अपेक्षा दफनाये जाने वाले मृतको की सख्या दुगनी होती थी। राजधानी मे अधिक स्वस्थ और सयत (शराब न पीने वाले) देहाती आव्रजको का एक निरन्तर प्रवाह आकर बसता रहता था। मध्य शताब्दी के पश्चात् अधिक अच्छी दशाओ की ओर परिवर्तन बहुत विशद् था। १७५० मे लदन मे मृत्युदर केवल ५ प्रतिशत थी और १८२१ मे यह घटकर २.५ प्रतिशत रह गई थी। १७०० और १८२० के बीच बृहत्तर लन्दन की जनसख्या दूनी हो गई थी (६,७४,००० से बढकर १२,७४,००० हो गई थी) किन्तु पजीकृत दफनाए गए मृतको की वार्षिक दर अपरिवर्तित रही। दूसरे शब्दो मे, १८२० मे लन्दन मे मृत्यु के बाणो के लिये जितने लक्ष्य उपलब्ध थे वे एक शताब्दी पूर्व के लक्ष्यो से दुगने थे किन्तु मृत्यु को मिलने वाली सफलताओ की सख्या मे कोई वृद्धि नही हुई। (देखिए, श्रीमती जार्ज, **लन्दन लाइफ इन दि ऐट्टीन्थ सेन्चुरी,** पृष्ठ २४-३८)।

सस्ती जिन की अवधि भर (१७२० से १७५०) राजधानी की जनसख्या मे बहुत ह्रास होता रहा। विस्तृततर देहाती क्षेत्रो मे इससे भयकर हानिया हुई किन्तु नगरो की तुलना मे ग्रामो मे इस अवधि भर 'खेल' का अच्छा प्रचलन रहा। लन्दन क्षेत्र के बाहर जन्म मृत्यु दरो पर जिन पीने के प्रभावो का कभी कभी सामाजिक इतिहासकारो ने वस्तुत अतिशयोक्तिपूर्ण उल्लेख किया है। उदाहरण स्वरूप, १७०० से १७२० के काल मे मृत्युदर मे तीव्र वृद्धि का कारण जिन नही माना जा सकता क्योकि उन वर्षों मे सस्ती स्प्रिटो का विशद् उपभोग होना प्रारम्भ ही नही हुआ था। इसके विपरीत, लन्दन क्षेत्र की तुलना मे समस्त इगलैड मे १७३० और १७५० के बीच मे मृत्युदर मे तीव्र ह्रास हुआ किन्तु निश्चय ही इन वर्षो मे जिन पीना सबसे खराब दशा मे था।

अतएव, अठारहवी शताब्दी के मध्य, विशेषकर उसके अन्तिम बीस वर्षो मे, मृत्युदर मे जो उल्लेखनीय गिरावट आई उसका कारण हमे स्प्रिटो के उपभोग मे कमी के अतिरिक्त अन्य बातो मे ढूढना चाहिए। अग्रेज शिशुओ, बालको और प्रौढो मे मृत्यु-सख्या मे कमी के दो कारण, जीवन की दशाओ मे सुधार तथा सुधरी हुई (उन्नत) चिकित्सा सुविधाए, कहे जा सकते है। अठारहवी शताब्दी मे कृषि मे महान् उन्नति से यदि सबको नही तो भी बहुतो को प्रचुर भोजन मिलने लगा। गमनागमन मे उन्नति और औद्योगिक रीतियो मे परिवर्तन से रोजगार तथा मजदूरी मे वृद्धि

हुई तथा इससे अनेक प्रकार के सामान भारी सख्या मे उपलब्ध होने लगे जिन्हे निर्धन व्यक्ति भी खरीद सकता था। यह सत्य है कि औद्योगिक एव कृषि उन्नति से समाज तथा ग्रामो एव नगरो के जीवन की सुविधाओ पर कुछ अत्यन्त दु खदायी प्रभाव पडे। सदा इससे सतोष मे वृद्धि नही हुई और सभवत औसतन आनन्द (सुख) मे भी वृद्धि नही हुई। किन्तु निस्सदेह इससे जनसख्या के प्रति व्यक्ति को अधिक भोजन, वस्त्र और अन्य सामग्री उपलब्ध हुई यद्यपि उनका वितरण निन्दनीय ढग से असमान था। और इस व्यापकतर सम्पन्नता, जिसने मानव जीवन के काल को दीर्घ कर दिया था, को जनसख्या मे निरन्तर वृद्धि का एक कारण माना जा सकता है।

किन्तु मृत्युदर मे इससे भी अधिक रुकावट चिकित्सा मे उन्नति के कारण हुई। सम्पूर्ण अठारहवी शताब्दी भर चिकित्सा व्यवसाय पाखडीपन और परम्परागत मिथ्या-विश्वास के अधकार युग से निकलकर विज्ञान के प्रकाश मे आने का प्रयास करता रहा। चिकित्सक, सर्जन, औषधि विक्रेता एव अनुज्ञाप्ति-रहित चिकित्सक सभी ज्ञान की वृद्धि और निष्ठाशील सेवा मे वेग से आगे बढ रहे थे, विशेषकर निर्धनो की सेवा मे, जिनकी अभी तक गभीर उपेक्षा की गई थी। 'प्रबोधन के युग' की प्रेरणास्वभावआत्माया का सर्वोत्तम भाग विज्ञान और परोपकार थे और इस स्वभाव ने अच्छे चिकित्सा सबधी प्रशिक्षण तथा व्यक्तियो द्वारा उपचार-अभ्यास को प्रेरित किया।

इस शताब्दी के प्रारभ मे चेचक सबसे भयकर रोग माना जाता था जो सौदर्य, और उससे भी अधिक जीवन, को विनष्ट कर देता था। एक महिला यात्री, श्रीमती मेरी वोर्टले मान्टेगु, ने टर्की से चेचक का टीका लाकर प्रवेश किया तथा लन्डन मे एक टीका लगाने वाले अस्पताल की स्थापना की गई। यद्यपि इस उपचार पर अप्राकृतिक और अपवित्र होने का सदेह था फिर भी इसकी कुछ प्रगति हुई तथा उससे रोग के प्रकोप मे कमी आई। किन्तु शताब्दी के अन्त मे जब तक जेनर ने 'वैक्सीनेशन' की खोज नही की थी इस रोग से प्रत्येक पीढी का तेरहवा भाग मर जाता था।

स्काटलैंड ने सीमा के दक्षिण मे जीवन मे महान् बौद्धिक योगदान करना प्रारभ कर दिया था। मस्तिष्को (विचारो) की एकता ससदो और व्यापार की एकता का अनुगमन कर रही थी। यह ह्यूम, स्मॉलेट, एड्म स्मिथ और बॉस्वेल का युग था। और इसी अवधि मे सर जॉन प्रिग्ल, हटर भाई और विलियम स्मेली स्काटलैंड से लन्डन को आये थे। हटर भ्राताओ ने अपनी शिक्षा से ब्रिटेन के सर्जनो को भद्दे औजारो से चीड-फाड करने वालो से विशेषज्ञो मे परिणत कर दिया। इसी प्रकार स्मेली ने दाइयो के कारबार मे क्रान्ति ला दी। प्रिग्ल ने वैज्ञानिक सिद्धान्तो पर सेना की स्वच्छता मे सुधार किया जिसका नागरिक जनसख्या की आदतो और उपचार पर महान् प्रभाव पडा।

व्यावसायिक दक्षताओ मे बडे सुधार को अस्पतालो की स्थापना से सहायता मिली जिनमे परमार्थ युग की अनुभूतियो को सयत व्यजना मिली। यह ठीक उसी प्रकार से

हुआ जैसे कि विश्वास के युग की आत्मा गिरजे से लगे हुए छायादार रास्ता की पाषाण रचनाओ एव गिरजाघरो के मीनारो मे मुखरित हुई थी। प्रमुख नगरो मे ऐसे अस्पतालो की स्थापना हुई जहा रोगियो के रहने की व्यवस्था थी। काउण्टी के अस्पताल सभी प्रकार के रोगियो के लिए स्थापित हुए थे। १७२० और १७४५ के बीच राजधानी मे गुई, वेस्टमिस्टर, सेण्ट जार्ज, लन्डन और मिडिल सेक्स अस्पतालो की स्थापना हुई। मध्ययुगीन सेण्ट टॉम्स अस्पताल का रानी ऐन्नी के शासनकाल मे पुर्ननिर्माण किया गया था। बार्ट अस्पताल मे शिक्षण एव चिकित्सा दोनो मे तीव्रता से सुधार हो रहा था। १७०० ई० के पश्चात् १२५ वर्ष की अवधि मे ब्रिटेन मे १५४ नये अस्पताल एव डिस्पेसरिया स्थापित हुई थी। इन्हे नगरपालिकाओ ने नही स्थापित किया था क्योकि उस समय मे नागरिक जीवन का यह पक्ष अत्यन्त अविकसित था। अस्पतालो की स्थापना व्यक्तिगत उपक्रम (पहलकदमी) और समन्वित स्वैच्छिक प्रयास तथा चदा का परिणाम था।

उसी समय उस युग की बढती हुई परोपकारिता निर्धन जनसख्या के शिशुओ और विशेषकर परित्यक्त दोगले बच्चो मे भयानक शिशु-मृत्यु अनुपात पर नियत्रण पाने के लिए सक्रिय हुई। जोनास हैनवे, जिसने इन बुराइयो के कम करने का बहुत प्रयास किया, ने कहा था कि शायद ही कोई पैरिश निवासी बच्चे बडे होकर व्यापार-व्यवसाय मे शिष्यत्व करने को जीवित रहते हो। और हजारो शिशु पैरिश बच्चे कहलाने को जीवित ही नही रहते थे क्योकि वे खाली कमरो अथवा सडको पर गर्मी, जाडे, बरसात से असुरक्षित मर जाते थे, यदि उनकी माताए उनका परित्याग न करती तो या तो उन्हे अधिक व्ययभार उठाना पडता अथवा निर्लज्जता सहनी पडती। कैप्टन कोरम, जो एक सहृदय नाविक था, सडको के किनारे पडे हुए परित्यक्त बच्चो के दृश्य को सहन नही कर सका था किन्तु सम्मानित नागरिक अपने पारसी कोट को हिलाते हुए पास से गुजर जाते थे। कोरम कई वर्षो तक एक अस्पताल की स्थापना की योजना के लिए प्रयत्न करता रहा। अन्तत उसे जार्ज द्वितीय से इस सम्बन्ध मे एक आदेश प्राप्त हो गया। हैण्डेल ने अशदान किया, होगार्थ ने एक चित्र बनाया, चन्दा एकत्र होने लगा और १७४५ मे अस्पताल का निर्माण पूरा हो गया और उसका उद्घाटन हुआ। अनेक शिशुओ के जीवन की रक्षा हुई और अनेक परित्यक्त बच्चो का पालन-पोषण कर उन्हे व्यापार मे एप्रेन्टिस बना दिया गया।

इस दयालु (सहृदय) कप्तान की मृत्यु के कुछ वर्षो के पश्चात् उसके द्वारा सस्थापित सस्था के इतिहास मे एक बुरा क्षण आया। १७५६ मे ससद ने उस सस्था को अनुदान इस शर्त पर स्वीकृत किया कि जो भी बच्चे अस्पताल लाए जाय उन्हे भरती किया जाय। १५ हजार बच्चे वहा लाए गए और इतनी बडी भीड के लिए जो स्वाभाविक परिणाम होना था वही हुआ। केवल ४४०० बच्चे एप्रेण्टिस बनने को जीवित रहे। इस अमगलजनक (दारुण, भीषण) परीक्षण के पश्चात् वह शिशुपालक

अस्पताल पुन एक निजी सस्था हो गया जिसमे प्रवेश सीमित कर दिया गया। फलत उसमे प्रविष्ट बच्चो मे मृत्युदर भी कम हो गई। दीर्घकाल तक यह सस्था अच्छा कार्य करती रही। बीसवी शताब्दी के प्रारभ मे सुखद सामाजिक दशाओ मे इसे नगर के बाहर हटा दिया गया। जिस स्थान पर यह पहले स्थापित थी उसे सभी प्रकार के बालको के खेलने के लिए प्राप्त कर लिया गया और उसका पुन नामकरण कर 'कोरम फील्ड्स' नाम रख दिया गया।

जार्ज तृतीय के शासन के प्रारभ-काल मे हैनवे के सतत् प्रयत्नो को ससद से एक अधिनियम को पारित कराने मे सफलता मिली जिससे लन्डन की पैरिशो को पृथक-पृथक कार्यगृहो मे पैरिश के शिशुओ को न रखने के लिए बाध्य किया गया जहा वे शीघ्रता से मर जाते थे। इसके स्थान पर उन्हे ग्रामीण क्षेत्रो की कुटीरो मे रखने का आदेश दिया गया जहा वे रहकर उन्नति करते थे।[1]

ऐसी ही प्रेरणा के वशीभूत जनरल ऑगलथार्प ने ऋणियो के कारागारो की निन्दनीय प्रथा की ओर ध्यान आकृष्ट किया। १७२९ मे उसने ससद को ऐसे ही दो कारागारो, फ्लीट तथा मार्शलसी, की वीभत्सताओ (भयो) की जाच करने के लिए प्रेरित किया जहा जेल अधिकारी ऋणियो (कर्जदारो) को यातना देकर मार डालते थे और जिन लोगो के पास धन नही होता था उनसे फीस वसूल करने का प्रयास करते थे, शताब्दी के शेष भाग मे अग्रेजी कारागार राष्ट्र के लिए अपमानजनक बने रहे, जो अभी भी स्थानीय अधिकारियो द्वारा ऐसे ही दुष्टो को सौप दिए जाते थे क्योकि वे (स्थानीय अधिकारी) उन कारागारो के सचालन के लिए उचित रूप से सार्वजनिक कोष से वेतन पाने वाले अधिकारियो को नियुक्त करने का कष्ट नही उठाते थे।[2] किन्तु ऑगलथार्प

---

[1] हैनवे (१७१२-१७८६) इगलैड मे छाता का चलन प्रारभ करने के लिए प्रसिद्ध है। जनसाधारण के व्यग और कुर्सी पर भद्रजनो को ढोनेवालो और घोडा-गाडी के कोचवानो के क्रोध के बावजूद भी वह बहुत दिनो तक छाता लेकर चलता रहा। उसके जीवन के अन्तिम वर्षो मे लोगो ने उसके उदाहरण का अनुकरण कर लिया। किन्तु यह कहना अधिक सच होगा कि छाता लेकर चलने की प्रथा का चलन पहले से ही था जिसे हैनवे ने पुन शुरू किया। उसके जन्म के दो वर्ष पूर्व स्विफ्ट ने अपनी कविता **सिटी शावर** (नगर की बरसात) मे लिखा था

'सिलाई करने वाली स्त्री लम्बे-लम्बे डग लेती हुई चली जा रही है, उसके तेल लगे हुए छातो के किनारो से धारे बह रही है।' अत यह सभव है कि हैनवे ने अपने बाल्यकाल मे ही लन्डन मे छातो का स्तेमाल होता देखा हो।

[2] १७७३ मे जॉन होवर्ड ने जेलो पर अपने जीवन की कृति मे बेडफोर्डशायर के न्यायाधीशो और पडोसी काउटियो को जेल के कर्मचारियो को नियमित वेतन देने के

ने इस भयानक स्थिति की ओर ध्यान आकृष्ट किया और कुछ अत्यन्त दूषित प्रथाओ को कम करने मे सफलता प्राप्त की। उसके पूर्व की पीढियो ने कदाचित ही कभी यह जानने की कोशिश की हो कि इन कष्टो के गृहो (जेलो) मे क्या होता था।

यह वीर सेनापति जार्जिया के नये उपनिवेश का सस्थापक और प्रथम गवर्नर हो गया। यहा उसने अनेक कर्जदारो और दरिद्र लोगो को ले जाकर बसाया। वह पोप की प्रशसा का सुपात्र था,

"जो व्यक्ति आत्मा की प्रगाढ परोपकारिता से प्रेरित है वह ऑगलथार्प की भाति स्थान-स्थान पर विचरण करेगा।"

उस युग के बहुत से लोगो की विशेषता "आत्मा की प्रगाढ परोपकारिता" थी। ऑगलथार्प के महत्वपूर्ण मित्र डा जॉन्सन की असाधारण घरेलू व्यवस्था इसी प्रेरणा से शासित थी। प्रारभ से लेकर शताब्दी के अन्त तक उत्साही धार्मिक व्यक्तियो, जैसे राबर्ट नेल्सन, लेडी एलिजाबेथ हैस्टिंग्ज, वेज्लेज, कॉवपर और अन्तत विल्बर फोर्स, के नवीन शुद्धिवाद ने न्यू टेस्टामेट की दानशीलता का अभ्यास करने का प्रयास किया। उन्होने ओल्ड टेस्टामेट के कठोर उपदेशो को त्याग दिया जिन्होने क्रामवेल की सेनाओ को युद्ध के लिए प्रस्थान करने को प्रेरित किया था। यह कोई आकस्मिक घटना न थी कि अग्रेजी कथा (गल्प) साहित्य के प्रथम महान् युग मे अकल टॉबी, वाइकर ऑफ वेकफील्ड, श्रीऑलबर्दी और पार्सन एडम्स जैसे अग्रणी व्यक्ति पैदा हुए थे। दूसरो की विशेषतया निर्धनो की, कठिनाइयो और आवश्यकताओ के प्रति एक तीव्र सवेदनशीलता न केवल साहित्य मे प्रतिविम्बित हुई थी किन्तु उसे परोपकारवादियो के जीवन और उस युग के क्रियाकलापो मे भी देखा जा सकता था। इसी के परिणामस्वरूप प्रथम धर्मार्थ विद्यालयो की, तदनन्तर अस्पतालो की और शताब्दी के अन्तिम वर्षों मे रवि-वासीय विद्यालयो की स्थापना हुई थी। इस प्रवृत्ति ने प्रजाति और वर्ण की सीमाओ का अतिक्रमण कर लिया था। इससे राजनयिको की कठोर व्यवहारकुशलता पिघल गई थी। 'झझावत सम दया' ने ही भारत और फ्रास के सम्बन्ध मे क्रमश बर्क और फॉक्स की भाषण प्रवीणता और कुछ त्रुटियो को प्रेरित किया था। "अन्तत इसी ने अग्रेजो के विवेक (अन्त करण) को दास व्यापार के विरुद्ध महान् विद्रोह करने के लिए उकसाया था।

फिर भी जहा नवीन मानवतावादी भावना से व्यक्तिगत पहलकदमी को प्रेरणा मिली वहा अभी तक इसका प्रशासकीय, स्थानीय निकायो एव विधायिका के कार्यों पर नगण्य प्रभाव था। सरकार जो व्यवहार अपने सैनिको और नाविको के प्रति करती

लिए प्रेरित करने का असफल प्रयास किया था ताकि वे कर्मचारी कैदियो से जबर्दस्ती फीस वसूल न किया करे।

थी उससे अधिक अच्छा व्यवहार निजी सेवायोजक (मालिक) अपने नौकरो के साथ करते थे। अनिवार्य भरती के सैनिको के अव्यवस्थित एव अन्यायपूर्ण बाध्यता द्वारा जहाजी बेडे को चलाया जाता था क्योकि राजकीय (शाही) जहाजो मे कुख्यात दशाओ के कारण स्वेच्छिक भर्ती बहुत अपर्याप्त होती थी। मछुओ और व्यापारिक नाविको का जीवन काफी कठिन था किन्तु फिर भी यह सैनिको के जीवन से अच्छा था। सैनिको को बहुत थोडा और खराब भोजन मिलता था। उन्हे अपर्याप्त और अनियमित वेतन मिलता था, उनके स्वास्थ्य पर कोई ध्यान नही देता था जबकि उन्हे लौह अनुशासन के अन्तर्गत काम करना पडता था। दयालु नौसेनाध्यक्ष वर्नन, जिसे नाविको का स्पष्ट-भाषी मित्र होने के कारण जार्ज तृतीय के शासन मे कठिनाई उठानी पडी थी, ने कहा था कि "हमारे जहाजी बेडो के साथ अन्याय द्वारा धोखा होता है, हिसा से उनपर अधिकार रखा जाता है और उनके सचालन मे क्रूरता की जाती है।"

थल सेना के निजी सैनिक के साथ इससे अच्छा व्यवहार नही होता था। अपने मूलस्थान मे रहने पर उसके लिए सैनिक बैरको की व्यवस्था न थी किन्तु जनसाधारण के बीच उसे शराब खानो मे ठूस दिया जाता था जहा ऐसे लाल कोटधारी सैनिको से लोग घृणा करते थे और तदनुरूप उसके प्रति व्यवहार करते थे। वे जनता मे अधिक अप्रिय थे क्योकि दगो तथा तस्करी के मामलो मे वही कार्यकुशल पुलिस के रूप मे कार्य करते थे। इन सैनिको के अनुशासन के बारे मे कुछ मत पूछिए। जार्ज द्वितीय के एक सैनिक को १६ वर्ष की अवधि मे ३०,००० कोडो की सजा मिली थी, फिर भी यह व्यक्ति स्वस्थ और प्रसन्न चित्त था और पूर्णतया अप्रभावित प्रतीत होता था। देश मे रहने पर उनकी यह दशा थी किन्तु यदि उन्हे वेस्ट इन्डीज मे तैनात कर दिया जाता तो यह मृत्यु दण्ड के बराबर था। इन्ही मनुष्यो ने सागर अथवा भूमि पर विभिन्न अभियानो से इगलैंड के लिए साम्राज्य जीता, उसके व्यापार की रक्षा की तथा देश के भीतर उसे धन एव आनन्द प्रदान जिया था किन्तु उस सबका उन्हे यह पुरस्कार मिला था।

सम्पूर्ण शताब्दी भर ससद अग्रेजी कानून की 'घृणित सहिता' मे एक अधिनियम के बाद दूसरा अधिनियम जोडता गया जिससे मृत्यु दण्ड दिए जाने वाले अपराधो की सूची मे शाश्वत रूप से वृद्धि होती गई और अन्तत' ऐसे अपराधो की सख्या दो सौ पहुच गई। न केवल घोडो एव भेडो का चुराना तथा जाली सिक्के बनाना मृत्युदण्ड योग्य अपराध थे वरन् पाच शिलिग से अधिक मूल्य के सामान को दुकान से चुराना अथवा किसी व्यक्ति से रहस्यमय ढग से कोई वस्तु चुराना, चाहे फिर वह रूमाल क्यो न हो, आदि अपराध भी मृत्यु दण्ड के योग्य थे। किन्तु कानून की ऐसी तर्कहीन अराजकता थी कि हत्या के प्रयास को अब भी मामूली दण्डनीय माना जाता था यद्यपि किसी व्यक्ति की नाक काट लेना मृत्यु-दण्डनीय था। अधिक मानवतावादी होने वाले

युग मे बढी हुई कानूनी कठोरता का प्रभाव यह हुआ कि जूरी बहुधा साधारण (गौण, छोटे) अपराधो के लिए अभियुक्तो को दोषी ठहराना अस्वीकार कर देते क्योकि दोष सिद्ध होने पर उन्हे फासी पर लटका दिया जाता। इसके अतिरिक्त एक चतुर वकील की सहायता से एक अपराधी के लिए पुरातनपन्थी एव अतिशय विस्तीर्ण कार्यविधि के जाल से मात्र प्राविधिक आधारो पर छूट जाना आसान था। यदि छ चोरो पर मुकदमा चलाया जाता तो उनमे से पाच किसी न किसी प्रकार निदोर्ष सिद्ध होकर छूट जाते थे किन्तु अभागे छठे को फासी दे दी जाती थी। सभवत अपराधो के लिए यह अधिक प्रतिरोधक सिद्ध होता यदि छहो अभियुक्तो को एक निश्चित अवधि का कारावास भोगने का विश्वास होता।

यह स्थिति और भी खराब हो गई थी क्योकि गिरफ्तार होने के बहुत कम अवसर थे। द्वीप मे कार्यालय के लिए धावको के अतिरिक्त कोई भी प्रभावपूर्ण पुलिस न थी। इन 'धावको', को फील्डिग बन्धुओ ने अठारहवी शताब्दी के लगभग मध्य मे अपने बौ स्ट्रीट वाले घर मे स्थापित किया था।[1] जब तक वास्तव मे सैनिको को बुलाया न जाता तब तक एक अनियन्त्रित भीड को तितर बितर करने के लिए कोई सक्षम दल (शक्ति) वहा नही पहुचता। अतएव १७८० मे गोर्डन दगो की अशोभनीय घटना घटी थी। जिसमे लन्डन की उग्रभीड ने सत्तर मकानो और चार कारागारो को भस्म कर दिया था। वास्तव मे आश्चर्य की बात यह है कि इन स्थितियो मे हमारे पूर्वजो ने सार्वजनिक व्यवस्था एव निजी (व्यक्तिगत) सम्पत्ति की इतने अच्छे ढग से सुरक्षा की। कम से कम औसतन वे हमारी अपनी पीढी के लोगो के समान ही नैतिक नियमो एव कानूनो का पालन करने वाले रहे होगे,, यदि हमारे विशाल नगरो मे आज पुलिस का उन्मूलन कर दिया जाये तो उसका क्या प्रभाव होगा ?

फिर भी जब तक यूरोप महाद्वीप मे नैपोलियन सहिता नही प्राप्त हुई थी यह सभव है कि अपने दोषो के बावजूद अग्रेजी न्यायप्रणाली ससार मे सर्वोत्तम रही हो, जैसी गर्वोक्ति ब्लैकस्टोन ने की थी। प्राचीन शासनो की यूरोपीय सहिताओ की तुलना मे कम से कम इससे दो लाभ थे। इसने राजनैतिक मामलो के बन्दी को प्रशासन के

---

[1] उपन्यासकार हेनरी फील्डिग और उसका सुप्रसिद्ध सौतेला भाई सर जान, जो जन्माघ था, लन्डन के उस शताब्दी के सर्वोत्तम मजिस्ट्रेट थे। वास्तव मे वे वेस्टमिस्टर के वेतनभोगी न्यायाधीश थे। उस युग के एक लोक गीत मे सडको पर राहजनी करने वाले एक व्यक्ति ने नीचे लिखी पक्तिया गाई थी

'एक सुन्दर दिन मैं लडन गया, अपनी प्रेयसी के साथ नाटक देखने, वहां फील्डिग के गिरोह ने मेरा पिछा किया, और उन दुष्टो ने मुझे गिरफ्तार कर लिया।'

विरुद्ध अपनी रक्षा करने का यथार्थ अवसर प्रदान किया। यह सुधार १६९५ के देश-द्रोह अधिनियम के कारण सभव हो सका था तथा इसमे क्रान्ति के पश्चात् राजनैतिक एव न्यायिक अभ्यास की सामान्य प्रवृत्ति से भी सहायता मिली। किसी प्रकार के मुकदमो, राजनैतिक अथवा अन्य, मे अपराध स्वीकारोक्ति (अभियोग-स्वीकृति) अथवा साक्ष्य प्राप्त करने के लिए यातना देना निषिद्ध था। किन्तु यह नही कहा जा सकता कि अग्रेजी न्याय मे दण्ड के रूप मे यातना देना त्याग दिया गया था क्योकि यद्यपि हमारे द्वीप मे अभियुक्त को पहिए से बाधकर उसकी हड्डी तोडना (फासी देने का पुराना ढग) अज्ञात था, विशेषकर नौसेना या थल सेना मे कोडे लगाना एक प्रकार की यातना ही थी।

अभी तक अग्रेज लोगो को उन लोगो को दण्ड दिया जाता देखने का शौक था जिनके कार्यों को वे नापसन्द करते थे। पार्सन वुडफोर्ड की डायरियो से दो उद्धरण यहा देना अनुचित न होगा। यह सज्जन परोपकारी थे और साधारणतया मनुष्यो एव पशुओ के प्रति दयालु थे।

"२२ जुलाई १७७७—आलू चुराने के अपराध मे राबर्ट बिगेन को कैरी (सोमरसेट) की सडको पर आज अपरान्ह को कोडे लगाए गए। वह एक गाडी के पीछे बधा था और जल्लाद कोडे लगा रहा था। 'जार्ज इन' से लेकर ऐजेल तक और वहा से दक्षिणी कैरी तक सारी सडक पर और फिर जार्ज इन तक वापस लौटने तक उसे कोडे लगाए गए। यह व्यक्ति पुराना अपराधी था। अत उसके प्रति 'न्याय' करने के लिए जनता ने जल्लाद को १७ ५ शिलिंग चन्दा दिया। किन्तु यह उस सबके लिए अधिक नही था। जल्लाद वृद्ध था और एक अत्यन्त दुष्ट (खल) दिखने वाला व्यक्ति था। मैं अपनी ओर से उसे उस दुष्कृत्य के लिए एक फार्दिंग भी चन्दा नही देता।'

"७ अप्रैल १७८१—मैंने अपने नौकर विल को दस मील सडक की यात्रा कर नार्विक जाने की छुट्टी दी जहा आज तीन राहजनी के अपराधियो (दस्युओ) को फासी लटकाया गया। बिल सायकाल मे लगभग ७ बजे लौट आया। वे तीनो फासी लटकाये गये और लग रहा था उन्हे अपने कुकृत्यो पर पश्चात्ताप था।"

चाहे सब मिलाकर अग्रेजी न्याय आज कल के यूरोपीय चलन (अभ्यास) की तुलना मे कम अच्छा हो अथवा नही, यूरोप और इगलैंड के दार्शनिको ने कानून एव दण्ड की विद्यमान प्रणालियो पर अपना विख्यात आक्रमण प्रारम्भ कर दिया था। जिन दुष्कर्मों को सभी पूर्ववर्ती युगो मे साधारण घटनाए मानकर सहन किया जाता था उन दुष्कर्मों (विकारो) के प्रति व्यापकतर सवेदनाशीलता एक सामान्य मानवतावादी आन्दोलन का भाग थी जिसका सम्बन्ध यूरोप महाद्वीप के वोल्टायर और 'दार्शनिको' से तथा इगलैंड के 'दर्शन' और धर्म से था। इटालवी सुधारक, बैकेरिया ने यूरोप की 'दण्ड सहिताओ पर जो आक्रमण किया उसका अनुसरण होवार्ड ने इगलैंड तथा विदेशो

के कारागारो की निन्दनीय स्थिति का रहस्योद्घाटन कर किया। इसी श्रृ खला मे बेन्थम ने अंग्रेजी कानून की निरर्थक और उलझी हुई बेहूदगियो का विश्लेषण प्रस्तुत किया। उसके विचार मे वह (कानून) अत्यन्त अनुदार व्यवसायो को हृदय से प्रिय लगने वाला एक वेशित हित था।

कानून के शासन का सर्वोत्तम विचार, जो किन्ही दृष्टियो से शासको की इच्छा से श्रेष्टतर था, अठारहवी शताब्दी के अंग्रेजो मे काफी प्रबल था। इसे क्रान्ति की घटनाओ एव उनके परिणाम स्वरूप न्यायाधीशो की अपदस्थता से प्राप्त किया गया था। अब न्यायाधीश मात्र सरकार (प्रशासन) के गीदड नही थे किन्तु राजा और प्रजा के विवादो को निपटाने के स्वतत्र पर्यवेक्षक थे।

कानून की सर्वोच्चता की इस उच्च अवधारणा को ब्लैकस्टोन की कृति "कमेंट्रीज आन दि लॉ आफ इगलैंड" (१७६५) ने लोकप्रसिद्ध बना दिया। इस पुस्तक को इगलैड और अमरीका के शिक्षित लोग व्यापक रूप से पढते थे क्योकि उस युग के लोगो की कानून मे तीव्र दिलचस्पी थी। उसमे केवल इतना दोष था कि इस प्रकार जिस कानून को आदर्श स्वीकारा जा रहा था उसे अत्यधिक स्थिर माना जाता था, जैसे वह कोई ऐसी वस्तु हो जो सदा के लिये दे दी गई हो। परन्तु यदि कानून वास्तव मे किसी राष्ट्र के जीवन का स्थायी शासक हो सकता है तो इसमे समाज की परिस्थितियो एव आवश्यकताओ मे परिवर्तन होने की क्षमता होनी चाहिये। अठारहवी शताब्दी मे ससद ने विधायिका क्रिया (कानून बनाने की क्रिया) मे कोई रुचि नही दिखाई। उसने केवल भूमि की घेरेबन्दी, रोकफाटक वाली सड़को तथा कुछ अन्य आर्थिक कानूनो, जैसे निजी कानूनो, को पारित किया। प्रशासकीय मामलो मे विधान मे एक पश्चायन था और यह ऐसा समय था जबकि प्रत्येक वर्ष महान् औद्योगिक विकासो से सामाजिक दशाओ [illegible] और [illegible] जन[illegible] की आ श्यकताओ मे वृद्धि आ जाती थी।

अतएव जरमी बेन्थम, जिसे अंग्रेजी कानून के सुधारो का पिता कहा जाता है, ब्लैकस्टोन को घोर शत्रु मानता था जो उस समय विद्यमान इगलैंड के कानूनो के प्रति लोगो मे अन्ध श्रद्धा जगाकर परिवर्तन मे बाधक था। उस समय कानूनो का जो रूप था वह तात्कालिक युग की अपेक्षा लम्बे बीते युगो की आवश्यकताओ के अनुरूप था।[1]

सर्वप्रथम, १७७६ मे प्रकाशित अपनी कृति "फ्रैगमेण्ट ऑन गवर्नमेट" के माध्यम से

[1] प्रोफेसर होल्ड्सबर्थ का विचार है कि ब्लैकस्टोन की रूढिवादी आशावादिता का बेन्थम ने कुछ अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है, वास्तव मे ब्लैकस्टोन उतना अधा नही था जितना कि उसे उसके आलोचक ने कहा है।

युवा बेन्थम ने ब्लैकस्टोन पर प्रथम आघात किया। इसी उत्पत्ति विषयक (अकुरीय) वर्ष मे ऐडम स्मिथ की कृति "वेल्थ ऑफ नेशन्स", गिबन की 'हिस्ट्री' के प्रथम भाग का प्रकाशन और अमेरिकी स्वातत्र्य की घोषणा जैसी महत्वपूर्ण घटनाए घटी। जब अस्सी वर्ष की आयु से अधिक मे बेन्थम की मृत्यु १८३२ मे हुई तो इगलैड के कानूनो की जो स्थिति ब्लैकस्टोन के काल मे थी और जिसकी उसने (वेन्थमने) भर्त्सना की थी, उस स्थिति से वे केवल सजग होना प्रारम्भ हुए थे। फिर भी उसके दीर्घकालिक प्रयत्न व्यर्थ नही सिद्ध हुए थे क्योकि नयी पीढी के विचारो को बदलने मे वह सफल हो गया था। उस समय के पश्चात् हमारे कानूनो मे सामान्य बुद्धि और वेन्थम द्वारा प्रतिपादित उपयोगितावादी सिद्धान्तो के अनुसार तीव्र परिवर्तन आया।

उन्नीसवी शताब्दी का विशिष्ट कार्य सुधार था। उससे पूर्व के हैनोवर युग का विशिष्ट कार्य कानून के शासन की स्थापना था। और वह कानून, अपने समस्त गम्भीर दोषो के बावजूद, कम से कम स्वतत्रता का कानून था। उसी ठोस आधारशिला पर कालान्तर के हमारे समस्त सुधारो का निर्माण हुआ था। यदि अठारहवी शताब्दी ने स्वातत्र्य के कानून की स्थापना न की होती तो इगलैड मे उन्नीसवी शताब्दी क्रान्ति जन्य हिसा को लेकर आगे बढी होती न कि कानून का ससदीय तरीको से सशोधन, जैसा वस्तुत. हुआ।

निर्धनो से सम्बन्धित कानूनो के दुरुपयोगो का कारण सरकार के आधुनिक अवयवो का अभाव और सबसे ऊपर केन्द्रीय सगठन और नियत्रण का पूर्णतया अभाव था। इन दुरुपयोगो के बारे मे अठारहवी शताब्दी के इगलैड मे बहुत कुछ कहा सुना गया। निर्धनो (दरिद्रो) और बेकारी की समस्या तत्वत एक राष्ट्रीय समस्या थी अथवा कम से कम क्षेत्रीय तथापि प्रत्येक तुच्छ पैरिश प्रत्येक दूसरी पैरिश से विरोध की स्थिति मे उससे निपटने का पृथक प्रयास करती थी। ग्राम्य आज्ञानता एव स्थानीय ईर्ष्या को इस भयकर समस्या से अपनी अपनी युक्तियो से खिलवाड करने की छूट थी। उस समय मुख्य चिन्ता यही रहती थी कि यदि कोई व्यक्ति दरिद्र सहायता पर भार बन कर बैठा है तो उसे पैरिश से बाहर कैसे खदेडा जाय। यह नीति श्रम की गति-शीलता मे बाधक हुई तथा इससे बेकारी की स्थिति अत्यन्त गम्भीर हो गई। किन्तु इगलैड मे पुलिस एव कारागारो की समस्या की तुलना मे निर्धनो की समस्या को एक लाभ था कि प्रत्येक पैरिश मे निर्धनो की सहायता के लिए निर्धनता शुल्क लगाना कानूनी रूप से अनिवार्य था। इसके विपरीत करदाताओ को असाधारण कठिनाई मालूम पडती यदि मजिस्ट्रेट सडको, कारागारो, स्वच्छता एव पुलिस पर व्यय करने के लिए कोई शुल्क लगाने की घोषणा करता।

ग्रामीण इगलैड पर जस्टिसेज़ आफ पीस के पितृसत्तात्मक प्रभुत्व का शासन था। किसी प्रयोजन के लिए एक स्थानीय कर मे वृद्धि करना एव उसके व्यय के ढंग का निर्णय

करना उनके अधिकारक्षेत्र मे था। यद्यपि जस्टिसेज की नियुक्ति नाम से तो राजा करता था किन्तु वास्तविकतया उनकी नियुक्ति लार्ड लेफटीनेट करता था जो शायर के सभ्रान्तजनो की राय से प्रभावित होता था। जस्टिसेज ऑफ पीस नाम से तो राज्याधिकारी थे किन्तु यथार्थ मे स्थानीय प्रादेशिक सत्ता के प्रतिनिधि थे। ट्यूडर और प्रारम्भिक स्टुअर्ट काल के विपरीत प्रिवी कौसिल का उन्हे भय न था और न उनके कार्य राष्ट्रीय सिद्धान्तो से निर्देशित होते थे। एक पहलू से १६८८ की क्रान्ति इन्ही अवैतनिक स्थानीय मजिस्ट्रेटो का केन्द्रीय शासन के विरुद्ध विद्रोह था जिसने (शासन ने) धर्म और राजनीति मे उनकी वफादारी पर अत्यधिक दबाव डाला था। जेम्स द्वितीय की प्रेमान्धता (मूढता) के कारण ससद के विशेषाधिकारो एव अग्रेजो की स्वतत्रताओ पर यहा तक बल दिया गया कि स्थानीय सत्ताधिकारियो पर उन मामलो मे भी, जो राजनैतिक और सामाजिक नही थे केन्द्रीय नियत्रण मे अत्यधिक शिथिलता कर दी गई।

प्रिवी कौसिल ने समस्त बातो मे सम्पूर्ण शक्ति पाने के उद्देश्य से उन शक्तियो को खो दिया जिन्हे यह पूर्वकाल मे साधारण जनता मे भलाई के लिए प्रयोग करती थी। अठारहवी शताब्दी मे यह कहा जाता था कि जस्टिसेज ऑफ पीस का महान् राष्ट्रीय "क्वार्टर सेशन्स ऑफ पार्लियामेट" के माध्यम से केन्द्रीय शासन पर नियत्रण था न कि वे केन्द्रीय शासन के नियत्रण मे थे। उस समय किसी भी स्थानीय सत्ताधिकरण (अधिकरण) को 'व्हाइटहाल' का ध्यान नही रखना होता था।

जस्टिसेज ऑफ पीस की शक्तियो और कार्यों के क्षेत्र मे ग्रामीण जीवन के सभी पक्ष आ जाते थे। वे 'क्वार्टर' अथवा 'पेटी' सेशन्स अथवा एक अकेले मजिस्ट्रेट के निजी घर' मे न्यायाधीशो का कार्य करते थे। उनका उत्तरदायित्व सडको, पुलो, कारागारो एव कार्यशालाओ का रख-रखाव करना था। वे सार्वजनिक गृहो को अनुज्ञप्ति प्रदान करते थे। जब कोई कर लगाना होता था तो वे एक काउण्टी कर लगाते थे। काउण्टी के ये तथा अन्य सैकडो मामले इनके नियत्रण मे थे। इतने पर भी उनके पास इन कार्यो के लिए कोई नियमित कर्मचारी न थे और न ही स्थानीय प्रशासन के सचालन के लिए उनके पास कोई प्रभावशाली नौकरशाही थी। क्योकि इन सब का होना एक बडे काउण्टी कर को अनिवार्य कर देता जिसे देने के लिए लोग अनिच्छुक थे। सर्वसाधारण अकुशल स्थानीय शासन को पसन्द करता था यदि वह केवल सस्ता हो। इस विषय मे आधुनिक अग्रेजी व्यवहार इतना भिन्न है कि यह समझ पाना कठिन है कि कितना बडा परिवर्तन हो गया है।[१]

---

[१] १७८२ और १७९३ के बीच दरिद्र सहायता पर वार्षिक व्यय २० लाख पौड होता था, स्थानीय करो की वसूली से किया गया समस्त खर्चा २० लाख पौंड प्रति वर्ष

शताब्दी के मध्यकालीन वर्षो मे फील्डिग स्मोलेट तथा जीवन के अन्यायो के अन्य पर्यवेक्षको ने जस्टिसेज ऑफ पीस की अनुत्तरदायी शक्ति तथा पक्षपात एव नृशसता के कार्यों मे उसके अक्सर दुरुपयोग पर करारा व्यग किया है। उस समय एक भ्रष्ट जस्टिस ऑफ पीस था जो 'ट्रेडिग जस्टिसेज' (न्यायो का व्यापारी) के नाम से कुख्यात था। ऐसे लोग समाज के निम्नतर वर्ग के सदस्य होते थे जो अपनी स्थिति के प्रभाव से वित्तीय लाभ कमाने के उद्देश्य से अपने को मजिस्ट्रेट नियुक्त करा लिया करते थे। किन्तु सामान्यतौर पर, जो जस्टिसेज ग्रामीण क्षेत्रो मे अधिकाश कार्य करते थे वे सम्पन्न जागीरदार होते थे। वे इतने धनी होते थे कि उन्हे भ्रष्ट अथवा नीच होने की आवश्यकता ही न थी, उन्हे बिना किसी वेतन के कठोर सार्वजनिक कार्य करने मे गर्व का अनुभव होता था। वे अपने पडौसियो के साथ सम्मानपूर्वक रहने के लिए सदैव आतुर (व्यग्र, उत्कठित) रहते थे। किन्तु वे बहुधा अज्ञानी और अन्याय के इरादे से रहित पूर्वाग्रही होते थे और वे कानून को अत्यधिक रूप से अपनी इच्छाओ का यन्त्र बना लेते थे।

अठारहवी शताब्दी के इगलैंड को अधार्मिक मानना सामान्यत एक गलत धारणा है। ईसाई सिद्धान्तो पर आश्रित एक आचार-सहिता का समुदाय के एक बडे भाग के जीवन मे नियमत पालन होता था। ऐसा बाद के मध्ययुग और ट्यूडर के काल मे भी नही था। वास्तव मे, वेसले, कॉवपर, और डा जॉन्सन का युग सभवत उतना ही धार्मिक था जितना कि सत्रहवी शताब्दी का समाज, यद्यपि इसमे ईसाइयो के प्रतिद्वन्द्वी सिद्धान्तो के लिए युद्ध होना बन्द हो गया था। अत यह युग पूर्व की अपेक्षा व्यापकतर मत-वैभिन्य के प्रति कुछ अधिक सहिष्णु कहा जा सकता है।

लॉक की यह दलील कि सहिष्णुता न केवल राजनैतिक दृष्टि से ही आवश्यक नही है अपितु यह निश्चय ही न्यायपूर्ण और सही है, अठारहवी शताब्दी के बीतने के साथ साधारणतया स्वीकृत हो चुकी थी। यह विवादस्पद है कि इस बात से वह बहुनिन्दित युग कम ईसाई-परक नही हो जाता है। एक दीर्घ काल तक मानव अनुभूति मे धर्म एव असहिष्णुता परस्पर सम्बद्ध रहे है। यहा तक कि जब असहिष्णुता शिथिल पड गई तो लोगो ने समझ लिया कि धर्म का ह्रास हो गया है। इस निष्कर्ष की सत्यता को चुनौती दी जा सकती है।

जेम्स द्वितीय और विलियम के शासन कालो मे लिखते हुए स्वय लॉक ने इस बात पर बल दिया था कि नास्तिको अथवा रोमन कैथोलिक धर्मावलम्बियो मे से किसी का सहिष्णुता के लिए समाज पर सम्पूर्ण दावा नही है। इसका कारण है कि जहा प्रथम वर्ग ने नैतिकता पर आक्रमण किया दूसरे वर्ग ने राज्य की शक्ति को कमजोर

से अधिक नही होता था। हेलेवी, **हिस्ट्री आफ इंगलिश पीपुल**, खड २, पृष्ठ २३३ (पेलिकन सस्करण)।

बनाया। किन्तु वास्तव मे दोनो को अधिक उदार एव सहिष्णु दर्शन, जिसको उसके (लॉक के) प्रभाव ने क्रमानुगत युगो पर थोपने मे सहायता की थी, से लाभ हुआ।

लॉक की कृति "रीजनेबलनेस ऑफ क्रिस्चियनिटी" (ईसाई धर्म का औचित्य) (इसका शीर्षक ही नए प्रकार के विचार एव धर्म का सकेत देता है) दो आन्दोलनो का आरभ-बिन्दु था, धार्मिक सहिष्णुतावाद, जो कुछ समय के लिए प्रतिष्ठित चर्च का, न कि मेथॉडिक चर्च का, प्रचलित स्वर हो गया था, तथा अग्रेजी आस्तिकतावादी आन्दोलन, जिसके प्रति समस्त सम्माननीय लोगो मे अविश्वास था।

अठारहवी शताब्दी के प्रथम तीस वर्षो मे आस्तिकतावादियो, जैसे टोलैंड, टिण्डल और कॉलिन्स, को अपने सावधानीपूर्वक व्यक्त विचारो को छापने की अनुमति थी और उसके लिए उन पर मुकदमा नही चलाया जाता था। उनको केवल स्विफ्ट के व्यग से ही प्रत्युतर नही मिला अपितु उनके विरुद्ध ऐसे लोगो ने तर्क दिए थे जो उनसे कही अधिक बुद्धिमान थे। इन लोगो मे बिशप बटलर, बिशप बर्कले, बेन्टले और विलियम ला सम्मिलित थे। वोल्टायर इन अग्रेज आस्तिकतावादियो का अधिक महत्वपूर्ण और साहसी शिष्य था। उसे फ्रास मे ऐसे विरोधियो का सामना नही करना पडा। किन्तु वह सदैव चर्च एव राज्य की ओर से उत्पीडन से भयभीत बना रहा। अशत इसी कारण से यूरोप महाद्वीप मे आस्तिकतावाद इगलैंड की तुलना मे अधिक कट्टर और ईसाई-विरोधी हो गया। वास्तव मे, अठारहवी शताब्दी के विचारो के आधुनिकतम इतिहासकार ने इसके विषय मे लिखा है, 'वह विचित्र अग्रेजी घटना, विज्ञान एव धर्म की पवित्र मैत्री, जो (ह्यूम की उपस्थिति के बावजूद) शताब्दी के अन्त तक कायम रही' (बैसिल विल्ले, **दि एटीन्थ सेन्चुरी बैकग्राउण्ड,** पृ० १३६)। डैविड हार्टले, जिसके नाम पर कॉलरिज ने अपने पुत्र का नामकरण किया था, भी इसे 'पवित्र मैत्री' कहता था। पोप की इस सूक्ति के शब्दो पर ध्यान दीजिए—

'प्रकृति एव प्राकृतिक नियम रात्रि के अधकार मे छिपे पडे थे, ईश्वर ने कहा, न्यूटन जन्मे। और अब सब कुछ प्रकाशमान था।'

विज्ञान एव धर्म के सामजस्य (मेल) के श्रेष्ठ प्रतीक के रूप मे १७५५ मे कैम्ब्रिज स्थित ट्रिनिटी कालेज के पार्श्व गिरजे मे रौबिलॉक द्वारा निर्मित न्यूटन की प्रतिमा की स्थापना की गई थी।

यह सत्य है कि जार्ज तृतीय के शासनकाल के प्रारभिक वर्षों मे ह्यूम एव गिबन की बौद्धिक महत्ता के ब्रिटेनवासी थे जो घोर सशयवादी (अनीश्वरवादी नास्तिक) थे। फिर भी गिबन ने भी व्यग की शिष्ट अस्पष्टता मे अपने यथार्थ विचारो को प्रच्छन्न रखना ठीक समझा। जैसाकि बॉसवेल की पुस्तक 'जॉन्सन' का प्रत्येक शिक्षक परिचित है इन महान् सशयवादियो और उनके कम महत्वपूर्ण अनुयाइयो की समाज मे निन्दा होती थी। कट्टरपथी (धर्मनिष्ठ) लेखको ने इन लोगो पर अनेक आक्रमण किए किन्तु गुण मे वे ऊँचे नही थे। (धर्मनिष्ठ लेखको ने इन लोगो पर अत्यधिक आक्रमण

किए किन्तु वे निम्नस्तर के थे ।) १७७६ मे एक ऐसी निधि, जिसका स्मरण आज भी इस अवधि के सम्बन्ध मे किया जाता है, जो अनास्था एव सिद्धान्तहीनता सर्वाधिक मार्के की थी, ह्यू्म ने गिबन को उसके रोमन इतिहास के प्रथम भाग के स्वागत के विपय मे लिखा था "इगलैंड मे मिथ्या विश्वास का व्याप्त होना दर्शनशास्त्र के पतन एव सुरुचि के ह्रास के लिए भविष्यवाणी करता है ।" ह्यू्म अत्यन्त निराशावादी था किन्तु उसका उपरोक्त कथन उसकी यथार्थ अनुभूति से निसृत था ।

किसी भी तरह अग्रेजो को अठारहवी शताब्दी का विद्वतापूर्ण सशयवाद केवल उच्च शिक्षा प्राप्त श्रोतागणो (जनता) के लिए व्यक्त किया जाता था, उसका आशावादी-दर्शन जीवन की उच्चवर्गीय दशाओ का परिणाम था । जब फ्रासीसी क्रान्ति की अवधि मे टॉम पेन ने जनतत्र के एक उचित धर्म (विश्वास) के रूप मे आस्तिकतावाद की ओर से जनसाधारण से अपील की तब एक नया युग आ चुका था । (दुष्तोष्य तुनक मिजाज) एव रूढिवादी गिबन के जीवन काल मे, यह कहा जाता है कि बालो के पाउडर की भाति अनास्था को केवल कुलीन लोग धारण कर सकते थे । राष्ट्र का जनसाधारण सक्रिय एव निष्क्रिय (निश्चेष्ट, अकर्मण्य, उदासीन) रूप से ईसाई धर्म का अनुयायी था । जिस धर्म की उन्हे शिक्षा दी जाती थी उसे वे स्वीकार करते थे । वास्तव मे समाज के निम्नतम वर्ग को किसी चीज की शिक्षा नही दी गई थी किन्तु इन्हे भी धर्मार्थ विद्यालय एव वेस्लेवादी प्रचारक अज्ञानता से निकालकर समझदार ईसाइयो के स्तर तक लाने का प्रयत्न कर रहे थे ।

अग्रेजो की अठारहवी शताब्दी का धर्म, प्रतिष्ठित गिरजा और विमतिवादी सगठन दो सम्प्रदायो (मतान्तरो) मे विभक्त था जिसे सक्षेप मे हम सहिष्णुतावादी एव मेथोडिस्ट (ईसाइयो का कट्टर धार्मिक सम्प्रदाय) कह सकते है । यदि हम इनमे से किसी एक का भी वर्णन न करे तो उस युग के सामाजिक दृश्य का सही चित्रण नही हो सकता । इन पूरक व्यवस्थाओ मे से प्रत्येक के अपने कार्य थे, प्रत्येक के गुणो मे दोष भी थे, जिन्हे दूसरा पूरा करता था । सहिष्णुतावादी सहिष्णुता की भावना के समर्थक थे, जिसके अभाव मे ईसाई धर्म ने गत कई शताब्दियो मे उस ससार मे भयकर विनाश किए थे जिसकी रक्षा का इसने बीडा उठाया था । धार्मिक सिद्धान्तो के निर्वचन (व्याख्या) मे औचित्य के भी समर्थक सहिष्णुतावादी थे जिसके बिना उन्हे अधिक वैज्ञानिक आधुनिक मानस शायद ही स्वीकार करता । दूसरी ओर मेथॉडिज्म (कट्टर धार्मिकता) ने आत्म-सयम (आत्मानुशासन) एव सक्रिय उत्साह का पुनर्नवीकरण किया जिनके अभाव मे धर्म की शक्ति नष्ट हो जाती है और उसका प्रयोजन (उद्देश्य) विस्मृत हो जाता है । और इस नये ईसाई धर्म प्रचार का एक सक्रिय परोपकारिता से सयोग था । इस युग के दोनो सम्प्रदायो, सहिष्णुतावादी एव धार्मिक कट्टरतावादी, मे समय के परिवर्तन के साथ परिवर्तन आ गए थे । किन्तु उन्होने क्रमश जिन सिद्धान्तो का

उद्धार एव सगठन (साकार रूप) किया उन्होंने नए रूपो एव मलो (मिश्रणो) मे प्रगति की है। इसी कारण से अनेक परिवर्तनीय पीढियो मे अग्रेजी जीवन मे एक प्रबल शक्ति के रूप मे धर्म सुरक्षित बना रहा है।

क्रान्ति के पश्चात् मे ही राजनैतिक परिस्थितिया सहिष्णुतावादियो के अनुकूल रही है। तथा जार्ज प्रथम के सिहासनारूढ होने के उपरान्त व्हिग राजनयिको, जिनके पास गिरजे (धर्म) के उच्चतर सरक्षकत्व की कुँजी थी, मे हेनोवेरियन राजवश की रक्षा करने की कर्तव्यभावना थी। इसे वे गिबन एव वेक की भाति विद्वान राजनयिको और सदेहपूर्ण होडले को भी प्रोत्साहित एव उस उत्साह को निरुत्साहित कर करना चाहते थे जिसका अर्थ वालपोल के समय मे उच्च धर्म और ऐटरवरी तथा एक वेरेल की जैकोवी धर्मान्धता से था। जैसे जैसे शताब्दी का अन्त निकट आता गया वेस्ले के उत्साह सहित सभी प्रकार का उत्साह प्रतिष्ठित धर्म के पादरियो एव उच्च वर्गो द्वारा बुरा माना जाता था।

जार्ज तृतीय के सिहासनारूढ होने के समय तक धर्म (गिरजा) एव हैनौवर के राजघराने के बीच पूर्ण समायोजन हो गया था और सहिष्णुतावाद के लिए राजनैतिक प्रेरक शक्ति निष्क्रिय हो चुकी थी। किन्तु अपनी आन्तरिक शक्ति और राजनैतिक शक्तियो से भी अधिक गहरी शक्तियो से चालित होकर आन्दोलन चलता रहा। मृत होते हुए भी लॉक और न्यूटन का प्रभाव सर्वोपरि था।* युग की उत्तरोतर बढती हुई वैज्ञानिक भावना ने इस बात को आवश्यक बना दिया था कि ईसाई धर्म का औचित्य सिद्ध किया जाय और उस पर बल दिया जाय। चमत्कारपूर्ण कार्य कम वास्तविक प्रतीत होते थे कुछ लोगो के लिए ये अविश्वसनीय थे। ब्रह्माण्ड मे अपरिवर्तनीय नियम, जैसे कि गुरुत्वाकर्षण का नियम, जो नक्षत्रो को पथभ्रष्ट होने से रोकता था, को अब ईश्वर की गरिमा का एक लक्षण माना जाता था।

एडिसन का एक भजन १७१२ मे स्पेक्टैटर नामक पत्रिका मे प्रकाशित हुआ था जो उस शताब्दी को प्रतिध्वनित करती रही जब तक युवा कॉलरिज एव वर्ड्स्वर्थ ने उस आश्चर्यजनक कहानी को नही कहा।[1] उस भजन का रूपान्तर निम्नलिखित ढग से किया जा सकता है—

ऊँचे विस्तीर्ण अन्तरिक्ष मे,
सम्पूर्ण नीले तरल आकाश के साथ,

---

[1] तुलना के लिये देखिये, कॉलरिज कृत **हिम बिफोर सनराइज, इन दि वेल ऑफ चमूनी।** लाक से वर्ड्सवर्थ के सबध आदि के लिए देखिए श्री बासिलविली की कृति **सेवेन्टीन्थ सेन्चुरी बैकग्राउ ड,** अध्याय १२, और उसी लेखक की समान रूप से महत्वपूर्ण अन्य कृति, **दि एटीन्थ सेन्चुरी बैकग्राउ ड।**

और चमकते हुए ग्रह, एक चमकता हुआ ढाचा
उनकी महान् मौलिक घोषणाए करता है ।
प्रतिदिन अश्रान्त, निरन्तर प्रदीप्त सूर्य,
अपने सृष्टिकर्त्ता की शक्तियो को दर्शाता है,
और प्रत्येक देश को सूचित करता है,
एक सर्वशक्तिमान सत्ता के कार्य ।

इस प्रकार के धर्म के लिए एकतावादी अथवा आस्तिकतावादी धर्म मे बदल जाना सरल था । वास्तव मे अग्रेजी प्रेसबिटेरियन सगठन मुख्यतया एकतावादी हो गया था जिसका अग्रगी दार्शनिक एव वैज्ञानिक प्रीस्टले था । पूर्व की शताब्दियो मे धर्म प्रथमत एव अन्तत एक रूढ सिद्धान्त (हठधर्मिता) था । अब एक नैतिकता के रूप मे इसका प्रचार करना फैशन हो गया था और उसके साथ विनम्रता से थोडा सारूढ सिद्धान्त भी जुडा रहता था । प्रतिष्ठित चर्च के धर्म का वर्णन कैनन चार्ल्स स्माइथ ने निम्नलिखित रूप मे किया है—

"अठारहवी शताब्दी के इगलैड मे आर्कबिशप टिल्लोट्सन (१६३०-१६९४) का प्रभाव सबसे प्रबल था । उसकी विरासत अशत अच्छी और अशत बुरी थी । बाद के मध्ययुग मे श्रमणो के बडे गिरजो की भाति उस युग मे हमारे गिरजे भी प्रवचनो के लिए उपयुक्त माने जाते थे । उस समय अग्रेजी धार्मिक सभाओ के लिए टिल्लोट्सन ने जिस भाषा का प्रचार किया वह सरल, व्यावहारिक एव स्पष्ट गद्य था । उसकी शैली की सफलता ने मध्ययुगीन धर्म की विस्तृत परम्परागत धार्मिक सभाओ मे वक्तृत्वशैली से निश्चय ही अपने को पृथक कर लिया था । लैटिमर, एण्ड्रयूज, डोन एव टायलर सभी अपने अपने विभिन्न ढग से निस्सदेह मध्ययुगीन थे । यह समझ लेना सभव है कि टिल्लोट्सन ने किस प्रकार ऐग्लिकन धर्म-प्रचार कला को पाडित्य और आडम्बर के दलदल मे गिरने से बचाया । दूसरी ओर, उसके धार्मिक प्रवचनो मे सासारिक नैतिकता के सिवा कुछ नही होता था जो ईश्वर से प्राप्त ज्ञान की अपेक्षा तर्क पर आधारित होती थी । इन प्रवचनो का शिष्ट सामान्य बुद्धि वाले लोगो पर निश्चयात्मक प्रभाव पडता था । नैतिक शुद्धाचरण की दिव्य वार्त्ता ने अग्रेजी चरित्र (स्वभाव) की जो सेवा की उसकी उपेक्षा केवल धर्मान्धता कर सकती है । आज जिस किसी स्थिति मे एक अग्रेज कार्य करता है उसमे कर्त्तव्य भावना समायी रहती है । यह सब टिल्लोट्सन के कार्यों का प्रभाव है । (बेरिंग गूल्ड) फिर भी यह ईसाई दिव्यवार्ता की तुलना मे कही अधिक कम है । यद्यपि आज भी हमारे वास्तविक राष्ट्रीय धर्म के रूप मे साधारण अग्रेज स्त्री-पुरुषो की चेतनाओ मे इसकी स्थिति (प्रभाव) दृढ है चाहे फिर इगलैड के धर्म (चर्च) के प्रवचन स्थलो मे इसका प्रभाव नगण्य हो ।" (**दि प्रीस्ट ऐज स्टुडेण्ट,** एस. पी सी के, १९३९, पृष्ठ २९३-९४) ।

जार्ज तृतीय के शासन के प्रारभिक वर्षो मे पादरी की सामाजिक और सास्कृतिक स्थिति मे उन्नति हो रही थी। इस समय उसे भद्रजनो के समान प्रतिष्ठा मिलने लगी थी जैसा कि इसके पूर्व कभी नही हुआ था। किन्तु इस स्थिति मे अधिकाश पैरिश-वासियो से उसका सम्पर्क समाप्त हो गया था। वह अपने उपदेशो को सावधानीपूर्वक लिखता था तथा उन्हे प्रवचन मच मे साहित्यिक निबन्धो की भाति पढा जाता था जिसका उद्देश्य उत्कृष्ट युवा लोगो की सुरुचि को सतुष्ट करना होता था। ये युवा लोग ऊघते हुए भूस्वामियो के आसपास ऊँचे घेरे मे बैठते थे। किन्तु उपरोक्त प्रवचनो का गिरजे की श्रोतामण्डली मे सम्मिलित धैर्यवान् ग्रामीणो पर बिल्कुल प्रभाव नही पडता था क्योकि वे प्रवचन अत्यधिक सूक्ष्म (अमूर्त) एव अवैयक्तिक होते थे। नये औद्योगिक एव खनिज प्रधान जिलो के उपेक्षित नागरिक प्रतिष्ठित धर्म के उपदेशो से बच जाते थे। इन जिलो की पुरातन भौगोलिक दशाओ मे नये पैरिशो की स्थापना से भी शायद ही कोई आद्यतन अन्तर आया हो। इस क्षेत्र मे धर्म प्रचार का कार्य वेस्ले के लिए छोड दिया गया था।

यह अस्वाभाविक था कि एक कुलीनतत्रात्मक, असुधारवादी, व्यक्तिवादी, शास्त्रीय युग मे वही धर्म सम्प्रदाय (चर्च) प्रचलित हो जिसमे कि देश की अन्य वैधानिक सस्थाओ की भाति ही दोष-गुण हो। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी समझदारी, फिर चाहे वह कितनी ही सनकपूर्ण हो, के अनुसार कार्य करने (आचरण करने) की पूर्ण स्वतत्रता थी। उसके मस्तिष्क मे लारेन्स स्टर्न की भाति कितनी ही उलझने हो सकती थी। वह कौपर के खतरनाक मित्र, जॉन न्यूटन, की भाति कुसस्कृत होने के कारण कट्टरधर्मी (मेथाडिस्ट) हो जाता अथवा एवर्टन के बेरिज की भाति होता जिसने अपने तथा अन्य लोगो की पैरिशो के लोगो को धर्म परिवर्तन की शारीरिक यातनाओ मे ढकेल दिया था। बहुधा पादरी 'आदर्श प्रकार का अग्रेज' दयालु, समझदार और थोडा पवित्र विचारो वाला व्यक्ति होता था। यह चर्च (धर्म) विद्वता, सस्कृति एव स्वतत्रता के लिए विख्यात था। किन्तु पादरियो को अपनी इच्छानुसार प्रयास करने से अधिक के लिए न तो उन पर जनमत का और न धार्मिक अधिकारियो का कोई दबाव पडता था।[1]

---

[1] इगलैड के अठारहवी शताब्दी के गिरजा (धर्म), और उसके एक अनिवार्य भाग—देहाती जीवन, को समझने के लिए जेम्स वुडफोर्ड की डायरिया पढिए जिसमे जान बेरेस्फोर्ड की भूमिका दी हुई है। पादरी वुडफोर्ड कृषि से सम्बन्धित जीवन के सम्पर्क मे इसलिए था कि उसे फसल का १०वा भाग मिलता था और उसके पास अपना भी एक छोटा सा फार्म था। उसने अपनी डायरी मे लिखा है '१४ सितम्बर, १७७६, मैं अपने जौ के खेत मे दिन भर व्यस्त रहा, अपराह्न मे ५ बजे तक भोजन नही किया, मेरे खेत काटने वालो ने भी यही भोजन किया, उनको मैंने

आजीविका को, ससद के एक पद (सदस्यता) अथवा कालेज की फैलोशिप के समान ही माना जाता था। ऐसा समझा जाता था कि वह कृपा के रूप मे प्राप्त और विशेषाधिकार के रूप मे उपभोग्य है। इस ढग के विचार का एक मनोरजक उदाहरण निम्नलिखित समाधिलेख (एपीटैफ) मे मिलता है जो निकॉल्स रचित **लिटरेरी एनेकडोट्स** (३, पृष्ठ ५२) मे सम्मिलित है।

"श्रीमती एलिजाबेथ बेट का अनित्य शरीर यहा स्थित है। वे श्रद्धेय रिचार्ड बेट की विधवा थी। यह महिला महज पवित्रता से ओतप्रोत थी और उसमे असाधारण गुण विद्यमान थे। वे सम्मानित परिवार की उत्तराधिकारिणी थी। स्टैनहोप के विख्यात परिवार मे अपनी मित्रता के कारण वे अपने पति और सन्तान के लिए राज्य और गिरजा से सम्बन्धित अनेक पद (नौकरिया) पाने मे सफल हुई। उनकी मृत्यु ७ जून, १७५१ मे ७५ वर्ष की अवस्था मे हुई।"

यह उस युग की विशेषता थी कि गिबन ने अपने आत्मचरित्र मे आकस्मिक रूप से खेद प्रकट किया है कि "उसने कानून अथवा व्यापार से सम्बन्धित अच्छी आमदनी वाले पेशे अथवा सरकारी पदो अथवा भारतीय साहसिक यात्रा के अवसर अथवा गिरजे (धर्म) की गहरी नीदे नही अपनायी।" आर्कडीकॉन गिबन द्वारा लिखित धर्म सम्बन्धी इतिहास उतना ही विद्वतापूर्ण एव बड़े आकार का होता किन्तु विवशत उससे अधिक शिष्टतापूर्ण एव सूक्ष्म रूप से व्यग्यपूर्ण होता जितना कि एडवर्ड गिबन की वास्तविक उत्तम रचना होती।

इस समय भी धनी एव निर्धन पादरियो के बीच सामाजिक खाई उतनी ही चौडी थी जितनी कि वह मध्ययुगीन काल मे थी। किन्तु इस समय सम्पन्न लोगो का अनुपात अधिक बडा था क्योकि अब उनमे मुख्य पादरियो और बहुत्ववादियो के अतिरिक्त अच्छे परिवारो और सम्पर्को वाले आवासी पैरिश पादरियो को भी सम्मिलित किया जाता था जो पादरी होकर रहते थे और उसके कर्त्तव्यो को निभाते थे। कृषि मे उन्नति के साथ-साथ गिरजा से सम्बद्ध और उसे अपनी उपज का दसवा भाग देने वाले फार्मो के मूल्य मे वृद्धि से इस विकास को सहायता मिली। रानी ऐन्नी के शासन मे १०००० आजीविकाओ मे से ५५९७ मे वार्षिक आय ५० पौड से कम थी। इसके एक सौ वर्ष पश्चात् केवल ४००० की आय १५० पौड से कम थी। सम्पूर्ण अठारहवी

कुछ गोमास दिया और कुछ खीर तथा उनको इच्छा भर उनको शराब पिलाई। आज शाम को मेरे खेतो की कटाई समाप्त हुई और सारी फसल को (८ एकड की) खलिहान मे लाकर डाला। १३ दिसम्बर, आज मेरे लोगो ने मुझे अपनी फसल का १०वा भाग देकर प्रसन्न कर दिया है। मैने उन्हे बहुत अच्छा शाम का भोजन कराया, जिसमे खीर और विभिन्न प्रकार के गोमास के व्यजन शामिल थे।

शताब्दी भर ग्रामीण सभ्रान्त लाग भट मे मिलने वाली ग्राजीविकाग्रो को अपने पुत्रो के स्वीकार करने योग्य मानने लग थे। जैसा कि उसके पाठक जानते है जेन ग्रास्टेन के काल तक सुस्थापित ग्रादर्श प्रबन्ध एक अच्छे रेक्टर का पद था जो जागीरदार के भवन से लगभग एक मील की दूरी पर मनोरम स्थान पर निर्मित मोडदार खिडकी वाला भवन था जिसमे जागीरदार का बेटा अथवा दामाद रहता था। इस प्रकार से पारिवारिक समूह को एक साथ रखा जाता था ग्रोर ग्राम की धार्मिक ग्रावश्यकताग्रो की पूर्ति एक सभ्रान्त जन द्वारा की जाती थी जो शिक्षित ग्रौर सुसस्कृत होता था किन्तु बहुत उत्साही नही। क्योकि केवल १९वी शताब्दी के प्रारम्भ के पश्चात् ऐसा हुग्रा कि सभ्रान्तजन पादरी के गम्भीर अथवा धार्मिक होने की सम्भावना प्रकट हुई थी।

किन्तु इगलैड की ग्राधी ग्राजीविकाए ऐसी नही थी जो एक ग्रामीण भूपति के पुत्र को ग्रार्थिक ग्राश्रय दे। अभी भी निर्धन पादरियो का एक बडा वर्ग था, यद्यपि, सख्या मे वह चासर के काल एव चार्ल्स द्वितीय के काल की तुलना मे कम था। चार्ल्स द्वितीय के समय मे ईखार्ड ने "पादरियो के अपमान के अवसर एव ग्राधार" (Grounds and occasions of the contempt of the clergy) नामक पुस्तक लिखी थी जिसमे पादरियो की निर्धनता तथा नीचे कुलो मे जन्म लेना प्रधान ग्राधार बताए गए थे। किन्तु जार्ज तृतीय के शासनकाल मे भी हजारो निर्धन तथा हेय दृष्टि से देखे जाने वाले काले कोटधारी (पादरी) थे, जिनकी वार्षिक ग्राजीविका का मूल्य ५० से १०० पौड के बीच होता था। अथवा उन्हे अनुपस्थित बहुत्ववादियो के सहायक पादरियो के रूप मे पचास पौड का वेतन स्वीकार करना पडता था। बहुत्ववाद सदा कुप्रबन्ध नही कहा जा सकता था क्योकि बहुधा जो सर्वोत्तम व्यवस्था सम्भव हो सकती थी वह यह थी कि एक पादरी दो पडौसी पैरिशो मे काम कर सके। इनमे से कोई भी एक पैरिश एक पादरी का भार अकेले उठाने मे असमर्थ थी।

लगभग बिना किसी अपवाद के बिशप या तो कुलीन लोगो के सम्बन्धी अथवा कुलीनो के भूतपूर्व पुजारी अथवा उनके पुत्रो के शिक्षक होते थे। उनमे से कुछ, जैसे जोजफ बटलर, बर्कले एव बारबर्टन, महान दार्शनिक एव विद्वान थे। किन्तु चर्च की सेवाग्रो के उपलक्ष मे किसी को भी बिशप के पद पर नियुक्त नही किया गया था प्रत्युत् यह सम्मान उन्हे विद्वता, साधारण सरक्षको एव राजनैतिक दलो के प्रति की गई सेवाग्रो के उपलक्ष मे मिलता था। अनेक अच्छी वस्तुग्रो की भाति चर्च के पदो पर उन्नति ह्विग एव टोरी दलो के सरक्षकत्व के जाल मे फसा दी गई थी। इस सरक्षकत्व ने अतीत के राजकीय (शाही) सरक्षकत्व का स्थान ले लिया था। मध्ययुगो मे बिशप राजा के नागरिक अधिकारी होते थे। अब उनके धर्मनिरपेक्ष कर्तव्यो मे

यहा तक कमी हो गई थी कि वे केवल समद के सत्रो मे नियमित रूप से उपस्थित रहते थे, वे ऐसे मत्री के पक्ष मे मतदान किया करते थे जिसने उनकी नियुक्ति की थी। और जो अब भी उनकी पदोन्नति कर सकता था। बिशप के कुछ पद ऐसे थे जो अन्यो की तुलना मे दसगुने वार्षिक मूल्य के थे।

किन्तु अठारहवी शताब्दी के मुख्य पुजारी (पादरी) के पास अपने ससदीय कर्त्तव्यो को निभाने के पश्चात् धार्मिक कार्यों मे व्यय करने के लिए अधिक अवकाश रहता था। इसकी तुलना मे मध्ययुगीन बिशपो, जो राजा के पूर्णकालिक सेवक होते थे, को धार्मिक कृत्यो के लिए अपेक्षतया कम समय मिलता था। हैनोवर काल के केवल कुछ बिशप, सब नही, अपने अधिकारक्षेत्र मे, विशेषकर लम्बी एव खराब सडको पर यात्रा करते हुए, आस्थापूर्ण धर्मानुयाइयो को धार्मिक सघ मे सम्मिलित करने मे कठोर परिश्रम करते थे। १७६८ से लेकर १७७१ तक यार्क के आर्कबिशप ने धर्म सघ मे प्रवेश के लिए ४१,६०० अभ्यर्थियो से सम्पर्क किया। और एक्सेटर के बिशप ने १७६४-१७६५ मे अकेले कार्नवाल एव डेवॉन मे ४१,६४२ लोगो को धर्म सघ मे प्रविष्ट किया। इन आकडो को देखते हुए यह कहना असम्भव है कि बिशप अपने धार्मिक कर्त्तव्यो की पूर्णतया उपेक्षा करते थे अथवा जनसाधारण का धार्मिक उत्साह पूर्णतया वेस्लेयान मिशन मे बदल गया था। इस बात का बहुत साक्ष्य है कि कम से कम बहुत से जिलो मे धार्मिक (गिरजा) जीवन सशक्त और सजीव था। इतने पर भी अन्य कई स्थानो पर बहुत शिथिलता एव उपेक्षा थी। किसी रूप मे, जिन कुलीनतत्रीय पादरियो का हमने वर्णन किया वे बहुधा सहिष्णुतावादी गुणो, न कि कट्टरधर्मवादी गुणो, के उदाहरण थे।

जिस जीवन ढग को कट्टरधर्मिता कहा जाता था वह अपने नाम और वेल्से बन्धुओ के प्रचार (आन्दोलन) से भी अधिक प्राचीन था। बाल्यावस्था मे उनका पालन-पोषण उच्च चर्च से सम्बन्धित अपने पिता की रेक्टरी के वातावरण मे हुआ था। यह एक ऐसा जीवन ढग था जो केवल धर्माचारण मे ही रत नही रहता था प्रत्युत् आत्मानुशासन एव परोपकार मे भी रत रहता था। साधारण एव जूरी से असम्बन्धित राबर्ट नेल्सन मे यह परिपूर्णता की स्थिति मे देखा जा सकता था। इससे उन चर्च-अधिकारियो एव विमतिवादियो को प्रेरणा मिली जिन्होने विलियम और ऐन्नी के शासनकालो मे सोसाइटी फॉर प्रोमोटिग क्रिस्चियन कॉलेज एण्ड चैरिटी स्कूल्स (ईसाई ज्ञान एव धर्मार्थ विद्यालयो के प्रोत्साहन हेतु समाज) की स्थापना मे सहयोग दिया। इसकी और अधिक उन्नति सुन्दर लेडी एलिजाबेथ हैस्टिग्ज (१६८२-१७३९) के सयमी और परोपकारी जीवन मे हुई। यह महिला स्टीले के इस सक्षिप्त कथन से अमर हो गई "उसे प्रेम करना एक उदार शिक्षा थी।" उसने अपनी विशाल सम्पदा धर्मार्थ (परोपकार्थ) कार्यों पर, विशेषकर निर्धन छात्रो की स्कूली और विश्वविद्यालयीन

शिक्षा की सुविचारित योजनाओ पर व्यय की। किसी न किसी रूप मे कट्टर धर्मवाद (मेथॉडिज्म) ने इस शताब्दी के बहुत से परोपकारी कार्य को प्रेरित किया जिसकी समाप्ति विल्बरफोर्स के साथ हुई।

धार्मिक जीवन का यह ढग (रीति) व्यापारी एव व्यावसायिक वर्गों मे तीव्रता से फैल गया फिर चाहे वे चर्चवादी थे अथवा विमतिवादी। इसका स्वभाव बिल्कुल शुद्धिवादी एव मध्यवर्गीय था। पादरियो की तुलना मे जनसाधारण मे यह अधिक शक्तिशाली था। इसके अनुयायी (भक्त) जीवन व्यापार से विरत न होकर ईश्वर का भजन करने का प्रयास करने थे। अठारहवी शताब्दी के शुद्धिवादी पर चरित्र की, न कि सिद्धान्त की, छाप थी। वह मनुष्य की सेवा के प्रति अरोध्य रूप से आकृष्ट होता था जो अपने कष्टो अथवा अज्ञानता अथवा लम्पटता के कारण ईश्वर को उसकी गरिमा से विरत करता था। ऐसी प्रकृति के लोगो के लिए परोपकार अनिवार्य था।[1] इस जीवन – ढग का गढ मध्यवर्गीय घर था जहा परिवार पूजा होती थी और जहा से यह अन्य आत्माओ का धर्म परिवर्तन करने, मस्तिष्को को शिक्षित करने एव उपेक्षित गरीबो के शरीर की देख-रेख करने बाहर जाता था।

'मेथॉडिज्म' की सबसे बडी और अत्यन्त उचित रूप से विख्यात व्यजना वेस्ले बन्धुओ एव व्हाइटफील्ड का पुनरुत्थान सबधी धर्म प्रचार था जो अभी तक गिरजा एव राज्य द्वारा उपेक्षित मनुष्यो के एक विशाल समूह को गहनता से प्रभावित करता था। और सौभाग्य से जॉन वेस्ले की प्रतिभा केवल पुनरुन्नयन सम्बन्धी धर्म प्रचार मे उसकी शक्ति मे निहित नही थी वरन् एक सगठक के रूप मे उसके गुणो मे भी। अपने धर्म-परिवर्तको को स्थायी धर्म-सभाओ मे सगठित कर उसने श्रमिक वर्ग के धार्मिक, सामाजिक एव शैक्षणिक इतिहास मे एक नया अध्याय प्रारभ किया। वेस्ले बन्धुओ और औद्योगिक क्रान्ति के समयो के एक ही साथ पडने का इगलैड की कई आगामी पीढियो पर व्यापक प्रभाव पडा।

उस समय के इगलैड के प्रोटेस्टैण्ट वातावरण का तार्किक परिणाम 'धर्म का निरन्तर जनसाधारणीकरण' था। धार्मिक सगठन और उससे सम्बन्धित परमार्थ कार्य (लोकोपकारी कार्य) मे जनता द्वारा व्यक्तिगत एव सामूहिक रूप से सक्रिय भाग लेना रानी ऐन्नी के शासन मे राबर्ट नेल्सन के काल मे एक स्पष्ट तथ्य था जो सौ वर्ष पश्चात् वेस्ले बन्धुओ द्वारा प्रेरित धर्म-सभाओ मे और भी अधिक स्पष्ट हो गया। आधुनिक अग्रेजी धर्म को अठारहवी शताब्दी की एक अन्य महत्वपूर्ण देन भजनो की पुस्तक

---

[1] कुमारी जोन्स, **दि चैरिटी स्कूल मूवमेट** (कैम्ब्रिज प्रेस, १९३८) पृष्ठ ६-७ और आगे। यह प्रसिद्ध पुस्तक और **जान्सस इगलैड** (आक्सफोर्ड प्रेस, १९३३) मे प्रोफेसर नार्मनसाइक का एक अध्याय और १९३१-३३ मे लिखे गये उसके **बर्कबेक लेकचर्स** और **लाइफ ऑफ गिब्सन** १८वी शताब्दी के धर्म पर नया प्रकाश डालते हैं।

(Hymn Book) थी। इजाक वाट्स (१६७४-१७४८), जॉन वेस्ले के भाई चार्ल्स और अन्य कई कम विख्यात लोगो ने भजनो के एक सग्रह का आविर्भाव किया जिन्होने चर्च और चैपल मे समान रूप से उन गीतो का शनै शनै स्थान ले लिया जो उन धर्म-सभाओ मे लोकप्रिय थे जो ईश्वर के सामने उन्हे (गीतो को) आनन्द-विभोर होकर उच्च स्वर से गाते थे।

ईश्वर और मनुष्य के प्रति जीवन के समर्पण के अन्य ढगो मे क्वेकरो का शान्त (मौन) कार्य भी था। उन्होने लोकप्रिय पुनरुत्थान के कार्य को वेस्ले के लिए छोड दिया जिसमे अपने सस्थापक के काल मे स्वय उन्होने बडी तन्मयता से परिश्रम किया था। अब वे बुर्जुआ सम्मान को स्थिर रूप से प्राप्त कर चुके थे। इस स्थिति मे उन्होने प्रेम की भावना, जो अपने शुद्ध प्रभाव से फ्रेण्ड्स के अनन्य एव लोकोपकारी समाज मे परिव्याप्त थी, को पुन प्राप्त कर लिया था। जार्ज द्वितीय के शासनकाल मे पहले से ही वे ईमानदारी से व्यापार करके समृद्ध होने की अपनी सहजप्रवृत्ति के लिए विख्यात थे। कवि मैथ्यू ग्रीन, जो १७३७ मे मरा था, ने क्वेकरो और उनके उदारतावादी सिद्धान्तो के विषय मे इस प्रकार लिखा है—

'वे भूमि और सुरक्षित बैक सम्पत्ति के स्वामी थे, उनमे अडिग विश्वास भरा था, वे एक अच्छे आविष्कार के प्रसारक थे और पवित्र साहित्य का स्वेच्छा से अर्थ करते थे।'

सासरिक दृष्टि से बुद्धिमान लोगो के लिए अब फ्रेण्ड्स की उपस्थिति अपमानजनक न थी, वे एक स्वीकृत राष्ट्रीय सस्था हो गए थे।

अठारहवी शताब्दी की मानवतावादी-भावना, जिसमे अभागे एव निर्धन लोगो के शरीर और मस्तिष्क की रक्षा की जाती थी, ने अधिक अच्छी वस्तुओ की ओर यथार्थ प्रगति की थी। किन्तु फिर भी इसमे दोष थे। अस्पतालो की स्थापना, चिकित्सा सेवा मे सुधार एव शिशु कल्याण स्पष्टतया उन्नतिशील कहे जा सकते थे। किन्तु जो शैक्षणिक कार्य किया वह मूल्यवान होते हुए भी आलोचना योग्य है। धर्मार्थ विद्यालय वास्तव मे श्रमिक वर्ग के बडे भाग को किसी प्रकार की शिक्षा देने का प्रथम क्रमवद्ध प्रयत्न थे। इनके पूर्व केवल चुने हुए चतुर लडको को प्राचीन 'ग्रामर स्कूल' अपने वर्ग से ऊपर उठने का अवसर प्रदान करते थे। धर्मार्थ विद्यालयो का अनुसरण 'सण्डे स्कूल' आन्दोलन ने किया जो १७८० के पश्चात् इतने व्यापक आकार का हो गया था। नये धर्मार्थ विद्यालयो और रविवासरीय विद्यालयो मे सभी के लिए कुछ न कुछ करने का गुण था। किन्तु उनमे दोष यह था कि उन्हे युवा विद्यार्थियो को अपने निर्धारित क्षेत्रो मे बनाये रखने एव एक विनम्र पीढी को प्रशिक्षित करने की अत्यधिक चिन्ता थी। हमारे काल मे आधुनिक शिक्षा एक विरोधी दिशा मे बहुत आगे बढ गई है और इसने अवाछित बौद्धिक सर्वहारा को जन्म दिया है। किन्तु अठारहवी शताब्दी का दोष, जो उन्नीसवी शताब्दी के प्रारभिक वर्षों मे भी बना रहा था, यह था कि वर्गों के

भेद और 'निम्नतर व्यवस्थाओ (स्तरो) मे उचित अधीनता' पर अत्यधिक जोर दिया जाता था ।

धर्मार्थ विद्यालयो के इतिहासकार ने बडे अच्छे ढग से लिखा है—"अठारहवी शताब्दी की यह विशेषता थी कि इसमे ऐसे बालको के लिए दया और दायित्व की एक वास्तविक भावना थी जिनके शारीरिक एव आध्यात्मिक स्वार्थो की दु खदायी उपेक्षा की गई थी । साथ ही उसमे डिफो के शब्दो मे अधीनता के महान् नियम', का प्रयोग कर इन लोगो मे सुधार करने का सकल्प भी था । सत्रहवी शताब्दी की राजनैतिक और धार्मिक अशान्ति ने निर्धनो मे सामाजिक अनुशासन स्थापित करने की उच्च एव मध्य वर्गों की इच्छा मे बहुत योगदान किया । तात्कालिक समाज के मत मे ये निर्धन लोग विद्रोह एव अनास्था के विष से विचित्र रूप से सुप्रभाव्य थे । परन्तु परोपकार के उस युग को गलत समझना होगा यदि हम अधीनता के सिद्धान्त की प्रमुखता मे श्रेष्ठ वर्गों का हीन वर्गो के प्रति एक कठोर एव असहानुभूतिपूर्ण रुख देखने का प्रयास करे । स्थिति उससे बिल्कुल भिन्न थी । अठारहवी शताब्दी सुपरिभाषित (सुस्पष्ट) सामाजिक भिन्नताओ का एक युग था और तब उसकी सामाजिक सरचना के अनुरूप ही एक भाषा का प्रयोग होता था ।"[1]

किन्तु उन्नीसवी शताब्दी के प्रारभ मे, जो हन्नाह मोर का युग था, निर्धनो को जो अत्यधिक शिक्षा और परोपकारिता प्रदान की जाती थी उसमे वर्ग चेतना और सरक्षकत्व की भावना बनी रही । इसी समय अठारहवी शताब्दी मे अज्ञात समतामूलक भावना ने चिन्तायुक्त सहमति को एक भिन्न युग की आवश्यकताओ एव समस्याओ के लिए अरुचिकर एव असम्बद्ध बनाना प्रारभ कर दिया था ।

'भूस्वामी और उसके सम्बन्धियो को ईश्वर सुखी रखे, और हमे अपनी उचित स्थितियो मे रहने दे ।'

उपरोक्त पक्तियो मे निहित भावना ऐसी थी जिस पर सर रोगर डि कैवर्ले के काल मे कोई टिप्पणी नही करता था किन्तु जब औद्योगिक क्रान्ति ने परम्परागत सामन्तवाद की चेतनाशून्य सरलता को समाप्त कर दिया था उसके पश्चात् उपरोक्त रविवासरीय विद्यालय मनोवृत्ति उपहास और अपराध का एक कारण बन गई थी ।

जबकि अठारहवी शताब्दी मे धर्मार्थ और रविवासरीय विद्यालयो की स्थापना कर वृहत् आधार पर शिक्षा प्रारभ की गई इसे माध्यमिक शिक्षा मे असफलता मिली क्योकि इसने अनेक 'ग्रामर स्कूलो' और धर्मार्थ विद्यालयो का पतन हो जाने दिया । वास्तव मे यह उस युग की साधारण विशेषता थी । जबकि निजी उद्यम और लोकोपकारी

---

[1] कुमारी एम जी जोन्स, **दि चैरिटी स्कूल मूवमेट**, पृष्ठ ४ और इस पुस्तक की मई १९३९ के **इकानामिक हिस्ट्री रिव्यू** के अक मे प्रोफेसर टानी द्वारा की गई समीक्षा देखिए ।

उत्साह ने नए मार्गों को प्रशस्त किया, विधि (राज्य) द्वारा स्थापित सस्थाए शिथिल और भ्रष्ट हो गईं। कानून और कानून सम्मत अधिकारो पर जेम्स द्वितीय के आक्रमण की भयकर पराजय ने सौ वर्षो को वह दिया जो वैधानिक एव रूढिवादी स्वरूप का अनुगामी था और जिसकी अविकलता भी हो गई थी। एक राज्यादेश (चार्टर) दिखाने से आलोचना से बचा जा सकता था। उस समय न तो ससदीय निर्वाचन क्षेत्रो, नगर निगमो, विश्वविद्यालयो, और न धर्मार्थ (लोकहितैषी) सस्थाओ की शताब्दी के अन्त के निकट तक सुधार की कोई चर्चा थी। और तब, आह! 'फ्रास के दु खद उदाहरण' ने सुधार को अभिशाप बना दिया। जैसे कि नामाकित सदस्यो वाली नगर कुलीन-तत्रीय परिषदे अपनी निगमीय आयो को विशाल भोजो पर व्यय करती थी और नगरीय प्रशासन के कर्त्तव्यो की अवहेलना करती थी, धर्मार्थ विद्यालयो के प्रधानाध्यापक उसी भावना से बहुधा उपेक्षा दिखलाते थे और कभी कभी अपने स्कूलो को बन्द कर धर्मस्व को अपनी निजी सम्पत्ति मानकर उससे जीवन-निर्वाह करते थे।

किन्तु इस प्रकार माध्यमिक शिक्षा की जो हानि हुई उसकी पूर्ति निजी स्कूलो द्वारा हो गई जिनका सम्पूर्ण खर्चा विद्यार्थियो से प्राप्त शुल्क से चलता था और जिन्होने अठारहवी शताब्दी मे अच्छी प्रगति की थी। ऐसे विद्यालयो, जिनमे विमतिवादियो की अकेडेमिया भी शामिल थी, ने साधारण व्यय पर अच्छी शिक्षा प्रदान की थी जिसमे शास्त्रीय विषयो के अतिरिक्त प्रचलित भाषाओ एव विज्ञान का भी स्थान था। इन नये फैशन (चलन) के विषयो के लिए विश्वविद्यालयो की तुलना मे प्राचीन धर्मार्थ विद्यालयो को कोई अधिक लाभ न था।

वैभवपूर्ण विद्यालयो, जिनमे प्रीस्टले जैसी उच्च प्रतिष्ठा के लोग सम्मिलित थे, ने भी आक्सफोर्ड और कैंब्रिज विश्वविद्यालयो के अभावो को कुछ सीमा तक दूर किया। इन दोनो विश्वविद्यालयो मे ऐसे सभी लोगो का प्रवेश वर्जित था जो गिरजाधिकारी (कर्मचारी) नही थे और यहा प्रविष्ट लोगो को इतनी खराब और खर्चीली शिक्षा दी जाती थी कि उनकी सख्या बहुत शोचनीय अनुपात तक घट गई। अब इनमे प्रवेशार्थियो की सख्या उसकी आधी भी नही रह गई थी—जो लॉड और मिल्टन के काल मे थी।

वास्तव मे, आइसिस और कैम के तटो पर शासनपत्रित एकाधिकार की भावना अपनी सर्वाधिक दुरवस्था मे देखी जा सकती थी। कालेज के अधिकारी के पास आजीवन 'फेलोशिप' रह सकती थी जब तक वह गिरजा की आजीविका स्वीकार न करता। उसे किसी प्रकार का शैक्षणिक कार्य करने को बाध्य नही किया जाता था और न उसे विवाह करने की ही अनुमति दी जाती थी और अधिकाश कालेजो मे उसे 'होली आर्डर्स' अपनाने के लिए[1] बाध्य किया जाता था। अठारहवी शताब्दी के

---

[1] रोमन और ग्रीक गिरजो मे यह एक पवित्र सस्कार है जिसे सम्पन्न कर व्यक्ति अपने को धर्म की सेवा के लिए अर्पित कर देता है।

कालेज-अधिकारी, अपने आलस्यपूर्ण, आत्म-अतिभोग एव अविवाहित पादरीत्व के कारण पन्द्रहवी शताब्दी के भिक्षुओ (साधुओ) के समान लगते थे, दोनो समान उपयोगी भी थे। गिबन को एक साधारण सज्जन की हैसियत से सन् १७५२ मे आक्सफोर्ड मे मैगडैलेन मे 'फेलोज टेबल' मे प्रवेश मिला था। उसने उनकी (फेलौज की) आदतो का वर्णन इस प्रकार किया है—

"पढने, लिखने अथवा सोचने के परिश्रम से उन्होने अपने अन्त करण को मुक्त कर लिया था। उनकी बातचीत के विषय घुमा-फिराकर सदा कालेज का कार्यकलाप, टॉरी राजनीति, व्यक्तिगत कहानिया और निजी कलक (लोकापवाद) ही रहते। शराब पीने की उनकी गहरी और शिथिल आदते उनमे युवको जैसे त्वरित असयम को आने से रोकती थी।"

दोनो ही विश्वविद्यालयो मे फेलोज के एक बडे बहुमत द्वारा पूर्वस्नातकीय विद्यार्थियो की पूर्ण अवहेलना होती थी, यद्यपि कभी कभी कोई कालेज ट्यूटर बडे उत्साह से उन दायित्वो को निभाते थे जिनमे सारे समाज को भाग लेना चाहिए था। अभिजात व्यक्तियो के पुत्र और धनी फेलो कामनर्स, जो बहुत अधिक दिखते थे और जिन्हे अनुशासन के मामलो मे बडी छूटे दी जाती थी, के साथ बहुधा निजी ट्यूटर रहते थे। विश्वविद्यालय के प्रोफेसर कदाचित ही अपने नियत कार्यो को करते थे। कैंब्रिज मे आधुनिक इतिहास के रेजियस प्रोफेसर ने १७२५ और १७७३ के बीच कोई व्याख्यान नही दिया। इस पद पर आसीन यह तृतीय और सर्वाधिक कलकित प्रोफेसर था जो १७६८ मे ओवर मे अपने निवास स्थान (Vicarage) से घर को शराब पिये हुए घोडे पर जाते हुए गिरकर मर गया था।

१७७० तक आक्सफोर्ड मे एक डिग्री प्राप्त करने के लिए किसी प्रकार की गभीर परीक्षा नही ली जाती थी। कैंब्रिज मे गणित की स्नातकीय परीक्षा मे विशिष्टता प्राप्त करने के लिए अधिक महत्वाकाक्षी उम्मीदवारो की प्रतिद्वन्द्वी योग्यताओ की वास्तविक जाच होती थी। वास्तव मे गिबन ने यह घोषणा की थी कि अपनी बहिन (आक्सफोर्ड) की अपेक्षा कैंब्रिज विश्वविद्यालय Cloyster पद्धति के दुर्गुणो से कम प्रभावित हुआ प्रतीत होता था। हैनोवर के घराने के प्रति उसकी वफादारी एक अधिक बाद के काल की है और उसके अमर न्यूटन का दर्शन और नाम सर्वप्रथम न्यूटन की अपनी स्थानीय अकेडेमी मे सम्मानित हुए थे।

शताब्दी के अन्तिम वर्षो मे आन्तरिक सुधार का एक आन्दोलन प्रारम्भ हुआ जिससे दोनो विश्वविद्यालय आत्मोन्नति के पथ पर अग्रसर हुए। इसके प्रारम्भ की तिथि कैंब्रिज मे ट्रिनिटी कालेज से १७८७ के सकट काल से मानी जा सकती है। जब एक कठिन सघर्ष के पश्चात्, जिसमे दोनो प्रतिपक्षियो को लार्ड चासलर की न्यायपीठ के सामने जाना पडा था, यह निश्चय किया गया कि उसकी फेलोशिप एक सावधानी-पूर्वक ली हुई परीक्षा के परिणामो के अनुसार न्यायोचित रूप से दी जानी चाहिए। इस

परिवर्तन के पश्चात् ट्रिनिटी कालेज अपने प्रतिद्वन्द्वी सेटजास कालेज से प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियो और शैक्षणिक ख्याति मे अन्तत आगे बढ गया यद्यपि वर्ड्सवर्थ और विल्बरफोर्स का कालेज महान् विशिष्टता के लोगो को उत्पन्न करता रहा ।

प्रथम दो जार्जो के शासनकाल मे आक्सफोर्ड का कुख्यात जैकबवाद (जेम्स द्वितीय के अनुयायियो का सम्प्रदाय) शासन की शक्ति की सीमाओ के लिए उच्च रूप से महत्वपूर्ण था । साथ ही यह कानून के शासन और राज्याज्ञा द्वारा प्रजा को उन्मुक्ति दिलाने मे भी महत्वपूर्ण था । गिरजाघरो का सरक्षकत्व व्हिग मत्रियो के हाथ मे था जो जैकबवादी पादरी नियुक्त करने की अपेक्षा एक मुसलमान को अधिक शीघ्रता से नियुक्त कर सकते थे । किन्तु आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज के कालेज उनके अधिकार-क्षेत्र के बाहर थे और विश्वविद्यालयो पर जेम्स द्वितीय के आक्रमण की विफलता एक ऐसी गम्भीर चेतावनी थी जिसने इगलैड मे भावी शासनो के हस्तक्षेप से शैक्षणिक स्वतत्रता की रक्षा की । हैनोवर ढग की शपथ लेकर अपने वेतन को प्राप्त करने के पश्चात् यदि आक्सफोर्ड के शिक्षाधिकारी जैकबवादी दावतो मे अधिक मदिरा पी लेते थे तो राजा जॉर्ज के मत्री उस विषय मे कुछ नही कर सकते थे । इस ढग से विश्वविद्यालयो की आवश्यक स्वतत्रता १८वी शताब्दी के प्रचलन से स्थापित हो गई थी । जिसमे विभिन्न अशो मे कमी ट्यूडर, स्टुअर्ट और क्रामवेल के अनुयायियो के समय मे हुई थी । कुछ पहलुओ मे विश्वविद्यालयो की इस उन्मुक्ति (Immunity) का दुरुपयोग किया गया किन्तु ईश्वर को धन्यवाद है कि उसको सरक्षित रखा जा सका । विशेषकर ऐसी स्थिति मे जबकि विभिन्न देशो मे शैक्षणिक जीवन दासता की स्थिति मे गिर चुका था और जब उन देशो मे कानून के शासन और प्रजा की स्वतत्रता जैसी सम्माननीय परम्पराए न थी ।[1]

उस समय इगलैड मे विद्यमान मात्र दो विश्वविद्यालयो के पतन के बाद भी और माध्यमिक शिक्षा का उत्तरदायित्व बहन करने वाले धर्मार्थ विद्यालयो के ह्रास के बावजूद देश का बौद्धिक जीवन सर्वाधिक प्रखर था और जॉर्ज तृतीय के काल के इगलैड मे अनियमित रूप से शिक्षा पाये हुए लोगो मे जनसख्या के प्रति व्यक्ति पर प्रतिभाशाली लोगो का अनुपात हमारे समय की तुलना मे बहुत अधिक था । यह प्रतीत होता है कि मानव के मस्तिष्क के सर्वोत्तम उत्पादन समरूप सगठन की अपेक्षा सयोग, स्वतत्रता और विविधता का प्रतिफल होते है । उन्हे नगरीय और ग्रामीण जीवन के सतुलन की न,

---

[1] इस युग के विश्वविद्यालयो के लिए देखिए, ए डी गोडले, **आक्सफोर्ड इन दि एट्टीन्थ सेन्चुरी**; सी ई मैलेट, **हिस्ट्री ऑफ दि यूनिवर्सिटी ऑफ आक्सफोर्ड**, खड ३, डी विन्सटेनले, **अनरिफार्म्ड कैम्ब्रिज**, गनिग, **रेमिनीसेंसेज ऑफ कैम्ब्रिज फ्राम दि इयर १७८०** । १७७४-५ मे आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का एक गहन और रुचिकर चित्रण पादरी वुडफोर्ड की डायरियो मे मिलता है ।

कि महानगरो मे जीवन के निर्जीव भार की, उपज कहा जा सकता है। इसी प्रकार वे मशीन की अपेक्षा कलाओ और दस्तकारियो तथा पत्रकारिता की अपेक्षा साहित्य की उपज होते है। परन्तु यदि भविष्य मे कभी बर्क, गिबन और जॉन्सन जैसी महा-विभूतिया, न्यूटन और रेन की बात न भी करे, उत्पन्न हो सके तो भी किसी प्रकार का बौद्धिक जीवन बिताने की सामर्थ्य वाले शिक्षित लोगो की सख्या भूतकाल की तुलना मे काफी बडी हो सकती है।

१८वी शताब्दी मे धर्म और शिक्षा के माध्यम से वेल्स के निवासियो ने अपने बौद्धिक और आध्यात्मिक जीवन की चेतनता को पुन प्राप्त किया जो इगलेंड की इसी प्रकार की चेतनता से पृथक् थी। यह कहानी अनोखी और महत्वपूर्ण भी है।

हेनरी अष्टम्, जो वेल्स और इगलैंड की मिली जुली परम्परा की उपज कहा जा सकता था, का दोनो देशो के राजनैतिक सघ की स्थापना करने मे उद्देश्य यह था कि स्वतत्र और समान आधार पर वेल्सवासी अग्रेज लोगो का एक भाग बन जाये। इस कार्य मे उसे काफी सीमा तक सफलता मिली क्योकि वेल्स के देश व उसके देशवासियो का अग्रेजो ने वैसा शोषण नही किया जैसा उन्होने आयरलैंड मे किया था। और न दोनो जातियो को धर्म ने ही विभाजित किया था। ट्यूडर काल मे वेल्स के सभ्रान्तवासियो ने अग्रेजी भाषा, दृष्टिकोण और साहित्य को अपना लिया और स्वदेश के चारणो (गायको) को सरक्षण देना बन्द कर दिया। अन्य नेतृत्व के अभाव मे कृषको ने भी इसी धारा मे बहना लाभकर समझा किन्तु वे अपनी स्थानीय बोलिया बोलते रहे और अपने लोकगीतो को गाते रहे।

एलिजाबेथ के शासनकाल मे गिरिजा ने बाइबिल और प्रार्थना पुस्तक का वेल्स की भाषा मे अनुवाद कर राज्य की अग्रेजीकरण नीति का अचेतन रूप से विरोध करना प्रारम्भ कर दिया था। यह ऐसा बीज था जिसका बाद मे व्यापक परिणाम हुआ किन्तु इस बीज से मिलने वाली समृद्ध फसल एक लम्बी अवधि के पश्चात् ही काटी जा सकी। क्रॉमवेल प्रकार का अग्रेजी शुद्धिवाद वेल्सवासियो को अधिक आकृष्ट न कर सका। जहा तक उनके किसी पक्ष के साथ रहने का सवाल था वे कैवेलियर (Cavalier) ही बने रहे। राजा चार्ल्स के पैदल सैनिको के रेजिमेन्ट मुख्यतया वेल्स की पहाडियो के निवासियो से बने थे जो नेस्बी के युद्ध मे नष्ट हो गये थे।

जब अठारहवी शताब्दी प्रारभ हुई तो इगलैंड के छोटे भूपतियो की भाति वेल्स के छोटे भूमिपति बडे जमीदारो के हाथ बिक रहे थे। कानूनी दृष्टि से वेल्स बडी जागीरो का देश हो रहा था किन्तु अपनी मूलभूत सामाजिक सरचना मे वह छोटे किसानो के खेतो का एक देश था। इन खेतो मे से प्रत्येक का औसत आकार ३० से लेकर १०० एकड तक था। वे अल्पावधि अथवा वार्षिक पट्टो पर लिये जाते थे। उनका उपयोग पुराने ढग की जीविका-निर्वाह खेती के लिए किया जाता था। उनसे उन्हे जोतने वाले परिवारो का भरण-पोषण होता था। उनकी उपज बाजार मे नही जाती थी। बडे

किसान और किसी प्रकार के मध्यम वर्ग के लोग बहुत थोडे थे और विशाल जागीर व्यवस्था की आड मे वास्तव मे वेल्स खेतिहर कृषको का एक समतावादी लोकतत्र था और दक्षिणी वेल्स मे कुछ खान-मजदूर भी रहते थे।

द्वीप के अन्य पश्चिमी और सेल्टिक भागो की भाँति वेल्स पुराने घेरो का एक देश था। वहा खुले हुए खेतो की व्यवस्था कभी प्रचलित नही थी। यह व्यवस्था केवल पेमब्रोकशायर के उन भागो मे विद्यमान थी जहा अग्रेज बस गये थे और वहा भी अब घेरे बनाना प्रारम्भ हो गया था। वेल्स के साधारण खेतो की बाड पत्थर की दीवारो अथवा तृण-मृदा के किनारो से बनाई जाती थी।

दूर रहने वाले इन देहाती लोगो के पारम्परिक ढगो मे स्टुअर्ट काल मे किसी सवेगात्मक आन्दोलन के सघात से कोई गडबडी उत्पन्न नही हुई थी चाहे वह आन्दोलन सामाजिक, राष्ट्रीय, राजनैतिक अथवा धार्मिक रहा हो। उन्हे अपनी पुरतत्री के पारम्परिक सगीत और गानो से ही लगाव था और उनके धर्म मे अधिकतया भजनो का गाना सम्मिलित था। वे इतने अपढ थे कि उनके लिए तात्कालिक बाइबिल पढने वाले प्रोटेस्टेटवाद के पूर्ण प्रवाह मे बहना कठिन था। आर्थिक दृष्टि से और बौद्धिक रूप से वेल्स आने-जाने की भौगोलिक कठिनाइयो के कारण अग्रेजी प्रभाव से एकदम दूर था। यहा तक कि १७६८ मे आर्थर यग ने वेल्स की पहाडी सडको को केवल चट्टानी गलिया कहा था जो घोडे के आकार की बड़ी बडी चट्टानो से भरी हुई रहती थी।

यदि ऐसी स्थिति मे वेल्स मे कोई धार्मिक अथवा शैक्षणिक पुनर्जागृति होती तो उन्हे यह स्वय ही करनी पडती जैसाकि उन्होने बाद मे किया भी। विलियम और ऐन्नी के शासनकालो मे प्रारम्भ होकर और सम्पूर्ण अठारहवी शताब्दी मे वेल्स के परोपकारवादियो ने अपने देशवासियो मे शैक्षणिक और धार्मिक प्रचार को प्रोत्साहित किया। अन्तत वेल्स के धार्मिक जीवन का सबमे महत्वपूर्ण भाग मेथाडिस्ट गिरिजा हो गये। किन्तु यह आन्दोलन जॉन वेस्ले के जन्म के पूर्व ही प्रारम्भ हो गया था।

कृषको को पढने की शिक्षा देना और उनके हाथ मे वेल्स की बाइबिल देना ऐसे लोगो के उद्देश्य थे जिन्होने सम्पूर्ण वेल्स देश मे लोकप्रिय शिक्षा की स्थापना की थी। निस्सन्देह इगलैड मे भी धर्मार्थ और रविवारीय विद्यालयो की स्थापना धार्मिक कारणो से ही हुई थी किन्तु विमतिवादियो अथवा जैकबवादियो मे राज्य धर्म की रक्षा करने के अधिक लौकिक उद्देश्यो से ये कारण सम्बद्ध थे। साथ ही इनका उद्देश्य निर्धन लोगो के बच्चो को परिश्रमी तथा एक सावधानीपूर्वक श्रेणीबद्ध सामाजिक अर्थ-व्यवस्था के उपयोगी सदस्य होने के लिए प्रशिक्षित करना भी था। वेल्स के सरलतर और समतावादी कृषक समाज मे ऐसी समस्याए विद्यमान नही थी और उपयोगिता के मध्यमवर्गीय विचार भी अज्ञात थे। जिन्होने उपरोक्त विद्यालयो की स्थापना की थी उनकी इच्छा केवल स्त्रियो एव पुरुषो की आत्माओ की रक्षा करना था अर्थात् उन्हे

बाइबिल पढने वाले धार्मिक ईसाइयो के रूप मे विकसित करना था। इस उद्देश्य की पूर्ति हो गई थी और साथ ही साक्षर हो जाने के कारण वेल्सवासियो के समक्ष बौद्धिक और राष्ट्रीय सस्कृति के नये मानसिक दृश्य (Vistas) खुल गये थे जो सदैव धार्मिक रग से तो रगे थे, किन्तु दूसरे क्षेत्रो मे भी प्रसरित रहते थे।

धर्मार्थ विद्यालयो के एक इतिहासकार ने, जो स्वय वेल्स की एक स्त्री थी, ने इस प्रकार लिखा है [1]

'वेल्सवासियो के चरित्र और इतिहास पर धर्मार्थ विद्यालयो के प्रभाव व महत्व का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन करना कठिन होगा। इस प्रकार की शिक्षा के ध्येय और उद्देश्य के रूप मे दया पर निरन्तर सकेन्द्रण ने सुखी और सरल लोगो को बल दिया था जो धर्म के प्रति अन्यमनस्क थे और जिनमे राजनीतिक चेतनता का अभाव था। अब ये ऐसे लोग हो गये थे जिनको धर्म और राजनीति मे प्रबल रुचि हो गई थी। प्रत्येक वेल्सवासी के लिए बाइबिल एक नियमावली बन गई थी। वह उसी की भाषा को अपनी भाषा मानने लगा था और उसके सामाजिक और राजनीतिक जीवन मे बाइबिल की शिक्षाओ की प्रधानता थी। पेटीसिलिन के विलियम्स के भजनो और बाइबिल मे साधारण ग्रामीणो को अपनी सवेगात्मक और बौद्धिक रुचियो की पूर्ण तुष्टि प्राप्त होती थी।

धर्मार्थ विद्यालयो के आन्दोलन का राजनीतिक प्रभाव कुछ कम महत्वपूर्ण नही था। आधुनिक वेल्स राष्ट्रवाद की उत्पति अठारहवी शताब्दी के साहित्यिक और भाषायी पुनर्जागरण से हुई थी। इसमे धर्मार्थ विद्यालयो के आन्दोलन की वैसी ही महत्वपूर्ण भूमिका थी जैसी कि उसकी धार्मिक पुनरुत्थान मे। इन विद्यालयो का कार्य प्रारम्भ होने के पूर्व वेल्स भाषा केवल कवियो एव राजकुमारो की भाषा थी जिसके विनाश का खतरा आसन्न था। अठारहवी शताब्दी के अन्त तक यह भाषा पुन गद्य और कविता का माध्यम बन गई, यह मात्र राजकुमारो की भाषा नही रह गई। इसमे ग्रामीण उत्पत्ति एव पवित्र प्रेरणा के स्पष्ट चिन्ह अकित थे।'

---

[1] **दि चैरिटी स्कूल मूवमेट, ए स्टडी ऑफ एटीन्थ सेन्चुरी प्यूरिटैनिज्म इन ऐक्शन।** एम जी. जोन्स, गिर्टन कालेज की फेलो, १९३८, पृ० ३२१।

अध्याय १२

डा. जॉन्सन के काल में इंगलैंड

[२]

कृषि एवं औद्योगिक क्रान्ति का प्रारम्भ–संचार साधनों की उन्नति–समुद्र पार के देशो से व्यापार–नगर

यद्यपि सैक्सन की विजय के पश्चात् औद्योगिक क्रान्ति सामाजिक इतिहास मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण आन्दोलन है किन्तु यह कहना कि उसका प्रारम्भ कब हुआ उतना ही कठिन है जितना यह निर्णय करना कि मध्ययुग का अन्त कब हुआ। पूंजीवाद, कोयला, समुद्र के पार व्यापार, कारखाने, मशीनरी तथा श्रमिक सघ सभी का हैनौवर युग के पूर्व अग्रेजी जीवन मे अपना-अपना स्थान है। किन्तु अठारहवी शताब्दी का उत्तरार्ध वह समय माना जाता है जिसमे वैज्ञानिक आविष्कार एव बढती हुई जनसख्या से प्रेरित होकर औद्योगिक परिवर्तन ने उस निश्चयात्मक अवस्था मे प्रवेश किया जिसकी तीव्र गति मे आज भी कोई धीमापन नही दीखता।

अठारहवी शताब्दी के कृषि आन्दोलन के भी ऐसे ही गुण थे। द्वीप के कृषि उत्पादन मे जो भारी वृद्धि हुई थी वह उन दिनो जनसख्या की तीव्र वृद्धि के कारण आवश्यक हो गई थी। इतनी विशाल जनसख्या को उस समय विदेशो से आयात किए अनाज से भोजन नही दिया जा सकता था। इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय आवश्यकता की पूर्ति एव शोषण उस काल की विशिष्ट सामाजिक तथा आर्थिक दशाओ के कारण सफलता पूर्वक हो सका। अठारहवी शताब्दी मे जमीदार वर्ग भूमि और जोत के तरीको मे उन्नति करने के लिए समर्थ था और अपने व्यक्तिगत ध्यान तथा सचित धन को लगाने के लिए इच्छुक था। प्रारम्भिक औद्योगिक क्रान्ति से उत्पन्न पूंजी का बहुत सा भाग बडी जागीर प्रणाली के माध्यम से कृषि को उपजाऊ बनाने मे लगा दिया गया था। यह धन कपडे, रुई, कोयले तथा व्यापार से आता था किन्तु पूंजी विपरीत दिशा मे—भूमि से उद्योग मे—भी गई। जिन अनेक नये उद्योगपतियो ने अठारहवी शताब्दी मे कारखानो, मिलो तथा व्यापारो की स्थापना की थी उनके लिए धन या तो उन्हे अपनी ही भूमि से मिला था अथवा अपने पूर्वजो से जो कृषको के रूप मे सफल हुए थे। काउण्टी बैको ने, जिनकी सख्या इस समय बढ रही थी, उद्योग से

कृषि तथा कृषि से उद्योग मे पूजी के दोहरे प्रवाह को सहायता दी थी। वास्तव मे, कृषि तथा औद्योगिक क्रान्तियो का सम्बन्ध कई प्रकार से था। वे केवल समकालीन नही थी, प्रत्येक दूसरे की सहायक बनी। उन दोनो को एक ऐसा अकेला प्रयास माना जा सकता है जिससे समाज ने अपना इस प्रकार पुर्नानिर्माण किया कि वह उन्नत चिकित्सा सम्बन्धी सुविधाओ के कारण अभूतपूर्व तीव्रता से बढती हुई जनसख्या को भोजन एव रोजगार देने मे समर्थ हो सका।[1]

एक सौ वर्षो मे जो परिवर्तन हुए उन्हे जॉर्ज द्वितीय और जॉर्ज चतुर्थ के शासन-कालो की स्थिति की तुलना से सक्षिप्त रूप से दर्शाया जा सकता है।

जब जॉर्ज द्वितीय (१७२७-१७६०) के शासन का आरम्भ हुआ तो वस्तुओ का उत्पादन ग्रामीण जीवन का कार्य था। उस समय 'उत्पादक' शब्द का प्रयोग पूजी-पति सेवायोजको के लिए न होकर स्वय दस्तकारो के लिए होता था जो साधारण ग्रामो मे रहते थे। इनमे से प्रत्येक ग्राम कपडे, औजारो, साधारण प्रकार के मकानो तथा रोटी, गोश्त और जौ की शराब की अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति स्वय कर लेता था। केवल निकट के पार्क मे रहने वाले 'भद्र जन के लिए सुरुचि और भारी व्यय के युग मे काउण्टी की राजधानी अथवा लन्दन से सर्वोत्तम फर्नीचर, पुस्तके, चीनी के बर्तन तथा अन्य सुविधाए और उत्कृष्ट रुचि के अनुकूल मेजे मगाई जाती थी, तथापि उसके साधारण भोजन का स्रोत स्वय उसकी जागीर थी।

फिर भी, बहुत से देहाती ग्रामो मे न केवल उनकी आवश्यकता के लिए सस्ती वस्तुए बनती थी बल्कि बाजार के लिए कुछ विलासिता की वस्तुए भी बनती थी। अनेक उदाहरणो मे से केवल एक उदाहरण देखिए। मेरे पास मेरे दादा की एम अठारहवी शताब्दी की घडी है, वह प्रायर मार्स्टन के छोटे वार्विकशायर गाव मे बनी थी। वह

---

[1] १८वी शताब्दी के आयरलैंड मे जनसख्या और भी तेजी से बढी और लगभग १५ लाख से बढकर ४० लाख हो गई। किन्तु उस द्वीप की सामाजिक दशाए और प्रजातीय विशेषताए आर्थिक परिवर्तन के अनुकूल नही थी, और औद्योगिक अथवा कृषि क्रान्ति के स्थान पर आलुओ पर निर्भर रहने वाली जनसख्या मे उस देश मे भयकर भूखमरी और बार-बार अकाल पडते थे। इसी का परिणाम १८४७ का भयकर सकट था।

वेल्थ आफ नेशन्स (प्रथम पुस्तक, अध्याय ११) के सुप्रसिद्ध पैरा मे ऐडम-स्मिथ ने लदन मे आयरवासियो की शारीरिक शक्ति और सुन्दरता का सम्बन्ध स्वय उनके देश मे खाए जाने वाले आलू के भोजन से किया था। उसका कहना सच था अथवा झूठ किन्तु इतना तो मानना पडेगा कि एक विशाल जनसख्या को आलू पर जीवित रखना एक सरल किन्तु खतरनाक तरीका था।

आज भी सही समय देती है। ऊनी कपडा, जो आज भी हमारे आन्तरिक और विदेशी व्यापार की मुख्य वस्तु है, उस समय भी बनता था। उसके निर्माण की मुख्य प्रक्रिया ग्रामीण क्षेत्रो मे होती थी। तीव्रता से बढता हुआ सूती वस्त्र-उद्योग भी देहातो मे चल रहा था। कस्बे इस प्रकार के निर्माण मे थोडा भाग लेते थे किन्तु वे मुख्यतया वितरण केन्द्र थे। काट्सवोल्ड तथा ईस्ट ऐंगिलयन ग्रामो मे निर्मित कपडे की बिक्री एव वितरण ब्रिस्टल तथा नार्विक मे होता था। लीड्स तथा हैली-फैक्स मे वे वस्तुए बिकती थी जो पत्थर के फार्मो तथा देहाती घरो मे बनती थी, जिसमे सबके पास अपने खेत और गाये थी। इस प्रकार के निर्माण-केन्द्र यार्कशायर के सूती कपडो की घाटियो के ढलान पर फैले हुए थे।

प्रारम्भिक हेनरी-कालीन इगलैड के कस्बे स्वनिर्मित वस्तुओ पर अपनी जीविका के लिए इतना निर्भर नही रहते थे जितना कि अपनी बाजारो, अपनी दुकानो एव अपने वाणिज्य पर। लन्दन सचमुच एक औद्योगिक और व्यापारिक नगर था तथा उसी समय उसमे आधुनिक 'बृहत नगर' के जीवन की अनेक विशेषताए दृष्टिगोचर होती थी। बरमिंघम सदा से छोटे उद्योगो का नगर था। बृहदाकार ब्रिस्टल तथा उसके विकास-शील प्रतिद्वन्द्वी लिवरपूल, से लेकर लघु फोवी तथा आल्डेबर्ग तक सभी बन्दरगाहो मे सामुद्रिक जीवन पाया जाता था। इन सबका अतीत सर्वोत्तम दिनो के लिए विख्यात था। किन्तु अधिकाश कस्बे देहातो पर आश्रित केन्द्र थे जो उनकी (देहातो की) आवश्यकताओ की पूर्ति किया करते थे। वे प्राचीरो से घिरे हुए मध्ययुगीन कस्बो की ईर्ष्यालु नगरीय देश भक्ति को भूल चुके थे तथा उसके दस्तकार-सगठनो का निर्माण एकाधिकार अब समाप्त हो चुका था। वे अब किसानो के लिए बाजार-स्थल थे। इन्ही स्थलो पर भद्र जन तथा उनके परिवार परस्पर मिलते और नाचते थे तथा दैनिक आव-श्यकता की चीजो को खरीदते थे। यही वे काउण्टी के कार्यकलापो का सचालन करने से सम्बन्धित निर्णय लेते थे। मध्यम स्थिति के भूमिपति (जागीरदार), जो विशेषकर राजधानी से सैकडो मील दूर रहते थे, और जो लन्दन के मौसम का आनन्द लेने मे असमर्थ थे, काउण्टी कस्बे के भीतर अथवा उसके आसपास स्वय अच्छे मकानो का निर्माण करते थे जहा उनके परिवार वैवाहिक सम्बन्धो को स्थापित करने के इरादे से प्रत्येक वर्ष थोडे समय के लिए आकर प्रयास करते थे। गिर्जाघरो वाले नगर पादरियो के सम्माननीय सरक्षण के अधीन सम्मानपूर्ण प्रगति करते थे। किन्तु इन सबके अतिरिक्त बृहत्तर काउण्टी कस्बे, जैसे न्यूकैसल-आन-टाइन तथा नार्विक राष्ट्रीय व्यापार के प्रमुख केन्द्र थे।

•

जिस इगलैड पर जार्ज चतुर्थ (१८२०-१८३०) शासन करता था वह अब बहुत कुछ बदल चुका था। उस समय तक वहा, विशेषकर वेस्ट मिडलैंडस तथा उत्तर मे एक नवीन पूर्वलक्षण के रूप मे, अनेक "वस्तुनिर्माता कस्बो" तथा शहरी क्षेत्रो का

विकास हो रहा था जा कारखानो तथा मशीन उद्याग से परिपूर्ण थे तथा आसपास के क्षेत्र के ग्रामीण जीवन से बिल्कुल विलग थे। पुराने अग्रेजी समाज के सामजस्यपूर्ण जीवन मे शहर तथा गाव मे एक लम्बवत् दरार पड गई। साथ ही धनी और निर्धन वर्गों के बीच की पुरानी खाई भी अधिक चौडी हो रही थी। यह सत्य है कि उस काल मे ग्रामीण तथा नागरिक जीवन का उग्र भेद केवल कुछ क्षेत्रो तक सीमित था किन्तु विक्टोरिया के शासन काल में वह सार्वभौमिक हो गया था।

जॉर्ज चतुर्थ के शासनकाल मे इसी के समकक्ष एक परिवर्तन ग्रामीण जीवन मे भी बहुत आगे बढ चुका था। विशेषीकृत सामानो के निर्माता, कपडे तथा रुई की अनेक प्रक्रियाओ के निर्माताओ को मिलाकर, देहाती घरो को छोडकर कारखाना क्षेत्रो मे जा बसे थे। सडको की उन्नति ने स्वावलम्बी गावो की आवश्यकता को समाप्त कर दिया था। गावो के निवासी अब कस्बो मे उन चीजो को खरीदते थे जो उनके माता-पिता स्वय अपने लिए बनाते थे। अनेक ग्रामीण दर्जी, बढई, शराब खीचने वाले, आटा पीसने वाले और घोडे की काठी बनाने वाले बेरोजगार हो गए थे। घर मे गृहणी का चरखा अब शायद ही कभी गूजता था। 'सूत कातने वाली स्त्री' शब्द ही अब काल-कवलित हो चला था। आधुनिक किसान अनाज और मास का उत्पादन मुख्यतया बिक्री के लिए करता था, वह केवल गौण रूप से घरेलू उपभोग के लिए होता था।

१८२० तक कृषि-क्रान्ति के कारण खुले खेतो को आयताकार बाडी वाले खेतो मे बदल दिया गया था। इन खेतो मे अनाज तथा चारा वैज्ञानिक रीति से बारी-बारी से पैदा किया जा सकता था तथा पशुओ के बडे-बडे झुण्डो को खिलाकर इतने भार एव आकार का बनाया जाता था जिसका अतीत मे स्वप्न भी नही देखा गया था। बेकार तथा पुराने जगलो की भूमि के हजारो एकड क्षेत्र को कृषि के लिए घेर दिया गया था।[1] पक्की सडको पर चिरपरिचित डकैतो का अब नाम-निशान न था क्योकि वे बीहडो तथा झाडियो मे छिपते थे और उन्हे काटकर भूमि को जोत डाला गया था। व्यवस्थित नए 'वनो' की रक्षा शिकार के सरक्षको, पहरेदारो, तथा स्प्रिगदार बन्दूको द्वारा की जाती थी।

अतीत मे इस प्रकार से उत्पन्न परिवर्तनो को ही कृषि-क्रान्ति की सज्ञा दी गई है। क्योकि वे पुरानी आर्थिक एव सामाजिक व्यवस्था के विस्तार से सक्रिय न होकर एक नई व्यवस्था के सृजन से कार्यरत थे। बडी सगठित जागीरो के बडे फार्मो मे

[1] यदि ग्रेगरी किग के अनुमान (१६९६) और कृषि मडल की १७९५ की रिपोर्ट लगभग सही है तो सौ वर्षों मे इगलैंड और वेल्स मे कृषि-भूमि मे बीस लाख एकड भूमि का इजाफा हुआ था।

पट्टाधारी किसान भूमिहीन श्रमिको को लगाकर जोतते थे। यह व्यवस्था इगलैड के अधिकाधिक कृषि-क्षेत्र मे व्याप्त होती जा रही थी। छोटी खेती तथा स्वामित्व के अनेक रूपो पर इसका विनाशकारी प्रभाव पड रहा था। छोटे भूस्वामियो तथा भूमि मे क्षुद्र अधिकारो वाले कृषको को खरीदा जा रहा था जिससे नयी व्यवस्था की स्थापना मे कोई बाधा न पडे। बृहद मध्यदेशीय अनाज के खुले खेतो को बाडी लगे हुए खेतो के शतरजी प्रतिमान मे घेरा जा रहा था जो उसी समय से इगलैड मे आन्तरिक दृश्यो की प्रमुख विशेषता रही है। और इगलैड के उस अर्ध भाग मे भी, जहा घिरे हुए खेत सदैव से विद्यमान रहे है, समान सामाजिक परिवर्तन घटित हो रहे थे। क्योकि सभी स्थानो पर बडे भूस्वामी भूमि खरीद कर अपनी जागीरो को सुदृढ कर रहे थे, प्रत्येक स्थान पर भूस्वामी और कृषक नए तरीको के प्रयोग मे व्यस्त थे। तथा प्रत्येक स्थान पर अच्छी सडके, नहरे तथा मशीने गाव और कुटीर से उद्योग को कारखाना तथा कस्बे की ओर मोड रहे थे। इसमे कृषक परिवार सूत कातने तथा अन्य छोटी-छोटी निर्माण क्रियाओ से पृथक किया जा रहा था। अभी तक इन्ही से वह अपनी जीविका के लिए अल्प साधन जुटाता रहा था।

स्थानीय दशाओ की भारी विविधता को ध्यान मे रखते हुए सम्पूर्ण इगलैड के विषय मे यह कहना सत्य है कि उन अनेक परिवर्तनो मे खेतो की घेरेबन्दी एकमात्र किन्तु सभवत सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिवर्तन था, जिन्होने मिलकर स्वतत्र कृषको की सख्या घटा दी थी जबकि देहाती क्षेत्रो की सकल सम्पदा मे वृद्धि कर दी थी।[1]

ट्राफैलगर तथा वाटरलू के युग मे भी ये परिवर्तन तीव्रता से घटित हो रहे थे किन्तु १७४० और १७८९ के बीच ये विशाल परिमाण मे हुए थे। अतएव इस समग्र

---

[1] वर्डस्वर्थ ने लिखा था कि लेक डिस्ट्रिक्ट मे १७७० और १८२० के बीच स्वत्वाधिकारी 'राजनयिको' की सख्या आधी हो गई थी और उनके पास जोत का आकार दूना हो गया था। छोटे-छोटे फार्मों को मिलाकर एक कर दिया गया था क्योकि वे परिवारो के भरण-पोषण के लिए अपर्याप्त सिद्ध हो चुके थे जब तकुए के अविष्कार ने कारखानो मे सूत की कताई को केन्द्रित कर दिया था और इस प्रकार किसानो की स्त्रियो और बच्चो से सूत कातने का लाभदायी काम छीन लिया था।

दूसरी ओर मिडलैड शायरो मे मुक्त खेतो की घेराबन्दी ने भूमि पर अधिकार रखने वाले अनेक छोटे किसानो को समाप्त कर दिया था। किन्तु यह बात मिडलैड और ईस्टर्न काउण्टिओ के बारे मे सही नही थी जहा उपरोक्त घेराबन्दी होने के बाद भी भूमि पर अधिकार रखने वाले छोटे किसानो की सख्या मे कमी नही आई थी। (देखिए चैपमैन, १, पृ० १०३-१०५ और जे डी चैम्बर का **इकनामिक हिस्ट्री रिव्यू**, नवम्बर १९४०, मे लेख)।

प्रक्रिया पर इस अध्याय मे विचार करना उचित होगा। इस प्रक्रिया के पूर्ण होते ही ग्रामीण इगलैंड के जीवन का अविस्मरणीय ढग बदल चुका था।

उत्तरकालीन स्टुअर्टों तथा जार्ज प्रथम के शासनकालो मे खुले हुए खेतो, सामूहिक तथा बजर भूमियो की घेरेबन्दी बडी शीघ्रता से हो रही थी। इसके लिए या तो सम्बद्ध पक्षो मे इकरारनामा हो जाता था अथवा खरीददारी। किन्तु इस समय तक घेरेबन्दी एक राष्ट्रीय नीति न होकर केवल एक स्थानीय सुविधाजनक उपाय था। किन्तु अठारहवी शताब्दी के तीसरे दशक के पश्चात् इस कार्य को एक नई तथा अधिक उपयुक्त कार्य प्रणाली से चलाया जाने लगा। ससद के निजी अधिनियमो को पारित कर खेतो के व्यक्तिगत स्वामियो के घेरेबन्दी से सम्बन्धित प्रतिरोध को समाप्त किया गया। ससद के आयुक्तो, जिनके निर्णयो को कानूनी शक्ति प्राप्त थी, द्वारा प्रत्येक स्वामी को जो भूमि अथवा आर्थिक मुआवजा दिया जाता था उसी से उन्हे सन्तुष्ट होना पडता था। जार्ज तृतीय के शासनकाल मे ससद के प्रत्येक सत्र मे ऐसे अनेक क्रान्तिकारी कानून जल्दी जल्दी पारित किए जाते थे। यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि इन ससद सभाओ ने उस काल मे कोई अन्य विख्यात क्रान्तिकारी विधान नही पारित किया। किन्तु उपरोक्त क्रान्तिकारी कानून निर्धनो को हानि पहुँचाने वाला धनिको का उन्मूलनवाद था।

१७४० मे आगे के प्रत्येक दशाब्द मे भूमि की घेरबन्दी की गति अधिकाधिक तीव्र होती गई तथा शताब्दी के अन्त म यह सर्वाधिक तीव्र थी। विक्टोरिया के सिहासनारूढ होने के समय तक खुले अनाज के खेतो को घेरने का कार्य लगभग सम्पूर्ण हो चुका था। केवल सामूहिक भूमि की घेरेबन्दी उसके शासन के प्रथम तीस वर्षों तक चलती रही। जो क्षेत्र घेरेबन्दी से सम्बन्धित कानूनो मे गम्भीरता से प्रभावित हुआ था वह इगलैंड की काउटियो के क्षेत्र का लगभग आधा था। यह क्षेत्र यार्कशायर की ईस्ट राइडिग के दक्षिण मे लेकर लिकन, नार्फोक, मध्यदेशीय शायरो मे होते हुए विल्ट्स तथा बर्क्स तक फैला था। ससद के अधिनियम द्वारा नार्थम्पटनशायर के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का लगभग आधा घेर लिया गया था। हण्ट्स, बेड्स, आक्सफोर्ड तथा ईस्ट राइडिग के क्षेत्रफल का ४० प्रतिशत से अधिक घिर गया था। लीसेस्टर तथा कैम्ब्रिजशायर की इस दिशा मे प्रगति बहुत पीछे नही थी।

किन्तु घेरेबन्दी कानूनो का कोई प्रभाव केण्ट, एसेक्स, ससेक्स तथा उत्तरी तथा पश्चिमी काउटियो (जिलो) और वेल्स पर नही पडा था क्योकि उनके बहुत से क्षेत्र मे या तो ऐसे खेत थे जो कई युगो पूर्व घेरे जा चुके थे अथवा वहा इतने विस्तृत मैदानी चरागाह थे जिनको तार के घेरो के युग के आने के पूर्व घेरने की किसी मे सामर्थ्य नही थी। इस प्रकार नार्दम्बरलैंड का २ प्रतिशत क्षेत्र भी घेरेबन्दी कानूनो से प्रभावित नही

हुआ, यद्यपि ठीक इसी समय इस प्रदेश के जमीदार टिनसाइड मे अर्जित पूजी की बडी राशियो को कृषि की उन्नति मे लगा रहे थे।

इसका कारण यह था कि घेरेबन्दी का युग खेतो से पानी निकालने, कुए खोदने, बोने, खाद डालने, पशुओ को पालने तथा उन्हे खिलाने, सडके बनाने, फार्मों की इमारतो के पुर्ननिमारण तथा इसी प्रकार के सैकडो परिवर्तनो का युग था और इन सभी क्रियाओ के लिए पूजी की आवश्यकता थी। पुनस्स्थापन के काल के बाद से ही बडी सगठित जागीरो मे भूमि का सचय करने का तीव्रता से बढता हुआ आन्दोलन चल रहा था। इस क्षेत्र के बडे-बडे जागीरदारो (धनपतियो), महान् राजनीतिक पीयरो के पास बहुत बडी-बडी जागीरे थी तथा १६६० की तुलना मे १७६० मे इगलैड के क्षेत्र-फल का बहुत छोटा भाग कम महत्वपूर्ण ग्रामीण भूस्वामियो के कब्जे मे था। अतएव जमीदार वर्ग के पास अधिक पूजी तथा साख (ऋण) कृषि की उन्नति मे लगाने के लिए थे, जोकि अब तक एक फैशन बन गया था।

विशाल सघन जागीरो के मालिक इस आन्दोलन मे अग्रगण्य थे। इसमे टाउशेण्ड जैसे पुरुष थे जो जार्ज द्वितीय के शासन के प्रारम्भिक वर्षो मे सेवानिवृत हो गया था। ऐसा ही एक व्यक्ति कोक ऑफ नारफोक था, जो चालीस वर्ष पश्चात् इस क्षेत्र मे प्रकट हुआ था। वह फाक्स का मित्र था और जार्ज तृतीय का शत्रु। दोनो टाउशेण्ड तथा कोक ने नारफोक मे नई फसलो तथा नई पद्धतियो का प्रवेश किया था। सबसे महत्वपूर्ण शलजम, शकरकद जैसी मूल (जड) वाली फसले उगाना और हलकी भूमि को उपजाऊ बनाना था। उनके उदाहरण ने उनकी पिछडी हुई काउटी को अग्रेजी कृषि का अग्रगण्य बना दिया। १७७६ तथा १८१६ के बीच कोक ने अपनी भूमि का इतना विकास किया जिससे उसकी होलखम जागीर का वार्षिक लगान २००० पौड से बढकर २०,००० पौड हो गया और फिर भी जो आसामी ये ऊँचे लगान देते थे उनके पास प्रचुर धन हो गया था। वह उन्हे खेती के लिए कठोर शर्तो पर दीर्घकालीन पट्टो की सुरक्षा प्रदान करता था। मूल सुधारवादी कॉवेट के अनुसार, ये आसामी अपने जमीदार के लिए वैसे ही स्नेहपूर्ण शब्दो का प्रयोग करते थे जैसे बच्चे अपने माता-पिता के लिए करते है। होलखम जागीर मे उसका भेडो के बाल काटने का उत्सव सारे योरोप मे प्रसिद्ध था। वहा कृषि विशारद आते थे जो कभी-कभी एक साथ नारफोक के दूरस्थ किनारे मे छह सौ की सख्या मे यह देखने के लिए एकत्र हो जाते थे की खेती कैसे की जाती है और भेडे कैसे पाली जाती है। अपने शाही आतिथेय के आवास मे अस्सी दर्शक तक एक साथ रह सकते थे। शेष दर्शक पडोसी फार्मो मे ठहराये जाते थे।

प्रत्येक शायर के जमीदारो मे टाउशेण्ड तथा कोक के अनुकरणकर्ता थे। और नई शैली के कृषक, जैसे लीसेस्टरशायर का राबर्ट बेकवेल, जो भेडो तथा पशुओ की

उन्नत नस्लो को पालते थे, स्वय सक्रिय नवोन्मेषकर्ता थे। इस सबका परिणाम राष्ट्रीय उपभोग के लिए रोटी तथा बीयर (जौ की शराब) के लिये अनाज के उत्पादन मे भारी वृद्धि हुई थी। इससे भी अधिक वृद्धि पशुओ की सख्या और आकार मे हुई थी। इसका कारण यह था कि अभी तक इगलैड की सर्वोत्तम भूमि पर विशाल खुले हुए खेतो मे कृषि की जाती थी और उनमे अनाज कट जाने पर अनाज के डठलो मे पशु भोजन की तलाश मे फिरा करते थे। अब उन्ही को मध्य आकार के खेतो मे घेर दिया गया था जिन्हे कटीली झाडियो से विभाजित किया जाता था। इनमे उगी हुई अच्छी घास को पशु चरते थे और साथ ही पहले की अपेक्षा बहुत अधिक कृषि-भूमि पर कृत्रिम घास एव मूलवाली फसले उगाई जाती थी जिससे ठडी ऋतु मे भेडो तथा पशुओ के लिए चारा (भोजन) जुटाया जा सकता।

इस प्रकार से, जबसे मनुष्य ने खेती करना प्रारम्भ किया तबसे प्रथम बार पतझड के पश्चात् सम्पूर्ण ढोरो की हत्या बन्द हुई। अब नमकीन मास का स्थान ताजे गाय-बैल के मास और भेड बकरी के मास ने ले लिया था। इसका तुरन्त परिणाम यह हुआ कि स्कर्वी तथा अन्य चर्म रोग, जिनसे रसेल तथा वर्नी जैसे उच्चत्तम घराने सत्रहवी शताब्दी मे पीडित होते थे, अब केवल निर्धन लोगो मे ही यदाकदा होते थे। सम्पूर्ण वर्ष भर पशुओ को खिलाने की नई सुविधाओ तथा कृपको के उन्नत नस्ल के पशुओ तथा भेडो को खरीदने तथा उनके पालन के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए प्रोत्साहित किया। स्मिथफील्ड मे बिकने वाले पशु तथा भेडो का औसत वजन १७१० तथा १७९५ के बीच दुगना हो गया था।[१]

किन्तु गोमास तथा भेड बकरी के मास के उत्पादन मे इस विस्मयकारी वृद्धि से कृषि मे किसी प्रकार की कमी नही आई। इसके विपरीत, एक अवधि तक गेहू और जौ का उत्पादन देश की जनसख्या की रोटी तथा बीयर की आवश्यकताओ की पूर्ति करता रहा, जो उस शताब्दी भर मे दूनी हो गई थी। साथ ही अनाज की सहायता से इगलैड के निर्यात को बढाया गया। केवल शताब्दी के उत्तरार्घ मे जब जनसख्या बहुत अधिक वेग से बढी तब आयात किया हुआ अनाज धीरे-धीरे निर्यात के बराबर हो गया, जो बाद मे निर्यात के परिणाम से बहुत अधिक बढ गया।

---

[१] १८वी शताब्दी के इगलैड मे सभी प्रकार के घोडो मे सुधार होना समान महत्वपूर्ण घटना थी। स्टुअर्ट काल मे अग्रेज लोग अरब और बारबैरी को घुढ-दौडो और शिकार के लिए घोडे खरीदने जाते थे। जार्ज तृतीय के शासनकाल मे सारा ससार इगलैड मे घोडे खरीदने आता था फिर चाहे वे घोडे घुड दौड अथवा गाडियो मे जोतने के लिए चाहे जाते। उस समय शिकार, यात्रा और कृषि के लिए घोडा अनिवार्य होता था और इन सभी मे अग्रेजी सभ्रान्तजन उस युग मे लगे थे।

भूमि की उन्नति इस सीमा तक हो गयी कि जहा पहले केवल राई, ओट (जई) तथा जौ जैसे मोटे अनाज ही उत्पन्न होते थे, वहा अब गेहू भी उत्पन्न होने लगा। इगलैंड की भूमि और जलवायु केवल कुछ क्षेत्रो मे, मुख्यतया ईस्ट एग्लिया मे, गेहू की खेती के अनुकूल है। फिर भी बडी जागीरो द्वारा प्रदत्त पूजी के विनियोग से भूमि की इतनी कृत्रिम उन्नति की गई कि अठारहवी शताब्दी के दौरान मे सभी वर्गों के अग्रेज लोग इतने विलासप्रिय हो गए कि वे उत्कृष्ट गेहू की रोटी खाना ही पसन्द करते थे जिसे पहले के समय मे केवल धनी लोगो की विलासिता माना जाता था। यह नई माग, जो शहरो मे प्रारम्भ हुई थी, अब गावो तक फैल गई, यहा तक कि दरिद्रो मे भी इसकी माग बढने लगी। मोटे अनाजो से बने सम्पूर्ण खाद्यपदार्थों का परित्याग बुरा था, क्योकि बेईमान रोटी पकाने वालो द्वारा वास्तव मे जो परिष्कृत आटे की रोटिया दी जाती थी वे अग्रेज जाति के स्वास्थ्य तथा दातो के लिए हानिकारक थी। किन्तु यह पूजी के उच्च विनियोजन से युक्त खेती की प्रभावपूर्णता का प्रमाण था।[1]

इस आर्थिक लाभ की सामाजिक कीमत स्वतत्र कृषको की सख्या मे कमी तथा भूमिहीन श्रमिको की वृद्धि के रूप मे चुकानी पडी। बहुत हद तक यह एक अनिवार्य अनिष्ट था इससे कम हानि हुई होती यदि कृषि क्षेत्र से प्राप्त अधिक लाभ का उचित वितरण होता। किन्तु जबकि जमीदार का लगान, पादरी का वेतन, कृषक तथा मध्यस्थ का लाभ सभी मे तीव्र वृद्धि हुई, खेतिहर श्रमिको का भूमि मे स्वल्प अधिकार समाप्त हो गया और उद्योग मे रोजगार मिलने से उनके परिवारो के अधिकार छिन गए। उन्हे इन सबका मुआवजा ऊँची मजदूरी के रूप मे नही मिला। दक्षिणी काउटियो मे भी खेतिहर श्रमिको की स्थिति पराधीनता एव दरिद्रता की हो गई।

जनसख्या मे वृद्धि के कारण मजदूरी का बाजार-मूल्य नीचा बना रहा। और यह उस समय हुआ जब श्रमिक की आजीविका के स्वतन्त्र साधन समाप्त हो रहे थे। अतएव जार्ज तृतीय के शासनकाल मे मजदूरो मे जीवन निर्वाह योग्य मजदूरी के लिए सौदा करने की उतनी सामर्थ्य नही थी जितनी की एडवर्ड तृतीय के शासनकाल मे उनके पूर्वजो मे भी, जबकि प्लेग के कारण मजदूरो की कमी हो गई थी। इसके अतिरिक्त, निर्धन अब युद्ध के लिये न शस्त्र सज्जित थे और न उपयुक्त रूप से प्रशिक्षित ही थे। जैसा कि १३८१ के विद्रोह के काल मे साधारण जनसमुदाय अपने "धनुषो तथा भालो" के कारण बडा शक्तिशाली था वैसा वह अब नही था। उन दिनो ससद के कानूनो के बावजूद वे मजदूरी तथा अधिकारो की अपनी मागे पूरी कराने के लिए हडताल करने बाहर आ जाते थे, उनके समूह की अगुआई पुराने तीरन्दाज करते थे।

---

[1] जे सी ड्रमड और ए विल्ब्राहम, **दि इंगलिशमैन्स फूड** (१६३६) पृ० १५७, १६५, २२२-२२६, सर विलियम ऐशले, **दि ब्रेड आफ अवर फादर्स**, १६२८।

न अब किसानो के अत्यन्त दयनीय मामले को ही राजनीतिज्ञो से वैसी सहानुभूति मिल सकती थी जैसी कि ट्यूडर युग की कही कम घेरेबदियो की स्थिति मे मिल जाती थी। उस समय खेतो की घेरेबन्दी एक सार्वजनिक अपराध माना जाता था। इस समय यह एक सार्वजनिक कर्त्तव्य हो गया था। घेरेबन्दी कानूनो के निर्माता वर्गो से किसी सहानुभूति के बिना कृषक अपने मामले को प्रभावशाली ढग से प्रस्तुत करने मे असमर्थ था। खुले खेत मे यदि उसकी पट्टी से अथवा सामूहिक भूमि मे उसकी गाय के लिए चरागाह से उसे वचित किया जाता तो उसे मिलने वाली कुछ गिन्निया शीघ्र ही सार्वजनिक भवन मे उडा दी जाती। यदि उसके सामूहिक अधिकारो के बदले मे ससदीय आयुक्त उसे कुछ दूरवर्ती भूमि भी देता तो उस भूमि से पानी निकालने मे वह असमर्थ था। वह केवल किसी धनी व्यक्ति को पुन सस्ती दर पर उसे बेच देता था जो सामान्यतया खुले खेत को नए सघन फार्मों मे परिवर्तित करने मे सलग्न थे। इसका कारण यह था कि यही व्यक्ति अपने व्यय पर उस भूमि की बाडी (आलवाल) बना सकते थे अथवा उसके पानी के निकास की व्यवस्था कर सकते थे। उन्हे पू जी के इस विनियोग से किसी समय बडा लाभ मिल सकता था।[1]

भविष्य मे, इगलैंड की भूमि पर खेती करने के लिए एक मनुष्य के पास या तो स्वय की पू जी अथवा दूसरे की पू जी होनी चाहिये। असामी किसान अपने जमीदार की पू जी का लाभ उठाता था और उन दोनो को बैंक से ऋण लेना पडता था। भूमि की घेरेबन्दी के साथ साथ अग्रेजी बैंकिग पद्धति का भी विकास हुआ क्योकि धनी लोग भी अपनी भूमि की बाड़ीबन्दी तथा अन्य सुधार उधार लिए हुए धन से करते थे। इस पद्धति के अन्तर्गत निर्धनतम वर्ग को खेती मे सफल होने का कोई अवसर नही था, क्योकि उसे ऋण कही से नही मिलता था। वह अवसर भी कम हो गया जब ग्रामीण भूमि के नवीन वितरण मे उसके हितो की बहुधा उपेक्षा की जाती थी। यद्यपि राष्ट्रीय उत्पादन के दृष्टिकोण से सामान्य भूमि की घेरेबन्दी बहुत वाछनीय थी फिर भी उसका

---

[1] गाव की भूमि से पानी की निकासी और उसकी घेरेबन्दी की बडी कठिनाई और भारी खर्च का सविस्तार उदाहरण बोर्न के मामले मे दिया गया है जिसका विवरण गनिग ने अपनी रचना **रेमिनीसेन्सेज आफ कैम्ब्रिज**, २, पृ० २४४-२५० मे किया है। बाडी के अतिरिक्त, घेरेबन्दी के साथ पानी की निकासी की एक पूर्णतया नई पद्धति काम मे लाई जाती थी जिसमे पुरानी मेडो (जो नालियो और सीमाओ दोनो का ही काम करती थी) के बीच की नालिया मिट्टी से भरदी जाती थी। मेडो और नालियो से पानी के निकास की पद्धति दीर्घकाल मे जमीन के लिए हानिकर सिद्ध हुई, और तब खेतो की घेरेबन्दी करने वालो को खेतो की सतह बराबर करने और नालियो को तोपने मे काफी व्यय करना पडा। कभी कभी नालियो से ऊपर मेडो की ऊचाई ५ फीट तक होती थी।

अर्थ निर्धन व्यक्तियो को अपनी गायो तथा बतखो से वचित करना होता था। साथ ही, बहुधा उसे कई अन्य छोटे अधिकारो, जैसे ईंधन के लिए लकडी काटना आदि, से भी वञ्चित होना पडता था जिनके सहारे वे अपनी स्वतत्र आजीविका अर्जित करते थे। (इर्न्ले, **इगलिश फार्मिंग**, पृ० ३०५-३०७)।

वस्तुत यह किसी भी प्रकार से निश्चित नही है कि नई व्यवस्था के अन्तर्गत निर्धन ग्रामीणो की आर्थिक स्थिति अतीत की तुलना मे हीनतर थी, (क्लैफम, **इकनॉमिक हिस्ट्री ऑफ माडर्न ब्रिटेन**, प्रथम खड, चतुर्थ अध्याय)। किन्तु उन्हे छोटे भू-स्वामी तथा कृषक की तुलना मे कम आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त थी। कुलीनतन्त्र के उस युग मे इस पर किसी का ध्यान नही जाता था। किन्तु जब आगामी युग मे नगरो मे नई शक्ति प्राप्त कर जनतन्त्र की कठोर एव तीखी दृष्टि 'कृषिगत हितो' पर पडी तो कुलीनतन्त्रात्मक विशेषाधिकारो के लिए एक स्वाभाविक अरुचि को अनुभव किया गया। जैसा कि अन्य योरोपीय देशो मे कृषक वर्ग अपनी रक्षा के लिए प्रयास करता था वह दशा अब इगलैड मे न थी। अत विक्टोरिया के शासनकाल के अन्त मे जब अन्तत विदेशी प्रतियोगिता चुभने लगी तो नगरीय मतदाता ब्रिटेन की कृषि को विनाश से बचाने के लिए किसी भी प्रस्ताव को सुनना नही चाहते थे।

अठारहवी शताब्दी मे, बहुत से लोग जिन्हे प्रणाली मे परिवर्तन के कारण भूमि से विलग होना पडा था, स्वेच्छा से बाहर चले गये और अन्यत्र जाकर बस गए। नये और अधिक धनी इगलैड मे बसे हुए तथा बहुत से समृद्ध व्यापारी, औद्योगिक एवं व्यावसायिक परिवारो के पूर्वज, गावो के छोटे भूस्वामी, स्वतन्त्र कृषक तथा किसान थे जो अपनी भूमि को बेचकर नगरो मे आकर बस गए थे। विक्टोरिया युग के प्रसिद्ध व्यक्तियो के जीवन-चरित्रो मे बहुधा उनके स्वतन्त्र कृषक पूर्वजो से प्रारम्भ किया जाता है। उपनिवेशो को भी उस स्वस्थ और हृष्ट पुष्ट वर्ग से लाभ हुआ। अनेक मौसमी कृषको ने अपने फार्मों को सुरक्षित रखते हुए अन्य फार्मों को लगान पर ले लिया तथा कृषि सम्बन्धी परिवर्तनो का लाभ उठाकर बृहत्तर समृद्धि अर्जित की। अपनी स्थिति मे सुधार करने वाली अग्रेजो की सहज प्रवृत्ति ने गाव, नगर एव विदेश मे उन्हे धन, शक्ति तथा बुद्धि की तीव्र वृद्धि के लिए प्रेरित किया था। केवल कुछ दिशाओ मे अग्रेजो को 'रूढीवादी राष्ट्र' कहा जा सकता है। औद्योगिक एव कृषि की क्रान्तियो मे वे सारे ससार के अग्रणी थे और चूंकि उन्होने इन क्षेत्रो मे पहल की इसलिए उन्होने कुछ भयकर भूले भी की।[1]

---

[1] १८वी शताब्दी की कृषि क्रान्ति के सम्बन्ध मे निम्नलिखित रचनाए पढिए **जान्सस इगलैड** (१९३३) मे आरबिन लिखित अध्याय १०, डार्बी, **हिस्टारिकल ज्योगराफी आफ इंगलैंड**, (१९३६) मे ईस्ट का अध्याय १३, गिलबर्ड स्लेटर, **दि इगलिश**

देहातो मे नगरो की ओर समान रूप से मनुष्यो तथा उत्पादको का निष्क्रमण सडका तथा जल यातायात मे उन्नति से प्रभावित हुआ था। आर्थर यग, जिसे ग्रामो के हित सदैव प्रिय थे, इस बात को देखकर प्रसन्न होता था कि अच्छी पक्की सडके बन गई थी जिन्होने नये बाजारो को खोल दिया था तथा इधर-उधर की बार-बार की यात्राओ से नये विचारो का आदान-प्रदान सम्भव कर दिया था। कृषि मे उन्नति से शीघ्र ही कस्बो मे किराये ऊचे हो गए थे। दूसरी ओर वह 'ग्रामीण प्रवास' के प्रारम्भ को देखता था और उसके लिए खेद-प्रकट करता था क्योकि यह प्रक्रिया निरन्तर जारी थी। इसका कारण भी वह अच्छी सडके मानता था। अपनी पुस्तक "**फार्मर्स लेटर्स**" (सपादित १७७१, पृ० ३५३) मे उसने लिखा था -"अच्छी सडको को दोषी ठहराना एक विरोधाभास तथा बेहूदगी प्रतीत होगी परन्तु फिर भी यह एक तथ्य है कि तीव्र गतिक यात्रा की सुविधाए उपलब्ध होने से राज्य की जनसख्या मे ह्रास होता है। देश के ग्रामो के युवको और युवतियो की आखे लन्दन पर उनकी आशा के अन्तिम चरण के रूप मे टिकी रहती है। वे देहात मे नौकरी किसी अन्य उद्देश्य से न करके केवल लन्दन जाने के लिए पर्याप्त धन जुटाने के लिए करते है। जिस काल मे घोडा-गाडी हिचकोले खाती हुई, रेगते हुए सौ मील की यात्रा करती थी तो उनके लिए लदन जाना सम्भव न था। उस समय किराया और अन्य व्यय बहुत अधिक थे। परन्तु आज कल एक देहाती व्यक्ति, जो लन्दन से सौ मील की दूरी पर रहता है, प्रात काल एक घोडा-गाडी पर सवार होता है और आठ या दस शिलिग का किराया लगाकर रात्रि मे लन्दन पहुँच जाता है। इस प्रकार पहले तथा आज की स्थिति मे पर्याप्त अन्तर है। आजकल केवल इधर उधर आना जाना ही बहुत आसान नही हो गया है वरन् लन्दन देखने वाले लोगो की सख्या दस गुनी हो गई है। निस्सदेह अब दस गुणा अधिक अत्युक्तिपूर्ण प्रशसा देहाती मूर्खो के कान मे पडती है जिससे वे अपने स्वास्थ्यकर और स्वच्छ खेतो को छोडकर धूल, दुर्गन्ध तथा कोलाहलपूर्ण प्रदेश मे जाने के लिए फुसला लिए जाते है।"

सचार साधनो मे उन्नति के बिना न तो औद्योगिक और न कृषि क्रान्ति का होना सम्भव था। रानी ऐन्नी की प्रजा के पास विशाल समुद्री पोत थे जिनसे भारी माल भारत तथा अमरीका को सरलता से भेजा जाता था। किन्तु स्वय अपने द्वीप के भीतर वे अब भी कोयले तथा लोहे के माल की बोरियो को लद्दू घोडो की पीठ पर लाद कर भेजते थे। क्योकि जहाँ कही भी मार्ग मे मिट्टी का थोडा सा फैलाव भी आ जाता था तो पहिए वाली गाडिया कीचड मे फस जाती थी तथा अग्रेजी सडको के गड्ढो

पेजेन्टरी एण्ड दि इन्कलोजर्स आफ कामन फील्ड्स (१६०७), हेमण्ड, **विलेज लेबरर** (१६११), लार्ड एर्नले, **इगलिश फार्मिग**, अध्याय ७-६ १६वी शताब्दी प्रारम्भ मे कृषि क्रान्ति के लिए देखिए क्लैफम, खड १, अध्याय ५।

मे फस कर टूट जाती थी, आर्थिक प्रगति के मार्ग मे बहुत कुछ करने के लिए उपरोक्त दशा मे परिवर्तन लाना आवश्यक था।

उस समय कोई प्रभावशाली स्थानीय अथवा केन्द्रीय प्राधिकरण नही था। यह अत्यधिक बेहूदी बात थी कि दूर-दूर से आने वाले यात्रियो द्वारा अधिकाशतया प्रयुक्त सडको के सरक्षण के लिए काउटी पर न होकर पैरिश पर व्यय भार पडता था। अत यह स्वाभाविक था कि या तो पैरिश उस कार्य को अपर्याप्त ढग से करता था अथवा उसे करता ही नही था। चू कि अठारहवी शताब्दी मे स्थानीय प्रशासन का सुधारना अथवा उसका पुनर्गठन करना असम्भव प्रतीत होता था अत निजी उपक्रम का आश्रय लेना पडता था जिसमे उस काल की सुधारात्मक प्रवृत्ति समाहित थी। अवरोधो से युक्त सडके बनाने वाली कम्पनियो को ससद की ओर से द्वार तथा चु गी के अवरोध खडा करने का अधिकार मिला था, वे सड़को के प्रयोग कर्ताओ पर वास्तविक अर्थ दड लगा सकते थे। (सडक के किसी विशिष्ट खड के पुन निर्माण अथवा उसके रख-रखाव के बदले मे) १७०० और १७५० के मध्य कम से कम चार सौ सडक अधि-नियम पारित किए गए थे और १७५१ से १७६० की अवधि मे यह सख्या बढकर सोलह सौ हो गई थी। सम्पूर्ण हेनरी काल मे थल सचार के साधनो मे निरन्तर उन्नति करने के लिए यह प्रधान व्यवस्था थी। सडको की उन्नति मे कई अवस्थाए थी और उतनी ही गाडियो की समकक्ष उन्नति मे। रानी ऐन्नी के काल मे, 'काच-गाडी' को मनुष्य के चलने की गति से छ घोडो का समूह खीचता था। १७५० तक स्टेट कोच मे, जो अधिक हल्का तथा अधिक द्रुतगामी था, दो अथवा चार घोडे जुते रहते थे। किन्तु इस गाडी मे अब भी स्प्रिग नही लगे थे, मालगाडी के डिब्बे के समान इसके पहिए भारी थे और इसके भीतर छ सवारिया बैठ सकती थी किन्तु बाहर किसी सवारी के बैठने का प्रबन्ध नही था। निर्धन मुसाफिरो को कभी कभी गाडी की छत पर रखे सामान के साथ लटकने दिया जाता था। ये गाडिया स्थान स्थान पर ठहरती थी तथा इनकी उलटने की दुर्घटनाए बहुत होती थी। मार्ग मे लुटेरो का बडा भय रहता था। वे किसी भी गाडी को लूट कर घोडो पर सवार होकर भाग निकलते थे। अतएव लूट-मार से रक्षा के लिए उन गाडियो मे बन्दूक से लैस लालकोटधारी रक्षको की बहुत माग थी। १७७५ मे नार्विक की गाडी एपिग फारेस्ट (वन) मे सात लुटेरो ने लूट ली थी, उनमे से तीन को रक्षक ने स्वय मारे जाने के पूर्व गोली से मार गिराया था।

जैसे जैसे सडको मे सुधार हुआ, निजी गाडिया अधिक हल्की एव सुन्दर हो गईं। दो सीटो वाली एक हल्की खुली हुई गाडी मे, जिसके पहिए ऊचे होते थे तथा फुर्तीले घोडो की एक जोडी जुती रहती थी, महिलाओ को ले जाना शताब्दी के अन्तिम भाग मे एक फैशनेबल मनोरजन था। लम्बी यात्राओ के लिए यात्रा गाडियो तथा अश्वा-

रोही कोचवानो को किराये पर लेना एक साधारण चलन था। ऐसा विशेषकर मुख्य मार्गों पर होता था क्योकि उन पर स्थित सरायो के थके हुए घोडो के बदले मे अन्य घोडो की मिलने की नियमित व्यवस्था थी। अतीत के किसी युग की अपेक्षा अब सडको पर अधिक भीड-भाड रहती थी क्योकि जब गाडियो की सख्या अधिक हो गई थी तब घोडो पर सवारी करने वालो की सख्या मे कोई कमी नही हुई थी। डा जॉन्सन के काल मे, अधिकतर उन्नत यातायात के कारण, सामाजिक, व्यापारिक, और बौद्धिक आदान-प्रदान की मात्रा उस काल की उच्च सभ्यता का कारण एव विशेषता दोनो ही थी।[1]

वास्तव मे, सभी वर्गो के अग्रेजो मे अपने अपने साधनो के अनुसार यात्रा करने की प्रबल इच्छा जागृत हो गई थी। सबसे धनी लोग फ्रास और इटली का भव्य भ्रमण करते थे। छ मास अथवा दो वर्ष तक कुछ समय सरायो मे ठहर कर और शेष समय विदेशी उच्चकुलो के घरो मे अतिथि रहकर वे अपने ग्रामीण आवासो को वापिस लौट आते थे और अपने साथ बहुत सी मूर्तिया और चित्र ले आते थे, जिन्हे या तो वे अपनी सुरुचि से चुनते थे अथवा उनकी अनभिज्ञता के कारण जिनको उनके मत्थे मढ दिया जाता था। अग्रेज सामन्तो के प्रासादो की दीवारो पर पुराने प्रख्यात सागरपार के कलाकारो के प्रामाणिक अथवा नकली चित्रो का जमघट रहता था। उनके साथ स्वदेश के रेनल्ड्स, रोसानी तथा गेन्सबारो जैसे कलाकारो द्वारा प्रचुरता से निर्मित चित्र भी लटकाये रहते थे। योरोप मे पर्यटको की यात्राओ मे अग्रेज सभ्रान्त जनो का एकाधिकार सा था। विदेशी सरायो के मालिक इन सभ्रान्तजनो को 'मिलाई' (मेरे सरकार) के सम्मानसूचक पद से सम्बोधित करते थे। इन्ही पर्यटको की आवश्यकताओ से कैले से लेकर नेपल्स तक के नगरो की सरायो का स्तर निश्चित होता था। १७८५ मे गिबन को बताया गया था कि चालीस हजार अग्रेज, स्वामी और उनके सेवक मिलाकर, उस समय यूरोप के महाद्वीप मे या तो पर्यटक थे अथवा निवासी हो गए थे।

इगलैड के भीतर सडको मे सुधार के कारण यात्री सुदूरवर्ती स्थानो को चले जाते थे। १७८८ मे विल्बरफोर्स ने लिखा था, "टेम्स के किनारो पर दर्शको की शायद ही इतनी भीड-भाड होती हो जितनी कि विण्डरमेर के किनारो पर होने लगी थी। उस समय के पूर्व वहा गाडियो के अलावा अन्य कोई निकट के पहाडो पर भी नही

---

[1] १७७४ मे पादरी वुडफोर्ड ने आक्सफोर्ड से सोमरसेट स्थित कैसिल कैरी तक एक घोडा-गाडी मे जाने के लिए ४ डालर ८ शिलिग चुकाए थे। इस १०० मील के फासले को उसने एक दिन मे ही पूरा किया था। इससे उस समय चलने वाली घोडा-गाडी की रफ्तार और भारी किराए पर प्रकाश पडता है।

जाता था। अच्छी सडको तथा गाडियो के कारण व्यू नैश के काल मे बाथ मे दर्शको की इतनी भीड हो जाती थी कि उस युग की सुविधा और प्रभूत शान शौकत के अनुकूल उस नगर की सडको का पुर्नानर्माण कराने का विचार किया गया। और १८०१ की प्रथम जनगणना के समय इस फैशनेबुल स्वास्थ्य केन्द्र की जनसख्या तीस हजार पाई गई। जनसख्या के आधार पर इगलैंड के नगरो मे इसका नवा स्थान था।

किन्तु अभी भी स्थानीय मिट्टी के अनुसार सडको की दशा मे बडी भिन्नता मिलती थी। १७८६ मे भी शरत्कालीन वर्षा होने पर हीयर फोर्डशायर की प्रमुख सडको पर मालवाही तथा सवारी गाडियो का निकलना असभव हो जाता था। लगभग आधे वर्ष भर काउटी के परिवार एक दूसरे के उहा केवल घोडो पर सवार होकर जा सकते थे। इन यात्राओ मे युवा महिलाए घोडे पर सवार अपने भाइयो के पीछे हलकी काठी पर बैठती थी। अप्रैल मास समाप्त होते-होते इन सडको की सतह को आठ-दस घोडो द्वारा खीचे गये हलो से समतल किया जाता था। (गुनिग के **सस्मरण**, १, पृ० १००)। परन्तु अधिकाश काउटियो मे मुख्य सडको की इतनी अविकसित दशा नही थी, केवल कुछ छोटी अथवा सहायक सडको की इतनी खराब दशा थी।

नई इजीनियरी पद्धतियो तथा सडको की नई सतहो मे निरन्तर परीक्षणो द्वारा टर्नपाइक ट्रस्टीगण ने अन्तत पक्की सडको के निर्माण मे पूर्णता प्राप्त कर ली थी। इन सडको पर द्रुतगामी गाडिया, जिनमे गाडियो के लिए सरायो से घोडो की टोलिया जुती रहती थी, सरपट दौड से आठ से दस मील प्रति घटा की रफ्तार से चलती थी। प्रमुख सडको की गरिमा का यह सक्षिप्त काल वाटरलू युद्ध तथा रेलो के प्रारम्भ के बीच मे पडा था। १८४० तक इगलैंड मे २२,००० मील लम्बी अच्छी सडके बन गई थी जिन पर ८,००० चुगी एकत्र करने के लिए द्वार तथा किनारे के अवरोध स्थित थे।

जैसे जैसे प्रमुख सडको मे सुधार हुआ, माल का यातायात तथा सवारियो का आवागमन उसी अविरत गति से बढा। पहले तो मालवाही गाडिया लद्दू घोडो की पूरक होती थी किन्तु कालान्तर मे उन्होने लद्दू घोडो को स्थानच्युत कर दिया। सड़को पर सबसे अधिक परिचित ध्वनि घटियो के बजने की होती थी जो यह घोषणा करती थी कि चार घोडे जुती हुई मालवाही गाडी (वैंगन) आ रही है, घोडो के सरपट दौडने से उनके कन्धो से सगीतमय ध्वनि होती थी। सडक की यात्रा का यह एक अलिखित नियम था कि मालवाही गाडिया आते ही सभी प्रकार के यात्री अथवा सवारिया सडक के किनारे आकर उन्हे आगे निकल जाने देते थे।

औद्योगिक परिवर्तन लाने मे सडको के सुधार की तुलना मे 'देश के भीतर जल यातायात' मे सुधार कम महत्वपूर्ण नही था। अठारहवी शताब्दी के पूर्वार्ध मे यातायात-योग्य नदियो को गहरा करने तथा उनमे यथावश्यक जलबध बनाने मे बहुत

सक्रियता देखी गई थी। शताब्दी के उत्तरार्ध मे कृत्रिम जलमार्गो के निर्माण मे उतनी ही सक्रियता थी। ब्रिजवाटर के ड्यूक को "आन्तरिक यातायात का पिता" कहा जाता है। किन्तु उसे अग्रेजी नहरो का पिता कहना अधिक सही होगा क्योकि उससे पूर्व भी नदियो के स्वाभाविक मार्गो पर यातायात तो सदा ही होता था। यार्क, नार्विच तथा अन्य अनेक केन्द्र, जहाँ देश के भीतरी भाग का व्यापार होता था, सदैव ही जल-यातायात पर निर्भर रहते थे। अनेक पीयरो के समान ब्रिजवाटर भी कोयले का स्वामी था। वह अपने कर्त्तव्यो और अवसरो का पालन बडी गभीरता से करता था। अपनी वोर्सले की खानो को मैनचेस्टर से नहर द्वारा जोडने के लिए इस महान अभिजात पुरुष ने १७५९ मे अपने ससदीय प्रभाव तथा अपनी पूजी से अपने अर्ध-निरक्षर इजीनियर ब्रिण्डले की प्रतिभा को सहयोग दिया। इस प्रख्यात साझेदारी, जो योरोप महाद्वीप के अभिजातवर्ग की तुलना मे अग्रेज अभिजातवर्ग की प्रमुख विशेषता थी, ने एक ऐसे आन्दोलन का सूत्रपात किया जिसने अगले पचास वर्षो मे सारे इगलैंड मे जलमार्गो का जाल बिछा दिया। उन्नत इजीनियरी प्रवविधियो के कारण पेन्नाइन तथा काट्सवोल्ड जैसी पहाडियो मे भी सुरगे बनाई जा सकी तथा नदियो की घाटियो के पार ऊचाइयो पर जलमार्ग (नालिया) बनाये जा सके।

नहर आन्दोलन दक्षिणी लकाशायर तथा पश्चिमी मिडलैंड्स के तीव्र विकासशील औद्योगिक क्षेत्रो मे प्रारभ हुआ और शीघ्र ही सम्पूर्ण देश मे फैल गया। १८६० से दस वर्ष के भीतर विडले ने अपने ड्यूक की सहायता से मैनचेस्टर लिवरपूल नहर का निर्माण कर एक महत्वपूर्ण इजीनियरिग कार्य कर डाला था। बाद वाले दशक मे उन्होने ग्राण्ड जकशन कैनाल बनाकर मर्सी से ट्रेण्ट को जोड दिया था। ग्रामीण क्षेत्रो के जिन भागो मे इस नहर का उपयोग होता था वहा पर इसके प्रभावो का वर्णन १७८२ मे टॉम्स पेनैण्ट ने इस प्रकार किया था

"ग्रामीण घर अब दयनीय छप्पर से अधढका नही था, उस पर वेल्स अथवा कम्बरलैंड की सुदूरवर्ती पहाडियो से लायी गई पत्थर की पट्टिया अच्छी तरह से ढकी हुई थी। जो खेत पहले ऊसर पडे रहते थे उनका पानी निकालकर तथा उनमे खाद डालकर सिचाई-कर रहित नहरो से उन्हे सम्बन्द्ध कर दिया जाता था। वे सुन्दर हरियाली से लहराया करते थे। जिन स्थानो पर पहले कोयले का उपयोग शायद ही कभी होता था वहा अब कोयला प्रचुर मात्रा मे उचित दरो पर मिलता था। इससे भी अधिक सार्वजनिक उपयोगिता की एक अन्य बात हो गई थी। अनाज के एकाधिकारियो को अब अपने कुख्यात व्यापार की मनाही थी। क्योकि अब लिवरपूल, ब्रिस्टल तथा हल के बीच सचार सबध स्थापित हो गया था तथा नहर अनाज का प्रचुर उत्पादन करने वाले क्षेत्रो से निकलती थी, इसलिए अब अनाज लाने ले जाने की सुविधा मिल गई थी (जो कि अतीत के युगो मे अज्ञात थी)।"

नहर पद्धति तथा सडको ने द्वीप के भीतर (वस्तुओ) के विनिमय को प्रोत्साहित करने से भी अधिक कार्य किया। उन्होने सागर-पार के व्यापार की वृद्धि मे तीव्रता ला दी। योरुप, अमरीका, एशिया तथा अफ्रीका से लाया गया माल अब अधिक परिमाणो मे सम्पूर्ण इगलैड के भीतर वितरित किया जा सकता था। इसी प्रकार कोयले तथा निर्मित वस्तुओ के बढे हुए निर्यात से विदेशी माल को अधिक आसानी से खरीदा जा सकता था। अब काले प्रदेश तथा पेन्नाइन पहाडियो के भारी से भारी खनिज पदार्थों तथा कपडे के उत्पादनो तथा स्टैफोर्ड शायर पाटरी के कोमल बर्तनो को अब सुविधा पूर्वक जलमार्ग से लन्डन, लिवरपूल, ब्रिस्टल तथा हल के बन्दरगाहो को ले जाया जा सकता था जहा से वे विदेशो को भेजे जाते थे।

इस ढग से ब्रिटिश व्यापार का सम्पूर्ण स्वभाव और क्षेत्र केवल धनी लोगो की विलासिताओ की पूर्ति के स्थान पर सभी वर्ग के लोगो की आवश्यकताओ की पूर्ति करने वाला आधुनिक रूप ग्रहण कर रहे थे। मध्ययुगो मे, इगलैड का समुद्र पार व्यापार कुलीनो, नाइटो तथा बडे व्यापारियो के लिए मदिरा, मसालो, रेशमी कपडो तथा अन्य फैशन की वस्तुओ की खोज मात्र था। इससे किसानो की जनसख्या पर कोई प्रभाव नही पडता था। स्टुअर्ट के काल मे यह प्रधान तथा अपरिवर्तित रहा यद्यपि अधिक भारी जहाजो के निर्माण से दोनो निर्यात तथा आयात की मात्राए बढ गई थी तथा उस युग के बृहत्तर एव अधिक धनी मध्यम वर्ग के लोगो मे विलासिता की वस्तुओ का प्रयोग बढ रहा था। किन्तु यह केवल अठारहवी शताब्दी मे सभव हो सका कि विदेशो से कपडा चाय तथा काफी का आयात देश की निर्धन जनता के उपयोग के लिए हुआ।

अनेक उदाहरणो मे मे केवल एक यहा देना पर्याप्त होगा। चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल मे हजारो सम्पन्न लन्डन वासी ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा लाए गए नए फैशनेबल पेयो का आनन्द लेने काफी घरो मे जाते थे। किन्तु जार्ज तृतीय के शासन-काल के प्रारभ मे नगरो तथा देहातो मे सभी वर्ग अपने अपने घरो मे चाय पीते थे। अपनी कृति "फार्मर्स लेटर्स" (१७६७) मे आर्थर यग ने खेद प्रकट करते हुए लिखा था कि "चाय तथा चीनी पर इतने विशाल धन का अपव्यय हो रहा है जो चालीस लाख अतिरिक्त लोगो को रोटी देने के लिए पर्याप्त होगा।" चाय पीना एक राष्ट्रीय आदत बन गई थी, यह मदिराओ तथा बीयर के उपभोग का प्रतिस्पर्धी हो गई थी। चाय पीकर मनुष्य प्रफुल्लित होता था किन्तु उसे मादकता नही आती थी। इसी कारण चाय मजदूरो के घरो तथा कवि कॉवपर के प्रासाद मे सर्वत्र समान महत्वपूर्ण मानी जाती थी। १७९७ मे सर फ्रेडेरिक ईडन ने लिखा था—

"यदि कोई व्यक्ति मिडिलसेक्स और सर्रे के साधारण घरो मे भोजन के समय जाने का कष्ट करे तो उसे ज्ञात होगा कि निर्धन परिवारो मे चाय केवल प्रात और साय एक साधारण पेय नही है वरन् भोजन के समय यह बडी मात्रा मे पी जाती है।"

निर्धन लोग चाय की कडुआहट मिटाने के लिए अधिक परिमाण मे चीनी का प्रयोग करते थे। ब्रिटिश पश्चिमी हिन्द द्वीप समूह से आयात की हुई चीनी अब प्रत्येक भोजन की मेज पर दिखती थी जबकि शेक्सपीयर के काल मे भूमध्यसागर के बन्दरगाहो से बहुत थोडी मात्रा मे आयात की हुई चीनी केवल विलासिता की वस्तु थी।[1]

जब तक नवयुवक पिट ने उच्च सीमा शुल्को मे कमी नही की तब तक बहुत तस्कर व्यापार होता था। १७८४ मे पिट ने गणना की थी कि इगलैंड मे १,३०,००,००० पौड की खपत होती थी जिसमे से केवल ५५ लाख पौड पर सीमा शुल्क अदा किया जाता था। (लेको, इगलैंड (सपादित) १८४२, ५, पृ० २९६)। तस्करी का लोगो के जीवन मे वही स्थान था जो जगल या शिकार की चोरी का, उन सभी को समान निर्दोष माना जाता था। पार्सन वुडफोर्ड नामक एक वास्तव मे अच्छे और सम्मानित व्यक्ति ने २९ मार्च सन् १७७७ को लिखा था "तस्कर एण्ड्रयूज आज रात को लगभग ११ बजे छ पौड वजन का हाईसन चाय का एक थैला मेरे पास ले आया। हम लोग सोने वाले ही थे कि उसने मकान की खिडकी के पास सीटी बजाई। इससे हम थोडा सा डर गए थे। मैने उसे कुछ जेनेवा निर्मित शराब दी और १०½ शिलिग प्रति पौड की दर से उसे चाय का मूल्य दे दिया।" इस द्वीप के रेक्टर निवासो के निवासी 'तस्कर एड्रयूज' के बारे मे इस प्रकार सोचा और बात किया करते थे जैसे कोई 'एड्रयूज पसारी' की बात कर रहा हो।

सभी घरो मे चाय, चीनी और तम्बाकू का आना (चाहे चुगी कर मे चुगी चुकाकर आती हो अथवा तस्कर के गुप्त स्थानो से) तथा मुख्यतया विदेशो से लकडी का आयात होना[2] हमको उस समय की याद दिलाते है जब आधुनिक इगलैंड की ऐतिहासिक सीमाये प्रारभ होती है। इगलैंड का एक समुदाय था जो समुद्र पार महान् साम्राज्य के एक केन्द्र के रूप मे विद्यमान था तथा जहा सभी वर्गों के सामान्य उपभोग के लिए सामान की पूर्ति एक महानतर समुद्र-पार व्यापार से होती थी। जिस समय

---

[1] सन् १७०० मे इगलैंड मे केवल १० हजार टन चीनी की खपत होती थी, यद्यपि उस काल तक इगलैंड के अपने चीनी उत्पादक उपनिवेश बन चुके थे। कहने का तात्पर्य यह है कि इगलैंड की जनसख्या दूनी हो गई थी किन्तु १८वी शताब्दी मे प्रत्येक अग्रेज द्वारा खाई जाने वाली चीनी की मात्रा औसतन ७।। गुणा हो गई थी। श्रमिक वर्ग की चाय पीने की आदत के लिए पढिए जे सी ड्रमड, **दि इगलिशमैन्स फूड**, पृष्ठ २४२-२४४।

[2] १७७८ और १८०२ के बीच इगलैंड मे उत्तरी योरुप से पहाडी लकडी के लगभग दो लाख बोझ आयात किए जाते थे। (क्लैफम, १, पृष्ठ २३७)।

जार्ज तृतीय सिहासन पर बैठा उसके पहले ही इगलैड के कुछ प्रमुख घरेलू उद्योग, जैसे विशेषकर लकाशायर का तीव्रता से विस्तारशील कपडे का निर्माण, सुदूर देशो से आयात की हुई कच्ची सामग्री पर पूर्णतया निर्भर था। विक्टोरिया के युग मे तो समुद्र के पार के देशो से लाई गई वस्तुओ की सूची मे रोटी तथा मास को भी सम्मिलित कर लिया गया था। इससे छोटे से द्वीप की सम्पदा और जनसख्या मे विस्तार पर लग सकने वाली अन्तिम सीमा भी हट गई किन्तु युद्ध के समय इसके भाग्य के लिए एक खतरा उत्पन्न कर दिया।

आइए, अब अठारहवी शताब्दी के मध्य को लौट चले। उस समय लडन के बन्दरगाह पर ससार के प्रत्येक भाग से जहाज आते थे, किन्तु इसे इगलैड के ईस्ट इण्डिया व्यापार का एकाधिकार प्राप्त था। टेम्स नदी पर चीन और भारत से शोरा, मसाले और रेशम के ढेर के ढेर आया करते थे किन्तु चाय, पोर्सलीन के बर्तन तथा बुनी रूई की वस्तुए उन सुदूर देशो से इतने परिमाण मे आयात किए जाते थे कि जिससे सर्वसाधारण को वे उपलब्ध हो सके। इन वस्तुओ के आयात से नई मागे उत्पन्न हुई तथा उनके लिए लोकप्रिय मागे इतनी अधिक हो गई कि देश के निर्माताओ को रूई की वस्तुएँ तथा चीनी के बर्तन बनाने पडे।

अमरीका से व्यापार लन्डन, ब्रिस्टल तथा लिवरपूल के बन्दरगाहो मे होता था। मध्ययुगो मे लिवरपूल चेस्टर बन्दरगाह का सहायक मात्र था, किन्तु जैसे जैसे ही नदी का मुहाना रेत से भर गया प्राचीन रोमन नगर का समुद्री व्यापार धीरे धीरे समाप्त हो गया और मर्सी नदी के मुहाने पर स्थित उन्नतस्थित कस्बे ने उसका स्थान ग्रहण कर लिया। १८०१ की जनगणना मे लिवरपूल की आबादी ७८,००० थी जो अपने पडोसी मैनचेस्टर सैलफोर्ड की ८४,००० की जनसख्या को छोडकर सभी प्रान्तीय नगरो से बडा था।

अमरीकी व्यापार की जिस शाखा का विशेष सम्बन्ध लिवरपूल से था वह दास-व्यापार था, जिसका लकाशायर मे कपडे के निर्माण से घनिष्ट सम्बन्ध था। अट्लाटिक सागर के पार जाने वाले दासो मे आधे से अधिक अग्रेजी जहाजो से ले जाए जाते थे, यद्यपि इस बीभत्स व्यापार मे फ्रासीसी, डच तथा पुर्तगाली प्रतिस्पर्धी भी भाग लेते थे। १७७१ मे लन्डन के बन्दरगाह से दासो से लदे हुए ५८ जहाज गए, २३ जहाज ब्रिस्टल से तथा १०७ जहाज लिवरपूल से। उस वर्ष उन्होने ५०,००० दासो को ढोया।

सर्व प्रथम दास-व्यापार के विरुद्ध नैतिक आधार पर डा जॉन्सन ने आपत्ति की। होरेस बालपोल दूसरा व्यक्ति था। १७५० मे डा जॉन्सन ने मान को लिखा था —

"इस पखवारे मे हम अफ्रीकन कम्पनी के मसले पर विचार करते रहे हैं।" हम "से तात्पर्य ब्रिटिश सिनेट से है जो स्वाधीनता का मन्दिर तथा प्रोटेस्टेण्ट ईसाई मत का

गढ कहा जाता हे। पखवारे म हम नीग्रो लोगो की बिक्री के उस घृणित व्यापार को अधिक प्रभावशाली बनाने की रीतियो पर विचार करते रहे है। हमे यह ज्ञात हुआ कि इन अभागो मे मे प्रत्येक वर्ष ४६,००० केवल हमारे बागानो को बेचे जाते है। यह सुनकर हमारा रक्त उबलने लगता हे। यह कहने की आवश्यकता नही है कि मैंने उसके लिए अमरीकी महाद्वीप के पक्ष मे अपना मत दिया।"

लिवरपूल से दास ले जाने वाले जहाज लकाशायर से बने हुए सूती माल को अफ्रीका ले जाते थे और बदले मे वहा से नीग्रो दासो को ले आते थे। पुन इन दासो को अतलातिक सागर पार ले जाते थे और वहा से बदले मे कच्ची रुई, तम्बाकू और चीनी का लदान कर लाते थे। इण्डियन द्वीपो तथा अमरीका के भीतरी प्रदेशो के बागान मालिक लकाशायर मे निर्मित सूती वस्तुए अपने दासो के पहनने के लिए खरीद लेते थे। अफ्रीका से नीग्रो मजदूरो के आयात से वे महान लकाशायर-उद्योग को कच्चा माल देने मे समर्थ हो पाते थे। पापिष्ठ व्यापार तथा निष्पाप निर्माण अनेक ढगो से परस्पर सहायक थे।

सूती वस्तुओ का प्रयोग इगलैंड के सभी वर्ग करते थे। ये इस समय तक अच्छे अग्रेजी कपडे के भयानक प्रतिद्वन्द्वी हो चुके थे। १७८२ की एक पुस्तिका मे हमे लिखा मिला है "स्त्रिया शायद ही सूती कपडो, छीटो, मलमल अथवा रेशम के अतिरिक्त अन्य कुछ पहनती हो। उन्होने ऊनी कपडो का वैसे ही परित्याग कर दिया जैसे हम पुराने पचागो (जन्त्रियो) का कर देते है। हमारे बिस्तरो मे कम्बलो के अतिरिक्त अन्य कोई ऊनी कपडा नही होता है। और यदि हम अपने शरीर को गर्म रखने के लिए कोई अन्य वस्तु पा जाये तो कम्बलो को भी फेक देगे।" शताब्दी के मध्य मे रुई की कच्ची सामग्री मे विशाल वृद्धि से कई हजार पुरुषो, स्त्रियो तथा बच्चो को अपने घरो मे ही काम मिल गया। रुई के मजदूरो का घर एक छोटा सा कारखाना होता था। स्त्रिया तथा बच्चे रूई को चुनते थे और पुरुष उससे कपडे बुनते थे। यह घरेलू पद्धति अनेक परिवारो तथा अनेक अकेली स्त्रियो के लिए आजीविका और स्वाधीनता का स्रोत थी, नही तो वे दरिद्र हो सकते थे। किन्तु इसे जीवन का आदर्श ढग नही कहा जा सकता था। क्योकि जब रुई के लिए घर एक कारखाना हो जाता था तो न तो यह स्वच्छ रह सकता था और न सुखदायक। इस पद्धति मे गृहिणी निर्मात्री होती थी अत वह अपने समय का थोडा तथा अनियमित अश ही भोजन पकाने तथा गृहस्थी के अन्य कर्त्तव्यो के लिए व्यय कर सकती थी।[1]

जैसे जैसे शताब्दी बीतती गई, आर्कराइट के आविष्कार जैसे आविष्कारो से धीरे धीरे अधिकाधिक कार्य नियमित सूती मिलो मे होने लगा।• ये मिल पहाडी प्रदेश मे बहते हुए पानी के निकट स्थापित किए गए थे। जब तक जल शक्ति का स्थान भाप

---

[1] आइ वी पिचबेक, **वीमेन वर्कर्स एण्ड दि इडिस्ट्रयल रिवोल्युशन**, अध्याय ६।

ने नही ले लिया तब तक नगरो मे सूत उद्योग का सकेन्द्रण नही हो पाया था। १८०१ की जनगणना से विदित होता है कि गत एक सौ वर्ष मे लकाशायर काउटी की जनसख्या १,६०,००० से बढकर ६,९५,००० हो गई थी और यह काउटी मिडिलसेक्स के बाद सभी काउटियो मे सबसे धनी और अधिक आबादी वाली थी। इस परिवर्तन का कारण रुई का काम घरो मे अथवा पेन्नाइन नदियो के किर्नारे पर मिलो मे होना, लिवरपूल का समुद्रपार व्यापार तथा मैनचेस्टर का व्यापार तथा विभिन्न प्रकार के कपडो का निर्माण कहा जा सकता है।

सूती उद्योग पहले से ही बडा था किन्तु ऊनी उद्योग अभी भी सर्वाधिक उत्कर्ष पर था और सब मिलाकर सबसे अधिक फैला हुआ राष्ट्रीय उद्योग था। ससद को अब भी यह प्रिय था। कच्ची ऊन के निर्यात तथा ऊनी कपडे के आयात से इस उद्योग को सरक्षण देने को प्रोत्साहित करने के लिए कानूनो की एक विस्तृत सहिता लागू थी। हारग्रीव्स के 'कताई के क्रेन (Spining Cane) (१७६७) तथा क्राम्पटन के 'खच्चर' (Mule) (१७७५) के आविष्कारो के पश्चात् ऊन की कताई धीरे धीरे घरो के स्थान पर फैक्टरी मे होने लगी तथा यह काम गावो से हटकर नगरो को चला गया। परन्तु यह प्रक्रिया उन्नीसवी शताब्दी तक सम्पूर्ण नही हो पाई। इतने पर भी, बुनाई की अधिक कुशल कला अभी भी फार्मो अथवा घरो मे होती थी। जहा प्रत्येक मे एक या अधिक कर्घ होते थे। इस समय तक समस्त इगलैंड के सैकडो कृषि प्रधान ग्रामो मे ऊनी कपडे की बुनाई अतिरिक्त सम्पदा का स्रोत थी। लीड्स, हैलीफैक्स, नार्विच और एक्सेटर जैसे नगरो के व्यापारी ऊनी माल को एकत्र करके बेचते थे। एक बाद के युग मे भाप-शक्ति के आविष्कार से बुनकर भी कत्तियो का अनुकरण कर घर छोडकर फैक्टरी मे काम करने चले गए। यह प्रक्रिया गाव से छोटे कस्बे तथा वहा से बडे नगर मे जाकर समाप्त हुई। इस क्रमिक परिवर्तन की कई पीढियो तक घरेलू तथा फैक्टरी पद्धतिया कपडे के उद्योगो मे साथ-साथ विद्यमान रही।

ब्रिटिश वेस्ट इडियन द्वीप तथा इगलैंड के दक्षिणी उपनिवेश यहा रुई, चीनी और तम्बाकू भेजते थे। इस युग मे मिट्टी के बने लम्बे हुक्के प्रचलित थे। तब अपेक्षतया सहसा ही जार्ज तृतीय के शासनकाल के प्रारभिक वर्षो मे उच्च वर्गो मे तम्बाकू पीने का रिवाज समाप्त हो गया। डा जॉन्सन ने १७७३ मे कहा था कि "तम्बाकू पीना समाप्त हो गया है" (बॉस्वेल, टूअर टू दि हेब्राइड्स, अगस्त १९)। और अस्सी वर्ष तक तम्बाकू पीने का पुन प्रचलन नही हुआ। केवल सेवा के अधिकारियो मे हुक्को, तथा सिगार पीने का प्रचलन था। यह जीवन के प्रति उनके दुस्साहसिक रुख का प्रतीक था। किन्तु क्रीमियन युद्ध से पूर्व अन्य भद्रजनो मे तम्बाकू पीना एक हेय काम माना जाता था। इस युद्ध से पुन तम्बाकू पीना और दाढी रखना फैशन मे आ गए। दोनो ही क्रीमियन युद्ध के विजयी योद्धाओ के अनुकरण थे।

परन्तु जनसाधारण फैशन की उश्रृखलताओ से ग्रस्त नही थे। ज्यो ज्यो जार्ज तृतीय का शासनकाल बीतता गया, तम्बाकू का राष्ट्रीय उपभोग बढता गया। यही स्थिति सूती कपडो के पहिनने तथा चीनी के प्रयोग की थी। इस कारण वेस्ट इण्डियन द्वीपो को अग्रेजी राज्य का सर्वाधिक मूल्यवान हीरा माना जाता था। 'अमरीकी धनकुबेरो' के समान उस काल मे इगलैड मे क्रेओल्स का स्थान था जो वेस्ट इडियन दास बागानो का ब्रिटिश स्वामी था, जिनमे भारी अग्रेजी पूजी का विनियोजन हुआ था। समुद्रपार के देशो मे जिस दूसरे धनी वर्ग की चर्चा एव आलोचना की जाती थी वह 'नवाब' थे। इस नाम से इगलेड वापिस आए हुए वे एग्लो-इडियन लोग पुकारे जाते थे जिन्होने क्लाइव की नई विजयो का सिद्धान्तशून्य लोभ से परिशोषण किया था, जिस पर भारत के अग्रेजी शासको की पीढी ने रोक लगा दी थी। 'नवाबो' ने ससद की सदस्यता के मूल्य को बढा दिया था। अन्यथा वे जिस प्राचीन-स्थापित कुलीनतत्रीय समाज मे अनचाहे ही अपने अपरिचित (अशिष्ट) तरीको से घुस आए थे वह उसके विरुद्ध आपत्ति करता था। अमरीकी मुख्यभूमि के उत्तरी उपनिवेश अग्रेजी कपडा तथा अन्य निर्मित वस्तुए लेते थे और बदले मे लकडी तथा कच्चा लोहा भेजते थे। लकडी, लोहा तथा जहाज निर्माण की वस्तुएँ स्कैण्डीनेविया तथा बाल्टिक से भी लेनी पडती थी क्योकि अठारहवी शताब्दी का इगलैड अपने प्राकृतिक बनो को समाप्त कर चुका था तथा यहा जहाजो तथा मकानो के निर्माण और ईंधन के लिए लकडी की मात्रा बहुत कम उपलब्ध होती थी। घरेलू प्रयोजनो तथा बहुत से कारखानो मे ईधन की कमी कोयले से पूरी की जाती थी किन्तु लोहा को गलाने मे वृहद मात्रा मे इसका प्रयोग होना अभी प्रारभ ही हुआ था। अतएव, इगलैड की कच्चे लोहे की सम्पदा की क्षमता होते हुए भी अधिक लोहा उन देशो से आयात किया जाता था जहा अब भी लोहा गलाने के लिए विशाल बनो की लकडी ईधन के रूप मे इस्तेमाल होती थी। अठारहवी शताब्दी के इगलैड मे वस्तु निर्माण की प्रगति तीव्र होते हुए भी उस भाग्यशाली युग मे द्वीप की आवश्यक सुविधाओ को कोई हानि नही पहुची। लन्डन अब तक एक मात्र 'महान् नगर' था। १८०२ मे वर्ड्सवर्थ सोचता था कि वेस्टमिन्स्टर ब्रिज से लन्डन के दृश्य से अधिक सुन्दर ससार मे अन्य कोई वस्तु नही है। भूमि के सौदर्य मे अभिवृद्धि भवनो से होती थी तथा समुद्र के सौदर्य की अभिवृद्धि जहाजो से। इस समय तक 'कोयला एव लोहा' युग नही प्रारभ हुआ था।

जोसियाह वेजवुड (१७३०-१७९५) इस युग की प्रवृत्तियो का एक प्रतिनिधि था, जिसमे कि यद्यपि उद्योग विशाल मात्रा उत्पादन की ओर बढ रहा था तो भी सुरुचि एव कला से इसका बिलगाव नही हुआ था। वह अठारहवी शताब्दी के इगलैड के उत्कृष्ट बुर्जुआ जीवन का एक आदर्श प्रकार था। अपने वाणिज्य बृहत् आधार पर विकसित करते हुए भी मध्यवर्गीय मालिक अपने कर्मचारियो से निकट व्यक्तिगत सम्पर्क बनाये रखते थे। उनमे से अनेक उस युग के सर्वोत्तम सास्कृतिक एव कलात्मक

जीवन मे सक्रिय भाग लिया करते थे। उद्योगो के स्वामी आवश्यकरूप मे असस्कृत अथवा पार्थिव हितो के प्रेमी नही थे।

अग्रेजी तथा डच ईस्ट इण्डिया कम्पनियो द्वारा किए गए आयातो से योरुप को चीनी मिट्टी की सुन्दर कला मे एशिया से प्रतिद्वद्विता करने की प्रेरणा मिली थी। इस दौड मे इगलैड भी पीछे नही था। चेल्सी, डर्बी, बौ और वोर्सेस्टर मे निर्मित चीनी मिट्टी की वस्तुए सेबर्स तथा मीसन की उत्कृष्ट एव सुन्दर वस्तुओ के तुल्य थीं। वस्तुत ये सभी विलासिता की वस्तुए थी तथा साधारण क्रेताओ की क्रयशक्ति से परे थी। किन्तु वेगवुड अपने स्टैफोर्ड शायर के कारखाने मे चीनी मिट्टी तथा सूर्यकान्तमणी के बर्तनो को सभी वर्गो की रुचि और क्रयशक्ति के अनुरूप बनाता था। इससे उसकी वस्तुओ की आन्तरिक तथा विदेशी बाजारो मे भारी माग थी। वह अपने उत्पादनो का सजावटी तथा उपयोगी बनाने मे समानरूप से सफल रहा। वह नये-नये प्रकार की सुन्दरता को तलाश करने मे बडे उत्साह से परिश्रम करता था। उनमे से कुछ पॉम्पेयी की नवीन खोजो मे मिले पुरातन (क्लासिकल) नमूनो पर आधारित थे। उसे अपने व्यापार का विस्तार करने तथा उसे सस्ता बनाने की बडी लगन थी। वह अनवरत रूप से नई वैज्ञानिक विधियो, तथा नए ढाचो, नए नमूनो पर परीक्षण करता रहता था।

अपने उत्पादनो के यातायात व्यय तथा उनकी टूट-फूट के प्रतिशत को कम करने एव देश के भीतरी भाग मे दूर पर स्टैफोर्डशायर मे स्थित अपने चीनी मिट्टी के बर्तनो से कारखाने को कार्नवाल मे प्राप्त चीनी मिट्टी के कच्चे माल तथा व्यापार बढाने की आशा मे समुद्रपार बाजारो से सबधित करने के उद्देश्य से सडको तथा नगरो के प्रोत्साहन मे वह अथक प्रयास करता था। १७६० तथा १७९० के बीच उसे इगलैड ही नही प्रत्युत अमरीका तथा योरुप के बाजारो मे अपने माल को पाट देने मे सफलता मिली। इस अवधि मे कासे के बर्तनो का साधारण उपयोग प्राय समाप्त हो गया था। उसके स्थान पर मिट्टी के बने बर्तनो का प्रयोग होने लगा था। इससे खान-पान दोनो अधिक स्वच्छ एव कोमल क्रियाए हो गई थी। अगली पीढी मे लोग साधारण कास्य बर्तनो की बात भी नही करते थे। वैगवुड द्वारा निर्मित चीनी मिट्टी के बर्तनो का आम रिवाज हो गया था। एक मूल परिवर्तनवादी समाचार पत्र ने उच्चकुलीन भद्रजनो तथा महिलाओ (Lords and Ladies) को व्यग्य मे राष्ट्र के 'चीनी मिट्टी के क्षुद्र भूषण' कहा था। क्योकि वे लोग सर्वसाधारण जनता द्वारा प्रयोग मे लिए जाने वाले वेगवुड के चीनी के बर्तनो की तुलना मे बहुत श्रेष्ठ बर्तनो का प्रयोग करते थे। (दि ब्लैक ड्वार्फ, सितम्बर, १७, १८१७)।

सम्पूर्ण औद्योगिक क्रान्ति का सर्वाधिक शक्तिशाली एव विशिष्ट चरण - लोहे तथा कोयले का परस्पर सम्बन्ध—अब केवल प्रारभ हो रहा था। रानी ऐन्नी के शासन के

शासन के बाद से लेकर आगे तक डर्बी परिवार की क्रमागत पीढिया व्यावहारिक व्यापार-परीक्षण से लकडी के कोयले के स्थान पर पत्थर के कच्चे कोयले से लोहा गलाने के प्रयोग का विकास कर रही थी। १७७९ मे अब्राहम डर्बी की तीसरी पीढी ने ससार के सर्वप्रथम लौहपुल का निर्माण पूरा कर लिया जो श्रापशायर स्थित कोल-ब्रुकडेल मे पारिवारिक कारखाने के निकट सेवेर्न नदी के ऊपर 'लोहे के पुल' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसके पश्चात् लोहे के व्यापार का जो महान विकास हुआ और विशेषकर उन्नीसवी शताब्दी के प्रारभ मे जिसकी गति निरन्तर बढी थी, वह मुख्यतया दक्षिणी वेल्स, दक्षिणी यार्कशायर और टिनेसाइड जैसे क्षेत्रो मे, जहा लोहा तथा कोयला साथ-साथ मिलते थे, अथवा समुद्र के निकट अथवा नहर या नदी से आसानी से पहुचे जाने वाले स्थानो मे हुआ था। किन्तु कोयले तथा लोहे के युग का प्रारभ नैपोलियन के युद्धो से पूर्व नही हुआ था।

१७६९ मे आर्कराइट ने जल-ढाचे (Water frame) तथा जेम्स वाट ने भाप के इजिन का पेटेट स्वीकृत कराया। अत सूती तथा इजीनियरिग उद्योग मे यान्त्रिक शक्ति का जन्मकाल १७६९ है। दोनो वाट तथा आर्कराइट को देश के उद्यमशील उत्तरी भाग मे यान्त्रिक विचार को उपयुक्त वातावरण मिला था। १७६० से लेकर अगले पच्चीस वर्षो मे जारी किए गए पेटेटो की सख्या पूर्वगामी डेढ शताब्दी भर मे तत्सबधी सख्या से अधिक थी। (सी आर फे, ग्रेट ब्रिटेन फ्राम एडम स्मिथ टु दि प्रेजेण्ट डे, १९२८, पृष्ठ ३०३)

अब औद्योगिक क्रान्ति का सुचारु रूप से विकास हो रहा था। शताब्दी के अन्त मे इगलैंड तथा वेल्स की जनसख्या ९० लाख हो गई थी। उसका लगभग एक तिहाई कृषि मे लगा हुआ था किन्तु ७८ प्रतिशत जनसख्या अब भी ग्रामो मे रहती थी।

सम्पूर्ण अठारहवी शताब्दी भर इगलैंड के आन्तरिक उद्योग तथा समुद्र पार के व्यापार की सतत वृद्धि उन उद्देश्यो के लिए धन की प्राप्ति पर आश्रित थी। और बाद के काल की अपेक्षा उस समय उसकी उपलब्धि इतनी आसान न थी। धन उधार लेने मे सरकार की ओर से कडी प्रतिस्पर्धा होती थी। किन्तु लन्दन में मुद्रा-बाजार की प्रविधि (Technique) को सम्पूर्ण रूप से विकसित किया जा रहा था। हालैंड के पतन के पश्चात् यह नगर विश्व के वित्त को केन्द्र बन गया जहा ससार के किसी भी स्थान की अपेक्षा पू जी सरलता से उपलब्ध हो जाती थी।

१७२० मे दक्षिणी सागर के काण्ड के उद्घाटन होने के पश्चात् सयुक्त-स्कध रीतियो को धक्का लगा था किन्तु वे उस अपमान को सहकर जीवित रही तथा लोगो ने भविष्य मे थोडा अधिक बुद्धिमान बनना सीखा था। उस कुलीनतत्रीय किन्तु वाणिज्य प्रवृत्ति वाली शताब्दी की सामाजिक सरचना के सयुक्त-स्कध कम्पनी सराहनीय

रूप से अनुकूल थी क्योंकि बडे भूस्वामी घृणित 'व्यापारी' बने नगर के लोगो से समानता के स्तर पर मिल सकते थे और उससे काम काज कर सकते थे ताकि एक का राजनैतिक प्रभाव दूसरे के वाणिज्य कौशल से सहयोग कर सके। किन्तु सयुक्त स्कध कम्पनी से भी अधिक समस्त द्वीप मे प्रान्तीय बैको की उन्नति ने दोनो औद्योगिक एव कृषि क्रान्तियो के लिए धन जुटाया। ये बैक या तो विशिष्ट परिवार अथवा एक व्यक्ति की सम्पति थी अत सदैव सुरक्षित नही थी किन्तु सर्वांगीण दृष्टि से विस्तारशील वाणिज्य की आवश्यकताओ की पूर्ति अपेक्षित पू जी से कर सकती थी।

उस समय वहा यहूदी तथा क्वैकर भी थे। दोनो ही नगर के अग्रणी पदो तथा इगलैड के बैक जगत मे उन्नति कर रहे थे और मूल्य के कुछ गुणो को ला रहे थे।

जिस समय पर एडवर्ड प्रथम ने यहूदियो को देश से निकाल दिया उसके तथा क्रामवेल द्वारा उन्हे पुन प्रवेश किए जाने के समय के बीच अग्रेजो ने अपने वित्तीय तथा वाणिज्य सम्बन्धी मामलो का स्वय प्रबन्ध करना सीख लिया था। अतएव अब यहूदियो की प्रबलता तथा यहूदी-विरोधी प्रतिक्रिया के घटने का कोई भय न था। हैनोवर के काल तक इगलैड यहूदियो के मध्यम प्रवेश को आत्मसात करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली हो गया था। ज्योही हालैड की समृद्धि का पतन हुआ त्योही बहुत से यहूदी एम्सटर्डम से लन्दन चले आये और वहा पू जी के हिस्सो की दलाली मे प्रख्यात हो गए। यहूदियो ने नगर के विकास मे सहायता की।" यहूदी सर्वत्र देखा जा सकता था, वह उद्यमी और अध्यवसायी था किन्तु कलहप्रिय नही था। ग्राहको का पीछा करने मे उसे आत्मसम्मान का कोई ध्यान नही था। जिन वस्तुओ अथवा सौदो को दूसरे लोग अस्वीकार अथवा घृणा करते थे उन्ही से वह लाभ कमा लेता था। अन्तर्राष्ट्रीय वित्त मे यहूदियो का विशेष झुकाव था। वे अपने जन जातीय सम्पर्कों से राष्ट्रीय सीमाओ का अतिक्रमण कर लेते थे। और फिर भी व्यक्तिगत रूप से उनमे वह मानसिक अनासक्ति बनी रहती थी जो वित्तीय विश्लेषण के लिए अनिवार्य होती है।[1] सातवर्षीय युद्ध की अवधि मे एक बैकर की हैसियत से सैम्पसन गिडियन का नगर मे महत्वपूर्ण स्थान था। आगामी पीढी मे गोल्डस्मिड्स का स्थान अग्रणी हो गया। १८०५ मे नैथन रोथचाइल्ड ने लन्डन मे यहूदियो के घरानो मे सर्वाधिक विख्यात घराने की स्थापना की जिसे उसने अन्य योरुपीय देशो मे उस परिवार के प्रतिष्ठानों से लाभप्रद ढग से सम्बन्धित कर दिया था। किन्तु नगर के महान् यहूदियो के अतिरिक्त वहा एक हीन प्रकार के यहूदी महाजन भी महत्वपूर्ण हो गए थे, जिनका शिकार सर्वाधिक दरिद्र तथा अपव्ययी वर्ग के लोग होते थे और जो उचित कारण से ही उन्हे घृणा करते थे।

---

[1] सी. आर फे, **ग्रेट ब्रिटेन फ्राम ऐडम स्मिथ टु प्रजेंट डे**, पृष्ठ १२८।

वित्तीय क्षेत्रो मे क्वेकर लोग भी शक्तिशाली हो रहे थे। नार्विच के गुर्नीज के समान उन्होने बैंक व्यवसाय अपनाया था। उस व्यवसाय मे सर्वोत्तम अग्रेजी परम्परा की स्थापना मे उनका प्रशसनीय योगदान था। वे ईमानदार, सौम्य, शान्तिप्रिय एव उदार लोग थे। वित्तीय ज़गत की शीघ्र भडकने वाली हिसाओ तथा दभपूर्ण देशभक्ति की नीतियो पर उनका अक्षुब्धकारी प्रभाव था।

अध्याय १२

डा. जॉन्सन के काल में इंगलैंड

[२]

कला और संस्कृति के अनुकूल सामाजिक दशाएं–प्राकृतिक दृश्यो से प्रेम–ग्रामीण आवास का जीवन–क्रीडा–भोजन–नाटक एवं संगीत–समाचार पत्र–मुद्रण एवं प्रकाशन पुस्तकालय–घरेलू नौकर

यदि कुलीनतत्रीय नेतृत्व के अन्तर्गत अठारहवी शताब्दी का इगलैड कला और लालित्य का देश था तो उसमे उसकी आर्थिक एव सामाजिक सरचना सहायक थी। अभी तक विशाल मात्रा मे वस्तुओ का उत्पादन करने वाले कारखानो का विकास नही हो पाया था जिससे कलानिपुणता एव सुरुचि का नाश होता और सेवायोजको तथा उनके कर्मचारियो के बीच कठोर विभाजन होता। मजदूरी से आजीविका चलाने वालो मे एक बडा अनुपात उत्कृष्ट दस्तकारो का था जो बहुधा छोटे सेवायोजक तथा दुकानदार के समान सुशिक्षित, सम्पन्न और सामाजिक रूप से सम्मानित लोग थे।

इन सुखद दशाओ मे कुशल दस्तकार इतनी सुन्दर रूप-रचना एव कौशल से परिपूर्ण वस्तुओ का साधारण बाजारो के लिए उत्पादन करते थे कि आज भी कला-प्रेमी एव सग्रहकर्ता उन्हे मूल्यवान मानते है। इनमे सजावट तथा उपयोग की अनेक वस्तुए थी, जैसे चीनी, काच तथा अन्य प्रकार की वस्तुए, चादी की तस्तरी, सुन्दर मुद्रित एव जिल्दबधी पुस्तके, ड्राइग रूम की हलकी कोटि की कुर्सिया तथा अलमारिया। बडे आकार की साधारण सी घडिया, जो उस समय ग्रामीण घरो के रसोई घर मे समय जानने के लिए प्रयोग मे आती थी, वे भी बनावट मे बडी सरल तथा प्रभावशाली होती थी। वे वस्तुत अगणित छोटे-छोटे निर्माताओ द्वारा व्यक्तिगत भिन्नताओ सहित अपनाई गई एक परम्परा का परिणाम थी।

इस काल की 'जार्जियन' नाम से विख्यात सरल अग्रेजी शैली मे वास्तुकला सुरक्षित थी। उन दिनों नगरो अथवा गावो मे निर्मित सारी इमारतें, नागरिक भवनो तथा ग्रामीण प्रासादो से लेकर खेतो, कुटीरो तथा बागो मे प्रयुक्त यत्रो के घरो तक, देखने मे रमणीय लगते थे क्योकि सामान्य गृह-निर्माता भी सम्पूर्ण इमारतो के सम्बन्ध मे द्वारो तथा खिडकियो को लगाने मे अनुपात के नियमो

को समझते थे। गिब्स की लघु पुस्तिकाओ मे सम्मिलित उनके निर्देशन के लिए अनुपात के नियमो का पालन करके व सरल लोग एक ऐसे रहस्य को अपनाये रहे जो तदनन्तर विक्टोरिया के युग के आडम्बरपूर्ण वास्तुकलाविदो मे लुप्त हो गया था। उन्होने सरल अग्रेजी 'जार्जियन' शैली को त्याग दिया था और उसके स्थान पर सैकडो विदेशी कल्पनाओ, यूनानी, मध्ययुगीन अथवा किसी को भी, का अनुसरण किया। वे लोग अपने कार्य सम्बन्धी आवश्यक के अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु मे पुस्तकीय-ज्ञान का अनुगमन करते थे।

अठारहवी शताब्दी मे कला साधारण जीवन एव व्यापार का एक भाग थी। होगार्थ, गेन्सबारो, रेनोल्डस्, रोमनी तथा जोफैनी के चित्र, लघु छबिचित्रो का सम्प्रदाय, जिसकी चरम परिणति कोस्बे की कला मे हुई थी, वर्ट्र तथा वूल्लेट की नक्काशी-कला, रोबिलैक की आवक्ष प्रतिमाए तथा पूर्ण प्रतिमाए, आदम बन्धुओ का फर्नीचर तथा सजावटी वस्तुए—ये सभी अपने आस-पास की परिस्थितियो के विरोध स्वरूप प्रतिभा का आकस्मिक उद्गार मात्र न थी। वे उस युग की विशिष्ट प्रकृति का स्वाभाविक परिणाम थी तथा विद्यमान माग तथा पूर्ति की प्रक्रिया का भाग थी। यही बात ग्रे, गोल्डस्मिथ, कौपर, जान्सन, बॉस्बेल तथा बर्क के साहित्य-जगत के विषय मे कही जा सकती है। वह अपनी शान्ति, उद्देश्य की स्थिर एकता और विचार के दृष्टिकोण से एक प्रतिष्ठित युग था जो सन्तापित (प्रकुपित) विक्टोरिया युग से भिन्न था जिसमे अधिकाश महान पुरुष जैसे कार्लाइल, रस्किन, मैथ्यू अर्नोल्ड, रैफल के अनुयाइयो के पूर्ववर्ती, विलियम मारिस, व्हिस्लर, ब्राउनिग और मेरेडिथ अपने काल के भ्रष्ट आदर्शो के विरुद्ध विद्रोह की स्थिति मे थे अथवा जगली योद्धाओ के समान प्रत्येक जनसाधारण पर अपनी विचित्र प्रतिभा थोपने के लिए लडता रहता था। फिर भी यह सत्य है कि अठारहवी शताब्दी ने एक महानतम विद्रोही को जन्म दिया था विलियम ब्लेक का जन्म सन् १७५७ मे हुआ था।

आत्मा का सगीत स्वत जात है

सामाजिक इतिहासकार यह व्याख्या करने का दभ नही कर सकता कि एक विशिष्ट अवधि मे कला अथवा साहित्य की क्यो उन्नति होती है अथवा ये क्यो एक विशिष्ट मार्ग ग्रहण करते हैं। किन्तु वह डा० जान्सन के काल के इगलैड मे ऐसी सामान्य परिस्थितियो की ओर सकेत कर सकता है जो सुरुचि और उत्पादन के उस उच्च स्तर के पोषक कहे जा सकते है।

धन तथा अवकाश की वृद्धि हो रही थी और वे बृहदाकार वर्गो मे व्यापक रूप से विकीर्ण थे। किसी भी अन्य पूर्वगामी युग की अपेक्षा उस समय नागरिक शान्ति एव वैयक्तिक स्वाधीनता अधिक सुरक्षित थी। समुद्र पार देशो मे हमारे राष्ट्र द्वारा छोटी पेशेवर सेनाओ से लडे गए युद्धो का बोझ अल्प होने के कारण इस सौभाग्यशाली द्वीप के निवासियो के शान्तिकालीन कारबार मे बहुत कम बाधा आई। कनाडा और

भारत मे जितनी कम हानि उठाकर हमारे साम्राज्य की स्थापना हुई थी वह अभूत-पूर्व घटना थी। आस्ट्रेलिया मे हमारे साम्राज्य की स्थापना को ले। कैप्टन कुक ने समुद्र मे आस्ट्रेलिया को खोज निकाला था (१७७०)। उस विनाशकारी युद्ध मे भी, जिसमे हमे पुराने अमरीकी उपनिवेशो का मोह त्यागना पडा था, व्यापार मे गम्भीर बाधा पडने के बावजूद पराजित देश के शान्तिपूर्ण जीवन पर अत्यल्प प्रभाव पडा था। इसका कारण यह था कि समुद्रो पर हमारे आधिपत्य को कुछ चुनौतियो के बावजूद भी हटाया न जा सका। जिस समय कुछ अवधि तक फ्रासीसी जहाजी बेडा चैनेल (इग्लिश चैनेल) मे होकर जाता था हमे भुखमरी का नही अपितु आक्रमण का भय रहता था। यह खतरा भी शीघ्र टल गया था। ऐसा ही नैपोलियन के युद्धो के समय हुआ था। हमारे द्वीप का अधिकाश भोजन यही उत्पन्न होता था और समुद्री मार्गो पर इसका आधिपत्य था। 'ब्रिटेन के शान्त उल्लास एव शक्ति' का यही दोहरा आधार था। वर्ड्सवर्थ एक उचित आत्मसतोष से ही ऐसा सोचता था जब वह क्रान्तिकारी फ्रास के साथ इगलैड के युद्ध के बीसवे वर्ष मे ब्लैक कोम्ब की चोटी से सागर और भूमि को देखता था। वरिष्ठ अथवा कनिष्ठ पिट के काल मे युद्ध के चक्र की अपेक्षा आधुनिक सर्वसत्तावादी युद्ध का एक वर्ष ही इगलैड मे समाज के लिए अधिक विघटनकारी और सभ्यता की उच्चतर शाखाओ के लिए अधिक विनाशकारी सिद्ध हो सकता है।

किन्तु सुरुचि एव कला के एक महान युग का कारण केवल धन और सुरक्षा से नही बताया जा सकता। विक्टोरिया का युग तो इससे अधिक धनी और अधिक सुरक्षित था। फिर भी उस युग मे जो इमारते बनी तथा उनमे पुस्तको के अतिरिक्त जो भी वस्तुए रखी जाती थी वे उच्च स्तर की नही थी। अठारहवी शताब्दी मे अत्यधिक यान्त्रिक उत्पादन से लोगो की रुचि विकृत नही हुई थी। वस्तुओ के निर्माता तथा ग्राहक दोनो ही अभी तक हस्तकला के दृष्टिकोण से सोचते थे। अभी तक कलाकार तथा वस्तुनिर्माता विभक्त होकर दो विपरीत छोरो पर नही खडे थे। वे दोनो ही सीमित जनता के लिए वस्तुओ का व्यापार करते थे जिसकी रुचि मे अभी तक कोई विकार नही आया था, क्योकि उसने अभी तक निस्सदेह बहुत सी कुत्सित वस्तुओ को नही देखा था। अभी तक जीवन तथा कला मानवीय थे। वे यान्त्रिक नही हुए थे और उनमे परिमाण की तुलना मे गुण का अभी भी अधिक महत्व था।

हेनरी के युग मे कलाओ के अनुकूल एक अन्य परिस्थिति थी। यह राजनीति के अतिरिक्त जीवन के कई पक्षो को अनुरजित करने वाला कुलीनतत्रीय प्रभाव था। उस काल के सामाजिक कुलीनतत्र मे अभिजातो एव भूस्वामियो के अतिरिक्त अधिक धनी पादरी तथा सुसस्कृत मध्यवर्ग भी सम्मिलित था जो अभिजातो तथा भूस्वामियो के साथ घनिष्टता से समानता का व्यवहार करते थे। बास्वेल कृत जॉन्सन के सम्वादो तथा उदार व्यवसायियो मे सर्वाधिक राजसी ठाठबाट के पुरुष—सर जोशुआ रेनोल्ड्स

के जीवनवृत मे हमे ऐसा पढने को मिलता है। पर्याप्त सख्याओ पर व्यापक रूप से आधृत एव अपने सामाजिक विशेषाधिकारो मे निर्विवाद वह महान समाज प्रत्येक वस्तु मे गुण (उत्कृष्टता) खोज लेने मे सक्षम था। इसी कुलीनतत्र के उच्चतर पदो द्वारा बुर्जुआ तथा उदार व्यवसायी वर्गो का प्रवर्तन होता था जो इसके प्रत्युतर मे अभिजातो को नए विचार देते थे। लार्ड राकिघम को बर्क द्वारा विचारो से प्रेरित करना ऐसा ही एक दृष्टान्त हे। अठारहवी शताब्दी के अग्रणी अधिकाधिक धन कमाने अथवा अधिकाधिक वस्तुओ का, चाहे वे कैसी भी हो, उत्पादन करने की लालसा से व्यग्र नही थे। इस प्रकार की व्यग्रता उन्नीसवी शताब्दी के धन देवता के उन सपूतो मे देखी जाती थी जिन्होने इगलैड, अमरीका तथा सारे ससार का प्रवर्तन किया। कुलीनतत्रीय वातावरण कला तथा रुचि के लिए अधिक अनुकूल था। इसकी तुलना न तो कालान्तर मे इगलैड का बुर्जुआ अथवा लोकतत्रीय वातावरण कर सका और न यूरोप का सर्वसत्तावादी वातावरण।

वास्तव मे, पुरानी प्रणाली की राजशाही की तुलना मे कला एव साहित्य के सरक्षक के रूप मे कुलीनतत्र अधिक अच्छी तरह कार्य कर रहा था। कभी कभी राजतत्र को उनमे रुचि हो सकती है जिसके उदाहरण फ्रास के लुई चौदहवे और पन्द्रहवे थे। किन्तु इसके अन्तर्गत प्रकाश और नेतृत्व का एकमात्र केन्द्र राजदरबार माना जाता है परन्तु अग्रेजी कुलीनतत्र मे ऐसा एक केन्द्र न होकर सारे देश मे भद्रजनो के स्थान तथा प्रान्तीय शहर बिखरे हुए थे। इनमे से प्रत्येक ज्ञान एव रुचि का केन्द्र था जिससे कि सरकारी विश्वविद्यालयो मे ज्ञान तथा हेनरी राजाओ के राज दरबार मे रुचि के ह्रास की क्षतिपूर्ति हो जाती थी। जार्ज द्वितीय हेडेल के सगीत के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु को सरक्षण नही देता था। इसका कोई महत्व इसलिए नही था क्योकि चाहे लाखो जनसाधारण के हाथ मे सरक्षकत्व नही भी पहुँचा था फिर भी सैकडो के हाथो मे तो पहुँच ही गया था। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय ने गिबन के लिए कुछ नही किया था। तात्कालिक राजघराना भी उससे यही पूछता था कि वह क्या अस्पष्ट बाते लिखता था। किन्तु ज्योही उसकी प्रथम कृति सन् १७७६ मे प्रकाशित हुई, पढी-लिखी जनता ने उसे समुचित मान्यता देने मे किसी प्रकार की कमी नही की।

अठारहवी शताब्दी की रुचि मे पूर्णता नही थी। साहित्य मे इसकी सहानुभूति की सीमाए कुख्यात है। कला के क्षेत्र मे भी कदाचित रेनोल्डस के विषय मे अत्यधिक कहा जाता था और होगार्थ और गैन्सबारो के विषय मे अयथेष्ट। १७६८ मे रॉयल अकेडमी की स्थापना करके सर जोशुआ ने आभिजात्य की विशेषता प्राप्त करने के लिये सचेष्ट उन्नतिशील मध्यम वर्ग मे चित्रो की खरीददारी को एक फैशन बना दिया था। निस्सदेह इससे उसने अपने बन्धु कलाकारो की वस्तुओ के लिये अधिक व्यापक माग उत्पन्न करके इन्हे आर्थिक लाभ पहुचाया था। किन्तु क्या उस सबसे उस सज्जन

व्यक्ति ने अनजाने मे कला मे असस्कृतता का मार्ग नही खोल दिया ? और क्या उसकी रॉयल अकेडेमी ने विशिष्ट प्रकार की चित्रकारी और वास्तुकला को अत्यधिक रूढ बनाने मे योग नही दिया ?

जमीन मे दबे हर्क्युलेनियम और पॉम्पे नगरो की खोज की रोमाचपूर्ण परिस्थिति ने बहुत कुतुहल को उत्तेजित किया जो शायद कला की अपेक्षा पुरातत्त्व के लिये अधिक उपयोगी था। यूनान और रोम की अपेक्षाकृत निम्नस्तर की मूर्तिकला को निर्णय का मापदण्ड मान लिया गया और अकेडेमी के मूर्ति शिल्पियो, नोलेकेन्स और फ्लेक्समैन, की दूसरी पीढी ने इस बात को दृढता से प्रतिपादित किया कि सभी मूर्तिया, समकालीन ब्रिटिश राजनीतिज्ञो की भी, उसी शैली मे बनाई जाएँ और प्राचीन लोगो द्वारा पहने जाने वाले लबादे से उन्हे अलकृत किया जाय, जैसे कि ब्लूम्सबरी स्केवयर मे फॉक्स की मूर्ति है। उन्होने यह भी चाहा कि रोबिलॉक की शुद्ध पुनर्जागरण परम्परा का अनुगमन अन्य पहलुओ मे भी निश्चित ही बन्द हो जाना चाहिए। यह बहुत आश्चर्यजनक बात है कि उसी समय बेजामिन वेस्ट ने ऐतिहासिक चित्रकला से सम्बन्धित और वेश-भूषा के नियम को बदल कर उलटा कर दिया। स्वय सर जोशुआ के गभीर किन्तु मित्रतापूर्ण उपालभो के बावजूद वेस्ट इस बात पर दृढ रहा कि उसके द्वारा निर्मित उल्फ की मृत्यु के चित्र मे (जो १७७१ मे अकेडेमी मे प्रदर्शित हुआ था) जनरल और उसके साथियो को प्राचीन योद्धाओ की वेश-भूषा मे नही दिखा कर समकालीन ब्रिटिश वेश-भूषा मे ही दिखाया जाय, जैसा कि उस समय के वीर योद्धाओ को भी प्राचीन वेश-भूषा मे उनकी ख्याति बढाने के लिये चित्रित करने की प्रथा थी। वेस्ट ने अपने इस साहसपूर्ण नवोन्मेष के प्रति दृढता से उस ऐतिहासिक चित्रकारी के सम्प्रदाय के लिये स्वाधीनता का वातावरण उत्पन्न कर दिया जिसका कि वह सस्थापक था। उसने इस सम्प्रदाय को विशेषतया नक्काशी के माध्यम से अत्यधिक लोकप्रिय बना दिया।

किन्तु कला के क्षेत्र मे फैशन की अनिश्चितताओ और उसके अग्रणी उपासको की शक्तियो मे बहुधा विविधता के होने के बावजूद अठारहवी शताब्दी का वातावरण कलाओ और हस्तकलाओ मे उच्च गुण के लिये अनुकूल था। इगलैड मे हर प्रकार की सुन्दर, पुरानी और नई, देशी और विदेशी, वस्तुओ का भडार था। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रो मे मकान इस दृष्टिकोण से उतने ही सम्पन्न थे जितने कि सग्रहालय और कला प्रकोष्ठ। किन्तु पुस्तको, नक्काशी की हुई वस्तुओ, चीनी की वस्तुओ और फर्नीचर तथा चित्रो को प्रदर्शन के लिये एकत्र नही किया जाता था, किन्तु अतिथिप्रेमी घरो मे उन्हे घरेलू उपयोग के लिये स्वाभाविक स्थानो मे जमाया जाता था।

घरो के भीतर और बाहर सर्वत्र एक मनोरम देश था। मनुष्य ने प्रकृति के सौदर्य से जो कुछ छीना था उससे अधिक वह उसमे योग करने मे समर्थ था। खेतो

पर की स्थानीय शैली और सामग्री से बनी हुई इमारते और कुटीरे कोमल चित्रो और प्राकृतिक दृश्यो से घुल मिल जाती थी और सामजस्यपूर्ण ढग से उसकी विविधता और सुन्दरता को बढाती थी। करज की झाडियो और कटीली झाडियो के बीच बीच मे ऊचे ऊचे पेडो से घिरे हुए खेतो और ओक तथा बीच के नये बागानो ने पूर्वकालीन झाडियो तथा मुक्त खेतो के स्थान पर एक नया और सुन्दर दृश्य उपस्थित कर दिया था। किन्तु मुक्त खेत और झाडिया तथा छोटे छोटे बीहड सब समाप्त नही हो गये थे। लगभग प्रत्येक गाव के निकट जागीरदार के आवास से सटा हुआ पार्क होता था जिसमे विशाल वृक्षो के झुरमुट के नीचे अब भी हिरण कोपले चरा करते थे।

इस शताब्दी के अतिम दशाब्द मे प्राकृतिक दृश्यो के चित्रकारो के महान सम्प्रदाय का उदय हुआ जो मुख्यतया पानी के रगो से चित्र बनाया करते थे और जिनमे प्रमुख थे गिरटिन और नवयुवक टर्नर। शीघ्र ही इनके बहुत से अनुयायी बन गये जिनमे नार्विक सम्प्रदाय के कोटमेन और क्रोम तथा स्वय कास्टेबिल सम्मिलित थे। उन्होने इगलेड का सर्वथा सुन्दर चित्रण किया। यह इगलेड के इतिहास का वह क्षण था जिसमे उसके सौदर्य पर कोई आक्रमण नही प्रारम्भ हुआ था। आरभिक वर्षो मे प्राकृतिक दृश्यो के स्थान पर आवक्ष मूर्तियो और विपयचित्रो की माग बहुत अधिक थी। यद्यपि प्राकृतिक चित्रो के चित्रण मे उस समय गेन्सबारो और रिचर्ड विल्सन बहुत प्रतिष्ठित हो गये थे किन्तु इस सम्पूर्ण अवधि मे विस्तृत रेखाओ वाले अच्छे अच्छे दृश्यो और प्राकृतिक दृश्यो की ओर एक चेतन प्रशसा बढ रही थी। १७२६ मे टॉम्सन की कृति 'सीजन्स' के प्रथम प्रकाशन के साथ साहित्य मे यह प्रकृति प्रतिबिम्बित हुई और कोपर द्वारा यह परम्परा और आगे बढी तथा अन्त मे वर्डस्वर्थ मे जा कर इसका अन्तिम रूप से रूपान्तरण और उदात्तीकरण हो गया। किन्तु हमारे द्वीप के विलक्षण गौरव को व्यक्त करने मे कोई भी लिखित शब्द समर्थ नही हो सकता था। उसे तो केवल चित्रकार ही दिखा सकते थे जलाधिक्य से पूर्ण वातावरण मे पेड-पौधो, और पृथ्वी और आकाश मे धूप-छाह की आखमिचौनी ये चित्र द्वारा ही व्यक्त हो सकते थे। इस प्रकार से, अठारहवी शताब्दी के समाप्त होने तथा नवीन युग के आरभ के साथ स्वदेश मे अग्रेज लोगो के उल्लास की अभिव्यजना साहित्य और कला के माध्यम से हुई।

जार्ज द्वितीय के शासनकाल मे प्राकृतिक दृश्यो के विस्तीर्ण और अधिक वन्य रूपो मे अनोखी रुचि और आल्हाद ने ग्रामीण घरो के बाहर घास के मैदानो की साज सज्जा की अभिरुचियो को बदल दिया था। विधिवत् बगीचो और उन तक जाने वाले मार्गों पर डच शैली मे निर्मित शीशे की छोटी-छोटी मूर्तियो से सजावट करना विलियम और ऐन्नी के शासनकाल मे प्रचलित था और धनुर्वृक्षो की झाडियो को विचित्र रूप-आकारो मे काटा छाटा जाता था। इन सभी को त्याग कर जागीरदार के घर की

दीवारो तक पार्क मे पेडो और घास को लगाया जाता था। ग्रामीण आवास की ऊची ईट की दीवारो के भीतर फलो और शाक-भाजी के बगीचे को एक आवश्यक उपकरण माना जाता था और इसे मकान के सामने की खिडकियो मे न दिखने वाली थोडी दूरी पर रखा जाता था। यह सभी परिवर्तन विलियम केट और उसके उत्तराधिकारी "कैपेबिलिटी ब्राऊन" के प्रभाव मे किये गये थे। ब्राऊन के नाम के पूर्व कैपेबिलिटी शब्द का इसलिये प्रयोग होने लगा था कि उसको जब कभी किसी भद्रजन के मैदान की रूप-रचना से सम्बन्धित परामर्श के लिये बुलाया जाता तो उसे यह कहने की आदत थी "मुझे यहा पर सुधार की बहुत सभावना (कैपेबिलिटी) दिखाई देती है।"

निस्सन्देह, इसमे लाभ और हानि दोनो हुए। यह दुखपूर्ण था कि सीसे की बनी हुई सैकडो मनोहर मूर्तियो को फेक दिया गया था और उन्हे गला कर अमरीका और फ्रास के निवासियो से युद्ध के लिये गोलिया बनाई गई थी। किन्तु घास के ढलवा मैदानो और पेडो के लिये स्थान निकालने के लिये डच शैली के बगीचो का निर्मूलन इस बात का प्रमाण था कि अग्रेजो की प्राकृतिक दृश्यो मे रुचि बढ रही थी। इसी के परिणामस्वरूप शीघ्र ही वे पहाडो की रचनाओ मे भी आनन्द लेने लगे और लेक डिस्ट्रिक्ट मे उनकी बहुत भीडभाड होने लगी। अगली शताब्दी मे वे स्कॉटलैंड की पहाडियो और आल्प्स पर्वतो पर भी जमघट लगाने लगे। ये दोनो ही अभी तक सभ्य लोगो द्वारा घृणा से देखे जाते थे।

प्रकृति के मूल स्वरूप की बृहत्तर विशेषताओ के प्रति लोगो मे जो सहज उत्कण्ठा थी वह अति-सभ्य हो रहे समाज की अवश्यभावी प्रतिक्रिया थी। अतीत मे वन तथा पेडो और झाडियो के घने झुरमुट सर्वत्र निकट ही स्थित थे और मनुष्य निरन्तर उनके विरुद्ध सघर्ष करता रहता था। उन दिनो वह उस सघर्ष से छुटकारा पाने के लिए विधिवत बगीचो को लगाता था। अब उसकी विजय हो गई थी। ग्रामीण अचल यद्यपि अब भी सुन्दर थे किन्तु उन्हे मनुष्य ने घेरो के लिए झाडियो तथा बागानो मे परिवर्तित कर अपनी आवश्यकतानुसार नियन्त्रित कर लिया था। अत अब रूसो के रहस्यपूर्ण सिद्धान्तो के अनुसार मनुष्य को मौलिक एव अनियन्त्रित प्रकृति की खोज के लिए खेतो से दूर बाहर जाना पडता था।

अठारहवी शताब्दी के उतरार्ध मे पर्वतो मे जो रुचि प्रारभ हुई थी उसके साथ ही अभी तक उपेक्षित सागर-तटो के लिए प्रेम भी उदय हो रहा था। यह सत्य है कि इस शताब्दी के पूर्वार्ध मे सागर-तटीय जल-प्रदेशो का भ्रमण करने की प्रथा का उद्देश्य चिकित्सा सम्बन्धी था। डाक्टरो के आदेश से लोग ब्राइट हेल्मस्टोन (ब्राइटन) के गाव मे समुद्री वायु का सेवन करने जाते थे अथवा स्कारबारो मे कुए का पानी पीने अथवा समुद्र की लहरो मे गोता लगाने जाते थे। १७४५ मे स्कारबारो समुद्रतट

के चित्र मे पुरुष पर्यटको को तैरते हुए दिखाया गया है। १७५० के एक चित्र मे मार्गेट के एक चित्र मे बील-निर्मित स्नान करने के यन्त्रो को दिखाया गया है जिसमे घोडे जुते होते थे तथा स्त्री-पुरुष दोनो सवार होते थे, इसमे वे एक टोपी पहन कर सीढी से पानी मे उतर सकते थे और इच्छानुसार तैर कर बाहर आ सकते थे।

किन्तु जो लोग शारीरिक स्वास्थ्य लाभ के उद्देश्य से वहा जाते थे उन्हे आत्मा का सुख भी प्राप्त होता था। समुद्र तथा उसके तटवर्ती दृश्यो का ध्यान करने मे इतना आकर्षण बढता था कि उसमे अधिक बडी भीडे ढलवा चट्टानो तथा रेतीले स्थलो पर प्राथमिकतया स्वास्थ्य लाभ के उद्देश्य से जाती थी, किन्तु उससे उन्हे मानसिक सुख भी मिलता था जो स्वास्थ्य का एक अग है। यह महत्वपूर्ण है कि जार्ज तृतीय के शासनकाल के बाद वाले भाग मे सर्वप्रथम समुद्र की लहरो का टर्नर ने सत्यता और स्नेह से वर्णन किया था। यद्यपि जहाजो मे पहले अच्छा रग किया जाता था परन्तु जिन सागरो मे वे यात्रा करते थे उनके आकर्षक वर्णन की ओर ध्यान नही दिया जाता था। इसके पूर्व बहुधा कवियो ने सागर के भैरव रूप का वर्णन ही किया था। अब वे उसके सौदर्य का भी वर्णन करते और उससे बहते रहने के लिए अनुरोध करते।

अठारहवी शताब्दी मे सर्वप्रथम ग्रामीण घरो के निर्माण के लिए स्थान के चुनाव मे केवल व्यावहारिक कारणो का ही ध्यान नही रखा जाता था वरन् सौदर्यात्मक कारणो का भी ध्यान रखा जाता था। बहुधा उन्हे ऊचाई पर बनाया जाता था जिससे वहा से दृश्यो को देखा जा सके। जल के कृत्रिम स्रोत स्थलो पर धनी लोगो के बढते हुए नियन्त्रण से यह सभव हो जाता था। कौपर जो "महान जादूगर ब्राउन" को पसद नही करता था, यह शिकायत करता था कि उसने नगी पहाडी चोटियो पर लोगो को मकान बनाने के लिए प्रेरित किया था जो बहुत ठडे रहते थे जब तक कि उनकी रक्षा के लिए पेड नही उगाए जाते। उसकी यह भी शिकायत थी कि ब्राउन की प्राकृतिक दृश्यो से युक्त बागवानी इतनी खर्चीली थी कि उससे उसके बहुत से उत्साही सरक्षको का नाश हो गया था। (दि टास्क, पुस्तक ३)। निश्चय ही लोग अपनी सामर्थ्य से कही अधिक व्यय इमारते बनाने पर करते थे और उनमे सुधार करने के उत्साह मे अपनी जागीरो को रहन कर देते थे। क्लेडन के अन्तिम अर्ल व बर्नी ने ऐसा ही किया था।

फैशन (शौक) मे अनेक विचित्र उतार-चढाव होते हे। साहित्य, धर्म और स्थापत्य कला मे 'गोथिक' शैली के पुनर्जीवन के बहुत वर्ष पूर्व कृत्रिम भग्नावशेष मे लोगो की रुचि बढी थी। पूगिन अथवा सर वाल्टर स्काट के जन्म के पूर्व और उनके प्रभाव की अनुभूति के लगभग पचास वर्ष पूर्व भग्न मध्ययुगीन दुर्गों को प्राकृतिक दृश्यो के अग के रूप मे निर्मित किया जाता था और कुछ मकानो मे कल्पित 'गोथिक'

सजावट जोडी जाती थी।[१] किन्तु सौभाग्य से अठारहवी शताब्दी के लोगो ने जिन प्रासादो को अपने रहने के लिए बनाया था वे अधिकाशत ठोस जार्जिन शैली मे बने थे। कभी कभी उनमे कुछ लक्षण पुरातनकालीन होते थे, जैसे द्वारमण्डल (दालान) और मकान की खिडकियो के ऊपर त्रिभुजाकार तोरण। परन्तु उन्हे जार्जिन शैली के साथ, जो स्वय पुनर्जागरण की उत्पत्ति थी, स्वाभाविक रूप से समायोजित किया जा सकता था। इन प्रासादो मे कुछेक अधिक आडम्बरपूर्ण थे जो पहाडी अथवा किसी अन्य शैली मे बने थे जिन्हे प्रासादो के स्वामियो ने इटली के भ्रमण के समय देखा था।

सभी छोटे और बडे ग्रामीण घरो मे लोग सर्वविधि-सम्पन्न जीवन बिताते थे। जागीरो के प्रबन्ध और कृषि मे उन्नति के उत्साह मे भूस्वामी सारे दिन भर घोडो पर सवार होकर बाहर आते-जाते रहते थे। घर पर महिलाए भी उपयोगी कार्यों मे लगी रहती थी। वे अपनी विशाल गृहस्थियो के लिए आवश्यक वस्तुओ को जुटाती रहती अथवा सगठन करती थी। साथ कढाई-सिलाई-बुनाई करती अथवा खाद्य पदार्थों और आचार-मुरब्बे वाले कमरे मे कार्य व्यस्त रहती थी। इन घरो मे कई सप्ताहो अथवा महीनो तक एक साथ आगन्तुको के बडे दलो की आवभगत मे प्रचुर भोजो एव पेयो, मैदानी आखेटो, सगीत और साहित्य की गोष्ठियो, ताशो के खेल तथा जुए का प्रबन्ध किया जाता जिससे कभी कभी अतिथि अथवा आतिथेय का नाश आजाता। प्रत्येक ग्रामीण-घर मे उसके आकार के अनुपात मे एक पुस्तकालय का होना सामान्य प्रथा हो गई थी, जिसमे चमडे की जिल्दो मे बधी पुस्तके रहती थी और उन पर पारिवारिक शस्त्रो अथवा शिरस्त्राण के चिन्ह का ठप्पा लगा रहता था। पुस्तको मे अग्रेजी, लैटिन तथा इटैलियन भाषाओ की चिरप्रतिष्ठित रचनाए और भव्य चित्रो से परिपूर्ण यात्रा-वृत्तो, स्थानीय इतिहासो के बृहत् ग्रथ अथवा नक्काशियो और छीटो की पुस्तके सम्मिलित रहती थी। बीसवी शताब्दी की सभ्यता मे उपरोक्त पुस्तकालयो के समान कोई वस्तु नही दिखती है।

बहुत से पहलुओ मे यह एक स्वतत्र और सुविधापूर्ण समाज था। चार्ल्स फाक्स ने लापरवाही से वस्त्र पहनने का फैशन चलाया था। हाउस आफ कामन्स (लोक-सभा)—जो अग्रेजी कुलीनतत्र का केन्द्रीयस्थल था—मे जाने पर १७८२ मे एक विदेशी पर्यटक को वहा के सदस्यो के लापरवाही के व्यवहार की अनुभूति हुई थी—

---

[१] १७५० मे होरेस वालपोल द्वारा स्ट्राबेरी हिल के गोथिक भागो का निर्माण प्रारभ करने के पूर्व भी घरो की गोथिक ढग से आन्तरिक और बाह्य सजावट करने का चलन था जो बहुत अश्लील प्रकार की होती थी। इसके बाद चीनी ढग की सजावट की रुचि का चलन हुआ। किन्तु इस प्रकार के शौक असाधारण थे। देखिए केट्टन-क्रेमर, **होरेस वालपोल**, पृष्ठ १५१-१५४।

'सदस्यो के पहनावे मे कोई विशिष्टता नही है। वे सदन मे बडे कोट, घुडसवारी मे युक्त लम्बे जूते और एड लगाने के काटे पहने चले आते थे। जब दूसरे लोग वाद-विवाद मे भाग ले रहे होते तो प्राय एक-दो सदस्य बेच पर फैलाकर लेटे दिखाई देते। कुछ अखरोट तोड-तोड खाते थे और कुछ सदस्य नारगी खाते रहते। वे अबाध रूप से सदन के बाहर-भीतर आते जाते रहते थे और किसी भी सदस्य को अपनी इच्छानुसार ऐसा करने दिया जाता। जब कभी वह बाहर जाना चाहता तो सदन के अध्यक्ष के समक्ष जाता और झुककर उसकी अनुमति वैसे ही मागता जैसे एक विद्यार्थी बाहर जाते समय अपने शिक्षक की आज्ञा मागता है।' (मारिज, ट्रैवेल्स, एच मिलफोर्ड, १९२४, पृष्ठ ५३)।

ससार की सृष्टि से लेकर आज तक शायद ही स्त्री-पुरुषो के किसी वर्ग ने जीवन के इतने विभिन्न पक्षो का आनन्द इतनी अधिक आसक्ति से लिया हो जितना इस अवधि के अग्रेज उच्च वर्ग ने लिया था। साहित्यिक, क्रीडा-निमज्ज, शौकीन और राजनीतिक समूह एक ही तथा वही थे। जब सभी महान् राजनीतिज्ञो मे सर्वाधिक असफल चार्ल्स फाक्स ने मृत्युशैया पर यह कहा था कि उसका जीवन 'सुखी' था तो उसने सत्य ही कहा था। सर्वथा प्रखर वाकपटुता, घोरतम राजनीति, तीतरो की शिकार मे कई-कई दिनो तक पैदल फिरना, ग्रामीण क्रिकेट, असीम बात-चीत और अग्रेजी, यूनानी, लैटिन तथा इटालियन काव्य और इतिहास के लिए प्रगाढ अभिलाशा (उत्कठा, लालसा) ये सभी और जुआडी की विक्षिप्तता—फाक्स इनका आनन्द ले चुका था और जो अगणित मित्र उसे प्रेम करते थे उन सभी के साथ वह इन सभी मे भाग लेने का सुख भोग चुका था। वह होलखम मे एक वर्षाकालीन दिन बिताने के लिए भी कम सुखी नही था जब उसने एक झाडी के नीचे बैठकर वर्षा की परवाह किए बिना एक किसान से मित्रतापूर्ण बाते की थी, जिसने उसे शलजम के उत्पादन के रहस्य को समझाया था।

क्रिया और सुख के नानारूपो मे फाक्स उस समाज का प्रतिनिधि था जिसमे दीर्घकाल तक वह एक गण्यमान व्यक्ति रहा था। उन उदार-विचार एव उन्मुक्त हृदय वाले कुलीनो ने ग्राम और नगर तथा सार्वजनिक एव निजी जीवन की समस्त क्रियाओ मे भाग लिया था और उनका रसास्वादन किया था। इन लोगो के देशवासियो को उनकी क्रियाओ पर किचित प्रतिबध लगाने का अनुभव नही होता था। इन कुलीनो मे से अधिक शौकीन लोगो मे गम्भीर दोस्त होते थे। यद्यपि कहावत यह प्रचलित है कि 'उच्चकुलीन के समान मदिरा पिए हुए' किन्तु ऊच और नीच सभी वर्गों के अग्रेजो मे, अत्यधिक मदिरा पान की आदत थी। किन्तु उस काल के समाज के सर्वोच्च स्तरो मे अधिक जुआ खेलना और दाम्पत्य अविश्वास शायद सर्वाधिक अवलोकनीय थे। यह स्थिति तब तक बनी रही जब तक पादरियो ने अपने प्रभाव से साधारण जनता के

व्यसनो को पहले नियत्रित कर फिर उच्च वर्ग पर नियत्रण नही किया और उन्हे उन्नीसवी शताब्दी मे आने वाले कठोर समय के उपयुक्त नही बना दिया। उन्नीसवी शताब्दी मे उनके आचरण पर सार्वजनिक चर्चा होती थी और उनके विशेषाधिकारो को चुनौती दी गई। किन्तु उस काल के पूर्व तो समय उनका था और वह स्वर्णिम था।

इस प्रतिष्ठित युग मे, जब डा जान्सन के शब्दकोष (१७५५) ने अच्छी अग्रेजी मे स्वीकृत होने वाले शब्दो को निर्धारित करने मे बहुत योगदान किया, शब्दो के अक्षर-विन्यास को उन नियमो द्वारा निश्चित किया गया था जिन्हे अब सभी शिक्षित लोगो मे अविकल माना जाता है। मार्लबारो के युग मे रानिया और महान् सेनाध्यक्ष भी इच्छानुसार शब्दो के हिज्जे करते थे। किन्तु १७५० मे लार्ड चेस्टरफील्ड ने अपने पुत्र को लिखा था—'मै तुम्हे यह अवश्य बताना चाहूगा कि किसी भी शब्द का सही अर्थ मे शुद्ध लिखना साहित्यिक पुरुषो तथा भद्रजनो के लिए समान रूप से आवश्यक है। यदि उनमे से कोई एक अशुद्ध वर्ण विन्यास करता है तो उसे शेष जीवन भर उपहास्य विषय बना रहना होगा। मै एक ऐसे गुणवान व्यक्ति को जानता हूँ जिसे 'होलसम' शब्द के वर्णविन्यास मे 'डब्लु' छोड देने पर सदैव उपहास सहना पडा।'

साथ मे उसने अपने पुत्र को प्लैटो, अरस्तू, डिमास्थेनीज, थ्यूसीडाइड्स की रचनाओ को पढने का परामर्श दिया जिन्हे केवल दक्ष लोग ही जानते है यद्यपि बहुत से लोग होमर की रचनाओ से उद्धरण दे देते है। चेस्टरफील्ड ने लिखा था कि ग्रीक साहित्य से परिचय होना एक मनुष्य की विशिष्टता है। केवल लैटिन से परिचय पर्याप्त नही है। यह महत्वपूर्ण है कि उस काल मे जब फैशन का प्राबल्य था तो फैशन मे अग्रणी व्यक्ति एक बहुत ही वास्तविक प्रकार की शास्त्रीय विद्वता को एक भद्रजन के चरित्र के उपयुक्त मानता था।

शिकार के लिए वन्य पशुओ-पक्षियो का पीछा करने के पुराने रूपो के स्थान पर अब लोमडी का पीछा किया जाने लगा था। अतीत के सभी युगो मे हिरण की शिकार को सर्वश्रेष्ठ आखेट माना जाता था किन्तु अब एक्समूर तथा कुछ अन्य क्षेत्रो के अतिरिक्त इस आखेट की स्मृति मात्र शेष थी। १७२८ मे ही कुछ शिकारो को हिरण को गाडी मे ढोने की कुख्यात सज्ञा दी जा चुकी थी और यह हिरण के शिकार का अन्त था। इसका स्पष्ट कारण था कि जगलो का विनाश हो गया था। ऊसर भूमियो की घेरेबन्दी तथा अधिकाधिक भूमि पर खेती होने के कारण वन्य हिरणो के झुडो मे निरन्तर कमी आ रही थी जो पहले ग्रामीण क्षेत्रो मे स्वतत्र घूमा करते थे। जार्ज तृतीय के शासनकाल मे वलूत वृक्ष के नीचे घास की कोपलो को चरते हुए हिरणो को भद्रजन के पार्क की शोभा माना जाता था, जो उसकी सीमाओ मे सुरक्षित बन्द

रहते थे और शिकार के पशु नही माने जाते थे। पार्क का स्वामी अथवा उसका आखेट पशु निरीक्षक उपयुक्त समय पर उनका शिकार कर लेते थे।

खरगोश का शिकार, जो शेक्सपीयर और सर रोगर डि कावरली को प्रिय था, धीरे-धीरे समाप्त हुआ। यद्यपि सम्पूर्ण अठारहवी शताब्दी मे लोमडी का शिकार प्रचलित हो रहा था फिर भी १८३५ में एक आखेट-पत्रिका ने लोमडी के शिकारी कुत्तो के १०१ झुडो की तुलना मे खरगोश के शिकारी कुत्तो के १३८ झुडो की सूची दी थी। खरगोश के शिकारी कुत्तो से यह लाभ था कि जब वे खरगोश का पीछा करते थे तो पैदल भागने वाला ग्रामीण भी खरगोश को छोटे-छोटे चक्कर काटते हुए देख सकता था। इसके विपरीत, शिकारी कुत्तो द्वारा पीछा करने पर लोमडी सीधे और लम्बे भागती थी और शिकारी की दृष्टि से शीघ्र ही ओझल हो जाती थी। किन्तु यद्यपि लोमडी के शिकार के क्षेत्र मे साधारण स्थिति के और पैदल शिकारी बहुत कम होते थे इस शिकार मे लाल और नीले कोटधारी शिकारी, शिकारी कुत्ते और बिगुले सब मिलाकर ग्रामीण जनता के सभी वर्गों के लिए बड़े आकर्षक थे। लोमडी के शिकार के स्फूर्तियुक्त गाने इतने लोकप्रिय थे कि वे साधारण मदिरालयो और भूस्वामियो के घर मे भोजन की मेज पर समान रूप से उल्लास और उच्च स्वर मे गाये जाते थे।

जार्ज तृतीय के शासनकाल मे लोमडी के शिकार के वे सभी सारभूत लक्षण अक्षुण्ण थे जो सदैव उसमे थे। अतीत मे केवल वे लोग शिकार मे भाग नही लेते थे जो काउण्टी के बाहर के निवासी होते थे। किन्तु अब यह ऐसी क्रिया नही रही थी जिसमे एक अथवा दो पडोसी घोडो पर सवार होकर अपने ही खेतो मे शिकार खेलते। अब शिकारी कुत्ते सारे जिले मे दौडा करते थे और बैडमिन्टन, पिचले तथा कुओर्न जैसे महान् शिकारियो ने उस (शिकार) विज्ञान को इतना विकसित कर दिया कि वह आज भी अपरिवर्तित है। ज्यो-ज्यो शताब्दी बीतती गई शिकार के पीछे अधिकाधिक दूरी तक दौडे होने लगी और घेरेबन्दी अधिनियमो ने मिडलैंड्स (मध्य प्रदेशो) के शिकारी क्षेत्रो मे अनावृत्त मैदानो को बाडियो मे विभक्त करके घोडो तथा सवारो के लिए अधिक निपुणता से कार्य करना आवश्यक बना दिया था। किन्तु इसमे भी बहुत पूर्व सन् १७३६ मे भूस्वामी कवि सोमरविले ने अपनी कृति 'चेज' मे कूदने को शिकार का एक आवश्यक अग माना था। उसकी कविता के एक अश का भावार्थ इस प्रकार है—
"प्रतिस्पर्धा मे स्फूर्त शिकारी मैदान मे अन्यो को पछाड देने के लिए कठोर प्रयत्न करते थे। वे बन्द द्वारो को कूद जाते थे। गहरी खाइयो को हर्षोन्मत्त होकर लाघ जाते थे। मार्ग मे आने वाली कटीली तथा उलझी हुई झाडियो को एक ओर हटाकर वे आगे बढ जाते थे।"

अठारहवी शताब्दी मे वन्य पक्षियो की शिकारो को जाल मे फसाकर अथवा

लासा लगाकर शिकार करने के स्थान पर उन्हे गोली से मारना प्रचलित हो गया था। इसकी कार्यप्रणाली आधुनिक प्रथा की ओर बढ रही थी किन्तु वन्यपशुओ का पीछा कर शिकार करने की तुलना मे इसकी प्रगति धीमी थी। पक्षियो का 'हाकना' अभी प्रारम्भ नही हुआ था। लम्बे, तथा हाथ से कटी हुई फसल के डठलो की उपस्थिति के कारण शिकारियो के लिए तीतरो के निकट पहुँच जाना सरल था। वे वफादार शिकारी कुत्ते (लम्बे बालो वाले) के पीछे-पीछे उन तक चले जाते थे। चकोरो (बीजको) को छिपने के स्थानो से हकार कर इतना ऊचा नही उडाया जाता था कि वे बन्दूकधारी शिकारियो के सिर पर से उडे। परन्तु उन्हे बाडियो तथा झाडियो से भूकते हुए लोमश कुत्तो द्वारा बाहर निकाला जाता था। ज्योही वे फडफडाकर ऊपर उढते उन्हे बन्दूक से मार दिया जाता। उत्तरी घास के मैदानो मे आज की तुलना मे रोएदार टागो वाले मुर्गो की सख्या कम थी किन्तु वे कम वन्य थे। उपयुक्त स्थानो पर काले पक्षी और बतखे बहुतायत से थी और प्रत्येक स्थान पर खरगोशो के झुड के झुड फिरते थे जो किसानो को बडी हानि पहुचाते थे। वर्तमान समय (१६३६) की तुलना मे चूहे फसल के लिए कम हानिकर थे क्योकि कृषिगत भूमि की तुलना मे घास के मैदानो का अनुपात कम था। टिटहरी जाति के पक्षी, रवट-मीने, तितलौआ, करवानक, कश्मीराश्वक (क्षुद्र पक्षी विशेष), लैण्ड रेल्स तथा अन्य वन्य पक्षियो को उतनी ही स्वतत्रता से बन्दक से मारा जाता था जितना कि नियमित पशुओ का शिकार होता था।

उस समय बारूद भरी जाने वाली, चकमक पत्थर और इस्पात से युक्त, देर से दगने वाली बन्दूको का चलन था जो वर्तमान समयो की कारतूस का खोल बाहर फेक देने वाली बन्दूको से बिल्कुल भिन्न थी। पहले की बन्दूक दागने मे अधिक देर लगती थी अत उडते अथवा भागते हुए पक्षी के काफी आगे निशाना लगाया जाता था। यह बडी चतुराई का कार्य था। इसमे कोक आफ नारफोक बडा निपुण था। कई अवसरो पर उसने एक सौ बार से कम बन्दूक दागकर ८० तीतर मारे थे। बन्दूक को दुबारा भरने मे समय लगता था और यदि उसमे थोडी भी असावधानी रह जाती तो भी खतरा था। अत प्रत्येक बार बन्दूक छोडने के पश्चात् शिकारी को ठहरना पडता था। जब तक वह अपनी बन्दूक को भरता तब तक शिकार का पीछा कुत्ता करता रहता था। अठारहवी शताब्दी के मध्य काल मे शिकार किए हुए पशु-पक्षी को ढोने वाले जैसे 'टॉम जोन्स' मे वर्णित ब्लैक जार्ज, उतने सम्मानित वर्ग के लोग नही माने जाते थे जितने कि कालान्तर मे उनके उतराधिकारी माने जाते थे। वे बहुधा सबसे निकृष्ट शिकार-चोर होते थे जो शिकार का एक भाग अपने स्वामी को देते थे और दो भाग स्वय ले लेते थे। किन्तु ऐसा नही था कि केवल भद्रजन और उनके आखेट-वाहक ही शिकार लेते हो, प्राचीन इगलैड मे शिकार चोरी मे कभी 'युद्धविराम' नही हुआ था।

स्टुअर्ट काल मे हेम्पशायर और केट मे साधारण जनता के एक खेल के रूप मे क्रिकेट का विकास साधारण और स्थानीय रूप से हुआ था। इस खेल मे एक छडी पर गेद मार कर चोटो की सख्या को गिनने की मौलिक रीति निरक्षरता की द्योतक थी। किन्तु १८वी शताब्दी के आरभ मे क्रिकेट का विस्तार भौगोलिक और सामाजिक सीमाओ दोनो मे हुआ था। १७४३ मे यह कहा जाता था कि कुलीन भद्र जन और पादरी कसाइयो और मोचियो के साथ यह खेल खेला करते थे। इसके तीन वर्ष पश्चात् जब एक मैच मे सम्पूर्ण इगलैड की टीम के विरुद्ध केट की टीम ने १११ नोचेज बनाये तो विजयी पक्ष का एक सदस्य लार्ड जोह्न सेक्विले भी था, जिसका कप्तान नोल मे काम करने वाला एक माली था। ग्रामीण क्रिकेट का सारे देश मे बहुत तीव्रता से विस्तार हुआ। उन दिनो मे एक वैज्ञानिक खेल बनाने के पहले क्रिकेट को देखना ससार मे सबसे अच्छा लगता था। क्योकि इसमे मनोरजक घटनाए बहुत शीघ्र क्रम मे घटती थी। प्रत्येक बार गेद फेकने से एक सभावित सकट खडा हो जाता था। भूस्वामी, किसान, लुहार और श्रमिक अपनी स्त्रियो और बच्चो के साथ इस खेल का मजा लेने आते थे और गर्मियो मे सम्पूर्ण तीसरे पहर बहुत आराम और मोद से साथ साथ बैठते थे। यदि फ्रास के कुलीन लोग क्रिकेट को अपने कृषको के साथ खेलने मे समर्थ होते तो उनके ग्रामीण दुर्गो को कभी जलाया नही जाता।

इस शताब्दी के अतिम वर्षो तक दो विकेटो मे से प्रत्येक मे दो स्टम्प होते थे। जिनकी ऊचाई केवल एक फुट होती थी और दोनो के बीच मे लगभग दो फुट की दूरी होती थी। तीसरा स्टम्प उनके दूसरी ओर गाडा जाता था। स्टम्पो के बीच की दूरी को पॉपिग होल कहते थे। जिसमे कि बल्लेबाज को अपने बल्ले के सिरे को घुसेडना पडता था पूर्व इसके कि विकेटकीपर गेद को अपनी उगलियो पर करारी चोट खा जाने का खतरा उठाकर उसमे फेकता। बालर गेद को बहुत तेजी से जमीन के सहारे नीचे वाली विकट पर मारता था और जब जैसा कि बहुधा होता था गेद स्टम्पो के बीच से बगैर उनमे लगे हुए पार निकल जाती तो बल्लेबाज आउट नही होता था। बल्ला सिरे पर हाकी की स्टिक की भाति मुडा होता था। इस शताब्दी के अन्त समय तक इस खेल मे मौलिक परिवर्तन आ गये थे, पापिग होल समाप्त कर तीसरा स्टम्प जोड दिया गया था और विकेट की ऊचाई २२ इच कर दी गई थी। इन परिवर्तनो के प्रतिफल अब सीधा बल्ला प्रयोग होने लगा था।

१८वी शताब्दी के अग्रेज भोजन के सुखो के व्यसनी हो गये थे और हमारे द्वीप मे भोजन बनाने की कला मे कुछ विशेष गुण और अवगुण पहले ही आ गये थे। उत्तम प्रकार की मछलियो और लाल एव सफेद मास के उपभोग पर विदेशी चकित रह जाते थे। किन्तु वे शाक भाजी के सम्बन्ध मे अग्रेजी नीति की प्रशसा नही करते थे। क्योकि शाक भाजी का उपभोग केवल मास के साथ थोडी मात्रा मे होता था।

अग्रेज बावर्ची शाक भाजी बनाने मे उतने ही अयोग्य प्रतीत होते थे जितना कि कॉफी बनाने मे। जिसे वे केवल भूरे पानी से किसी प्रकार भी अच्छे रूप मे नही बना पाते थे किन्तु शाक भाजी का कैसा भी प्रयोग होता, धनवानो और निर्धनो के रसोई-बगीचो मे विभिन्न प्रकार की शाक भाजी अब बहुत प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध थी। आलू, गोभी, गाजर, शलजम, ककडी अथवा खीरा, अकुर और सलाद मास के साथ उतनी ही बहुतायत से खाये जाते थे जितना कि आजकल। मीठे पकवान और खीर विशेष कर प्लब पुडिग, जैसाकि पार्सन वुडफोर्ड उनका उच्चारण करता था, अग्रेजो के भोजन कक्ष मे बडे सम्मानित माने जाते थे।

१७९० मे वुडफोर्ड ने आटे पर जो व्यय किया था वह केवल ५ पौड ७ शिलिग ६ पेस था। यह रेक्टर आवास मे पकाई और खाई जाने वाली रोटी के बहुत सीमित परिमाण का सकेत है। उसी अवधि मे मास पर इसका व्यय ४६ पौड और ५ शिलिग हुआ था। इस अवधि की अग्रेजी मध्यमवर्गीय गृहस्थी मे निश्चय ही बहुत अधिक मात्रा मे मासाहारी थी और उसके भोजन मे रोटी के स्तर से बहुत अधिक ऊचा स्तर मास का था। उसी वर्ष उपरोक्त व्यक्ति के घर मे शराब बनाने के लिये माल्ट पर २२ पौड १८ शिलिग ६ पेस व्यय हुआ था। इस योग्य पादरी ने अपने भोजनो का विवरण अपनी डायरी मे इस प्रकार दिया है। "एक औसत समूह के लिये एक अच्छे सामान्य सायकालीन भोजन मे (१७७६) उबले हुए भेड या बकरी के मास की एक टाग, विभिन्न वस्तुओ के मिश्रण से बनी हुई खीर और एक जोडा बतखे सम्मिलित रहती थी। १७७७ मे ऐसे ही एक अन्य भोजन मे प्याज लिपटे हुए खरगोशो का एक जोडा, उबाले हुए बकरी के मास की गर्दन और भुना हुआ एक हस, एक किशमिश की खीर और सादी खीर शामिल रहते थे। और इन सबके बाद मे चाय पी जाती थी। एक बहुत ही भव्य भोज जिसका उसने आक्सफोर्ड के क्राईस्ट चर्च मे (१७७४) आनन्द लिया था, हमारी धारणा के उन सामूहिक भोजो के बहुत निकट है जिनमे हमारे पूर्वजो मे से अधिक विशिष्ट लोग बडे आनन्द से भाग लेते थे।"

"भोजन मे पहले एक बडी कॉड मछली, बकरे अथवा भेड के मास की हड्डी, कुछ शोरबा, मुर्गे के मास की एक कचौडी, खीर तथा खाद्य-जडे आदि परोसी गई। उसके बाद, कबूतर और शताबर, कुकुरमुत्तो तथा ऊची लगी चटनी के साथ बछडे के मास का एक टुकडा, भुनी हुई मीठी रोटिया, गरम झीगा मछली, चीलू की मीठी पकौडी, और सबके बीच मे अगूर की मदिरा और मक्खन से मिश्रित जमाया हुआ एक पदार्थ तथा मुरब्बे परोसे गए थे। भोजन के अन्त मे हमने फलो का अल्पाहार किया और मैडीरा, श्वेत तथा लाल पोर्ट नामक मदिराए पी। हम सब बहुत प्रसन्न एव प्रफुल्लित थे।"

देहाती क्षेत्रो मे 'मदिरा पीकर' अधेरी रात मे घोडे पर घर जाने मे बहुधा दुर्घटनाए और मृत्युए हो जाती थी।

जर्मन युवक मोरिज, जो इगलैड मे १७८२ मे अल्प आय पर निर्वाह करते हुए रहा था, पादरी वुडफोर्ड की तुलना मे कम सुखी रहता था क्योकि वह अग्रेज गृह-स्वामिनियो की दया पर निर्भर था जो उसके प्रति वही व्यवहार करती थी जैसा आजकल भी अधिकाश गृहस्वामिनिया अपने अभागे अतिथियो के प्रति करती है। उसने लिखा था कि उसके जैसे टिकने वालो का जो अग्रेजी भोजन (शाम का) होता था उसमे साधारणतया एक आधा-उबाला हुआ अथवा आधा-भुना हुआ मास का टुकडा, सादे पानी मे उबाली हुई करमकल्ला की थोडीसी पत्तिया सम्मिलित रहती थी, जिनपर वे आटा और मक्खन की बनी चटनी उडेल देती थी।

(मुझे सदेह है कि इसी तरल पदार्थ (द्रव) का वोल्तेयर को स्मरण था जब उसने कहा था कि अग्रेजो के धर्म तो सैकडो है किन्तु चटनी केवल एक है)।

किन्तु मोरिज ने यह भी लिखा था, "मुझे उत्तम मक्खन तथा चेशायर के पनीर के अतिरिक्त अच्छे गेहू की रोटी मिलती थी। चाय के साथ रोटी और मक्खन के जो टुकडे दिए जाते थे वे पोस्त की पत्तियो की भाति पतले होते थे। किन्तु चाय के साथ साधारणतया खाई जाने वाली एक अन्य रोटी और मक्खन होता था जो आग से सेकी जाने पर अत्यधिक अच्छी होती थी। रोटी के कई टुकडो को एक साथ लेकर उन्हे काटे पर रखकर आग से सेको, जब तक कि मक्खन पिघल कर कई टुकडो मे एक साथ नही पहुच जाय, इसे 'टोस्ट' कहते है।"

आर्थिक परिस्थितियो के कारण अठारहवी शताब्दी का पूर्वार्ध श्रमिक वर्ग के लिए अपेक्षाकृत प्रचुरता का युग था। कम से कम उनमे से अनेक प्रात काल के कलेवा (उपाहार) मे बीयर, रोटी, मक्खन, कुछ मात्रा मे पनीर, और कभी कभी मास भी खाते थे। दोपहर को भी बहुतो के भोजन मे घटिया मास की प्रचुर मात्रा होती थी स्मोलेट ने 'रोडरिक रैण्डम' नामक अपनी कृति (१७४८) मे एक बावर्ची की दुकान में प्रवेश करने का वर्णन किया है—

"सारी दुकान मे उबलते हुए बैल-गाय के मास की भापो से घुटन पैदा करने वाला वातावरण था। उसमे घोडा-गाडियो के कोचवानो, पालकी ढोने वालो, ठेले वालो तथा बेकार अथवा भोजन के स्थान पर प्रदत्त मजदूरी पर काम करने वाले श्रमिको की भीड थी जो गाय की अग्रजघा, उदर, गाय के खुर और कबाब पृथक पृथक मेजो पर बैठकर खा रहे थे जो कपडे से ढकी होती थी। यह सब देखकर मै लगभग क्षुधाग्रस्त हो गया।"

किन्तु मजदूरी तथा जीवन दशाओ मे असख्य स्थानीय विविधताओ के कारण श्रमिक के भोजन के विषय मे साधारणीकरण करना भ्रामक है। बहुत से श्रमिक

मुख्यतया रोटी तथा पनीर पर जिन्दा रहते थे और कुछ शाक-भाजियो, बीयर तथा चाय पर भी ।

अठारहवी शताब्दी मे इगलैड के जनसाधारण के जीवन मे रगमच का बहुत प्रचलन था । चार्ल्स द्वितीय के शासन मे इसके पुनरुज्जीवन के आरभिक वर्षो मे यह केवल लन्डन और राजदरबार के सरक्षण तक ही सीमित था । अब इसका विस्तार सारे देश मे हो गया था । बडे प्रान्तीय नगरो मे रगमच की कम्पनिया स्थापित हुई और पर्यटक रगमच-कलाकार सदैव ग्रामीण क्षेत्रो मे घूमते रहते थे । वे खलिहानो तथा नगर-भवनो मे देहाती दर्शको के समक्ष नाटकीय प्रदर्शन करते थे । पार्सन वुडफोर्ड ने कैसल कैरी के कोर्ट हाउस मे समय समय पर उनके द्वारा किए गए प्रदर्शनो का उल्लेख किया है । कैसल कैरी समरसेटशायर का एक गाव था जिसमे १२०० निवासी रहते थे । यहा रगमच के कलाकार समय समय पर 'हैमलेट', 'बेगर्स ऑपेरा' तथा अन्य अच्छे नाटको का प्रदर्शन करते थे । फर्कुहार का नाटक 'ब्यूक्स स्ट्रेटेजम' १७०७ मे उसकी मृत्यु के बहुत समय पश्चात् तक जनता मे लोकप्रिय रहा । किन्तु उस समय अच्छे नये नाटको की कमी थी जो अगले साठ वर्षो तक बनी रही जब तक कि गोल्डस्मिथ तथा शेरिडन ने कुछ प्रथम श्रेणी के सुखान्त नाटको का सृजन नही किया ।

दूसरी ओर, जिस देश मे हेन्डेल के धर्म-गीतो (भजनो) को इतना प्रबल सरक्षण मिले उससे हम रगमच के सगीत-पक्ष के उत्तम विकास की अपेक्षा कर सकते है । टामस आर्न (१७१०-१७७८) ने शेक्सपीयर के गीतो को व्यवस्थित किया और अनेक नाटको के आनुषागिक सगीत को लिखा । और अग्रेजी लघु सगीत-नाट्य (जो 'बैगर्स ऑपेरा' से लेकर गिलबर्ट और सलीवान के सगीत नाटको तक सतत रूप से जीवित रहा) की अत्यधिक उन्नति डिवडिन के काल मे (१७४५-१८१४) हुई थी । जब वह बहुत युवा था तभी उसने 'लायनेल और क्लैरिसा' के सगीत की रचना की थी । वह दीर्घकाल तक अपने देशवासियो को भावनाप्रधान, देशभक्तिपूर्ण और नौपरिवहन सम्बन्धी गीत देता रहा जिन्हे वे बडे प्रेम से गाते थे । ऐसे ही गीतो के दो उदाहरण हैं 'पुअर जैक' और 'टाम बाउलिग ।' उस समय इगलैड की जनता केवल सगीत को नही सुनती थी । उन्हे स्वय गाने मे कोई लज्जा अनुभव नही होती थी क्योकि वे घुडसवारी करते, काम करते अथवा चलते समय निश्चित होकर गा सकते थे । घर से बाहर इन कामो को करते समय न तो उन्हे सदा जल्दी रहती थी और न उनकी उन्मुक्तता मे बाधक कोई ही भीड होती थी । घर मे रहते समय उन्हे प्रभूत अवकाश मिलता था जिसका उपयोग वे सगीत के लिए कर सकते थे ।

अठारहवी शताब्दी के मध्य मे गैरिक की और उसके अनन्तर श्रीमती सिडन्स की आश्चर्यजनक प्रतिभा ने लडन के रगमच को प्रसिद्ध कर दिया था । शेक्सपीयर के

नाटको का अर्थ विपर्यय की दृष्टि से उन्होने जो रूपान्तरण किया था—जैसे 'किग-लियर' को एक सुखान्त नाटक बनाना—वह वीभत्स था। किन्तु हमे उस काल के अभिनेताओ तथा साहित्यिक आलोचको की सेवा का स्वीकारना होगा जिन्होने अग्रेजी जनता को यह विश्वास दिलाने का सफल प्रयास किया कि शेक्सपीयर हमारे राष्ट्र का सबसे बडा गौरव है। वर्तमान काल की अपेक्षा उस समय शेक्सपीयर की रचनाओ का अधिक व्यापक रूप से अध्ययन होता था, उनके उद्धरण दिये जाते थे तथा जनसामान्य को उनकी जानकारी थी। इसका कारण यह था कि उस काल मे काव्य और महान साहित्य को अधिक अस्थायी प्रकार की प्रकाशित सामग्री से कठोर प्रतियोगिता नही करनी पडती थी। पाठक-वर्ग ठीक उतने ही आकार का था जो महान साहित्य को सर्वोत्तम अवसर प्रदान कर सके। उस समय शेक्सपीयर की तुलना मे मिल्टन की ख्याति और प्रतिष्ठा कम थी। शताब्दी के मध्य तक हाथ से लिखे गए 'समाचार पत्रो' का स्थान मुद्रित समाचार पत्रो ने पूर्णतया ले लिया था। जार्ज तृतीय के शासन के प्रारभ मे कर के कारण इसका मूल्य दो या तीन पेंस होता था और आकार चार बडे पृष्ठो का। कौपर अपने ग्रामीण आवास मे प्रत्येक सायकाल ऐसे समाचार पत्र की अपेक्षा करता था। चाय पीते समय वह उसे जोर से पढकर महिलाओ को सुनाया करता था। भावप्रवण होते हुए भी अपने प्रगाढ मौन को भग करने मे महिलाए भयभीत रहती थी।'

समाचार-पत्र के चार बडे पृष्ठो मे से प्रत्येक मे चार स्तम्भ होते थे। १७७१ के उपरान्त जब ससद के दोनो सदनो ने समाचार-पत्रो को ससदीय वादविवादो को प्रकाशित करने का अधिकार मूकरूप से स्वीकृत कर लिया था तो वह दायित्व समाचार-पत्रो का एक महत्वपूर्ण कार्य बन गया था। चू कि समाचार-पत्रो की क्रेता सीमित जनता सघनता एव बुद्धिमत्ता से राजनीतिक थी इसलिये ससद के अधिवेशन काल मे समाचारो के आधे से अधिक स्थान मे ससदीय समाचार भरे रहते थे। एक या एक से अधिक पृष्ठो मे विज्ञापनो, पुस्तको के परिचय, सगीत गोष्ठियो, रगमचो, पोशाको और घरेलू सेवा की तलाश मे विभिन्न प्रकार के लोगो का विवरण प्रकाशित होता था। शेष पृष्ठो मे कविता, गम्भीर तथा प्रहसनात्मक लेख, समाचार-पत्र को प्रेषित पत्र, जिनपर प्रेषक (सम्वाददाता) के नाम अथवा छद्मनाम के हस्ताक्षर होते थे, सामाजिक अथवा रनमचीय गपशप तथा सूचनाओ की चयनिकाए छपी रहती थी जिनके बीच-बीच मे सरकारी समाचार अथवा प्रशासनिक घोषणाए और विदेशी मामलो की दीर्घ सरकारी रिपोर्टें भरी रहती थी। वस्तुत एक आधुनिक समाचार-पत्र का विकास हो रहा था। किन्तु उस समय तक समाचार-पत्र की विक्रत प्रतियो की सख्या सीमित थी। २००० प्रतियो की बिक्री को अच्छा प्रसार कहा जाता था। १७९५ मे 'मार्निंग पोस्ट' का प्रसार घट कर ३५० हो गया था जबकि 'टाइम्स' का प्रसार बढकर ४८०० हो गया था। पत्रकारिता इस समय तक विशाल धन के अर्जन अथवा विनाश का क्षेत्र नही

बना था। इसका पुरस्कार था प्रभाव और वह भी विशेषकर राजनीति मे। अनेक अच्छे प्रातीय समाचार-पत्र प्रकाशित होते थे जिनमे से 'नार्थम्पटन मर्करी', ग्लौसेस्टर जर्नल', 'नार्विक मर्करी' तथा 'न्यूकैसल कौरेण्ट' प्रमुख थे।

चार्ल्स द्वितीय के शासन काल मे रंग-मंच और समाचार-पत्रो का जैसा प्रसार राजधानियो से प्रान्तो की ओर हुआ था वैसे ही पुस्तको के मुद्रण और प्रकाशन का विकास भी हुआ था। विलियम तृतीय के शासन काल मे सेसरशिप और लाइसेंसिंग एक्ट की समाप्ति से प्रिंटिंग प्रेसो की सख्या पर लगा हुआ वैधानिक नियंत्रण भी समाप्त हो गया था। इसका परिणाम यह हुआ कि लन्दन मे न केवल मुद्रण और प्रकाशन के व्यावसायिक प्रतिष्ठानो की बहुत वृद्धि हुई वरन् अनेक अन्य नगरो मे प्रान्तीय छापेखाने स्थापित हुए। उस समय पुस्तको के प्रकाशन और विक्रय के वाणिज्य मे एक ही प्रतिष्ठान या फर्म लगा रहता था।[1] १७२६ और १७७५ के बीच लन्डन के बाहर इंगलैंड मे ऐसी फर्मो की सख्या १५० थी और लगभग इतनी ही फर्मे राजधानी मे थी।

डा० जॉन्सन के काल मे अनेक प्रान्तीय नगरो के प्रबल साहित्यिक और वैज्ञानिक जीवन को स्थानीय समाचार-पत्रो और स्थानीय प्रकाशन फर्मो से प्रोत्साहन मिला था जो बहुधा एक उच्च स्तर का होता था। इस शताब्दी के अन्त के पूर्व ऐसी प्रथम श्रेणी की रचनाए, जैसे बेविक की 'ब्रिटिश बर्ड्स्' और उसकी विख्यात काष्ठ-कलाकृतियो का मुद्रण और प्रकाशन न्यू केसेल ओन टाइन मे हो रहा था। यद्यपि अठारहवी शताब्दी का मुद्रण एलिजाबेथ के काल के मुद्रण की अपेक्षा कम सुन्दर था और विक्टोरिया के काल की तुलना मे यह आन्तरिक रूप से कम शुद्ध होता था फिर भी उन दोनो से एक सुन्दर कला के रूप मे अधिक श्रेष्ठ था।

उस शताब्दी के कुलीन लोगो द्वारा पसन्द की जाने वाली बृहत् और व्यय साध्य पुस्तको का अधिकाश प्रकाशन चन्दे की सहायता से होता था। जिसके लिये लेखक अपने मित्रो और सरक्षको मे से ग्राहक खोजता था। इस व्यापार का अधिकाश भाग उत्कृष्ट निजी पुस्तकालयो पर निर्भर था। किन्तु लन्डन और प्रान्तो मे दोनो ही स्थानो पर प्रसार पुस्तकालय विद्यमान थे, विशेषकर प्रान्त के स्वास्थ्यदायी नगरो मे

---

[1] इन फर्मों मे से सर्वाधिक दीर्घजीवी लागमैन्स का फर्म था। १७२४ मे टाम्पसन लागमैन्स ने इस व्यापार मे प्रवेश किया था। यह अब भी एक पारिवारिक प्रतिष्ठान है और १९४० मे शत्रुओ द्वारा विनिष्ट होने के पूर्व यह पैटर नोस्टर रो नामक अपने पुराने स्थान पर ही व्यापार करता रहा था। अब केवल यह व्यापार प्रकाशन तक सीमित है, क्योकि पुस्तको का विक्रय एक पृथक व्यापार हो गया है।

ऐसे प्रथम पुस्तकालय की स्थापना १७४० मे हुई थी। बाथ और साउथैम्प्टन दोनो मे ही श्रेष्ठ प्रसार पुस्तकालय स्थित थे। निजी मित्रो और पडोसियो मे बुक क्लब ही सामान्यतया प्रचलित थे।

कविता, यात्रा, इतिहास और उपन्यास सभी की पुस्तके लोकप्रिय थी। इगलैड मे अपने निवास काल के पश्चात् जर्मन यात्री मोरिज ने उस काल की (१७८२) हमारी साहित्यिक सभ्यता के प्रमाण मे महत्वपूर्ण उल्लेख किया है। यह नि सन्देह सत्य है कि जर्मनी के शास्त्रीय लेखको की तुलना मे अग्रेजी शास्त्रीय लेखको की पुस्तको का बहुत अधिक अध्ययन किया जाता है। जर्मनी मे ऐसी पुस्तको को सामान्यतया विद्वान लोग ही पढते है अथवा अधिक से अधिक मध्यम वर्ग की जनता। इगलैड के राष्ट्रीय लेखको की पुस्तके सभी के पास देखी जा सकती है और सभी लोग उन्हे पढते है। इस बात का पर्याप्त प्रमाण यह है कि इनमे से सभी के अनेक सस्करण प्रकाशित हुए है। मेरी गृह-स्वामिनी जो केवल एक दरजी की विधवा है, मिल्टन की पुस्तके पढती है और मुझे बताती है कि उसका स्वर्गीय पति इसी कारण से उसे पहले पहल प्रेम करने लगा था। यह विधवा मिल्टन को समुचित बल देकर बढती थी। इस अकेले उदाहरण से कोई बात प्रमाणित नही होती किन्तु मै निम्न वर्ग के अनेक लोगो से बाते कर चुका हू। इनमे से सभी अपने राष्ट्रीय लेखको से परिचित थे और यदि उनमे से सबकी रचनाओ को नही तो बहुतो की रचनाओ को उन्होने पढा था।

१८वी शताब्दी मे कुलीनो तथा धनी भद्रजनो द्वारा बृहत् सुदृढ जागीरो का सचय और पू जीवादी कृषि के विकास के कारण छोटे भूस्वामी सामान्यत विलुप्त हो गये थे। जिनकी वार्षिक आय १०० पोड से लेकर ३०० पौड तक थी। अथवा जो स्वय अपनी खेती करते थे या उनमे से दो-चार खेतो को लगान पर उठा देते थे। छोटे भूस्वामी, जो एक समय मे ग्रामीण क्षेत्रो के प्रशासन और जीवन मे बहुत महत्व-पूर्ण थे, अब बहुत कम सख्या मे शेष रह गये थे। किन्तु कुछ पहलूओ मे उनके स्थान की पूर्ति ग्रामीण क्षेत्रो मे विभिन्न प्रकार की छोटी आमदनियो पर निर्वाह करने वाले व्यक्तियो और भद्रजनो की बढती हुई सख्या से हो गई थी। किन्तु यह पुराने प्रकार के देहाती भूस्वामियो की अपेक्षा ग्रामीण जीवन से कम आबद्ध थे। इस परिवर्तन से कुछ लाभ भी हुआ और कुछ हानि भी। इससे एक उच्चतर स्तर की सस्कृति का विकास हुआ। 'प्राइड और प्रिजुडिस' नामक कृति मे बेनेट का चरित्र कुछ नये प्रकार का एक उदाहरण है। भूमि की अपेक्षा उसका अपने पुस्तकालय से अधिक लगाव था। डायरी लेखक पार्सन वुडफोर्ड की वार्षिक आय केवल ४०० पौड थी। किन्तु उससे वह अपने घर और बाहर के लिये ५ या ६ नोकर रखता था। जिससे वह अपने सम्बन्धियो की अच्छी तरह देखभाल कर सके, स्वतत्रता से यात्रा की जा सके और धनी और निर्धन लोगो का उदारता से आतिथ्य सत्कार कर सके। प्रत्येक ६ पेस को जब भी वह कभी व्यय करता था या देता था तो उसको लिख लेता था।

उसकी इस आदत से यह सकेत मिलता है कि वह जानता था कि उसे सावधानी से व्यय करना है। इसलिये वह एक मध्य स्तर की आमदनी से भी इतनी अच्छी शैली मे जीवन-यापन करने मे सफल रहा।

सबसे अच्छे प्रकार के घरेलू अथवा बाहरी कर्मचारी पर केवल १० पौड वार्षिक व्यय होता था। बहुत से कर्मचारी इसमे भी कम लेकर सन्तोष करते थे। इन दशाओ मे स्त्री और पुरुष नौकरो की सेनाए भद्र लोगो के घरो मे रहती थी। इनमे से कोई पुराने नौकर हो जाते थे जो कि अपने मालिको की दृष्टि मे घनिष्ठ और विशेषाधिकार प्राप्त स्तर के माने जाते थे। उन्हे नौकरी से निकाल देने का स्वप्न भी उनके मालिक और मालिकनिया नही देखते थे। प्राचीन अग्रेजी जीवन मे यह एक महत्वपूर्ण और मानव-गुण-प्रदायक तत्व था। नौकरानियो की इधर-उधर फिरने वाली जनसख्या, जो शीघ्र ही विवाह करने के लिये नौकरी छोड जाती थी, अपने सेवा काल मे भोजन पकाने और गृहस्थी का प्रबन्ध करने की बहुत सी कलाओ को सीख लेती थी। उनका यह ज्ञान उन्हे पत्नी और माता होने पर बहुत लाभप्रद होता था। इन मामलो मे गावो और कुटीरो की अपनी अविस्मरणीय परम्पराए थी। उस काल मे जब घर के निकट की दूकानो से डिब्बो मे बन्द भोजनो को लेकर प्रत्येक वस्तु खरीदना सम्भव नही था, तब अयोग्य और अप्रशिक्षित गृहिणी नितान्त विनाशकारी मानी जाती थी और इस कारण वर्तमान नागरिक जीवन की तुलना मे उनकी सख्या बहुत कम थी।

अतिरिक्त पठन-सामग्री

इस और पूर्वगामी अध्यायो की सामग्री एव तत्सबधी टिप्पणियो मे मैने विषय के विशिष्ट पहलुओ पर अनेक मूल्यवान रचनाओ का उल्लेख किया है। मै विशेष रूप से चाहूगा कि विद्यार्थी लेकी रचित 'हिस्ट्री आफ इगलैड इन दि एट्टीन्थ सेन्चरी के सामाजिक भागो को तथा एक अन्य बडे महत्व की नवीन रचना 'जान्सन्स इगलैड', जिसे १९३३ मे प्रोफेसर टर्बरविले ने आक्सफोर्ड प्रेस के लिए सम्पादित किया था, पढे। इस ग्रथ मे उस काल के जीवन के कई विशिष्ट पक्षो पर अनेक विभिन्न प्रामाणिक विद्वानो के लेख सकलित है। हमारे इतिहास के उस काल का दिग्दर्शन इस ग्रथ मे किया गया है जब समकालीन सस्मरणो, उपन्यासो, डायरियो, जीवन चरित्रो और होरेस बालपोल के पत्रो, की भाँति सामग्री के आधार पर सामाजिक इतिहास का अध्ययन अधिक यथार्थ और बहुत आनन्ददायक हो जाता हे। अठारहवी शताब्दी के इगलैड पर एक बहुत महत्वपूर्ण निबन्ध डब्लु० पी० केर, 'कलेक्टेड एसेज' (१९२५) के प्रथम खण्ड के पृष्ठ ७२-९१ पर पढा जा सकता है।

अध्याय १४

अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ तथा अन्त में स्कॉटलैंड

.[१]

सघ, १७०७—कुलोडन और हाइलैड की विजय—१७४६

इस पुस्तक का क्षेत्र चू कि इगलैड के सामाजिक इतिहास तक सीमित है इसलिये पडोसी देश स्कॉटलैड के विषय मे यहा अभी तक कुछ नही कहा गया है। एडवर्ड प्रथम तथा बालास द्वारा लडे गये युद्धो के दो शताब्दी बाद तक, स्कॉटवासियो तथा अग्रेजो के कुछ परस्पर सम्बन्ध बने हुए थे। एलिजाबेथ के राज्यकाल मे दोनो का सक्रिय वैमनस्य समाप्त हो चुका था, क्योकि कैथोलिक प्रतिक्रियावादी शक्तियो से वे दोनो ही द्वीप की रक्षा करना चाहते थे। लेकिन दोनो ही ने पृथक-पृथक धर्मप्रधान राज्यतन्त्रो को अपनाया और धर्मप्रधान राज्यतन्त्रो की इस पृथकता ने दोनो ही ओर के सामाजिक तथा बौद्धिक जीवन मे विभेद उत्पन्न कर दिये।

स्कॉटलैड के जेम्स शष्ट के इगलैड की गद्दी पर बैठने पर (१६०३) दोनो ही द्वीप पुन एक दुहरे शासन तन्त्र के आधीन हो गए। जेम्स स्वय भी इगलैड की अपेक्षा स्कॉटलैड से ही अधिक परिचित था, लेकिन उसके पुत्र तथा पोत्रो के काल मे स्कॉटलैड का शासन लन्डन के ऐसे पादरियो, दरबारियो अथवा ससद्-सदस्यो की सलाह से चलाया जाने लगा जिन्हे कि स्कॉटलैड वासियो की आदतो तथा आवश्यकताओ का कोई ज्ञान नही था तथा जो उनका उपयोग इगलैड की तत्कालीन राजनीति के ही लिये करना चाहते थे। एडिनबरा की प्रीविकाउन्सिल अपने निर्देश केवल ह्वाइट हाउस से ही प्राप्त करती थी। भले ही चार्ल्स का राज्य काल रहा हो या ओलीवर अथवा जेम्स का, स्कॉटलैड ने अपनी इगलैड की इस अधीनता को कभी पसन्द नही किया। स्कॉटवासियो का इन लोगो के प्रति द्वेषभाव अधिक तीव्र था और अपने इस बडे पडोसी देश के प्रभावो के प्रति भी वे सदा की अपेक्षा इस काल मे अधिक शकालु थे।

इन राजनैतिक परिस्थितियो मे दोनो देशो का सामाजिक जीवन परस्पर पृथक ही रहा। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो की प्रगति मे वस्तुत भौतिक तथा आर्थिक कारण भी पर्याप्त रूप मे बाधक रहे थे। यातायात के मार्ग मे केवल चुगी के कारण ही बाधा उत्पन्न नही हुई, विशाल उत्तरी सडक की जो स्थिति थी वह भी काफी बाधा उत्पन्न कर रही थी। एडिनबरा से लन्डन तक की यात्रा लगभग एक सप्ताह की यात्रा थी और सीमा पर स्थित अग्रेजी बस्तिया जगली लोगो तथा स्कॉटलैड विरोधी लोगो की

बस्तिया थी। धर्म, कानून, शिक्षा, कृषि प्रणालियो तथा विभिन्न वर्गों के परस्पर सम्बन्धो के बारे मे इगलैंड का नेतृत्व स्वीकार करने की तो बात ही क्या, उसकी व्यवस्थाओ को उदाहरणस्वरूप मानना भी उन्हे स्वीकार्य नही था।

दोनो देशो के परस्पर सम्बन्ध निसन्देह इतने कटु थे कि सन् १७०२ मे, अर्थात् विलियम की मृत्यु के पूर्व, जिसका कि शासनकाल कई कठिनाइयो मे होकर गुज़रा था, बुद्धिमान लोगो को यह अनुभव होने लगा था कि दोनो देशो के मध्य राजनैतिक तथा वाणिज्य के क्षेत्रो मे एक समान सगठन होना चाहिये, अन्यथा दोनो देश पुन पृथक-पृथक राज्यो का रूप ले लेंगे और तब युद्ध की अवश्यम्भावी स्थिति को किसी भी प्रकार से नही टाला जा सकेगा। सन् १७८८ की क्रान्ति के बाद से एडिनबरा की ससद् मे स्वतन्त्रता की एक नई भावना प्रकट हुई, और इसके कारण इगलैंड के लिये अपनी कठपुतली प्रीवीकाउसिल द्वारा स्कॉटलैंड के मामलो पर नियन्त्रण रख पाना कठिन हो गया। दुहरे शासन की व्यवस्था विघटित हो चली थी। दोनो देशो के सम्मुख एक मात्र यही विकल्प था कि या तो समानता के आधार पर दोनो परस्पर सगठित हो जाए, अन्यथा वर्तमान सम्बन्धो को और भी बिगाड ले।

यद्यपि स्कॉटवासियो मे कुछ अविश्वास का वातावरण अवश्य व्याप्त हुआ लेकिन फिर भी सही विकल्प को ही चुना गया। नये आविर्भूत 'ग्रेटब्रिटेन' नामक प्रभुसत्ता सम्पन्न राज्य मे दो पृथक् ससदो तथा वाणिज्य व्यवस्थाओ का स्थान यद्यपि एक सघ अथवा सगठन ने ले लिया लेकिन चर्च तथा कानूनो की दृष्टि से दोनो देशो मे पर्याप्त भिन्नता रही। सन् १७०७ के इस सघ के परिणामस्वरूप यद्यपि स्कॉटलैंड को अपने पृथक् ससदीय जीवन से वचित होना पडा (जिसको कि इतनी गम्भीरता से स्कॉटवासियो ने उस काल मे पहले कभी नही लिया जितना कि हाल ही के वर्षों मे लिया है), फिर भी इगलैंड के बाजारो तथा उपनिवेशो मे उसे पूरा अधिकार प्राप्त हुआ। इस सुविधा ने उसे अत्यधिक गरीबी से मुक्त होने का अवसर प्रदान किया।

लेकिन कुछ पीढियो तक इस सघ से उन्हे कोई विशेष लाभ नही पहुच सका। लेकिन जैकोबाइट तथा हाइलैंड की समस्याओ के सन् १७४५-१७४६ मे हल हो जाने पर स्कॉटलैंड सुखपूर्ण दिनो की ओर अग्रसर होने लगा। उसकी कृषि प्रणाली से, जो कि काफी पुरानी तथा कष्टप्रद हो चुकी थी, शताब्दी के समाप्त होने से पूर्व इगलैंड के उन्नत होते हुए ज़मीदारो ने काफी शिक्षा ग्रहण की। स्कॉटलैंड के कई किसान, बागवान, इजीनियर तथा डाक्टर दक्षिण मे आए तथा अग्रेजो को उन्होने कई बाते सिखाई। अग्रेज स्कॉटलैंड की यात्रा की प्रशसा करने लगा। स्कॉट लोग ब्रिटिश राज्य के उपनिवेशो तथा वाणिज्य, उसके युद्धो तथा भारत पर उसके शासन मे भाग लेने लगे। निर्धनता की इस वर्षों की दासता से मुक्ति प्राप्त होने के बाद स्कॉटलैंड ने सहसा ही वैभव की प्राप्ति की। उसके धर्म से पुरातन निराशावादिता तथा

कट्टरता छटने लगी लेकिन फिर भी वह जनतात्रिक तथा शक्ति सम्पन्न बना रहा। स्कॉटलैंड के ह्यू म, एडमस्मिथ, रॉबर्टसन, ड्यूगल्ड स्टेवार्ट आदि प्रतिभा सम्पन्न पुत्रो ने उसे समस्त वैचारिकजगत मे अग्रणी बनाया। उसकी धाक न केवल ब्रिटेन पर ही बैठ गयी बल्कि समस्त यूरोप के दार्शनिक उससे प्रभावित हुए। स्मोलेट, बॉसवेल तथा बर्न्स ने उसे साहित्य मे तथा राएबर्न ने कला के क्षेत्र मे प्रतिष्ठित किया। इस प्रकार अठारहवी शताब्दी का अन्तिम चरण स्वर्णयुग कहलाने का अधिकारी बना, यही युग अगली पीढी के समय मे भी जबकि सर वाल्टर ने अपने गीतो तथा रूमानी भावधारा द्वारा स्कॉटिश विचारो को समस्त यूरोप पर अकित किया बना रहा।

हैनोवरकालीन स्कॉटलैंड मे हुए परिवर्तनो के सम्बन्ध मे इस अध्याय मे मै पहले महारानी ऐन्नी[1] के समय के सघ मे जो उसकी अवस्था थी उसकी चर्चा करूगा और उसके बाद जार्ज तृतीय के शासनकाल के मध्य मे उसकी जो दशा थी उसकी।

[१]

सन् १७०७ के सघ के समय स्काटलैंड

शासक विलियम, १६८९-१७०२, महारानी ऐन्नी, १७०२-१७१४

बर्न्स तथा सर वाल्टर के समय से ही स्कॉट तथा इगलैंडवासी दोनो स्कॉटिश कहानियो तथा परम्परा मे समान रूप से रस लेते रहे थे, कभी-कभी उनकी साहित्यिक अभिरुचि भावुकता की सीमा तक भी पहुच जाती थी। वे अन्य अधिकृत देशो के साथ अपने देश मे तथा स्कॉटलैंड मे भी प्राकृतिक दृश्यो के सौंदर्य-पान के लिये जाते थे तथा स्कॉटलैंडवासियो की उत्कृष्टता के प्रति एक ईर्षा मिश्रित प्रशसा का भाव भी रखते थे। लेकिन ऐन्नी के शासनकाल मे एक दूसरे से पूर्णतया परिचित नही होना अग्रेजो तथा स्कॉटवासियो मे परस्पर द्वेष भाव तथा दुराव का एक बहुत बडा कारण था। दोनो देशो के लोगो मे सम्पर्क काफी कम तथा सौहार्द्रशून्य था। स्कॉट अपनी जीविका उपार्जन के लिये इगलेंड की अपेक्षा यूरोप ही अधिक जाना पसन्द करते थे। देश निष्कासित जैकोबाइट लोग (जेम्स द्वितीय के मतानुयायी) इटली तथा फ्रास मे रहते थे। प्रेसबिटर चर्च के पादरी तथा वकील कैलविनवादी धर्मशास्त्र तथा रोमन कानून के मूल-केन्द्रो मे अध्ययन के लिये डच विश्वविद्यालयो मे गए। स्कॉटलैंड के आयात-निर्यात कर्त्ता व्यापारी हालैंड तथा स्कैन्डीनेविया जाते रहे लेकिन इगलैंड के उपनिवेशो से अलग रहे। सीमा निवासियो के अतिरिक्त, जो कि प्रत्येक स्कॉटिश वस्तु के प्रति घृणा का भाव रखते आए थे, व्यापार के लिये जो अग्रेज स्कॉटलैंड की

---

[1] इसकी सविस्तार चर्चा मैने अपनी 'इगलैंड अण्डर क्वीन ऐन्ने' नामक पुस्तक के दूसरे भाग में स्कॉटलैंड का विवरण देते समय की है।

कैवियट पहाडियो को पार कर सके उनकी सख्या बहुत कम थी, नार्थम्बर के ईर्षालु लोग यात्रियो को आगाह किया करते थे कि 'स्कॉटलैड ससार मे सबसे अधिक बर्बर देश है।' स्कॉटलैड के पशु-व्यापारी अपने पशुओ को उत्तरी इगलैड के मेलो मे बेचने जाते थे लेकिन वास्तव मे दोनो देशो का परस्पर व्यापार इतना कम था कि कभी-कभी लन्डन से एडिनबरा जाने वाले पत्रो की सख्या केवल एक हुआ करती थी।

एक वर्ष मे मनोरजन के लिये स्कॉटलैड की यात्रा करने वालो की सख्या लगभग एक दर्जन से अधिक नही होती थी। और इनमे से भी अपेक्षाकृत कम स्वस्थ यात्री, गन्दे कमरो वाली बेढगी सरायो के कारण जहा केवल अच्छी फ्रेन्च शराब तथा ताजा मछली के अतिरिक्त ऐसी कोई भी खाद्य सामग्री उपलब्ध नही थी जो अन्य स्वादिष्ट व्यजनो की क्षतिपूर्ति कर सकती, शीघ्र ही वापस चले जाते थे। अग्रेज यात्री की अपने प्रति स्कॉटलैड के इस व्यवहार की शिकायत पूर्णतया उचित नही थी, वह स्वय भी 'घोडे को अस्तबल की जगह ऐसे स्थान पर रखने के लिये दोषी था जो घोडा क्या किसी सुअर के रहने योग्य भी नही होता था', और वहा उसे अच्छी घास के बदले केवल भूसा ही उपलब्ध हो सकता था। यदि ये यात्री कुछ लोगो से पूर्व परिचय के आधार पर आते और कुछ भद्र स्कॉट लोगो के घरो मे उसी प्रकार अतिथि बन पाते जैसे कि स्कॉट लोग आपस मे हुआ करते थे, तो उन्हे इतने कष्ट न झेलने पडते।

इसके अतिरिक्त, स्कॉटलैड मे उस समय कोई ऐसी विशेषता भी नही थी जिसे दर्शक यात्री सुन्दर समझकर उसके प्रति आकर्षित हो पाते। निस्सन्देह स्कॉट लोग अपने देश की मटियाली भूमि तथा हरे-भरे वन-प्रान्तर के प्रति अपने अन्तर्मन मे आकर्षण का अनुभव करते थे, लेकिन जब अपने इस अजान स्नेह को वे स्वय ही साहित्य द्वारा व्यक्त न कर सके तो पडोसी अमित्रो के लिये उस वन्य सौदर्य के प्रति आकर्षित हो पाना तो और भी कठिन था। बेरविक से एडिनबरा की यात्रा करने वाला अग्रेज स्कॉटलैड के दृश्यो को उदास बियाबान तथा अव्यवस्थित जई के खेतो मे विभाजित कर उन्हे उपेक्षा की दृष्टि से ही देखता था। एडिनबरा के आसपास के क्षेत्र को छोडकर यह सब घने वृक्षो से रहित तथा उन हवेलियो, बगीचो, ऊचे गिरजा घरो तथा सुव्यवस्थित खेतो से विहीन था जिन्हे कि अग्रेज यात्री अपने देश मे निरन्तर देखते रहने का आदी हो चुका था। जहा तक उन्नत प्रदेशो के पहाडो का प्रश्न है, उस रास्ते व्यापार या नौकरी के सिलसिले मे बहुत थोडे ही अग्रेज लोग जाते थे और वे उनकी 'भयानक' तथा छोटी कटीली झाडियो के खिले होने पर 'सर्वाधिक अप्रिय' कहकर निन्दा करते थे।

स्कॉटवासी वस्तुत या तो जैकोबाईन चर्च के अनुयायी थे या प्रेसबिटेरी चर्च के और दोनो ही स्थितियो के कारण उन्हे अधिकाश अग्रेज लोगो की सहानुभूति से वचित रहना पडा। अग्रेज किसी भी सम्प्रदाय अथवा धर्म का मतावलम्बी क्यो न हो, स्कॉट-चर्च (किर्क) के कठोर सामाजिक नियमो को देख कर या तो आश्चर्य प्रकट करता था

या उसका मजाक उडाता था। स्कॉटलैंड पर प्रभुसत्ता के काल मे क्रामवैल के सैनिक लोग 'प्रायश्चित के स्टूल पर घृणापूर्ण उपहास के साथ बैठते थे, तथा महारानी ऐन्नी के काल मे भी नैतिक सुधार का यह उपकरण विमतवादी अग्रेजी सम्प्रदायो की स्वच्छन्दता की भावना से उतना ही विलग था जितना कि शिथिल अधिकार सम्पन्न गाव के पादरी से था। अग्रेज विमतवादियो के कैलेमी नामक एक नेता ने स्कॉटलैंड के प्रेसबिटेरी चर्च से भ्रातृत्व स्थापित करने के उद्देश्य से सन् १७०९ मे एक बार स्कॉटलैंड की अपनी यात्रा के दौरान उनकी धार्मिक सभा की कार्यवाही को 'मतविरोधियो के उत्पीडन की पुनरावृत्ति' कह कर उन्हे अपमानित किया था। राजनीति तथा धर्म से सम्बन्धित सभी प्रश्नो के अतिरिक्त, स्कॉट लोगो का वैयक्तिक तथा राष्ट्रीय स्वाभिमान उनकी निर्धनता के प्रसग मे, कल्पना शून्य अग्रेजो को उपहासप्रद ही प्रतीत होता था। यद्यपि किसी भी 'भद्र-पुरुष' को स्वाभिमानी अवश्य होना चाहिये लेकिन बडे लबादे वाले अग्रेज व्यापारी की दृष्टि मे किसी का फटे हाल दिखाई देना उपहासप्रद ही था। स्कॉटो को बहुधा ही ऐसे असस्कृत उलाहनो का सामना करना पडता था जिसे सुनकर वे चुप तथा कठोर ही अधिक होते थे।

स्कॉट लोग अग्रेजो को धन का घमड करने वाले उद्दड पडोसियो के रूप मे देखते थे तथा उन्हे घृणित समझते थे। परम्परा, इतिहास, लोकप्रिय कविताओ आदि मे जिनका कि इस कल्पनाशील तथा भावुक प्रजाति पर अत्यधिक प्रभाव था--सभी मे इगलैंड को एक पुराने शत्रु के रूप मे देखा जाता था। चार शताब्दियो से एक-एक कर दक्षिणवासियो से निरन्तर होते आ रहे युद्ध स्कॉट कविताओ तथा कहावतो का विषय बन गए थे। प्राचीन साम्राज्य मे शायद ही कोई ऐसा स्थान हो जिसके निवासी अग्रेजो द्वारा उसे जलाये जाने की कहानी नही सुनाते थे। और फ्लोड्न, जिसकी कि प्रतिशोध ज्वाला अभी तक शान्त नही हुई थी, गीतो का कथानक बन कर प्रत्येक स्कॉट-वासी के हृदय मे धधकती थी।

एडिनबरा की ससद् विद्रोह के बाद यद्यपि कुछ महत्वपूर्ण अवश्य हो गई थी लेकिन जनकल्पना तथा लोगो के सामाजिक जीवन मे उसका कोई विशेष महत्व नही बन पाया था। ससद की बैठके 'पार्लियामेट हाउस' कहलाने वाले हाइस्ट्रीट पर स्थित एक विशाल कक्ष अथवा हाल मे हुआ करती थी। सघ बन जाने के बाद उसे वकीलो को दे दिया गया था, और आज भी स्कॉटलैंड का वह एक अत्यन्त प्रसिद्ध दर्शनीय कक्ष है। इस कक्ष की ऊची लकडी की छत के नीचे, अभिजात (नोबल) सामन्त (बैरन) तथा नगर प्रतिनिधिगण (बरजेस) सम्मिलित रूप से बैठते थे, उन्हे यद्यपि तीन पृथक श्रेणियो के रूप मे देखा जाता था लेकिन वे सभी उस एक ही कक्ष मे बहस करते थे तथा मतदान करते थे।

यद्यपि ये बैरन अथवा काउन्टी के सदस्यगण, इगलैंड की लोकसभा (हाउस ऑफ

कॉमन्स) की भाति चालीस शिलिग वाले माफी-जागीरदारो (फ्री-होल्ड) की मत-गणना द्वारा नही चुने जाते थे लेकिन प्रत्येक को कुछ ऐसे भद्र पुरुष चुना करते थे जो स्कॉटिश कानून की दृष्टि मे राजा के प्रमुख भूमिधर माने जाते थे। स्काटलैड के ससद मे प्रतिनिधि भेजने वाले नगर भी उतने ही निम्नकोटि के थे जितने अग्रेजी नगरो (जहाँ से कि ससद के प्रतिनिधि चुने जाते थे) के निकृष्ट भाग। अत स्कॉटलैड की ससद मे जाने वाला प्रतिनिधि दल, अग्रेजी ससद के प्रतिनिधियो की तुलना मे निम्न-कोटि का था और इसी को वास्तविक प्रतिनिधित्व कहा जा सकता था। कुछ इस कारण से तथा कुछ स्कॉटलैड की सामाजिक सरचना के सामन्तवादी तथा कुलीन-तन्त्री (एरिस्ट्रोक्रेटिक) होने के कारण, ससद मे अभिजात वर्ग अत्यन्त शक्तिशाली वर्ग था। मुख्य रूप से यही लोग ससद की बहसो तथा गुटबन्दियो का नेतृत्व तथा उसके क्रियाकलापो व नीतियो का निर्धारण करते थे।

इस अभिजात वर्ग की प्रधानता केवल ससद तक ही सीमित नही थी। देहाती क्षेत्र के प्रत्येक जिले मे लोग प्रथा, सम्मान तथा सुरक्षा की आवश्यकता के कारण किसी ऐसे बडे घराने से अवश्य सम्बन्धित रहते थे जो स्कॉटलैड की दृष्टि मे उनके क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता था। स्कॉटलैड के ताल्लुकेदारो को बुलाकर उन्हे हथियार चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता था तथा उनके साथ वे विदेश जाते थे, स्थानीय कुलीन (नोब्ल) अपने महल मे उन्हे भोज पर आमन्त्रित करता था, झगडो मे उनका पक्ष लेता था, उनके स्वार्थो को सिद्ध करने के प्रयत्न करता था तथा बदले मे उनसे अपेक्षा करता था कि वे उसके सम्मान-स्तर को बनाए रखने मे उसकी सहायता करेंगे—चाहे वह सरकार के पक्ष मे उसका उपयोग करे, चाहे यदि सरकार ने उसके अधिकारो का हनन किया है तो उसके विरुद्ध उनका उपयोग करे।

यदि ह्विग तथा जैकोवाइट परस्पर झगडते भी थे, जैसाकि वे महारानी ऐन्नी के काल मे कई बार कर चुके थे और सन् १७१५ मे तो उनमे वास्तविक सघर्ष हो भी चुका था, इसका श्रेय अरगाइल, एथोल, भार अथवा उस क्षेत्र के किसी अन्य अभिजात को ही प्राप्त होता था और इगलैड मे यह स्कॉटलैड की अपेक्षा कुछ कम अनुपात मे था। यदि समस्त अभिजात वर्ग सरकार के विरुद्ध सगठित हो जाता तो स्कॉटलैड की सेना उन्हे देर तक दबाए रखने मे सफल नही होती। लेकिन अन्य वर्गों की भाति वे भी विभाजित थे। और लगभग वे सभी जो राजनीति मे भाग लेते थे पद लोलुप थे क्योकि गरीब देहाती क्षेत्र से प्राप्त होने वाली थोडी मालगुजारी तथा वस्तु-राशि पर सामन्ती राज्य को बनाए रखने के लिए लगभग वे सभी विवश हो चुके थे तथा पद को ही कुलीन जागीरदार की आय का स्वाभाविक साधन समझने के लिये सस्कारो द्वारा विवश हो चुके थे। लेकिन जैकोबाइट तथा ह्विग, दोनो ही पक्षो मे स्वार्थियो के अतिरिक्त राष्ट्रभक्त तथा चतुर राजनीतिज्ञ भी थे और उन्हे मालूम था कि अपने देश के

हितो की पूर्ति किस प्रकार की जाती हे, उनकी वर्ग स्थिति भी अन्यो की अपेक्षा इतनी उच्च थी कि उन्हे जनता मे जनप्रिय बनने की कोई आवश्यकता नही थी। इसी कोटि के लोगो ने सघ की स्थापना मे सहयोग दिया था।

कुलीनो के बाद तालुकेदार अथवा ग्राम्य क्षेत्र के भद्रजन आए। उनके गढी नुमा तथा क्षीणकाय ढलावा तिकोनी छतो वाले भवन, वृक्षो तथा झाडियो से विहीन भूमि पर बनाए गए थे। इगलैंड की भाति भवन निर्माण कला उतनी विकसित नही हो पाई थी। देहात के ऐसे अनेको मकान पिछले युगो मे युद्ध मे काम आने वाली मीनारो मे जोड तोड कर बनाए गए थे। उत्तरी दिशा मे शायद ही कभी कोई खिडकी बनाई गई हो, उस दशा मे जबकि उत्तर दिशा मे ही किसी सुन्दर दृश्य को देखना सम्भव हो सकता था कोई खिडकी नही बनाई गई। घर के लॉन, बराम्दो तथा बगीचो का समय अभी आना शेष था। कृषको के मकान, तथा उनका कूडा और दुर्गन्ध उन भवनो का स्पर्श करते थे, उनकी दीवारो के एक ओर अनाज के खेत थे तथा दूसरी ओर अव्यवस्थित गोभी का बगीचा और दवा बनाने वाली जडी-बूटिया तथा जगली फूलो के पेड।

घर का भीतरी भाग भी, द्वीप के अन्य दक्षिणी भागो मे प्रचलित विलास की वस्तुओ से शून्य था। फर्नीचर काफी साधारण कोटि का था, फर्श पर गलीचे नही थे, तथा दीवारो पर किसी प्रकार के चित्र अथवा कागज आदि कुछ भी नही टागे गए थे। 'अग्नि-कक्ष' ('फायर रूम') को छोडकर सोने वाले कमरो मे आग तापने का कोई स्थान नही था। क्योकि आमोदी ताल्लुकेदार के लिये रात को घर लौटना सुरक्षित नही था—अत अतिथियो के लिये ड्राइग रूम मे ही सोने का स्थायी प्रबन्ध रहता था। आतिथ्य सत्कार मे, एक ही बार मे अनेको प्रकार का मास तथा स्कॉट-लैंड की बनी जौ की शराब परोसी जाती थी, इगलैंड मे स्थानीय ह्विस्की से सत्कार किया जाता था। महारानी ऐन्नी की स्कॉटिश प्रजा चाय को एक खर्चीली औषधि मानती थी यद्यपि मितव्ययिता की अत्यन्त आवश्यकता थी, लेकिन अतिथि सत्कार एक राष्ट्रीय स्वभाव बन चुका था। गाव के मकान मे समकालीन इगलैंड की अपेक्षा समय बिताने के साधन पर्याप्त नही थे अत पडोसी गावो के लोग घोडे पर सवार हो अकस्मात् ही आ जाया करते थे और करीब आधे दिन तक ठहरते थे, उनका हार्दिक स्वागत किया जाता था।

एडिनबरा तथा अन्य कस्बो मे गोल्फ के खेल को आदर की दृष्टि से देखा जाता था। सम्पूर्ण स्कॉटलैंड मे खरगोश, ग्राउस (एक बडा पक्षी), तीतर आदि शिकारो को बन्दूको की अपेक्षा कुत्तो, बाजो तथा जाल की सहायता से ही अधिक मारने अथवा पकडने का प्रयत्न किया जाता था। लेकिन पहले प्राय ही पाये जाने वाले लाल हिरण अब इगलैंड के जगलो मे चले गये थे। सामन तथा ट्राउट मछलियो की इतनी

अधिकता थी कि उनका शिकार न केवल मनोरजन का ही साधन था बल्कि उनसे गरीब लोगो को भोजन भी प्राप्त होता था। कुछ क्षेत्रो मे सामन को खाते-खाते भद्रजन काफी ऊब चुके थे और किसान भी खेती की ओर रुचि लेने लगते थे।

स्कॉटलैड के भद्रजन, हि्वग तथा जैकोबाइट के राजनैतिक विभाजन से यदा कदा ही अलग दिखाई देने वाले प्रेसबिटेरियन तथा एपिस्कोपैलियन वर्गों मे बटे हुए थे। अग्रेजी अर्थो मे वहा टोरी (अनुदारवादी) लोग नही थे, क्योकि टोरी ऐसा एपिस्कोपैलियन था जिसने 'रिवोल्यूशन सेट्लमैंट (क्रान्ति व्यवस्था) को इसलिये स्वीकार किया था कि उसके कारण टोरी के गिरजे को स्थायित्व तथा विशेष सुविधाए मिली थी, जबकि स्कॉटलैड मे क्रान्ति के कारण पोप का अधीनस्थ चर्च उखड चुका था तथा कानून द्वारा भी उसे मान्यता नही मिल सकी थी, अत स्कॉटिश पोप-अनुयायी जैकोबाइट थे तथा अपने सुख की प्राप्ति के लिये क्रान्ति का विरोध करते थे। अग्रेजी तथा स्कॉटिश राजनीति मे यही प्रमुख भेद था और इसने उत्तरी राज्य (नारदर्न किंगडम) के सामाजिक जीवन तथा सम्बन्धो को अत्यधिक प्रभावित किया।

पारिवारिक तथा धार्मिक अनुशासन एपिस्कोपेलियन परिवारो की अपेक्षा प्रेसबिटेरियन परिवारो मे अधिक कठोर हो रहा था। जैकोबाइट परिवार मे अपेक्षाकृत अधिक स्वतन्त्रता तथा उल्लासपूर्ण वातावरण था। लेकिन अत्यधिक प्रेसबिटेरियन धर्मनिष्ठा तथा सार्वजनिक सेवा की तीव्र भावना के कारण कुलोडन के फोर्बस मे व्याप्त अत्यधिक मद्यपता, आतिथ्य सत्कार, विद्यानुराग तथा स्वातन्त्र्य प्रेम मे किसी प्रकार की कमी नही हुई। और महारानी ऐन्नी के गद्दीनशीन होने पर भी स्तोत्र-गान, उपदेश तथा प्रार्थना के कार्यक्रम पोप के सभाभवन मे तथा प्रेसबिर्टेरियन पादरी चर्च मे लगभग उसी रूप मे चलते रहे। महारानी के शासनकाल के उत्तरार्ध मे ही इनमे से कुछ धार्मिक सभा भवनो मे प्रार्थना पुस्तको (प्रेयर बुक) का प्रचलन आरम्भ हुआ। प्रतिस्पर्धी सम्प्रदायो द्वारा प्रचारित सिद्धान्तो मे चर्च-आधिपत्य सम्बन्धी धारणाओं को छोडकर कोई विशेष मतभेद नही था और चर्च आधिपत्य के विषय मे भी कोई अधिक मतभेद नही था, क्योकि नैतिक नियमन तथा जाच के लिए पोप के अनुयायियो की भी अपनी पृथक चर्च-सत्ताए (प्रेस्बिटेरीज) तथा किर्कमत्र (किर्क सेशन्स) हुआ करते थे।

अत दोनो सम्प्रदायो मे तीव्र अन्तर अथवा विभेद वस्तुत राजनैतिक पक्षो मे ही था, और इसका प्रभाव स्कॉटलैड के सामान्य जन की अभिवृत्तियो पर नही पड सका। शैफ्टसबरी तथा बोलिग-ब्रोक की भूमि से ह्यूम की भूमि पर स्वतन्त्र विचार-धारा का प्रसार नही हो सका। विलियम के शासन-काल मे एडिनबरा के एक अभागे विद्यार्थी को ट्रिनिटी तथा धर्मशास्त्र की प्रभुता के सम्बन्ध मे ऐसी शकाए व्यक्त करने

के कारण, जो कि लन्डन के कॉफी हाउस मे एक आक्रोश को जन्म दे सकती थी, फासी दे दी गई थी।

लगभग सभी स्कॉटिश परिवार, विशेष रूप से भद्र वर्ग के, नियमित रूप से या तो पादरी चर्च (पेरिश चर्च) अथवा एपिस्कोपल सभा-भवनो मे जाते थे जहा कि उन्हे विभिन्न अनुपातो मे पानी के घोल के साथ उसी आध्यात्मिक औषधि का पान कराया जाता था। निर्धनता तथा धार्मिक मतभेदो का प्रभाव राष्ट्रीय चरित्र पर सयुक्त रूप से पडा था जिसके कारण तीव्र राजनैतिक विभाजन गौण हो गए थे तथा केवियट पहाडियो के दक्षिण की धनिक तथा विषयासक्त सभ्यता के विरुद्ध सभी स्कॉट नैतिक तथा मानसिक रूप से सगठित हो गए थे। महारानी ऐन्नी के शासन के अन्तिम चरण मे एडीसन तथा स्टील द्वारासपादित **स्पैक्टेटर** पत्र की महिलाओ तथा भद्रपुरुषो मे बढी लोकप्रियता, दक्षिणी ब्रिटेन के उत्तर (नार्थ) पर होने वाले बौद्धिक आक्रमण का पहला यथार्थ उदाहरण थी। सघ निर्माण के परिणामस्वरूप ऐसे प्रभावो की सख्या मे निरन्तर वृद्धि होने लगी।

राष्ट्र की बौद्धिक एकता तथा उसके सामाजिक वर्गो को ठीक से समझ पाने की क्षमता सर्वाधिक थी क्योकि स्कॉटिश ताल्लुकेदार उन दिनो अपने बच्चो को गाव की पाठशाला मे पढने भेजते थे। स्कॉटिश भद्रजन अपने लडके को किसी अग्रेजी पब्लिक स्कूल मे भेजने की बात मितव्ययिता तथा राष्ट्रप्रेम के कारण सोच भी नही सकता था। गाव की पाठशाला द्वारा प्रदत्त शिक्षा से स्थानीय प्राकृतिक स्थलो तथा उसकी अपनी भूमि के प्रति बच्चे मे प्रेम की भावना अधिक दृढ होती थी तथा अपने पिता की जमीदारी मे काम करने वाले अपने भूतपूर्व सहपाठी किसानो को देख कर उसमे उनके प्रति सहानुभूति जागृत होती थी। स्कॉट मातृभाषा मे बोलते हुए शीर्षस्थ लोग किसी प्रकार की शर्म महसूस नही करते थे, देहाती परम्पराए तथा लोकगीत सभी की समान धरोहर थे। इसी कारण दो पीढियो के बाद, बर्न्स तथा स्कॉट के समय मे स्कॉटलैड के काव्य तथा परम्पराओ ने कम सौभाग्यशाली देशो मे, जहा कि गरीब तथा अमीर लोगो की सस्कृतियो मे स्पष्ट अन्तर था, पहुँच कर लोगो की कल्पना को अभिभूत किया। स्कॉटलैड इगलैड की अपेक्षा सामन्तवादी तथा समानतावादी दोनो ही अधिक था। एक स्पष्ट तथा निश्चित सामाजिक स्तरो से युक्त समाज के वर्गों मे आश्चर्यजनक रूप से समान वाणी-स्वातन्त्र्य का होना, उन लोगो के परस्पर सम्बन्धो की विशेषता थी जो कि स्कूल मे एक साथ एक बेच पर बैठ चुके थे तथा जिनके पिता युद्ध सकट मे कधो मे कधा रगडते हुए साथ-साथ लड चुके थे।

लेकिन ऐन्नी के काल मे विश्व के बौद्धिक क्षेत्र मे स्कॉटलैड ने किसी भी प्रकार का साहित्य अथवा बौद्धिक स्थान प्राप्त नही किया। उस देश की निर्धनता अब भी काफी अधिक थी तथा धर्म काफी सकीर्ण था। लेकिन महानता के बीज तब भी थे,

वस्तुत यह निर्धनता तथा धर्म स्वय एक राष्ट्रीय मानस को जन्म दे रहे थे। स्विफ्ट, जो कि स्कॉटवासियो के प्रेसबिटेरियन होने के कारण उन्हे घृणा की दृष्टि से देखता था, स्वय यह स्वीकार करता था कि उनका युवा वर्ग अग्रेजो की अपेक्षा अधिक सुरक्षित था। डिफो ने कुछ अतिशयोक्तिपूर्वक लिखा कि—"आपको भद्र लोगो की बहुत ही थोडी सख्या ऐसी मिलेगी जो कि अशिक्षित अथवा अज्ञानी हो। स्कॉटलैड मे ऐसे नौकर भी आसानी से नही मिलेगे जो पढ लिख नही सके।" सन् १७०५ मे जब कुलोडन का फोबर्स लेडन विश्वविद्यालय मे अपनी कानून की शिक्षा के लिये गया था तब उसे विदेश मे रहने वाले देशवासियो के गम्भीर तथा अध्ययनशील स्वभाव मे तथा बडी यात्राए करने वाले फिजूलखर्च युवा अग्रेजो के स्वभाव मे, जो मूल निवासियो की विनम्रता तथा सहन शक्ति का मूल्य उनके तिरस्कार तथा अपने अज्ञान द्वारा चुकाते थे और झगडो तथा व्यभिचार मे निरत रहते थे, जमीन आसमान का अन्तर दिखाई दिया।

आधुनिक कसौटी पर स्कॉटिश स्कूलो की शिक्षा अत्यन्त अनुपयुक्त प्रतीत होती है। सुधार आन्दोलन के समय कुलीन (नोबल्स) लोगो ने, शिक्षा मे व्यय होने वाले चर्च के धर्म-दाय को, जिसे जॉननॉक्स की 'धार्मिक कल्पना' ने शिक्षा की एक प्रमुख विशिष्टता माना था, चुरा लिया था। तब से जन शिक्षा के लिये चर्च ने निरन्तर प्रयत्न किये लेकिन इसमे भद्रवर्ग तथा कजूस 'उत्तराधिकारियो' से, जिनका कि धन पर नियत्रण था, बहुत कम सहयोग मिला। सन् १६३३ तथा १६९६ के उत्कृष्ट कानूनो मे यह व्यवस्था की गई कि प्रत्येक हल्के मे एक अच्छा स्कूल खोला जाए तथा स्थानीय शुल्को से उसका खर्च चलाया जाए। लेकिन वास्तविकता कुछ और ही थी, ऐन्नी के शासन काल मे कई हल्को मे एक भी स्कूल नही था, और जहा-जहा स्कूल थे वे अधिकाश अधेरे, अपर्याप्त स्थान वाले, गन्दे मकान मे थे, तथा शिक्षक अथवा शिक्षिका को भोजन आदि के लिये आवश्यक वेतन भी नही दिया जाता था। ऐन्नी के शासन काल की अन्तिम अवस्था मे, फाइफ मे जहा तीन मे से दो पुरुष तथा बारह स्त्रियो मे से केवल एक स्त्री अपने हस्ताक्षर कर सकती थी, गैलोवे मे बहुत थोडे लोग पढ सकते थे।

दूसरी ओर यद्यपि स्कूलो की सख्या पर्याप्त नही थी लेकिन जो थी उनमे से लेटिन अधिकाश मे पढाई जाती थी, नगरो के स्कूलो मे इस ओर और भी अधिक ध्यान दिया जाता था। ग्रामीण तथा नागरिक स्कूल केवल प्राथमिक शालाए ही नही थे, कुछ उत्कृष्ट तथा प्रौढ अध्येताओ को भी विश्वविद्यालय के लिये कॉलेज के अध्यापको द्वारा प्रशिक्षित किया जाता था। बहुत से अध्यापक जिन्हे वास्तव मे पूरा भोजन भी उपलब्ध नही था यद्यपि पुस्तके नही खरीद सकते थे फिर भी विषय का आधारभूत ज्ञान उन्हे पर्याप्त रूप मे था, और यद्यपि वे थोडे ही लोगो को शिक्षित

करते थे लेकिन वह छोटा प्रशिक्षित वर्ग स्कॉटिश गणतन्त्र का मूल होता था, शिक्षा के लिये उन छात्रो मे बलिदान की भावना भरी जाती थी और वे थोडी मात्रा मे भी उपलब्ध पाठ्य सामग्री अथवा सुविधाओ का पूर्ण उपयोग करते थे। यह यूरोप का अन्य कोई भी राष्ट्र नही कर सका, इसीलिये शिक्षा प्राप्त करने के बाद इन लोगो ने स्वय को तथा अपने देश को सभ्यता के उच्च शिखरो तक पहुँचाया।

उस शताब्दी के प्रभात मे स्कॉटलैड के विश्वविद्यालय, झुटपुटे से घिरे हुए थे और उन्हे प्रिन्सिपल राबर्टसन्, एडमस्मिथ तथा एडिनबरा के दार्शनिको के स्वर्णिम प्रकाश मे जगमगाना अभी शेप था। नागरिक विक्षोभ का काल विरले ही कभी राज्य नियन्त्रित शिक्षण सस्थाओ के अनुकूल होता है। चार्ल्स द्वितीय के बिशपप्रधान शासन मे स्कॉटलैड के आधे विद्वानो को शैक्षणिक जीवन से विलग ही रखा गया तथा अन्य आधे भाग मे से अधिकाश को क्रान्ति ने पृथक कर उनके स्थान पर ऐसे लोगो को प्रतिष्ठित किया कि जिन्होने डाकुओ से बहुधा ही आक्रमित जगली गुप्त धर्म स्थानो मे बैठकर ज्ञान की जगह कट्टरता अधिक सीखी थी।

सभी वर्गो—कुलीनो, ताल्लुकेदारो, मन्त्रियो, किसानो तथा मिस्त्रियो—के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते थे। अधिकाश विद्यार्थी सुविधा सम्पन्न पादरी अधिक बनने का प्रयत्न करते थे लेकिन इसके लिये आवेदको की सख्या अत्यधिक थी। छोटी-छोटी छात्रवृत्तियो की सख्या तथा ज्ञानार्जन के प्रति कृषक के उत्साह के कारण उन दिनो मे भी जबकि शिक्षितो के लिये कुछ अन्य धन्धे सम्भव थे, इस पवित्र पेशे के प्रति एक पूरी भीड आसक्त थी। छोटे पादरी, ताल्लुकेदार के गृह शिक्षक (ट्यूटर) तथा कम वेतन प्राप्त स्कूल शिक्षिको का वर्ग कठिन स्थिति मे था। लेकिन जो लोग खैराती हल्को (पैरिश) मे निगुक्त हो सकते थे उस समय के सामान्य जीवन स्तर की दृष्टि से इतनी कठिन स्थिति मे नही थे। अग्रेज विद्रोही नेता कैलेमी ने सन् १७०६ मे अपनी उत्तरी ब्रिटेन की यात्रा के बाद लिखा था

'जहा तक स्कॉटलैड के उन पादरियो का प्रश्न है कि जो वहा जम चुके है, उन्हे यद्यपि इगलैड के चर्च की भाति उतनी अधिक मात्रा मे सुविधाए प्राप्त नही थी फिर भी ऐसा कुछ नही था कि वे सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिये जितनी सम्पन्नता की आवश्यकता होती है, उतनी भी प्राप्त न कर सके।'

अपने इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये किये गये सघर्षों के दौरान वे ऊपरी मजिल के कमरो मे रह कर जई की रोटियो से ही अपना जीवन-यापन करते रहे। कुछ निश्चित छुट्टियो मे देहाती छात्र खाली थैले को लेकर अपने गाव वाले घर जाता था तथा वहा से अपने पिता के खेत मे पैदा हुए अनाज से उसे भर कर वापस लौट आता था।

स्कॉटिश रियासत मे किसान वहा के ताल्लुकेदार से पारस्परिक सम्बन्धो के आधार पर ही व्यवहार करता था, और अपनी भूमि के निरीक्षण पर आए हुए ताल्लुकेदार को उस स्पष्टवादी प्रजाति के तीक्ष्ण शब्दो का सामना करना पडता था। वस्तुत वे आर्थिक तथा सामन्तशाही दोनो ही स्तरो पर उसके दास थे। इन सबधो का अग्रेज यात्रियो ने, जैसा कि वे कहा करते थे, नया ही अनुभव किया था। यद्यपि इगलैड मे सामन्तवादी अदालतो की समाप्ति बहुत पहले हो चुकी थी लेकिन असामियो पर व्यक्तिगत अधिक्षेत्र-कुछ स्थितियो मे दीवानी तथा कुछ मे दीवानी तथा फौजदारी दोनो—स्कॉटलैड मे सामान्य रूप से प्रचलित था। लन्डन के राजनीतिज्ञो का मत था कि प्रोटेस्टेन्ट राज्याधिकार इस प्रकार की 'उच्चताओ' के कारण ही खतरे मे था तथा इन उच्च प्रस्थितियो ने ही स्काटिश प्रजा को राजकीय अदालतो के क्षेत्र से पृथक कर लोगो तथा उनकी सम्पत्ति को जैकोबाइट सर्वाधिपतियो के अधीन बना दिया था।

किसानो को भूमि का वितरण प्रति वर्ष, कभी भी समाप्त हो सकने वाले अनुबन्ध के आधार पर किया जाता था, जिसके कारण वे ताल्लुकेदार अथवा उसके कर्मचारियो की ही दया पर पूरी तरह आश्रित हो जाते थे तथा जिस भूमि को वे जोतते थे उसके सुधार का प्रयत्न भी नही कर पाते थे। और ताल्लुकेदार भी अपने असामियो की भूमि के सुधार के लिये अपनी पू जी यदाकदा ही लगाता था। और कभी कभी इच्छा होने पर भी उसके पास साधनो का अभाव होता था। भूमि-शुल्क के रूप मे पाच सौ पौड की आय स्कॉटलैड मे बहुत बडी सम्पदा मानी जाती थी, पचास पौड की आय सामान्य कोटि की आय थी, तथा कुछ विशेष प्रकार के टोपधारी ताल्लुकेदारो को तो केवल बीस पौड की आय द्वारा तथा अपनी जमीन पर खुद खेती करके अपने परिवार का भरण-पोषण करना पडता था। अग्रेजी सामन्तवर्ग की पू जी का चित्रण करने के लिये इन राशियो को दस से गुणा करके देखा जा सकता है। स्कॉटिश भूमिकर की आधी राशि वस्तुत मुद्रा की अपेक्षा वस्तुओ म चुकाई जाती थी भेड, मुर्गे-मुर्गी अथवा उनके अडे, जई का सामान, जौ तथा शराब गाडियो पर नही (क्योकि असामियो के पास गाडिया नही थी) मरियल घोडो पर लादकर पहुँचाए जाते थे। ताल्लुकेदार की खाद्य-सामग्री के रूप मे जो अन्य वस्तु उसके घर पर पहुँचाई जाती थी वह आसपास के खेतो मे अनाज चुगने वाले कबूतरो का मास था। इसके अतिरिक्त, स्कॉटिश किसान को इगलैड के मध्ययुगीन किसान की भाति बुरे मौसमो वाले दिनो मे भी, जब कि वह यदि अपनी थोडी सी फसल की देखभाल कर पाता तो शायद आगामी वर्ष मे अपने परिवार के भरण-पोषण के लिये उसे खराब होने से बचा लेता लेकिन यह समय उसे ताल्लुकेदार के खेत मे खाद देने, बीज बोने तथा फसल की कटाई मे बिताना पडता था।

महारानी ऐन्नी के शासन काल मे ऐसी स्थितियो मे इसमे कोई आश्चर्य नही कि स्कॉटलैंड के नौ मे से दस खेत बिना किसी बाड या दीवार के ही खडे थे। पशुओ को दिन भर या तो बाध कर रखा जाता था या उनकी निगरानी की जाती थी तथा रात्रि को बन्द करके रखा जाता था। केवल लोथियन्स मे धनी जमीदारो द्वारा उन्हे बन्द करने के लिये पत्थर की दीवारे बनाई गई थी। तात्कालिक उपयोगिता की दृष्टि से लगाई गई झाडियो की बाड कही नही दिखाई देती थी, और उनकी आवश्यकता भी महसूस नही की जाती थी क्योकि उनका विश्वास था कि उन झाडियो मे पक्षी शरण ले लेते है और इसके कारण अनाज को हानि पहुँचाते है। इसी प्रकार शका वृक्षो के सम्बन्ध मे भी थी। छोटे-छोटे वृक्षो को केवल पशु ही नही खा कर समाप्त कर देते थे बल्कि, दड-विधान होने पर भी किसान लोग स्वय ही उन्हे तोड डालते थे। वास्तव मे गिरजे तथा जमीदार के मकान के आसपास के वृक्षो को छोड कर उन्हे नुकसान पहुँचा सके, ऐसे वृक्ष बहुत कम थे। पुराने जगल, जिनमे कि राबर्टब्रूस के 'टेस्टामेन्ट' मे दी गई हिदायतो के अनुसार अग्रेजो के आक्रमणो के समय लोग शरण लिया करते थे, वे अब समाप्त हो चुके थे। और आँधियो से खेती को बचाने तथा बाजार मे इमारती लकडी की खपत के लिये नये जगल लगाने का आधुनिक प्रयास भी अपनी प्रारम्भिक अवस्था मे ही था। अत स्काटलैंड सामान्यत पिछले कालो की अपेक्षा अधिक वृक्ष विहीन था। कुछ स्थानो पर, विशेष रूप से क्लाइडसाइड मे नाम मात्र के जगल अवश्य थे, लेकिन सुदूर उत्तर मे जहा कि लोग नही पहुँचते थे, इगलैंड की ओर से चलने वाली हवाओ मे पुराने जगल खडखडाते रहते थे। स्कॉटलैंड मे भी छोटे नालो के ढलावदार किनारो वाले आर्द्र कछारो मे, जहा कि कभी घने जगल थे, छोटे बलूत, बैंतो की झाडियो तथा देवदारु के गिने चुने वृक्षशेष बच रहे थे।

हरे भरे वन-खडो की कमी की तरह ही कृषक परिवार भी किसी सुव्यवस्थित कृषि-सुधार के बिना दारिद्रय की ही स्थिति मे थे। महारानी ऐन्नी के शासनकाल के स्कॉटिश कृषक-गृह की दशा की सही कल्पना के लिये हमे बाद के काल के खेतो पर ही बने पाषाण-निर्मित घरो के स्थान पर पश्चिमी आयरलैंड की बन्द कोठरियो की कल्पना करनी होगी। बहुधा ये मकान एक मजिल तथा एक ही कमरे वाले थे। मकान का आकार-प्रकार तथा निर्धनता का स्वरूप अलग-अलग क्षेत्रो मे अलग-अलग प्रकार का था, लेकिन घास अथवा भूसे से घिरी हुई कच्ची अथवा बिना तराशे हुए पत्थरो की दीवारो का होना एक सामान्य बात थी, चिमनिया तथा शीशे की खिडकिया बहुत कम थी, फर्श के नाम पर बिना चुनी हुई केवल कुछ जमीन भर छोड दी जाती थी, कई स्थानो पर कमरे के एक छोर पर पशु बाधे जाते थे और दूसरे छोर पर लोग स्वय रहते थे—दोनो के बीच एक विभाजन अवश्य था। कोयले की काई से प्रज्वलित आग के चारो ओर घास के ढेर पर अथवा पत्थरो पर परिवार के सदस्य बैठ

जाते थे और वही कुछ ऊचाई पर बने एक छोटे सूराख से थोडा धुआ बाहर निकल जाता था। क्योकि उन्हे गन्दी मिट्टी मे काम करना पडता था इसलिये वे आधे कीचड मे सने हुए भीगे कपडो से जिन्हे कि वे यदाकदा ही बदल पाते थे, अपने सीलन भरे घर को लौटते थे और इसके कारण वे गठिया और प्लेग जैसी बीमारियो से अपनी पूरी आयु का भोग किये बिना ही काल का ग्रास हो जाते थे।

स्त्री-पुरुष पडोस के जुलाहो तथा दर्जियो द्वारा निर्मित कपडे पहनते थे जिन्हे कि जुलाहे अपनी झोपडी मे ही तैयार करते थे तथा रगते थे। बच्चे हमेशा और वयस्क बहुधा नगे पैर ही चला करते थे। पुरुष ऊन की बनी हुई स्कॉटलैड की एक विशिष्टता समझी जाने वाली नीले रग की चौडी तथा चपटे आकार की एक टोपी पहनते थे। केवल ताल्लुकेदार तथा पादरी ही फेल्टहैट का प्रयोग करते थे, लेकिन वे भी कपडे घर के बुने हुए तथा गाव के दर्जी द्वारा सिले हुए ही पहनते थे। दक्षिणी ब्रिटेन के विमतवादियो की दृष्टि मे यह आश्चर्यजनक बात ही थी कि पादरी चर्च के बाहर अथवा भीतर कही भी काले या विशिष्ट प्रकार के चोगे नही पहनते थे और अपने दौरे तथा धर्मोपदेश घर की बनी हुई ऊन से तैयार किये गये रगीन कोट तथा वास्कट पहन कर तथा गले पर एक वस्त्र लपेट कर ही करता था।

जिस प्रकार कि सेक्सन-पूर्व काल मे इगलैड की स्थिति थी, स्कॉटलैड मे अभी भी अधिकाश भूमि जो सभावित रूप से अच्छी उपजाऊ भूमि सिद्ध हो सकती थी वह घाटी की तलहटी मे कीचड से भरी हुई बिना जुतो ही पडी थी और किसान पहाड के ऊपरी भाग पर ऊसर भूमि मे हल चलाने की यातना भोगते रहते थे। फाल को छोड हल का अधिकाश भाग अविकसित प्रकार की लकडी का बना हुआ था और उसे साधारणत किसान स्वय तैयार करता था। ढलुवा भूमि पर इस हल को आधे दर्जन किसान आठ-दस मरियल बैलो के सहारे उन पर चिल्लाते और पीटते हुए जोतते थे। पशुओ तथा स्वय के सम्मिलित प्रयास से यह चाकर वर्ग एक दिन मे इस प्रकार लगभग आधी एकड भूमि की जुताई करता था।

सामान्यत एक कृषक दल के लोग अपने भूखडो की जुताई मिलकर करते थे तथा मुनाफे को कभी कम तथा कभी ज्यादा अनुपात मे ('रन-रिग-प्रणाली') परस्पर बाट लेते थे, प्रत्येक किसान हर फसल-कटाई मे अपना अधिकार जताता था। प्रत्येक खेत, जिसका किराया मुद्रा मे अथवा वस्तु रूप मे लगभग पचास पोड था उसे आधे दर्जन अथवा उससे भी अधिक किरायेदार परस्पर बाट लेते थे और यह बटाई प्रत्येक वर्ष नये सिरे से की जाती थी। इस प्रणाली के कारण तथा ताल्लुकेदार द्वारा भूमि को एक वर्ष के लिये हर माह पट्टे पर दे देने के कारण कृषि-सुधार असम्भव हो गया था। सहयोगी किसानो के समूह मे ही पारस्परिक झगडे हुआ करते थे और इनमे से कुछ झगडे इतने कटु होते थे कि सदस्यगण कैमेरोनियन तथा 'किक' सम्बन्ध विच्छेदको की

भाति समूह से पृथक हो जाते थे और हफ्तो तक कृषि के कार्य मे विघ्न बना रहता था। किसानो को हर प्रात काल नित्य के थका देने वाले कृषि कार्यो को सम्मिलित रूप से शुरू करने के पहले अपने आलसी तथा विक्षुब्ध पडोसियो के जगने और काम मे हाथ बटाने के लिये नित्य प्रतीक्षा करनी पडती थी।

खेतो का 'आन्तरिक क्षेत्र' तथा 'बाह्य क्षेत्र' के रूप मे और अधिक विभाजन किया जाता था। गाव के मकानो के निकटवर्ती 'आन्तरिक क्षेत्र' मे भद्र पुरुष के मकान मे एकत्र भूसे सहित इधर उधर से इकट्ठा किया गया खाद जमा रहता था। लेकिन बाह्य क्षेत्र, जिसका कि क्षेत्रफल कुल एकड-क्षेत्र का लगभग तीन चौथाई था, उसमे किसी प्रकार का खाद नही दिया जाता था और आठ-दस वर्षो तक के लिये उसका उपयोग चरागाह के रूप मे किया जाता था। इसके बाद एक या दो वर्षो के लिये उसमे खेती की जाती थी और तदुपरान्त पुन उसे एक बीहड चरागाह मे बदल दिया जाता था। यह प्रणाली इगलैड की मुक्त-क्षेत्र-कृषि व्यवस्था की त्रि-क्षेत्रीय प्रणाली की तुलना मे अत्यधिक निरर्थक प्रणाली थी, हा पश्चिमी इगलैड, वेल्स, कॉर्नवाल तथा ईस्ट राइडिग के कुछ भागो मे की जाने वाली कृषि से इसकी तुलना अवश्य की जा सकती है।

स्कॉटलैड की खाद्य फसलो मे जई की फसल प्रमुख थी और एक विशेष प्रकार की शराब बनाने के लिये, जो स्कॉटलैड की अग्रेजी ह्विस्की के आगमन से पूर्व एक राष्ट्रीय पेय था, जौ की खेती की जाती थी। घरेलू बगीची (किचन गार्डन) मे करमकल्ला, मटर तथा सेम उगाए जाते थे। लेकिन शलजम तथा पशुओ के लिये कृत्रिम घास उगाना वे बिलकुल नही जानते थे। आलू केवल कुछ ही बागवानो द्वारा एक मौसमी फसल के रूप मे ताल्लुकेदार के सामिष भोज को स्वादिष्ट बनाने के लिये उगाये जाते थे, जन सामान्य की खाद्य सामग्री के रूप मे किसानो द्वारा उनकी खेती नही की जाती थी।

कृषि के इन अविकसित प्रकारो के कारण, जिन्हे लोगो ने स्वय ही अपनाया था, वे सदा अकाल ग्रस्त रहते थे। उनके अनाज की मात्रा, जो इस प्रकार की कृषि-पद्धतियो द्वारा कुछ भी नही बढ सकी थी इस पुरानी कहावत के अनुसार तीन भागो मे विभक्त हो जाती थी काटना, खाना और शेष ताल्लुकेदार को भेट चढा देना।'

ताल्लुकेदार स्वय अपनी निर्धनता से इतने ग्रस्त थे कि अपने किसानो की क्या स्वय की सहायता करने मे भी असमर्थ थे। फिर भी उदय होती हुई इस नयी शताब्दी मे, सभी वर्गो की समृद्धि तथा कृषि मे क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने के लिये सघ ने जो वाणिज्य सम्बन्धी सुविधाए प्रदान की थी उन्हे आत्मसात् कर उनका उपयोग कर पाने मे ये ताल्लुकेदार अग्रणी थे।

विलियम के शासनकाल के अन्तिम छ वर्ष स्कॉटलैड की स्मृति पर अमिट छाप छोड गये। इन वर्षो मे लगातार खराब मौसम रहने के कारण फसल नही पक सकी।

देश के पास विदेशो से भोजन खरीदने के लिये साधन नही थे और इस कारण लोगो को भूखो मरना पडा। कई जिलो की आबादी आधी या एक-तिहाई रह गई थी। इन कुत्सित अनुभवो ने, जिनसे कि राष्ट्र सघीय-सन्धि के वर्षो मे पुन त्राण पा रहा था, उत्तरी ब्रिटेनवासी के दृष्टिकोण को काफी प्रभावित किया, उसके अन्धविश्वासो को इसने और अधिक गहरा किया तथा उसकी राजनैतिक भावनाओ को और भी अधिक कालिमा युक्त कर दिया - विशेष रूप से उस इगलैडवासी के प्रति कि जिससे वह पहले से ही घृणा करता रहा था और जो स्कॉटवासियो को भूख से मरते हुए चुपचाप देखता रहा था और डेरियन प्रणाली का विरोध कर उनकी स्थिति को और अधिक बदतर बनाने के अतिरिक्त उसने और कुछ नही किया था। सौभाग्य से राजा विलियम के शासन के आपत्कालीन वर्षों के बाद महारानी ऐन्नी के शासनकाल मे कुछ अच्छे वर्षो की पुनरावृत्ति हुई। और उसके बाद सन् १७०९ मे सघ बन जाने के बाद, फसल खराब हो जाने के कारण पुन अकाल पड गया और खेत, खलिहान जन शून्य हो गये तथा गावो मे भिखारियो की सख्या बढ गई। कृषि प्रणाली मे आमूल-चूल सुधार होने के पूर्व खराब मौसम के कारण प्रत्येक फसल के नष्ट होने की आशका बनी ही रहती थी।

भरण पोषण के लिये जितनी सामग्री की आवश्यकता होती थी, उसके अतिरिक्त कृषि सम्पदा जुटाने का प्रमुख स्रोत पशु धन था। भेडो के ऊन से कपडा बनाने के कुटीर उद्योग मे सहायता मिलती थी तथा भेडो व अन्य पशुओ की इगलैड के बाजार मे पर्याप्त सख्या मे बिक्री भी होती थी। गैलोवे मे पशुओ की नस्ल काफी बढी थी, लेकिन इस पशुधन का अग्रेजो तथा चार्ल्स द्वितीय के अत्याचारी शासनकाल मे राज्य के दूतो द्वारा विध्वस किये जाने के कारण गैलोवे अपनी पशु सम्पदा की रक्षा करने मे समर्थ नही हो पाया था। सन् १७०५ मे स्कॉटलैड ने तीस हजार पशु बेचे थे और प्रत्येक पशु का मूल्य साधारणत लगभग एक या दो पौड के बीच था। पशुओ के काले बाजार से प्राप्त राशि स्कॉटिश ताल्लुकेदार की आय का एक प्रमुख स्रोत थी। उस काल के इगलिश पशुओ की तुलना मे भी इन भेडो तथा पशुओ का आकार प्रकार काफी छोटा था। उनके चरागाह अधिकाश अविकसित बजर भूमि-खड थे। पशुओ को बाड की व्यवस्था न होने के कारण रात भर बन्द करके रखा जाता था। दक्षिणी इगलिश चरागाहो मे जिन पशुओ को नही बेचा जा सका था उनमे से कई को सरदी के आगमन पर चारे की व्यवस्थान हो पाने के कारण मारटिनमास मे कत्ल कर देना पडता था। अगले छ मासो तक भद्रजनो की भोजन सामग्री मे नमक लगा गोश्त विशेष खाद्य पदार्थ होता था, लेकिन किसान के चौके मे सारे साल शायद ही कभी मास बनाया गया हो। विलम्बित बसन्त के आगमन पर, सारी सर्दी उबले हुए भूसे तथा तिनको पर बन्द रहे जीवित ककाल पशुओ को एक दयनीय झुड मे इस

स्थिति से बिना किसी सभाल के चरागाह तक पहुचाया जाता था। इस वार्षिक उत्सव को एक सर्व परिचित 'लिफ्टिग' के नाम से जाना जाता था।

स्कॉटलैंड का जीवन स्तर भौतिक दृष्टि से लगभग सभी पक्षो मे अत्यन्त निम्न-स्तर का था, लेकिन सघर्ष पूर्ण जीवन लोगो के उत्साह को, यहा तक कि विलियम कालीन महगाई के वर्षो मे भी, कोई हानि नही पहुचा सका था। किसी चन्दे पर जीवन न व्यतीत करने की लगन समृद्धिशाली इगलैड की अपेक्षा वहा के सामान्यकाल मे अधिक तीव्र थी। एलिजाबेथ के काल से ही इगलैड मे निर्धन लोग समाज के लिये भार समझे जाते थे, उनकी देखभाल प्रत्येक जिले से अनिवार्य चन्दा वसूल करके की जाती थी और महारानी ऐन्नी के शासनकाल के अन्त मे इस चन्दे की राशि प्रति वर्ष दस लाख पौड इक्ट्ठी होती थी जिसे कि एक कठोर राष्ट्रीय भार समझा जाता था। स्कॉटलैंड मे इस प्रकार की कोई चन्दा वसूली नही होती थी, निर्धनो की सहायता करना राज्य की अपेक्षा चर्च का कर्त्तव्य समझा जाता था। गरीबो के लिये वृत्तिदान लोग व्यक्तिगत रूप से करते थे और इसकी घोषणा चर्च मे तथा कभी-कभी दीवारो पर लटके सूचना-पट्टो पर लिखकर कर दी जाती थी। चर्च मे निर्धन-कोष के लिये बक्स रखे होते थे जिन्हे कि खर्चीली प्रकृति वाले स्कॉट लोग कुछ उपयोग मे आ सकने वाले अचछे सिक्को के साथ ताबे के अधिकाश खोटे सिक्को द्वारा भर दिया करते थे। यद्यपि सभी चर्चों मे नही लेकिन अधिकाश जिला-गिरजो मे दान अधिकारी चर्च का ही एक निम्न दर्जे का कर्मचारी होता था, जो इस राशि को आवश्यकता महसूस करने वाले लोगो मे वितरित करता था और वे लोग बहुधा स्वाभिमान पूर्वक उस राशि को स्वीकार करने मे अपनी अनिच्छा दर्शाते थे। इस प्रकार की सहायता से इतर सम्बन्ध बनाए रखने की आवश्यकता तीव्र रूप मे अनुभव की जाती थी और यह कार्य जिन लोगो द्वारा किया जाता था वे स्वय भी अत्यधिक निर्धन थे।

किसी क्षेत्र विशेष मे घर-घर जाकर भिक्षा मागने के लिये भी किर्क-सत्र कुछ विशिष्ट साधुओ अथवा नीला चोगाधारियो को अनुमति पत्र प्रदान किया करता था। उनमे से एडी ऑकिल्ट्री जैसे अनेक साधु एकाकी खेतो तक समाचार पहुचाने का कार्य करते थे, क्षेत्रीय लोक साहित्य का प्रसारण करते थे और उन्हे अपने ग्रामीण क्षेत्र मे बडे ही आदर तथा सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था।

लेकिन दुर्भाग्य से बिना अनुमति प्राप्त आवारा लोगो की सख्या इनमे अधिक थी। ट्यूडर कालीन इगलैड के हृष्ट-पुष्ट भिखारियो का जवाब महारानी ऐन्नी कालीन स्कॉटलैंड के हठीले भिखारियो ने दिया। यद्यपि साल्ट्न के फ्लेचर द्वारा किये गये इस अनुमान की कि इन लोगो की सख्या दो लाख तक पहुच गई थी, जो कि सम्पूर्ण जनसख्या का पाचवा अथवा छठा भाग होती, कोई पुष्टि नही हुई थी फिर भी विलियम कालीन महगाई के वर्षों मे इन टूटे हुए आश्रय हीन लोगो की सख्या बहुत बढ गई थी। लेकिन कृषि प्रधान देहाती गावो मे, जहा एक स्थान पर केवल तीन

मकान पास-पास बने होते थे, उनके एकाकीपन मे सम्पूर्ण क्षेत्र को आतंकित करने के लिये जबरन भिक्षा लेने वालो की सख्या बहुत अधिक थी, इन उचक्के लोगो का एक दल दिन दहाडे झोपडी से अन्तिम दाना, बाडे मे गाय और कभी-कभी दु खी माता-पिताओ से उनके बच्चो तक को लूट ले जाता था। इगलैंड की भाति यहा निर्धनो से सम्बन्धित किसी भी अधिनियम के न होने के कारण स्कॉटलैंड को इन जबरन भिक्षा लेने वालो की सख्या एव शक्ति के रूप मे काफी मूल्य चुकाना पडा था और इस स्थिति का किसी भी देश मे पुलिस द्वारा समुचित प्रबन्ध नही किया गया था।

एक कठोर रिपब्लिकन राष्ट्रभक्त साल्टून के फ्लेचर ने, जिसने कि उस काल की स्कॉटिश राजनीति को काफी प्रभावित किया था, यह सुझाव दिया कि इन 'हठधर्मी' भिखारियो को अनिवार्य सेवा मे लगा देना चाहिये, उसका यह विचार स्काटलैंड मे पहले से ही चली आ रही पद्धति का ही प्रसारण था। कोयले तथा नमक की खानो मे दास लोग तथा सचमुच के बेगारी लोग काम किया करते थे जिन्हे कि काम से भागने पर पकड कर काफी कडा दड दिया जाता था। हेडिंग्टनशायर के न्यूमिल्स कपडा कारखाने जैसे स्वतन्त्र अनुबन्धो पर आधारित आधुनिक प्रतिष्ठानो के भीतर ही जेल की व्यवस्था थी और जो लोग अनुबन्ध तोड देते थे अथवा भाग जाते थे उन्हे तत्काल सजा सुना दी जाती थी। लेकिन उस समय के स्तर की दृष्टि से न्यूमिल्स के कर्मचारियो की दशा खराब थी लेकिन खानो मे काम करने वाले जन्मजात दास लोगो से उनके मालिक बन्धको की भाति व्यवहार करते थे और अन्य लोग भी उन्हे दयामिश्रित आतक से 'ब्राउनयिन' अथवा 'दि ब्लैक फॉक'[१] (काले आदमी) कहकर सम्बोधित करते थे।

सघ के समय स्कॉटलैंड ने भले ही इगलैंड को कृषि-प्रणाली मे पीछे छोड दिया हो लेकिन उसके उद्योग तथा वाणिज्य किसी भी रूप मे श्रेष्ठ नही थे। उसकी निर्यात की लगभग सभी वस्तुओ मे या तो खाद्य पदार्थ थे अथवा कच्चा माल जैसे इगलैंड को भेजी जाने वाली वस्तुओं मे पशु तथा सामन मछली, हालैंड भेजी जाने वाली वस्तुओ मे कोयला और सामन मछली, नॉरवे भेजने के लिये नमक तथा शीशा और आइबेरियन प्राय द्वीप के लिये हेरिंग मछली थे। स्कॉट लोग स्वय स्थानीय खपत के लिये गाव के जुलाहो द्वारा बुना गया कपडा पहनते थे, लेकिन लिनन अथवा

---

[१] असमानता दर्शाने वाली यह बेगार प्रणाली अठारहवी शताब्दी के अन्त मे समाप्त कर दी गई थी। लेकिन तब तक खानो मे काम करने वाले स्कॉटिश श्रमिक को उसके बीबी बच्चो सहित—जो उसके काटे हुए कोयले को इधर-उधर लाते ले जाते थे, खान को किसी अन्य को बेचते समय उन्हे भी खान के साथ ही नये मालिक को सौप दिया करता था। अपने जीवनकाल मे वे अपनी नौकरी से अलग नही हो सकते थे।

ऊनी कपडे की बहुत ही कम मात्रा विदेशो को भेजी जाती थी। हैडिग्टन न्यूमिल्स काफी प्रसिद्ध थे लेकिन उनकी भी स्थिति अच्छी नही थी। उनके अतिरिक्त ऊनी कपडे बनाने के और भी कारखाने थे जैसे मुसेलबरा तथा एबरडीन जो स्कॉट ससद के सामने आर्थिक सहायता तथा एकाधिकार प्राप्ति के लिये काफी विरोध के साथ अपनी मागे प्रस्तुत करते थे, लेकिन उन्हे सतुष्टि कम तथा निराशा ही अधिक हाथ लगती थी। दूसरी ओर ऊन का उत्पादन करने वाले उद्योगपतियो ने स्कॉटिश कपडे के विदेशी बाजार को हानि पहुचाने के लिये, जो कि इगलैड द्वारा निर्धारित नीति के भी विरुद्ध था, ससद पर कच्चे ऊन के हालैंड तथा स्वीडन मे निर्यात की स्वीकृति के लिये दबाव डाला। हेरिग मछली का उद्योग राष्ट्रीय सम्पत्ति का एक प्रमुख स्रोत था, स्कॉट लोगो से अधिक उस सम्पदा का उपयोग डच मछेरे करते थे। एडिनबरा की ससद का एक महत्वपूर्ण कार्य स्कॉटलैंड के वाणिज्य सम्बन्धी प्रयत्नो तथा छोटे उद्योगो को प्रोत्साहित करने वाले नियमो की रचना करना था।

यद्यपि स्कॉटिश सैनिक टुकडिया तथा अफसर अपनी जन्मभूमि के सम्मान मे काफी वृद्धि कर रहे थे—स्कॉट लोगो की ख्याति जितनी वेलिग्टन मे थी उतनी ही मार्लबोरो मे थी—लेकिन फ्रान्स से हुए युद्ध के प्रति स्कॉटलैंड के सामान्यजन मे कोई विशेष दिलचस्पी नही थी। वे इसे अपने युद्ध की अपेक्षा इगलैड और फ्रास के बीच का युद्ध समझते थे। सघ निर्माण के चार वर्ष पूर्व, एडिनबरा की ससद ने शत्रुपक्ष मे होने वाले शराब के अत्यन्त लोकप्रिय व्यापार को वैधानिक स्वरूप देने के लिये एक शराब अधिनियम का निर्माण किया था। अग्रेज लोग युद्ध काल मे औचित्य उल्लघन के इस साहसिक कदम से बडे आश्चर्यचकित थे, जबकि वे स्वय फ्रास की बन्दरगाहो को अवैधानिक रूप से चोरी छिपे शराब भेज रहे थे। लेकिन इसके विरुद्ध कुछ करने का साहस नही हो सका, क्योकि यदि उनका कोई गश्ती जहाज ब्रान्डी, कैलेरेट तथा जैकोबाइट के एजेन्टो सहित किसी स्कॉटिश जहाज को पकड भी लेता तो उससे इगलैड तथा स्कॉटलैंड के बीच युद्ध ठन जाने की आशका ही अधिक थी।

पुर्नस्थापन (रेस्टोरेशन) काल मे, ग्लासगो नगर को साम्राज्य मे दूसरे नम्बर का तथा उत्पादन और व्यापार मे प्रथम कोटि का नगर माना जाने लगा था। सम्भवतया विलियम के शासनकाल मे दुर्भिक्षो तथा विपदाओ के कारण हाल ही मे जनसख्या मे कमी हो गई थी सन् १७०७ मे जब सघ बना था उस समय सम्पूर्ण स्कॉटलेंड की कुल दस लाख अथवा उससे भी अधिक जनसख्या मे से केवल १२,५०० व्यक्ति ही शेष बचे थे। ग्लासगो के व्यापारियो के पास पन्द्रह मालवाहक जहाज थे जिनका कुल वजन ११८२ टन था, और चू कि क्लाइड मे अब भी छोटी-छोटी नौकाओ के अतिरिक्त कोई वस्तु आ जा नही सकती थी इन छोटे जहाजो को नगर से लगभग बारह मील दूर ही अपना माल उतारना पडता था। सघ-सधि (यूनियन

ट्रीटी) के लागू होने के बाद ही बैली निकोल जारवी तथा उसके सहयोगी नागरिको को अग्रेजी उपनिवेशो से तम्बाकू के व्यापार की अनुमति दी गई थी, इससे पूर्व किसी भी स्कॉटिश फर्म को अग्रेजी उपनिवेशो से व्यापार करने की स्वतन्त्रता नही थी और इस कारण उनका व्यापार यूरोप तक ही सीमित था। ऐन्नी के शासनकाल तक ग्लासगो एक छोटा सा देहाती नगर था जहा केन्द्रीय चौराहे पर खभो के पास व्यापारी छोटे व्यापार के लिये परस्पर एकत्र होते थे। इसके अतिरिक्त यह स्कॉटलैड के उन चार नगरो मे से एक नगर था जहा कि विश्वविद्यालयो की स्थापना हो चुकी थी एक अग्रेज यात्री ने ब्लेनहीम के समय मे देखा था कि 'कालेज मे रहने वाले केवल चालीस विद्यार्थी थे', लेकिन कुल पढने वाले विद्यार्थियो की सख्या दो अथवा तीन सौ के करीब थी, सभी एबरडीन तथा सेन्ट एन्ड्र्यूज के छात्रो की ही भाति लाल चोगे (गाउन) पहनते थे।

चौथा विश्वविद्यालयीय नगर एडिनबरा स्वय था जो स्कॉटलैड के कानून तथा अदालतो का केन्द्रीय नगर होने के साथ ही तीन रियासतो (एस्टेट्स) की ससद का कार्यस्थल था तथा चर्च की केन्द्रीय कार्यकारिणी, जिसे एक अन्य ससद की सज्ञा दी जा सकती है और जो अपेक्षाकृत अधिक स्थायी भी सिद्ध हुई, उसका भी प्रमुख केन्द्र था। वहा हॉलीरूड पैलेस नामक एक ऐसी आरामगाह भी थी जहा स्कॉटलैड के शासक कुछ समय बिताने के लिये जब तब चले आया करते थे। एक मील लम्बे कैननगेट तथा हाई स्ट्रीट, जिसे कि उस समय के एक यात्री ने 'ससार की सबसे अधिक गौरवयुक्त सडक' माना था, के दूसरे छोर पर एक चट्टान पर एक गढी स्थित थी जहा कि महारानी ऐन्नी की अनुपस्थिति मे उसका प्रतिनिधित्व करने वाली एक छोटी लाल वस्त्र धारी सैनिक टुकडी रहा करती थी। वहा से आलसी सैनिक एडिनबरा की छतो तथा धूम्राच्छन्न वातावरण की ओर एक प्रश्नाकुल दृष्टि से देखा करते थे कि नीचे शहर मे कौन से षड्यन्त्र बन रहे है और कौन से धार्मिक, राजनैतिक अथवा आर्थिक सघर्ष चल रहे हे, क्योकि उनका तत्काल दमन करना उनका कर्त्तव्य था।

यद्यपि एडिनबरा के कुल्हाडेधारी नगर-रक्षक स्कॉट लोगो के हसी के ही पात्र थे, लेकिन उनके कारण देश के इस प्रमुख नगर मे लोगो के रात भर घर खुला छोडकर बाहर चले जाने पर भी चोरी और डाके की घटनाए नही होती थी। स्कॉट लोगो की ईमानदारी के काफी प्रमाण हे, और इसका श्रेय उस कठोर धार्मिक व्यवस्था को है जिसमे कि उनका लालन-पालन हुआ था। इस धार्मिक व्यवस्था ने नगर पर जहा प्रभावशाली ढग से शासन किया था वही स्कॉटलैड के इस फैशन के केन्द्र मे रगमच (नाट्य प्रदर्शन) तथा नृत्यकला, और रविवार (सैबाथ) के दिन खिडकियो से चुपचाप इधर उधर देख कर समय काटने, सडको पर मटरगश्ती करने जैसी प्रवृत्तियो को भी सुरक्षित रखा था। इसमे तनिक भी आश्चर्य की बात नही थी कि डा. पिटकैर्न ने

पादरी पर तीक्ष्ण व्यग्य करने वाले छन्दो की रचना की तथा, 'हेल-फायर क्लब्स' और 'सल्फर क्लब्स' जो कि नाटको तथा नृत्यो से अधिक अमान्य हो सकते थे, वे चर्च के उपहास के लिये गुप्त रूप से कार्य करते रहते थे।

यहा तक कि रविवार मे इतर दिनो मे भी लेथ के रेतीले मैदान मे होने वाली घुड दौड, गौल्फ के खेल, मुर्गों की लडाई अथवा अत्यधिक शराब खोरी को रोकने का चर्च ने कोई प्रयत्न नही किया। सप्ताह की छहो सन्ध्याओ को मदिरालयो मे सभी वर्गो के लोग एकत्रित होते थे और रात्रि के दस बजे तक जब कि मजिस्ट्रेट के आदेश से ढोल बजा कर सभी को वापिस पहुच जाने की चेतावनी नही दी जाती थी, वे मदिरालय मे ही बने रहते थे। 'हाई-स्ट्रीट' तथा कैननगेट तेजी से चलते हुए विभिन्न प्रकार के लोगो से खचाखच भरे होते थे। अपना बडप्पन छलकाते हुए सीधे तन कर चलने वाले उच्च न्यायालय के न्यायाधीश सौगन्ध खाकर टमटम तक तेजी से पहुचते हुए अग्रेज ये सभी इनमे शामिल थे, और पॉच, छ अथवा दसवी मजिल की खिडकियो से पिछले चौबीस घटो से इकट्ठी गन्दगी को उसी समय सडक पर नीचे फेका जाता था। गन्दगी फेकने वालो का यह शिष्ट पक्ष ही था कि वे उसे नीचे फकने से पहले एक चेतावनी भरी आवाज लगाकर कहते थे 'गार्डी-लू।' लौटते समय व्यक्ति 'हाड येर हैन' आवाज देता था और भारी भरकम कन्धो को सिकोड कर भागता था, ऊपर से गिरने वाली गन्दगी के गिरने से यदि उसकी कीमती टोपी नही गिर पडती तो यह उसका सौभाग्य ही होता था। ऊपर मे फेकी गई यह गन्दगी गली मे पडी रहती थी और इस कुए नुमा बन्द गली मे रात्रि कालीन हवाओ के कारण उत्पन्न दुर्गन्ध तब तक बनी रहती थी जब तक कि नगर रक्षक अन्यमनस्क भाव से उसकी सुबह होने पर सफाई नही कर देते थे। केवल रविवार की सुबह इसकी सफाई नही की जाती थी, और स्कॉटलैंड की राजधानी इस धार्मिक नासमझी के कारण दुर्गन्ध से भर जाती थी।

एडिनबरा की यह प्रसिद्ध सफाई व्यवस्था इगलिश यात्रियो के बीच चर्चा का विषय बनी रहती थी और स्कॉट लोगो को अन्य राष्ट्रो के कलक जैसा कि डिफो के शब्दो मे "(वे) स्वच्छता एव सुन्दरतापूर्वक नही रहना चाहते" का पात्र बनना पडता था। लेकिन डिफो द्वारा स्कॉटो के समर्थन मे कहे गये शब्दो का उद्धरण देना यहा अधिक उचित होगा "यदि अन्य लोगो को भी इसी प्रकार का दु खपूर्ण जीवन व्यतीत करना पडता अर्थात् सात से दस बारह मजिलो वाले ऊचे मकानो मे, जहा कि पानी की काफी कमी होती, और जो थोडा बहुत पानी उन्हे मिलता वह भी प्राप्त न होता तथा सबसे ऊपरी मजिल तक उसे ले जाने मे और भी कठिनाई होती तब ऐसी उबड-खाबड स्थिति मे लन्दन अथवा ब्रिसल भी उतने ही गन्दे होते जितना कि एडिनबरा था, कई नगरो मे यद्यपि एडिनबरा से भी अधिक लोग रहते है लेकिन मेरा विश्वास है कि ससार के किसी भी नगर मे एक छोटे से कमरे मे इतने अधिक लोग नही रहते जितने कि वहा।"

एडिनबरा वास्तव मे फ्रेन्च नगर-प्रकार का एक मात्र ऐसा उदाहरण था जो सुरक्षा सम्बन्धी कारणो से अपनी प्राचीन सीमाओ मे ही केन्द्रित था। इसके कारण उसे इगलैड के शान्त और सुचारु जीवन व्यतीत करने वाले नगरो के विपरीत जो कि प्रत्येक परिवार को रहने के लिये उसका अपना घर तथा यदि सम्भव हुआ तो बगीचा भी प्रदान कर सकते थे और देहात की ओर उपनगरो की रचना करते हुए निरन्तर विस्तृत होते रहते थे, भूमि पर विस्तार प्राप्त करने की अपेक्षा ऊचाई मे बढना पडा। फ्रेन्च प्रभाव तथा स्कॉटलैड की पूर्वकालीन अशान्त स्थिति ने इस राजधानी को उसके चारो ओर बने परकोटे तक ही सीमित रखा तथा उसके विस्तार को ऊचाई की ओर मोड दिया। किर्क ओ' फीरड्स मे डार्नले की भाति किसी भद्र व्यक्ति के लिये बिना दीवारो वाले मकान मे रात्रि व्यतीत करना सहज नही रह गया था। इसलिये स्कॉट-लैड के श्रेष्ठिजनो को एडिनबरा मे वैसे भवन उपलब्ध नही थे जैसे कि अग्रेज कुलीनो को ब्लूम्सबरी तथा स्ट्रेन्ड मे प्राप्त थे। इतना ही नही बल्कि ससद सत्र के दौरान उन्हे परिस्थितिवश, हाई स्ट्रीट पर बने मकानो की तग मजिलो पर भी रहना पडता था।

इस प्रकार के नगर के बारे मे, जहा कि प्रत्येक फ्लैट को एक पृथक मकान माना जाता था और मकानो पर किसी प्रकार के नम्बर भी अकित नही थे, यह कल्पना की जा सकती है कि पत्रो अथवा अजनबी भेटकर्ताओ को ठिकाने पर पहुचने मे कितनी कठिनाई उत्पन्न होती होगी। निस्सन्देह समझदार और तीक्ष्ण दृष्टि वाले विश्वस्त नौकरो की सेवाओ के बिना प्राचीन एडिनबरा की उलझन भरी गलियो तथा मजिलो तक ले जाने वाले जीनो की भूलभुलैया मे दैनिक कार्यो का होना अत्यन्त कठिन था।

स्कॉटिश साहित्य यद्यपि अधिकाश इस राजधानी मे ही केन्द्रित था, लेकिन इस नई शताब्दी के उत्तरार्ध मे ऐसा कभी प्रतीत नही हुआ कि उसने अपने ज्ञान से कभी लोगो को प्रकाशित किया हो। यद्यपि वह सभी सामग्री राष्ट्र ने अपनी विचार प्रणाली तथा हृदय मे आत्मसात कर ली थी लेकिन प्रमथ्यु की अग्नि का अवतरित होना अभी शेष था। जन-मानस की अभिव्यक्ति लोक गीतो, लोककथाओ तथा किसान की झोपडी मे प्रज्वलित अग्नि के चारो ओर बैठकर विभिन्न विचारधाराओ पर की जाने वाली चर्चाओ मे होती थी। बाइबिल के अतिरिक्त प्रकाशित पुस्तके प्रमुखतया धर्म अथवा राजनीति से ही अधिक सम्बन्धित थी।

उस समय वहा सही अर्थों मे कोई पत्रकारिता भी नही थी। एडिनबरा से सप्ताह मे दो बार दो पत्र प्रकाशित होते थे, एक काफी समय से चला आ रहा 'गजट' था और दूसरा उसका प्रतिस्पर्धी 'कोरेन्ट' था जो सन् १७०५ मे प्रथम बार प्रकाशित किया गया था, दोनो ही दफ्तरशाही का प्रतिनिधित्व करते थे, आकार-प्रकार मे लन्दन के समाचार पत्रो का अनुकरण मात्र थे तथा यूरोप तथा इगलैड के समाचारो के अतिरिक्त स्कॉट लोगो को उनके अपने विषय मे किसी प्रकार की सूचना

नही देते थे। सघ बन जाने के बाद जब स्कॉटिश प्रिवी काउन्सिल समाप्त कर दी गई थी तब स्काटिश प्रेस को कुछ स्वतन्त्रता प्राप्त हुई और ऐन्नी के शासनकाल के अन्तिम वर्षों मे नये-नये समाचार पत्रो के प्रकाशन के साथ पत्रकारिता का भी अपना जीवन प्रारम्भ हुआ।

स्कॉटिश किसान समान्तशाही शिकजो तथा मध्ययुगीन गरीबी मे जकडा हुआ था और इससे त्राण प्राप्ति के लिये धर्म की ओर पलायन करता था। किसी प्रकार की बौद्धिक गिजा भी उसे उपलब्ध नही थी। घुटनो पर रखी बाइबिल पढते हुए वह अपने पादरी अथवा घनिष्ट मित्रो के साथ आनन्ददायी तर्क-वितर्को मे उलझा होता था और उसके मन मे, आज के सामान्य जन के मन मे जिस प्रकार 'खाओ पिओ और मौज करो' वाले विचार घुमडते है, उमसे विपरीत बुरे अथवा अच्छे किसी भी पक्ष से सम्बन्धित गहन, सकीर्ण तथा तीव्र विचार घुमडते रहते थे। बडे लोगो अथवा महत्वपूर्ण लोगो द्वारा राजनैतिक प्रसगो पर उससे कोई विमर्ष न करने पर भी और ससदीय क्षेत्रो मे उसका कोई प्रतिनिधित्व न होने पर भी वह धार्मिक कार्यवाहियो मे, जहा-जहा उसे अपना प्रभाव महसूस होता था—चर्च की धर्म-सत्ता जिले (पैरिश) के किर्क सत्रो मे, बारह जिलो की प्रेसबिटेरी मे, प्रान्तीय धर्म परिषद मे तथा एडिनबरा मे प्रनिवर्ष एकत्र होने वाली 'जनरल एसेम्बली' मे तत्परता से रुचि लिया करता था। क्योकि यार्क और कैन्टरबरी की विशुद्ध पादरीय सभाओ मे सासारिको को सम्मिलित नही किया जाता था अत उपरोक्त वर्णित अन्य प्रकार की धार्मिक सभाओ मे इन लोगो को भी प्रतिनिधित्व का अवसर मिलता था। यह बहुधा ही कहा जाता था कि चर्च एसेम्बली तीनो राज सस्थाओ (एस्टेट्स) की तुलना मे स्कॉटलैंड की सही प्रतिनिधित्व करने वाली ससद है। और किसी भी प्रकार के स्थानीय शासनतन्त्र की अनुपस्थिति मे जिला-परिषद की निकटतम पहुँच मे किर्क-सत्र (किर्क-सेशन) ही था जहा कि बडे बूढे लोग पादरी को सदैव आतकित किये रहते थे।

जिला-गिरजा, घासफूस की छत वाली कमजोर और छोटी सी इमारत थी, उसमे किसी भी प्रकार की मध्ययुगीन भव्यता अथवा सुविधाए नही थी, इगलेंड मे वस्तुत इस प्रकार की इमारत का उपयोग केवल खलिहान के ही रूप मे किया जाता था। देहाती गिरजो मे बडे बूढो तथा कुछ विशेष सुविधा-प्राप्त परिवारो को छोडकर अन्य लोगो के बैठने की शायद ही कभी व्यवस्था की जाती थी। अधिकाश स्त्री-पुरुष प्रार्थना के समय या तो खडे रहते थे अथवा टूटे-फूटे उस प्रकार के स्टूलो पर बैठते थे जिस पर बैठ कर कि एक बार जेनी गेड्स ने प्रार्थना-पुस्तक मे अपनी अस्वीकृति लिखी थी। इतना होने पर भी वह कुव्यवस्थित कक्ष प्रत्येक सेबाथ (रविवार) को होने वाली तीन-तीन घटो की दो प्रार्थना सभाओ मे मीलो दूर से जगली रास्तो को पैदल पार कर आने वाले लोगो द्वारा खचाखच भरा होता था। चर्च मे इतना कम स्थान होना था

कि दर्शको की भीड चर्च के बाहर भी जमा हो जाती थी और वही किसी कब्र के पत्थर पर एक लडके को खडा करके उससे बाइबिल का पाठ करवाया जाता था ।

सबसे अधिक पवित्र तथा प्रभावशाली धार्मिक सस्कार चर्च के दरवाजे के सामने गर्मियो मे सन्ध्या समय बडी-बडी मेजो पर सहधर्मचारिता (कम्यूनियन) के भोज के रूप मे किये जाते थे जिन्हे देख कर जगल मे फासी के समय होने वाली भयानक भीड की याद ताजा हो आती थी । जून से अगस्त तक आठ अथवा दस पैरिशो (जिलो) मे से प्रत्येक को बारी-बारी से सभी को इस सहभोज के लिये आमन्त्रित करना पडता था और अनेको लोग एक के बाद एक पहाडी को पार कर चालीस मील की पद-यात्रा करते हुए वहा तक पहुँचने मे तनिक भी असुविधा का अनुभव नही करते थे ।

महारानी ऐन्नी के शासनकाल मे पुराने पादरी वे लोग थे जिनकी शिक्षा मे कई बाधाए उत्पन्न होती रहती थी और उनकी आत्मा अत्याचारो के कारण कटुतापूर्ण तथा विखण्डित हो गई थी । उनके विषय मे जो लोग जानते है बताते है कि वे लोग "अशक्त, अर्धशिक्षित लोग थे, उनका जीवन अनिद्य था तथा उनका व्यवहार कठोर तथा असस्कृत था । ठोस सिद्धान्तो पर आधारित होते हुए भी उनकी धर्मसभाए उनके पक्षपात पूर्ण रवैयो से पर्याप्त सम्बन्धित थी, और इसके कारण उनकी हीन भावना तथा अशक्तता का प्रदर्शन बहुधा होता रहता था ।"

ईश्वर तथा धर्म सम्बन्धी रहस्यो के बेढगे वर्णन मे, चर्च मे चुस्त पोषाक पहन कर आने अथवा 'लन्डनस्पेक्टेटर' ले जाने जैसे हानि रहित कार्यो की आलोचना करने मे 'प्रेस्बिटेरियन भाषण कला' अग्रेजो के लिये एक कहावत का विषय बन गई थी । लेकिन एक अग्रेज ने ही यह भी लिखा था कि यदि स्कॉटलैड की भाति इगलैड के गिरजो को भी इतने कम प्रोत्साहनो के साथ नि स्वार्थ भाव से उतना श्रम करना पडता तो मै यह कह सकता हू कि वे पादरियो के स्थान पर मिस्त्री उत्पन्न करने लगते । स्कॉटलैड मे किसी प्रकार के निरुद्योगी व्यक्ति, आलसी पादरी, कुव्यसनी पुरोहित नही थे और न किसी प्रकार के सम्मान-भेद अथवा तृष्णा को भडकाने वाले साधनो का ही उपयोग किया जाता था ।"

निस्सन्देह, कृषक परिवारो मे उत्पन्न हुए ये अधिकाश पादरी पैरिश (जिले) के नेतृत्व तथा अपने प्रति लोगो के विश्वास से पूर्ण सतुष्ट थे । लेकिन इसी दौरान कुछ कम विपदाजनक काल मे, अधिक शिक्षित, भाषा तथा वैचारिक क्षमताओ मे अधिक समृद्ध लोगो की एक पीढी भी पनप रही थी जो शीघ्र ही 'मोडरेट्स' (उदारवादी) बन कर पुराने लोगो के प्रति, जिन्हे कि 'क्लेवर हाउस' ने हठधर्मिता की ओर बरबस धकेला था, विपक्षी रवैया अपनाने लगी ।

पादरी के साथ सयुक्त होकर कार्य करने वाला बडे-बूढो का स्वमान्य 'किर्क-सेशन' लोगो के दैनिक जीवन मे अत्यधिक हस्तक्षेप करता था ।

एक सप्ताह उसी स्थान पर तथा एक सप्ताह बाहर कार्य करने वाला 'किर्क-सेशन' तथा प्रेस्बिटेरी का उच्च न्यायालय शपथ तोडने वालो, मिथ्या कलक लगाने वाले लोगो, झगडा करने वालो, 'सैबाथ' के नियम भग करने वालो, जादू-टोना करने वालो तथा मौन अपराधियो के मुकदमो की सुनवाई करता था। कुछ ऐसे स्तर के मामलो की जो कि इगलैंड मे मजिस्ट्रेट की अदालत मे तय किये जाते थे, जाच तथा निर्णय इनके द्वारा भली प्रकार किये जाते थे तथा वह उपयोगी भी होते थे। लेकिन कुछ मामलो का चयन तथा निर्णय जैसे उपवास के दिन किसी स्त्री द्वारा पानी का घडा उठा कर ले जाना तथा किसी व्यक्ति द्वारा बप्तिस्मा पार्टी मे घुसपैठ करना अत्यधिक दु खद थे। व्यभिचार करने वाले स्त्री-पुरुषो को पश्चाताप के स्टूल पर चढा कर एकत्रित जन समुदाय मे से किशोरो के मजाक का, सम्मानितो के धिक्कार का तथा छ, दस अथवा बीस सैबाथ तक लगातार अपने इस कार्य मे तनिक भी न झिझकने वाले पादरियो के तिरस्कार का पात्र बनाया जाता था। ऐसे पश्चाताप करने वालो की बहुधा एक लम्बी पक्ति हुआ करती थी और उन्हे पहनाये जाने वाले गाउनो का इतना अधिक उपयोग होता था कि उनके फट जाने पर नये गाउनो की शीघ्र ही व्यवस्था करनी पडती थी। इस असह्य तिरस्कार से बचने के लिये, बेचारी लडकियो को या तो अपने गर्भ को किसी प्रकार छिपाने की व्यवस्था करनी पडती थी अथवा भ्रूण हत्या का मार्ग अपनाना पडता था। इस प्रकार के मामलो पर प्रिवी काउन्सिल के सामने कडी सजा देने अथवा सजा कम कर देने का प्रश्न विचारार्थ कई बार उपस्थित हुआ था।

किर्क-सेशन तथा प्रेस्बिटेरी के इन कार्यों को जन-मत का प्रबल समर्थन प्राप्त था अन्यथा इसी प्रकार के चर्च-नियमो का दुरुपयोग इगलैंड मे इतने समय तक न होता रहता। लेकिन उच्च वर्गो को छोड कर सामान्य लोगो मे इसके प्रति काफी आक्रोश जन्मा था। यह सत्य है कि भद्र वर्ग के लोगो के लिये प्रायश्चित के दड को जुर्माने मे बहुधा ही परिवर्तित कर दिया जाता था लेकिन इस सुविधा के साथ भी पादरियो तथा निम्नवर्गीय वृद्धजनो द्वारा अपेक्षित आचरण का नियन्त्रण कुलीन तथा अभिमानी परिवारो को काफी अखरता था, बिशप-सम्प्रदाय तथा अनेक ऐसे लोगो के, जिनका प्रेसिबटेरियन चर्च के विश्वासो तथा गतिविधियो से कोई झगडा नही था, जैकोबाइट राजनीति से सम्बन्धित होने का एक यह भी मूल कारण था। पादरीवाद के विरोध ने जिस प्रकार इगलैंड मे ह्विग लोगो को सगठित किया था उसी प्रकार स्कॉटलैंड मे जैकोबाइटो को दृढ बनाया। फिर भी यह स्मरणीय है कि 'किर्क-सेशन्स' तथा प्रायश्चित का कार्यक्रम चार्ल्स द्वितीय के एपिस्कोपल प्रधान समय मे भी निरन्तर चलता रहा तथा एपिस्कोपल पादरियो द्वारा नियत्रित अनेक जिला-गिरजो मे भी समाप्त न हो सका।

कुल मिला कर बिशप अथवा जैकोबाइट दल प्रेस्बिटेरियन अथवा ह्विग लोगो की अपेक्षा उच्च वर्गों के आश्रय पर अधिक निर्भर था। 'नॉक्स' का शिष्यत्व जितना अधिक दृढ होता जाता था उतनी ही आचरण तथा विचारधाराओ के जनतात्रिक होने की सम्भावना अधिक होती जाती थी। पादरियो की नियुक्ति मे लेकिन झगडा उत्पन्न हुआ था। कट्टर प्रेस्बिटेरियनो की माग जिले (पैरिश) के लोगो को ही नियुक्त करने की थी, और इसके लिये वे धर्माध्यक्षो को धार्मिक विचारधारा की दुहाई देते थे, लेकिन नियुक्ति करने वाले अन्य सरक्षको को उनके प्रेस्बिटेरियन विश्वासो पर सन्देह था।

एपिस्कोपेलियन लोग छपे हुए पर्चो द्वारा प्रेस्बिटेरियन लोगो की इस नीति-विहीनता पर व्यग करते रहते थे कि वे पादरियो द्वारा समर्थित भद्र तथा कुलीन लोगो, जिन पर कि वे अपनी तथा धर्म की सुरक्षा के लिये निर्भर करते थे, विरोध करते थे तथा झगडालू सामान्यजनो की भीड का पक्ष लेते थे। 'वस्तुत कुलीनो तथा भद्रजनो के सामान्य लोग इतने आधीन कि इतनी स्पष्ट स्थिति मे उनकी इस निर्बुद्धि पर कि किसका पक्ष लिया जाए जरा भी विचार की आवश्यकता नही थी।' स्कॉटलैड आने वाले विद्रोही यात्री भी आश्चर्यचकित तथा आशकित थे कि चर्च उच्चवर्गीय लोगो से इतनी निर्भीकतापूर्वक किस प्रकार व्यवहार करता है। अन्य दोषो के अतिरिक्त जॉन नॉक्स के चर्च ने स्कॉटलैट के निम्नवर्गीय लोगो को इतना ऊचा उठा दिया था कि वे अपने सामन्त मालिको से अभिमानपूर्वक बात करने लगे थे।

एपिस्कोपेलियन लोगो की स्थिति अठारहवी शताब्दी के प्रारम्भ मे विशृखलित हो गई थी। उनके धार्मिक कार्य, विश्वास, सगठन तथा अनुशासन मे अधिकारो का कुछ उपयोग कर पाने वाले पादरियो की उपस्थिति को छोडकर-प्रेस्बिटेरियन प्रणाली से अधिक भिन्न नही थे। फिर भी दोनो मे काफी कटुता थी क्योकि गिरजो के मतभेद ह्विग तथा जैकोबाइट के बीच के राजनैतिक मतभेदो से जिनकी पृष्ठभूमि मे कि द्वेष भाव दो पीढियो से निरन्तर चला आ रहा था, काफी सम्बन्धित थे।

स्कॉटलैड के एपिस्कोपेलियन इगलैड के विद्रोहियो की तुलना मे एक ओर जहा श्रेष्ठ थे वही खराब भी थे। एक ओर जहा सन् १७१२ तक उनके धार्मिक कार्यों को मान्यता प्रदान करने के लिये 'एक्ट ऑफ टॉलरेशन' जैसे किसी अधिनियम की रचना नही हो पाई थी, दूसरी ओर जिला-गिरजो (पैरिश-चर्च) की लगभग एक/छ सख्या पर अब भी उन्ही के पादरियो का अधिकार था। हाईलैड्स तथा उनकी पूर्वी सीमा पर तथा एबरडीनशायर मे, स्वय को प्रेस्बिटेरियन पादरी जतलाने वालो पर उतनी ही बर्बर भीड के आक्रमणो का खतरा रहता था जितनी बर्बर कि दक्षिण-पश्चिम के एपिस्कोपल पादरियो पर आक्रमण करने वाली भीड थी। सन् १७०४ मे जब एक प्रेस्बिटेरियन पादरी को डिगनवाल मे पदासीन किया जा रहा था, स्त्रियो तथा पुरुषो

की एक भीड ने यह नारा लगाते हुए कि 'राजा विली मर चुका है और हमारा राजा जीवित है' उस पर पत्थरो की वर्षा की थी तथा पीट कर भगा दिया था।

उत्तर-पूर्व मे लोगो की जो भावना इस प्रकार व्यक्त हुई थी उसका कारण वस्तुत मतभेदो की अपेक्षा राजनैतिक सघर्ष, दक्षिण-पश्चिम के ह्विग मोर् स की प्रान्तीय घृणा तथा देखे परखे हुए पुराने पादरियो के प्रति आस्था का होना था। स्कॉटलैड मे सन् १७०७ मे ९०० जिलो मे से १६५ अब भी ऐसे जिले थे जिनके पादरी एपिस्कोपल चर्च के ही पक्ष धर थे। लेकिन अधिकाश एपिस्कोपल पादरी 'क्रान्ति' के समय अपने अधिकारो से वचित कर दिये गये थे। ऐन्नी के शासनकाल मे उनकी दशा दयनीय हो गई थी, किसी बडे घराने के पुरोहित जैसे कुछ भाग्यशाली पादरियो को भी या तो अपने स्कॉटलैड के ही धर्म समर्थको की भिक्षा पर जीवन यापन करना पडता था, अथवा अंग्रेजी चर्च सम्प्रदायियो की वृत्ति पर आश्रित रहना पडता था कि जो उन्हे समान कार्य के लिये हुए शहीदो के रूप मे देखते थे।

मै पिछले अध्याय मे यह बता चुका हू कि उच्च वर्गो मे जादू-टोने के प्रति लोगो के विश्वास मे कितनी कमी हो गई थी क्योकि उस शिक्षा प्रधान देश मे कानून के अनुसार जादूगरनियो पर मुकदगे चलाना तथा उनके प्रति लोगो के विश्वास को मान्यता देना बन्द कर दिया गया था। स्काटलैड मे भी एक दो पीढियो बाद यही स्थिति उत्पन्न होने लगी थी। अठारहवी शताब्दी के प्रारम्भ मे उच्चवर्ग का एक भाग जादुई सस्थाओ की दृष्टि से पर्याप्त अस्पष्ट था लेकिन पादरियो तथा सामान्य लोगो का इनमे कट्टर विश्वास था। महारानी ऐन्नी के शासनकाल मे जादूगरनी प्रतीत होने वाली कई स्त्रियो को मौत के घाट उतार दिया गया था तथा कई को ऐमा न करने की कडी हिदायते दे दी गई थी। जार्ज प्रथम के समय मे जादूगरनियो को सदरलैडशायर के सुदूर जगलो मे अन्तिम बार मृत्युदड दिया गया था। सन् १७३६ मे ग्रेट ब्रिटेन की वेस्टमिनिस्टर पार्लियामेन्ट ने जादूगरनियो को मृत्युदड देने वाले कानून को समाप्त कर दिया था। एक पीढी के बाद बर्न्स तथा उसके कृषक मित्रो के लिये जादूगरनिया भय की अपेक्षा उपहास का विषय हो गई थी लेकिन कट्टर प्रेस्बिटेरियन जादू-टोने मे अविश्वास को नास्तिकता के ही रूप मे मानते रहे।

वास्तव मे प्रेस्बिटेरियन चर्च सभी आम विश्वासो का उत्पत्ति केन्द्र नही था। कुछ विश्वासो को जहा वह प्रोत्साहित करता था कुछ को समाप्त करने का भी प्रयत्न करता था। लेकिन इन सभी विश्वासो का मूल वस्तुत पोप-सम्प्रदाय, अन्धविश्वासी मूर्तिपूजको, आदिम प्रवृत्तियो तथा प्रथाओ से प्राप्त हुआ था जो कि पर्वतीय क्षेत्रो, जगली प्रदेशो तथा प्रकृति प्रधान स्थलो पर रहने वाले लोगो मे (लोलैड्सवासियो मे भी) जिनकी स्थिति कि अब भी भूतकालीन स्थिति के ही समान थी, अब भी विद्यमान थे। अब भी, घर आते हुए जब लोग अर्द्ध रात्रि मे नदी को पार करते थे तो उन्हे

बाढ के समान गर्जना करते हुए जल-प्रेतो की आवाज सुनाई देती थी। अब भी उन्हे घाटी के पेडो मे छिपी हुई प्रेतनिया दिखाई देती थी, परिचित धर्म प्रचारिकाओ की भी सस्कारो द्वारा इस डर से शुद्धि की जाती थी कि कही वे पशुओ को न मार डाले अथवा बच्चो को उनके पालने से न उडा ले जाए। टे के उत्तर मे, प्रथम मई के दिन लोग बेल्टान अग्नि प्रज्वलित करते थे तथा उसके चारो ओर नृत्य करते थे। फसलो और पशुओ की रक्षा कई प्रकार की कहावतो के आधार पर की जाती थी जिनमे से कुछ तो कृषि-प्रधान युग तथा पशुपालन युग से चली आ रही थी, उदाहरणार्थ यह कहावत—कि "जिस समय जगल मे आच्छादित वृक्ष-शाखाओ पर मूर्त थी एक पावनता, हवा, जल और अग्नि सभी कुछ पवित्र था।" जादुई कुओ पर भी लोग जाया करते थे और पेडो तथा झाडियो पर प्रेतात्माओ के आतक के कारण तथा भक्ति स्वरूप फटे हुए कपडो आदि के रूप मे कुछ भेट चढाया करते थे। हाईलैन्ड्स के कुछ क्षेत्रो मे इस प्रकार की धार्मिक क्रियाओ का करना लोगो के धर्म का प्रमुख भाग था, लोलैन्ड्स मे यद्यपि ऐसी क्रियाओ की प्रमुखता नही थी लेकिन फिर भी किर्क-चर्च को मानने वाले ईसाइयो के इस देश मे लोगो के व्यावहारिक जीवन मे ऐसी क्रियाए अवश्य सम्मिलित थी।

अच्छे डाक्टरो की अनुपस्थिति मे देहात मे लोग पारम्परिक देशी औषधियो का ही प्रयोग करते थे और जादू-टोना तथा उपचार परस्पर इतने मिले जुले थे कि उनमे अन्तर कर पाना कभी-कभी बडा कठिन हो जाता था। कुछ ऐसे बुद्धिमान लोग भी थे जो एक ओर जहा मानवीय सुख शाति के लिये अपना योगदान करते थे वही दूसरी ओर उसे हानि पहुचाने वाले जादू-टोना करने वाले स्त्री-पुरुषो की भी सहायता करते थे। चर्च यद्यपि लोगो को जादू-टोना के उन्मूलन के लिये प्रोत्साहित करता था लेकिन जादूगरो को भद्रजनो से सहायता प्राप्त कर पाने से वचित नही कर सकता था। पादरी की स्थिति भी अधिक शक्ति-सम्पन्न नही थी। और चू कि उसने हानि रहित सुख-सुविधाओ को भी त्याग दिया था—वह शक्ति-सम्पन्न हो भी कैसे सकता था ? प्रत्येक उत्सव मे, चर्च द्वारा पाबन्दी होने पर भी लडके लडकिया वाद्यो के साथ नृत्य करते थे, और न वृद्धो और न युवा लोगो किसी को भी प्रेस्बिटर अथवा पोप से भी पहले से चले आ रहे धार्मिक सस्कारो (क्रियाओ) से वचित करना कठिन था। किसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति को दूर करने के लिये जीवन की प्रत्येक स्थिति-जन्म, विवाह, मृत्यु, दूध बिलोना, यात्रा के लिये प्रस्थान, खेत बोना आदि से सम्बन्धित सैकडो प्रथाओ तथा मन्त्रो का प्रयोग किया जाता था।

अकल्पना प्रधान शकावादी इगलैड की अपेक्षा स्कॉटलैड मे दैनिक जीवन मे किसी न किसी प्रकार के करिश्मे के घटित होने की कल्पना सदैव उपस्थित रहती थी। भूत-प्रेत, शकुन, प्रतीतिया दैनिक जीवन की सामान्य विशेषताए थी; जीवित लाशे दैनिक

जीवन मे किस प्रकार सम्मिलित होकर भाग लेती है, इस प्रसग की अनेको कहानिया कही जाती थी और उन पर लोग विश्वास भी कर लेते थे, होमरकालीन यूनान की भाति, जगल मे किसी अजनबी से भेट हो जाने पर एक स्कॉट के लिये उसे एक 'धूर्त' समझ लेने की पर्याप्त सम्भावना थी। मकान के बाहर दरवाजे पर सध्या समय प्रतीक्षा करता हुआ अथवा कब्रिस्तान के ऊपर से गुजरता हुआ कोई दानवीय-आकार बहुधा दिखाई देता था। बीहड जगलो मे जो लोग हिस्र पशुओ के शिकार बन जाते थे वे पारलौकिक शक्तियो के प्रकट रूप मे वुड्रो तथा उसके एतिहासज्ञो की भाति सदैव विस्मयकारी वस्तुओ को स्तम्भित दृष्टि से ताकते हुए इधर-उधर घूमा करते थे। अपनी सभाओ मे पादरी लोग ऐसी धारणाओ को प्रोत्साहित करते रहते थे। पहाडियो पर घटो अकेले बैठे हुए चरवाहो के लडके कभी-कभी अद्भुत तथा सुन्दर दिवास्वप्न बुनते रहते थे वुड्रो ने लिखा है कि सन् १७०४ मे एक व्यक्ति ने यह घोषित किया था कि जब वह ऐसे ही एकान्त मे विचरण कर रहा था एक ककाल व्यक्ति उसके पास आया, भक्ति भाव से उसकी अभ्यर्थना की तथा शिक्षा देने के लिये प्रार्थना की, क्योकि वह उसे ईसामसीह समझा बैठा था। उसके अनुसार, इसी प्रकार अगले वर्ष जब एक लडका कुए मे डूब रहा था और आसपास कही कोई नही था एक दुर्बल युवक ने आकर उसे पानी से बाहर निकाला, और लोगो ने उसे देवदूत समझ लिया। स्कॉटलैड का यह स्वरूप प्राचीन स्वरूप ही था, डेविड ह्यूम, एडम स्मिथ अथवा एडिनबरा के बुद्धिवादियो के स्कॉटलैड की तो बात ही क्या, बर्न्स तथा वाल्टर स्कॉट का प्रभाव भी (यद्यपि वह उन्हे चिन्तन की सामग्री देता रहा था) उस पर नही पड सका था।

यद्यपि लोलैन्ड्स मे उसकी प्रकृति प्रधान तथा आदिम परिस्थितिया ऐसे प्राचीन विश्वासो तथा कल्पनाओ को जन्म देती रही थी लेकिन हाईलैन्ड्स मे यह स्थिति और भी विकट थी, परियो, आत्माओ, नौका के नीचे पानी मे छिपे हुए अतीन्द्रिय निराकार दैत्य, जीवन से लिपटे हुए शकुन तथा भविष्यवाणियो की बाते काफी प्रचलित थी। हाईलैंड सीमा पर (जिसे स्कॉट शायद ही कभी पार करते हो और यदि कभी पार करते भी थे तो अभियानकर्ता बेली निकोल जाखी की भाति भयग्रस्त होकर ही पार करते थे) मार्गविहीन अजानी पहाडियो पर अन्य भाषा-भाषी सेल्टिक जनजातिया रहा करती थी। उनकी पोषाक, नियम तथा समाज सभी कुछ दक्षिणी स्कॉटलैड की तुलना मे लगभग एक हजार वर्ष पुराने थे और वे किर्क (चर्च) अथवा महारानी किसी को भी स्वीकार न कर केवल अपने ही मुखियाओ, कबीलो, प्रथाओ तथा अन्धविश्वासो के आधीन थे। जनरल वेड की सेवाओ के पूर्व, एक पीढी बाद तक वहा हाईलैन्ड्स से उसे जोडने वाली किसी प्रकार की सडक का निर्माण नही हुआ था। अजेय प्रकृति का उसके सौदर्य प्रधान तथा उदास पक्षो सहित एक छत्र साम्राज्य था और उसी साम्राज्य के एक कोने मे उसका ही भाग बनकर प्राकृतिक छटा की सौदर्यानुभूति से उदासीन मनुष्य भी बैठा था।

आज जितनी जानकारी अफ्रीका के सुदूर क्षेत्रो के बारे मे एक पुस्तक द्वारा प्राप्त की जा सकती है उससे कही कम जानकारी उस समय लन्डन अथवा एडिनबरा मे हाईलैन्ड्स की स्थिति के बारे मे उपलब्ध थी। हाईलैन्ड्स के बारे मे बर्ट्स के पत्रो के पूर्व कोई भी अच्छी पुस्तक प्राप्य नही थी। महारानी ऐन्नी के समय मे मोर्स द्वारा लिखे गये स्कॉटलैंड के विवरण के कुछ प्रारम्भिक पृष्ठ ही उस द्वीप के उत्तरी छोर वाले अजाने प्रदेश के विषय मे कुछ जानकारी प्रदान करते थे "हाईलैंड निवासियो के पास यद्यपि अन्न की कोई विशेष कमी नही है फिर भी वे अपनी जनसख्या को उससे सतुष्ट नही कर सकते है अत प्रत्येक वर्ष अपने पशुओ सहित निचले प्रदेशो की ओर चले आते है, उनके पास पशु धन पर्याप्त मात्रा मे है अत जितनी अन्न की मात्रा उनके परिवारो के सन्तोष के लिये आवश्यक होती है वे पशुओ के बदले लोलैंड निवासियो से उसे प्राप्त कर लेते है। वर्ष मे एक या दो बार उनमे से काफी लोग सम्मिलित रूप से लोलैंड की ओर चले आते है, वहा के निवासियो को लूटते है और वापस चले जाते है। इस प्रकार की लूट मे उन्हे अत्यन्त सुख मिलता है और वे इसे निर्द्वन्द भाव से कर पाने मे पर्याप्त कुशल है।"

एडिनबरा से सन् १७०६ मे डिफो ने हार्ले को लिखे गये अपने पत्र मे हाईलैन्ड-वासियो के बारे मे कुछ प्रतिक्रियाए व्यक्त की है "वे काफी भयानक प्रकृति के लोग है, मै यही चाहता हू कि महारानी उनमे से २५००० को स्पेन पहुचा दे क्योकि वह देश भी उन्ही लोगो के समान अत्यन्त स्वाभिमानी तथा भयानक लोगो का देश है। वे काफी शरीफ लोग है और किसी भी प्रकार का झगडा या अभद्र व्यवहार नही करेगे। लेकिन मनुष्य को जगली रूप मे, एक चौडी तलवार, तमचा, कमर मे कटार लटकाये हुए कुछ साथियो के साथ 'हाई स्ट्रीट' पर किसी सरदार की भाति निर्द्वन्द गाय हाकते हुए घूमते देखना एक अत्यन्त अप्रिय दृश्य उत्पन्न करेगा।"

ये जगली लोग लोलैंडर से व्यापार न करते समय अथवा पशुओ को न हाकते समय घर पर स्वाभाविक रूप से किस प्रकार का जीवन व्यतीत करते थे ? यह कहना मिथ्या होगा कि जिस भूमि पर ये गणजातिया रहा करती थी वह उन्ही की भूमि थी और वे उस पर सन् पैंतालीस तक अन्य लोगो (सैनिक मुखियाओ) द्वारा अचानक वहा न पहुचने तक उस पर अपने निजी रूप मे निर्द्वन्द विचरते रहे। वास्तव मे महारानी ऐन्नी के शासनकाल मे किराये पर खेत लेने वाले लोग सम्पत्तिदारो से भूमि प्राप्त करने के इच्छुक थे ताकि उस भूमि को एक भारी किराये की राशि पर पुन किराये पर उठाया जा सके। पहाडी के आसपास की जमीन जल-प्रपातो के प्रबल वेग के प्रभाव से पथरीली हो गई थी और खाद आदि साधनो द्वारा उसमे किसी प्रकार का सुधार भी नही किया गया था, कृषि प्रणाली तथा खेती के औजार दक्षिणी स्कॉट-लैंड की तुलना मे भी काफी अविकसित प्रकार के थे, छोटी-मोटी क्यारिया भी केवल

कुछ ऊबड-खाबड सीमित भूखड भर थी। वस्तुत घाटियो पर जनसख्या का भार अत्यधिक था अत इस सबके अतिरिक्त कोई अन्य सम्भावना थी भी नही। कबीले के लोगो की सख्या मे जैसे जैसे वृद्धि होती गई खेतो का भी विभाजन होने लगा और इसका काफी खराब परिणाम हुआ। यह भविष्यवाणी सरलतापूर्वक की जा सकती है कि यदि हाईलैन्ड्स को सडको द्वारा बाहरी प्रदेशो से जोड दिया जाता अथवा सैनिक अथवा राजनैतिक शक्ति द्वारा जीत लिया जाता और गणजातिया जैसे ही यह समझ पाती कि स्थान परिवर्तन से उनका जीवन सुधर सकता है, तो वे तुरन्त वहा से चले जाते। ऐन्नी के शासनकाल मे यूरोप की ओर फ्रेन्च शासन मे 'आयरिश' सैनिक टुकडी मे भर्ती होने के लिये तथा लोलैन्ड्स मे साधारण नौकरी के लिये बहुत थोडे लोग बाहर जाया करते थे।

मुखिया (चीफ) को जन्म-मरण सम्बन्धी सभी अधिकार प्राप्त थे और वह उनका पूरा उपयोग करता था जिसके कारण उसके कबीले मे लोग उससे काफी आतकित रहते थे तथा उसके प्रति पारस्परिक भक्ति भाव तथा कई बार स्नेह भी बनाए रखते थे। लेकिन यह चीफ के व्यक्तित्व पर अर्थात्—वह पिता की भाति व्यवहार करता है अथवा निरकुश अत्याचारी के रूप मे अथवा दोनो स्थितियो के बीच की स्थिति को अपनाता है पर काफी निर्भर करता था। जिस प्रकार लुई XIV अपनी सेना को बनाए रखने के लिये कृषको पर कर लगाया करता था, उसी प्रकार चीफ भी अपने सैनिक रक्षको का भरण-पोषण अपने कबीले के मूल्य पर करता था, लेकिन इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत तथा जातीय स्वाभिमान से ओतप्रोत प्रजाति मे कोई भी अन्य शान्तिपूर्ण तथा मितव्ययी जीवन विधि लोकप्रिय नही हो सकती थी।

आरगाइल महान के अतिरिक्त भी 'हाईलैंड चीफ्स' मे से कई अन्य भी कुलीन वशीय सरदार थे जिनका एडिनबरा की राजनीति मे तथा फ्रास अथवा इगलैंड की सस्कृति धारण करने वालो मे महत्वपूर्ण स्थान था। लेकिन सुसस्कृत चीफ तथा उसके अनुयायियो मे भी काफी समानता थी—कबीले के प्रति स्वाभिमानी दृष्टि, वीणा तथा बासुरी से प्रेम, प्राचीन कल्पनाओ तथा सघर्षो के कथानक वाले गीतो तथा लोक कथाओ जिन्हे कबीले के कवि निरन्तर समृद्ध करते रहते थे लगाव—ये सभी उनमे समान भाव भूमि का निर्माण करते थे। इस घाटी के अचल मे समुद्र की सुन्दर पहाडी बाहुओ के अतिरिक्त जहा द्वीप के अन्य भागो की अपेक्षा गरीबी तथा असभ्यता अधिक प्रमुख थी, वही काव्य तथा आचलिक कल्पनाओ की भी काफी प्रचुरता थी।

इस प्रकार की स्थिति ने 'चर्च एसेम्बली' तथा 'सोसायटी' की ईसाइयत की शिक्षा देने के लिये प्रोत्साहित किया, सन् १७०४ से हाईलैन्ड्स मे, जहा धर्म प्रेस्बिटेरियन, रोमन कैथोलिक, एपिस्कोपेलियन तथा आदिम पैगान शाखाओ मे इस प्रकार विभाजित था कि उसका निर्धारण भी कठिन था, पुस्तकालय, पाठशालाए तथा प्रेस्बिटेरियन

सेवादलो की स्थापना के लिये धन एकत्र किया जाने लगा। कुछ सफलता तो तत्काल ही प्राप्त हो गई, लेकिन कुछ स्थानो पर धर्म प्रसार के कार्यों को 'चीफ' के आदेशो द्वारा बलपूर्वक दबा दिया गया और कुछ स्थानो पर कुछ वर्षों तक चलते रहने के बाद ऐसे कार्य स्वय ही समाप्त हो गये। सन् पैंतालीस के बाद जब दक्षिण से सेना तथा राजनैतिक प्रभावो द्वारा गणजातिवाद (ट्राइबलिज्म) को दबा दिया गया, केवल तब ही प्रेस्बिटेरियन धर्म प्रचारको को कुछ अवसर मिल सका और हाईलैड्स मे वे अपने धर्म का प्रसार वास्तविक अर्थों मे कर सके।

सामाजिक शक्तियो ने जब सम्पूर्ण द्वीप के, काफी समय से चले आ रहे एकीकरण के प्रश्न को अन्तिम रूप दिया उस समय के स्कॉटलैड की वास्तविकता कुछ इस प्रकार की ही थी। इस योजना को कार्यान्वित करने मे ही राजा एडवर्ड को असफलता हाथ लगी थी और क्रॉमवेल कालकवलित हो गया था, जहा शक्ति का प्रयोग व्यर्थ सिद्ध हुआ था वहा महारानी ऐन्नी को अपने स्त्री सुलभ कार्यों के कारण सफलता मिल गई। दोनो देशो के बीच स्वतन्त्र रूप से हुई सन्धि सन् १७०७ मे लागू कर दी गई तथा इसके कारण आधुनिक स्कॉटलैड के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

अन्य सदर्भ ग्रन्थ

एच जी ग्राहम, सोशयल लाइफ ऑफ स्काटलैड इन दि एट्टीन्थ सेन्चुरी। इस विषय पर अन्य पुस्तको की सूची मेरी पुस्तक 'इगलैड अन्डर क्वीन ऐन्नी' (रैमिलीज एड दि यूनियन विद स्कॉटलैड) के द्वितीय खड मे दी गई है।

---

[२]

अठारहवी शताब्दी के अन्त में स्कॉटलैंड

जार्ज तृतीय, सन् १७६०-१८२०

जैसाकि हम बीसवी शताब्दी के लोग विक्टोरियन अग्रेजो की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह से जानते है, 'प्रगति' का अर्थ सदा खराब से अच्छे अथवा श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर स्थितियो की ओर होने वाला परिवर्तन ही नही होता, और 'औद्योगिक क्रान्ति' का प्रभाव भी मनुष्य पर केवल अच्छा ही पडा हो, ऐसा भी नही है। लेकिन अठारहवी शताब्दी के उत्तरार्ध मे स्कॉटलैंड की 'प्रगति' केवल तीव्र ही नही थी बल्कि उचित दिशा की ओर भी प्रवृत्त थी। निस्सन्देह उसमे भावी दुर्गुणो के बीज अवश्य विद्यमान थे फिर भी सन् १८०० का स्कॉटलैंड सन् १७०० के स्कॉटलैंड मे निश्चय ही अधिक श्रेष्ठ था। अधिकाश लोगो के कन्धो से निर्धनता का भार कम हो जाने तथा उच्च वर्गों की सम्पन्नता मे कमी हो जाने के कारण स्कॉटलैंड को उच्चतम उपलब्धियो के लिये एक मुक्त वातावरण प्राप्त हो गया था।

पिछले अध्याय मे चित्रित जिन कष्टप्रद स्थितियो से इस देश को छुटकारा मिला था उसका कारण वास्तव मे उसकी कृषि प्रणाली मे होने वाला क्रान्तिकारी परिवर्तन था। यह वस्तुत समसामयिक इगलैंड मे हो रहे परिवर्तनो के ही अनुरूप था, लेकिन शताब्दी के प्रारभ मे स्कॉटलैंड की दशा अधिक खराब होने के कारण उसका परिवर्तन इगलैंड की अपेक्षा अधिक क्रान्तिकारी था। इस सुधार का प्रारभ स्कॉटिश जमीदारो ने अपने असामियो को दक्षिणी ब्रिटेन के नवीन विचारो से अवगत कराने के लिये अग्रेज किसानो तथा हालियो को नई विधियो के प्रशिक्षको के रूप मे नियुक्त कर लिया था और यह कार्य नेपोलियन से होने वाले युद्धो के दौरान उस समय अत्यधिक विकसित हुआ जबकि स्कॉटलैंड मे उस समय तक विकसित हो चुकी प्रणालियो से इगलैंड को परिचित कराने के लिये लोथियान्स के किसानो को इगलैंड ले जाया गया। यद्यपि सन् १७६० तथा १८२० के बीच इगलैंड का कृषि-स्तर पिछले युगो की अपेक्षा अधिक तीव्रता से विकसित हुआ था लेकिन इन्ही वर्षों मे स्कॉटलैंड की कृषि इगलैंड से काफी कुछ ग्रहण करते हुए भी उसे पीछे छोड चुकी थी।

इगलैंड की भाति वहा इस परिवर्तन के नेता छोटी पू जी, कम लागत तथा अल्प ज्ञान वाले कुछ जमीदार ही थे। उनकी सफलता ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया और सबने उसका अनुकरण किया। उन्होने सबसे पहले सम्मिलित जोत की 'रन-रिग' प्रणाली को समाप्त किया। यह प्रणाली वस्तुत इगलैंड के खुले खेतो (ओपन फील्ड्स) वाली प्रणाली से भी अधिक अविकसित कृषि प्रणाली थी, इसमे व्यक्तिगत

उपक्रम, कृषक समुदाय का लगाव तथा लगान की सुरक्षा बिलकुल नही थी और कृषको को खोखले सामन्तवाद की चक्की मे पिसना पडता था। पुराने इगलिश पट्टेदारो की ही भाति स्कॉटिश असामियो को भी भूमि पर कोई वैधानिक अधिकार प्राप्त नही था, उन्हे उधार के तौर पर कभी तो कुछ भूमि मिल जाया करती थी और कभी बिलकुल नही मिल पाती थी। लेकिन इस प्रणाली के खराब होने पर भी उसमे एक लाभ अवश्य था और वह यह कि इच्छानुसार उस भूमि का अनुबन्ध तोडा जा सकता था। 'रन-रिग' प्रणाली को समाप्त करने तथा भूमि का उचित आकार वाले खेतो मे पुर्नविभाजन कर किसानो को उन्नीस अथवा उससे अधिक वर्षो के लिये पट्टे पर दे देने मे भू-स्वामियो को किसी भी प्रकार की अडचन का सामना नही करना पडा। इस महत्वपूर्ण सुधार के कारण कृषको को पहली मर्तबा अपनी राष्ट्रीय प्रजाति की क्षमता को प्रत्यक्ष दर्शाने तथा अपनी शक्ति का उपयोग करने की प्रेरणा मिली।

•

इगलैंड मे हुए इसी प्रकार के सुधार की भाति इस सुधार मे भी पुरानी असामियो (टीनेन्ट्स) से भूमि के छिन जाने का खतरा अवश्य था। उदाहरणार्थ, दर्जन भर किसानो द्वारा जोते जाने वाले पुराने 'रन-रिग' फार्म के पुन विभाजित हो जाने तथा लगभग छ किसानो मे बट जाने पर शेष छ किसानो का क्या होता ? कृषि व्यवसाय से निष्कासित ऐसे कुछ लोग स्कॉटलैंड के लोगो को बसाने के लिये 'सघ' (यूनियन) द्वारा बनाई गई बस्तियो मे आ बसे थे और कुछ लोग विकसित होते हुए नगरो की ओर चले गये थे। लेकिन सामान्य रूप से ऐसी स्थिति मे भी कृषि योग्य भूमि के निरन्तर विस्तार के कारण स्कॉटलैंड मे कृषको की सख्या भी बढती गई। और व्यर्थ पडी हुई भूमि कृषि के लिये अधिक उपजाऊ भी सिद्ध हुई, क्योकि वह घाटी की तलहटी मे स्थित थी जिसमे पहाडी के ऊपर स्थित स्वसिंचित खेनो की अपेक्षा थोडे से कृत्रिम सिंचाई के साधन ही पर्याप्त उपयोगी सिद्ध होते थे।

अब पुराने तथा नवनिर्मित दोनो ही प्रकार के खेतो के चारो ओर पत्थर की दीवारो अथवा झाडियो की चाहारदीवारी बना दी गई थी, ऊबड-खाबड खेतो (रिगो) को समतल बना दिया गया था, खेतो मे खाद, पानी की व्यवस्था कर दी गई थी, कई भूखे तथा दुर्बल बैलो से हल जुतवाने की अपेक्षा घोडो (एक या दो) का उपयोग किया जाने लगा था, और लोग घोडे की पूछ के बालो से बने चाबुको की जगह चमडे के चाबुको, लकडी के हल के स्थान पर लोहे के हल तथा स्लेज गाडियो की जगह अच्छी सुन्दर गाडियो का उपयोग करने लगे थे। खेतो मे बोये गये आलुओ तथा बगीचो मे उगाई गई सब्जियो से लोगो के भोजन मे विविधता आ गई थी और अन्य फसलो से सर्दी भर पशुओ के चारे की पूर्ति हो जाती थी। बडे वृक्षो का लगाया जाना जहा आधियो से रक्षा करता था, वही उससे इमारती लकडी का भी उत्पादन होता था और

व्यापक स्तर पर नये जगलो के उग आने से स्कॉटलैंड के कई पहाडी स्थलो पर हरियाली भी छा गई थी ।[1]

सन् १७५१ के टर्नपाइक एक्ट के बाद से सडको का इतना विकास हो गया था कि किसानो तथा औद्योगिको, को मडियो मे अपने माल के लाने और ले जाने के अवसरो मे समानरूप से वृद्धि हो गई थी । कृषि सम्बन्धी समृद्धि से पुन उसकी वृद्धि के लिये पर्याप्त पू जी प्राप्त होने लगी थी । और जार्ज तृतीय के समय मे काउन्टी कस्बो मे हुई बैंको की स्थापना से जमीदारो तथा किसानो को जिस प्रकार के परिवर्तन वे लाना चाह रहे थे उन्हे लाने मे धन की दृष्टि से काफी सुविधा मिल गई थी । 'क्लाइड साइड' के औद्योगिक तथा वाणिज्य सम्बन्धी प्रगति से एक मडी बन जाने के कारण भूमि के और अधिक सुधार के लिये कृषि तथा पू जी सम्बन्धी सुविधाओ मे और अधिक बढती हो गई थी । ग्लासगो मे तम्बाकू का उद्योग करने वाले धनिको ने तथा अग्रेजी भारत से लौटकर आए कई साहसी व्यक्तियो ने पर्याप्त भू-सम्पतियो को खरीद कर तथा उसका विकास कर पर्याप्त धन एकत्र कर लिया था । सक्षेप मे, आर्थिक तथा सामाजिक जीवन मे समान विकास हो रहा था—किसी भी एक पक्ष का दूसरे पर कुप्रभाव नही पडा था क्योकि इस भाग्यशाली युग मे उद्योग तथा वाणिज्य कृषि के किसी भी रूप मे शत्रु नही बल्कि मित्र ही सिद्ध हुए थे ।

इस प्रकार से, सामयिक दुर्भिक्षो का भय, जिनसे लोग आक्रान्त रहा करते थे, कम हो गया था । साधारणत लोगो का वेतन, खेती का मुनाफा तथा भाडा पिछले कालो की अपेक्षा काफी बढ गये थे । दूध और दलिये के साथ प्रयुक्त आलू, हरी सब्जिया और पनीर के ही साथ कभी-कभी मास भी सम्मिलित हो जाता था, अन्तर केवल इतना था कि पहले दूध का ग्लास जहा कम भरा होता था अब पूरा भर जाता था । इगलैंड की भाति स्कॉटलैंड मे भी चोरी छिपे जो चाय और तम्बाकू आती थी वह गरीबो तक भी पहुचने लगी थी । मकानो की कुव्यवस्था मे यद्यपि सार्वभौमिक रूप से सुधार नही किया जा सका था लेकिन जहा-जहा भी सुधार हुआ था वह उत्कृष्ट था, कुछ क्षेत्रो मे पक्के अहातो वाले खेत बन गए थे और उन गन्दे मकानो के स्थान पर, जिनमे कि मनुष्य तथा पशु एक साथ रहते थे, एक या दो कमरे वाले सुन्दर मकान जिनमे चिमनी (धुए दानी), शीशे की खिडकिया, पलग, फर्नीचर, गैलरी आदि की व्यवस्था थी, बन गये थे । बर्न्स (१७५९-१७९६) कालीन स्कॉटलैंड के लोग अपने पूर्वजो की अपेक्षा, जिन्हे कि भोजन, कपडे और अन्य साधनो की कमी ने कृषकाय, मलिन तथा आलसी बना दिया था, काफी ताजगीपूर्ण तथा स्वस्थ दिखाई देते थे ।

---

[1] डा जॉनसन, जिन्होने सन् १७७३ मे स्कॉटलैंड की यात्रा की थी, वहा की वृक्ष-हीनता का निरन्तर मजाक बनाते रहते थे । वस्तुत उस समय भी वृक्षारोपण कर दिया गया था लेकिन उनका बढना अभी शेष था । इस दृष्टि से तीस वर्ष बाद तक उस देश के कई भागो मे क्रान्तिकारी परिवर्तन आ चुका था ।

इसके अतिरिक्त स्कॉट लोग अब स्वतन्त्र भी थे। मरणासन्न सामन्तवाद के दुर्गुण, जो इगलैड मे आमूल चूल नष्ट हो जाने के बाद भी स्काटलैड मे बच रहे थे, 'वश सम्बन्धी विशेष अधिकारो' (हेरेडिटेबल ज्यूरिस्डिक्शन) को समाप्त कर देने वाले सन् १७४८ के अधिनियम के साथ समाप्त हो गये थे। हाईलैन्ड्स तथा लोलैन्ड्स मे समान रूप से जमीदारो की अपनी निजी अदालते थी जिनमे वे अपने पट्टेदार किसानो (असामियो) पर मुकदमा चलाया करते थे और अपनी इच्छानुसार उन्हे वे काल कोठरियो मे कैद कर दिया करते थे, जिसकी अपील भी वे लोग राजा के पास नही कर सकते थे। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इन विशेषाधिकारो ने ही सन् १७४५ मे अपने लोगो को एकत्र कर पाने मे जैकोबाइट जमीदार तथा ताल्लुकेदारो की सहायता की थी। तीन वर्ष बाद उन्हे भी समाप्त कर दिया गया था, क्योकि जिस राजनैतिक उद्देश्य के कारण उनका अन्त शीघ्र हुआ उसके अतिरिक्त भी कई अन्य कारण उनके अन्त के लिये जिम्मेदार थे।

हाईलैड्स मे वश-उत्तराधिकारी से सम्बन्धित पक्षो के अतिरिक्त कई विशेषताए समाप्त हो गई थी। सन् 'पैंतालीस' के दमन के बाद के वर्षों मे स्कॉटलैड की पहाडियो मे रहने वाली आदिम जातियो के स्थिर सामाजिक जीवन मे आद्योपान्त परिवर्तन कर दिया गया। जन-जातीय व्यवस्था चौडी ढाल-तलवार वाला नायकत्व, तथा 'चीफ' (जमीदार) का पैतृक साम्राज्य सदा के लिये समाप्त हो गये थे। इतिहास मे इस प्रकार सर्वप्रथम हाईलैड्स तथा शेष स्कॉटलैड मे अधिनियम लगान, शिक्षा तथा धर्म की दृष्टि से एकता स्थापित हुई। सन् १७४५ के पूर्व ही जनरल वेड द्वारा हाईलैड्स मे बनाई गई सडको के कारण लोलैड्स का पहाडी क्षेत्रो पर काफी प्रभाव पडा था और इसने एक बडे परिवर्तन की पृष्ठभूमि का भी निर्माण किया, यदि काफी समय से कष्ट झेलते हुए दक्षिणी प्रदेश को जैकोबाइटो का आक्रमण हजार वर्षों से चले आ रहे कबीलो की असभ्य लूटमार को सदा के लिये समाप्त करने की प्रेरणा न देता तो यह परिवर्तन इतना शीघ्र घटित न होता।

जिन लोगो का अस्तित्व सदा से युद्ध द्वारा तथा युद्ध के लिये ही रहा था उनसे सफलतापूर्वक हथियार छीन लिये गये थे, लेकिन उनकी युद्ध-प्रवृत्ति का उपयोग राजा की हाईलैड सैनिक टुकडी मे कर लिया गया था जिसने साम्राज्य की रक्षा के लिये विदेशी उपनिवेशो मे, जो अब अग्रेजो तथा स्कॉट लोगो तथा गाएल व सैक्सनो के अधिकार मे हैं, एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। दक्षिण के ताल्लुकेदारो (लेअर्ड्स) की ही भाति चीफ्स भी जमीदार बन गए थे और तब से न्याय तथा प्रशासन व्यक्तिगत अथवा किसी गणजाति विशेष की सम्पत्ति न होकर राजा तथा राष्ट्र की सम्पत्ति हो गए थे। उपरोक्त वर्णित सामाजिक सरचना के क्रान्तिकारी परिवर्तनो को स्वीकार करना इसी बात को दर्शाता था कि उनका इस काल मे घटित होना अवश्यम्भावी था। 'विद्रोह' के कुछ समय बाद तक अत्याचारो तथा उत्पीडन का काल रहा, इसमे व्यक्ति के कबीले

तथा चीफ्स के प्रति अत्यधिक भक्ति भाव का चित्रण स्टीवेन्सन की 'किडनेप्ड' नामक पुस्तक मे मार्मिक रूप से किया गया है लेकिन समाज की पुरानी मृत्त अवस्था की ही पुर्नस्थापना का प्रयत्न नही किया गया था, जब भूतपूर्व जैकोबाइटो को स्वदेश लौट आने की अनुमति मिल गई और नई व्यवस्था के अन्तर्गत उन्हे उनकी जमीदारी लौटा देने की बात भी निश्चित हो गई तब उनका सघर्ष भी समाप्त हो गया था। जिस जनजातीय प्रदेश को निषिद्ध कर दिया गया था उसके पुनरुद्वार से बाधाए हटा ली गई क्योंकि उसकी भावनाए समाज तथा उसकी व्यवस्था की विरोधी नही रही थी।

इसी दौरान हाईलैन्ड्स मे प्रेस्बिटेरियन धर्म प्रचारक तथा स्कूलो के अध्यापक भी सेवा कार्य कर रहे थे और वे लोग प्रशासक अधिकारियो की अपेक्षा 'गाएल' से प्रारम्भ से ही अधिक कुशलता तथा सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार कर रहे थे। पहाडी लोगो की बुद्धि तथा कल्पना द्वारा किये जाने वाले कार्यो को, जो कि उनकी बेसमझ प्रकृति का ही परिचय देते थे, स्कूल के कार्य ने एक नवीन दिशा प्रदान की थी। लिखने पढने का कार्य हाईलैड्स मे प्रमुखतया स्कॉटिश समाज द्वारा ईसाई धर्म की शिक्षा देने के लिये प्रारम्भ किया गया था, जो महारानी ऐन्नी के शासनकाल से शुरू हुआ था लेकिन उसे व्यापक सफलता केवल 'कुल्डोन' के बाद कबीलो की समाप्ति के लिये प्रारम्भ किये गये अभियानो के बाद ही मिल सकी थी। स्कॉटिश समाज का एकीकरण, हाईलैड्स के द्विभाषी प्रदेश बने रहने के बावजूद, धार्मिक तथा शैक्षणिक आधार पर केवल शताब्दी के अन्तिम काल मे हुआ था।

उन घाटियो मे, जहाकि रोमन कैथोलिक धर्म काफी प्रचलित था उसको किसी प्रकार की आच नही आई, लेकिन प्राचीन अन्धविश्वासी मूर्तिपूजावाद अवश्य समाप्त हो गया। इस शिक्षा आन्दोलन से हाईलैड्स मे, आर्थिक परिवर्तन भी निकट रूप मे सम्बन्धित था। जनजातीय व्यवस्था मे अनुपजाउ पहाडी प्रदेश जितनी जनसख्या को आरक्षण दे सकता था लोगो की जनसख्या उसकी तुलना मे कही अधिक थी। प्रत्येक 'चीफ' की महत्वाकाक्षा अपने किसानो से अधिकाधिक लगान वसूल करना ही नही थी वरन् वह अपनी सेना की भी वृद्धि चाहता था और जनजातिया सामयिक तथा निर्धनता की आदी हो चुकी थी तथा जिन स्थानो पर 'गाएलिक' भाषा नही बोली जाती हो वहा जाकर बसने की वे लोग कल्पना भी नही कर सकते थे। लेकिन यह नया युग आप्रवास (एमिग्रेशन) के लिये अधिक प्रेरणाप्रद सिद्ध हुआ। 'चीफ' के स्वय को एक शान्त स्वभाव वाले 'जमीदार' के रूप मे परिवर्तित कर लेने पर उसकी आकाक्षा सेना को सख्या मे वृद्धि करने की अपेक्षा धन एकत्र करना अधिक हो गई। और उसके सत्रासित असामी नई सडको तथा स्कूलो के माध्यम से पहाडी प्रदेश के बाहर समुद्र पार के धनिक ससार से भी परिचित हो गये। निष्क्रमण अथवा स्थानान्तरण की प्रवृत्ति इस प्रकार बढने लगी और लोग अधिकाश केनेडा मे बसने के

लिये जाने लगे, और स्वदेश मे छोटे-छोटे लगान वाले खेत भेडो के चरागाह मे बदलने लगे। सन् सत्तर की दशाब्दी मे हाईलैंड्स तथा 'द्वीपो' से काफी लोग विदेश गये थे, सन् १७८६-१७८८ मे भी सन् १७८२-८३ के भयकर अकाल के कारण पुन काफी जन-सख्या स्वदेश से बाहर चली गई। पुरातन व्यवस्था मे ऐसे दुर्भिक्ष अनेको बार पडे थे लेकिन इसके कारण लोगो ने स्वदेश त्याग नही किया था, क्योकि आदिवासियो को, वे 'कहा जाए', 'किधर जाए' इसका कोई ज्ञान नही था।

कुछ जिलो मे आजकल जमीदार स्वय लोगो को निष्कासित कर निष्क्रमण (एमीग्रेशन) को प्रोत्साहन देते थे। लेकिन कुछ अन्य स्थानो पर वे आलू की खेती के प्रचलन द्वारा तथा कभी निष्क्रमण-प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने वाले एस पी सी के के स्कूलो तथा अध्यापको का विरोध कर लोगो की स्थानान्तरण प्रवृत्ति को मन्द कर उन्हे स्वदेश मे ही रोके रखने का भी प्रयत्न करते थे। ये स्कूल तथा अध्यापक जमीदारो पर बहुधा ही आरोप लगाया करते थे कि वे लोगो को स्वदेश मे ही रहने को बाध्य कर अपने प्रति उनकी अधीनता तथा अज्ञान मे निरन्तर वृद्धि करते रहते है। वास्तव मे हाईलैंड निवासी अच्छे जीवन की आशा तभी कर सकता था जबकि वह समुद्र पार जाता अथवा कम से कम पहाडी क्षेत्र से बाहर चला जाता। और विदेश प्रस्थान के पूर्व उसके लिये अग्रेजी का ज्ञान आवश्यक था, जो धर्म प्रचारक स्कूलो के माध्यम से ही उसे सुलभ हो सकता था।

अग्रेजी भाषा तथा गाएलिक बाइबिल ही उन्हे कष्टदायक स्थितियो से मुक्ति का मार्ग प्रदान करती थी। हाईलैंड निवासियो की स्वतन्त्र प्रकृति को समाप्त करने की अपेक्षा ईसाई स्कूल उन्हे अपनी स्वतन्त्र प्रकृति को कार्यान्वित करने का ही मार्ग दिखाते थे। सबल एव साहसी लोग अग्रेजी भाषा के ज्ञान से समुद्र पार के विशद ससार का प्रवेशद्वार पा लेते थे और जो लोग इस दृष्टि से पीछे रह जाते थे उनके लिये ये स्कूल बाइबिल के स्वतन्त्र अध्ययन की प्रेरणा देते थे।[1]

इगलैंड तथा स्कॉटलैंड की वाणिज्य एव राजनैतिक व्यवस्थाओ के 'सघ' के कारण ही हाईलैंड्स की क्रान्ति, ब्रिटिश साम्राज्य मे स्कॉटवासियो के सहयोग से उप-निवेशो की वृद्धि ग्लासगो के अटलान्टिक पार के देशो से होने वाला व्यापार तथा क्लाइडसाइड का औद्योगीकरण सम्भव हो सका था। कृषीय क्रान्ति की भाति ये परिवर्तन भी प्रमुखतया शताब्दी के उत्तरार्ध की ही विशेषता थे लेकिन इस काल मे वे अधिक तीव्रता से घटित हुए।

सन् १७०७ के 'सघ' के समय ग्लासगो १२,५०० की जनसख्या वाले एक व्यापार केन्द्र तथा विश्वविद्यालयीय शिक्षा-केन्द्र होने के साथ ही हाईलैंड जनजातियो के विरुद्ध

---

[1] मिस एम जी. जोन्स, दि चैरिटी स्कूल मूवमेंट ऑफ दि एट्टीन्थ सेन्चुरी अध्याय VI।

एक पश्चिमी ईसाई सभ्यता के प्रचार का भी प्रमुख केन्द्र था, उसके नागरिक अपने प्रेस्बिटेरियन स्वभाव के अनुकूल कठोर सयमवादी, सादगीपसन्द, मितव्ययी तथा अत्यधिक शान्त स्वभाव के लोग थे, इस नगर के बैली निकोल जारवी जैसे महत्वपूर्ण नागरिक भी अन्य साधारण नागरिको की ही भाति, तथा उन्ही के बीच शहर के मध्य भाग मे बने साधारण प्रकार के घरो मे रहते थे। लेकिन सन् १८०० मे कुछ क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए ग्लासगो की जनसख्या ८०,००० हो गई तथा जीवनचर्या एव धन की दृष्टि से उनमे स्तर-भेद भी स्पष्ट दिखाई देने लगा, साथ ही पहले की भाति कोई भी वर्ग अत्यधिक चर्च प्रेमी तथा शराब से परहेज करने वाले वर्ग विशेष के रूप मे खडा न रह सका। धनिक लोगो की सुन्दर बस्तिया तथा निर्धनो की नई गन्दी बस्तिया आसपास की भूमि पर समान रूप से फलती फूलती रही। प्रत्येक व्यक्ति की रुचि के अनुकूल दुकाने खुल गई थी जिनमे इगलैड, यूरोप तथा अमरीका की आयातित वस्तुए सजी रहती थी, लोग पालकियो मे सवार होने लगे थे, सगीत, ताश, गेद आदि के मनोरजन प्रधान कार्यक्रमो का आयोजन होने लगा था और अग्रेजी साहित्य और शराब जहा धनिको के हिस्से मे आ गए थे, हाईलैड की व्हिस्की गरीबो की सेव्य थी। प्रोफेसर एडमस्मिथ की शैक्षणिक सेवाओ द्वारा विश्वविद्यालय को यूरोप-व्यापी ख्याति मिल गई थी।

अमरीका तथा वेस्टइडीज से होने वाले तम्बाकू तथा कपास के व्यापार ने वस्तुत केवल ग्लासगो को ही नही वरन् सम्पूर्ण 'क्लाइडसाइड' को इगलैड के किसी भी पर्याप्त विकसित केन्द्र की ही भाति उद्योग तथा वाणिज्य का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बना दिया था, उपरोक्त वर्णित सामाजिक परिवर्तनो के ये प्रमुख कारण थे, इन परिस्थितियो ने विश्व को नवनिर्मित 'लॉर्ड्स' के वर्ग से आधुनिक एजिन के आविष्कर्ता के रूप मे जेम्स वॉट की एक महत्वपूर्ण देन पहले ही दे दी थी। आयरिश मजदूरो के आगमन से ग्लासगो की गन्दी बस्तिया निकृष्टतम हो गई थी और स्कॉटलैड उनके कारण कष्टप्रद स्थिति को प्राप्त होने लगा था।

शताब्दी के अन्तिम बीस वर्षो मे लैनार्क, रेनफ्रयू तथा आयर जैसे गावो मे कपडा बनाने वाले कारखानो की सख्या बढने लगी थी जिनके परिणामो की चर्चा गाल्ट ने सन् १८२१ मे प्रकाशित अपनी 'एनल्स ऑफ दि पैरिश' नामक लघु कथा कृति मे जो जार्ज तृतीय के शासनकाल मे स्कॉटलैड मे होने वाले मानवीय परिवर्तनो का एक जीवन चित्र प्रस्तुत करती हे, पर्याप्त मात्रा मे की है।

सघ द्वारा स्कॉटिश-अमरीकन व्यापार के खोल दिये जाने से पूर्वी तट (ईस्ट-कोस्ट) के नगरो पर कोई विशेष प्रभाव नही पडा था। हा, लीथ तथा डुन्डी और बाल्टिक तथा जर्मन बन्दरगाहो के बीच प्राचीनकाल से चले आ रहे व्यापार पर 'नेवीगेशन एक्ट' के रूप मे निर्धारित ब्रिटिश वाणिज्य नीति जिसका उद्देश्य यूरोप से होने वाले जमे जमाए व्यापार की अपेक्षा उपनिवेशो की वृद्धि के लिए अमरीका से व्यापार बढाना अधिक था, का कुप्रभाव ही अधिक पडा।

दूसरी ओर स्कॉटिश लौह उद्योग का प्रारम्भ भी सर्वप्रथम पूर्वी तट पर ही हुआ था। स्टर्लिंग तथा एडिनबरा के मध्य स्थित कैरन मे लोहे की खाने, कोयला तथा जल-शक्ति प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध थी। सन् १७६० मे स्थापित 'कैरन कम्पनी' ने काफी प्रगति की थी, इस कम्पनी द्वारा बनाई गई प्रारम्भिक वस्तुओ मे 'कैरोनेड' नामक बन्दूक, जिसका उपयोग समुद्री यात्राओ मे किया जाता था, काफी उपयोगी सिद्ध हुई थी। स्कॉटलैंड के लौह उद्योग का प्रारम्भ जो अगली शताब्दी मे काफी विशालकाय होगा शुरू मे इसी कोटि का था।

लेकिन 'स्कॉटिश ईस्ट-कोस्ट' के नगरो मे जिस नगर ने अठारहवी शताब्दी मे सबसे अधिक प्रगति की वह एडिनबरा था। वह केवल राजनैतिक राजधानी ही नही वरन् राष्ट्र की वैधानिक, बौद्धिक तथा फैशन की भी राजधानो था, और आज के समृद्ध तथा मानसिक रूप से जागरूक स्कॉटलैंड मे कानून, फैशन तथा बौद्धिक आयाम सभी तीव्रतर गति से प्रगति कर रहे थे। इसके अतिरिक्त लोथियन्स की कृषि व्यवस्था जोकि आज बहुचर्चित है, पश्चिम की कृषि को भी पीछे छोड चुकी थी। वाल्टर स्कॉट की युवावस्था का दक्षिण-पूर्वी स्कॉटलैड वस्तुत सम्पन्न ग्रामो तथा एडिनबरा मे केन्द्रस्थ मानसिक शक्ति का देश था। स्कॉटिश राजधानी सम्पूर्ण यूरोप मे अपने दार्शनिको—ह्यूम, रॉबर्ट्सन तथा डुगाल्ड स्टेवार्ट के कारण विख्यात थी, उसके वकील तथा विद्वान अद्वितीय व्यक्तित्व वाले प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। इन व्यावसायिक व्यक्तियो के साथ ही भूमि सुधार तथा जगलो की वृद्धि करने मे सलग्न क्षेत्रीय कुलीन जनो तथा भद्र लोगो ने जिस सुन्दर समाज की रचना कर डाली थी उसे रायबर्न जैसे स्वदेशी कलाकार की कृतियो द्वारा अमरत्व प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार था।

लेकिन यह सत्य है कि इस स्वर्णकाल मे स्कॉटलैड की राजनैतिक चेतना मृत-प्राय हो गई थी। कॉकबर्न के शब्दो मे अब वहा "स्वतन्त्र, राजनैतिक सस्थाए समाप्त हो गई थी" निस्सन्देह 'सघ' के समय से 'रिफार्म बिल' तक, ह्विग तथा टोरी के कालो मे राजनैतिक सस्थाओ का विकास नही हो पाया था, लेकिन जहा तक जैकोबाइटिज्म सक्रिय था वहा तक एक रुग्ण राजनैतिक जीवन अवश्य विद्यमान था—सत्ता के विरुद्ध निरन्तर विद्रोह बना रहता था। सन् १७९० के क्रान्तिकारी आन्दोलन के पूर्व, जिसे कि राज्य ने निरकुशतापूर्वक तत्काल दबा दिया था, सन् १७४६ के बाद से जैकोबाइटो द्वारा किये जाने वाले आन्दोलन भी समाप्त हो गये थे। पिट्स के मित्र डुन्डास के राज्यकाल मे, जैसा कि सुधारक लोग व्यग्यपूर्वक कहा करते थे, स्कॉटलैड की स्थिति किसी महान पुरुष की हवेली के द्वार स्थित निवास की भाति हो गई थी। लेकिन वस्तुत राजनीति ही सब कुछ नही होती। बर्न्स व स्कॉट की भूमि के सामाजिक, बौद्धिक तथा कल्पना जगत् मे, तथा राजनैतिक उपद्रवो मे कोई तालमेल न बैठ सका था। यह विविधताप्रधान जीवन वस्तुत निजी साधनो द्वारा मौलिक रूप मे ही विकसित

हुआ था, यद्यपि स्कॉटलेड के इगलैड से निकट सम्बन्ध थे और इगलैड से उसने काफी कुछ ग्रहण किया था। लेकिन उसने जितना ग्रहण किया था उससे अधिक चुका भी दिया था। एडमस्मिथ ने ग्रेटब्रिटेन के राजनेताओ के लिये नीतियो का निर्धारण किया था। और उन्नीसवी शताब्दी के प्रारम्भ मे कई वर्षो तक जब 'ले ऑफ दि लास्ट मिस्ट्रेल' तथा 'मारमिग्रोन' जैसी पत्रिकाए हमारे द्वीप मे 'रूमानी' विचारधारा को प्रवाहित कर रही थी 'एडिनबरा रिव्यू' जैसे अ-रूमानी पत्र का साहित्यिक तथा दार्शनिक आलोचना के क्षेत्र मे इगलैड मे एक छत्र शासन था। स्कॉचमैन के प्रयत्नो द्वारा शीघ्र ही इसका एक विरोधी त्रैमासिक प्रकाशन भी प्रारम्भ किया गया। कुछ वर्षो तक ब्रिटिश साहित्य जगत् मे एडिनबरा का लन्डन की तुलना मे किसी भी प्रकार कम स्थान नही था।

भौतिक रूप मे भी, एडिनबरा अपने पुराने कलेवर से एक नये स्वरूप को विकसित कर चुका था। कुएनुमा गलियो की अस्वस्थ स्थिति तथा हाई स्ट्रीट की ऊची मजिलो को, जहा पहले स्कॉटलैड के अनेको महापुरुष अपने परिवार सहित रहा करते थे, त्याग कर सन् १७८० के बाद 'प्रिन्सेस स्ट्रीट' के पार नये क्षेत्रो मे बनाने गये सुन्दर हवादार मकानो मे चले आए थे। नवीन एडिनबरा के विकास का प्रारम्भ वास्तव मे सन् १७६७ मे हुआ था। सातवी मजिल के लिये, जिसमे पर्याप्त प्रकाश भी नही हो पाता था, पन्द्रह पौड वार्षिक किराया देकर रहने की अपेक्षा सम्मानित लोग अब अच्छे तथा सुविधाजनक मकान के लिये सौ पौड किराया देने मे भी नही झिझकते थे। इसी प्रकार देहात मे भी खुले स्थानो पर बनी ऊची तथा मीनार नुमा इमारतो की जगह, जिनमे कभी स्थानीय जागीरदार लोग रहा करते थे, वृक्षो से आच्छादित प्रकाशवान् जॉर्जियन प्रकार की इमारते बनने लगी थी। लेकिन स्कॉटलैड मे भवन निर्माण कला को कभी भी वह महत्व प्राप्त न हो सका जो शताब्दियो तक इगलैड मे प्राप्त था। काफी सुधारो के बावजूद, विशेष रूप से लोथियन्स के पाषाणनिर्मित सुन्दर खेतो को छोडकर, दक्षिणी ब्रिटेन की तुलना मे उत्तरी ट्वीड का भवन निर्माण स्तर की दृष्टि से औसत से भी काफी नीचे दर्जे का था। लोलैड्स मे भी एक कमरे वाले कई ऐसे मकान थे जिनमे मनुष्य तथा गाय को एक साथ रहना पडता था और ग्लासगो तथा एडिनबरा की कई मजिली गन्दी बस्तियो की दशा तो सम्पन्न लोगो द्वारा उन्हे त्याग दिये जाने पर और भी खराब हो गई थी। फिर भी इस शताब्दी मे आवास व्यवस्था की प्रगति शिक्षा, भोजन तथा कपडो की तुलना मे कम होते हुए भी काफी थी।[1]

अठारहवी शताब्दी मे स्कॉटलैड के चिन्तन तथा व्यवहार-प्रणाली मे हुए तीव्र

---

[1] स्कॉटलैड तथा इगलैड के श्रमिक वर्गो के लिये सन् १८२० के आसपास की गई आवास व्यवस्था का तुलनात्मक चित्रण प्रो० क्लैपहम की 'इकॉनामिक हिस्ट्री ऑफ माडर्न इगलेड', I, पृ० २१-४१ मे रोचक ढग से किया गया है।

परिवर्तनो के बावजूद उनमे किमी भी प्रकार की फ्रास की समकालीन विचारधाराओ की भाति चर्च विरोधी प्रवृत्ति नही पनपी। इसका कारण वास्तव मे यह था कि समय के साथ-साथ स्कॉटलैड के पादरी लोग अपनी विश्व-दृष्टि को अधिकाधिक व्यापक बनाते जा रहे थे। प्रेस्बिटेरियन कट्टरता, जो सन् १६८८ की क्रान्ति के तुरन्त बाद अत्यधिक बढ गई थी, पादरियो की नई पीढी के आगमन पर अपेक्षाकृत शिथिल हो गई। सहनशीलता, शिक्षा, अग्रेजी प्रभावो तथा युग की मागो का लोगो की विश्व-दृष्टि पर काफी प्रभाव पडा था और वह निरन्तर विकसित हो रही थी। जादू-टोना करने वालो को सजा देने का कार्य समाप्त कर दिया गया था। इसी समय इगलेड के चर्च मे चल रहा सहिष्णुता आन्दोलन स्कॉटलेड के उदारतावादी (माडरेट्स) पादरी वर्ग की विचारधारा के अत्यधिक निकट था। इतिहासकार राबर्ट्सन (१७२१-१७९३) के उदार नेतृत्व मे चर्च सभा (चर्च-एसेम्बली) एक शान्ति प्रधान दिशा की ओर अग्रसर हो रही थी।

इस सम्भावना का होना स्वाभाविक ही था कि कुछ उदारतावादी (मॉडरेट्स) अत्यधिक उदारता के पक्षधर हो जाते और उनके भाषणो को सुनने वाले कुछ आलोचको की यह शिकायत भी स्वाभाविक थी कि उनके व्याख्यान धार्मिक विश्वासो से बहुधा अलग हट कर केवल नैतिकता की चर्चा पर अधिक केन्द्रित हो जाते थे। कुछ समय बाद पुन परिवर्तन हुआ और उन्नीसवी शताब्दी के प्रारम्भ मे डा चामर्स (१७८०-१८४७) के प्रयत्नो के कारण एवाजेलिज्म की स्काटिश धर्म-व्यवस्था मे पुन स्थापना हो गई। लेकिन चामर्स की धार्मिक आस्था का स्वरूप अब निरकुशतावादी सकुचित स्वरूप नही था उस पर भी वस्तुत उदारतावाद का प्रभाव पडा था।

अठारहवी शताब्दी मे भी अल्पसख्यक बिशपो की स्थिति मे काफी परिवर्तन हुए। सन् १७०७ मे सघ (यूनियन) के समय बिशप-सप्रदाय को, जो व्यवहार मे जैकोबाइटो की ही भाति था और अपने राजा चर्च की पुर्नस्थापना का प्रयत्न कर रहा था, अवैधानिक घोषित कर दिया गया था, इस दल के सदस्य 'प्रार्थना-पुस्तक' (प्रेयर-बुक) का उपयोग नही करते थे और उनका धर्म भी प्रेस्बिटेरियन-सस्थान का ही एक उदार-स्वरूप बन गया था। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया वे धर्म से अधिकाधिक पृथक तथा राष्ट्रीय राजनीति के अधिकाधिक निकट आते गये। जैकोबाइटवाद की समाप्ति पर वे लोग जार्ज तृतीय की वफादार प्रजा बन गये और उन्होने अग्रेजो की भाति प्रार्थना-पुस्तक (प्रेयर-बुक) को अगीकार कर लेने पर अपने अन्य स्कॉट देशवासियो से पृथक एक अलग धार्मिक सम्प्रदाय का निर्माण कर लिया। उनकी सख्या मे कमी-वृद्धि होती रहती थी। ऐन्नी के शासनकाल मे स्कॉटलैड के अनेक भागो मे उनके चर्च से जनसामान्य घनिष्ट रूप से सम्बन्धित थे, इस कारण कानून के विरुद्ध उनके विद्रोही होने पर भी उन्हे जिला-चर्चों मे कार्य करने से नही रोका गया। लेकिन

जैसे ही इन पदाधिकारियो की पीढी समाप्त हुई उनका स्थान प्रेस्बिटेरियन पादरियो ने ग्रहण कर लिया ।

दूसरी ओर बिशपवादी लोगो की स्थिति एक महत्वपूर्ण दृष्टि से काफी सुधर गई थी । इगलिश विद्रोहियो की भाति उनके कार्यो को सह्य नही समझा गया था । उनकी स्थिति हर प्रकार से दुविधाजनक स्थिति थी जो कानून की अपेक्षा स्थानीय जनमत तथा शक्ति के उपयोग पर अधिक निर्भर करती थी । सन् १७१२ मे वेस्ट-मिस्टर पार्लियामेट के टोरियो ने स्कॉटलैड के लिये 'टालरेशन-एक्ट' पास किया जो 'सघ' निर्माण के एक प्रतिफल के रूप मे औचित्यपूर्ण भी था लेकिन प्रेस्बिटेरियन लोग उसे प्रचलित व्यवस्था पर होने वाले कुठाराघातो की एक भूमिका ही समझते रहे ।

लेकिन, कुछ सप्ताहो बाद ही स्कॉटिश चर्च के प्रसग मे ब्रिटिश ससद ने एक और आपत्तिजनक हस्तक्षेप किया । सन् १७१२ मे 'पेट्रोनेज' (सरक्षण) प्रणाली की पुन स्थापना कर दी गई जिसमे निजी स्वत्वाधिकारियो को वृत्ति पर पादरी नियुक्त करने का अधिकार दे दिया गया । एग्लिकन चर्च के कारण अग्रेज लोगो के लिये इस प्रकार की सरक्षण प्रणाली मे कोई विशेष दोष नही था लेकिन स्कॉटलैड के धार्मिक तथा सामाजिक इतिहास पर आगामी १५० वर्षो तक इस प्रणाली का काफी प्रभाव पडा ।

जिला-चर्चो मे पादरियो की प्रजातात्रिक नियुक्ति-प्रणाली को कट्टर प्रेस्बिटेरियन लोग धर्म के लिये घातक समझते थे, और इसके अतिरिक्त बहुत से ऐसे सरक्षको के रवैये के कारण भी जो उदारतावादियो अथवा जैकोबाइटो का समर्थन करते थे, एक व्यावहारिक खतरा भी था । इन कारणो से क्रान्ति के समय स्कॉटिश-ससद ने कानून बना कर इस सरक्षण व्यवस्था को समाप्त कर दिया था सन् १६६० के अधिनियम के अनुसार प्रोटेस्टेन्ट लोगो को पादरी की नियुक्ति के लिये किसी व्यक्ति का नाम प्रस्तावित करना पडता था, यदि धर्म-सभा उससे असहमत हुई तो वह 'प्रेस्बिटेरी' को इस विषय मे अपनी अपील प्रस्तुत करती थी और प्रेस्बिटेरी का निर्णय सर्वमान्य तथा अन्तिम समझा जाता था । लेकिन सन् १७१२ मे वेस्टमिस्टर की सर्वोच्च ससद ने इस कानून को उसके 'सघीय-सधि' के विपरीत होने के कारण बदल दिया । नियुक्ति का अधिकार प्रौढ सरक्षको को, बशर्ते कि वे रोमन कैथोलिक न हो, दे दिया गया ।

यद्यपि इस नये कानून का व्यापक विरोध हुआ लेकिन उसके लागू हो जाने के बाद से एक पीढी तक कोई खास परिणाम न निकला । लेकिन अन्त मे काफी क्रान्ति-कारी परिणाम हुए । राज्य-कानून से आबद्ध प्रतिष्ठित चर्च से अनेको प्रेस्बिटेरियन सगठनो के पृथक् हो जाने का मूल कारण सरक्षण व्यवस्था थी । इगलैड मे जिस प्रकार के सम्प्रदाय पनप रहे थे उसी प्रकार के स्कॉटलैड मे भी पनप रहे सम्प्रदायो के प्रति स्कॉटिश लोग विद्वेषी हो उठे थे और 'एस्टेब्लिशमेट' (प्रतिष्ठित चर्च) का विरोध

करने वाले कई पृथक् चर्च बन गए थे, जो 'एस्टेब्लिशमेट' का विरोध तो करते थे लेकिन विचारो तथा सस्कारो मे लगभग उसी प्रकार के थे ।

सरक्षण-व्यवस्था (पेट्रोनेज) की पुन स्थापना ने चर्च मे उदारतावादी-दल (मॉडरेट-पार्टी) के उत्थान मे भी काफी सहायता की। अठारहवी शताब्दी मे कट्टरतावादियो के गिरजो मे उदारतावादी पादरियो की नियुक्ति के लिये सरक्षण के अधिकारो का उपयोग किया जाता था और कट्टरतावादी यद्यपि उनके प्रवेश का विरोध करते थे लेकिन उनके उदारतावाद का लाभ भी उठाते थे। गाल्ट की 'एनल्स ऑफ दि पैरिश' पुस्तक के पाठक यह कभी न भूलेगे कि जार्ज तृतीय के शासनकाल मे श्री बालह्विदर का प्रवेश इसी प्रकार हुआ था —"मेरी नियुक्ति क्योकि सरक्षक द्वारा की गई थी और लोग मेरे विषय मे कुछ भी नही जानते थे, लोगो के हृदय मेरे प्रति एक आक्रोश से भरे हुए थे।" पुराने कैलविनिज्म की कट्टरता के आलोचको का यह कथन कि स्कॉट लोग 'पादरी-ग्रस्त लोग' थे, वस्तुत अतिशयोक्तिपूर्ण कथन था। इसकी अपेक्षा यह कहना कि उनके पादरी गण 'सामान्यजन से अधिक नियन्त्रित होते थे,' अधिक उपयुक्त होगा। सम्प्रदाय के अधिक श्रद्धालु लोग अपने पादरी की धर्म-प्रतिबद्धता सतर्कतापूर्वक देखते थे। अठारहवी शताब्दी मे कई पादरियो ने अपनी लोकप्रियता की कीमत पर भी स्कॉटिश धर्म को उदारतावादी स्वरूप देने का भरसक प्रयत्न किया।

उन्नीसवी शताब्दी मे सन् १७१२ के 'पेट्रोनेज एक्ट' से उत्पन्न होने वाली परिणाम श्रृखला मे एक गम्भीर कडी चामर्स के नेतृत्व मे फ्री चर्च के पृथक हो जाने के रूप मे जुडी जो स्कॉटलैड के आधुनिक इतिहास (सन् १८४३) के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तथ्य—'धार्मिक स्वतन्त्रता' — का प्रतीक थी। अन्त मे सन् १८७५ मे महारानी ऐन्नी के शासनकाल मे जो निर्णय इतनी अगम्भीरतापूर्वक ले लिया गया था उसे समाप्त कर दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप स्कॉटलैड चर्च के विभाजित पक्षो के एकीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ। यह एकीकरण हमारे अपने ही समय मे सन् १९२१ के कानून द्वारा राज्य द्वारा आध्यात्मिक क्षेत्र मे चर्च की सत्ता को सर्वोच्च स्वीकार कर लिये जाने तथा उसकी स्वाधीनता की स्थापना के बाद सम्भव हुआ।

अठारहवी शताब्दी मे स्कॉटलैड की जनसख्या दस लाख (लगभग) से १६५२००० हाईलैंडवासियो के निष्क्रमण को आयरलैंडवासियो की आगमन सख्या के बराबर मान लेने पर उपरोक्त सख्या वृद्धि को जनसख्या की प्राकृतिक वृद्धि माना जा सकता है। मृत्यु-सख्या मे हुई कमी के कारण जिस प्रकार अग्रेजो की जनसख्या मे आज वृद्धि हुई है उसी प्रकार पिछले युगो की तुलना मे स्कॉटलैड की इस तीव्र जनसख्या-वृद्धि को स्वाभाविक ही माना जा सकता है। वस्तुत यह वृद्धि जीवन-स्तर मे हुई वृद्धि तथा चिकित्सा विज्ञान मे हुई प्रगति के कारण हुई, जिसमे वे जार्ज तृतीय के काल मे इतने समर्थ हो चुके थे कि अग्रेजो को भी प्रशिक्षण दे सकते थे।

अठारहवी शताब्दी मे यद्यपि स्कॉटलैड की जनसख्या मे काफी वृद्धि हुई लेकिन वह इतनी अधिक नही थी कि उसकी आर्थिक समृद्धि को प्रभावित कर सके। सन् १७०७ मे इस देश की उत्पादन करो से प्राप्त आय जहा ३०००० पौड थी वहा सन् १७९७ मे लगभग १३,०००० पौड हो गई थी।

स्कॉटलैड की छोटी कठिनाइया समाप्त हो गई थी। लेकिन उसे अब भी एक कठिन अवस्था को पार करना था। नैपोलियन से हुए युद्धो के कारण खाद्यान्नो की कीमते काफी बढ गई थी और इसके साथ ही सामान्य रूप से अनेक कष्ट उत्पन्न हो गए थे। सन् १७९९ तथा १८०० मे पुन महगाई का सामना करना पडा, इस समय 'जई का मूल्य दस शिलिग प्रति स्टोन (एक वजन) तक पहुच गया था, टॉमस कार्लाइल के पिता ने लिखा है कि प्रत्येक मजदूर भोजन करने की अपेक्षा किसी छोटी नदी पर जाकर बिना किसी शिकायत के तथा केवल अपनी स्थिति को प्रदर्शन से बचाने भर के लिये पानी पीकर अपना काम चला लेता था। लेकिन एक शताब्दी पूर्व विलियम के शासन-काल मे जिस प्रकार लोग बडी सख्या मे मृत्यु को प्राप्त हो रहे थे उस प्रकार इस काल मे इतनी सख्या मे लोग नही मरे कि उसके कारण जनसख्या मे कोई भारी कमी हुई हो।[1]

---

[1] अपने पिता के सस्मरणो से सम्बन्धित जेम्स कार्लाइल की पुस्तक (रेमिनिसेन्सेज) के उत्तरार्ध मे स्कॉटलैड के अठारहवी शताब्दी के कृषक जीवन विषयक अनेक तथ्य सकलित हैं। लैगहोम मे जेम्स कार्लाइल ने 'एक बार चोरी छिपे लाई गई तम्बाकू के ढेर को आग लगाते हुए देखा था। नगी तलवारे लिये हुए घुडसवार उसे चारो ओर से घेरे हुए थे, कुछ बूढी औरते अपने बूढे हाथो से ढेर मे से थोडी तम्बाकू निकाल लाती थी और वे घुडसवार उन्हे कुछ नही कहते थे।' पश्चिमी क्षेत्रो की काम धन्धा करने वाली औरते जिनमे कार्लाइल की माँ भी सम्मिलित थी छोटे-छोटे भट्टी के 'पाइपो' द्वारा तम्बाकू पिया करती थी।

अध्याय १५

कोबेट का इंगलैंड (१७९३-१८३२)

[१]

नगर तथा ग्राम में परिवर्तन—कारखाने—श्रमिक-वर्ग की स्थिति—उपनिवेशो की स्थापना—शिक्षा—लुडिटीज़ (गर्म दल के सदस्य)—श्रमिक-सघ ।

(फ्रांस से युद्ध, १७९३-१८१५; वाटरलू, १८१५; पीटरलू १८१९; 'सुधार-बिल' (रिफार्म-बिल), १८३१-१८३२) ।

इगलैड मे अठारहवी शताब्दी के आत्मसन्तुष्ट तथा आत्म-विश्वासपूर्ण परम्परानुगामी युग तथा पीटरलू और धान्यदाहो के अशान्त, और बायरन तथा कोबेट के युग के बीस वर्ष का काल (१७९३-१८१५) क्रान्तिकारी तथा नेपोलियन शासित फ्रास के साथ युद्धो का काल था ।

हमारे सामाजिक विकास के इस नाजुक समय मे यह दीर्घकालीन युद्ध अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी । आर्थिक जीवन छिन्न-भिन्न हो गया था । गरीबो की कष्टप्रद स्थिति तथा अधिकारो के प्रति सहानुभूति होते हुए भी जैकोबाइट विरोधी-प्रतिक्रिया के कारण सुधार के सभी प्रस्तावित कार्य-क्रमो को युद्ध के वातावरण नेसमाप्त कर डाला था और औद्योगिक तथा सामाजिक प्रगति के मार्ग मे बाधा उपस्थित हो गई थी । नये उद्योगपतियो तथा बेढगे मकान बनाने वालो की तत्कालीन आवश्यकताओ की पूर्ति के लिये आधुनिक गन्दी बस्तिया बनने लगी जिन पर जनता का कोई नियन्त्रण लागू नही किया जा सका । तुरन्त द्रव्य-लाभ के उद्देश्य से प्रेरित होकर आधुनिक औद्योगिक जीवन तथा वातावरण को एक सस्ते तथा गन्दे ढाचे मे ढाल दिया गया । नगर योजना, सफाई तथा आवश्यकताओ के प्रति इन नव विश्व निर्माताओ के मन मे किसी प्रकार की कल्पना नही थी, अभिजात वर्ग अपना अलग ससार रच कर उसमे आनन्द का जीवन बिता रहा था—उसकी दृष्टि मे गृह-निर्माण, सफाई तथा औद्योगिक वस्तुस्थिति से सरकार का कोई सम्बन्ध होना कतई आवश्यक नही था । बडे-बडे शहरो का विकास वस्तुत अठारहवी शताब्दी के लन्दन की भाति और भी खराब ढग से हुआ होता लेकिन नेपोलियन के युद्ध से उत्पन्न हुई परिस्थितिया उत्तर के इन औद्योगिक नगरो के कु-विकास मे तथा नये उद्योगपतियो व कर्मचारियो के सम्बन्धो मे अधिक

सहायक सिद्ध न हो सकी। बिना इस प्रश्न पर विचार किये हुए कि किस प्रकार की जीवन प्रणाली श्रेष्ठ होगी, लोगो की बनी बनाई जीवन-पद्धति मे परिवर्तन लाने के जो उपकरण प्राप्त हो गये थे उनका वे खुलकर उपयोग करने लगे।

आलस्य तथा भ्रष्टाचार के कारण मध्ययुगीन जीवन की पूर्णता तथा जनभावना से सयुक्त नागरिक जीवन की परम्परा से नगर-निगम का सम्बन्ध विच्छेद हो चुका था, औद्योगिक बस्तियो के असम्बद्ध तथा अनियोजित विकास की ओर नगर के उच्चकुलतन्त्र अथवा वनिक-तन्त्र का जो अपने पारस्परिक कर्त्तव्यो को भुला देने के साथ ही नये आव्हानो के प्रति जागरूक रह पाने की सामर्थ्य भी खो चुका था, कोई प्रभाव नही पडा। और स्वाभाविक रूप मे जब नगर के बाहरी क्षेत्रो मे उसका काफी विस्तार होने लगा तब भी उस क्षेत्र के मजिस्ट्रेट ने उस अनियोजित निर्माण कार्यों के विस्तार पर नियत्रण स्थापित करने का कोई प्रयत्न नही किया।

वाटरलू के युद्ध के समय इगलैड के ग्राम्य क्षेत्र की प्राकृतिक सुन्दरता पर कोई कुप्रभाव नही पडा था, अधिकाश शहर सुन्दर थे। औद्योगिक क्षेत्र यद्यपि प्रकृति प्रधान क्षेत्रो का ही एक लघु भाग थे और उस पर हावी नही हो सके थे लेकिन दुर्भाग्य से लोगो ने उन्हे ही भावी आदर्शो के रूप मे ग्रहण कर लिया था। इस नये प्रकार की नगर रचना का व्यापक रूप मे अनुकरण किया गया क्योकि वह सहज था और यह घातक अनुकरण अगले सौ वर्षों मे तब तक चलता रहा जब तक कि अधिकाश अग्रेज तग गलियो के निवासी नही बन गये। उन्नीसवी शताब्दी मे आगे चलकर शासन ने, जिसका गठन स्थानीय चुनावो द्वारा प्रजातात्रिक रूप मे किया जाता था तथा व्हाइट-हाल जिसे केन्द्रीय रूप मे नियन्त्रित भी करता था, धीरे-धीरे इस ओर ध्यान देना अपना कर्त्तव्य समझा और तब निस्सन्देह स्वास्थ्य, सुविधाओ एव शिक्षा के क्षेत्र मे काफी कार्य किये गये। लेकिन इन उपयोगितावादी सुधारो के बावजूद गन्दगी उससे अभ्यस्त नागरिक जीवन का एक भाग बनी रही क्योकि लोग सदा से जिस स्थिति के आदी हो चुके थे उससे परे साधारणत कोई कल्पना नही कर पाते थे।

नेपोलियन द्वारा छेडे गये युद्धो की अवधियो मे बार-बार होने वाली नाके बन्दियो के कारण व्यापार वस्तुत एक जुआ बन चुका था। उत्पादन को हर प्रकार प्रोत्साहित किया जाता था लेकिन किसी प्रकार की सुरक्षा का प्रबन्ध नही हो पाता था। इगलैड के सामुद्रिक नियन्त्रण तथा अन्य देशो की तुलना मे मशीने बनाने के उद्योग मे उसने जो क्षमता अर्जित कर ली थी उसने उसे अमरीका, अफ्रीका तथा सुदूर-पूर्व की कई मडियो पर एक छत्र अधिकार दिला दिया था। लेकिन कूटनीति तथा युद्ध के कारण यूरोप के बाजार ब्रिटिश माल के लिये बारी-बारी से खुलते तथा बन्द होते रहते थे। किसी मित्र देश की सेना के लिये कपडे तथा जूते बनाने का कार्य एक वर्ष जहा अग्रेज मजदूर करते थे दूसरी बार नेपोलियन की 'महाद्वीपीय व्यवस्था' (कान्टीनेन्टल-सिस्टम) के

अन्तर्गत आ जाने के कारण वह देश फ्रास से सम्बद्ध हो जाता था। सन् १८१२-१८१५ मे व्यर्थ ही अमरीका से छेडे गये युद्ध का भी व्यापार पर खराब प्रभाव पडा। एक ओर उपभोक्ता वस्तुओ की माग तथा दूसरी ओर उनके उत्पादन के लिये रोजगार मे लगाए गए मजदूरो के बीच जब तब उत्पन्न होने वाले तीव्र असन्तुलन के कारण इगलिश श्रमिक वर्ग की कठिनाइया काफी बढ गई थीं, वाटरलू के युद्ध की समाप्ति व्यापक स्तर पर उत्पन्न होने वाली बेरोजगारी की स्थिति तो अत्यन्त भयानक थी।

युद्ध का एक प्रभाव यह भी पडा कि यूरोप को अनाज भेजा जाना बन्द हो गया और परिणामस्वरूप घनी जनसख्या वाले इस द्वीप मे खाद्य-सामग्रियो के मूल्य स्थिर हो गये। युद्ध के पहले सन् १७९२ मे गेहूँ का मूल्य जहा ४३ शिलिग प्रति 'क्वार्टर' (एक वजन) था सन् १८१२ मे जब नेपोलियन ने मास्को के लिये प्रस्थान किया था, यह मूल्य १२६ शिलिग प्रति 'क्वार्टर' तक पहुच गया था। यद्यपि इस मूल्य वृद्धि के कारण जमीदारो, किसानो तथा भूमिकर वसूल करने वालो को अवश्य कुछ लाभ पहुचा था लेकिन देहातो तथा शहरो दोनो ही क्षेत्रो की जनता के लिये बढी हुई कीमतो पर रोटी खरीदना अत्यन्त कठिन हो गया था। युद्ध के बीस वर्षों मे कृषि ने बढी हुई कीमतो से इस प्रकार सानुकूलन स्थापित कर लिया था कि युद्ध की समाप्ति तथा शान्ति की स्थापना हो जाने पर सहसा ही नई परिस्थितियो के अनुकूल स्वय को बदल पाना उसके लिये अत्यन्त कठिन हो गया और परिणामस्वरूप अनेक किसान बरबाद हो गये और लगान की राशि नही चुकाई जा सकी। ऐसी स्थिति मे उपभोक्ताओ की अपेक्षा कृषि की रक्षा तथा सरक्षण प्रदान करने के लिये सन् १८१५ मे 'कॉर्न लॉ' (खाद्यान्न-अधिनियम) बनाया गया। इस अधिनियम का शहरी क्षेत्रो मे किसी भी प्रकार की दल नीति से विमुक्त हो कर सभी वर्गो ने तीव्र विरोध किया। इस सन्दर्भ मे ससद (पार्लियामेट) के जमीदार सदस्यो की यह आम शिकायत थी कि जिस समय वे "सदन" मे प्रस्तावित अधिनियम के पक्ष मे अपना मत देने जा रहे थे 'रुपया उधार देने वाले बेरिग नामक व्यक्ति के भडकाने वाले भाषणो से तथा लन्दन के लार्ड मेयर द्वारा दिये गये असत्य वक्तव्यो से' उत्तेजित असभ्य भीड ने उन पर वहशियाना आक्रमण किये थे। (द्रष्टव्य सन् १८५१ मे सर आर हडसन द्वारा सम्पादित पुस्तक—'नोट्स', पृष्ठ ५०)। सन् १८४६ मे जबकि खाद्यान्न अधिनियमो (कार्न-लॉज) को रद्द कर दिया गया था अगली पीढी तक के लिये कृषि-सरक्षण के प्रश्न ने इगलैंड मे एक विभेद उत्पन्न कर दिया था तथा ग्रामीण एव नागरिक जीवन के जिन विभेदो को औद्योगिक क्रान्ति प्रत्येक वर्ष अधिकाधिक तथा तीव्र बनाती जा रही थी वे राजनैतिक गतिविधियो से सम्बद्ध हो गये थे, नगरीय जनता का जहा कृषि से सम्बन्ध विच्छेद हो रहा था ग्रामीण औद्योगिक उत्पादन से असम्बद्ध हो रहे थे।

महारानी ऐन्नी के युग मे इगलैंड की यात्रा करते समय डिफो आर्थिक तथा

सामाजिक पक्षो के जिस सामजस्य को देखकर प्रसन्न हुआ था वह अब समाप्त हो चला था, और उसका स्थान अब नगर तथा ग्राम, अमीर तथा गरीब के बीच उत्पन्न परस्पर विरोधी स्वार्थो से उत्पन्न द्वद्वात्मक स्थितिया ग्रहण कर रही थी । डिफो के सौ वर्ष बाद पुन विलियम कोबेट ने देहाती क्षेत्रो की घोडे पर यात्रा की थी और उसने दूसरे ही लक्षणो को देखा—शोषित लोग धनी शोपणकर्ताओ की एक शक्तिशाली पक्ति के विरुद्ध अपना मोर्चा जमा रहे थे । सम्भवत वास्तविकता यही थी की कि निर्धन लोग हमेशा से निर्धन रहे थे और उनका दुरुपयोग किया गया था लेकिन इस युग मे अन्य लोगो के साथ उन्हे स्वय भी अपनी दुर्गति का भान हो गया था और वे स्वय को शोषको से पृथक अपने वर्ग को अलग सगठित करने लगे थे । भूतकाल मे निर्धनता एक व्यक्तिगत अभिशाप थी लेकिन अब एक सामूहिक आक्रोश का कारण बन चुकी थी । यह वास्तव मे अठारहवी शताब्दी मे उद्भुत मानवतावादी प्रवृत्तियो के विरुद्ध था । फ्रेन्च क्रान्ति से उत्पन्न इगलेंड ने आतकपूर्ण आक्रोश के कारण मानवतावादी प्रवृत्तिया कुछ क्षणो के लिये अवश्य ओझल हो गई थी लेकिन नयी शताब्दी मे दीर्घ काल तक आर्थिक परिस्थितियो के कारण होने वाले मानवीय शोषण की पहले की भाति उपेक्षा कर पाना कठिन हो गया । इस अर्थ मे कोबेट का कथन निस्सन्देह महत्वपूर्ण था ।

युद्ध ने निर्धनो को सबसे अधिक कष्ट दिया था । जमीदार वर्ग किसी भी दूसरे काल मे इतना समृद्ध अथवा केवल अवकाश का ही उपभोग करने वाला सुखी वर्ग नही हो पाया था जितना कि तब था । समाचार-पत्रो मे युद्ध का वर्णन अवश्य छपता था लेकिन उनके महलो मे उसकी पहुच नही हो पाती थी । मिस आस्टीन की परिचित महिलाओ मे जो सदैव स्कॉट अथवा बायरन के नये काव्य सग्रह की प्रतीक्षा किया करती थी ऐसी कोई नही थी जिसने कभी यह जानने का प्रयत्न किया हो कि इस आपत्काल मे मि थार्प अथवा मि बर्ट्राम देश की सेवा के लिये क्या करने जा रहे है । इसका मुख्य कारण यह था कि उन सुखी दिनो मे राष्ट्रीय जीवन की सुरक्षा के लिये समुद्री सेना पर्याप्त शक्तिशाली थी । जब नेपोलियन यूरोप पर चढाई कर रहा था, छैलछबीले लोगो की सनके तथा फिजूलखर्चिया ब्यूब्रुमेल के दिनो मे चोटी तक पहुच गई थी, और अग्रेजी काव्य तथा प्राकृतिक दृश्यो की चित्रकारी अपने चरमोत्कर्ष पर थी । वर्ड्सवर्थ ने जिसका हृदय शान्तिकाल मे फ्रेन्च क्रान्ति से आन्दोलित हो उठा था, दीर्घकालीन युद्ध की परिस्थितियो मे अपना सन्तुलन पुन प्राप्त कर लिया और दार्शनिक काव्य की रचना प्रारम्भ कर दी 'अन्तहीन विक्षोभ के भी अन्तस् मे शान्ति बसती है ।' ये पक्तिया ऐसी मन स्थिति की परिचायक हैं जिसकी कल्पना भी आधुनिक काल के इस सर्वव्यापी महायुद्ध में कर पाना कठिन होगा ।

फास से होने वाले युद्ध मे आधे समय तक इगलैंड ने यूरोप मे अपनी कोई सेना

नही भेजी थी और सम्पूर्ण प्राय द्वीप मे चल रहे उस युद्ध मे जो सात चढाइया की गई थी उसमे भी ४०,००० से कम ही ब्रिटिश सैनिक मरे थे सभी वर्गों को अधिक प्राण हानि नही उठानी पडी थी। यद्यपि मि पिट के आयकर के प्रति काफी खीझ थी लेकिन अनाज की बढी हुई कीमतो के साथ लगान भी बढ गया था और इस प्रकार जमीदारो के जीवन स्तर मे कोई अन्तर नही आया। इगलैंड के 'भद्र लोगो' ने नेपोलियन के छक्के छुडा दिये थे अत उन्हे तथा पेशेवर लोगो को विजय प्राप्त करने के लिये जो प्रशसा तथा सम्मान प्राप्त हुआ उसके वे वास्तव मे अधिकारी थे, इस विजय के कारण अगले 'महायुद्ध' तक के लिये शाति का वरदान मिल गया था। लेकिन भद्र लोगो ने वस्तुत युद्ध से लाभ भी उठाया था और इसीलिये शान्ति स्थापित हो जाने के बाद के सुधारवादी पीढी ने अकृतज्ञतापूर्वक ऐसे लोगो का बहिष्कार भी कर दिया था—

"इन अगौरवमय सिनसिनेता"[1] •

झु डो को देखो,

युद्ध उगाने वाले कृषको और खेत के तानाशाहो को देखो,

उनके हल का एक अश भाडे पर आये सिपाहियो के हाथ मे तलवार सा झूलता है,

उनके खेतो मे एक अन्य भूमि का लहू खाद बन गया है,

अपने खलिहानो मे पूर्ण सुरक्षित ये 'सैबाइन' कृषक अपने अनुजो को युद्ध के लिये भेजते हैं।

ऐसा क्यो ? शायद अर्थ प्राप्ति के लिये ?

प्रत्येक वर्ष उन्होने रक्त और पसीना लिया और लाखो अश्रुपूरित चेहरो के आसू निचोडे, किस लिये ? धन के लिये ?

उन्होने गर्जनाए की, शराब पी और दावते की, और शपथ ली कि हम इगलैंड के लिये अपने प्राणो की आहुति देंगे,—

फिर क्यो जीवित रहे ? धन के लिये ?

(बायरन, दि एज ऑफ ब्रॉन्ज, १८२३)

युद्ध वस्तुत: जहाँ धनिको की सम्पन्नता मे और अधिक वृद्धि करने वाला तथा दैनिक मजदूरी पर काम करने वाले मजदूरो के लिये एक दीर्घकालीन विपत्ति के रूप में प्रकट हुआ था, 'समाज के 'मध्यवर्गीय लोगो' के लिये वह एक जुआ बन गया था: 'वैनिटी फेयर' के बूढ़े ऑसबोर्न की भाति जहा एक व्यापारी अधिक समृद्ध हो गया,

---

[1] कार्यनिवृत्त देश भक्त जिसे सकट के समय देश के लिये फिर बुलाया जाय।

मि सेडले की भाति दूसरा निर्धन हो गया। कुल मिलाकर इन 'व्यापारियो के देश' को यूरोप मे अपने बाजार बनाने तथा करो के भार को कम करने के लिये शान्ति तथा सुरक्षा की अधिक आवश्यकता थी। लेकिन नेपोलियन के समक्ष आत्मसमर्पण कर देने का भाव उनमे नही आया। रुपया उधार देने वाले बैंकर लोग तथा प्रतिष्ठित व्यापारीगण जैसे धनीमानी व्यक्ति तथा उनके परिवार, अनुदार दलीय (टोरी) लोगो के समाज मे सम्मिलित होते थे, विवाह करते थे तथा उनसे अपने लिये ससद की सीटे तथा सेना के उच्च पद क्रय किया करते थे, और इस प्रकार केवल उच्चस्तरीय राजनीति मे ही भाग लिया करते थे। लेकिन बहुत से नये प्रकार के उत्पादनकर्ताओ (चाहे वे स्वय हो अथवा उनके पिता) का जन्म या तो जमीदार वर्ग से हुआ था अथवा श्रमिक वर्ग से, और अधिकाशत वे विरोधी स्वभाव के ही लोग थे, कारखानो के वातावरण ने उनमे अभिजात वर्ग के प्रति एक घृणा का भाव भर दिया था। ये लोग युद्ध, गौरव तथा ऐसे किसी भी कार्य से लगाव महसूस नही करते थे जिससे कि उनका स्वार्थ न सिद्ध होता हो। इस प्रकार के लोग इगलैंड के लिये और अधिक सम्पत्ति का सचयन कर रहे थे, लेकिन स्थानीय अथवा केन्द्रीय किसी भी प्रकार की सरकार मे उनका कोई भाग नही था, और उस अभिमानी वर्ग से जो कि इनकी उपेक्षा करता था ये ईर्ष्या भी करते थे। युद्ध के कारण जिन लोगो को वास्तव मे यातना भोगनी पडी थी उनके प्रति इनकी तनिक भी सहानुभूति नही थी, और अपने कर्मचारियो की दयनीय स्थिति की ओर उनसे लाभ प्राप्त करने वाले जमीदार तथा कृषकगण जिस प्रकार सहानुभूति रहित दृष्टि से देखते थे यह नया वर्ग भी उनकी ओर उसी दृष्टि से देखता था। यह युग वास्तव मे निहित स्वार्थो द्वारा विभाजित युग था जो किसी बाहरी दुश्मन के आक्रमण के समय उत्पन्न एकता को छोडकर साधारणत भ्रातृत्व जन्य एकता से शून्य था।

लेकिन इस सबके आधार पर ही हमे वास्तविक असन्तोष की मात्रा को, विशेष रूप से युद्ध के पूर्वार्ध मे, इतना बढा चढा कर नही देखना चाहिये। टॉम पैने तथा फ्रेन्च क्रान्ति द्वारा अनुप्रेरित प्रजातान्त्रिक आन्दोलन को जनमत तथा राजकीय नियन्त्रणो ने सन् नब्बे तथा शताब्दी के अन्य उत्तरार्ध वर्षो मे दबा दिया था मजदूरो की उत्तेजित भीड ने बर्मिंघम तथा मैनचेस्टर के प्रार्थना स्थलो तथा सुधारवादियो के निवास स्थानो को घेर लिया था और डरहम के खान मजदूरो ने टॉम पैने का पुतला जला डाला था। श्रमिक वर्ग मे वस्तुत. असन्तोष कष्टप्रद यथार्थ स्थितियो के कारण धीरे-धीरे उत्पन्न हुआ था, और अनेक वर्षों तक उसका स्वरूप राष्ट्र व्यापी न होकर वर्ग के केवल कुछ भागो तथा प्रान्त तक ही सीमित था। जैकोबिन-विरोधी आन्दोलन के दमन के समय जबकि एक सुधारक की अपेक्षा आततायी होना अधिक सुविधाजनक माना जाता था, अधिकाश अग्रेज स्वय को स्वतन्त्र मान कर गर्व का अनुभव करते थे। ट्राफलगर के वर्ष मे लन्डन की नाट्यशालाओ का भ्रमण करते समय अमरीका के एक

प्रतिष्ठित वैज्ञानिक की यह टिप्पणी ध्यान आकर्षित करती है. "आज की सध्या नाट्यशालाओ की दर्शकदीर्घाओ से लोगो ने इस भावना के चित्रण पर कि यदि कोई गरीब व्यक्ति ईमानदार है तो इगलैंड मे ऐसा कोई भी व्यक्ति नही है जो उसे किसी भी प्रकार से दबा सके काफी प्रशसा व्यक्त की। इस घटना मे स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये वह सक्रिय लगाव देखा जा सकता है जो कि उन दिनो निम्नतम स्तर के लोगो मे भी विद्यमान था।[1]

उपरोक्त कथन से यह अवश्य लगता है कि वह 'भावना' कुछ अधिक आशावादी की भावना थी, लेकिन साथ ही उसे 'दर्शकदीर्घा' से इतनी प्रशसा प्राप्त हुई, यह तथ्य निश्चय ही महत्वपूर्ण है।

कई दक्षिणी हल्को मे रोटी तथा पनीर मजदूरो के प्रमुख खाद्य हो गये थे और इनके अतिरिक्त वे लोग बियर (जौ की शराब) अथवा चाय का भी प्रयोग कर लेते थे। कई लोग आलू की खेती भी कर लेते थे, लेकिन मॉस उन्हे यदाकदा ही मिल पाता था। युद्ध के कारण हुई मूल्य वृद्धि तथा मजदूरी मे कमी से कई जिलो के निर्धन ग्रामीणो को भूख का शिकार हो जाने की जो आशका उत्पन्न हो गई थी कम से कम उसका उपाय कर लिया गया था, भले ही उस उपाय से अन्य हानिया क्यो न हुई हो। मई सन् १७९५ मे बर्कशायर के मजिस्ट्रेटो को, रोटी के मूल्य मे वृद्धि हो जाने के कारण मजदूरी (वेतन) मे भी अनुरूप वृद्धि किये जाने के लिये न्यूबरी के एक उत्तरी भाग स्पीनहमलैंड मे विचार विमर्ष के लिये आमन्त्रित किया गया था। जब तक मूल्यो मे होने वाली वृद्धि को देखते हुए वास्तव मे इस कठिन नीति को लागू कर पाने के लिये हठधर्मी किसानो के विरोध को शान्त कर पाना कठिन था, लेकिन सैद्धान्तिक दृष्टि से यह 'उपाय' ही एक मात्र उपयुक्त उपाय था। यदि इस उपाय अथवा नीति को बर्कशायर मे तथा सम्पूर्ण इगलैंड मे लागू किया जा सका होता तो आधुनिक सामाजिक इतिहास के द्वारा एक सुखपूर्ण मोड प्राप्त कर लेने की पर्याप्त सम्भावना थी। यही एक सही तरीका था और पुरानी प्रथा तथा वर्तमान कानून ने भी इसी को स्वीकार किया था। दुर्भाग्य से जो अधिकारी (जे पी) इस सुकार्य के लिये स्पीन-हमलैंड आये थे उनसे वेतन वृद्धि की अपेक्षा वेतन मे पैरिश चर्च की राशि का कुछ अश मिला कर राहत प्रदान करने की नीति को अपनाने का अधिक आग्रह किया गया। उन्होने एक सूची प्रकाशित की जिसके अनुसार प्रत्येक निर्धन तथा उद्यमी व्यक्ति को अपने वेतन के अतिरिक्त 'पैरिश' से एक निश्चित राशि प्राप्त कर लेने की सूचना दी गई थी, इस सूची मे यह भी स्पष्ट किया गया था कि अमुक राशि वह अपने लिये ले सकता है तथा अमुक अपने परिवार के लिये, रोटी का मूल्य उस समय एक शिलिंग

---

[1] बी. सिलीमैन्स, ट्रैवल्स इन इगलैंड इन १८०५, न्यूयार्क १८१०, I पृ० २५२।

था। रोटी के मूल्य मे होने वाली वृद्धि के साथ अनुदान की राशि मे भी वृद्धि होना स्वाभाविक था। सुविधानुसार की जाने वाली इस आय वृद्धि को, जिसे 'स्पीन हैमलैड एक्ट' के नाम से जाना जाता था, मजिस्ट्रेट लोग बारी-बारी से एक के बाद एक क्षेत्र में तब तक लागू करते गये जब तक कि यह कुप्रणाली इगलैड के आधे ग्रामीण क्षेत्रो मे विशेष रूप से नवविकसित क्षेत्रो मे—पूरी तरह से क्रियान्वित न कर दी गई। उत्तरी क्षेत्रो मे इस प्रणाली को लागू नही किया गया क्योकि इस क्षेत्र के गावो मे उनके कारखानो तथा खदानो के निकटवर्ती होने के कारण मजदूरी (वेतन) का निर्धारण प्रतियोगिता के आधार पर होता था।

वेतन के अतिरिक्त सहायतार्थ दी जाने वाली राशि से अपने खेतो पर काम करने वाले श्रमिको को वेतन दे पाने मे भूमिधर किसानो को काफी सहायता मिल जाती थी—इस राशि के लिये कोष एकत्र करवाने मे उस क्षेत्र के छोटे आत्मनिर्भर व्यक्ति बडे आदमियो को चन्दा देते थे और साथ ही श्रमिकगण पूरे समय काम करने पर भी इस प्रणाली द्वारा निर्धनता की ओर ढकेल दिये जाते थे। सभी लोगो पर नैतिक दृष्टि से इसका प्रभाव खराब ही पडता था। बडे भूमिधारी किसान, श्रमिको की मजदूरी बढाने से साफ इनकार कर देते थे और इस प्रकार इस प्रणाली की आड लेकर अपने स्वार्थों को सुरक्षित बनाए रखने मे सफल हो जाते थे, स्वावलम्बी वर्ग कम मजदूरी अथवा वेतन के लिये पक्ष लेता था और दीनहीन श्रमिको मे आलस्य तथा अपराधवृत्ति जोर पकडती जा रही थी। सन् १८३० मे एक अमरीकी लेखक ने सच ही लिखा था "इगलैड मे कगाल (पॉपर) शब्द का प्रयोग, विशेष रूप से कृषि प्रधान क्षेत्रो मे, उस वर्ग के लिये किया जाता था जो अपने हाथो से मजदूरी कर के केवल जीवनयापन भर के लिये ही अर्जन कर पाता था।[1]

लेकिन उस समय सोचा जा रहा था कि वेतन (मजदूरी) की सहायक राशि जनसख्या की वृद्धि का महत्वपूर्ण कारण रही है और माल्थस भी इस आशका से सचेत करने वाले विचारो को प्रवाहित कर रहा था लेकिन वास्तव मे यह धारणा सत्य नही

---

[1] सन् १७९२ से १८३१ के बीच डॉरसेट के क्षेत्र मे निर्धन अधिनियम (पुअर ला) पर होने वाला खर्च २१४ प्रतिशत बढ गया था, अपराध सम्बन्धी मुकदमो पर होने वाले व्यय मे २१३५ प्रतिशत की वृद्धि हुई थी, और इन खर्चों के प्रसग मे जनसख्या की वृद्धि केवल ४० प्रतिशत ही थी। (विक्टोरिया काउन्टी हिस्ट्री, डोरसेट, II, २५९)। सन् १८१३ मे सम्पूर्ण इगलैड मे निर्धन सहायता के लिये एकत्र राशि जहा सत्तर लाख थी, अन्य कार्यों के लिये स्थानीय करो द्वारा एकत्र राशि केवल पन्द्रह लाख की थी।

थी। अठारहवी शताब्दी की भाति उन्नीसवी शताब्दी मे भी जनसख्या की वृद्धि वास्तव मे जन्मदर की वृद्धि के कारण नही वरन् मृत्यु-सख्या मे कमी होने के कारण हुई थी। सन् १८०१-१८३१ के बीच इगलैंड की जनसख्या एक करोड दस लाख से बढ कर एक करोड साठ लाख पचास हजार हो गई थी और वस्तुत इस वृद्धि का कारण स्पीनहमलैंड के मजिस्ट्रेट नही वरन् ग्रेटब्रिटेन के चिकित्सको की सेवाए थी। युद्ध काल मे खाद्यान्नो के मूल्य मे वृद्धि से जहा श्रमिको के दारिद्रय मे वृद्धि हुई वहा उससे जमीदारो, लगान देने वाले बडे किसानो को लाभ पहुँचा और कुछ समय के लिये मुआफीदार तथा पट्टेदार किसानो को भी फायदा हुआ।

लेकिन वाटरलू के युद्ध के बाद अनाज के मूल्य मे भारी कमी हो जाने के कारण छोटे किसानो की स्थिति पुन प्रभावित हुई। उन पर स्पीनहमलैंड व्यवस्था का आर्थिक दृष्टि से काफी भार पड गया, क्योकि अनेको दक्षिणी क्षेत्रो मे विशेषत विल्ट-शायर मे, बहुत से किसान जो अपने श्रम के लिये श्रमिको का उपयोग नही करते थे उन्हे भी अन्य बडे प्रतिस्पर्धी किसानो द्वारा रखे गये श्रमिको के वेतन को पूरा करने के लिये निर्धन-सहायता का आर्थिक भार उठाना पडता था। इसके अतिरिक्त छोटे किसानो को बधे बधाये छोटे खेतो तथा कुटीर उद्योग के निरन्तर ह्रास के कारण काफी कष्ट उठाना पडता था।

लेकिन इस सबके बावजूद भी हमे परिवर्तन की तीव्रता एव गति के विषय मे अतिशयोक्तिपूर्ण रूप मे कुछ भी नही कहना चाहिये। सन् १८३१ की जनगणना के अनुसार कृषि-कार्य मे सलग्न दस लाख से कुछ कम परिवारो मे से १४५,००० भू-स्वामियो अथवा किसानो के परिवार थे जो कृषि के लिये मजदूर नही रखते थे, जबकि भाडे पर मजदूरी के लिये ६८६,००० परिवार उपलब्ध थे। कहने का अभिप्राय यह है कि 'सुधार-अधिनियम' (रिफार्म-बिल) के अन्तिम काल मे कृषि से सम्बन्धित सर्वहारा वर्ग की सख्या आत्म-निर्भर कृषको की सख्या से अढाई गुणा अधिक थी। इसके अतिरिक्त छोटे कृषको का एक ऐसा वर्ग भी बच रहा था जिसकी सख्या लगभग उतनी ही अधिक थी जितनी कि मजदूर लगाकर खेती कराने वाले लोगो की थी। लेकिन कृषि-भूमि का अधिकाश भाग बडे किसानो के पास था और खुले खेत तथा सामान्या-धिकार भूमि (कॉमन्स्) समाप्त प्राय हो चुकी थी।

युद्ध तथा उसके प्रभावो के समाप्त हो जाने पर, वास्तविक वेतन-आय के साख्यकीय आकडो से पता चलता है कि समूचे देश के भूमि-मजदूरो की औसत स्थिति सन् १८२४ मे उतनी खराब नही थी कि जितनी कि तीस वर्ष पूर्व थी।[१] कुछ क्षेत्रो मे तो उसकी स्थिति निश्चित रूप से काफी अच्छी थी। लेकिन दक्षिणी ग्रामो मे, जो कि कारखानो और खानो से काफी दूर थे और इस कारण जहा कृषि-मजदूरो तथा

---

[१] द्रष्टव्य—क्लैपहम, (इका) हिस्ट्री ऑफ माडर्न इगलैंड, I, पृ० १२५-१३१।

कारखानो व खानो के मजदूरो के वेतन मे किसी प्रकार की प्रतियोगिता नही हो पाती थी और विशेष रूप से वहा जहा वेतन-दरो को जानबूझकर नीचे रखने के लिये कम वेतन दिया जाता था तथा जहा किसान मिट्टी के बने अपने कच्चे मकान के लिये उसे नौकर रखता था, मजदूरो के जीवन स्तर मे काफी ह्रास हुआ था। उसे वेतन का कुछ भाग अनाज तथा सडी हुई बियर (शराब) के रूप मे लेने के लिये बाध्य किया जाता था। उन क्षेत्रो मे दगो तथा आगजनी के रूप मे लोगो के कष्ट एव यातनाए अभिव्यक्ति पाते थे। पुराने समय मे जब जीवन इतना कठिन नही था श्रमिक लोग किसान के खेत पर ही रहा करते थे और उनके खाने पीने का प्रबन्ध भी किसान के साथ ही होता था। निस्सन्देह इसका अवश्य ही यह अर्थ था कि मजदूर अपने मालिक पर इस समय भी उतना ही आश्रित था जितना कि बाद के काल मे उसे मालिक द्वारा दी गई एक काम चलाऊ तग कुटिया मे गुजारा करने के लिये उस पर आश्रित होना पडता था। लेकिन इस आश्रितता स्थिति का एक पक्ष यह भी था कि मालिक तथा मजदूर के बीच वैयक्तिक निकटता स्थापित हो जाती थी और वर्गगत दूरी कम हो जाती थी। कोबेट ने उस पुराने मजदूर की चर्चा की है जो मालिक के साथ उसके जैसा ही भोजन करता था, हा इतना अवश्य था कि मालिक स्वय कुछ तेज तथा अच्छे प्रकार की 'बियर' का प्रयोग कर लेता था जो उसके नौकर को उपलब्ध नही हो पाती थी।

'ग्रेट रिफार्म बिल' (सुधार-अधिनियम) के लागू होने के कुछ मास पूर्व सन् १८३० के जाडो मे थेम्स के दक्षिणी क्षेत्रो के क्षुधित भूमि-मजदूरो ने अपना वेतन अढाई शिलिंग (आधा क्राउन) प्रतिदिन करवाने के लिये एक प्रदर्शन किया था। लेकिन न्यायाधीशो ने उनसे इसका जो बदला लिया वह भयकर था तीन उपद्रवियो को फासी पर लटका दिया गया और चार सौ बीस लोगो को उनके परिवारो से विलग कर अपराधियो के रूप मे आस्ट्रेलिया निष्कासित कर दिया गया। यह आतकित करने वाला जुल्म यह दर्शाता है कि जबकि राजनैतिक क्षेत्र जैकोबाइन-विरोधी भूत से मुक्त हो चुका था और 'सुधार' (रिफार्म) शब्द राजा के परामर्शदाताओ का एक तकिया कलाम बन चुका था तब भी उच्चवर्ग तथा निर्धनो के बीच एक बडी खाई विद्यमान थी। (हेमाण्ड, विलेज लेबरर, अध्याय ११ तथा १२)।

इस सबके बावजूद लेकिन थेम्स के दक्षिणी क्षेत्रो के मजदूरो की इस दुर्दशा को सम्पूर्ण इगलैड के ग्रामीण क्षेत्र की विशेषता मानना निश्चय ही भूल होगी। उत्तरी क्षेत्रो मे और विशेष रूप से उन सभी क्षेत्रो मे जहा कि औद्योगिक जीवन तथा खानो का विकास हो रहा था, खेतीहर मजदूरो का पारिश्रमिक भी काफी अच्छा था, निर्धन-सहायता के लिये लिया जाने वाला शुल्क भी कम था और निर्धन-सहायता प्राप्त करने वालो की भी सख्या कम थी। पिछली शताब्दी की तुलना मे यदि सभी क्षेत्रो तथा वर्गों को सम्मिलित कर लिया जाए तो रहन-सहन का औसत स्तर निश्चित रूप से

उन्नत था। केवल कोबेट ने ही नही बल्कि अन्य लेखको ने भी शिकायत भरे ढग से यह कहा है कि अपने रहन-सहन का परित्याग कर किसान अपने से उच्च लोगो का अनुकरण करने लगे थे, धातु के बर्तनो की जगह चीनी के बर्तनो मे भोजन करने लगे थे तथा टमटम मे अथवा शिकारी कुत्तो की सवारी मे बैठने लगे थे। यह अच्छा था अथवा बुरा यह वस्तुत दृष्टिकोणो पर निर्भर करता हैं, लेकिन इतना अवश्य है कि उनके 'रहन-सहन का स्तर निश्चत रूप से उन्नत हो गया था।'[1]

और निम्न ग्रामीण वर्गों मे स्थान, समय तथा परिस्थितियो के अनुसार काफी सुख तथा समृद्धि छा गई थी। पिछडी पीढी के लोगो मे बेविक, वर्ड्सवर्थ तथा कोबेट के बचपन के सस्मरणो से तथा नई शताब्दी के लोगो मे जैसा कि हॉविट के विवरण से पता चलता है बच्चो का जीवन झाडियो और वनप्रान्तरो मे खेलते हुए मधुरता पूर्वक व्यतीत होता था। विलियम हॉविट, जार्ज बॉरो तथा अन्य लेखको की, जिन्होने कि अठारहवी शताब्दी के दूसरे तथा तीसरे दशको मे अपना जीवन साधारण लोगो के साथ ही खेतो, गलियो और झोपडी मे बिताया था, कृतियो के आधार पर ऐसा अनुमान होता है कि उस समय स्वास्थ्य तथा आह्लाद बहुत व्यापक रूप से जन समाज मे थे

---

[1] कृषक के जीवन मे घटित हुए परिवर्तनो की चर्चा वाटरलू के समय भी हुई थी और उसके तीस वर्ष बाद भी जैसा कि सन् १८४३ मे लिखे गये इन काव्याशो से पता चलता है, चर्चा होती रही

"पुरानी शैली
पति, हल चलाना,
पत्नी, गाय का दूध निकालना,
पुत्री, सूत कातना,
पुत्र, खलिहान जाना,
और आपका किराया पक्का हो जाएगा।
नयी शैली;
पति; हिसाब जोडना,
पुत्री, प्यानो बजाना,
पत्नी, नवजाकत और मनोरजन,
पुत्र, ग्रीक और लेटिन का अध्ययन,
और आप अफसर बन जाएगे।"

लार्ड एर्नल (इगलिश फॉर्मिग, पृष्ठ ३४७) ने इन आरोपो की, जो कि केवल असत्य हीं नही वरन् कृषीयविश्दाओ की चर्चा कर पाने मे अपर्याप्त भी थे, कटु आलोचना की है; वे लिखते है कि किसानो की कठिनाइयो की इस व्याख्या का स्वरूप 'उतना ही पुराना है जितनी कि पहाडिया', और सन् १५७३ मे टसर ने अपना काम छोडकर शिकार के लिये जाने वाले किसानो को कुछ सुझाव भी दिये है।

और साथ ही था बहुत कठिन जीवन ।[१] लेकिन गाव के खेलकूद तथा परम्पराओ और प्रकृति से उनके निकट सम्बन्ध का, जिसमे रात को झाडियो मे खरगोश पकडने का शौक भी सम्मिलित है, गरीब ग्रामीणो की स्थिति दर्शाने के लिये किस प्रकार तथ्यो के रूप मे उपयोग किया जाए यह एक समस्या है । इसी प्रकार विभिन्न क्षेत्रो मे जीवन की विविधताओ को एक साधारणीकृत सूत्र मे किस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है यह भी विचारणीय है ।

सन् १७७१ मे आर्थर यग ने विकसित होती हुई यात्रा की सुविधाओ के कारण ग्रामीण युवको तथा युवतियो के लन्डन जाकर बसने की बढती हुई प्रवृत्ति के प्रति खेद प्रकट किया था । लेकिन अब सभी ग्रामीण क्षेत्रो से हजारो की सख्या मे लोग लन्डन के अतिरिक्त अन्य नगरो की ओर भी आकर्षित हो रहे थे । यह निष्क्रमण प्रक्रिया उद्योगो, कपडा मिलो तथा खानो वाले उत्तरी क्षेत्र मे अधिक तीव्र थी । सन् १८०१ से १८३१ तक की जनसख्या सम्बन्धी आकडो से पता चलता है कि उत्तरी क्षेत्र के कुछ जिलो की जनसख्या मे पहले से ही प्रति दस वर्षो मे भारी कमी हो जाती थी । यद्यपि इगलैंड के प्रत्येक ग्राम पर यह बात लागू नही होती, और भले ही इस शताब्दी के प्रथम तीस वर्षों मे ग्रामीण जनसख्या मे कोई अन्तर न दिखाई दे, लेकिन अनेक ग्रामीण नवयुवक उपनिवेषो अथवा अमरीका या अपने ही देश के वाणिज्यीय तथा औद्योगिक केन्द्रो मे जाकर बस रहे थे ।

जनसख्या मे निरन्तर होती आ रही वृद्धि के कारण इगलैंड के गावो मे ही बने रह कर प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपना भरण-पोषण कर पाना असम्भव हो गया था । जितनी भूमि को कृषि के काम मे लिया जा सकता था ले लिया गया था, सभी सम्भावनाए पूर्ण हो चली थी । और कई पारम्परिक व्यवसाय समाप्त हो गये थे । बहुत से राष्ट्रीय उद्योग, जैसे कपडा उद्योग, जिन्हे ट्यूडर के युग मे तथा मध्यकाल मे बाहर से लाकर गावो मे स्थापित किया गया था अब देहाती क्षेत्रो के बाहर स्थानान्तरित किये जा रहे थे । अब ग्राम अधिकाधिक कृषि-आश्रित होते जा रहे थे, ग्राम-बाजार मे बिक्री के लिये उपभोक्ता-वस्तुओ का उत्पादन तो बन्द हो ही गया था, अपनी निजी खपत के लिये भी थोडी ही वस्तुओ का उत्पादन किया जा रहा था ।

यातायात के विकास तथा सडको मे सुधार हो जाने से पहले तो जमीदार स्त्री ने और उसके बाद कृषक-गृहणी ने, तथा सबके बाद कुटीरवासी स्त्री ने नगर के बाजार से उन्ही वस्तुओ को खरीद कर लाना प्रारम्भ किया जिनका उत्पादन पहले

---

[१] हॉविट की 'रूरल लाइफ इन इगलैंड' तथा 'बॉयज कन्ट्री बुक' नामक कृतियो मे सन् १८०२ से १८३८ तक के अनुभवो को प्रस्तुत किया है । बॉरो की लैवेन्ग्रो नामक कृति मे सन् १८१० से १८२५ तक के अनुभवो का चित्रण किया गया है ।

गाव मे अथवा जागीर मे ही किया जाता था। और अब बहुधा ही गावो मे ऐसी दुकाने खोल दी गई थी जिनमे स्थानीय खपत के लिये विदेशो तथा नगरो से वस्तुए आयात की गई थी। अपनी आवश्यकताओ के लिये स्थानीय रूप मे वस्तुओ का उत्पादन करने वाले आत्मनिर्भरता प्रधान ग्राम का स्वरूप भूतकालीन स्मृति भर बन कर रह गया था। एक-एक करके सभी शिल्पकार समाप्त हो रहे थे—कपडा बुनने तथा खेती के औजार बनाने वाले, दर्जी, फर्नीचर निर्माता, चक्की वाले, जुलाहे और कभी-कभी बढई तथा मकान बनाने वाले कारीगर भी दिखाई नही देते थे और विक्टोरिया की अन्तिम शासन-अवधि मे कही-कही एक मात्र लुहार ही शिल्पी के नाम पर शेष बच रहा था जो घोडो की नाल बनाने के निरन्तर ह्रासोन्मुख व्यावसायिक स्थिति के कारण यात्रियो की बाइसिकलो के ट्यूब-टायर की मरम्मत करके अपना भरण-पोषण करने लगे थे। छोटे उद्योगो तथा हस्त उद्योगो की सख्या मे कमी होने से ग्रामीण जीवन ऊबपूर्ण हो गया था तथा कम-स्वावलम्बी अभिवृतियो को जन्म दे रहा था और इस प्रकार राष्ट्रीय जीवन का मुख्य स्रोत होने की अपेक्षा बचे खुचे पानी का एक बन्द गड्ढा भर बन कर रह गया था। कई प्रकार से शहरी जीवन द्वारा उसकी जीवन शक्ति का शोषण किये जाने के कारण ग्राम की जीवन शक्ति मे वास्तव मे निरन्तर ह्रास होता जा रहा था। सम्पूर्ण शताब्दी पर चलने वाली इस ह्रास प्रक्रिया की नीव वस्तुत वाटरलू तथा 'सुधार-बिल' (रिफॉर्म-बिल) की बीच की अवधि मे पडी थी।

लेकिन उन्नीसवी शताब्दी के पूर्वार्ध मे वास्तव मे इगलैड का ग्राम समुद्रपारीय देशो के लिये श्रेष्ठ उपनिवेशवादी भेजने मे काफी समर्थ सिद्ध हुआ था। ये लोग काफी समय तक घर से बाहर रह कर काम करने तथा कष्ट झेलने के काफी अभ्यस्त थे और जगलो मे वृक्ष गिराने, हस्त उद्योगो नथा खेती करने के लिये सदैव तत्पर रहते थे। स्त्रिया बडे परिवारो की देखभाल करने मे समर्थ थी।

युद्धोत्तर इगलैड की परिस्थितियां उपनिवेषीकरण के वृहद् आन्दोलन मे काफी सहायक सिद्ध हुई। जनसख्या के जिस आधिक्य को देखकर माल्थस के समकालीन लोग आतकित हुए थे, उसके अतिरिक्त आर्थिक तथा सामाजिक यातनाए, जमीदारों और बडे किसानो के आधिपत्य के प्रति स्वच्छन्दता प्रिय लोगो के मनो मे उत्पन्न होने वाला रोष, वस्तुत इन सभी कारणो ने कैनेडा, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड मे ब्रिटिश भाषा-भाषी तथा समान परम्परा वाले लोगो को वहा बसा कर एक और ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना मे काफी सहायता की थी। कैनेडा जाकर बसने वाले एक व्यक्ति ने लिखा है कि यहा 'हम स्वतन्त्र है और अपने अधिकारो की चर्चा करने मे यहा हमे किसी प्रकार का भय नही होता। एक दूसरे व्यक्ति के अनुसार हमे न तो नियत्रण-कर्ताओ की ही आवश्यकता होती हे और न किन्ही विशेषाधिकारो की'। स्कॉटलैड-वासी भी जिनमे हाईलैन्डवासी तथा लोलैन्डवासी दोनों ही सम्मिलित है समान हैं और

दोनो ही ने एक कैनेडियन परम्परा को विकसित कर लिया है। जगल काटकर आवास बना लिये गये तथा इस उपजाऊ भूमि मे अनाज तथा मनुष्य दोनो ही की सख्या तथा मात्रा मे आनुपातिक वृद्धि होती रही। उन्नीसवी शताब्दी के प्रारम्भिक दशको मे आस्ट्रेलिया मे पू जीपति चरागाह मालिको ने बडे पैमाने पर भेडो तथा दुधारु पशुओ के 'फार्मों' की स्थापना की और इस प्रकार उपक्रमी व्यक्तियो के लिये एक नये आकर्षक व्यावसायिक क्षेत्र को आरम्भ किया। न्यूजीलैड का उपनिवेश कुछ समय बाद ही बन गया था और गिबन वेकफील्ड तथा एग्लिकन तथा स्कॉटिश प्रेस्बिटेरियन कमेटियो के उत्साहपूर्ण धार्मिक प्रयत्नो के फलस्वरूप उसका व्यवस्थित गठन सन् १८३७ तथा १८५० के मध्य हुआ था। हेनरी वश तथा विक्टोरियाकालीन ब्रिटेन-वासी या तो प्रमुखत ग्रामवासी था अथवा ग्राम से विस्थापित व्यक्ति था उसे मुख्य रूप से उस नगरवासी की भाति कि जो खेती करने मे एकदम असमर्थ है अथवा किसी एक व्यवसाय की जगह अन्य व्यवसायो को ग्रहण करने मे समर्थ नही होता, शहरी उत्पत्ति नही माना जा सकता। वह अब भी जीवन की कठिनाइयो को झेलने मे सक्षम है तथा अवसरो और आवश्यकताओ के अनुसार स्वय को ढाल सकता है।

इस रूप मे 'राष्ट्रो' की ब्रिटिश कामनवेल्थ की स्थापना ठीक समय पर ही हो गई थी। लेकिन जिस समय अनेक अग्रेज ग्रामवासी समुद्र पार के देशो मे जा रहे थे उसी समय अन्य अनेको ग्रामीण स्वदेश मे ही औद्योगिक केन्द्रो की ओर आकर्षित हो रहे थे। नेपोलिनीय युद्धो के दौरान यह स्वदेशी स्थानान्तरण विशेष रूप से दिखाई देता था। 'कोयले तथा लोहे' का युग प्रारम्भ हो चुका था। एक नई जीवन व्यवस्था प्रारम्भ हो रही थी और जिन परिस्थितियो मे वह उत्पन्न हो रही थी वह नये प्रकार के तनावो को जन्म देने वाली थी।

औद्योगिक केन्द्रो को प्रवास करने वाले लोग जिस पुरानी ग्रामीण व्यवस्था को छोडकर आ रहे थे वह वास्तव मे अनुदारवादी सामाजिक सरचना तथा नैतिक वातावरण से बोझिल थी, और इन नये स्थानो पर उन्हे अब उपेक्षित कूडे की भाति एक ओर फेंक दिया गया था जिस पर स्वभावत जल्दी ही फफूद छा गई और अब वह पदार्थ एक ज्वलनशील पदार्थ के रूप मे परिवर्तित हो गया था। साधारणतया खाने-कपडे तथा पारिश्रमिक विषयक स्थिति उनकी पिछली कृषकीय दशा से अच्छी थी। और खेतिहर मजदूरो जिनकी कि आय का एक भाग निर्धन-सहायता कोष से प्राप्त होता था— की अपेक्षा उन्हे अब अधिक आत्मनिर्भरता प्राप्त थी। लेकिन औद्योगिक केन्द्रो की ओर होने वाले इस जनसख्या के स्थानान्तरण से जहा कुछ लाभ हुआ वही हानिया भी हुईं। जगलो, खेतो तथा झाडियो के सुन्दर दृश्यो तथा ग्रामीण जीवन की अविस्मरणीय प्रथाओ—गाव की हरियाली और उसके हरे-भरे प्रान्तर मे होने वाले खेल-कूद, खलिहानो मे जाकर रहना, भोज, मई-दिवस (मे-डे) के उत्सव आदि—के सुखद मानवीय आवरण ने युग-दीर्घ निर्धनता की दारुणता को सह्य बना

दिया था। ये बाते खानो अथवा कारखानो, अथवा केवल मुह भर छिपाने के लिये बनाए गये ईंट के मकानो की लम्बी कतारो मे सम्भव नही हो पाती थी। गाव की पुरानी झोपडिया निस्सन्देह सुन्दर होते हुए भी हानिकर थी। फिर भी उनके प्रति लोगो मे एक आसक्ति का ऐसा भाव था जो शहरी मकानो के प्रति उत्पन्न नही हो सकता था। वर्ड्सवर्थ की 'पुअर सुसान' इसी कारण नगर के अपने निष्कासित जीवन मे देहाती झोपडी का स्मरण करती है 'वही एक मात्र ऐसा आवास है जिसे वह प्यार करती है' अपने आवास के प्रति ऐसी अनुरक्ति कामगारो के लिये बनाये गये आज के आदर्श निवासो के लिये भी जागृत नही हो पाती।

शहरी क्षेत्रो मे सबसे गन्दे मकान आयरलैड से आकर बसने वाले लोगो के थे। ये लोग जिन ग्रामीण बस्तियो से यहा आये थे वे निकृष्टतम इगलिश गाव से भी अधिक खराब थी और उसी अनुपात मे उनका रहन-सहन भी गन्दा था। आयरिश किसान के प्रति अग्रेजो का जो व्यवहार रहा था उसका यहा लगातार प्रतिशोध लिया जा रहा था। लेकिन स्वच्छता की दृष्टि से औद्योगिक क्षेत्रो के लिये सबसे खराब समय उन्नीसवी शताब्दी के प्रारम्भिक समय की अपेक्षा मध्यकाल था, क्योकि उसी समय कई नये मकानो की वर्षों से सफाई तथा मरम्मत न हो पाने के कारण वे गन्दे ढाचो मे परिवर्तित होते जा रहे थे।

खान मजदूरो की ही भाति कारखानो मे काम करने वाले मजदूर खान अथवा कारखाने के मालिक के नौकरो की हैसियत से अलग मकानो मे रहते थे और मालिक सुविधा-सम्पन्न निजी मकान तथा एक पृथक सामाजिक वातावरण मे अलग रहता था, पुरानी ग्रामीण व्यवस्था मे स्थिति दूसरी ही थी—प्रत्येक खेत अथवा फार्म पर एक, दो अथवा आधे दर्जन लोग अपने भू-स्वामी से निकट के वैयक्तिक सम्बन्ध बनाए हुए एक साथ रहते थे जहा गृह-वधू भोजन बनाती थी और सभी अविवाहित जन भोजन करते थे। प्रत्येक फार्म पर यही व्यवस्था थी।

कारखानो मे काम करने वाले इस उपेक्षित जन-समुदाय के लिये उनके ग्रामीण पारस्परिक सुविधाओ तथा प्रथाओ से विलग हो जाने पर यहा किसी भी प्रकार के कल्याण कार्यों अथवा मनोरजन-सुविधाओ द्वारा उसकी क्षति-पूर्ति नही की जा सकी। चर्च अथवा राज्य ने उनकी कोई चिन्ता नही की, किसी भी भद्र महिला ने उन्हे अपने परामर्श तथा कम्बलो की सहायता प्रदानकर कृतार्थ नही किया, मदिरापान के अतिरिक्त उन्हें और कोई भोग-सामग्री प्राप्य नही थी और एक दूसरे से वार्तालाप के अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति भी उनकी दुख-कथा को सुनने वाला नही था। इस स्थिति मे आन्दोलन की आग मे उनका ईंधन की भाति सुलग उठना स्वाभाविक था। जीवन मे उन्हे, एवागेलिकल धर्म अथवा क्रान्तिकारी राजनीति का आश्रय प्राप्त करने के अतिरिक्त न तो कोई आशा ही दिखाई देती थी और न रूचि ही थी।

कभी-कभी ये दोनो सयुक्त भी हो जाते थे क्योकि कई विद्रोही उपदेशक स्वय क्रान्तिकारी विचारो को प्रसारित किया करते थे। लेकिन जिस राजनैतिक अनुदारतावाद से 'वेस्लेयन' आन्दोलन प्रारम्भ हुआ था उसकी शक्ति समाप्त नही हो पाई थी और अब भी वह एक नियत्रक के रूप मे कार्य कर रहा था। फ्रेच इतिहासकार एली हैलेवी जिसने उन्नीसवी शताब्दी का इगलिश इतिहास लिखा है, के मतानुसार इस आर्थिक विघटन तथा सामाजिक उपेक्षा के युग मे इस देश को हिसात्मक क्रान्ति से बचाने वाला प्रमुख कारण एवागेलिकल धर्म का शक्तिशाली प्रभाव था 'साहित्यकार एवागेलिकल मतानुयायियो से जहा उनके सकीर्ण पवित्रतावाद के कारण घृणा करते थे, वैज्ञानिक उनकी बौद्धिक अपरिपक्वता के कारण उनसे घृणा करते थे। फिर भी, उन्नीसवी शताब्दी मे एवागेलिकल धर्म ने अग्रेजी समाज को एक नैतिक गठन अवश्य ही प्रदान किया। एवॉगेलिकल मतानुयायियो के प्रभाव के कारण ही ब्रिटिश अभिजात वर्ग को एक 'स्टोइक' (निस्पृह) सम्मान प्राप्त हुआ, बेढगे प्रदर्शनो तथा व्यभिचार मे लिप्त वर्गों से जो श्रेष्ठिजन उभर कर सामने आए थे उन्हे सयम प्राप्त हुआ, तथा सर्वहारा वर्ग को कुछ गुणी तथा आत्म नियत्रण युक्त श्रमिको का नेतृत्व प्राप्त होना सभव हो सका था। इस प्रकार से एवागेलिकल सम्प्रदाय एक ऐसी अनुदारतावादी शक्ति का रूप था जिसने क्रान्तिकारी शक्तियो से उत्पन्न असन्तुलन के खतरे को समाप्त कर दिया था। (हैलेवी, 'हिस्ट्री ऑफ इगलिश पीपल' अनुवाद ई आई वाटकिन, III पृ० १६६)।

लेकिन वाटरलू के बाद क्रान्तिकारी आन्दोलनो के उदय तथा सफलता को लोकप्रिय धर्म के नियत्रणो तथा अन्य सुखद प्रभावो के अतिरिक्त एक और कारण भी है। यह सत्य है कि उसका सभी औद्योगिक क्षेत्रो पर व्यापक प्रभाव पडा था, लेकिन उद्योग-प्रधान क्षेत्र सम्पूर्ण इगलैड का वास्तव मे अत्यन्त छोटा भाग था। सन् १८१९ मे औद्योगीकरण से उत्पन्न स्थितिया केवल औद्योगिक क्षेत्रो तक ही सीमित थी—लकाशायर के कपडा उद्योग क्षेत्र से बाहर उनका प्रभाव नही पड सका था, अत छ' अधिनियमो (सिक्स एक्ट्स) तथा पीटरलू के समय आम जनता का दमन कर थोडे समय के लिये क्रान्ति आन्दोलन को दबाना सम्भव हो गया था। यद्यपि भविष्य अब उद्योग-व्यवस्था से ही सम्बद्ध था लेकिन वर्तमान मे इगलैड का श्रमिक वर्ग पुरानी व्यवस्था के अनुसार ही कार्य कर रहा था—चाहे वह कृषीय क्षेत्र की हो या उद्योगो से सम्बद्ध हो, घरेलू नौकरी हो अथवा समुद्री जीवन से सम्बन्धित हो, पीटरलू एक महत्वपूर्ण घटना थी। मैनचेस्टर के कपडा उद्योग मे जमीदारो के दमन ने जैकोबिन विरोधी अनुदारतावाद के प्रति उदित होती हुई नई पीढ़ी के मन मे एक वितृष्णा उत्पन्न कर दी थी। लेकिन वास्तव मे पीटरलू से केवल दक्षिणी लकाशायर का ही एक वर्ग आहत हुआ था और इस वर्ग को उस समय के इगलैड की एक सामान्य विशिष्टता नही माना जा सकता।

मि पिकविक का समय 'प्रथम सुधार बिल' (फर्स्ट रिफार्म बिल) का समय था जिसे सक्रान्तिकाल की सज्ञा दी जा सकती है—इसमे पुरानी तथा नई आर्थिक प्रणालियो का समिश्रण था और इस मिश्रण मे भी पुरानी व्यवस्था की ही प्रधानता थी। खेतो पर काम करने वाले मजदूरो तथा छोटे-छोटे कारखानो मे काम करने वाले उद्यमी लोगो की सख्या खान-मजदूरो तथा कारखानो मे काम करने वाले लोगो की तुलना मे अधिक थी। इसके अतिरिक्त लोगो के घरो पर काम करने वाले नौकरो की सख्या काफी अधिक थी। इस शताब्दी के तीसरे दशक मे घरो पर काम करने वाली नौकरानियो की सख्या ही कपडे के कारखानो मे काम करने वाले पुरुषो, स्त्रियो तथा बच्चो की कुल सख्या से 'पचास प्रतिशत अधिक थी।' (क्लैपहम, I, पृ० ७३) घरेलू नौकरो की व्यावसायिक एव आर्थिक दशाओ का अध्ययन आर्थिक अथवा सामाजिक इतिहासकारो ने बहुत थोडा किया है और इस प्रकार का अध्ययन वास्तव मे कठिन भी अत्यधिक था क्योंकि मालिको की दशाओ के साथ नौकरो की स्थितिया भी सभी घरो मे एक सी नही थी। जैसा कि हम सभी जानते है, श्री सैमुअल वेलर अपने वर्ग के सुविधा प्राप्त व्यक्ति थे जिन्हे कम काम करने पर भी अधिक प्राप्ति हो जाती थी। वह स्वय तथा मैरी (न्यूपकिन्स की नौकरानी) यद्यपि 'रिफार्म-बिल' से प्रसन्न थे लेकिन विचारो मे क्रान्ति प्रिय व्यक्ति नही थे।

इसी प्रकार कारखाने अथवा घरेलू नौकरी की सम्भावना से दूर अकुशल लोगो का एक बडा वर्ग और था जो साधारण मजदूरो के रूप मे इधर-उधर स्थानान्तरित होता रहता था और नहर खोदने,[१] सडक बनाने का काम करता था—उनकी अगली पीढी रेलो के लिये सुरगे बनाने का काम भी करने लगी थी। उत्तरी क्षेत्र मे अधिकाश आयरिश लोग इसी वर्ग मे थे, लेकिन दक्षिण मे अधिकाश आयरिश इगलिश गावो मे अतिरिक्त (सरप्लस) कामगारो के रूप मे ही काम करते थे और इस क्षेत्र मे उन्हे कारखानो तथा खानो मे भी मजदूरी मिल पाना अत्यन्त कठिन था। कुछ उच्च वेतन प्राप्त इजीनियर इन अप्रशिक्षित मजदूरो के दलो मे अधिकारी नियुक्त किये गये थे और रेलवे निर्माण कार्यों तथा सुरगे बनाने के लिये तो उनकी सख्या तथा वेतन मे और भी वृद्धि कर दी गई थी। लेकिन कुल मिलाकर ये मजदूर अपने कार्य मे बहुत ही कम कुशल तथा अज्ञ थे और औद्योगिक क्षेत्र के अन्य नवोदित वर्गो की तुलना मे इन्हे वेतन भी बहुत थोडा मिलता था। ये लोग वास्तव मे इस नये युग के घुमन्तू प्राणी थे और इनकी पूंजी केवल उनकी शारीरिक शक्ति थी।

इन अकुशल मजदूरो से प्रशिक्षित इन्जीनियरो तथा मिस्त्रियो की स्थिति नितात भिन्न थी। मशीन को सुधारने तथा बनाने वाले लोग ही वास्तव मे

---

[१] ये श्रमिक 'नेवीज' कहलाते थे और इसी आधार पर स्थानीय नाविको के लिये भी शब्द का प्रयोग होने लगा था।

'औद्योगिक क्रान्ति' के श्रेष्ठजन (एलीट) तथा अगरक्षक थे। उन्हे अपने अन्य सहयोगी मजदूरो की अपेक्षा वेतन भी अधिक मिलता था, वे बुद्धिमान भी अधिक थे और शिक्षा आन्दोलन मे भी अगुआ थे मालिक भी उन्हे सम्मान की दृष्टि से देखता था क्योकि तकनीकी ज्ञान मे उनकी अधिक जानकारी होने के कारण मालिक को बहुधा ही उनसे परामर्श करते समय उनके सम्मुख झुकना पडता था। प्रगति तथा आविष्कार के क्षेत्र मे वे सबसे आगे थे और इस नये युग का नेतृत्व करने मे आनन्द का अनुभव करते थे। इस प्रकार के कार्यकर्त्ताओ को टाइनेसाइड का स्टोफेन्सन कहा जा सकता है—वास्तव मे स्टीफेन्सन, जिसने कि रेलवे एजिन का आविष्कार किया था, सत्रह वर्ष की आयु मे साक्षर हुआ था और उसके विकास मे 'मध्यवर्ग' का कोई भी भाग नही था।

वास्तव मे कोयला खानो तथा कपडे के कारखानो मे काम करने वाले मजदूरो के प्रारम्भिक इतिहास की पुनर्रचना करना उतना कठिन नही है जितना मिस्त्रियो तथा इन्जीनियरो के इतिहास की रचना करना, क्योकि ये लोग समूचे देश मे बिखरे हुए थे और किसी एक क्षेत्र मे उनका विकास नही हो पाया। लेकिन मिस्त्रियो तथा इन्जीनियरो के जीवन को देखे बिना औद्योगिक क्रान्ति के आदि काल तथा कुसमय का चित्रण अत्यन्त अस्पष्ट होगा। इस युग मे जिस आदर्श का उदय हो रहा था वह वास्तव मे 'स्वावलम्बन' था जिसके प्रभाव मे अनेको कमजोर तथा कम सौभाग्यशाली लोग उपेक्षित रह जाते थे, लेकिन मालिको तथा मध्यस्थता करने वाले लोगो के दलाल-वर्ग के अतिरिक्त भी कुछ ऐसे वर्ग थे जिन्हे इस व्यक्तिवादी नैतिक बौद्धिक विचारधारा से लाभ पहुचा और उन्होने अपने पुरुषार्थ का प्रदर्शन भी किया।

सामान्य वैज्ञानिक शिक्षा प्राप्ति के उद्देश्य से यान्त्रिकी के अध्ययन द्वारा 'प्रौढ शिक्षा' को सर्वप्रथम मान्यता मिली, और मध्य-वर्ग के कुछ बुद्धिजीवियो ने इस भाग को पूरा करने मे अपना सहयोग भी दिया। यह आन्दोलन अशत व्यावसायिक तथा उपयोगितावादी आन्दोलन था और अशत बौद्धिक तथा आदर्शात्मक उत्तरी क्षेत्रो का अपेक्षाकृत श्रेष्ठ कार्यकर्ताओ का वर्ग तटस्थ वैज्ञानिक दृष्टि से अधिक सयुक्त था। सन् १८२३ मे डा बर्कबेक द्वारा स्थापित स्कॉटलैड का यान्त्रिकी प्रशिक्षण केन्द्र (मेकेनिक्स इन्स्टीट्यूट) सम्पूर्ण इगलैड मे प्रचलित हो गया। यान्त्रिकी प्रशिक्षण के प्रसार की इस चिनगारी को हैनरी ब्रोहम की प्रचारवादी तथा सगठनात्मक प्रतिभा ने, अपने सर्वश्रेष्ठ जन सेवाकाल मे ससद तथा देश हित के लिये उसकी भावी आवश्यकताओ की चर्चा कर तथा वास्तविक 'विरोध' की भूमिका अपना कर इस चिनगारी को एक हवा दी थी और वह भडकने लगी थी। पीकॉक जैसे कुछ आत्मतृप्त पुरातनवादी विद्वान अपने इस 'विद्वान मित्र' तथा उसके 'वाष्पीय-बुद्धिवादी समाज' ('स्टीम इन्टेलेक्ट सोसायटी') की हसी उडा सकते है लेकिन वास्तव मे यह नया युग ऑक्सफोर्ड तथा

कैम्ब्रिज की चारदीवारी मे बन्द केवल शास्त्रवादी विद्वत्ता की भाति सामान्यजन के उपयोग से पृथक नही रह सकता था ।

इन यात्रिकी प्रशिक्षण सस्थाओ की सफलता से, जिनका कि वार्षिक शुल्क एक गिनी था यह स्पष्ट हो गया कि चाहे अन्य श्रमिक वर्गो का कुछ भी बने लेकिन औद्योगिक क्रान्ति से मिस्त्रियो तथा इन्जीनियरो को अवश्य ही लाभ पहुचा था। 'फ्रासिस प्लेस' तथा रेडिकल टेलर' ने जैकोबिन विरोधी स्थितियो से उत्पन्न आतक द्वारा एक पीढी पूर्व जिन श्रमिक वर्गो का दमन हो गया था उनके स्व-शिक्षण के प्रारम्भिक प्रयत्नो के पुनरागमन को भली-भाति देखा था, लेकिन सन् १८२८ मे आठ सौ से नौ सौ की सख्या मे सम्मानित प्रतीत होने वाले मिस्त्रियो को रसायन शास्त्र के एक व्याख्यान को सुनते हुए देखकर उसे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। उस वर्ष 'मैकेनिक्स' मेगर्जान की १६००० प्रतिया बिक गई थी और १५०० श्रमिको मे से प्रत्येक ने लन्डन इन्स्टीट्यूट को एक गिनी शुल्क भी भेजा था। व्यापक ज्ञान का प्रकाशन अब सस्ती पुस्तको तथा पत्रिकाओ द्वारा होने लगा था और जिज्ञासु विद्यार्थी उनका उपयोग करने लगे थे ।

जिस समय प्रौढ-शिक्षा और स्व-शिक्षा का प्रचलन बढ रहा था, लन्डन विश्व-विद्यालय की स्थापना (१८२७) पर भी इस उद्देश्य का पर्याप्त प्रभाव पडा था। ऑक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज से जिन धर्म निरपेक्षतावादियो तथा विरोधियो को वचित कर दिया गया था उन्होने सगठित होकर राजधानी मे एक और शिक्षण सस्था की स्थापना कर डाली थी और—उसके पाठ्यक्रम मे जहा धर्मशास्त्रीय अध्ययन को सम्मिलित नही किया वही अध्यापको तथा विद्यार्थियो को भी धर्मशास्त्रीय परीक्षा से मुक्त कर दिया था। इस नवजात विश्वविद्यालय का रुझान आधुनिक विषयो तथा विज्ञान के अध्ययन की ओर था। विशुद्ध शास्त्रीय (क्लासिकल) पाठ्यक्रम को चर्च तथा राज्य सगठन का भाग माना जाता था। इस उपयोगितावादी मनोवृत्ति का नगर के असुविधाग्रस्त वर्गो पर अत्यधिक प्रभाव पडा। लन्डन विश्वविद्यालय की स्थापना यद्यपि एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक घटना थी लेकिन उस समय उसका वास्तविक महत्व उस पर किये जाने वाले साम्प्रदायिकतावाद तथा पक्षपात के दोषारोपणो के कारण विलीन हो गया था।

प्राथमिक शिक्षा को धार्मिक तथा साम्प्रदायिक झगडो से जो विरोधियो की सख्या बढ जाने के कारण इस युग की विशेषता हो गए थे, लाभ तथा हानि दोनो ही हुए थे। लेकिन चर्च के पक्ष धर लोग किसी भी प्रकार अपने प्राप्त अधिकारो एव सुविधाओ से वचित नही होना चाहते थे। एक ओर शिक्षा के लिये जनता का पैसा इसलिये नही लिया जा सकता था कि चर्च के अनुसार वह पैसा केवल राज्य-धर्म के सरक्षण मे ही खर्च किया जा सकता था और विरोधी लोग इस शर्त पर उस सहायता को स्वीकार नही करना चाहते थे और दूसरी ओर विरोधी सम्प्रदाय 'डे-स्कूल्स' (दिवसीय पाठशालाए) तथा 'सण्डे स्कूल्स' (रविवारीय पाठशालाए) चलाने के लिये

जनता से अधिकाधिक धन प्राप्त करने के लिये परस्पर होड भी करते थे। मिस ब्रोन्टे की 'शर्ले' नामक कृति के पाठको को प्रतिस्पर्धी पाठशालाओ द्वारा आयोजित दावतो का दृश्य (अध्याय XVII) याद होगा, जब चर्च पाठशाला के बच्चे 'पादरी तथा एक स्त्री के नियत्रण मे', 'रूल ब्रिटेनिया' की धुन पर तेज चाल से सकडी गली मे मार्च करते हुए गुजरते थे और विरोधी स्कूल के बच्चे भी अपने नियत्रको के साथ मन्द धुन मे गीत गाते हुए गुजर जाते थे। इस स्थिति मे पुरानी अग्रेजी राजनीति, धर्म एव शिक्षा की ही जडे थी।

'ब्रिटिश तथा विदेशी स्कूल सोसायटी' ह्विग सम्प्रदाय तथा अन्य विरोधियो के सरक्षण मे बिना किसी सम्प्रदाय विशेष का पक्ष लिये राष्ट्रीय स्तर पर बाइबिल की शिक्षा प्रदान कर रहा था, जबकि चर्च-सम्प्रदायवादी 'नेशनल सोसायटी फॉर दि एड्यूकेशन ऑफ दि पुअर' नामक प्रतिष्ठान द्वारा इगलैंड के चर्च के सिद्धान्तो के अनुसार उनका प्रतिकार कर रहे थे। प्रथम प्रकार के 'राष्ट्रवादी' अथवा चर्च पाठशालाए इगलैंड के गावो मे शिक्षा के आम साधन थे।

यद्यपि आज की तुलना मे उस समय की शिक्षण व्यवस्था मे कई कमिया थी, लेकिन उस समय, अर्थात् वाटरलू के समय, सभी श्रेणियो के लोगो को बाइबिल का पर्याप्त ज्ञान था और इसी कारण आधुनिक कागजी ज्ञान की विसगतियो की तुलना मे उस समय लोगो की कल्पना शक्ति को भी कही अधिक बल मिला।

नई औद्योगिक स्थिति के विकास के साथ, (जिसमे एपेरेन्टिसशिप तथा परसेवी शिल्पकार और मालिक के वैयक्तिक सम्बन्धो को समाप्त करना भी निहित है, उस स्थिति मे जबकि वेतन निर्धारण की ट्यूडर काल से चली आ रही परम्परा को राज्य ने समाप्त घोषित कर दिया था, श्रमिको के हितो की रक्षा के लिये ट्रेडयूनियन' का हस्तक्षेप आवश्यक था। लेकिन जैकोबिन विरोधी काल (१७९२-१८२२) मे राजनैतिक अथवा विशुद्ध आर्थिक उद्देश्यो मे से किसी के भी लिये मजदूरो का कोई सगठन बनाना 'राजद्रोह' समझा जाता था। आश्चर्य केवल यही है कि मालिको की सहायता करने वाली राज्य की इस भूमिका ने किसी भी प्रकार के हिसात्मक उपद्रव अथवा रक्तपात को जन्म नही दिया। लेकिन इसके कारण 'ल्यूडाइट' अर्थात् गर्म-दलीय प्रवृत्तियो को अवश्य ही बढावा मिला।

नेपोलियन युद्धो के मध्यकाल मे बेरोजगारी, निम्न वेतन तथा भुखमरी नार्टिघमशायर, यार्कशायर तथा लकाशायर के औद्योगिको मे एक साधारण बात हो गई, और इसका प्रमुख कारण नवस्थापित यत्रो का प्रभाव था। सन् १८११-१८१२ मे 'ल्यूडाईट्स' ने नियोजित रूप से मशीनी ढाचो को तोडना प्रारम्भ कर दिया। यद्यपि 'ल्यूडाइट' सगठन के कुछ आयरिश सदस्यो मे हिसा की प्रवृत्ति भी थी लेकिन उससे किसी गम्भीर विद्रोह की आशका नही थी और उनका भय भी केवल इसी

कारण से अधिक था कि द्वीप मे प्रभावशाली पुलिस का अभाव था। इस कारण मशीनो की रक्षा तथा उपद्रवी भीड के दमन के लिये सैनिको को नियुक्त करना पडा। नागरिक पुलिस के अभाव ने राजनैतिक तथा सामाजिक तनावो को और बढा दिया और परिणामस्वरूप पीटरलू की दुर्घटना घटित हुई। पील द्वारा नीले कोटधारी, ऊचा टोप पहनने वाले तथा डडाधारी रक्षको की टुकडी की सन् १८२९ मे की गई स्थापना इस दृष्टि से काफी सहायक सिद्ध हुई। पहली बार इस रक्षक दल का गठन लन्डन क्षेत्र मे किया गया था और वहा इस नवीन पुलिस दल ने 'सुधार बिल' आन्दोलन के समय दो वर्ष बाद ब्रिस्टल तथा अन्य नगरो की भाति आन्दोलनकारियो द्वारा लन्डन को विनष्ट होने से बचाया था अन्यथा लन्डन की पचास वर्ष पूर्व गॉर्डन सघर्षों से जो दशा हो गई थी उस प्रकार की दशा हो सकती थी। जैसे-जैसे पील द्वारा सगठित पुलिस का समूचे देश मे प्रसार होने लगा इगलैड के दैनिक जीवन से पुराना भय एव आतक समाप्त होने लगा।

लेकिन मशीन तोडने के अतिरिक्त भी सन् १८१२ के आन्दोलन का एक पक्ष था। 'ल्यूडाइट्स' ने ससद मे याचिका प्रस्तुत कर वैधानिक तरीको से यह भी माग की कि एलिजाबेथ के शासनकाल से ही चले आ रहे कुछ अधिनियमो को राज्य द्वारा मजदूरो के काम की अवधि तथा वेतन के निर्धारण के लिये तुरन्त कार्यान्वित किया जाना चाहिये।[1] यह माग पूर्णतया उचित माग थी और इस प्रसग मे तो और भी उचित थी कि ये पुरानी अधिनियम—धाराए अपने हितो की रक्षार्थ मजदूरो द्वारा बनाए जाने वाले सगठनो को रोकने के लिये केवल आंशिक रूप से ही लागू की जाती थी और हाल ही मे 'पिट्स कॉम्बीनेशन एक्ट ऑफ १८००' द्वारा मजदूर सगठनो के विरुद्ध स्थिति और भी दृढ हो गई थी। ये कानून आदर्श रूप मे मालिको तथा मजदूरो दोनो ही के सगठनो पर लागू होते थे लेकिन यथार्थत मालिको को अपने सगठन बनाने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी जबकि मजदूरो पर हडताल आदि के लिये मुकदमा चलाया जाता था। सन् १८१३ मे ससद ने एलिजाबेथ कालीन अधिनियमो मे सशोधन किया जिसके द्वारा मजिस्ट्रेटो को न्यूनतम वेतन निर्धारित करने के भी अधिकार प्राप्त हो गये।

मजदूरो को वेतन, काम के घटो तथा कारखाने की दशा के प्रसग मे एक ओर राज्याश्रय से वचित रखना और दूसरी ओर अपनी मागे मनवाने के लिये सगठित न होने देना निस्सन्देह अनुचित था। यह वास्तव मे अहस्तक्षेप नीति (लैसे-फेयर) नही थी बल्कि मालिको को स्वतन्त्रता देना तथा मजदूरो का दमन करना था। अहस्तक्षेप

---

[1] वास्तव मे सत्रहवी शताब्दी के मध्य से ही मजिस्ट्रेटो द्वारा मजदूरो के अधिकतम वेतन निर्धारण से मजदूरों को कोई लाभ नही होता था।

नीति के प्रभावशाली समर्थक विद्वान, जैसे रिकार्डो, इस प्रसग मे मजदूरो की ओर थे और श्रमिक सघ (ट्रेड यूनियन) को वैधानिक मानने की माग कर रहे थे।

अन्त मे सन् १८२२ के बाद से जैकोबिन-विरोधी आन्दोलन शान्त होने लगा था गृह मन्त्रालय मे पील के साथ ही सरकार की दमन नीति मे अन्तर आने लगा था और सन् १८२४-१८२५ मे नये युग की माग के अनुसार 'हाउस ऑफ कॉमन्स' जोसेफ ह्यूम तथा फ्रान्सिस प्लेस के प्रयत्नो से 'पिट्स कॉम्बीनेशन एक्ट' के सशोधन तथा 'श्रमिक-सघ' को वैधानिक मानने के लिये तैयार हो गया था। इसके बाद से अनेक श्रमिक सगठन तथा सामूहिक गतिविधिया तेजी से पनपने लगी थी और 'कॉम्बीनेशन एक्ट' के बने रहने पर, जिसकी कि आशका हो सकती थी, क्रान्ति को टाल दिया गया।

यह नही मान लेना चाहिये कि वर्ग सघर्ष इगलैड मे निरपेश रूप मे विद्यमान था अथवा सभी मालिक अपने कामगारो अथवा उनकी कठिनाइयो के प्रति उदासीन थे। मालिको मे एक प्रबुद्ध वर्ग ऐसा भी था जिसने श्रमिक सघो को वैधानिक मानने मे पर्याप्त सहयोग दिया। और नैपोलियन के युद्धो के दौरान उपक्रमी उद्योगपति सर राबर्ट पील बडे ने जो एक होनहार पुत्र के पिता थे, कारखानो मे बच्चो के राज्यारक्षण के लिये, विशेष रूप से गरीब नौसिखियो के लिये जिन्हे दास बना कर रखने की प्रथा काफी बढ गई थी, आन्दोलन चलाया था। निस्सन्देह सर राबर्ट भी, जिन्होने कि स्वय १५,००० मजदूरो को काम के लिने अपने यहा नियुक्त कर रखा था, एक अश तक अपने प्रतिद्वन्द्वियो की निर्लज्ज प्रतिस्पर्धा को नियन्त्रित करने के इच्छुक थे। लेकिन 'सुधार-बिल' के पहले के फैक्ट्री अधिनियम न केवल अपने क्षेत्र मे अत्यधिक सीमित थे, बल्कि उन्हे कार्यान्वित करने वाली प्रशासन व्यवस्था के अभाव मे मृत प्राय भी हो गये थे।

दुर्भाग्य मे शताब्दी के प्रारम्भिक काल मे मजदूर वर्ग के हित मे राज्य के नियन्त्रण की कल्पना ब्रिटेन के शासको के अनुकूल नही थी। राबर्ट ओवन ने प्रशासको के सामने जब अपना यह प्रस्ताव रखा कि वह अपनी 'न्यू लैनार्क मिल्स' को विश्व के सम्मुख यह आदर्श प्रस्तुत करने के लिये तैयार है कि नवीन उद्योग व्यवस्था मे किस प्रकार स्वस्थ एव उच्चस्तर का वातावरण बनाया जा सकता है, काम के घटे, वेतन, कल्याण कार्यों, शिक्षा तथा कामगारो के जीवनस्तर मे प्रगति की जा सकती है, तो उसके प्रस्ताव पर प्रशासको ने कोई ध्यान नही दिया। ओवन का यह भी आग्रह था कि ऐसा प्रबन्ध राज्य द्वारा सभी कारखानो मे किया जा सकता है। लेकिन लोग न्यू लैनार्क मिल्स की प्रशसा करते हुए भी उसका अनुकरण करने के लिये तैयार नही थे। इस आधुनिक विचारधारा को कि वातावरण ही मनुष्य के चरित्र की रचना करता है और उसे वह नियन्त्रित कर सकता है, ओवन ने शीघ्रता से ग्रहण कर लिया था और अब उसका प्रसार भी कर रहा था, लेकिन अन्य लोग उसे पूरी तरह नही

समझ पा रहे थे। जिस महान अवसर को उसकी दृष्टि ने देख लिया था वह तब तक ओझल ही रहा जब तक कि इस शताब्दी के मन्द विकास क्रम मे राज्य ने कारखानो के नियत्रण एव कामगारो के जीवनस्तर सम्बन्धी प्रश्नो को जिन्हे कि ओवन तथा कासलरीघ की 'कैबिनेट' के सामने बार-बार विचाराधीन रखता आ रहा था स्वीकार नही कर लिया। उन्नीसवी शताब्दी के अन्त मे कुछ तो 'फ़ैक्ट्री एक्ट्स' के कारण तथा कुछ 'श्रमिक सघ' की गतिविधियो के कारण कारखानो मे कामगारो के जीवनस्तर मे काफी वृद्धि हुई थी लेकिन कुछ ऐसे श्रमसाध्य घरेलू व्यवसाय जैसे पोषाक उद्योग जिन्हे कि कारखानो पर लागू होने वाले नियत्रणो के अन्तर्गत सम्मिलित नही किया जा सका था, अभी कुछ समय के लिये दमनकारी स्थितियो मे थे—स्त्रियो की दशा इन उद्योगो मे विशेष रूप से शोचनीय थी।

युद्धोत्तरकाल मे हो रहे सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओ के यथातथ्य चित्रण के लिये हमे इस धारणा को बिलकुल छोड देना होगा कि 'औद्योगिक क्रान्ति के पूर्व श्रमिक वर्गो की आर्थिक दशा कुल मिला कर काफी खराब थी और औद्योगिक क्रान्ति के पूर्व श्रमिक वर्गो की नये प्रकार की कठिनाइयो के प्रति काफी आक्रोश था और विगत की अपेक्षा उनकी शिकायते मुखरित भी अधिक हुईं फिर भी कुल मिला कर उनकी आर्थिक दशा काफी गिरी हुई थी। इस काल के आर्थिक इतिहास पर सर्वाधिक अधिकार प्राप्त व्यक्ति प्रो क्लैपहम के अनुसार 'यह कथन कि श्रमिको की स्थिति मे पीपल्स चार्टर के लेखन काल से 'ग्रेट एक्जीबीशन' काल के बीच निरन्तर ह्रास होता रहा' सही नही है। 'यह तथ्य कि सन् १८२०-१ मे मूल्य मे कमी हो जाने के बाद से सामान्यत लोगो की क्रय-क्षमता क्रान्ति तथा नेपोलियनिक युद्धो की पूर्व स्थिति की अपेक्षा निश्चित रूप से अधिक थी प्रचलित स्थिति के इतना विरुद्ध है कि उसकी चर्चा यदा कदा ही किसी ने की है, वेतन और मूल्यो पर साख्यिकी-अधिकारियो द्वारा किये गये कार्य को सामाजिक-इतिहासकारो ने निरन्तर उपेक्षित ही रखा है'। (प्रिफेस टु दि 'इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न ब्रिटेन)।'

यह सत्य भी है और महत्वपूर्ण भी, लेकिन केवल मजदूरी की क्रय-क्षमता ही सम्पूर्ण मानवीय सुख नही है, बहुतो के लिए जीवन की सुविधाए और मूल्य उनके ग्रामीण पूर्वजों द्वारा भुक्त सुविधाओ और मूल्य की तुलना मे कम थे।

अध्याय १६

कोबेट कालीन इंगलैंड (१७६३-१८३२)

[२]

नया युग और नारी–कोष-नियंत्रक–धर्म–पोत परिवहन–नौ सेना तथा स्थल सेना–आखेट सम्बन्धी घटनाएं–खेल के नियम–मानवता ।

कारखानो की व्यवस्था तथा पू जीवादी कृषि प्रणाली के कारण स्त्रियो की व्यावसायिक स्थिति मे अनेको परिवर्तन हुए जिसके फलस्वरूप पारिवारिक जीवन मे भी काफी अन्तर आया और आगे चलकर स्त्री-पुरुप सम्बन्धो पर भी काफी प्रभाव पडा ।[1]

मनुष्य के इतिहास के प्रारम्भिक चरणो मे स्त्रिया तथा बच्चे कुछ उद्योग अपने घर मे ही चलाते थे और स्टुअर्ट तथा हेनरीकालीन इगलैड मे कुटीर उद्योगो का काफी विकास हुआ । मशीनो के आविष्कार के कारण सहसा ही घरेलू उद्योग मे हुए ह्रास का निर्धन जनता के जीवन पर अत्यधिक प्रभाव पडा । अठारहवी शताब्दी के अन्तिम वर्षों मे एक परिणाम यह प्रकट हुआ कि स्त्रियो मे बेरोजगारी काफी बढ गई, और जिस ग्रामीण परिवार की आर्थिक स्थिति को स्त्री तथा बच्चे अपने सहयोग द्वारा सन्तुलित रखते थे उस पर कुठाराघात हो गया और परिवार का विखडन प्रारम्भ हो गया ।

कारखानो की ओर प्रस्थान भी एकदम सम्भव नही हो सका और अनेक स्थितियो मे तो तनिक भी नही हुआ । नेपोलियन के युद्धो के समय कुटीर उद्योगो के ह्रास के कारण स्त्रियो की परम्परागत अर्जन प्रणाली समाप्त हो गई और पुरुषो के साथ उन्हे खेतो पर काम के लिये जाना पडा । बडे पू जीपति किसान स्त्रियो के झु ड के झु ड खुरपी चलाने और निराई के लिये काम पर लगाने लगे । इस प्रकार का रोजगार देहाती स्त्रियो के लिये केवल सामयिक रोजगार ही था जो फसल कटाई के समय समाप्त कर दिया जाता था । लेकिन स्पीनहमलैड के समय बडे कृषक स्त्रियो को पूरे वर्ष के लिये रोजगार देते थे क्योकि नई चकबस्ती के कारण बन्द खेतो मे काफी तैयारी और निराई की आवश्यकता होती थी और निर्धन-कोष के लिये ली जाने वाली राशि का

---

[1] इस प्रसग की कई बाते डा. इवी पिचबेक की 'वीमेन वर्कर्स एन्ड दि इन्डस्ट्रियल रिवोल्यूशन, १९३०' नामक पुस्तक मे उपलब्ध हैं ।

अनुपात भी यदि स्त्री-पुरुष दोनो कमाने वाले हो तो कम ही होता था, और साथ ही स्त्री के कमाने पर मालिक को पुरुष को वेतन भी कम देना पडता था। यह एक कुचक्र था वस्तुस्थिति यह थी कि उस समय पति का वेतन इतना नही था कि वह समूचे परिवार के भरण-पोषण का बोझा ढो सके और इसी कारण पत्नी तथा पुत्रियो को खेत पर मजदूरी के लिये विवश होकर प्रतिस्पर्धी बनना पडता था। जब उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध मे भूमि-मजदूरो का पारिश्रमिक कुछ और बढा और कृषि कार्य सम्बन्धी मशीनो का उपयोग किया जाने लगा तभी स्त्रियो की नियुक्ति मे पुन पहले की भाति कुछ कमी आई।

पुरानी व्यवस्था मे अनेक ग्रामीण स्त्रिया हल चलाने, घर की गाय अथवा शूकर की देखभाल करने, खरीदारी करने अथवा लघुस्तरीय स्थानीय व्यापार को चलाने मे सक्रिय भाग लेती थी प्राचीन इगलैड मे, आज के फ्रास की भाति, पत्नी बहुधा ही अपने पति के साथ एक साथी अथवा सहयोगी की भूमिका निभाती थी। लेकिन बडे फार्मों तथा वृहत् स्तरीय व्यापार की वृद्धि ने स्त्रियो को इन पारम्परिक कार्यों से पृथक् कर दिया जिसके कारण जहा कुछ स्त्रिया निष्क्रिय होकर भद्र महिलाओ (लेडीज) के रूप मे ढल गई, अन्य स्त्रिया या तो खेतो पर अथवा कारखानो मे मजदूरी करने लगी और कुछ अन्य मजदूर पत्नी के रूप मे अपना सारा समय केवल घर की देखभाल मे लगाने लगी।

जैसा कि अधिकाश मानवीय परिवर्तनो मे हुआ करता है इसमे भी कुछ हानि तथा लाभ दोनो ही निहित थे। अब घर कोई छोटा उद्योग-स्थल नही था अत अधिक आरामदायक, शान्त तथा स्वच्छ था उदाहरणार्थ, घरेलू स्तर पर कपास को खेतो से उठाने और साफ करने का कार्य अब कारखानो के जिम्मे चला गया था और इससे अनेको गृहवधुए पहले की अपेक्षा अधिक प्रसन्न थी और अनेको घर सुखदायी स्थलो मे परिवर्तित हो गये थे।

इसके अतिरिक्त, जो स्त्रिया कारखानो मे काम करने जाती थी यद्यपि उन्हे जीवन के कुछ बहुमूल्य पक्षो से हाथ धोना पडा लेकिन इसके बदले उन्हे स्वाधीनता अवश्य प्राप्त हुई। जो धन कमाती थी उस पर उन्ही का अधिकार था। कारखाने मे काम करने वाली स्त्री का एक निजी आर्थिक महत्व था जिसे कालान्तर मे अन्य स्त्रिया ईर्ष्या की दृष्टि से देखती थी। स्वतन्त्रता प्राप्ति की आकाक्षा से सम्बन्धित यह ईर्ष्या केवल कारखानो मे काम करने वाली लडकियो तक ही सीमित नही थी। उच्च-वर्गों की स्त्रिया भी इसका अनुभव करती थी। उन्नीसवी शताब्दी के मध्यकाल मे अवकाश जीवी वर्ग (लेजर्ड क्लास) की ब्रोन्टे बहिने तथा फ्लोरेन्स नाइटइगेल जैसी युवतिया भी यह अनुभव करने लगी थी कि कारखानो मे कमाने वाली स्वावलम्बी स्त्रिया 'भद्र महिला' के लिये भी एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत कर रही है।

विक्टोरियाकालीन 'भद्र महिला' तथा उसकी रीजेन्सी कालीन माता के पास बहुधा करने के लिये कुछ नही था सिवाय इसके कि पुरुष उन्हे स्वीकार करे और धन दे, और वे पुरुष की इच्छानुसार अपना निजी अर्जन करने वाली स्वावलम्बी नारी के अनुरूप पूर्णता प्राप्त करने मे लगी रहती थी।[१] इसमे कोई सन्देह नही की अवकाश जीवी महिलाओ की निरन्तर बढती हुई सख्या ने साहित्य एव कला को सरक्षण प्रदान करने मे तथा पठनशील जनता की वृद्धि मे पर्याप्त सहयोग दिया था। और कुछ अवकाश जीवी महिलाए—जैसे, जेन आस्टीन, मेरिया एजवर्थ तथा हन्ना मूर इतनी शिक्षित भी थी और उनके पास इतना समय भी था कि स्वय अच्छी कलाकार तथा लेखिकाए बन गई। यह एक अच्छी बात थी। लेकिन कई नवयुवतिया, जो कि स्कॉट तथा बायरन के रूमानी काव्यो मे अत्यधिक विभोर रहती थी और इन कवियो की नायिकाओ का अनुकरण भर करती रहती थी, वे निस्सन्देह अवकाशातिरेक से पीडित थी। कला और साहित्य मे प्रकट होने वाले फैशन, जीवन-पद्धति को, और कभी-कभी शालीन वर्गो के बाह्य आवरण को भी, प्रभावित करते थे। स्कॉट रचित नकली-मध्ययुगीन तथा प्रेमातुर नायक द्वारा पूजित नायिका के आदर्श तथा बायरन रचित स्त्री के 'सुल्तानी' रूप ने भविष्य मे अत्यधिक प्रचलित हो जाने वाले निरर्थक तथा बनावटी स्त्रीत्व को उभारने मे काफी सहयोग दिया।

जैसे-जैसे उच्चवर्ग अधिकाधिक धनी होते गये और ग्रामीण अभिजातवर्ग शहरी प्रभाव मे आता गया, लडकियो के लिये पाठशाला मे 'गवर्नेस से पढना और उसके बाद घर के काम काज मे जितना कम हो सके भाग लेना और अधिकाश ड्राइग रूम मे ही बैठना आत्म गौरव का विषय बन गया। मिस ऑस्टीन के उपन्यासो मे जिनमे महिलाए छोटे से उच्चवर्ग का ही प्रतिनिधित्व करती है, वे कविता पढने, गपशप करने और अभिजात लोगो के आकर्षण-केन्द्र बनने के अतिरिक्त और कुछ भी नही करती। बडे राजनैतिक परिवारो मे निस्सन्देह स्थिति दूसरी थी लेन्सडाउन अथवा हालैड हाउस मे स्त्री की जीवन-चर्या इतनी सीमित तथा उबाने वाली कदापि नही थी।

इसके अतिरिक्त, नृत्य को छोडकर 'भद्र महिलाओ' को शारीरिक व्यायाम के लिये भी उत्साहित नही किया जाता था। इस काल मे शिकार तो बहुत ही कम महिलाए खेलती थी, विक्टोरियाकालीन कठिन युग मे, जैसाकि पच के चित्रो तथा ट्रोलोप के उपन्यासो मे दिखाया गया है, महिलाओ मे शिकार का शौक एक अधिक

---

[१] विक्टोरियाकालीन 'मैरिड वीमेन्स प्रापर्टी एक्ट्स' अधिनियम बनने के पूर्व विवाहोपरान्त स्त्री की सम्पत्ति पर स्वत ही पति का अधिकार हो जाता था। यह आश्चर्य ही था कि यह कानून विवाह के समय आदान-प्रदान होने वाले इन धार्मिक शब्दो के प्रसग मे कि 'मैं अपना सभी कुछ तुझे अर्पित करता हू' एक अन्तर्विरोध उत्पन्न करता था।

आम बात हो गई। इस पूर्ववर्ती युग की महिला से यही अपेक्षा की जाती थी कि वह सूती-ऊनी कपडो मे ही अपनी देह को वेष्टित रखे। जब एलिजाबेथ बेनेट गीले मौसम मे तीन मील पैदल चलकर 'दुखते हुए टखनो, गन्दे मोजो और थकान से हाफते हुए लाल चेहरा लिये, नीदरफील्ड पहुँची तो श्रीमती हर्स्ट तथा मिस बिगले ने इसे अनुचित समझ कर उसे रोक लिया था। उत्तर मे भी सन् १८०१ मे वर्ड्सवर्थ ने एक कविता लिखी थी जिसका शीर्षक 'देहात से दूर तक पैदल यात्रा करने वाली 'भद्र महिला,' जिसकी भर्त्सना की गई थी। और इस कविता मे उसने उसे धीरज बधाने का प्रयत्न किया था। यह एक विसगति थी क्योकि समाज के कम कृत्रिमता-पूर्ण वर्गों मे अपने काम पर आने जाने मे स्त्रिया काफी दूर तक पैदल चला करती थी, वेल्स की स्त्रिया तो प्रत्येक वर्ष वेल्स से लन्डन तक और वापिस राजधानी के निकट के फल के बगीचो मे मौसमी रोजगार के लिए पैदल ही यात्रा करती थी।

उच्चवर्ग की स्त्री निरन्तर शक्तिहीन हो रही थी और जीवन के वैविध्य से उसे लगातार विलग किया जा रहा था और इसका कारण पुरुष की सम्पन्नता मे वृद्धि और कृत्रिमताओ की समृद्धि था। पुराने आत्मनिर्भर जमीदार घरानो मे, जहा घर मे और बाहर करने के लिए बहुत से काम थे, अच्छे परिवारो की जैसे पास्टन्स तथा वरनीज की, महिलाओ के जिम्मे कई काम सौपे जाते थे। लेकिन अब आलस्यपूर्ण जीवन भद्र महिला के जीवन की एक प्रमुख विशेषता बन गया था।

निस्सन्देह, सम्पन्न परिवारो मे भी कुछ स्त्रिया स्वय को सक्रिय बनाए रखती थी और पुराने ढग के कुछ न कुछ उपयोगी काम करती रहती थी, और हन्नामूर जैसे कुछ अन्य परिवारो की स्त्रिया समाज सुधार तथा बौद्धिक कोटि के आधुनिक कार्य सम्पन्न करती थी। लेकिन इस नई शताब्दी के लिये वास्तविक खतरा 'आश्रित' अथवा 'आरक्षित' भद्र-महिला के मिथ्या आदर्श से है। और इगलैंड जैसे प्रदर्शन-प्रिय समाज मे, जहा निम्नवर्गीय लोग उच्चवर्गों का सदैव अनुकरण करते है, फैशन सम्बन्धी मिथ्या आदर्श निम्न बुर्जुआवर्ग से भी जो कि अब नगरो की सीमान्तीय बस्तियो मे भी विकसित हो रहा था, फैल गया।

देहाती क्षेत्रो मे भी धनी किसानो की पत्नियो को गृह कार्य के लिये अनुपयुक्त नाजुक 'भद्र-महिलाओ' के रूप मे देखना प्रारम्भ हो गया था। पुराने काल मे कृषक पत्नी सदैव (जैसी कि वह आज भी है) अत्यधिक व्यस्त गृहणी थी, घर की देखभाल से लगाकर खेत की देखभाल तक मे वह भाग लेती थी। दुग्धशालाओ मे देखभाल का भार वह स्वय उठाती थी, दूध निकालने वाली को तडके ही उठा देना और देर तक स्वय मक्खन अथवा पनीर बनाने के कार्य मे जुटे रहना उसकी विशेषता थी। पश्चिमी क्षेत्र को, जहा से कि पनीर तथा मक्खन लन्डन पहुँचता था, दुग्ध व्यापार से विशेष आर्थिक लाभ होता था और इसमे स्त्री का भाग अत्यन्त महत्वपूर्ण था। दूसरे

व्यवसायो मे, जैसे खेती मे, गृहिणी गृह-कार्यों से ही अधिक सम्बद्ध थी। उसे केवल अपने परिवार के लिए ही भोजन नही बनाना पडता था बल्कि वही रहने वाले तथा उसकी रसोई मे ही भोजन करने वाले मजदूरो के लिए भी भोजन की व्यवस्था उसी को करनी पडती थी। वह वास्तव मे कठोर परिश्रम करने वाली तथा कम विश्राम करने वाली स्त्री थी।

लेकिन उन्नीसवी शताब्दी के प्रारम्भ मे ये घरेलू स्थितिया नये प्रकार के बडे और घेरेदार खेतो के बन जाने से काफी बदल गई थी। खेत पर काम करने वाले मजदूरो की सख्या काफी बढ गई थी और इस कारण अपने मालिक के साथ ही रहने और भोजन करने की सुविधा उन्हे उपलब्ध नही थी। कोबेट के अनुसार, इस नये धनी किसान के घर का स्तर अब ऐसा नही था कि गदे जूतो वाला श्रमिक उसमे प्रवेश पा सकता। बडे किसानो ने अपनी पत्नियो को गृह-कार्यो से मुक्ति दिलाने तथा भद्रता के प्रदर्शन के लिए अलग से नौकर रख लिए थे। यह कहा जाता था कि इन किसानो की लडकियो को गृह-कार्यो की शिक्षा देने तथा दुग्धशाला सम्बन्धी कार्यो मे निपुण बनाने की अपेक्षा नृत्य सीखने, फ्रेन्च बोलने तथा वीणा बजाने की शिक्षा के लिए 'बोर्डिंग स्कूल' भेजा जाने लगा।

लेकिन यह पूर्णतया केवल धनी-मानी किसान-परिवारो तक ही सीमित था जिनमे से कुछ तो निस्सन्देह धीरे-धीरे भद्र-लोगो की श्रेणी मे आते जा रहे थे। कृषक वर्ग मे वास्तव मे कई स्तरो के लोग थे। उत्तरी क्षेत्र के किसान 'भद्र-लोगो' का उस प्रकार से अनुकरण नही करते थे जिस प्रकार कि स्पीनहमलैंड के किसान करते थे, उत्तरी क्षेत्र का कृषक-मजदूर दक्षिणी क्षेत्र के सर्वहारा की अपेक्षा अधिक स्वाधीन था और उसमे तथा उसके मालिक मे सामाजिक पार्थक्य उतना स्पष्ट नही था, जगली गडरियो के विषय मे यह बात और भी सत्य है। फिर समूचे इगलैंड मे अब भी ऐसे हजारो फार्म (खेत) थे जहाँ परिवार की स्त्रियाँ सभी प्रकार के कामो मे हाथ बटाती थी और कई स्थानो पर तो नौकरो अथवा मजदूरो का भरण-पोषण भी मालिक के ही परिवार मे होता था।

इस काल की स्त्रियो की चर्चा करते समय वेश्याओ की एक बडी सख्या का उल्लेख भी आवश्यक है। वास्तव मे वेश्यावृत्ति सभी युगो मे रही है और उसके परिणाम एव स्तर मे देश की जनसख्या तथा धन के साथ ही वृद्धि भी होती रही है। उद्धार कार्य के अतिरिक्त, जो उन दिनो पादरी लोग कर रहे थे, इस सम्बन्ध मे कभी कुछ नही किया गया था। इस रोग ने, जिस पर जनता का कोई नियन्त्रण नही था, नगरो को पूरी तरह ग्रस्त कर लिया था, गली-गली से अर्ध रात्रि मे उठने वाली चीख-चिल्लाहटो ने लोगो का जीवन दूभर कर दिया था। धनी-मानी वर्गों की बढती हुई प्रतिष्ठा से रखैल स्त्रियो की सख्या तथा स्थिति मे, जिन्होने कि अठारहवी शताब्दी के

समाज मे एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, काफी गिरावट आ गई। लेकिन इसी कारण सामान्य वेश्याओ की माग बढ गई थी, उनसे गुप्त सम्बन्ध रखने पर प्रतिष्ठा को उतना खतरा नही था जितना कि खुले आम रखैल रखने पर अब उत्पन्न हो गया था। कठोर नैतिक आचारो के कारण, जिनकी रचना और रक्षा मे माता-पिताओ का भी काफी भाग था, किसी प्रकार एक बार लडकी के वेश्यावृत्ति अपना लेने पर सामान्य जीवन मे पुन लौट पाने की अनुमति नही मिल पाती थी। और किसी अकेली स्त्री को अपनी आर्थिक दशा के कारण भी इस व्यवसाय को स्वीकार करने के लिए बाध्य होना पडता था। कुटीर उद्योग के ह्रास से कई अनाथ लडकियो को भूख के आगे मस्तक झुका देना पडता था। कम वेतन और कठोर श्रम वाले अव्यवस्थित उद्योगो मे भी वेश्यावृत्ति के प्रति आकर्षण था। कुल मिला कर नियमित वेतन तथा सामान्यत अच्छी स्थिति वाले कारखानो से, यद्यपि उद्योगीकरण की आलोचना करने वाले काफी समय तक इससे इनकार करते रहे है, नैतिक स्तर अधिक समुन्नत था। नई शताब्दी के अगले वर्षो मे जैसे-जैसे वेतन तथा परिस्थितिया अच्छी होती गईं नियुक्त स्त्रियो की आर्थिक दशा तथा स्वाभिमान भी उन्नत होते गये।

नया युग एक बडे अवकाश-जीवी वर्ग को अस्तित्व मे ला रहा था—जिसका न न तो भूमि से, व्यवसायो से या उद्योगो से ही कोई सम्बन्ध था और न व्यापार से ही। नैपोलियन के युद्धो के बाद के वर्षों मे सूद पर रुपया उठाने वाले सेठो (फन्ड होल्डर्स) के बारे मे काफी चर्चा थी कि वे बिना परिश्रम किए ही अपनी साख से ही जीवन का आनन्द उठाते थे।

विलियम तृतीय के शासनकाल से ही राष्ट्रीय ऋण मे प्रत्येक युद्ध के कारण होने वाली वृद्धि जैसे-जैसे हर दस वर्ष के बाद बढती जाती थी, देश पर उसका अधिकाधिक कुप्रभाव पड रहा था। लेकिन वास्तव मे यह ऋण ब्रिटेन की बढती हुई वित्तीय शक्ति से कभी भी अधिक नही हुआ था, और उस पर दिया जाने वाला सूद भी स्वदेश मे ही खर्च हो जाता था। जार्ज तृतीय के शासनकाल के प्रारम्भ मे धन उधार देने वाले सेठो की सख्या १७,००० कूती गई थी, और कुल कर्ज का सातवा भाग उस समय विदेशो मे विशेष रूप से डच व्यापारियो मे, रुका हुआ था। लेकिन वाटरलू के बाद अब ब्रिटेन की विपुल राशि का मात्र पच्चीसवा भाग ही विदेशियो के पास बचा था। सन् १८२९ की राजकीय साख्यिकी के अनुसार सेठो की सख्या २७,५८३९ हो गई थी, जिनमे से २५०,००० छोटे सेठ थे जिनमे से प्रत्येक को २०० पौड अथवा उससे भी कम वार्षिक ब्याज मिलता था।[१]

इससे पर्याप्त सख्या मे परिवारो को वसूल हो पाने वाले धन का वितरण सम्भव

---

[१] हालेवी, हिस्ट्री ऑफ इगलिश पीपुल (पेलिकन एड) II, पृ० २०४-२१२

हो सका था। ऐसे तीस समूह थे, यह हिसाब लगाया गया है कि सन् १८०३ मे रुपया उधार देने वाले सेठो को राज्य द्वारा ब्याज मे दी जाने वाली राशि का पाचवा भाग जनता के खाते मे दे दिया जाता था। यह सम्भव ही था कि अधिकाश सेठ इन साधनो द्वारा अतिरिक्त आय कर रहे थे, लेकिन इनमे से कुछ लोग एकदम निष्क्रिय रह कर भी अपनी छोटी पूँजी को सावधानी से कर्ज पर चढा कर प्रतिष्ठापूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे थे जिनमे अविवाहित स्त्रिया, जिनकी चर्चा श्रीमती गेस्केल ने क्रैनफोर्ड मे की है, विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

कोबेट ने इन सेठो को जनता के कर हडप कर जाने वाले रक्त पिपासु कह कर भत्सर्ना करते समय तथा 'राष्ट्रीय कर्ज' को जब्त कर लेने की माग करते समय यह नही सोचा कि अपनी इस माग द्वारा वह कितने छोटे-छोटे अनआक्रमक प्राणियो के विनाश की माग कर रहे है। कुल मिला कर वह उनसे इसलिए भी घृणा करते थे कि उनके कारण लन्डन का 'Wen' कष्टप्रद हो रहा था, मिड्लसेक्स की कृषीय भूमि को दफना कर बडे व्यापारियो तथा कर्ज देने वाले सेठो के मकान बनाये जा रहे थे। कोबेट का रुझान चूकि अपने पुराने जमीदारी देहात की ओर अधिक था उसे यह जड विहीन कृत्रिम समाज और असुन्दर मकानो के अम्बार से उत्पन्न होने वाला दृश्य तनिक भी न सुहा सका। लेकिन ऐसे ही नगरो और लोगो से भावी इगलैड का सम्बन्ध अधिक था।

ब्राइटन जिसे जॉर्ज चतुर्थ का सरक्षण प्राप्त था और जो पैविलियन के निर्माण के लिये भी मशहूर था, उसका लन्डन से घनिष्ट सम्बन्ध था। कोबेट लिखता है 'इस प्रक्रिया को भी देखिए, ब्रिटेन नगर ससेक्स मे समुद्र की ओर लन्डन से पचास मील है और स्टॉक दलालो ने इस स्थान को अनुकूल स्थान मान कर चुना था। यह नगर इस प्रकार बसा हुआ है कि तडके ही यदि कोई गाडी यहा से रवाना न हो तो लन्डन दोपहर तक पहुँचती है—स्टॉक-दलालो के बडे पार्सल स्त्रियो एव बच्चो सहित ब्रिटेन मे ही रहते है। वे गाडी मे आगे पीछे उछलते रहते हे और ब्राइटन मे ही स्थायी रूप से रहते हुए स्टॉक दलाली को चेज ऐली मे चलाते है। (रूरल राइड्स, मई ५, १८२३)।

शताब्दी के प्रथम तीस वर्षों मे एवागेलिकल धर्म के केवल उच्चवर्ग तक ही सीमित न रहकर सभी सामाजिक वर्गो मे प्रवेश कर जाने से लोगो की जीवन-प्रणाली तथा विचारो मे कई परिवर्तन आए थे, यह आन्दोलन वास्तव मे निम्न तबको से प्रारभ होकर ऊपर की ओर फैला था। जैसा कि हम देख चुके है अठारहवी शताब्दी के इगलैड मे मानवतावादी कार्यो, वैयक्तिक आचरण तथा कर्तव्यनिष्ठा से पूरित सक्रिय व्यक्तिवादी प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय एक महत्वपूर्ण तत्व रहा है, लेकिन उदारतावादी चर्च (एस्टेब्लिश्ड चर्च) पर अथवा सुखी वर्गों के स्वच्छन्द जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नही पड सका था। लेकिन जब इन वर्गों ने अपने अधिकारो तथा सम्पत्ति को

नहर (चैनल) पार की जैकोबिन विचारधाराओ से खतरा उत्पन्न होते देखा तब फ्रेन्च 'आस्तिकवाद तथा नास्तिकवाद' से उत्पन्न प्रतिक्रिया ने भद्र वर्ग मे 'गम्भीरता' का वातावरण बनाने मे काफी सहायता की। अब धर्म मे उदासीनतावाद तथा उदारतावाद को विद्रोही तथा अराष्ट्रीय समझा जाने लगा और परिणामस्वरूप लोगो के आचार-व्यवहार मे भी अनर्गलता अथवा मनोविनोद प्रधान जीवन से पाखड अथवा नेकी की ओर परिवर्तन होने लगा। पारिवारिक प्रार्थनाओ का एक व्यापारी से लेकर देहाती घर के भोजन-कक्ष तक मे आयोजन किया जाने लगा। 'रविवासरीय धार्मिक क्रियाओ' का पुनरुत्थान हुआ। सन् १७९८ मे 'एनुअल रजिस्टर' के अनुसार 'निम्न श्रेणियो को आश्चर्य ही था कि इगलैड के सभी भागो मे चर्च के अहाते गाडियो से भरे रहते थे। इस नये दृश्य ने देहाती लोगो मे यह जानने की उत्सुकता भर दी थी कि आखिर मामला क्या है।'

धर्म के प्रति इस गम्भीर परिवर्तन की पृष्ठभूमि मे जैकोबिन विरोधी आतक के अतिरिक्त और कोई बात नही थी, और खतरा टल जाने पर यह प्रवृत्ति भी समाप्त हो सकती थी। लेकिन सन् १८१५ मे पुन शान्ति हो जाने पर भी यह धार्मिक गाम्भीर्य ज्यो का त्यो बना रहा और उसके बाद प्रकट होने वाली उदारतावादी प्रतिक्रिया से इसने समझौता भी कर लिया। विक्टोरियाकालीन भद्र पुरुष और उसका परिवार अपने आचरण एव व्यवहार मे होरेस वालपोल तथा चार्ल्स फॉक्स के समय के अगम्भीर पूर्ववर्तियो की अपेक्षा अधिक धार्मिक तथा अपने विचारो मे अधिक शान्त और गम्भीर थे। उन्नीसवी शताब्दी मे इगलैड के सभी वर्गों ने मिलकर उस देश को एक मजबूत प्रोटेस्टेन्ट राष्ट्र बना लिया था, उनमे से अधिकतर धर्म-प्रतिबद्ध थे और कई (जिनमे उपयोगितावादी तथा नास्तिकवादी भी शामिल थे) नैतिकता के प्रति जो कि 'प्योरिटन' स्वभाव का एक गुण तथा दोष दोनो ही था—काफी गम्भीर थे। निर्धारित नैतिक मूल्यो के पालन तथा साथ ही व्यापार मे लाभ अर्जित करने की परस्पर विरोधी एव सकटपूर्ण स्थिति मे इस नये युग के लोग जीवन की अन्य सम्भावनाओ को भूल गये थे। इस व्यक्तिवादी व्यावसायिकता और व्यक्तिवादी धर्म ने मिल कर स्वावलम्बी तथा विश्वसनीय लोगो की एक नई श्रेणी को, जो अनेक प्रकार से अच्छे नागरिको की श्रेणी थी लेकिन अगली पीढी के एक आलोचक ने जिसे 'फिलिस्टीनो' की श्रेणी के नाम से प्रसिद्धि दी थी, जन्म दिया था। कला अथवा सौन्दर्य की न तो मशीनी कारखानो के लिये और न एवागेलिकल धर्म के लिये ही कोई उपयोगिता थी, अत उन्हे उत्तरी क्षेत्र के औद्योगिक नगरो के निर्माताओ ने स्त्रैण प्रवृत्तिया मान कर उपेक्षित कर दिया था।

समाज के निम्न वर्गों मे फ्रास के रिपब्लिकन नास्तिकवाद के भय से पिछले किसी युग की अपेक्षा वेस्लेयन आन्दोलन को सन् १७९१ मे उसके प्रवर्त्तक की मृत्यु के बाद

से फैलने मे काफी मदद मिली। मेथाडिस्ट चर्चो ने न केवल अपनी सदस्य सख्या सैकडो से हजारो तक बढा ली वरन् बैपटिस्ट जैसे पुराने विरोधी सम्प्रदायो मे भी मेथाडिस्ट भावना का प्रसार कर दिया। फ्रेन्च-क्राति के समय प्रीस्टले तथा उपयोगितावादियो की उदारतावादी तथा उग्र विचारधारा अनुदार अथवा कट्टर कहे जाने वाले अन्य वैमत्य प्रधान सम्प्रदायो मे भी कुछ अशो तक प्रवेश कर गई थी। लेकिन इस उदारतावादी प्रभाव को शताब्दी के अन्त मे प्रकट होने वाली प्रतिक्रियाओ ने नष्ट कर दिया, और उसके स्थान पर सकीर्ण एव कठोर एवागेलिकलवाद का आधिपत्य स्थापित हो गया। इस प्रकार अनेको विद्रोही सम्प्रदायो ने पुन शुद्धिकरण की प्रेरणा ग्रहण की और ईसाई धर्म का प्रचार औद्योगिक क्षेत्रो मे करना प्रारम्भ कर दिया। यह एक ऐसा कार्य था जिसे करने के लिये उस समय 'एस्टेब्लिश्ड चर्च' के पास न तो कोई उत्साह ही शेष था और न कोई सगठन ही था।

युद्ध की समाप्ति के समय जिस नये विद्रोही प्रभाव का प्रसार हो रहा था वह वास्तव मे फ्रास-विरोधी था और मूलत अनुदारतावादी था, इसलिये शासनकर्ता-वर्गो ने इसके बढते हुए प्रभाव और बढती हुई सदस्य सख्या को जिस शकालु दृष्टि से देखा जा सकता था उसकी अपेक्षा कम ही खतरे की स्थिति समझा। रोमन कैथोलिक्स तथा नागरिक समानता के लिये उनके पुर्नधिकार ज्ञापन के प्रति आम अवहेलना ने उस समय के अनुदार (टोरी) उच्चवर्ग तथा नये एवागेलिकल प्रभाव मे आबद्ध विद्रोही सम्प्रदायो के बीच नया सम्बन्ध स्थापित कर दिया जिसके कारण अभिजात वर्गीय ह्विग लोगो को, जिनमे कि अठारहवी शताब्दी की अभिवृत्तिया शेष थी, काफी क्षोभ हुआ। लेकिन जैसे ही युद्ध समाप्त हुआ और जैकोबिन विरोधी आतक शान्त हुआ, असशोधित और सुविधा सम्पन्न चर्च-एस्टेब्लिशमेट को कई शक्तिशाली विद्रोही सम्प्रदायो का सामना करना पडा। ये सभी विद्रोही सम्प्रदाय धार्मिक भावना से ओतप्रोत थे और अपने सौ वर्ष पुराने पूर्ववर्तियो की भाति न तो अशक्त थे और न केवल सहनशीलता को ही अच्छा समझते थे।

एस्टेब्लिशमेट तथा असन्तुष्टो (डिसेन्ट) के बीच तथा जैकोबिन विरोधियो व उदारतावादियो (लिबरल) के बीच के मतभेदो को एक धार्मिक (एवागेलिकल) दल बनाकर तथा उसे 'चर्च' मे स्थान दिला कर समाप्त कर दिया गया था। इसकी विशेषता अगली पीढी के 'ऑक्सफोर्ड आन्दोलन (मूवमेट)' की भाति पादरीवाद का पोषण नही थी। चर्च के पादरियो मे सबसे अधिक कर्मठ निस्सन्देह एवागेलिकल ही थे लेकिन उनकी प्रवृत्तिया चर्च सस्था की रक्षा से कम तथा मानव सेवा के कार्यों से अधिक सम्बद्ध थी और साथ ही वे अपने पादरीत्व के अधिकारो के प्रति भी विशेष चिन्ता नही करते थे। चार्ल्स साइमन तथा कैब्रिज के आइजक मिल्नर को छोड कर सभी प्रमुख 'सन्त' (सेन्ट्स) (एवागेलिकल पादरी सामान्यत. 'सन्त' ही कहलाते थे) साधारण जन थे विल्बर फोर्स स्वय, बक्स्टन्स तथा क्लैपहम 'सेक्ट' सभी इसी श्रेणी के व्यक्ति थे।

अग्रेज भद्र पुरुषो मे सबसे अधिक शक्तिशाली प्रकार का व्यक्ति, इस नये युग मे बहुधा एवागेलिकल होता था। सेना उन्हे सम्मान की दृष्टि से तथा भारत भय तथा कृतज्ञता की दृष्टि से देखता था। स्टीफिन्स परिवार की भाति परिवारो के मध्य से 'डाउनिग स्ट्रीट' स्थायी प्रशासन सेवा (सिविल सर्विस) तथा औपनिवेशिक प्रशासन पर शताब्दी के प्रथम चालीस वर्षों मे उनका प्रभाव निरन्तर बढता गया।

धार्मिक करुणा की अभिव्यक्ति के रूप मे मानवतावादी कार्य उनकी एक प्रमुख विशेषता थी। दास प्रथा के उन्मूलन के लिये वे अपने एवागेलिकल साथियो, वेस्लेयान तथा अन्य विरोधियो (डिसेन्टर्स) के साथ ही नही वरन् स्वतन्त्र चिन्तको तथा उपयोगितावादियो से भी सहयोग के लिये तत्पर थे। विल्बरफोर्स ने खिन्नतापूर्वक यह स्वीकार किया था कि चर्च के पादरियो मे उस समय प्रचलित शुष्क तथा उच्च अनुदार दल ने दासता विरोधी आन्दोलन के मार्ग मे या तो बाधाए उत्पन्न की थी या तटस्थ रहे थे, जबकि विद्रोहियो तथा अनीश्वरवादी सुधारको ने इस आन्दोलन मे अपना पूरा सहयोग दिया। और उसका पक्ष लेते हुए पुराने स्वतन्त्र चिन्तक बेन्थम ने कहा था 'यदि दासता विरोधी होने का अर्थ 'सन्त' होना है तो मै सन्त होना स्वीकार करता हूँ।' इन्ही सयुक्त शक्तियो ने—एवागेलिकल चर्च, विरोधी (डिसेन्टर) तथा उग्र स्वतन्त्र-चिन्तन—ने मिल कर 'ब्रिटिश' तथा फारन स्कूल सोसायटी मे गरीबो की शिक्षा के लिये कार्य किया था, और अगली पीढी मे शैफ्ट्सबरी के फैक्ट्री कानून मे सहायता की थी।

इस प्रकार के परस्पर सम्बन्धो तथा पारम्परिक दल एव साम्प्रदायिकता के ह्रास का अर्थ यही था कि जन-मानस अधिक सक्रिय तथा स्वाधीन हो चला था। अब कई लोग स्वैच्छिक विषयो पर चिन्तन तथा कार्य कर रहे थे, ह्विग अथवा टोरी अभिजात वर्ग के फायदे के लिये ही केवल भीड को प्रभावित करना उन्हे सन्तोषप्रद नही मालूम देता था। सगठित जनमत की इस नवीन शक्ति ने सन् १८०७ मे, निहित स्वार्थों तथा जैकोबिन-विरोधी प्रतिक्रिया के बीच, 'दास-व्यापार' को समाप्त करवा दिया। इस आन्दोलन को पहली विजय के बाद ही समाप्त नही हो जाने दिया गया वरन् सम्पूर्ण ब्रिटिश साम्राज्य के गुलामो को स्वाधीन करने का बीडा भी उठा लिया गया। सन् १८२० तथा १८३० के बीच इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये फॉवेल बक्सटन ने आन्दोलन का नेतृत्व किया और सन् १८३३ मे जिस वर्ष कि विल्बरफोर्स की मृत्यु हुई थी, विजय भी प्राप्त की।

इस प्रकार विल्बरफोर्स को अपने महन् उद्देश्य की सफलता का पुरस्कार प्राप्त हुआ। फ्रेंच क्रान्ति के बाद कुछ समय तक राजनीति तथा फैशन के क्षेत्र मे अत्यधिक अलोकप्रिय हो जाने पर भी वह अपने महत् मानवतावादी लक्ष्य से नहीं डिगा था।

वह इस उद्देश्य के लिये किसी भी दल, वर्ग अथवा धर्म के लोगो के साथ काम करने को सदैव तैयार रहता था। वह एक बुद्धिमान तथा उत्साही व्यक्ति था और एक आन्दोलनकर्ता के नाते उसे वक्तृत्वशक्ति तथा समाज को सम्मोहित कर लेने की क्षमता भी प्राप्त थी। हमारे द्विदलीय सार्वजनिक जीवन मे 'क्रासबेन्च राजनीतिज्ञ' होने का वह एक ज्वलन्त उदाहरण था। यदि उसे किसी पद की इच्छा होती तो जो कुछ उसने किया वह सम्भव न होता। यदि वह मानवता के बदले किसी दल से स्वय को बाध पाता तो, प्राप्त सम्मान तथा क्षमताओ को देखते हुए, वह आसानी से प्रधान मत्री के रूप मे पिट् का उत्तराधिकारी नियुक्त हो सकता था। इस प्रकार की ख्याति और सत्ता के परित्याग ने उसे स्मरणीय हो पाने का गौरव अवश्य प्रदान किया।

गाव तथा नगर के मध्यवर्ग पर दासता विरोधी आन्दोलन तथा विल्बरफोर्स के नेतृत्व का प्रभाव स्वय मे ही एक अत्यन्त उत्कृष्ट वस्तु थी जिसने विश्व को एक नई देन तथा अग्रेजो को उनकी सर्वश्रेष्ठ वस्तु दी थी। पूरी एक पीढी तक, दासताविरोधी आन्दोलनो का यह मसीहा यॉर्कशायर के चुनाव क्षेत्र से हर बार चुना जाता रहा था। यदि वह चाहता तो अपने शेष जीवनकाल के लिये भी वह इस चुनाव क्षेत्र के प्रतिनिधि के रूप मे नियुक्त हो सकता था। उन दिनो सभी मुआफीदारो को मतदान के लिये कैथेड्रल नगर आना पडता था। जैसा कि सन् १८०७ के एक पत्र से पता चलता है मतदाताओ से भरी हुई नौकाए नदी पर (हल से) चली जा रही है और सैकडो मतदाता पैदल ही यात्रा करते है। 'वेन्सले डेल से आये हुए प्रमुखतया मध्यवर्ग के लोगो के एक और बडे दल को एक समिति के लोग सडक पर मिलते है और पूछते है श्रीमान् आप किस दल से सम्बद्ध है ?' दल के नेता का उत्तर था "हम केवल विल्बरफोर्स—व्यक्ति से ही सम्बन्धित है।" रविवार को जबकि यार्क मिस्टर का पक्ष मुआफीदारो (जिन्हे लगान नही देना पडता) से खचाखच भरा था विल्बरफोर्स लिखता है, मुझे उस समय जोसिआ के शासनकाल मे, मन्दिर (टेम्पल) मे महान् यहूदी-पर्व का स्मरण हो आया।'

विल्बरफोर्स तथा दासता-विरोधी लोगो ने इगलिश जीवन तथा राजनीति मे जनमत को प्रशिक्षित करने तथा भडकाने वाले नये तरीको का आविष्कार किया था। तथ्यो तथा तर्कों का प्रस्तुतिकरण, बगीचो मे काम करने वाले हब्शियो आदि के जीवन को सुखी जीवन बता कर भ्रमित करने वाले विरोधियो को ठीक-ठीक उत्तर देना, चन्दा देना, जन सभाए करना—ये सभी प्रचार-विधिया यद्यपि आज काफी प्रचलित हो चुकी है लेकिन उस समय ये नई तथा अपरिचित थी। क्वेकर्स के शान्त बल को लम्बी चुप्पी के बाद सक्रिय रूप देकर जन जीवन मे उतार कर दलबद्ध राजनीतिज्ञो का ध्यान आकर्षित कर लिया गया था। विल्बरफोर्स की कार्य-प्रणाली का बाद मे कई सगठनो तथा समितियो ने अनुकरण किया, जिनमे इगलिश जीवन के प्रमुख पक्ष—राजनैतिक, धार्मिक, समाज सुधारक तथा सास्कृतिक सभी सम्मिलित थे। हर तरह के प्रश्न पर जन-आन्दोलन तथा जन-विचार लोगो की आदत बन गये। प्रत्येक प्रकार

के उद्देश्य के लिये ऐच्छिक सघो का निर्माण, उन्नीसवी शताब्दी के इगलैड के सामाजिक जीवन का एक अविच्छिन्न भाग बन गया जिससे राज्य प्रेरित कार्यो के अभाव से उत्पन्न कई शून्य अन्तराल भर दिये गये।

ब्रिटेन का व्यापारिक समुद्री बेडा, जिसने शाही नो सेना के साथ मिलकर बोनापार्ट की महत्वाकाक्षाओ को धूल मे मिला दिया था, ससार मे अतुलनीय था। जॉर्ज चतुर्थ (१८२०-१८३०) के समय उसकी कुल वहन-क्षमता बीस लाख पचास हजार टन थी और सन् १८२१ मे यद्यपि डोवर और कैलाइस के बीच सवारियो के लिये स्टीमरो का उपयोग होने लगा था जिससे अनुकूल मौसम मे यात्रा तीन अथवा चार घटो मे ही पूरी हो जाती थी लेकिन मालवाही जहाज हवाओ और पतवारो के सहारे ही चलते थे। समुद्र तथा भूमि दोनो ही पर वाष्प युग का धीरे-धीरे आविर्भाव हो रहा था। लेकिन इन्जीनियरिग की प्रगति से बन्दरगाहो तथा कार्य-विधियो मे पहले ही से पर्याप्त अन्तर आ चुका था। सन् १८०० से १८३० के बीच 'ट्रिनिटी हाउस' ने इगलैड के तटो पर प्रकाश-स्तम्भो (लाइट हाउस) तथा तैरते हुए प्रकाश का प्रबन्ध कर दिया था, प्रत्येक नगर मे जहा कि जहाज़ ठहरते थे नौकागारो (डॉक्स) का निर्माण किया जा रहा था। यद्यपि 'पूल' अब भी पुल के समान ऊचे मस्तूलो से नदी मे घिरा हुआ था लेकिन लन्डन मे फिर भी नौकागार व्यवस्था का प्रबन्ध तेज़ी से किया जा रहा था। मारगेट तथा ब्राइटन की भाति दर्शको को समुद्र तट पर अवकाश बिताने के लिये घाटो का निर्माण कर मनोरजन की भी व्यवस्था की जा रही थी।

ब्रिटेन और अन्य देशो के व्यापार की दृष्टि से थेम्स के मुहाने का महत्व अब भी सर्वाधिक था। 'रिफॉर्म-बिल' के पूर्वदिवस पर देश के चौथाई जहाजो का प्रबन्ध तथा पजीयन, जिनमे ईस्ट इन्डिया कम्पनी के वे जहाज़ भी शामिल थे जो उन्होने अन्तरीप (केप) का चक्कर लगा कर भारतवर्ष तथा चीन के समुद्र तक पहुचने के लिये बनाये गये थे, लन्डन मे ही होता था, न्यूकासल जहा २०२,००० टन तक का प्रबन्ध था और प्रमुखतया लन्डन को कोयला लाने वाले जहाज़ ही रहते थे दूसरे नम्बर का बन्दरगाह था, मुख्यत अमरीका से व्यापार करने वाला लिवरपूल बन्दरगाह जहा १६२,००० टन के जहाज़ थे, तीसरी श्रेणी का बन्दरगाह था, और सदरलैड तथा व्हाइट हैवन, जो प्रमुखतया पूर्वी व पश्चिमी तटो से कोयले का व्यापार करते थे, क्रमश चौथी और पाचवी श्रेणी के बन्दरगाह थे, हल मे ७२,००० टन तक का प्रबन्ध था, और किसी भी अन्य इगलिश बन्दरगाह मे ५०,००० टन से अधिक की व्यवस्था नही थी। क्लाइडसाइड मे ८४,००० का प्रबन्ध था (क्लैपहम, इक हिस्ट मॉडर्न ब्रिटेन, I, पृ० ३-८)।

युद्ध के दिनो मे शाही नौसेना के व्यापारी बेडे तथा मछेरे, व्हेल मारने वाले तथा तस्करो व अन्य सागर-सम्बन्धित लोगो से सम्बन्ध को सर्वाधिक महत्व प्राप्त था।

दोनो के सम्बन्ध काफी अव्यस्थित तथा जबरन भरती किये गये सैनिको की उछ् खलता को प्रकट करते थे। शाही सेना मे स्थिति इतनी आकर्षक नही थी कि लोग स्वेच्छा से भरती होते, इसलिये सैन्य बल बढाने के लिये अनिवार्य सेवा का नियम होना स्वाभाविक था। लेकिन जिस रूप मे इस अनिवार्यता अथवा बल का प्रयोग किया जाता था वह निकृष्ट था। लुई XIV के विरुद्ध छेडे गये युद्ध के समय एड्मिरल की ओर से नाविको की एक सूची बनाने का प्रस्ताव रखा गया था जिससे कि उचित रूप मे जबरन सैनिको को चुना जा सके लेकिन यह कार्यान्वित न हो सका। सम्पूर्ण अठारहवी शताब्दी मे राज्य की निष्क्रियता इस सन्दर्भ मे ठीक ही सिद्ध हुई, नौसेना के साहसी युग मे भी इस निष्क्रियता का परिणाम अच्छा हुआ। नेलसन के समय भी जबरन भरती किये गये सैनिको का आतक तटो तथा बन्दरगाहो मे व्यापक रूप से फैला हुआ था। नाविको तथा भूमि पर कार्य करने वाले लोगो को बन्दरगाहो मे खडे हुए जहाजो अथवा समुद्र मे यात्रा करते हुए पोतो, तडको, शराबघरो, और यहा तक कि शादी अथवा भोज के समय चर्च मे एकत्रित होते समय जबरन सैनिक बना लेने के लिये शाही अफसरो के नेतृत्व मे सैनिक टुकडियाँ सजधज कर निकला करती थी। इससे एक व्यापक अन्याय तथा दु खपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो जाती थी, परिवार विनष्ट अथवा विखडित हो जाते थे और अधिकाश अनुपयोगी रगरूट ही उपलब्ध होते थे।[1]

शाही जहाज पर एक बार पहुँच जाने के बाद सैनिक के पास अपने दुर्भाग्य पर आँसू बहाने के सिवाय और कुछ न था। ठेकेदारो द्वारा दिया जाने वाला भोजन बहुधा अच्छा भोजन नही होता था और सरकारी वेतन भी अपर्याप्त था। इस दृष्टि से कुछ सुधार केवल स्पिटहेड तथा सन् १७९७ मे 'नोर' की खतरनाक क्रान्तियो के बाद ही हुआ था। उसके बाद ही नाविको की स्थिति मे पीढियो पहले देश के सत्ता-धारियो से झगडा करने के बाद नौसेना के अफसरो ने अपने जो सुझाव मनवा लिये थे उनके अनुसार सुधार किया गया। नेलसन स्वय के अपने सैनिको से सम्बन्ध सौहार्दता के उदाहरण थे। लेकिन यह भी उल्लेखनीय है कि जिन नौसैनिको ने सेट विन्सेन्ट, कैम्परडाउन तथा नील मे ब्रिटेन को बचाया था, उनमे से अनेक अपने उत्कृष्ट सेवाकाल के मध्यकाल मे विद्रोही रह चुके थे। उनकी कठिनाइयो तथा अनुशासनहीनता और कर्मण्यता की परस्पर विरोधी स्थिति अव्याख्येय नजर आती है, लेकिन वास्तव मे उसकी व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है कि इन लोगो को वास्तव मे यह विश्वास था कि यद्यपि इन्हे काफी दुर्व्यवहार को सहन करना पडा है लेकिन फिर भी राष्ट्र को

---

[1] श्रीमती गैस्केल की 'सिल्वियाज लवर्स' पुस्तक मे सन् १८०० के आसपास के ह्विट-बाई का चित्रण किया गया हे, जिसमे जबरन भरती करने वाली सैनिक टुकडियो को कार्य-विधि का ग्रीनलैंड तथा आर्कटिक सागर के ह्वेल पकड़ने वाले अग्रेजो के सदर्भ में काफी उल्लेख किया गया है।

उन पर गर्व है, नेलसन के नौसैनिको को देखते ही नागरिको की दृष्टि मे स्नेह तथा गर्व का भाव उमड पडता था। देश चाहे कितनी ही निर्ममता से उनका उपयोग क्यो न करता हो लेकिन उन्हे अपने रक्षको के रूप मे ही देखता था और वे इसे भली-भाति जानते थे।

जिन नौसैनिक अफसरो से नेलसन अपने साथी चुना करता था वे यद्यपि अब भी कभी-कभी अपनी इच्छा को ही सर्वोपरि समझकर झगडा कर बैठते थे लेकिन पुरानो की अपेक्षा वे साधारणत अधिक सन्तोषजनक थे। स्टुअर्ट के समय नौसेना-सस्था को मटियाली पोशाक वाले निम्नवर्गीय कप्तानो (जिन्हे समुद्र का अच्छा ज्ञान था) तथा जहाजी बेडे को आदेश देने वाले फैशनपरस्त कुलीनो के पारस्परिक सघर्ष से काफी हानि उठानी पडी थी। यह समय बहुत पहले ही बीत चुका था। अब नौसेना-अधिकारी सामान्य भद्र परिवारो से ही सम्बन्धित थे (नेलसन स्वय एक निर्धन पिता का पुत्र था) जिन्हे किशोरावस्था मे ही समुद्री जीवन व्यतीत करने को भेज दिया गया था, इनमे पूर्ववर्ती निम्नवर्गीय कप्तानो (टारपॉलिन) के व्यावहारिक अनुभवो तथा प्रशिक्षण एव शिक्षितो के विचारो तथा आचरण का अद्भुत सगम हुआ था। मैन्सफील्ड पार्क मे फैनी के भाई विलियम तथा 'परशुएशन' के कप्तान वेन्टवर्थ इस नयी नौसैनिको की कोटि के अधिकाश आकर्षणों के प्रतीक थे। लेकिन नेलसन तथा कॉलिंगवुड के जहाजी बेडो मे सभी प्रकार की विचित्रताओ तथा चरित्रो के लोग थे जिनका चित्रण उनमे से ही एक ने कैप्टन मैरियट की अमरकृति पीटर सिम्पल तथा मि मिडशिप मैन ईजी मे किया है।

नैपोलियन से युद्ध के कुछ अन्तिम वर्षों मे थोडे समय के लिये देश मे नौसेना की अपेक्षा स्थल सेना अधिक लोकप्रिय हो गई थी। ट्रैफलगर मे प्राप्त हुई विजय से 'तूफानो से पिटे हुए जहाज' युद्ध मे सम्मुख न आकर पार्श्व मे चले गये थे और वही से उन्होने अपना सहयोग दिया था। सन् १८१२ से १८१५ तक गावो और नगरो मे सैनिको को लेकर जाने वाली सम्मानित गाडियो से सालामनाका, विटोरिया अथवा वाटरलू के समाचार मिलते रहते थे और स्थल सेना की लोकप्रियता इससे इतनी बढी कि उसकी तुलना केवल बीसवी शताब्दी के जर्मन युद्धो मे मिली लोक-प्रियता से ही की जा सकती है। वस्तुत तब एक प्रकार से सम्पूर्ण राष्ट्र ने ही सेना का रूप धर लिया था।

लेकिन वेलिंगटन की सेना के पीछे फ्रान्स की सेना (जिससे युद्ध किया जा रहा था) की भाँति सम्पूर्ण राष्ट्र का समर्थन नही था। उसमे निम्न वर्गों से आए सैनिकों—(जिन्हे वेलिंगटन यह मानते हुए भी कि 'हमे उन्हे अच्छे साथियो के रूप में ही देखना चाहिये, वे निस्सन्देह अच्छे लोग हैं,' 'भूमि का दलदल' कहा करता था)—को आदेश देने के लिए कुलीनो को नियुक्त किया जाता था। (स्टेन होप्स कन्वरसेशन्स

विद दि ड्यूक ऑफ वेलिगटन, सस्क १८८९, पृ० १४, १८) । उन्हे भरती करने के प्रमुख कारणो मे बेरोजगारी, शराबखोरी और किसी स्त्री अथवा भूमि-कानून को लेकर उनका झगडालू स्वभाव था । ऐसे असस्कृत लोगो पर नियत्रण रखने के लिए चाबुक का प्रयोग आवश्यक समझा जाता था और इससे सुसस्कृत तथा आत्मसम्मान युक्त लोग सेना मे भरती होने से कतराते थे । प्राय द्वीपीय-युद्ध (पेनिन्सुलर वार) के प्रारम्भिक वर्षो मे वेलिंगटन के सभी प्रयत्नो के बावजूद ब्रिटिश सैनिक लूट मार से बाज नही आते थे, लेकिन वे फ्रेन्च सैनिको की भाति, जिन्हे विजितो को लूटने के लिए नेपोलियन स्वय उकसाता था, खराब नही थे । सन् १८१४ मे जब हमारी सेनाए फ्रास मे पहुँच गई थी तब वे पूर्ण अनुशासित थी और उनका आत्मसम्मान तथा यूरोप मे स्वय को सर्वश्रेष्ठ तथा अपने देश मे लोकप्रिय मानना उस खराब सामाजिक व्यवस्था के लिये जिस पर कि ब्रिटिश सेना आधारित थी, एक गौरव की ही बात थी ।

नौसेना की अपेक्षा स्थल सेना के अधिकारी अधिकाशत कुलीन वर्ग से ही सम्बद्ध थे । वेलिगटन की ही भाति उनमे से अधिकाश घर पर फैशन तथा राजनीति का नेतृत्व करने वाले अभिजात परिवारो के सदस्य थे, वैनिटी फेयर के जार्ज ऑसबर्न की भाति कुछ अन्य ऐसे धनी बुर्जुआ वर्ग के सदस्य थे जो अपने सैनिक पद को धन देकर खरीद सकते थे और कुलीन वशधरो के साथ घुल मिल सकते थे । ऐसे सैनिक अधिकारियो तथा अधीन सिपाहियो के बीच एक बहुत बडी सामाजिक दूरी थी—फैशनपरस्त तथा मद्यप अधिकारी इस प्रकार के निजी सैनिको (प्राइवेट सोल्जर्स) की व्यापक उपेक्षा करते थे । सन् १७९३ मे जिस समय युद्ध छिडा था सेना मे फैले भ्रष्टाचार तथा व्यापक अकार्यकुशलता की परीक्षा हुई थी और निम्न-देशो (लो कन्ट्रीज) मे किये गये आन्दोलनो द्वारा उनका पर्दाफाश किया गया था । कुछ वर्ष पूर्व ही, जब कि कोबेट को सार्जेन्ट मेजर का सम्मानित पद दिया गया था, उसने देखा कि उसकी रेजीमेन्ट का क्वार्टर मास्टर 'जो सैनिको के लिए खाद्य सामग्रिया दिया करता था' चौथाई भाग स्वय अपने लिये बचा कर रख लेता था,' और जब कोबेट ने इस भ्रष्ट आचरण का उद्‌घाटन करना चाहा तब उसे पता लगा कि यह स्थिति सेना मे सभी स्थानो पर विद्यमान है, अधिकारियो के बदले से बचने के लिये, जो कि अपनी कार्य-प्रणाली मे ऐसी बाधा को सहन करने के लिये तैयार नही थे, उसे अमरीका भाग जाना पडा ।

जैसे-जैसे युद्ध आगे बढता गया, सर राल्फ एबरक्रोम्बी, सर जॉन मूर तथा वेलिगटन ने धीरे-धीरे इस स्थिति मे कुछ सुधार किया, और ब्रिटिश अधिकारी मे कर्त्तव्यपरायणता तथा सेना मे अनुशासन का सचार हुआ । लेकिन कुप्रबन्धित तथा सुप्रबन्धित दोनो ही प्रकार की रेजीमेन्टो मे निजी सैनिको (प्राइवेट्स) की देखभाल तथा नियत्रण सेना का आधार माने जाने वाले 'जॉन-कमीशन्ड' अधिकारियो (सारजेन्टो) के

हाथ मे सौप दिया गया था। रेजीमेन्ट स्तरीकरण पर आधारित एक ऐसा समाज था जिसे इगलिश ग्रामीण जीवन (जहा से कि सैनिक तथा अधिकारीगण आए थे) के सामाजिक विभेदो का जवाब माना जा सकता है। यह देखा गया है कि जब एटन से लाया गया नया प्रशिक्षार्थी देखभाल और प्रशिक्षण के लिये कलर-सारजेन्ट को सौपा जाता था तब दोनो के सम्बन्ध को देख कर ऐसा ही लगता था जैसे बचपन के दिनो मे, जब वृद्ध आखेट रक्षक उसे शिकार के लिये जगल मे ले जाकर शिकार का प्रशिक्षण देता था, तब लगता था।

हमारे इस असैनिक प्रकृति वाले राष्ट्र मे सैनिक अधिकारियो मे किसी प्रकार की तीव्र व्यावसायिक भावना नही थी। यद्यपि आरक्षक दल (गार्ड्स) के कुछ छैल-छबीले जब युद्ध के मैदान मे वर्षा से बचने के लिये, जिस प्रकार सेट जेम्स स्ट्रीट मे क्लब के बाहर छाता लगा लिया करते थे, छाता लगाते ये तब ड्यूक उन पर काफी क्रोधित होता था फिर भी ड्यूक से लेकर निम्नपदीय सैनिको तक मे काम से निवृत्त हो जाने के बाद तत्काल असैनिक पोषाक धारण कर लेने की एक आम प्रवृत्ति थी। सैनिक-कर्म को केवल कुछ ही अधिकारी आजीविका का प्रमुख साधन मानते थे, निस्सन्देह यह स्थिति सेवाकाल मे कदम-कदम पर अपने पद के लिये चुकाये जाने वाले मूल्य को देखते हुए लाभदायक नही थी। वास्तव मे यह जीवन मे कुछ अनुभव प्राप्त करने, बडे से बडे शिकार की अपेक्षा अधिक दुस्साहसी तथा रोमाचकारी आखेट का स्पेन जाकर आनन्द लेने, सर्वश्रेष्ठ समाज मे प्रवेश लेने; अपनी युवावस्था के अनुकूल देश की कुछ सेवा करने का ही मार्ग था। प्राय'द्वीपीय (पेनिन्सुलर) युद्ध ने अनेको अच्छे अग्रेज अधिकारियो को जन्म दिया था और कई महान सैनिक परम्पराओ का विकास किया था, लेकिन किसी स्थायी प्रकार की अग्रेजी सैनिक-जाति अथवा सैनिक सगठन का निर्माण कर पाने मे वह समर्थ नही हुआ। शान्ति स्थापना के बाद अधिकाश सैनिक अधिकारी गाव मे अपने पारिवारिक कर्त्तव्य निर्वाह तथा सुख-सुविधाओ का आनन्द उठाने, ग्रामीण पादरियो से भेट करने अथवा नगर के फैशनपरस्त तथा राजनैतिक जीवन मे भाग लेने के इच्छुक हो उठे। इगलैड की सेना वास्तव मे फ्रास, स्पेन तथा प्रशा की सेना की भाति असैनिक (नागरिक) सत्ता की प्रतिद्वन्द्वी नही थी, कुछ कुलीन लोग ही समय बिताने के लिये आशिक रूप से राजनीति मे भाग लेते थे।[1] दीर्घकालीन युद्ध के कारण दो परिवर्तन घटित हुए थे जो यह दर्शाते थे कि राष्ट्र ने आखिरकार वर्तमान सेना को एक आवश्यक राष्ट्रीय सस्था मान लिया था सैनिक टुकडियो के आवास के लिये बैरकें बनवा दी गई थी और अस्तव्यस्त रूप मे नागरिको

---

[1] लैवेंग्रो के आरम्भिक अध्यायो मे, जिसका काफी अच्छा विवरण उपलब्ध है, जार्जबॉरो के पिता, उस अधिकारी के लिये जिनके लिये सैनिक जीवन ही सर्वस्व था और जिसे फैशन से किसी प्रकार का लगाव नही था, एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

के मकानो मे सैनिको का रहना समाप्त हो गया था जिससे नागरिक जनता तथा सैनिको दोनो ही को काफी राहत मिली। इसके साथ ही, जिलो की स्थानीय सेना को देश की सुरक्षा पक्ति नही माना जाने लगा—उसका उपयोग प्रशिक्षित जवानो के एक ऐसे अतिरिक्त दल के रूप मे किया जाने लगा कि जिससे आवश्यकता पडने पर स्थायी सुरक्षा-सेना के लिये सहायता ली जा सकती थी। यह पुराना विचार कि द्वीप का सुरक्षा भार शायर (काउन्टी मडल) की 'सवैधानिक' सेना को सौप दिया जाए और यह विचार कि 'वर्तमान सेना' का उपयोग अस्थायी और खतरनाक है, अब सौ वर्ष से भी अधिक पुराना और लगभग समाप्तप्राय हो चुका था।

वाटरलू के बाद, एक छोटी सेना को रखा गया था लेकिन युद्ध की समाप्ति के साथ ही उसकी लोकप्रियता भी समाप्त हो गई थी। यद्यपि उसे अब सविधान के लिये किसी खतरे के रूप मे नही देखा जाता था, फिर भी आर्थिक मितव्ययिता द्वारा प्रेरित इस नये युग की सेना-विरोधी विचारधारा उसे एक अनावश्यक आर्थिक भार ही समझती थी। फिर नव उदित सुधारको के प्रभाव के कारण भी उसे एक अभिजात चोचला माना जाने लगा। वास्तव मे स्थिति ऐसी ही थी भी, लेकिन सुधारक लोग उसका प्रजातत्रीकरण करने अथवा सुधार करने की अपेक्षा उसमे कटौती करना और भूखा रखना अधिक पसन्द करते थे। इस बीच सम्मानित श्रमजीवी वर्ग सेना मे नौकरी करना यदि अपमानजनक नही तो कम से कम विफल जीवन का द्योतक अवश्य समझने लगे थे। उन्नीसवी शताब्दी कई पीढियो तक के लिये क्योकि अधिक सौभाग्यशाली तथा युद्धादि से सुरक्षित सदी सिद्ध हुई थी यह माना जाने लगा था कि जब तक नौसेना पर्याप्त सशक्त एव दक्ष है स्थल सेना की उपेक्षा की जा सकती है। और चूकि वह अब भी एक अभिजातवर्गीय सस्था थी, प्रजातन्त्र के विकास के साथ-साथ वह मध्यवर्ग तथा श्रमिक वर्ग मे अधिकाधिक अलोकप्रिय होती गई। ब्रिटिश स्वातन्त्र्य के साक्ष्य रूप मे यह माना जाने लगा कि अन्य यूरोपीय देशो की भाति यहा सम्पूर्ण राष्ट्र को ही सैनिक शिक्षा देना आवश्यक नही माना जाना चाहिये। स्वतन्त्रता की यह नयी एव विचित्र परिभाषा 'अधिक धन तथा शान्ति से उत्पन्न ग्रन्थि थी।' इस सुरक्षित शताब्दी मे यह ग्रन्थि इतने गहरे पैठ चुकी थी कि बीसवी शताब्दी मे पुन खतरा उत्पन्न होने पर इसे उखाड पाना अत्यन्त कठिन सिद्ध हुआ।

स्पेन मे वेलिगटन द्वारा किये गये आक्रमणो के समाचारो को उस राष्ट्रव्यापी उत्साह एव प्रतीक्षा के साथ नही सुना गया जितना कि घुडदौड तथा पुरस्कार जीतने की होड के विवरणो को सुना जाता था। सडको तथा यातायात के साधनो मे सुधार के साथ-साथ, आखेट केवल स्थानीय रुचि का विषय न रह कर उच्च तथा निम्न दोनो ही वर्गों के लिये देशव्यापी रुचि का विषय बन गया। घुडदौड मे यद्यपि स्टुअर्ट काल से ही लोगो की रुचि रही थी और उसे शाही सरक्षण भी प्राप्त होता रहा था लेकिन मुष्टि-युद्ध (मुक्केबाजी) का स्वरूप जार्ज द्वितीय कालीन अविकसित आदिम रूप

न होकर रीजेन्सी कालीन राष्ट्रव्यापी महत्व का विषय हो गया था। जिस प्रकार आज इगलैड के प्रजातन्त्र के अच्छे पक्षो का परिचय किसी 'टेस्ट मैच' अथवा 'कप टाई' के समय पूर्ण समानता पर आधारित दर्शको की भीड को देख कर मिलता है—जहा सभी वर्गों के लोग बिना किसी भेद भाव के एकत्र होते है, उसी प्रकार पूर्ववर्ती युग के नानावर्णी सामाजिक ढाचे तथा कठोर तौर तरीको का परिचय 'अखाडे' (दि रिग) को प्रदान किये जाने वाले सरक्षणत्व मे मिलता था।

मल्ल युद्ध के लिये तारीख की घोषणा हो जाने पर द्वीप के सभी भागो से गाडियो, घोडो तथा पैदल यात्रियो के झुड के झुड गन्तव्य स्थल के लिये रवाना हो जाते थे। इन दर्शको की भीड कभी-कभी तो बीस हजार तक पहुच जाती थी। एक प्रकार से लोगो का मनोरजन के लिये यो जमा होना किसी त्यौहार का सा दृश्य उपस्थित करता था। लेकिन इस राष्ट्रीय सम्प्रदाय के पुरोहित अथवा पादरी अभिजात वर्गो के फैशन परस्त सदस्य होते थे, वे ही इन उत्सवो का सभापतित्व करते करते थे और उग्र तथा हिसक भीड पर आतक द्वारा नियत्रण बनाए रखते थे। ये सम्मानित तथा फैशनपरस्त लोग ही इन पहलवानो को सरक्षण दिया करते थे। इन हृष्ट-पुष्ट पहलवानो मे, जिनका पेशा ही 'यत्रणा' सहना तथा 'यत्रणा' देना हो गया था, बदमाशो की अपेक्षा जार्ज द्वितीय के समय मे ब्राउटन जैसे 'ब्रिटिश मल्ल युद्ध के पिता' और बाद के कालो मे बेल्चर, टॉमक्रिब तथा टॉम स्प्रिग जैसे सम्मानित तथा भले प्रकार के व्यक्ति अधिक थे। उनके ये अभिजात सरक्षक उन्हे गाडी अथवा टमटम मे उसे हाकते हुए अखाडे तक पहुचाने मे गर्व का अनुभव करते थे। इसी प्रकार घुड दौड के लिये घोडो का लालन-पालन भी इन फैशनेबुल लोगो का ही शौक था। वास्तव मे इन अभिजातो का सरक्षण मिले बिना इस प्रकार की मनोरजन सामग्री का आकर्षण निष्प्राण हो जाता और सारा आयोजन थर्टेल जैसे हत्यारो तथा निम्न प्रकार के लोगो के दर्शको की भीड मे उपस्थित रहने के कारण एक धोखाधडी तथा बर्बरता का केन्द्र बन जाता। जनता द्वारा शर्त मे लगाए गये इतने अधिक रुपये को देखकर कुलीन सरक्षको को बैठने के स्थान तथा अखाडे का ईमानदारी से सचालन करना एक चुनौती जन्य कठिन कार्य हो जाता था। फैशनेबल जॉकी क्लब के नियमन के बिना घुड दौड का आयोजन भी इतना बदनाम हो गया होता कि उसका और आगे चल पाना सम्भव न होता। विक्टोरिया के प्रारम्भिक काल मे अखाडो को इसी दुर्भाग्य का सामना करना पडा, उस समय मिली भगत मे लडी जाने वाली कुश्तिया तथा जय-विक्रय एक साधारण बात हो गई थी। इन होडबद्ध कुश्तियो मे, नये विकसित होने वाले मानवतावाद तथा उस युग की धार्मिकता के कारण—जो कि दो जानवरो को ही परस्पर लड़ाना जब हेय तथा निषिद्ध समझती थी तब मनुष्यो की तो बात ही क्या, शीघ्रता से ह्रास होने लगा। हाल ही मे दस्ताने पहन कर जो कुश्तियां पुन' लडी जाने लगी है उनका स्वरूप अधिक प्रजातान्त्रिक तथा अमरीका व सर्वदेशीयतावाद (कॉज्मोपोलिट-

निज्म) से प्रभावित है। इसमे जार्ज तथा रीजेन्ट जैसे फैशन का नेतृत्व करने वाले लोगो के समय मे होने वाली कुश्तियो का रग नही है।[1]

जिस समय मुक्का-द्वन्द्व इतना लोकप्रिय था, इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है कि उस समय साधारण नागरिक भी जब परस्पर झगडते थे तो किस प्रकार एक दूसरे पर मुक्का तानते होगे, लैवेन्ग्रो तथा पिकविक पेपर्स के पाठक इससे भली भाति परिचित है। निस्सन्देह सन् १८३६ मे डिकेन्स ने सैमवेलर के रूप मे जिस अत्यधिक लोकप्रिय पात्र का चित्रण किया था वह उसे यदि किसी दूसरे व्यक्ति को युद्ध मे पछाड पाने वाला इतना समर्थ एव शक्ति सम्पन्न पात्र न बनाता तो शायद ही उसे इतना लोकप्रिय बना पाता।

इस शताब्दी मे जैसे-जैसे मानवतावाद, एवागेलिकलिज्म तथा प्रतिष्ठा की भावना बलवती होती गई और अखाडो की भर्त्सना होने लगी, लोगो मे परस्पर द्वद्व करने की प्रवृत्ति भी घटती गई, और यह निस्सन्देह एक सेवा थी। अठारहवी शताब्दी मे द्वद्व छुरे अथवा कटारो से लडा जाता था तथा उन्नीसवी शताब्दी के आरभ मे पिस्तौलो द्वारा लडा जाता था। इस युग मे जैसे-जैसे अभिजात वर्ग के महत्व मे कमी तथा बुर्जुआ वर्ग के महत्व मे वृद्धि होने लगी तथा सैनिक की अपेक्षा नागरिक, और उससे

---

[1] कुश्तियो और अखाडो के इस स्वर्णकाल के विषय मे लॉर्ड एलथ्रोप ने अपनी वृद्धावस्था मे एक मित्र से कहा था कि 'मुक्केबाजी के लाभ के प्रति उनका विश्वास इतना अधिक हे कि वे इस बात पर गम्भीरतापूर्वक विचार करते रहे है कि क्या प्रत्येक कुश्ती मे सम्मिलित होना उनका एक सार्वजनिक कर्त्तव्य नही है। उनका मत है कि छुरे बाजी की घटनाए इसलिये घटित होती हें कि मुक्केबाजी जैसे पुरुष प्रधान स्वभाव को हतोत्साहित किया जा रहा है। इन होड-बद्ध कुश्तियो का प्रत्यक्ष-दर्शी विवरण देते हुए उन्होने बताया कि एक बार हम्फीज ने मैन्डोजा को पाच छ बार लगातार हराया और ऐसा लगता था कि उसकी हार अब निश्चित है लेकिन उसे जब यह मालूम हुआ कि ज्यूज ने इसके लिये शर्त बदी है उसने तुरन्त पासा पलट दिया। उन्होने गुली और चिकन की लडाई के बारे मे भी काफी कुछ बताया। वह कैसे ब्रिकहिल पहुचा और सराय के दरवाजे के पास जिस समय खडा था कैसे एक सुन्दर टमटम मे लॉर्ड बायरन उसका दल और प्रशिक्षक जैक्सन उस समय वहा पहुचे, और फिर कैसे उन सबने एक साथ भोजन किया, दूसरे दिन कुश्ती हुई—लोग द्वन्द्व पोषाक मे एक दूसरे पर आक्रमण करने लगे; जब पहला दौर समाप्त हुआ उस समय लोगो पर यह प्रभाव छूट चुका था कि निस्सन्देह यह होमर की काव्य वस्तु बनने योग्य है, यह सब उसने प्रभावशाली ढग से चित्रित किया है।

भी अधिक धार्मिक प्रवृत्तियो को बल मिलने लगा, धीरे-धीरे द्वद्व करने की प्रवृत्ति मे भी कमी होती गई। लेकिन वास्तविक परिवर्तन वस्तुत 'सुधार बिल' (रिफार्म-बिल) के समय ही प्रारम्भ हुआ। वास्तव मे इस समय तक बडे-बडे राजनीतिज्ञ भी अपने विरोधियो अथवा प्रतिस्पर्धियो से द्वद्व किया करते थे। सन् १८२६ मे, तत्कालीन प्रधानमत्री वेलिगटन ने, जो कि एक पुराने ढग के व्यक्ति थे, लार्ड विचिलसी को बुलाकर पिस्तौल-द्वन्द करना आवश्यक समझा था। पिट ने भी टियर्नी से तथा कैनिग ने कासलरीग से पिस्तौल-द्वन्द्व किया था, लेकिन विक्टोरिया के शासनकाल मे प्रधानमत्रियो तथा अन्य भद्र-जनो के इस प्रकार के निम्न स्तरीय कर्म पर, जिससे उनकी प्रतिष्ठा को आघात होता था, जनता के नये नैतिक मूल्यो ने पाबन्दी लगा दी।

शताब्दी के इन आरम्भिक वर्षों मे एक लोकप्रिय कला 'रगीन चित्रो' (कलर्ड प्रिट) का काफी विकास हुआ। जिस प्रकार से आज हमारी कल्पना पर फोटोग्राफी तथा फिल्म का पर्याप्त शासन है उसी प्रकार से उस युग की सौदर्य चेतना पर कलर्ड-प्रिन्ट कला का पूर्ण आधिपत्य था। दुकानो की खिडकिया राजनैतिक स्थितियो तथा व्यक्तियो से सम्बन्धित रगीन-व्यग्य-चित्रो (कार्टून्स) से भरी होती थी, ये चित्र रोलैन्डसन के सशक्त सामाजिक कथानको तथा गिलैरी की प्रतिभा से ओतप्रोत थे। अन्य लोकप्रिय चित्र-कथानक, पारम्परिक वीरत्व प्रदर्शन करने वाले, प्राय द्वीपीय युद्ध तथा यूरोप की युद्ध-घटनाओ, जिनमे रूस की बर्फ मे जमे हुए फ्रासीसी सिपाही अथवा दुश्मन से लडते हुए हमारे जहाजी बेडे को दिखाया गया था, मे सम्बन्धित थे। शान्त रगो मे एकरमैन के सुन्दर चित्र ऑक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज महाविद्यालयो के पारिवारिक गौरव को दर्शाते थे। लेकिन, इस सबके अतिरिक्त ये चित्र भारत तथा अफ्रीका के जगलो मे किये जाने वाले शिकार मैदानी शिकार तथा घर से बाहर के दैनिक जीवन का ही दिग्दर्शन अधिक कराते है। हमारी पीढी को पिछले युग का ज्ञान कराने मे ये चित्र, जिन्हे सुरक्षित रखा गया है और जिनकी प्रतिलिपिया भी तैयार की जाती है, काफी सहायक है। इन चित्रो द्वारा सराय के अहाते मे टमटम की सवारी (जिसमे मोटा युवक चालक के पीछे वाली सम्मानित गद्दी पर और भारी भरकम मध्य-आयु वाला व्यापारी उससे पीछे तथा लाल कोट धारी रक्षक सबके पीछे बैठना था) के रवाना होने पर बरामदो मे दर्शको की जो भीड-भाड हो जाया करती थी उसे देखने के लिये इकट्ठी हो जाती थी, उससे हम अब भी परिचित है। फिर खुली सडक पर उससे होड लगाने का प्रयत्न, कुत्ता गाडियो की आपसी होड तथा उस टमटम से मैकाडैम की साफ सतह पर लगने वाली दौड और बर्फ अथवा बाढ मे यात्रियो के घिर जाने पर साहस की अनुभूति होना—ये सब इन चित्रो मे सुरक्षित हैं। फिर खेत के किसी भाग मे छिपे हुए तीतर का कुत्तो की सहायता से शिकार करते हुए शिकारी, झाडी से जगली मुर्गों को खदेड़ कर निकालते हुए कुत्ते, परिश्रमी शिकारियो द्वारा बर्फ मे बतख अथवा हस की खोज—ये सभी इन चित्रो मे थे।

उन दिनो का शिकार केवल विलास की ही वस्तु नही थी। कठोर परिश्रम तथा स्पार्टावासियो की सी आदतो का होना शिकार के लिये एक आवश्यक शर्त थी। शिकार के प्रति यह आकर्षण नेताओ को घर से बाहर जनता के बीच आ सकने की सामर्थ्य प्रदान करता था और द्वद्व से लेकर काव्य तक के क्षेत्र मे जो लोग प्रतिमानो का निर्धारण करते थे उन्हे जगलों, झाडियो और बजरो, तथा फैशन का नेतृत्व करने वाले लोगो से पृथक् शहरी जीवन की अपेक्षा ग्रामीण जीवन के प्रति आकर्षित कर उनका यह प्रकृति प्रेम उन्हे सृजन प्रेरणाए देता था।

इस प्रकार से, अप्रत्यक्ष रूप से शिकार के प्रति इस आकर्षण ने सभ्यता को उत्कृष्ट देन दी है। लेकिन दुर्भाग्य से यह युद्ध बढाने तथा पडोसियो के बीच अमैत्री भाव बढाने के लिये भी उत्तरदायी रहा है। लेकिन शिकार से सम्बन्धित कानून केवल कुछ अभिजातवर्गीय लोगो को छोडकर अन्य लोगो को सुविधाए नही देता था। इस कानून के अनुसार, किसी भी व्यक्ति के लिये आखेट का क्रय-विक्रय कानून-विरुद्ध था और इसका परिणाम यह हुआ कि पेशेवर शिकारियो की कीमते काफी बढ गईं, और किसी भी व्यक्ति के लिये, जो यदि स्वय जमीदार अथवा जमीदार का ज्येष्ठ पुत्र नही है शिकारगाह के मालिक द्वारा आमन्त्रित किये जाने पर भी शिकार खेलना नियम विरुद्ध मान लिया गया। इस असुविधाजनक कानून से निस्सदेह 'डेप्यूटेशन' प्रक्रिया द्वारा त्राण प्राप्त हो सकता था। और सन् १८३१ मे, ड्यूक ऑफ वेलिगटन के विरोध के बावजूद ह्विग विधायको ने इस कानून को समाप्त कर दिया। ड्यूक ऑफ वेलिगटन इस कानून का पक्ष इसलिये लेता था क्योकि उसे विश्वास था कि सिर्फ इन कानूनी प्रतिबन्धो द्वारा ही आखेट को देहातो तक सीमित रखा जा सकता है। उसका यह विचार ठीक उसी प्रकार का था कि सडाधभरा आरक्षित नगर ही भद्र लोगो को राजनीति मे ला पाने का एक उपाय है। वास्तविक स्थितियो ने यह सिद्ध कर दिया कि दोनो ही दशाओ मे उसका यह विचार निराशावादी था। लेकिन सन् १८१६ के नये कानून के अनुसार यदि कोई निर्धन व्यक्ति अपने परिवार के लिये खरगोश पकडने जाता और रात्रि को यदि उसे जाल लिये देख लिया जाता तो उसे सात वर्ष के लिये जेल की सजा दी जा सकती थी। वे गु डे निस्सदेह कम सहानुभूति के पात्र थे जो दलबद्ध होकर शहर से आखेट स्थलो मे घुस आते थे और विरोध करने वाले किसी भद्र व्यक्ति अथवा रखवाले पर अपनी बन्दूके तान देते थे। इस प्रकार की छुटपुट लडाइया एक आम बात हो गई थी।

इसका सबसे खराब पक्ष जगली मुर्गों की सुरक्षित निधि से सम्बन्धित है, मुर्गों की रक्षा के लिये कुछ बन्दूक धारी जगल मे छिपे रहते थे और भोले-भाले घुमक्कडो के साथ ही कुछ दूसरे रक्षको को भी अपना निशाना बना डालते थे। जब तक कि ससद ने सन् १८२७ मे इस क्रिया को गैरकानूनी नही करार दिया अग्रेज जज इस कुख्यात प्रथा को कानूनी मान्यता प्रदान करते रहे। मानवतावादी विचारधारा ने उन लोगो का भी पक्ष लेना प्रारम्भ कर दिया था जिनके विरुद्ध कि आखेट-कानूनो को लेकर उसने

सघर्ष मे विजय प्राप्त की थी। जैसे-जैसे ये कानून उदार होते गये और उनको ठीक से कार्यान्वित किया जाने लगा, आखेट-पशुओ की रक्षा एक अपेक्षाकृत सहज कार्य हो गया और उसमे बदनामी की आशका भी कम हो गई।

उन्नीसवी शताब्दी की गति के साथ-साथ जैसे-जैसे कोबिन-विरोधी भावना घटती गई, मानवतावादी विचारधारा को एक के बाद एक क्षेत्र पर विजय मिलती गई, आक्रोश के साथ-साथ अतीत का क्रूर स्वभाव भी शान्त होता गया और सहृदयता की प्रधानता जो कभी-कभी भावुकता की सीमाओ को भी स्पर्श करने लगती थी, बढती गई। इस लोकप्रिय भावना वाले नवीन युग की दुर्बलताओ तथा शक्तियो का प्रतिनिधित्व चार्ल्स डिकन्स कर रहे थे, उनका विकास लन्डन की गलियो मे पनपने वाली कठोर स्कूली शिक्षा द्वारा हुआ था। इस दशक मे कई अपराधो के लिये दिये जाने वाले मृत्युदड प्रधान विधान मे 'ज्यूरीज' के आग्रह से—जो मृत्युदड वाले अपराधो के लिये अपराधियो को पकडने तक से मना कर देते थे—सशोधन किया जा रहा था। एल्डन का युग समाप्त हो रहा था तथा बेन्थम व ब्राउथम का युग प्रारम्भ हो रहा था। हब्शियो को दास बना कर रखने की प्रथा के विरुद्ध चल रहे आन्दोलन ने लोगो के हृदय मे एक अपूर्व उत्साह भर दिया था।

भावनाओ मे प्रकट होने वाला यह अन्तर पिछले सभी युगो की तुलता मे एक महत्व-पूर्ण सुधार था। उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध मे जीवन के सभी पक्षो मे, और विशेषकर बच्चो से किये जाने वाले व्यवहार मे, मानवतावादी प्रभाव स्पष्ट अधिक हो गया था। वास्तव मे जिस यात्रिक उत्थान पर उन्नीसवी शताब्दी गर्व करती है उसकी अपेक्षा मानवतावाद की प्रगति उसके लिये अधिक गौरव प्रद है, क्योकि गलत हाथो द्वारा मशीनो का प्रयोग मानवता को ही समाप्त कर सकता है।

अध्याय १७

दो सुधार बिलों के बीच का काल (१८३२-१८६७)

हम चाहे तो सन् १८३२ के ग्रेट रिफार्म बिल तथा उन्नीसवी शताब्दी के अन्त के बीच की अवधि को 'विक्टोरिया युग' के नाम से पुकार सकते है, लेकिन वास्तव मे इस काल मे आर्थिक परिस्थितियो, सामाजिक प्रथाओ तथा बौद्धिक वातावरण मे इतने तीव्र परिवर्तन घटित हुए थे कि हमे केवल इसलिये ही कि इस अवधि के साठ से अधिक वर्षों तक एक ही महारानी (१८३७-१९०१) का शासन रहा था, इन वर्षों को एक समान नही समझ लेना चाहिए। यदि इगलैड के विक्टोरिया युग को वास्तविक एकत्व देना हो तो वह दो शासनात्मक स्थितियो मे मिल सकता है प्रथम, उस समय कोई भी महायुद्ध नही चल रहा था और किसी भी प्रकार की बाहरी विपत्ति की आशका नही थी, और दूसरे, इस सम्पूर्ण काल मे प्यूरिटन वातावरण के कारण गम्भीर धार्मिक चिन्तन तथा आत्म सयम की प्रधानता थी। इस धार्मिक गम्भीरता ने उन विरोधियो को भी प्रभावित किया जिन्होने पिछले युग की अन्तिम अवस्था मे केवल नैतिकता को ही नही वरन् ईसाई धर्म के मूल विश्वासो के आगे भी वैज्ञानिक खोजो तथा डार्विनवाद से प्रभावित होकर प्रश्न चिन्ह लगाए थे। फिर इन नये विचारो से प्रभावित एवागेलिकलो द्वारा प्रारम्भ किये गये 'हाई चर्च' आन्दोलन को भी प्यूरिटन-वादी सस्कार विरासत मे बिले थे। इसी कोटि के एक एग्लो-कैथोलिक मि ग्लैडस्टोन ने अपने वैमत्य प्रधान (नॉन-कनफर्मिस्ट) अनुयायियो को काफी प्रभावित किया, इसका प्रमुख कारण यह था कि वक्ता तथा श्रोता दोनो ही जीवन को (जिसमे राजनीति तथा विदेश नीति दोनो ही सम्मिलित थे) व्यक्तिगत धर्म का ही भाग मानते थे।

उन्नीसवी शताब्दी के इन अन्तिम सत्तर वर्षो के काल मे, राज्य समान रूप से इस विपुल जनसख्या वाले द्वीप की नयी औद्योगिक स्थितियो के अनुरूप नये-नये कार्यों को अपनाता जा रहा था। लेकिन विक्टोरिया-युग की वास्तविक शक्ति तथा अच्छाई इन परिस्थितियो के महत्वपूर्ण होने पर भी उनमे कम, तथा प्यूरिटन परम्पराओ—जिन्हे वेस्लेयन तथा एवागेलिकल आन्दोलनो ने पुर्नशक्ति प्रदान की थी—द्वारा व्यक्ति के चरित्र मे जिस आत्मानुशासन तथा आत्मविश्वास का आविर्भाव हुआ था उसमे अधिक थी। सभी वर्गों के प्रमुख लोगो मे 'स्वावलम्बन' एक अत्यन्त प्रिय आदर्श बन गया था। बीसवी शताब्दी मे आत्मानुशासन तथा आत्मविश्वास अपेक्षाकृत कम दिखाई देते है और साथ ही पुरानी व्यक्तिगत प्रतिबद्धता अथवा विश्वासो का स्थान राज्य के हस्तक्षेप अथवा कार्यों द्वारा सामाजिक मुक्ति की अर्द्ध-धार्मिक माग ने ले लिया है। निस्सदेह

विज्ञान ने पुरानी धार्मिक मान्यताओ की उपेक्षा कर दी है लेकिन वास्तव मे अब भी इगलैंड की सशक्तता एव दुर्बलता को बिना धार्मिक इतिहास का सहारा लिये समझ पाना अत्यन्त कठिन है। दो जर्मन युद्धो (१९१९-१९३९) के बीच के बीस वर्षों में यद्यपि नैतिकता विषयक मान्यताओ का व्यक्ति के चरित्र पर उतना प्रभाव नही रहा था लेकिन विक्टोरिया कालीन धार्मिक मान्यताओ के उत्तराधिकारी अब भी विदेश नीतियो तथा नि शस्त्रीकरण को लेकर उन देशो की वास्तविकताओ के प्रसग मे भी, जो कि कभी प्यूरिटन नही रहे तथा नीति को जिन्होने नैतिकता के प्रश्न से सदैव पृथक् कर देखा था, धार्मिक नियत्रण की माग करते थे।

नैपोलियन के युद्धो के समय तथा उनकी समाप्ति पर जो शान्ति स्थापित हुई उस काल मे एवागेलिकल पादरी वर्ग 'चर्च एस्टेब्लिशमेट' का एक महत्वपूर्ण भाग बन गया, और अन्य भागो मे जिसकी कमी थी उसमे उन्होने एक नवीन शक्ति तथा उत्साह का सचार किया। चार्ल्स साइमन, जो राजा का साथी था और होली ट्रिनिटी कॉलेज कैंब्रिज का मिनिस्टर था, की सेवाओ (१७५९-१८३६) ने एवागेलिकलवाद को चर्च अनुशासन के अनुकूल बनाने मे काफी मदद की। यदि साइमन न होता तो एवागेलिकल पादरी वर्ग चर्च की व्यवस्था तथा पैरिश व्यवस्था का उल्लघन कर देता और अपने उद्देश्यो की प्राप्ति के लिये वेस्ले का अनुसरण करते हुए घुम्मडो का एक सम्प्रदाय गठित कर विरोधियो के खेमे मे ढल जाता। यदि यह आन्दोलन इस नयी शताब्दी मे भी चलता रहता तो इगलैंड का चर्च सम्भवतया १८३० के लगभग 'सुधार' की आधी मे गिर गया होता। लेकिन साइमनवादी पादरियो ने विरोधियो (डिसेन्टर्स) से मित्रता होते हुए भी चर्च की रक्षा की और उसके आत्मोन्नति वाले पक्ष के पुन स्थापन मे काफी सहायता की।[1]

एवागेलिकलस को छोडकर रीजेन्सी के अधीन जो चर्च था उसका स्वरूप जार्ज तृतीय के प्रारम्भिक वर्षों के समय के चर्च जैसा ही था, अन्तर केवल इतना था कि उसका धार्मिक-उदारतावादी पक्ष साइमनवादी प्रभावो के अतिरिक्त किसी भी प्रकार की आत्मजागृति से सम्बन्धित नही था और जैकोबिनविरोधी कट्टरता में ढल गया था। अठारहवी शताब्दी की ही भाति अब भी एस्टेब्लिशमेट के पादरी गण अमीर तथा गरीब वर्गों मे बटे हुए थे। बिशप, कैथेड्रल के पादरी लोग सुविधा सम्पन्न वर्ग के लोग थे, उन्हें यह स्थान चर्च के लिए कुछ कार्य करने के पुरस्कार स्वरूप नही वरन् पारिवारिक पक्षपात अथवा आभिजात्य-सम्बन्धो के कारण मिला था। पैरिश-क्षेत्र मे बहुधा कम वेतन-प्राप्त गरीब उप-पादरी बेमन से काम किया करते थे। इस क्षेत्र

---

[1] साइमन एड चर्च आर्डर, कैनन चार्ल्स स्मिथस बर्कबेक लेक्चर्स, कैम्ब० प्रेस, १९४०।

मे न तो कुलीन लोग ही कभी आते थे और न उन्हे लेडी कैथेरीन डि बॉर द्वारा ही किसी प्रकार की मान्यता प्राप्त थी। यह सब अठाहरवी शताब्दी के लिये, जबकि किसी चर्च अथवा राज्य मे किसी पद को जनहित की दृष्टि से नही भरा जाकर केवल पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया जाता था, काफी सुविधाजनक था। लेकिन इस नये सुधारवादी युग मे जनमत यह माग करने लगा कि जिस पद के लिये व्यक्ति को वेतन मिलता है उसके लिये उसे कुछ काम भी करना चाहिये। गन्दगीयुक्त नगर (रॉट्न बॉरो) से लेकर चर्च मे चढाये जाने वाले भोग तक, प्रत्येक सस्था मे कठोर बेन्थेमाइट जाच-पडताल का पूरा दखल था 'इसकी क्या आवश्यकता थी ?'

फिर एस्टेब्लिशमेट के पादरी इस कारण अलोकप्रिय भी थे कि अन्य किसी भी वर्ग अथवा व्यवसाय की अपेक्षा वे 'हाई टोरी' दल से उसके पतन के समय भी सम्बद्ध रहे। विरोधी (नॉन-कनफर्मिस्ट्स) तथा स्वतन्त्र विचारो वाले भयानक रैडिकल लोग यद्यपि एक दूसरे को परस्पर नही चाहते थे लेकिन धार्मिक सुविधा-सम्पन्न वर्गों के प्रति विशेष पक्षपात का विरोध करने के लिये वे परस्पर सगठित हो गये थे। सन् १८२६ मे कैंब्रिज के जॉन स्टर्लिंग जैसे युवा विद्वानो ने प्रत्येक गाव के पादरी को अत्यन्त क्रूर व्यक्ति की सज्ञा दी थी जिन्हे सुधार-विरोधियो तथा निरकुशता की सत्ता के लिये युद्ध करने को वहा रखा गया था।

गाव के सुसम्बन्धित निरकुश-व्यक्ति का एक और उपयुक्त विवरण डीन चर्च से उद्धृत किया जा सकता है (दि ऑक्सफोर्ड मूवमेट, पृ० ४, १०)।

'जिन दिनो सचार (कम्यूनिकेशन) अत्यन्त कठिन तथा अनियमित था, उसने इगलैंड के देहाती जीवन के जिस स्थान की पूर्ति की थी वह और कोई भी नही कर सका था। अपने पैरिश का वह पिता, शासक, डॉक्टर, वकील, मजिस्ट्रेट, शिक्षक सभी कुछ था और कोई भी उसके आगे कुकर्म तथा विद्रोह करने का साहस नही कर सकता था। यद्यपि पादरी की भूमिका को पूर्णतया उपेक्षित नही कर दिया गया था— लेकिन उसे धु धला देने से कुछ लाभ भी अवश्य हुआ था।'

डीन चर्च ने गाव के ऐसे वर्दीधारी भद्र लोगो की भी चर्चा की है जो शिकारी कुत्तो और बन्दूको के साथ शिकार खेलते, नृत्य करते, खेती करते थे और कुकर्म किया करते थे उसने उन बहुवादियो (प्लूरलिस्ट्स) का भी उल्लेख किया है जो 'चर्च से बाहर केवल अपने भाग्य निर्माण तथा परिवारो को सम्पन्न बनाने मे ही जुटे रहते थे।'

ऐसी दशा मे इसमे कोई आश्चर्य नही होना चाहिये कि रैडीकल प्रेस; व्यग्य लेखो, लेखो तथा रेखा चित्रो द्वारा एग्लिकन पादरियो पर जिस भयानक रूप मे आक्रमण करता था वैसा लाग पार्लियामेट के दिनो को छोडकर और कभी नही हुआ था। सन् १८३१ मे जब हाउस ऑफ लॉर्ड्स मे 'स्प्रीचुअल पियर्स' ने 'रिफार्मबिल' के पक्ष मे दो

के विरुद्ध इक्कीस मत दिये तब उनकी अलोकप्रियता शीर्ष पर पहुच चुकी थी। उसी वर्ष शीतकाल मे सुधारवादियो की भीड ने बिशप लोगो के महलो को जलाने और गाडियो पर पत्थर फेकने मे काफी मजा लिया।

घबराये हुए चर्च के पादरियो तथा उनके प्रफुल्लित शत्रुओ दोनो ही ने यह मान लिया था कि सन् १८३३ की सशोधित ससद का पहला काम, इसके पूर्व कि चर्च को उखाड दिया जाए, विरोधियो (डिसेन्टर्स) को स्वीकृत शिकायतो को दूर करना होगा। टोरी साउदे ने लिखा है कि 'कोई भी मानवीय साधन एस्टेब्लिशमेट को पतन के खतरे से नही टाल सकते।' लिबरल कन्जरवेटिव (उदार-अनुदारतावादी) रगबी के डा एरनॉल्ड ने लिखा है कि 'आज जो चर्च की स्थिति है उसे देखते हुए कोई भी मानवीय शक्ति उसे नही बचा सकती।' लेकिन तब से एक शताब्दी बीत गई है और केवल आयरिश तथा वेल्स क्षेत्रो मे असामान्य वृद्धि को छोडकर एस्टेब्लिशमेट अपनी आय-सम्पत्ति तथा राज्य से उसके सम्बन्धो को उसी प्रकार बनाए हुए है और इसके लिये उसे किसी प्रकार के विरोध का भी सामना नही करना पडता। विरोधियो (डिसेन्टर्स) की प्रकट कठिनाइया भी रिफार्म-बिल के पास हो जाने पर दस वर्षों के भीतर ही तुरन्त दूर हो जाने की अपेक्षा पचास वर्षों तक उसी प्रकार बनी रही।

धार्मिक क्रान्ति की आशका को दूर कर दिया गया और चर्च की अलोकप्रियता के प्रमुख कारणो को मैत्री एव शान्तिपूर्ण ढग से दूर कर दिया गया। ससद ने पादरियो मे असमान धन वितरण की प्रक्रिया मे काफी सुधार कर दिया था और अब पादरी धार्मिक कार्यो की ओर पुन लौटने लगे थे जिसके कारण साधारण लोगो ने भी चर्च का पक्ष लेना तथा उसकी स्थानीय गतिविधियो मे भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था।

चर्च के सुधार के लिये ससद द्वारा निर्धारित कार्यो को अनुदारवादी नेता पील ने ह्विग राजनीतिज्ञ के सहयोग से पूरा किया। नये ऑक्सफोर्ड आन्दोलन से सम्बद्ध लोगो ने चर्च की आय मे राजकीय हस्तक्षेप का विरोध किया था लेकिन इस कार्य के लिये और कोई दूसरी व्यवस्था भी नही थी, फिर ब्लोमफील्ड जैसे एपिस्कोपल बेन्च के बुद्धिमान सदस्यो ने एक्लेसियास्टिकल कमीशन तथा उसके सुझाव पर सन् १८३६ तथा १८४० मे बनने वाले संसदीय अधिनियमो (एक्ट्स ऑफ पार्लियामेट) विषयक कार्यों मे ह्विग तथा टोरी राजनीतिज्ञो के साथ सहयोग भी किया था।

इन अधिनियमो ने चर्च-सम्पत्ति के वितरण के दोषो को दूर कर दिया, और आशिक रूप मे गरीब तथा अमीर पादरियो के विभेदो को भी समाप्त कर दिया लेकिन जैसा कि ट्रोलोप के उपन्यासो के पाठको को भलीभाति याद होगा ये विभेद पूर्णतया समाप्त नही हो सके थे। बहु-अधिकारवाद को कानून समाप्त कर दिया गया,

पादरियो को एक से अधिक चर्च अथवा एक से अधिक सम्पत्ति मे हिस्सा बटाने से वचित कर दिया गया। कैथेड्रल के पादरी सख्या तथा सम्पत्ति दोनो ही मे कम हो गये। इस प्रकार प्रति वर्ष तीस हजार एक सौ पौड की बचत हुई जिसे गरीब पादरियो का जीवन स्तर ऊचा उठाने मे खर्च कर दिया गया। बिशप-क्षेत्र (डायोसीस) की सीमाओ मे परिवर्तन कर दियॉ गया और उत्तर के नवीन औद्योगिक क्षेत्र की जनसख्या को प्रभावित करने के लिये मैनचेस्टर तथा राइपन मे नये बिशप-क्षेत्रो की स्थापना की गई। एपिस्कोपल राजस्व की असमानताओ को समाप्त करने के प्रयत्न किये गये तथा बडी आयो को लघु आय कर दिया गया।

इन सुधारो के परिणामस्वरूप अब चर्च को पुराने भ्रष्टाचार का सहभागी नही माना जाने लगा। तीक्ष्ण व्यग्य करने वाले कार्टून अब बिशप, डीन तथा प्रेस्बिटेरीज़ को गरीबो का शोषण करने वाले मोटे तथा सासारिक मानवीय आकार मे चित्रित नही करते थे।

अब चर्च ने युग की आत्मा से प्रेरणा ग्रहण कर पैरिश व्यवस्था के मध्ययुगीन भूगोल के साथ अपने रचनात्मक कार्यों को और जोड लिया था। नये पैरिशो तथा औद्योगिक क्षेत्रो मे गिरजो की तब तक स्थापना होती रही जब तक कि धर्म विरोधियो (नॉन-कनफर्मिस्ट) की गतिविधियो के आगे उन्हे झुक न जाना पडा। बिशप ब्लोम-फील्ड ने बाहरी लन्डन मे गिरजो के निर्माण के लिये काफी धन एकत्र किया, वास्तव मे उस समय राजकीय कोष से चर्च निर्माण का कार्य स्थगित हो गया था। टोरियो की ससद ने ऐन्नी के शासनकाल मे चर्च निर्माण के लिये कर लगाना स्वीकार कर लिया था और वाटरलू के बाद पुन कर लगने लगा था। लेकिन सन् १८३२ के बाद से कोई भी सरकार कर दाता को किसी ऐसे कार्य के लिये कर देने को बाध्य न कर सकी थी।

नये चर्च-निर्माण की तो बात ही क्या विद्यमान चर्चों की रक्षा के लिये भी पैरिश-वासियो को चर्च-कर (चर्च-रेट) देने के लिये बाध्य करना अत्यन्त कठिन था और यह स्थिति अगली पीढी तक तब तक चलती रही जब तक कि उसे जहा-जहा विद्रोहियो (डिसेन्टर्स) का प्रभाव था—विशेष रूप से उत्तर के औद्योगिक क्षेत्रो मे—वहा तीव्र विरोध का सामना न करना पडा। रोचडेल मे, सन् १८४० मे जब इस बात के लिये मत गणना की गई थी कि चर्च-कर वसूल किया जाय अथवा नही लोग इतने उत्तेजित हो गये थे कि व्यवस्था बनाए रखने के लिये सगीन धारी सेना को तैनात करना पडा था।

तब से, विकास कार्यों तथा नये निर्माण कार्यों के लिये जिस प्रकार स्वतन्त्र गिरजे (फ्री चर्चेज) सदा से करते आ रहे थे उसी प्रकार 'चर्च को भी धन एकत्ररनेक के लिये ऐच्छिक-अनुदानो का आश्रय लेना पडा था और एग्लिकन स्कूल तो, जो उस समय

समूचे देश की प्राथमिक शिक्षा का प्रमुख भाग थे, ऐच्छिक अनुदानो पर लगभग पूरी तरह निर्भर करते थे।

ह्विग सरकार ने भी चर्च द्वारा वस्तु रूप मे लिये जाने वाले कर की अत्यन्त अलोकप्रिय प्रणाली को जो पुरातन काल से विद्रोहियो (डिसेन्टर्स) की ही नही बल्कि सम्पूर्ण कृषक समुदाय के रोष का पात्र थी, समाप्त कर दिया था और इससे चर्च की अलोकप्रियता मे ही कमी हुई थी। फसल के समय गाया जाने वाला यह गीत -

'हमने पादरी को ठगा था
अच्छा ही किया,
अब फिर ठगेगे—
कि 'विकार को क्या
अधिकार है कि वह हमारी फसल
का दसवा भाग ले ले ?'

एग्लो-सैक्सन इगलैड जितनी प्राचीन भावना को ही अभिव्यक्त करता है। वस्तु-कर (टिदे) लगानदार कृषक से बहुधा वस्तु (फसल) रूप मे लिया जाता था शूकर शावको मे से दसवा बच्चा पादरी का भोजन बन जाता था और फसल का दसवा भाग भी उसके खलिहान मे पहुचा दिया जाता था। सुधार (रिफार्मेशन) के काफी पहले तक आपसी कटुता और वैमनस्य का यह प्रमुख कारण था। कवि चॉसर ने उस अच्छे पादरी की काफी प्रशसा की है जो लोगो पर वस्तु-कर (टिदे) नही लादता था।

सन् १८३६ के 'टिदे कम्यूटेशन अधिनियम' ने इस प्राचीन शिकायत को हल कर डाला था। इस कानून ने वस्तु रूप मे कर उगाहने की प्रणाली को समाप्त कर दिया था। अब यह कर भूमिकर मे परिवर्तित हो गया था। सन् १८९१ मे यह कर लगान के रूप मे लिये जाने वाले अप्रत्यक्ष कर को छोडकर लगानदार किसान की अपेक्षा भू-स्वामी से ही वसूल किया जाता था और इस प्रकार लगान देने वाला किसान इसके सीधे रूप मे प्रभावित नही होता था। जमीदार लोग जो सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्रो मे पादरियो से सम्बन्धित थे यह कर चुकाने मे उनका उस तीव्रता से विरोध नही करते थे जितना कि उनके लगान देने वाले आसामी किसान किया करते थे। कम्यूटेशन अधिनियमो के कारण ग्रामीण क्षेत्रो मे निस्सदेह शान्ति स्थापित हो गई थी। केवल हमारे समय मे ही सन् १९१८ के बाद, जब बहुत से किसानो ने खुद जमीन खरीद ली और स्वय भू-स्वामी बन गये और उन पर चर्च का कर लगाया जाने लगा तब नया आन्दोलन शुरू हुआ, जिसके फलस्वरूप चर्च के विकास को गौण मान कर उन्हे नई राहत दी गई।

दूसरी शिकायत सन् १८३६ के विवाह कानून द्वारा दूर हो गई। सन् १७५३ के लॉर्ड हार्डविक्स मैरिज एक्ट के अनुसार इगलैड के चर्च के पादरी को छोड़कर और

कोई भी पादरी किसी का विवाह सम्पन्न नही करा सकता था, यह वास्तव मे 'प्रोटेस्टेन्ट डिसेन्टर्स' और उससे भी अधिक रोमन कैथोलिको का घोर अपमान था। सन् १८३६ के अधिनियम ने कैथोलिक अथवा प्रोटेस्टेन्ट चर्चों को इस शर्त के साथ कि वहा होने वाले विवाहो की सूचना रजिस्ट्रार को दे देने पर वे कानून से प्रतिबद्ध होगे, उन्हे विवाह कराने की स्वीकृति प्रदान कर दी गई। वास्तव मे इस कानून मे नये युग की माग को स्वीकार करते हुए साख्यकीय आकडो तथा ठीक सूचना की प्राप्ति के उद्देश्य से जन्म, मृत्यु तथा विवाहो की जानकारी रखने वाले अधिकारियो-रजिस्ट्रारो—की नियुक्ति का भी प्रावधान था। इगलैंड के चर्च को भी विवाह कराने का समान अधिकार था लेकिन उसके लिये भी इस शर्त का पालन करना आवश्यक था कि पादरी विवाह की सूचना सिविल् रजिस्ट्रार को अवश्य भिजवा देगा। पुराने धार्मिक आचरण तथा आधुनिक धर्म-निरपेक्ष 'राज्य' के बीच होने वाला यह कानूनी समझौता आज भी इगलैड पर लागू होता है।

इन अनेको सुधारो ने उन सभी भयानक आक्रमणो से जिसकी कि भविष्यवाणी दोस्तो तथा दुश्मनो, सभी ने समान रूप से की थी, चर्च की पर्याप्त रक्षा की। फिर भी, राजनैतिक तथा सामाजिक विभाजनो का आधार काफी अशो मे धर्म ही था। प्रत्येक नगर तथा गाव मे प्रमुख अनुदारवादी माने जाने वाले लोग चर्च के ही आदमी थे और उनके अत्यन्त सक्रिय विरोधी ह्विग तथा लिबरल (उदारवादी) या तो डिसेन्टर्स थे या पादरी विरोधी (एन्टी क्लेरिकल्स्) लोग थे। निम्न-मध्यवर्ग तथा मजदूर वर्ग एक ही उपासना गृह (चैप्ल) तथा धार्मिक कार्यों मे समान रूप से भाग लेते थे। उन्नीसवी शताब्दी की राजनीति सम्प्रदायो तथा वर्गो, दोनो ही से समान रूप मे सम्बन्धित थी। समाज की ये दरारे उसी रूप मे बनी रही क्योकि सन् १८३२ के बाद चर्च-कर (चर्च रेट्स), कब्रिस्तान तथा आक्सफोर्ड व कैम्ब्रिज मे प्रवेश सम्बन्धी डिसेन्टर्स की शिकायतो को दूर कर पाने मे ह्विग असफल रहे थे। आने वाले काफी समय तक इगलैड मे वर्ग-चेतना की अपेक्षा 'चर्च तथा उपासना-गृहो (चैप्ल) की चेतना' अधिक प्रबल थी।

इगलैंड के अधिक पुराने क्षेत्रो मे - कह सकते है 'बारसेटशायर' मे, पादरी लोग अब भी उच्चवर्ग के प्रभाव तथा सरक्षण मे थे। लेकिन कुछ अन्य भागो मे बहुत से पादरी ऐसे पैरिशो (पादरी-प्रदेशो) मे भी कार्य कर रहे थे जहा औद्योगिक क्रान्ति के कारण उत्पन्न वर्गों के भौगोलिक विभाजन की वजह से उच्चवर्गीय लोगो की सख्या या तो बहुत ही थोडी थी या बिलकुल नही थी। गाव के निरकुश पादरी की तुलना मे यहा एक ऐसे गन्दी बस्ती (स्लम) वाले पादरी का जन्म हो रहा था जिसके कार्य तथा विचार दोनो ही पहले से कुछ भिन्न प्रकार के थे।

उन्नीसवी शताब्दी के मध्यवर्ती दशको मे चर्च तथा धार्मिक जीवन की सशक्तता

के कई कारण थे। किसी सम्प्रदाय विशेष से पृथक् सामान्यत प्रत्येक पादरी यह जानता था कि उसे इस नाजुक समय मे दृढता से काम लेना चाहिये। शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों की अपेक्षा इस समय चर्च के लोगो पर एवागेलिकल प्रभाव काफी व्यापक था 'चर्च के निम्नवर्गीय लोग' (लो चर्चमैन) एवागेलिकलो को इसी नाम से जाना जाता था—पिछली शताब्दी के सहज जीवन की तुलना मे अब रविवासरीय धार्मिक कार्यों (सैबाथ ऑब्जरवेन्स) की प्रथा तथा कानून द्वारा पालन कराने मे काफी शक्ति सम्पन्न थे। फिर साथ ही आक्सफोर्ड द्वारा प्रसारित सन् १८३० तथा ४० के एग्लो-कैथोलिक आदर्श भी सम्पूर्ण देश के विचारो एव व्यवहारो पर अपनी छाप जमाते जा रहे थे। इन सभी दृष्टियो से, 'पचास तथा साठ' वाले दशको के चर्च के धार्मिक चित्र से ट्रोलोप के 'बारसेटशायर' उपन्यासो के पाठक भली भाति परिचित है। जो नगर एकान्त मे नही पड गये थे वहा फ्रेडरिक डेनिसन मौरिस तथा चार्ल्स किग्जले का एक 'व्यापक चर्च सम्प्रदाय कार्य कर रहा था जिसकी प्रमुख रुचि श्रमिक वर्गो की शिक्षा तथा जीवन मे थी जिसे 'क्रिश्चियन सोश्यलिस्ट' सम्प्रदाय के नाम से जाना जाता था। इस सम्प्रदाय का प्रमुख प्रेरणा स्रोत थॉमस कार्लाइल था जो स्वय कभी किसी चर्च से सम्बद्ध नही रहा। यद्यपि ब्राड चर्च सम्प्रदाय के पास जन शक्ति का अभाव था लेकिन उसकी कार्य-प्रणाली तथा विचारो ने कई कट्टर पादरियो को भी (यद्यपि वे सर्वप्रथम तो इस सम्प्रदाय के विचारो तथा 'समाजवाद' से चौके ही थे) काफी प्रभावित किया। इस प्रकार इगलैड के चर्च ने सशक्त विरोध तथा वाद-विवाद के बावजूद भिन्न-भिन्न विचारधाराओ तथा जीवन पद्धतियो को अन्त मे अपना कर, जिसके कि हम आज पूरी तरह आदी हो चुके है, एक अनेक पक्षीय सगठित स्वरूप को विकसित कर लिया।

सन् १८४५ मे न्यूमैन के धर्म-परिवर्तन के बाद से, आक्सफोर्ड आन्दोलन, जिसके प्रसार के लिये उसने इतना कुछ किया था, दो पृथक् धाराओ मे विभाजित हो गया। एक शाखा, जिसका निर्देशन पूसे तथा केब्ले कर रहे थे, प्रतिष्ठित चर्च मे एग्लो-कैथोलिक धर्म का प्रचार एव प्रसार करती रही।[1] और दूसरी शाखा, जिसका नेतृत्व न्यूमैन

---

[1] 'एग्लोकैथोलिसिज्म' यद्यपि उन्नीसवी शताब्दी के प्रारम्भ मे अवश्य ही एक नवीनता थी लेकिन एग्लिकन इतिहास मे आगे चल कर वह नवीनता नही रही। नॉन ज्यूरर्स तो निश्चित रूप से तथा लॉडियन पादरी भी 'शायद' 'एग्लोकैथोलिक' कहलाते थे आक्सफोर्ड के ट्रैक्टैरियन्स उनके जैकोबाइटवाद को छोड़कर नॉन-ज्यूरर्स से काफी मिलते थे। दो आयरिश चर्च के पादरी बिशप जेब तथा एलेक्जेन्डर नॉक्स आक्सफोर्ड आन्दोलन द्वारा उन्हे राष्ट्रीय महत्व प्राप्त होने से एक पीढी पहले तक एग्लो-कैथोलिक सिद्धान्तो को अपनाते रहे थे। एग्लो-कैथोलिक उपासना के

श्रौर बाद मे मैनिग ने किया, रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय, जिसे इगलैड मे काफी पहले ही दबा दिया गया था, के पुनरुत्थान का प्रयत्न करते रहे। सन् १८२९ के कैथोलिक इमेसीपेशन एक्ट द्वारा समान अधिकार मिल जाने पर तथा इगलैड आने वाले आयरिश लोगो द्वारा यह धर्म स्वीकार कर लिये जाने पर, रोमन सम्प्रदाय सख्या तथा प्रभाव दोनो ही दृष्टियो से शक्ति सम्पन्न होता गया। लेकिन तब भी सन् १८५० मे प्रोटेस्टेन्ट राष्ट्र, जैसाकि पोप द्वारा इगलैड मे क्षेत्रीय पादरियो की नियुक्ति के प्रति तथाकथित, 'पैपल आक्रमण' के रूप मे प्रकट हुए व्यापक विरोध से स्पष्ट है, इस सम्प्रदाय को सहन नही कर सका था।

इस बीच जैसे-जैसे नई औद्योगिक व्यवस्था मे मजदूर वर्ग तथा मध्यवर्ग सख्या, धन, राजनैतिक शक्ति तथा सामाजिक सम्मान की दृष्टि से अधिकाधिक शक्ति प्राप्त करते गये विरोधियो (नॉम्नकनफर्मिस्ट्स) की शक्ति बढती गई। सन् १८६० तथा ७० के बीच जब मैथ्यू एरनॉल्ड ने इगलिश समाज के सम्मुख उसका असली रूप रखा तब उसने सबसे अधिक नॉनकनफर्मिस्ट 'फिलिस्टीन्स' के प्रति घृणा दर्शायी थी, जिन्हे कि उसके आक्सफोर्ड सस्कार तनिक भी पसन्द नही कर पाये थे, इन लोगो मे एरनॉल्ड को उनकी पीढी का प्रतिनिधित्व करने वाले कुछ ऐसे लोग मिल गये थे जिन्हे अपनी पुरानी इगलिश स्वतन्त्रता तथा नई उपलब्ध सम्पत्ति पर अभिमान था लेकिन 'माधुर्य एव प्रकाश' (स्वीटनेस एड लाइट) के अभाव मे रोगग्रस्त समुदाय की सामाजिक तथा बौद्धिक आवश्यकताओ का कोई ज्ञान नही था। लेकिन इस नयी व्यवस्था के धनी-मानी उद्योगपतियो मे से कई ने अधिक फैशनेबल 'एस्टेब्लिश्ड चर्च' की सदस्यता ग्रहण कर ली और स्वय को उभार कर अथवा वैवाहिक सम्बन्ध द्वारा वे उच्चवर्ग के सदस्य बन गये। इस प्रकार समाज एक 'मिश्रित समाज बनता जा रहा था।'

एक और कवि रॉबर्ट ब्राउनिग, जो आक्सफोर्ड से सम्बद्ध नही था, इसे अपेक्षाकृत अधिक अच्छी तरह से समझ रखा था कि प्यूरिटन धर्म ने गरीबो तथा कठोर परिश्रम करने वाले वर्गो के जीवन को कौन सी सुविधाए प्रदान की थी। और मैथ्यू एरनॉल्ड के सॉनेट 'ईस्ट लन्डन' की दृष्टि से देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि वह भी इस स्थिति को समझ गया था।[१]

विक्टोरिया के शासनकाल के पूर्वार्ध मे इगलैड की उत्पादन क्षमता तथा सम्पत्ति मे होने वाली तीव्र वृद्धि तथा उसके कारण उत्पन्न परम्पराविहीन मध्यवर्ग तथा

सस्कारात्मक पक्ष इस शताब्दी मे केवल आगे चलकर ही विकसित हुए· यह आक्सफोर्ड मूवमेट के असली स्वरूप की विशेपता नही थी।

[१] विलियम लॉ मैथीसन, इगलिश चर्च रिफॉर्म १८१५-४०; डीन चर्च, दि आक्सफोर्ड मूवमेट, प्रिट्रैक्टेरियन आक्सफोर्ड, लेखक डब्लू टकवेल, मैथ्यू एरनॉल्ड, कल्चर एड एनार्की।

अपरिपक्व सर्वहारा वर्ग ज्ञान दीप्ति के लिये शिक्षा के विकास की भी अपेक्षा कर रहा था। सन् १८७० मे जबकि ग्लैडस्टोन की सरकार ने शिक्षा को राज्य के अधीन लेने का प्रस्ताव कर इस बात की चिन्ता किये बिना कि धार्मिक शिक्षा के प्रश्न पर 'चर्च' तथा 'डिसेन्ट' (विरोधी)—दोनो प्रतिद्वन्द्वी —एक दूसरे का गला काटने पर उतारु हो जाएगे, जिस साहस का परिचय दिया था उससे पूर्व दुर्भाग्य से कोई भी सरकार ऐसा साहस नही कर पायी थी। सन् १८४१ मे सर जेम्स ग्रैहम ने ब्रौघम को लिखा था . इस देश मे धर्म उसकी प्रगति के लिये सबसे अधिक बाधक है, जो शिक्षा की आधार भूमि है। भीरु सरकार ने जो कुछ करने का प्रयत्न किया वह केवल विभिन्न स्वेच्छित मडलो द्वारा सचालित स्कूलो की इमारतो के लिये वर्ष के अन्त मे अनुदान स्वरूप बीस हजार पौड दे देने तक सीमित था। यह १८३३ मे प्रारम्भ किया गया था और कुछ हेर-फेर प्रत्येक वर्ष कर दिया जाता था। इस धर्मार्थ दान के वितरण के लिये प्रीवि-काउन्सिल की एक समिति नियुक्त कर दी गई थी जो राज्य-अनुदानित स्कूलो का निरीक्षण करती थी और इस कार्य के लिये एक स्थायी सचिव भी नियुक्त कर लिया गया था। वर्तमान शिक्षा मन्त्रालय का उद्गम इसी शैशव अवस्था मे हुआ था। सरकारी अनुदान प्राप्त करने के लिये ऐसी निरीक्षण व्यवस्था को स्वीकार करना एक आवश्यक शर्त थी और यह शर्त प्रत्येक क्षेत्र पर काफी पहले ही से लागू होती आ रही थी। सन् १८३३ के फैक्ट्री अधिनियम द्वारा फैक्ट्री इन्सपेक्टरो की नियुक्ति हुई थी और इन्ही से स्कूल इन्सपेक्टरो का विकास हुआ, और इसके कुछ समय बाद ही खानो के निरीक्षको (माइन्स इन्सपेक्टरो) की नियुक्ति हुई। सरकारी निरीक्षण की प्रवृत्ति बढती जा रही थी, और एक ऐसे समय का आना अवश्यम्भावी होता जा रहा था जब देश की लगभग आधी गतिविधियो पर सरकारी नियत्रण स्थापित हो जाता।

इस बीच, इस सर्वाधिक धनी राज्य के लिये शिक्षा पर बीस हजार पौड का व्यय करना कोई खास बात नही रह गई थी। प्रसियन राज्य तो सभी प्रस्यावासियो की शिक्षा की व्यवस्था कर रहा था। जर्मनी के शासक उन्नीसवी शताब्दी के प्रारम्भ मे अपनी प्रजा को शिक्षा तो दे रहे थे लेकिन सरकार मे हिस्सा बटाने तथा राजनैतिक गतिविधियो के लिये उन्हें स्वतन्त्रता नही दी गई थी। अग्रेजी राज्य ने सामान्यजन को पर्याप्त राजनैतिक स्वतन्त्रता तथा सरकार मे भी कुछ भाग प्रदान कर रखा था लेकिन शिक्षा के लिये निजी धार्मिक अनुदानो पर आश्रित छोड रखा था। केवल सन् १८६७ के रिफार्म अधिनियम द्वारा जब नगर के श्रमिक वर्गों को मतदान का अधिकार प्राप्त हुआ तभी राजनीतिज्ञ लोग यह कह पाए कि 'हमे अपने मालिको को शिक्षित बनाना चाहिये।'

जिस समय सामान्य लोगो की प्राथमिक शिक्षा के लिये इतनी अपर्याप्त व्यवस्था थी, 'पब्लिक स्कूल व्यवस्था' के माध्यम से धनी लोगो की माध्यमिक शिक्षा काफी प्रगति कर रही थी।

शताब्दी के प्रारम्भ मे माध्यमिक स्कूल तीन प्रकार के थे (१) फैशनेबल 'पब्लिक स्कूल' (जो निजी स्कूल थे) जैसे एटन, विन्चेस्टर तथा हैरो। इनकी सख्या कम थी, पाठ्यक्रम पुराने प्रकार का था और साथ ही इन स्कूलो मे अनुशासन की समस्या भी बनी रहती थी। दूसरे, निजी अकादमिया (प्राइवेट एकेडेमीज) थी जहा फैशन विरोधी डिसेन्टिग मध्यवर्ग वैज्ञानिक तथा आधुनिक प्रकार की शिक्षा प्राप्त करता था और यहा अनुशासन भी ठीक था, और अन्तिम प्रकार उन अनुदान प्राप्त पुराने 'ग्रामर-स्कूलो' का था जिनमे से अनेक उपेक्षा तथा भ्रष्टाचार—जो अठारहवी सदी की सरकारी सस्थाओ की एक विशेपता बन चुकी थी—के कारण समाप्तप्राय हो गये थे।

इगलैड की बढती हुई शक्ति तथा समृद्धि को तथा इस शताब्दी को आन्तरिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे जिस बहुमुखी नेतृत्व की आवश्यकता थी उसे देखते हुए माध्यमिक शिक्षा का विस्तार अत्यन्त आवश्यक था। और यद्यपि कुछ सीमा तक इसकी पूर्ति भी हुई थी लेकिन वह अप्रत्याशित रूप मे ही थी जिसके कई महत्वपूर्ण सामाजिक परिणाम भी निकले। यह सोचा जा सकता था कि इस 'सुधार' प्रधान तथा प्रजातान्त्रिक पद्धति वाले युग मे अनुदान प्राप्त ग्रामर स्कूलो की सख्या तथा स्वरूप मे राजकीय हस्तक्षेप द्वारा यदि प्रगति हो तो विभिन्न वर्गों वाले कुशाग्र-बुद्धि बच्चे उसी प्रकार एक साथ अध्ययन कर सकते थे और अच्छे परिणाम दर्शा सकते थे जिस प्रकार कि ट्यूडर तथा स्टुअर्टकालीन ग्रामर स्कूलो मे होता था। लेकिन विक्टोरिया के शासनकाल मे मैनचेस्टर के प्रभावशाली स्कूलो को छोडकर साधारणत ग्रामर स्कूलो को विशेष महत्व नही मिला। साथ ही मत विरोधी अकादमिया, जो विगत शताब्दी मे काफी उपयोगी सिद्ध हुई थी, अब समाप्त हो चली थी। अब फैशन केवल 'पब्लिक स्कूलो' का ही था जो एटन, वेस्टमिस्टर, विन्चेस्टर तथा हैरो के पुराने आदर्शों पर आधारित थे और रगबी इनका विशेप रूप से आदर्श माना जाने लगा था।

यह प्रगति अशत एक ही व्यक्ति के प्रयत्नो के फलस्वरूप अकस्मात् ही हुई थी। सन् १८३० की दशाब्दी मे रगबी का हेडमास्टर डा टॉमस एरनॉल्ड एक महान् शिक्षा सुधारक था। धर्म तथा चर्च प्रार्थना को पर्याप्त महत्व देना, कक्षानायक की प्रणाली का प्रचलन, शारीरिक दड, मद्यपान, दुराचार तथा 'बियर गार्डन' जैसे पब्लिक स्कूलो की अनुशासनहीनता की समाप्ति के सफल प्रयत्नो के द्वारा उसने व्यापक रूप से प्रभावित करने वाले आदर्श की स्थापना की थी। पुराने प्रतिष्ठानो मे सुधार कर दिया गया और नयों को प्रतिस्पर्धा की भावना के आधार पर प्रारम्भ कर दिया गया। खेलकूद का सगठित रूप, जिस पर कि एरनॉल्ड ने खास जोर नही दिया था, स्वत ही प्रकट हो गया जिसने पब्लिक स्कूलो के जीवन को काफी प्रभावित किया और आक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज तक मे लोकप्रिय हो गये।[१]

---

[१] 'एरनॉल्ड' द्वारा लाए गये सुधारो तथा खेलकूद के सगठित आयोजनों के पहले

सुधारे गये पब्लिक स्कूलो द्वारा समाज के मध्यवर्ग ने अपने लडको के लिये शासनाधिकार प्राप्त 'उच्चवर्ग' मे प्रवेश पाने का मार्ग खोज लिया था। पुराना भू-स्वामी वर्ग, पेशेवर लोग तथा नये उद्योगपति, सभी ने इकट्ठे शिक्षा प्राप्त की थी और सभी का एक विस्तृत आधुनिक अभिजात वर्ग बन गया था, यह वर्ग राजकीय आवश्यकताओ की पूर्ति तथा विक्टोरियाकालीन इगलैड तथा सम्पूर्ण साम्राज्य के नेतृत्व के लिये सख्या मे काफी बडा था।

कई दृष्टियो से पब्लिक-स्कूल काफी सफल थे और इन आवश्यकताओ की पूर्ति करते थे। यद्यपि इन स्कूलो ने आक्सफोर्ड तथा कैब्रिज व टेनीसनकालीन सम्पूर्ण इगलैड के साहित्यिक एव सास्कृतिक विकास की पृष्ठभूमि का निर्माण किया था लेकिन जिन विषयो की इनमे शिक्षा दी जाती थी वे प्रतिष्ठित पुस्तको (क्लासिक्स) के ज्ञान तक ही सीमित होने के कारण इस नये युग की सभी आवश्यकताओ को पूरा करने मे समर्थ नही थे। पब्लिक स्कूलो के छोटे घेरे मे, जहा कि लडके स्वय अपने समाज का निर्माण तथा नियत्रण करते थे, चरित्र काफी दृढता प्राप्त कर लेता था लेकिन अपने साथियो के प्रति वफादारी की तुलना मे बौद्धिक विकास को पर्याप्त प्रोत्साहन नही मिलता था। डा आरनॉल्ड की मृत्यु के लगभग बीस वर्ष बाद उसके आलोचक पुत्र मैथ्यू ने इगलिश प्रशासक वर्ग को 'बर्बरो' की सज्ञा दी थी पब्लिक स्कूल 'पृथ्वी के आदिवासी, सशक्त पुत्रो' के गुणो तथा दुर्गुणो दोनो ही की रक्षा करते थे।

उच्च, उच्च-मध्यवर्ग तथा व्यावसायिक वर्गो का पब्लिक स्कूलो मे समन्वय हो गया था और इसी का दूसरा पक्ष यह था कि पृथक् शिक्षा-प्रणाली द्वारा शेष राष्ट्र से वे कट गये थे। सामाजिक विभाजन की प्रवृत्ति, जिसे आधुनिक बडे नगरो मे 'वर्गा

माता-पिता को अपने लडको को किन उपायो द्वारा अनुशासित करना पडता था इसका विवरण काउपर की टाइरोसिनियम (१७८५) नामक कृति मे प्राप्त हो सकता है

"यदि आपका लडका पियक्कड या शिक्षा से जी चुराता हो, आवारा, जिद्दी हो या ये सभी कुछ एक साथ हो, तो उसे लडको की भीड मे बुला कर अनुभव एकत्र करने के लिये छोड देना चाहिये- इस भीड मे कुछ लडके जहा शोर-शराबा करने वाले शैतान बालक हो, कुछ बडे लोग हो तथा दस मे से पाच आवारा तथा शैतान लोग भी हो सकते है। वहा वह सोलह साल की आयु होने के काफी पहले ही यह सीख जाएगा कि लेखक बडी ही उपयोगी वस्तु होता है। स्कूल मे केवल किताबों के सतही नियम भर ही सिखाये जाते है, असली शिक्षा आम स्थानो पर अनुभव से ही मिलती है।" सामाजिक इतिहास के अध्येता के लिये यह सम्पूर्ण कविता काफी उपयोगी है।

के अनुसार पृथक-पृथक स्थान मिलने के कारण काफी बल मिला था, इस शिक्षा-प्रणाली द्वारा और तीव्र हो गई। फिर, पब्लिक स्कूलो का खर्चा, भी ग्रामर स्कूल तथा डे-स्कूल की अपेक्षा कही अधिक था। मध्यवर्ग तथा व्यावसायिक वर्गों के परिवारो पर एक स्वय-आरोपित वृहद भार बन गया। और निस्सन्देह इसी कारण शताब्दी के अन्त मे समाज के उत्कृष्ट वर्गों मे भी स्कूल जाने वाले बच्चो की सख्या मे दुखद ह्रास होने लगा।

आधुनिक इगलैड की सफलताओ और असफलताओ, दोनो ही के अधिकाश भाग के लिये पब्लिक स्कूलो को पर्याप्त रूप मे उत्तरदायी ठहराया जा सकता है। ये स्कूल वस्तुत इगलिश स्वभाव तथा प्रवृत्ति द्वारा अचेतन रूप से विकसित हो उठे थे और विदेशो मे भी उनका सफलतापूर्वक अनुकरण किया जाने लगा था।

शताब्दी के बीच के वर्षो मे लडकियो की माध्यमिक शिक्षा की व्यवस्था समुपयुक्त नही थी। उन्हे अपने भाइयो की खर्चीली शिक्षा के आगे बलिदान होना पडता था। इसमे तथा अन्य क्षेत्रो मे नारी का उत्थान विक्टोरिया-शासनकाल के अन्तिम तीस वर्षो (इगलैड मे स्त्री जाति का उत्थान इसी काल मे हुआ था) तक के लिये टल गया गा।

बावजूद इसके कि मैथ्यू आरनॉल्ड ने उच्चवर्ग तथा मध्यवर्ग की 'बर्बर' तथा 'फिलिस्तीनो' जैसे तीक्ष्ण शब्दो द्वारा आलोचना की थी वे स्वय भी इसी परिवेश के भविष्य द्रष्टा तथा कवि थे, और बावजूद इसके कि उन्होने हमारी माध्यमिक शिक्षा को 'ससार की सबसे निकृष्ट शिक्षा-प्रणाली' माना था। सत्य यही है कि उन्नीसवी शताब्दी मे इगलैड की उच्च-सस्कृति विविध, ठोस तथा सम्पूर्ण समुदाय के एक बहुत बडे भाग पर आच्छादित थी। निस्सन्देह ससार मे आने वाली कई शताब्दियो तक इतनी उन्नत तथा व्यापक सस्कृति का अवतरण कदाचित् ही हो।

उन्नीसवी शताब्दी के बीच के वर्षों मे औद्योगिक परिवर्तन के कारण पहले ही से एक व्यापक असस्कृतता का प्रसार हो रहा था जिसका बीजारोपण उच्च साहित्यिक सस्कृति के अन्तर्विरोध रूप मे नवविकसित पत्रकारिता, ग्रामीण जीवन की अवनति तथा जीवन के यत्रीकरण द्वारा काफी पहले हो चुका था। वैज्ञानिक शिक्षा के आगमन से मानवता का उन्मूलन अवश्यम्भावी हो गया था। लेकिन उन्नीसवी सदी के मध्य मे शिक्षा अब भी वैज्ञानिक की अपेक्षा मानवता प्रधान थी और यद्यपि इसमे कुछ गम्भीर व्यावहारिक हानिया भी निहित थी लेकिन इससे कुछ काल के लिये एक महान सभ्यता की रचना हुई जिसका आधार ऐसी विद्वता थी जिसके अठारहवी शताब्दी की अपेक्षा कही अधिक पाठक थे, और यह सभ्यता उन दिनो की अपेक्षा, जब बॉइल्यू तथा पोप सुरुचि सम्पन्नता का आदर्श माने जाते थे कही अधिक विविधता प्रधान तथा विषय वस्तु एव शैली की दृष्टि से कैथोलिक भी थी। साहित्य एव विचार तथा समाज

और राजनीति दोनो ही दृष्टियो से यह युग अभिजाततन्त्र से प्रजातन्त्र तथा व्यक्ति परक सत्ता से लोक-मत के बीच की सक्रान्त अवस्था थी, साहित्य एव चिन्तन के लिये यह स्थिति अन्त तक लाभप्रद रही।

गम्भीर ऐतिहासिक कृतिया भी एक बडे पाठक वर्ग को ध्यान मे रख कर लिखी जाती थी और अपने उद्देश्य मे सफल होती थी, यह विशेषता केवल मैकाले की ही नही थी वरन् एक आम बात थी। धार्मिक वाद-विवाद, नैतिकता विषयक टिप्पणियो तथा कट्टर सम्प्रदायो के प्रति शकालू होकर किसी अधिक उपयुक्त सम्प्रदाय की खोज आदि से उत्पन्न वातावरण मे कार्लाइल, रस्किन तथा इन मैमोरियम के लेखक को लेखन तथा कल्पना का पर्याप्त आधार मिल गया था और मरणोपरान्त भी जितनी ख्याति बायरन को नही मिल सकी थी उतनी वर्ड्सवर्थ को अपनी वृद्धावस्था मे ही प्राप्त हो गई थी। दूसरी ओर समाज के इस आलोचनात्मक विश्लेषण की दोषप्रदता तथा उसमे कुछ सुधार की आवश्यकता ने डिकेन्स, थैकरे, श्रीमती गेस्केल तथा ट्रोलोप जैसे लेखको को प्रेरित किया तथा लोकप्रियता भी प्रदान की। और व्यक्ति के अधिकारो (जिनमे स्त्री के अधिकारो को भी पर्याप्त महत्व दिया गया था) के विषय मे ब्रोन्टे बहिनो ने लिख कर फ्लोरेन्स नाइटइगेल से कम कार्य नही किया है। जॉन स्टुअर्ट मिल ने 'लिबर्टी' (१८५९) तथा 'सब्जेक्शन ऑफ विमेन' (१८६९) मे पारस्परिक बन्धनो पर आघात कर व्यक्ति (स्त्री तथा पुरुष) के अधिकारो का पक्ष लेते हुए वैचारिक तथा जीवन की स्वतन्त्रता पर इस प्रकार बल दिया कि उसे विक्टोरिया के शासनकाल की प्रारम्भिक तथा अन्तिम अवस्थाओ के बीच की धुरी माना जा सकता है।

विज्ञान का वह पक्ष जो मानवतावाद के अत्यधिक निकट था, अर्थात् प्रकृति की निकट से की गई स्निग्ध व्याख्या, एक और ऐसा स्रोत था जिसने इस काल के साहित्य को प्रेरणा तथा व्यापक प्रभाव-क्षमता प्रदान की। अठारहवी शताब्दी के उत्तर काल मे सेलबोर्न के ह्वाइट ने और बेविक तथा अन्य नये तथा व्यावसायिक प्रकृतिवादियो ने अपने देशवासियो को उस प्रकृति से प्रेम करना सिखाया जिसकी गोद मे उन्होने जन्म लिया था। शताब्दी के अन्त मे प्रकृति के प्रति यह अभ्यस्त अनुरक्ति गर्टन, टर्नर तथा कॉन्स्टेबल के चित्रो तथा वर्डस्वर्थ और कीट्स की कविताओ मे और अधिक मुखरित हुई। सन् तीस, चालीस और पचास की अगली पीढियो मे डिविट डेविड कॉक्स, एड्वर्ड लियर तथा अन्य कई लोग और भी प्राकृतिक चित्रण करने वाले प्रतिभाशाली चितेरो की सूची मे जुड गये, ये लोग पानी के रगों द्वारा भी इतनी शीघ्रता से चित्र नही बना सके कि जनता की माग को पूरा कर पाते। काव्य के क्षेत्र मे विक्टोरिया युग के अधिकाश भाग पर टेनीसन का एक छत्र साम्राज्य था। उसकी प्रभाव-क्षमता उसके प्राकृतिक चित्रण की सशक्तता, सुन्दरता तथा सटीकता मे निहित थी।

अपनी सर्वोत्कृष्ट स्थिति मे टेनीसन प्राकृतिक जगत् के अवलोकनो में एक अदृष्ट

तथा अलौकिक चमक पैदा कर देता था। इसी कारण विक्टोरिया कालीन लोगो पर, जो शब्द-चमत्कार तथा प्रकृति के प्रति अनुरक्त थे, टेनीसन का प्रभाव सहज ही पड गया। टेनीसन के सूक्ष्म प्रकृति चित्रण से टॉमसन के स्थूल ऋतु चित्रण टेनीसन के पूर्व जिससे मध्यवर्गीय पाठक वृन्द अत्यधिक प्रभावित था—का प्रभाव कम हो गया था। विक्टोरिया युग के प्रारम्भिक काल मे क्रैनफोर्ड की महिलाओ ने टेनीसन के विषय मे सुन रखा था कि 'यह युवक मुझे आकर कहता है कि प्रभूर्ज कलिया (ऐश बड्स) श्याम वर्णी है, और मैं पाती हू कि मुझे वे श्याम ही प्रतीत होने लगती है।'

इसी पाठक वर्ग पर रस्किन का प्रभाव भी, जो सन् चालीस की शताब्दी मे सहसा ही उभर आया था और फिर अनेक वर्षो तक बना रहा, इसी प्रकार का था। मॉडर्न पेन्टर्स नामक पुस्तक मे, जिसे इगलिश प्राकृतिक चित्रण के पक्ष-पोषण के लिए, विशेष रूप से टर्नर के चित्रो को आधार बना कर तथा प्रि-राफेलाइट्स के बचाव पक्ष के रूप मे लिखा गया था, लेखक ने इस गद्य पुस्तक मे बडे ही सुन्दर तथा उत्कृष्ट ढग से बादलो, पहाडो तथा हरियाली का ईश्वर प्रदत्त सामग्री के रूप मे विश्लेषण किया है। इन चित्रो के सत्यान्वेशी गुणो की परख मे हो सकता है कि उसने कोई गलती की हो लेकिन कम से कम इसका श्रेय तो उसे देना ही होगा कि अपने देशवासियो को उनकी आल्प्स और इटली की यात्रा के लिये तथा अपने ही देश के परिचित जगलो और मैदानो मे विचरण के लिये एक नई दृष्टि दी थी।

यूरोप मे, जहा अब अपेक्षाकृत अधिक शाति थी और नानावर्णी सुन्दरता की प्रधानता थी, और जिसका न तो इतना अधिक यत्रीकरण ही हुआ था और न राष्ट्रो के पारस्परिक घृणा भाव से उत्पन्न युद्ध की सीमाए ही खिची थी इगलैंडवासियो के लिये एक बृहद् क्रीडा स्थली था, वहा लोग अपने नव अर्जित धन का उपयोग करने तथा आनन्द मनाने के लिये—पहाडो के अभियान, स्विट्जरलैंड के कुसुमित चरागाहो की सैर, नीदरलैंडस, इटली तथा फ्रान्स की स्थापत्य कला, चित्रशालाओ तथा प्राकृतिक दृश्यावलियो के दर्शन के लिये घूमा करते थे। इस काल के अग्रेज यात्री को इतिहास, साहित्य तथा प्राकृतिक विज्ञान की कुछ जानकारी अवश्य होती थी जिसके द्वारा प्राकृतिक तथा मानवीय जगत् के अवलोकन तथा गुण ग्राहकता मे उसे सहायता मिलती थी।

फिर ब्रिटेन की नयी रेल व्यवस्था ने पहाडी हवा तथा प्राकृतिक दृश्यो का आनन्द लेने के लिये सैलानियो के लिये स्कॉटलैंड के पहाडी स्थलो (हाईलैंड्स) तक पहुँचने की भी व्यवस्था कर दी थी। धनी लोगो के पास अपने निजी जगल भी थे जहा वे हेमन्त ऋतु मे अपने अतिथियो के साथ पशु-पक्षियो की क्रीडाओ तथा प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द लेते थे। महारानी तथा उनके पति एलबर्ट द्वारा बालमोरल से जगली प्रदेशो तक की यात्रा ने तथा एलबर्ट द्वारा किये गये हिरण के शिकार और लैन्डसीअर द्वारा बनाए गए उसके चित्र ने हाईलैंड के दृश्यो को सभी अग्रेज वर्गों मे

काफी लोकप्रिय बना दिया था और अब वे स्कॉट की प्रेमानुभूतियो वाले प्राकृतिक प्रान्तरो को स्वय जाकर देखने लगे थे।

इस प्रकार शताब्दी के वर्षों मे विक्टोरिया की प्रजा मे इतिहास तथा प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति अभिरुचि जागृत हो गई थी। वे प्राचीन साहित्य के अध्ययन तथा अपने युग के श्रेष्ठ साहित्य के सृजन मे पारगत थे और इस प्रकार एक महान साहित्यिक सभ्यता का सृजन तथा उपभोग कर रहे थे। हमारे इन पूर्वजो ने यद्यपि समुद्र तथा भूमि को पार कर रोम की जल प्रणाली तथा गोथिक गिरजो (कैथेड्रल्स) को प्रशसाभाव से देखा था लेकिन उन्होने स्वय शोचनीय इमारतो का ही निर्माण किया और उसमे केवल दैनिक उपयोग के सामान जैसे फर्नीचर आदि को ही जमा लिया था। इस रूप मे रीजेन्सी तथा प्रिन्स कॉनसोर्ट के कालो के बीच की अवधि मे लोगो की अभिरुचि का ह्रास एक आश्चर्य की वस्तु थी। अत्यधिक सुसस्कृत तथा शिक्षित वर्ग भी उतने ही खराब थे जितना कि कोई अन्य वर्ग ऑक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज के कालेजो के डोन्स के आदेशानुसार विलियम बटरफील्ड तथा एलफ्रेड वाटरहाउस के समय भीमकाय इमारतो का निर्माण आज केवल कष्टप्रद ही प्रतीत होता है।

इस युग की एक दुर्भाग्यपूर्ण प्रवृत्ति यह भी थी कि अच्छे व्यवस्था योग्य महलो को गिराया जा रहा था और उनके स्थान पर ऐसे ग्रामीण और सौन्दर्य शून्य भवनो का निर्माण कराया जा रहा था जहा कि इगलैंड के अत्यधिक समृद्ध क्षेत्रो वाले अमीर लोग लन्दन से आने वाले अपने मेहमानो को सुख-सुविधा दे सकें। उनके अधिक सुरुचि सम्पन्न उत्तराधिकारियो का, जिनके पास कि अब बैंक मे थोडा ही रुपया शेष था, अपनी निर्धनता तथा इस भार के लिये अपने अग्रेजो को कोसना स्वाभाविक था।

विक्टोरियन दृष्टि के इस स्थापत्य विषयक धुंधलेपन के कारणो की खोज इतनी सहज नही है। लेकिन प्रमुख पादरी के रूप मे रस्किन ने क्योकि बडे बेढगे धार्मिक आधारो पर उस सम्पूर्ण पुनर्जागरण (रेनासा) की परम्परा को, जिसकी कि अग्रेजी भवन निर्माण कला एक महत्वपूर्ण भाग थी, बेकार सिद्ध कर दिया था अत आशिक रूप मे उसे इसके लिए उत्तरदायी ठहराया जा सकता है। धीरे-धीरे उसका प्रभाव समाज मे व्यापक रूप धारण करता गया और उन लोगो तक भी पहुँच गया जो उसकी पुस्तको की एक भी पक्ति पढना पसन्द नही करते थे, और उन लोगो तक भी, जिनका विश्वास था कि गोथिक चमत्कारो तक सीमित रहना ही सर्वश्रेष्ठ है। इस प्रकार भवन-निर्माण कला का वास्तविक रहस्य तथा अनुपात की चेतना लुप्त होती गई। दूसरी ओर इस ह्रास के लिये औद्योगिक क्रान्ति को एक कारण माना जा सकता है: भवन-निर्माण तथा अन्य धधो का यत्रीकरण तथा कला का ह्रास निस्सन्देह इसका एक प्रमुख आतरिक कारण था। भवन-निर्माण की स्थानीय प्रणाली को, जो स्थानीय सामग्री के प्रयोग पर निर्भर करती थी, रेलो द्वारा पहुँचायी जाने वाली कारखानो में

बनी सस्ती ईंटो, पट्टियो आदि के द्वारा स्थानापन्न कर दिया गया और इस प्रकार वश-परम्परा से चले आ रहे हस्तकौशल तथा क्षेत्रीय परम्परा को एक तीव्र आघात लगा। लेकिन अब भवन-निर्माण आधुनिक विधि द्वारा मकानो के बृहद् स्तरीय उत्पादन मे रूपान्तरित हो गया था। मशीनो से बना फर्नीचर भी इतना ही खराब था। मोटी हत्थेदार आराम कुर्सिया अधिक आरामप्रद हो सकती है, नये मकान अधिक सुविधा-जनक हो सकते हे, लेकिन सौन्दर्य नाम की इनमे कोई वस्तु शेष नही रह गई थी।

सन् चालीस, पचास और साठ के दशको मे चित्रकला अब भी एक महान कला एव व्यवसाय मानी जाती थी और उसकी माग भी काफी थी। और उसका कारण यह था कि पारिवारिक चित्रो, प्रसिद्ध चित्रो की प्रतिलिपिया तथा प्रकृति के सुन्दर दृश्यो तथा पुरानी इमारतो के चित्र बनाने के लिये फोटोग्राफी का अभी इतना विकास नही हो पाया था कि वह चित्रकला का स्थान ग्रहण कर ले। रोम तथा यूरोप की अन्य सुन्दर राजधानियो मे अच्छे तथा बुरे सभी प्रकार के चित्रकारो की एक बडी सख्या रहती थी जो प्राकृतिक दृश्यो तथा पुराने ग्राहको के चित्र बना कर अग्रेज यात्रियो को देते थे और वे उनकी यात्रा की स्मृति ताजा रखने के लिए उन चित्रो को अपने साथ स्वदेश ले आते थे। व्यावसायिक दृष्टि से इस समय रॉयल एकेडेमी अपने चरमोत्कर्ष पर थी—नये मिल मालिको अथवा उत्पादनकर्त्ताओ को उनके आलीशान भवनो की सजावट के लिये व्यक्तियो तथा प्राकृतिक दृष्यो के चित्रो और ऐतिहासिक महत्व की वस्तुओ की बिक्री किया करती थी। रस्किन के महत्व प्राप्त कर पाने मे आशिक रूप मे यह भी एक कारण था कि यह व्यापार इतना व्यापक हो गया था। जिस प्रकार किसी समय 'एडिनबरा' तथा 'क्वार्टरली' पत्रिकाओ का साहित्य जगत् मे एक छत्र आधिपत्य था उसी प्रकार रस्किन ने भी आज कला जगत पर अपना एक छत्र शासन स्थापित कर रखा था। आर ए की शिकायत की नकल (पैरोडी) इस प्रकार बनाई गई थी .

मै केवल चित्र बनाता हू
कोई शिकायत नही सुनता,
और मै शुष्क होने लगू
और वहशी रस्किन
उन्हे अपने जगली दातो मे चबा डाले
और पूर्व इसके कि तब उनका कोई भी
ग्राहक बनना पसन्द न करे
मै उन्हे बेच देता हू।

धार्मिक तथा सामाजिक शक्तियो के जिन संयुक्त खतरो से रिफॉर्म-बिल के तुरन्त पूर्व के काल मे एस्टेब्लिशमेन्ट के पादरी वर्ग को आशकित होना पड़ गया था वही

खतरे अब पुराने म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन्स को, जिनसे कि चर्च के स्वार्थ सम्बन्धित थे, आशकित कर रहे थे।[1] लेकिन चर्च की भाति, पुराने नियम (कॉलियापोरेशन्स) आत्म-सुधार कर पाने मे उतने ही सामर्थ्यहीन थे जितने कि पार्लियामेन्टरी रॉट्न बॉरोज जिनसे कि उनका निकट का सम्बन्ध था। 'रॉट्न बॉरोज' की समाप्ति पर सन् १८३५ के म्यूनिसिपल रिफॉर्म अधिनियम द्वारा निरर्थक नगरीय स्वायत्तशासन समाप्त कर दिया गया।

नये वर्गो को तुरन्त सत्ता हस्तान्तरित हो जाने के कारण, इस कानून का नगरो के जीवन पर काफी प्रभाव पडा और कुछ प्रभाव ऐसे भी थे जिनकी कोई पूर्व-कल्पना नही की जा सकी और इन्ही के आधार पर अगले सौ वर्षों मे सभी वर्गो—विशेप रूप से गरीबो के उपकार के लिये सामाजिक सेवा की दृष्टि से एक महान नगरपालिका के ढाचे की रचना की गई। सन् १८३५ मे कोई भी उस दिन की कल्पना नही कर सका था जब कि 'नयी नगरपालिकाए' केवल सडके ठीक करने तथा उन पर प्रकाश की व्यवस्था करवाने तक ही सीमित न रह कर मकानो के निर्माण कार्य, क्षेत्र की स्वच्छता एव स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यों का भी नियत्रण करेगी, उद्योगो तथा वाणिज्य की भी व्यवस्था करेगी, तथा लोगो की शिक्षा का भी प्रबन्ध करेगी।

जिस तत्काल परिवर्तन ने समकालीन लोगो को प्रभावित किया वह नगरपालिका सम्बन्धी अधिकारो (जो कुछ अधिकार उन दिनो थे) का स्थानान्तरण था, जिसमे टोरी (अनुदार) वकीलो, पादरियो तथा कुलीन लोगो के एजेन्टो के पुराने निगमो पर स्थापित आधिपत्य की उपेक्षा कर दी गई थी। नगर प्रशासक के नये तरीको मे यद्यपि 'माधुर्य एव प्रकाश' ('स्वीटनेस एण्ड लाइट') का अभाव था लेकिन उनमें शक्ति अवश्य थी और वे सुधारो का भी स्वागत करते थे, फिर इसके अतिरिक्त यह तथ्य कि उन्हे समयानुसार प्रजातात्रिक रूप मे चुना गया था, मतदाताओ के हितो को ध्यान मे रखने की प्रेरणा देता था। सन् १८३२ के म्यूनिसिपल रिफॉर्म बिल मे ससद के लिये मतदान का अधिकार केवल 'दस पौंड वाले परिवारो' तक ही सीमित था लेकिन इस क्रान्तिकारी म्यूनिसिपल रिफॉर्म बिल मे, जो सभी कर देने वालो को मतदान का अधिकार प्रदान करता था, उसका अनुकरण नही किया गया। श्रमिक वर्गों को नये बॉरोज मे कम से कम स्थानीय चुनावो मे तो अधिकार प्राप्त था ही। इस प्रकार नागरिक प्रशासन एकदम नये हाथो मे चला गया था, इसके अतिरिक्त बडे नागरिक क्षेत्रो मे न्यायपालिका (ज्यूडीश्यरी) के पदो पर राजा की ओर से कार्य करने वाली

---

[1] इन सम्बन्धो पर रॉयल हिस्टोरिकल सोसाइटी फॉर १९४० मे सकलित 'ए लेसेस्टर इलेक्शन ऑफ १८२६' नामक लेख मे प्रकाश डाला गया है। हैलेवी की हिस्ट्री ऑफ इगलिश पीपूल (अर्नेस्ट बेन, वाटकिन'स ट्रान्सलेशन, १९२७), III, पृ० २१७-२२० भी द्रष्टव्य है।

ह्विग सरकारो द्वारा मत विरोधियो तथा नये प्रकार के मध्यवर्गीय नागरिको की नियुक्ति की जाने लगी थी। इगलैड के नगरो मे अब 'पीटरलू मजिस्ट्रेटो' की और नियुक्तिया नही होती थी।

सन् १८३२ का रिफार्म बिल तथा उसी के क्रम मे १८३५ के म्यूनिसिपल रिफार्म बिल, दोनो ने नगर तथा ग्रामीण जीवन के भेद को, जिसको कि आर्थिक शक्तिया पहले ही से स्पष्ट करती आ रही थी, और अधिक तीव्र कर दिया। विक्टोरिया कालीन इगलैड मे दो विरोधी सामाजिक व्यवस्थाए कार्य कर रही थी—ग्रामीण क्षेत्रो का अभिजाततन्त्र तथा बडे शहरो का प्रजातत्र ग्रामीण क्षेत्रो तथा छोटे बाजारो वाले कस्बो मे अब भी ऐसे भद्र लोगो का ही आधिपत्य था जिनके आगे कि सभी वर्ग शीश झुकाते थे। लेकिन नगरो मे एक भिन्न प्रकार की मूल्य व्यवस्था के अन्तर्गत एक दूसरे ही प्रकार के व्यक्ति का शासन था और मध्यवर्ग हो अथवा मजदूर वर्ग सभी प्रजातात्रिक प्रणाली के अग थे।

आर्थिक कारणो से तथा रेलो की प्रगति के कारण नगरो का नया समाज पुराने ग्रामीण समाज पर तब तक हावी होता रहा जब तक कि बीसवी शताब्दी मे नगरीय चिन्तन तथा विचारो और प्रशासन ने उसे पूरी तरह निगल नही लिया। लेकिन यह एक लम्बी प्रक्रिया थी जबकि बीसवी शताब्दी एक सक्रान्ति-युग था। सन् १८४६ के कॉर्न लॉज मे हुए सशोधन से न तो कृषि को एक दम समाप्त ही कर दिया गया और न गावो तथा कस्बो के अभिजात प्रशासन को ही समाप्त किया गया। अगली पीढी तक, जब तक कि इगलैड के बाजार मे अमरीकी अनाज तथा पशुओ का आगमन नही हुआ था वहा की कृषि विकसित होती रही थी और उससे सलग्न सामाजिक व्यवस्था भी यथारूप रही।

लेकिन वास्तव मे कृषि मे असीमित क्षमताओ का अभाव था, शताब्दी के मध्य-काल मे वह अपनी चरम सीमा पर पहुच चुकी थी और अब और अधिक भूमि का विस्तार सम्भव नही था। दूसरी ओर औद्योगिक तथा वाणिज्य मे होने वाली क्रान्ति भी शक्ति प्राप्त कर रही थी और नगरो की सम्पदा तथा जनसख्या मे प्रत्येक दस वर्ष बाद तीव्र वृद्धि दिखाई देती थी। सन् १८५१ की जनगणना के अनुसार इगलैड की लगभग आधी जनसख्या नगरीय क्षेत्रो मे थी, 'यह एक ऐसी स्थिति थी जो शायद इससे पहले किसी महान् देश मे ससार के इतिहास मे कभी उत्पन्न नही हुई। (क्लैपहम, I, पृष्ठ ५३६) और क्योकि इस प्रक्रिया (नगरीकरण) की कही कोई सीमा नही दिखाई देती थी अत. इसे भविष्य का ही एक अग माना जा सकता है। जॉन बुल अब एक ग्रामीण किसान नही रह गया था, उसका नगरीकरण हो जाने के बाद क्या उसे, पच के कार्टूनों को छोडकर, जॉन बुल कहा जा सकता है?

नयी शहरी परिस्थितिया जिनमे कि सन् १८५१ मे इगलिश लोगो की इतनी बडी जनसख्या रह रही थी, अन्त मे लोगो का ध्यान आकर्षित करने लगी और लोग

उनके उपचार की आवश्यकता को महसूस करने लगे । खुले देहाती क्षेत्रो की पारम्परिक जीवन प्रणाली, जिसे कि एक वात्याचक्र ने झकझोर डाला था, वहा स्वच्छता और आवास व्यवस्था के नियत्रण की आवश्यकता कम महसूस होने लगी वहा झोपडियो की खराब अवस्था होने पर भी शहरो की तुलना मे मृत्यु दर काफी कम थी । लेकिन नगरवासियो की सख्या के बढे हुए अनुपात के बावजूद सन् १७८० तथा १८१० मे मृत्यु दर मे काफी कमी हुई थी, उसे १८१० तथा १८५० मे और नियत्रित कर लिया गया था । सम्पूर्ण द्वीप मे फिर उतनी मृत्यु-सख्या कभी नही बढी जितनी कि अठारहवी सदी के प्रारम्भिक काल मे बढी थी, लेकिन विज्ञान तथा चिकित्सा सेवाओ की प्रगति के बावजूद उसमे और अधिक कमी नही हो सकी । (देखिये पृष्ठ ३४२) इसका मुख्य कारण औद्योगिक क्षेत्रो मे गन्दी बस्तियो (स्लम्स) की वृद्धि तथा प्रति वर्ष उनकी स्थिति मे निरन्तर ह्रास का होते रहना था ।

जन-स्वास्थ्य के सरक्षण, दुकानदारो पर लागू होने वाले नियमो तथा म्यूनिसिपल रिफार्म एक्ट सन् १८३५ के अनुसार करदाताओं द्वारा चुने गये निर्माताओ तथा कर लेने वालो से सम्बन्धित नीतियो को लेकर टोरी तानाशाहो के आलस्य मे, जिन्हे कि स्थानच्युत कर दिया गया था, कोई सुधार नही हुआ । फिर भी १८४० के दशक मे गन्दी बस्तियो के मालिको तथा गन्दे मकान बनाने वालो पर नियत्रण कर पाने की दिशा मे व्यक्ति स्वातन्त्र्य के दर्शन के प्रभाव के कारण कोई प्रगति नही हुई और वे व्यापक सुख-सुविधा के नाम पर अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को आगे ठेलते रहे । 'प्रगति' के ये अगुआ एक कमरे मे कई परिवारो को भर कर, अथवा उन्हे तहखानो मे डालकर, मकान बनाने मे सस्ती तथा अपर्याप्त सामग्री का उपयोग कर तथा नालियो की व्यवस्था न कर अथवा इससे भी बुरी स्थिति उत्पन्न कर—गन्दी नालियो को पानी की टकी से जोड कर, स्थान तथा धन की बचत कर लेते थे । लॉर्ड शैफ्टसबरी ने लन्दन के हर कोने मे एक ऐसा कमरा खोज निकाला था, और ऐसा कमरा भी ढू ढ लिया था जिसके फर्श के नीचे ही गन्दा कुआ बना था । इसे हमे सौभाग्य की ही बात मानना चाहिये कि हैजे की बीमारी सर्वप्रथम उसी वर्ष आई जिस वर्ष कि 'रिफार्म-बिल' बना और उसके बाद फिर सन् १८४८ मे आई, इस बीमारी के कारण समाज ने अपनी आत्मरक्षा के लिये स्वच्छता का पालन करना आरभ कर दिया था । उस समय के एक लोकप्रिय पत्र मे पूरे पृष्ठ का एक व्यग्य चित्र छपा था जिसमे मि पच को शहर के गन्दे नाले पर ध्यानावस्थित मुद्रा मे बैठे हुए हैमलेट के रूप मे दिखाया गया था—कल्पना किसी बडे आदमी (एल्डरमैन) के अवशेषो को तब तक क्यो नही ढू ढ पाती जब तक कि वे उसके अभिरक्ष्यो (वार्ड) को विषाक्त नही बना देते ?

जन स्वास्थ्य सम्बन्धी कानून (पब्लिक हैल्थ एक्ट) सर्व प्रथम १८४८ मे बना था । और उसके बनने मे हैजे की महामारी तथा एडविन चाडविक, जो पुअर लॉ

कमिश्नर्स के सेक्रेटरी के नाते तथ्यो को भली भाति समझ सके थे, दोनो ही का हाथ था।

उसने लिखा है "जेल पहले अपनी गन्दगी तथा रोशनदानो की कमी के लिये विशेष रूप से प्रसिद्ध थे, लेकिन इगलैड की सबसे खराब जेलो का वर्णन जो हॉवर्ड ने किया है (जिन्हे कि वह यूरोप के निकृष्टतम जेल मानता है) उनसे मैने और डा. ऑरनोट ने एडिनबरा तथा ग्लासगो के जिन जेलो का निरीक्षण किया था वे कही अधिक गन्दे थे। हॉवर्ड ने जिन जेलो का विवरण दिया है उनसे अधिक गन्दगी, अधिक शारीरिक यत्रणा और नैतिक विघटन लिवरपूल, मैनचेस्टर अथवा लीड्स तथा मेट्रोपोलिस के कई बडे भागो मे भूमि के नीचे तहखानो मे रहने वाली जनसख्या मे मिलेगा।" लेकिन १८४८ के जन स्वास्थ्य अधिनियम को जो कि कार्य की अनिवार्यता के बदले अनुमति प्रदान करने पर अधिक बल देता था, अगले बीस वर्षों तक नगरपालिकाओ द्वारा कार्यान्वित नही किया जा सका। केवल सन् १८७० के दशक मे ही इस अधिनियम को कार्यान्वित करने के लिये हुई स्थानीय स्वशासन समिति (लोकल गवर्नमेट बोर्ड) की स्थापना तथा जोसेफ चैम्बरलेन के उत्थान के साथ बर्मिघम के समाज सुधारक नगरपालिकाध्यक्ष (मेयर) के प्रयत्नो द्वारा एक नवीन युग का आगमन हुआ। इसके बाद नगरपालिकाओ ने अपने प्रजातात्रिक गठन का परिचय देते हुए व्यापक स्तर पर जन हित के कल्याण कार्य किये, जबकि राज्य (स्टेट) अनिवार्य स्तर निर्धारण के प्रति ही आग्रह करता रहा। सन् सत्तर के दशक-वर्षो के पूर्व आवास व्यवस्था तथा स्वच्छता सम्बन्धी सुधारो के कारण न तो मृत्यु सख्या कम हुई और न शताब्दी के अन्त तक इगलैड के शहरो मे स्वच्छता को लेकर कोई अपेक्षित प्रगति हुई।

लेकिन इस सदी के मध्यवर्ती वर्षो मे भी कुछ प्रगति अवश्य हुई थी। लॉर्ड शैफ्टसबरी ने, ऐच्छिक अनुदानो द्वारा कुछ आदर्श मकानो का निर्माण करवाया था और हैजे जैसी महामारी से उनकी रक्षा क्षमता ने ससद को आम मकानो के निरीक्षण के लिये १८५१ मे अधिनियम बनाने के लिये प्रेरित भी किया, इसके साथ ही स्वास्थ्य और प्रकाश के पुराने शत्रु अर्थात् खिडकियो पर लगाये जाने वाले कर, को भी समाप्त कर दिया गया। उस वर्ष, जबकि वृहद् प्रदर्शनी (ग्रेट एक्जीबीशन) की काच की ऊची आकर्षक छत को हाइड पार्क पर आच्छादित किया गया था और ससार ने इगलैड की सम्पन्नता, प्रगति और ज्ञान को प्रशसा की दृष्टि से देखा था, एक और 'प्रदर्शनी' उस पथ की भी आयोजित की जा सकती थी जहा कि गरीब लोग रहा करते थे, इससे विदेशी दर्शको को इस नवीन युग के उन खतरो का भी पता चल सकता था जो कि उसमे निहित थे। विदेशी गन्दी बस्तिया (स्लम्स) भी उतनी ही निकृष्ट थी लेकिन यूरोपीय देशो मे बहुत कम जनसख्या ग्रामीण क्षेत्रो के प्रभाव से अभी अलग हो सकी थी।

यदि हम उन लोगो से, जिन्हे कि असन्तुलित राजनैतिक अर्थव्यवस्था (पोलिटिकल

इकॉनामी) के शिकार हुए लोगो से सहानुभूति थी प्रश्न करे तो हमे 'इकानामिस्ट' समाचार-पत्र मे मई १८४८ मे चाडविक के पब्लिक हेल्थ अधिनियम के विषय मे प्रकाशित यह टिप्पणी ही प्राप्त होगी कि

'कष्ट तथा बुराई प्रकृति प्रदत्त वस्तुए है, उनसे मुक्ति असम्भव है और बिना उनमे निहित उद्देश्यो को समझे कानून बनाकर उन्हे दूर करने के आतुर प्रयत्न सदा भलाई के स्थान पर केवल बुराई उत्पन्न करते हैं।' विचारधाराए (डॉक्ट्राइन्स), चाहे वे किसी भी प्रकार की हो, मनुष्य जाति के कम से कम आधे दु खो के कारण रही है, लेकिन सौभाग्य से इस काल के अग्रेज केवल विचारधाराए ही नही बनाते रहे थे, बल्कि 'टेन आवर्स बिल' तथा 'पब्लिक हेल्थ एक्ट' जैसे कानूनो की भी, उस समय के प्रचलित व्यक्ति स्वातन्त्र्य (लैसे फेयर) विषयक सिद्धान्तो के बावजूद, रचना की गई थी।[1]

इस बीच, यद्यपि जन स्वास्थ्य मे कोई प्रगति नही हुई थी लेकिन सामान्य व्यवस्था जरुर स्थापित हो गई थी। सर रॉबर्ट पील द्वारा नागरिक पुलिस सस्था का, जिसमे कि लोग नीले कोट तथा ऊचे टोप (जिनके स्थान पर बाद मे लोहे के टोप (हेलमेट) पहने जाने लगे थे) पहनते थे, प्रचलन मेट्रोपोलिटन क्षेत्र मे सन् १८२९ मे किया गया था। लेकिन वैयक्तिक स्वतन्त्रता तथा सम्पत्ति एव वैयक्तिक सुरक्षा की कामना करने वाले लोग लन्डन के प्रभावशाली पुलिस के सिपाहियो (बॉबीज) को अन्यत्र भी रखवाना चाहते थे। सन् १८५६ से प्रत्येक जिले और क्षेत्र मे एक पुलिस दल का रखा जाना अनिवार्य हो गया, जिसके आर्थिक प्रबन्ध तथा अनुशासन की व्यवस्था अशत· जहा स्थानीय प्रशासन के अधीन थी, अशत राष्ट्रीय प्रशासन से सम्बन्धित थी। डॉगबेरी तथा वरजेस के चौकीदार (वाचमैन) सदा के लिये हटा दिये गये थे, व्यक्ति तथा सम्पत्ति की रक्षा बिना उसकी स्वतन्त्रता मे हस्तक्षेप किये सम्भव थी और सभाओ तथा हुल्लडबाजी पर शान्तिपूर्वक तथा पीटरलू के विपरीत सैनिक दस्तो की सहायता लिये बिना ही उन पर नियत्रण प्राप्त किया जा सकता था।

दोनो सुधार बिलो (१८३२-१८६७) के बीच की अवधि को 'कोयले तथा लोहे' का युग कह सकते है जो इस समय अपनी चरम अवस्था मे था दूसरे शब्दो मे कह सकते हैं, यह 'रेलो का युग' था।

ससार को रेलों की देन इगलैड ने ही दी थी। रेल का जन्म वास्तव मे बडी मात्रा मे कारखानो तथा घरेलू कार्य के लिये खान से कोयला लाने के लिये किये गये प्रयोगो के फलस्वरूप हुआ था। सन् १८२० के दशक मे कोयले को लकडी अथवा लोहे की

---

[1] क्लैपहम, I, पृ० ५३६-५४७, फे, सी. आर, ग्रेट ब्रिटेन फ्रॉम एडम स्मिथ टु दि प्रेजेन्ट डे, पृ० ३६२-३६५, इका हिस्ट रिव्यू, अप्रेल १९३५, पृ० ७१-७८, ग्रिफिथ, पॉपुलेशन प्रॉब्लम्स ऑफ दि एज ऑफ माल्थस, पृ० ३९-४२।

पटरियो पर घोडो अथवा स्थिर एजिनो, अथवा जॉर्ज स्टीफेन्सन के वाष्पचालित एजिन (लोकोमोटिव) के प्रतिस्पर्धी प्रयत्नो को लेकर काफी विवाद रहा था। इन प्रयत्नो मे 'लोकोमोटिव' की विजय हुई थी और इसके कारण केवल सामान लाने ले जाने के अनपेक्षित क्षेत्र का द्वार ही नही खुल गया था वरन् यात्रियो के आने जाने का मार्ग भी निकल आया था। इससे केवल नहरी आवागमन को ही नही वरन् अन्य गाडियो को भी काफी धक्का लगा, मि वेलर का पुराना और खास धन्धा समाप्त हो गया था। कोयला-क्षेत्र मे जो छोटे-छोटे रेल मार्ग बने थे उनकी सन् तीस और चालीस के दशको मे समूचे द्वीप के लिये राष्ट्रीय व्यवस्था के रूप मे परिणति हो गई, यह विकास सन् १८३६-३७ तथा १८४४-४८ मे रेलो पर जो खर्च किया गया था तथा सोच विचार किया गया था उसका परिणाम था।

सन् तीस के दशक मे रेल मार्ग को प्रोत्साहित करने वाले तथा उसके विकास मे धन लगाने वाले लोगो मे अनेक डिसेन्टर्स थे—विशेषत मिडलैंडस् तथा उत्तर अर्थात पीजेज, क्रोपर्स तथा स्टर्जेस के शाति तथा सादगी मे विश्वास करने वाले 'मित्र मडल' के सदस्य लोग (क्वेकर्स) थे। ब्रैडशा का मूल रेलवे टाइम टेबल सन् १८३९ मे मानव जाति के एक सहायक 'मित्र' (फ्रेन्ड) द्वारा प्रसारित किया गया था, बीसवी शताब्दी के पूर्व तक 'ब्रैडशा' के बाहरी आवरण पर जनवरी आदि के बदले क्वेकर्स द्वारा निर्धारित महीने के नाम जैसे 'प्रथम मास' आदि छपे होते थे।

लेकिन सन् चालीस के दशक मे जॉर्ज हडसन के नेतृत्व मे, जिसे 'रेलो के राजा' (रेलवे किग) कह कर भी पुकारा जाता था, आम जनता रेलो के प्रति अत्यधिक आकर्षित हो चुकी थी और कई असफल तथा झूठी कम्पनियो को धन देकर खो चुकी थी। Feames de la Pluche, Esq , सम्बन्धी थैकरे की डायरी मे धमाके और टकराने का विनोदपूर्ण ढग से उत्तेजनापूर्ण वर्णन किया गया है। यद्यपि मूर्ख लोग मूर्ख बन चुके थे, लेकिन इस सबके समाप्त हो जाने पर सफल लोगो की एक बडी पक्ति बच गई थी। हडसन केवल एक धोखा देने वाला व्यक्ति ही नही था, सम्पूर्ण इगलैंड पर उसने अपनी छाप छोडी थी। सन् १८४३ मे ग्रेट ब्रिटेन मे लगभग २००० मील रेल-मार्ग बन चुका था, सन् १८४८ मे ५००० मील तक पहुच गया था।[१]

इसके बाद से भारी सामान लाने-ले जाने तथा लम्बी यात्रा के लिये साधारणतः रेलो का ही उपयोग किया जाने लगा था। जन सेवा तथा समृद्धि के क्षेत्र मे आधी

---

[१] ट्रोलोप की डा थोर्न नामक पुस्तक मे सर रोगर स्कैचर्ड को स्वदेश तथा विदेश मे अग्रेजो के सहयोग से होने वाले रेलो तथा इन्जीनियरिंग (यन्त्र-विज्ञान) के विकास वाले इस सशक्त काल के एक 'स्वनिर्मित व्यक्ति' के प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया है। काल्पनिक स्कैचर्ड के स्थान पर अधिक सम्मानित तथा वास्तविक इन्जीनियर की जीवनी के लिये 'जॉन ब्रन्टन, स बुक' कैम्ब प्रेस, १९३९ देखने योग्य है।

शताब्दी तक प्रगति होते रहने के बाद अधिकाश नहरो को बर्बाद कर दिया गया और उनमे से कई को तो स्थानीय रेलवे कम्पनियो ने उन्हे काटने के उद्देश्य से ही समाप्त कर दिया। प्रमुख सडके भी अब राष्ट्र की धमनियो के रूप मे नही रही थी। घोडा-गाडियो के साथ ही डाक गाडिया तथा अभिजात परिवारो के लिए उपयोग मे आने वाली भारी गाडिया भी दिखाई नही देती थी। राजधानी मे अब सहज प्रकार की गाडिया, जैसे 'लैन्डाउ' 'विक्टोरिया' आदि ही दिखाई देती थी। सम्पूर्ण देश मे यह युग तागो (दो पहियो और एक घोडे वाली गाडी), खुली छत वाली बग्घियो, टट्टू-गाडियो तथा कुत्ता-गाडियो का था। यात्रियो तथा सामान दोनो ही के उपयोग के लिये घोडा-गाडियो का प्रयोग रेल-यातायात के लिए सहयोगी ही सिद्ध हुआ और इसी कारण पनपा भी। सभी जगह रेल नही थी और फिर 'रेलवे स्टेशन तक पहुँचने के लिये भी' उनकी आवश्यकता थी। छोटी सडको की सख्या बढती गई और बडी सडके मोटर कार का आविष्कार होने के पूर्व तक सुनसान होती गईं।[1]

रेलो के विकास के साथ ही टेलीग्राफ (तार) का भी विकास हुआ, उसका जन्म ही एक प्रकार से नई रेल प्रणाली की सहायता के लिये हुआ था। सन् १८४८ तक १८०० मील का रेल मार्ग, अर्थात् कुल रेल-मार्ग के एक तिहाई भाग को, टेलीग्राफ तारो से सज्जित कर दिया गया था। सन् १८४६ मे बनी दि इलेक्ट्रिक टेलीग्राफ कम्पनी ने १८५४ तक लन्डन मे अपने सत्रह कार्यालय स्थापित कर लिये थे जिनमे से आठ रेलवे क्षेत्र मे थे। सन् १८४७ मे विश्वविद्यालय के कुलपति (चान्सलर) पद के चुनाव के लिये प्रिन्स कनसोर्ट का नाम प्रस्तावित करने के लिये कैम्ब्रिज के सदस्य गणो जैसे पुरातन वादी लोगो ने भी टेलीग्राफ का उपयोग किया था।

जिन वर्षो मे रेल व्यवस्था तथा इलेक्ट्रिक टेलीग्राफ का विकास हुआ उन्ही दिनो डाक-प्रणाली (पैनी पोस्ट) भी विकसित हुई, इसकी स्थापना निःस्वार्थ सेवक तथा उद्योगी रोलैन्ड हिल के प्रयत्नो के फलस्वरूप हुई थी जिसे अव्यवस्थित प्रशासन सेवा तथा राजनीतिज्ञो की उदासीनता तथा विरोध का सामना करते हुए भी जन साधारण का सहयोग मिल गया था। इस महान परिवर्तन के पूर्व जो गरीब लोग अपने काम की तलाश मे स्वदेश अथवा विदेश की यात्राए किया करते थे वे अपने माता-पिता तथा मित्रो से अत्यधिक डाक व्यय के कारण यदाकदा ही समाचारो का आदान-प्रदान कर

---

[1] सेमूर की 'पिकविक' पुस्तक के द्वितीय अध्याय मे घोडा-गाडियो की पक्ति का वर्णन सन् तीस के दशक मे उनकी आदिम अवस्था को दर्शाता है जिसमे चालक का स्थान ऊपर होने की बजाय छत्र के नीचे एक तरफ हट कर हुआ करता था। सन् चालीस के बाद से रेल, पोषाक तथा सामाजिक प्रथाओ मे हुए परिवर्तनो को पच के चित्रों मे देखा जा सकता है।

पाते थे। सस्ते डाक टिकट की व्यवस्था के लिये रोलैन्ड हिल की योजना ने मानव इतिहास मे गरीबो को सबसे पहली बार अपने बिछुडे हुए स्नेही जनो से पत्राचार की सुविधा प्रदान की थी। और क्योकि व्यापारियो को भी यह सस्ती योजना एक वरदान सिद्ध हुई तथा डाकखाने द्वारा अपना लिये जाने के बाद इससे उन्हे आर्थिक लाभ भी काफी हुआ, ससार के प्रत्येक सभ्य देश ने इस प्रणाली को अगीकार कर लिया था। इस महान सुधार कार्य मे राज्य को एक प्रमुख भूमिका अदा करनी थी लेकिन विचार से लेकर नेतृत्व तक सभी कुछ एक व्यक्ति की ही कर्मण्यता तक सीमित रहे, हा उसे जनमत का सम्बल अवश्य प्राप्त था।

सन् चालीस के दशक मे द्वीप मे होने वाली रेलो की तेज प्रगति के बाद नौकाओ मे भी पतवारो की जगह वाष्प शक्ति का उपयोग किया जाने लगा और इगलैड की व्यापारिक जहाजरानी मे लकडी के स्थान पर लोहे का उपयोग किया जाने लगा। सन् १८४७ तक हमारे वाष्पचालित जहाजो की सख्या बहुत थोडी थी और तीस लाख टन के व्यापारिक यातायात के आगे इन जहाजो की कुल भार-वहन क्षमता केवल ११६,००० की थी। लेकिन सन् पचास और साठ के दशको मे बडे समुद्री जहाजो के लिए वाष्प का अधिकाधिक प्रयोग किया जाने लगा था और पहले लोहे का और बाद मे उनमे फौलाद का प्रयोग किया जाने लगा था। इगलैड मे लोहे और फौलाद के बढते हुए उत्पादन तथा उत्पादन के लिये धातु तथा वाष्प शक्ति के उपयोग से यह परिवर्तन घनिष्ट रूप से सम्बन्धित था। सन् १८४८ मे ब्रिटेन सम्पूर्ण विश्व मे उत्पादित ढलवा लोहे (पिग आइरन) का लगभग आधा भाग पैदा करता था अगले तीस वर्षो मे यह उत्पादन तिगुना हो गया था। स्टेफोर्डशायर, वेल्स तथा टाइनेसाइड का उत्तर-पूर्वी इगलैड तथा मिड्लसब्राउ भी लौह-उत्पादक क्षेत्र थे जो अब वैज्ञानिक आविष्कारो के माध्यम से फौलाद युग मे अग्रणी बन गए थे।[1]

विक्टोरियाकाल के मध्य मे इस प्रगति से प्राप्त होने वाली सम्पदा ने मजदूर वर्ग के एक बडे भाग का वेतन बढा कर सामाजिक समस्या के दबाव को काफी हल्का कर दिया था, और श्रमिक सगठनो (ट्रेड यूनियन्स) तथा सहकारिता आन्दोलन ने राष्ट्रीय लाभ के समान वितरण मे काफी सहायता की थी।

इस राष्ट्रीय लाभ की राशि निस्सन्देह काफी अधिक थी। केलिफोर्निया तथा आस्ट्रेलिया मे हुई स्वर्ण की खोज ने उस व्यापार की प्रगति को, जिसके द्वारा कि

---

[1] क्लपैहम (II, ५१५) लिखता है कि पीटरमैन के जनसख्या विषयक मानचित्र मे जो सन् १८५१ मे तैयार किया गया था और जिसमे औद्योगिक स्थलो को भी दर्शाया गया था, उसमे मिड्लसब्राउ, अथवा बॉरो, अकार्डिफ अथवा न्यूपोर्ट किसी भी स्थान को लौह उद्योग के केन्द्र के रूप मे नही दिखाया गया था। उस समय के बाद उनका विकास काफी तेजी से हुआ।

इगलैंड को वाणिज्य तथा उद्योग दोनो ही क्षेत्रो मे अन्य देशो से आगे होने का सौभाग्य मिला था, एक ऐसे युग मे पहुँचा दिया था जिसमे वह इस शताब्दी के मध्यवर्ती वर्षों मे ही अपने परिश्रम का फल प्राप्त कर सकता था। सन् १८७० मे यूनाइटेड किंगडम का विदेशो से होने वाला व्यापार, फ्रास, जर्मनी तथा इटली के सम्मिलित व्यापार से भी अधिक हो गया था और यूनाइटेड स्टेट्स (अमरीका) की तुलना मे तीन अथवा चार गुणा अधिक था।

जिस समय ये महान औद्योगिक तथा व्यापारिक विकास अत्यधिक तीव्र गति से आगे बढ रहा था, ब्रिटेन की कृषि व्यवस्था भी धन की प्रचुरता तथा खेती के यत्रो के अधिकाधिक प्रयोग द्वारा प्रगति कर रही थी। अनाज अधिनियमो (कॉर्न लॉज) के सन् १८४६ मे रद्द हो जाने से यद्यपि मूल्य स्थिर हो गये थे, लेकिन कृषि की प्रगति मे इससे अगली पीढी तक के लिये कोई बाधा नही उत्पन्न हुई और इसका कारण यह था कि अमरीका अभी इगलैंड को विपुल मात्रा मे खाद्यान्न देने को तैयार नही था। सन् १८५१ मे कुल रोटियो की खपत के एक चौथाई भाग का ही विदेशो से आयात होता था।

खाद्यान्न अधिनियम का रद्द होना मैनचेस्टर तथा शहरी जनता के लिये विजय की बात थी और इससे निस्सन्देह उद्योगो को बल ही प्राप्त हुआ। लेकिन इससे तत्काल किसी भी आर्थिक अथवा सामाजिक क्रान्ति को बल नही मिला। नगर यद्यपि प्रजातात्रिक व्यवस्था से सम्बद्ध थे लेकिन देहात अब भी जमीदारी वर्ग, तथा उनके सहयोगियो तथा उनके अनुगामी लगान देने वाले किसानो के हाथ मे था जिनकी गतिविधिया पिछली पीढी की अपेक्षा सन् साठ के दशक मे अधिक सशक्त थी। देहाती गृहस्थ जीवन, जिसमे शिकार तथा राजनैतिक व साहित्यिक गोष्ठियो का आयोजन काफी हुआ करता था। इन आयोजनो मे सहज मनोरजकता अठारहवी शताब्दी की अपेक्षा—जबकि जमीदार से इन आयोजनो के लिये अनुमति प्राप्त करना आवश्यक था—अधिक थी, यद्यपि नैतिक सयमो की ओर से अधिक ध्यान दिया जाता था। देहाती क्षेत्रो मे जनमत के आधार पर अब भी किसी सरकार का गठन नही हुआ था। प्रशासन तथा न्याय सम्बन्धी अधिकार अब भी जमीदार वर्ग से चुने गये 'शान्ति' के समर्थक सम्मानित न्यायाधीशो के ही हाथ मे थे। पुरातनकाल से चला आ रहा जमीदार वर्ग के मजिस्ट्रेटो का शासन अब भी चल रहा था, अन्तर केवल इतना था कि समाचार पत्रो तथा युग की मांगो के अनुसार अब वह हेनरी काल की अपेक्षा अधिक आलोचना का विषय बन गया था।

रेलो के कारण शहर तथा गाव की निरन्तर घटती हुई दूरी तथा खेती के कामो मे भी वैज्ञानिक ज्ञान तथा मशीनो के प्रयोग के कारण घनी शहरी आबादी वाले इस छोटे द्वीप के, जिसने सभी ग्रामीण परम्पराओ से स्वयं को एकदम मुक्त कर लिया था,

पुराने ग्रामीण जगत् मे प्राचीन प्रथाओ, आचार-विचारो तथा स्थानीयता के पृथकत्व शहरी शक्तियो के आगे समर्पण अब मात्र कुछ समय की ही दूरी प्रतीत होती थी। लेकिन वह समय अभी नही आया था। सन् साठ और सत्तर के बीच इस परिवर्तन क्रम के पूर्ण हो पाने के लिये अभी दो बातो की कमी थी—ब्रिटिश कृषि व्यवस्था का आर्थिक विखडन तथा शहरी शिक्षा का सार्वभौमिक प्रसार अभी बाकी था।

जिस समय विक्टोरिया सिहासनारूढ हुई 'बृहद भू-सम्पति' [व्यक्तिगत] ('ग्रेट एस्टेट') व्यवस्था पूर्णरूपेण प्रतिष्ठित हो चूकी थी। अन्तिम स्टुअर्ट राजाओ के समय से ही खुद-काश्त करने वालो तथा छोटे भूस्वामियो के हाथ से अधिकाधिक भूमि ऐसे बडे जमीदारो के पास जा रही थी जिनके वैवाहिक सम्बन्ध अब नये शहरी धनिको से होने लगे थे और ये लोग बडी-बडी अचल सम्पत्तिया एकत्र कर तथा देहात मे विश्राम स्थल बनवा कर उनकी श्रेणी मे गिने जाने लगे थे। छोटे ज़मीदार समाप्त हो गये थे और उनके महल किराये पर उठा दिये गये थे, मुआफीदारो की सख्या भी पहले से काफी कम हो गई थी, मध्यमस्तरीय तथा बडी सम्पत्तिया (एस्टेट्स) एक सामान्य बात हो गई थी।

लेकिन भू-सम्पत्तियो (एस्टेट्स) के बडे आकार धारण कर लेने का यह अर्थ नही था कि उसी अनुपात मे खेतो का आकार भी बढ गया। फिर भी औसतन वे पहले से अवश्य ही बडे हो गये थे। लेकिन आम तौर पर उन खेतो की सख्या ही अधिक थी जिन्हे कि अकेला परिवार बिना श्रमिको की सहायता के जोत सके। और निस्सन्देह ऐसे खेतो की सख्या आज भी काफी अधिक है—खास तौर से उत्तर के चरागाही जिलो मे यह इस कारण और भी है कि मशीनो ने जनशक्ति की आवश्यकता को कम कर दिया है।[1]

अब तक जो भूमि सन् १८४६ के खाद्यान्न अधिनियम के रद्द हो जाने के बाद बीस वर्ष बाद तक बेकार पडी हुई थी उस पर बाड लगा कर अब खेती की जाने लगी

[1] सन् १८५१ मे पाच एकड से कम वाली जमीन को छोड देने पर इगलैड तथा वेल्स मे खेतो का आकार इस प्रकार था ·

क्रम	आकार-एकड	खेतो की सख्या	कुल एकड
१	५-४९	९०,१००	२, १२२, ८००
२	५०-९९	४४,६००	३, २०६, ५००
३	१००-२९९	६४,२००	११, ०१५, ८००
४	३००-४९९	११,६००	४, ३६०, ९००
५	५००-९९९	४,३००	२, ८४१, ०००
६	१००० तथा उससे अधिक	७७१	१, ११२, ३००

क्लैपहम, इका. हिस्ट. ऑफ़ ब्रिटेन, II, पृ० २६४।

थी। द्वीप मे ऐसे लोगो की सख्या निरन्तर बढती जा रही थी जो मुख्यतया अपने द्वारा उपजाए अन्न पर ही निर्भर करते थे। सन् पचास के दशक मे खनिज स्वर्ण की खोजो के कारण मूल्य मे वृद्धि हो गई थी। सन् साठ के दशक मे, जिस समय यूरोप तथा अमरीका मे युद्ध छिड रहा था, इगलैंड मे शान्ति थी। अब भी पशुओ की सख्या मे काफी प्रगति हुई। सिचाई तथा खाद की व्यवस्था मे हुई प्रगति से, एक जिले के बाद दूसरे जिले और एक गाव के बाद दूसरे गाव मे यात्रिक हल के प्रचार से, रॉयल एग्रीकल्चरल सोसाइटी द्वारा किये गये कार्यो से, बडे जमीदारो द्वारा अपनी भू-सम्पत्ति के विकास के लिये अधिकाधिक धन खर्च करने तथा उसमें गर्व का अनुभव करने से—इन सभी बातो से लॉर्ड पामरस्टन के इगलैंड मे अधिकाधिक भूमि पर खेती की जाने लगी थी। सन् साठ के दशक मे आक्सफोर्ड के पहाडी स्थलो की, जहा कि वह अपने मित्र आर्थर क्लफ के साथ बीस वर्ष पहले आ चुका था, पुन यात्रा करने पर मैथ्यू आरनोल्ड को कृषि के 'अव्यवस्थित विकास' के कारण नही वरन् उसके अज्ञान-पूर्ण प्रसार के कारण चिन्तित होना पडा।

'मैं इन ढलानो से परिचित हूँ,
और मैं नही तो इन्हे फिर और कौन जानेगा ?
लेकिन इस स्नेहिल पर्वताचल की
छाह-भरी घाटियो मे किसी समय
कीलदार काटो के ही साथ खडे थे
श्वेत तथा वासन्ती फूलो वाले घने जगली वृक्ष,
और दूर बार-बार थाम लेते थे दृष्टि को
मीनारवत खडे वृक्षो की परिधि पर
झूमते हुए फूल-गुच्छ,
और अब नीचे
हर हरे भरे किनारे पर पहुँच चुकी है
हलवाहे किशोरो की टोली
और पिछली विरासत के अनाथ शिशु,
इधर उधर किसी कोने मे
यदा कदा चमक उठते है गुलाब'।

विक्टोरिया के सिहासनरूढ होने के समय खुले खेतो, की हदबन्दी तथा छोटे पट्टीदार (स्ट्रिप) खेतो की व्यवस्था की समाप्ति (कुछ को छोडकर) तो एक पूर्ण तथ्य ही बन चुकी थी। लेकिन 'लोक साधारण भूमि' (कामन्स) की हदबन्दी कभी पूर्ण नही हो पाई थी और सन् १८४५ के 'जनरल एन्क्लोजर अधिनियम' के अनुसार इस कार्य को पूरा किया जा रहा था।

साधारण भूमि (कॉमन लैंड) की हदबन्दी का कार्य, जो पिछली कई शताब्दियो से कई झगडो तथा शिकायतो तथा साथ ही द्वीप के उत्पादन मे होने वाली अभिवृद्धि

का कारण रहा था— अन्त मे सन् १८६५ तथा १८७५ के दशक मे स्थगित कर दिया गया। यह परिवर्तित हो रहे सामाजिक सन्तुलन की विशेषता थी कि सामूहिक भूमि की घेरेबन्दी को अन्त मे ग्रामीण किसानो के विरोध के कारण नही बल्कि शहरी जनता द्वारा इस आधार पर किये गये विरोध के कारण, कि उसे खेल के मैदानो तथा ग्राम्य अचलो मे छुट्टियो मे प्राप्त होने वाले आमोद-प्रमोद से वञ्चित किया जा रहा था स्थगित कर देना पडा। सामूहिक भूमि को सुरक्षित रखने वाले सघ (दि कॉमन्स प्रिजर्वेशन सोसायटी) ने बची हुई सामूहिक भूमि की समाप्ति का अशत समाप्त हो रहे गाव के सामान्य जन के हित का सहारा लेकर तथा प्रमुखतया आम जनता के स्वच्छ जलवायु के अधिकार की आड लेकर विरोध किया था। बर्कहैमस्टेड कॉमन (१८६६) के बडे युद्ध तथा एपिग फॉरेस्ट की रक्षा ने एक नये युग को जन्म दिया था। भूमि की घेरेबन्दी इगलैड मे अपना कार्य कर चुकी थी और अधिक की अब कोई सम्भावना भी नही थी (क्लैपहम, I, ४५० नोट, ४५४, II, २५८-९)।

सन् १८६० तथा सत्तर के पूर्व के वर्षो मे निरन्तर प्रगति करती हुई कृषि ने विविध प्रणालियो को प्रश्रय दिया था—लोथियान्स मे वैज्ञानिक स्कॉट्स की भाति पूर्ण यान्त्रिक कृषि से लेकर ससेक्स की बैलो द्वारा की जाने वाली खेती तक सभी प्रणालियो का विविध रूप इनमे सम्मिलित था। पिछले दो सौ वर्षो मे खुले तथा भेडो के उपयोग मे आने वाले जिन भू-खडो को बडे चौकोर खेतो मे परिवर्तित कर दिया गया था उनमे आधुनिक वैज्ञानिक रीति से यान्त्रिक कृषि का प्रयोग सहज ही हो गया, जैसे कैम्ब्रिज-शायर मे पश्चिम तथा दक्षिण पूर्व की भूमि, जिसे अनन्त काल से आवलयित कर रखा था उसे अब भी पुरानी झाडियो को काटकर बाड द्वारा ऐसे बेडौल छोटे-छोटे सीमाकित खेतो मे ढाल दिया गया था जिसमे कृषि की प्रगति मे बाधा उत्पन्न होती थी। लेकिन लगभग सभी स्थानो (शायर) पर या तो मिट्टी के अलग होने के कारण या आर्थिक तथा सामाजिक अतीत मे भिन्नता होने के कारण प्रणालियो की भिन्नता भी विद्यमान थी।

खेतो पर काम करने वाले श्रमिको की दशा, विशेष रूप से दक्षिण मे, सन् तीस तथा सन् चालीस के अकालग्रस्त वर्षो मे, जबकि उन्हे वृत्ति देने वाला किसान स्वय ही विपत्ति मे था, काफी खराब थी। और खेतो तथा कारखानो मे सभी जगह जब सन् १८३४ के नये निर्धन कानून (न्यू पुअर लॉ) द्वारा गरीब मजदूरो को मिलने वाली बाहरी सहायता को समाप्त कर दिया गया (निस्सन्देह सभी स्थानो पर ऐसा नही हुआ था) तथा जनता से आर्थिक सहायता ग्रहण करने के लिये प्रार्थियो को 'वर्कहाउस टैस्ट' (अनाथाश्रम की परीक्षा) मे सफल होना अनिवार्य हो गया तब उन पर निस्सन्देह एक विपत्ति का पहाड टूट पडा था। निर्धन अधिनियम (पुअर लॉ) के कमिश्नरो की, जिन्हे कि इस अधिनियम के अन्तर्गत अधिकार प्राप्त थे, ऐसी ही निर्दय उपयोगितावादी तर्क प्रणाली थी। एक अत्यन्त भयकर रोग का यह एक अत्यन्त कठोर उपचार था : पारिश्रमिक के अतिरिक्त निर्धन सहायता स्वीकार किये जाने की स्पीनहमलैड की नीति

के कारण पारिश्रमिक की दर कम बने रहने के अतिरिक्त काम मे लगे हुए श्रमिको को कगाल भी हो जाना पडा था, फिर यह नीति निर्धन-कोष मे कर देने वालो का और भी शोषण कर रही थी। (देखिए पृष्ठ ४६६)। समाज को रोगमुक्त कर उसकी रक्षा के लिये शल्य क्रिया आवश्यक थी लेकिन बिना मूर्च्छाद्रव का पयोग किये चाकू चलाना अत्यन्त कष्टप्रद होता है। खेतो अथवा कारखानो मे रोजगार की अपेक्षा निर्धन अथवा अनाथ आश्रमो के जीवन को कम आकर्षक बनाना ही कमिश्नरो का मुख्य उद्देश्य था, लेकिन चू कि उस समय वे न्यूनतम पारिश्रमिक के विधान द्वारा रोजगार को आकर्षक न बना सके अत बाध्य होकर उन्हे निर्धन-आश्रमो की सुख-सुविधा मे कमी करनी पडी। फिर इसके अतिरिक्त वयस्क कामगारो की समस्याओ मे अधिक उलझ जाने के कारण ये आयोग (कमीशन्स) बूढो, बच्चो तथा अपगो के साथ अपेक्षित कोमलता तथा न्यायोचित व्यवहार भी नही कर सके।

डिकेन्स का 'ओलिवर ट्विस्ट' निर्धन-आश्रमो की व्यवस्था पर ही एक प्रहार है, और विक्टोरिया कालीन सवेदनशील लोगो ने इस पर अनुकूल प्रतिक्रिया भी व्यक्त की। नये निर्धन कानून को नगर तथा ग्राम दोनो ही स्थानो के श्रमिक वर्गों ने एक उत्पीडक अधिनियम के रूप मे ही ग्रहण किया था, और निस्सन्देह अधिकाश मे वह ऐसा था भी। लेकिन इसने एक केन्द्रीय व्यवस्था की रचना कर डाली थी जिसका पुरानी स्थानीय स्वायत्तता को भग कर निर्धनो के कष्ट निवारण हेतु उपयोग किया जाने लगा था और उसे एक ऐसे राष्ट्र व्यापी स्तर पर प्रतिष्ठित कर दिया गया था जिसमे किसी प्रकार की लज्जाजनक कोई भी बात नही थी। निर्धन अधिनियम को प्रथम कमिश्नरो ने जो राष्ट्रीय तथा केन्द्रीकृत रूप प्रदान किया था उससे आगे चलकर परोपकार सम्बन्धी कार्यों द्वारा, जो कि अधिकाधिक अनुभवो तथा वैज्ञानिकता को स्वीकार करते रहने के कारण निरन्तर अधिकाधिक मानवतावादी होते गये थे, सुझाये गये सुधारो को व्यवहृत करने मे काफी सुविधा हुई। सन् १८३४ मे निर्धन अधिनियम (पुअर लॉ) के अपूर्ण तथा कठोर होने के कारण वह अपनी सीमाओ मे बौद्धिक रूप से ईमानदार था, और उसके सुधार के बीजाणु भी उसी मे निहित थे।

इसका कारण यह था कि नये निर्धन-अधिनियम के लिये जिस व्यवस्था का गठन किया गया था वह व्यक्ति-स्वातन्त्र्य की नीति (लैसे फेयर) पर आधारित न होकर उसकी विरोधी स्थिति पर खडी की गई थी। यह एक विशुद्ध बेन्थमवादी स्थिति अर्थात् जनमत तथा अधिकारीतन्त्र के समन्वय के सिद्धान्त पर आधारित थी; बेन्थम ने अपने 'कॉन्स्टीट्यूशनल कोड' मे इसका सुझाव दिया था। तीन सरकारी कमिश्नरो (केन्द्रीय सरकार का प्रतिनिधित्व करने वाले अधिकारी) का कार्य निर्धन अधिनियम को कार्यान्वित करवाने के लिये नियमो की रचना करना तथा उन्हे लागू करवाना था। लेकिन इन नियमो को व्यवहार मे लाना वास्तव मे स्थानीय प्रजातान्त्रिक सगठनो—सरक्षक-मंडलो—का कार्य था। पादरी प्रदेशों के प्रत्येक 'संघ' का

प्रशासन 'निर्धनो के ऐसे सरक्षक-मडलो' द्वारा चलाया जाता था जिनका गठन मत गणना के आधार पर निर्धन कोष के लिये कर देने वालो द्वारा सम्पादित होता था। शीर्ष के केन्द्रीकृत अधिकारीतन्त्रीय प्रशासक तथा स्थानीय रूप से जनतान्त्रिक पद्धति द्वारा गठित सरक्षक-मडल, दोनो ही बैन्थमवादी विधि को स्वीकार करते हुए तथा उस सरकारी प्रणाली को, जिसमे, कि देहात के भद्र लोग ही शाति-सरक्षक न्यायाधीशो के रूप मे अवैतनिक रूप से कार्य किया करते थे, हटा कर स्थानापन्न किये गये थे।

लेकिन सन् १८३४ का नया निर्धन-अधिनियम ग्रामीण क्षेत्र के प्रशासन के लिये प्रयुक्त की जाने वाली एक सशोधित प्रणाली का एक अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण आरभ था। इसकी कठोरता ने, विशेष रूप से परिवारो को परस्पर पृथक् करवा देने मे जो[1] इसका भाग था उसने, निर्धन ग्रामीण लोगो के हृदय मे बैन्थमवादी सुधारो के प्रति एक अरुचि उत्पन्न कर दी थी, और साथ ही उन्हे पुरानी प्रशासन विधि से, जिसमे कि शान्ति-रक्षक न्यायाधीशो का भाग अत्यन्त प्रमुख था, समझौता करवाने को बाध्य कर दिया, इसके बाद से यह पारम्परिक प्रशासन विधि अगले पचास वर्षों के लिये पुन सत्तारूढ हो गई। नये निर्धन-अधिनियम ने भले ही स्थानीय शासन मे परिवर्तन के मार्ग सुझाये हो लेकिन वह अत्यधिक अलोकप्रिय था।

ह्विग तथा टोरी ज़मीदारो ने ग्रामीण क्षेत्रो पर अधिकार जताने वाले निर्धन-अधिनियम के प्रशासनीय पक्ष को क्यो चुपचाप स्वीकार कर लिया ? केवल निर्धन-अधिनियम के प्रसग मे ही उन लोगो ने ग्रामीण क्षेत्रो मे राजकीय अधिकारीतन्त्र तथा प्रजातान्त्रिक व्यवस्था का अतिक्रमण मान लिया था। इसका कारण स्पष्ट है। गावो

---

[1] सन् १८३८ मे एक लोकप्रिय लेखक विलियम हॉविट ने अपनी पुस्तक रूरल लाइफ ऑफ इगलैंड (II, पृ० १३१) मे देहाती जीवन के सामान्य आनन्दो का विवरण देने के बाद लिखा है मैं कई बार ईश्वर को इसके लिये धन्यवाद देता हू कि गरीब सदा किसी निश्चित वस्तु के प्रति ही आकर्षित होता है तथा उसकी प्रशसा करता है, उसके दैनिक पारिवारिक जीवन मे एक ऐसी स्नेह सिक्तता की प्रधानता होती है जिससे अनेको प्रकार के सहज तथा वास्तविक आनन्दो का उद्भव होता है, कम से कम इस देश मे किसी ऐसी निरकुश शक्ति ने उस प्रकार से यहा हस्तक्षेप करने का साहस नही किया है जिस प्रकार कि दासता प्रधान देशो मे करती रही है और इसीलिये पति-पत्नी, मा-बाप-बच्चो, बहिन-भाई के परस्पर सम्बन्ध अटूट बने रहे है और पारिवारिक आकर्षण भी यथावत् रहा है। लेकिन हमारे नये निर्धन-अधिनियमो ने इस ईश्वर प्रदत्त सुरक्षा पर आघात किया। और जब तक कि एक सुदृढ़ राष्ट्रीय भावना के द्वारा इन शक्तियो को सत्ताहीन नही बना दिया जाता, प्रत्येक परिवार के लिये किसी भी दुर्भाग्य पूर्ण क्षण मे निर्धनता की चपेट मे आकर विघटित हो जाने की आशका बनी ही रहेगी।'

के भद्र लोगो की इस परिवर्तन से स्पष्ट स्वार्थ सिद्धि होने वाली थी। पारिश्रमिक की कमी को पूरा करने के लिये कर-वसूली की पुरानी व्यवस्था मे दी जाने वाली निर्धन-कर की राशि मे निरन्तर वृद्धि होती जा रही थी और निराशावादी लोग तो यह भविष्यवाणी भी करने लगे थे कि अन्त मे यह व्यवस्था सम्पूर्ण साम्राज्य की लगान-आय को ही निगल जाएगी। ह्विग पादरियो ने विधेयक को 'कृषि राहत कार्य' के रूप मे प्रस्तुत किया था और पील तथा वेलिगटन ने उसी रूप मे स्वीकार भी कर लिया। वेलिगटन के आदेश पर ससद सदस्यो (लार्ड्स) ने इस अलोकप्रिय विधेयक को उखाड फेकने की इच्छा का विवश होकर दमन कर लिया।

सन् पचास तथा साठ के दशको मे कृषि तथा उद्योग की बढती हुई समृद्धि से मजदूरो तथा किसानो दोनो ही को काफी राहत मिली थी। सन् १८७० के तुरन्त बाद कृषि सम्बन्धी पारिश्रमिक एक ऐसे बिन्दु तक पहुच पाने की कई वर्षों तक कोई सम्भावना नही थी। अच्छे तथा बुरे दोनो ही समयो मे उत्तरी क्षेत्रो के खेतीहर मजदूरो का पारिश्रमिक दक्षिणी क्षेत्रो की अपेक्षा पडोसी कोयला खानो तथा अच्छा पारिश्रमिक देने वाले उद्योगो के कारण अधिक था। यॉर्कशायर के वेस्ट राइडिग क्षेत्र मे कृषि कार्यों का पारिश्रमिक प्रति सप्ताह चौदह शिलिग था जबकि विल्ट्स और सफॉक मे यही पारिश्रमिक सात शिलिग था। (क्लैपहम, I, पृ० ४६६-४६७, II, पृ० २८६ सारणी)।

जिन श्रमिको को बन्द सामूहिक भूमि तथा खुली भूमि को छोड जाने के लिये बाध्य कर दिया गया था उन्हे नई भूमि दिलवा दी गई थी और सेवा भाव युक्त जमीदारो, पादरियो तथा बडे किसानो ने उन्हे आलू के खेत प्रदान करने की भी व्यवस्था कर दी थी। उन्नीसवी शताब्दी मे कृषि-मजदूरो के लिये आलू उपजाना अत्यन्त उपयोगी था। लेकिन भूमि देने का कार्य मन्द गति से चल रहा था जिसका अर्थ केवल ढाढस बधाने से अधिक और कुछ नही था।

सन् पचास और साठ के वर्षों मे जिस समय कृषि प्रगति कर रही थी, पत्थर की छतो तथा दो अथवा तीन शयन कक्षो वाले ईंट के सुन्दर भवनो का बडे भू-स्वामियो द्वारा अपने सम्पत्ति क्षेत्रो मे, विशेष रूप से ड्यूक ऑफ बेडफोर्ड जैसो के जागीर-क्षेत्रो मे, निर्माण करवाया जा रहा था। असुन्दर भवनो मे उन अनेक पुराने निवास स्थानो को गिना जाता था जो मिट्टी तथा प्लास्टर से बने थे और जिनमे केवल दो ही कमरों की व्यवस्था थी। 'निकृष्ट कोटि के मकान छोटे-छोटे निजी खेतो पर बने सामान्यतया वे छोटे मकान थे जिनमे केवल उनका मालिक ही रहता था।' बडे खेतों पर बने मकान केवल आकार मे ही बडे नही थे बल्कि छोटी कुटियाओ की तुलना में उनमे रहने का स्थान भी अधिक था। सर्वश्रेष्ठ कोटि के मकानों का निर्माण भू-स्वामियो द्वारा हाल ही मे किया जाने लगा था। जहा किसी बडे खेत (फार्म) पर दो सौ वर्षों

का पुराना मकान खडा था वह पुराने समय मे किसी जमीदार का मकान रहा था। (क्लैपहम II, पृ० ५०५-५१२)।

अंग्रेज जमीदार यदि निस्वार्थ सेवा भाव वाले नही तो कम से कम केवल मुनाफाखोर 'वणिक वृत्ति' वाला व्यक्ति भी नही था। 'हवेलियो' से प्राप्त होने वाले किराये से उनकी देख-रेख तथा टूट-फूट का खर्चा भी मुश्किल से निकल पाता था। निस्सन्देह उस समय स्वार्थी जमीदार काफी थे और अधिकाशत उनमे श्रमिको का जीवन स्तर उन्नत करने के प्रति ऐसी कोई सहानुभूति भी नही थी जैसी कि अच्छा पारिश्रमिक दिलवाने के लिये कृषि-सघो का गठन कर (१८७२-१८७३) जोसेफ आर्च ने दर्शायी थी। लेकिन इगलैड के ग्रामीण जमीदारो ने ग्राम तथा ग्रामवासियो के लिये काफी कुछ किया था, जबकि आयरलैड के ग्रामवासी जमीदारो ने इगलैड के शहरी भू-स्वामियो की भाति लोगो के श्रम का शोषण ही अधिक किया। शहर की जिस गन्दगी मे नगर का सम्पत्तिधारी भूस्वामी फस गया था उसके कारण नगरवासी समाजवादी तथा परिवर्तनवादी लोग सभी 'भूस्वामियो' को हेय दृष्टि से देखने लगे थे जिससे ग्राम सम्बन्धी समस्याओ तथा भूस्वामियो के बीच की खाई निरन्तर बढने लगी।

इस प्रकार अगले दशक मे सहसा ही आपत्काल उत्पन्न हो जाने के पूर्व सन् १८७० के लगभग जब ब्रिटिश कृषि व्यवस्था अपने चरमोत्कर्ष तक पहुची थी उस समय उसकी आधार शिला भूस्वामी तथा कृषक के सम्मिलित स्वामित्व की एक ऐसी अभिजात सामाजिक व्यवस्था थी जिसने यद्यपि उत्पादन के क्षेत्र मे काफी उपलब्धिया की लेकिन लाभार्जन का बहुत ही थोडा अश खेतिहर मजदूर को प्रदान किया। यद्यपि यह सत्य है कि उसे यूरोप के अन्य कृषि-मजदूरो की तुलना मे अधिक पारिश्रमिक प्राप्त हुआ था लेकिन इगलिश स्तर अथवा मानको की दृष्टि से वह पर्याप्त नही था। इसी प्रकार यह भी सच है कि यूरोप के अधिकाश खुदकाश्त करने वाले किसानो की अपेक्षा उसकी आर्थिक स्थिति अधिक अच्छी थी। यह भी सत्य है कि इगलैड मे कई छोटे खेतो (फार्मों) मे पारिवारिक स्तर पर ही खेती की जाती थी। लेकिन जिस प्रकार किसी समय इगलैड मे (और आज अन्य यूरोपीय देशो मे) स्वाधीन किसानो की अकृषक लोगो की तुलना मे कही अधिक सख्या थी वह स्थिति आज नही है। इसका परिणाम यह हुआ कि सन् १८७५ के बाद जब 'फ्री ट्रेड' ने ब्रिटिश कृषि व्यवस्था की प्रगति को आघात पहुचा कर अपने हितो को प्राप्त किया, उस समय शहरी मतदाता ग्रामीण जीवन के ह्रास के प्रति इस कारण कोई ध्यान नही दे रहा था कि ग्रामो का सम्बन्ध अभिजात व्यवस्था से था। अधिकांश अग्रेज स्वतन्त्र तथा स्वाभाविक आर्थिक परिवर्तन के नाम पर राष्ट्रीय विपदा के बढते हुए कदमो को सन्तोष की दृष्टि से देख रहे थे।

सन् १८३२ के सुधार विधेयक (रिफार्म-बिल) के पारित हो जाने के तुरन्त बाद ही उत्तर के औद्योगिक क्षेत्र मे जीवनयापन सम्बन्धी कठिनाइयो—विशेष रूप से काम के घटो को लेकर—मजदूरो ने एक तीव्र आन्दोलन छेड दिया था। यॉर्कशायर मे एक सीमा तक इसमे परिवर्तनवादी (रैडिकल) तथा अनुदारतावादी (टोरी) दोनो ही सहयोग कर रहे थे। वेस्टमिस्टर मे इस आन्दोलन मे सभी दलो ने भाग लिया और सन् १८३३ मे ह्विग सरकार ने इसे कानूनी रूप प्रदान कर दिया। देश के प्रमुख नेता, ओस्टलर, सैडलर तथा शैफ्ट्सबरी, अनुदारवादी थे और साथ ही एवागेलिकल भी थे यद्यपि इस आन्दोलन के पीछे औद्योगिक जन स्वय कार्य कर रहे थे फिर भी एवागेलिकल मानवतावाद ने शिक्षित नेतृत्व जिसमे अधिकाश परिवर्तनवादियो का नेतृत्व था, प्रदान करने मे अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया था। लेकिन देहात के अनुदार (टोरी) भद्र लोग इस आन्दोलन के विरोधी नही थे और इसका कारण यह था कि उद्योगपतियो के नये श्रीमन्त वर्ग के प्रति वे ईर्ष्यालु थे। खाद्यान्न अधिनियमो द्वारा गरीबो के रक्त शोषण के लिये इगलैड के भद्र-जनो द्वारा किये गये प्रयत्नो के प्रति जो विरोध हो रहा था उससे जमीदारो मे एक क्रोध की लहर फैल गई थी, और यद्यपि उनके पूर्वजो ने ऐसी ल्यूडाइट शिकायतो की 'जैकोबिनवादी' कह कर खिल्ली उडाई थी लेकिन इन जमीदारो ने कारखानो की स्थिति पर आक्रमण करते हुए इसका उत्तर देना ही उचित समझा। सम्पन्न लोगो के पारस्परिक मतभेदो से उत्पन्न दरार ने श्रमिक को उनके ही घर मे झाक कर देखने तथा अपनी स्थिति को सुदृढ बनाने मे पर्याप्त सहायता की। और इस वर्गगत आरोपो-प्रत्यारोपो की पृष्ठ-भूमि मे एवागेलिकलो द्वारा केन्द्रित युग की एक ऐसी विशुद्ध मानवतावादी विचारधारा विद्यमान थी जिसे किसी धार्मिक सम्प्रदाय अथवा राजनैतिक दल तक ही सीमित नही माना जा सकता।

राजनीति मे मानवतावादी भावना कोई अधिक शक्तिशाली नही थी। सन् १८३३ मे इसके प्रभाव से साम्राज्य मे दासता को समाप्त करने के लिये ब्रिटिश कर दाता ने दो करोड पाउन्ड की कर राशि प्रसन्नतापूर्वक देना स्वीकार कर लिया और वह समाप्त हो गई। उसी वर्ष देश के कपडा कारखानो मे बच्चो को भी श्रम-यन्त्रणा से मुक्त कर दिया।

फैक्ट्री अधिनियम के प्रोत्साहको ने यह देखा था कि बच्चो को लेकर मानवता की दुहाई सरलतापूर्वक दी जा सकती है।

मोन्स हैलेवी लिखते हैं ' "यह सत्य है कि कार्यकर्ता काम के घटो मे कमी उन बच्चो के लिये नही करा रहे है कि जो मालिक की कठोरता की अपेक्षा उसके अत्याचारो के अधिक शिकार हैं बल्कि स्वय अपनी सुविधा के लिये करा रहे हैं। लेकिन कारखानो मे काम करने वाले बच्चो की सख्या अपेक्षाकृत इतनी अधिक थी कि बच्चों

के समय मे तो कमी कर दी जाय और वयस्को के समय मे कमी न हो यह अस्वाभाविक था। ओस्टलर ने यद्यपि बच्चो के नाम पर ही इगलिश मध्यवर्ग की सहानुभूति प्राप्त की लेकिन उसका वास्तविक उद्देश्य वयस्क श्रमिक को ही वैधानिक आरक्षण दिलाना था।" (हैलेवी, हिस्ट इग पीप्ल, अनूदित, वाटकिन, III, पृ० १११)।

लार्ड एलथ्रोप के सन् १८३३ के फैक्ट्री अधिनियम द्वारा बच्चो तथा वयस्को के काम के घटो को सीमित कर दिया गया और अधिनियम के कार्यान्वियन हेतु ऐसे निरीक्षको (इन्स्पेक्टर्स) की नियुक्ति भी की गई जिन्हे देखभाल के लिये किसी भी कारखाने मे प्रवेश कर निरीक्षण का अधिकार प्राप्त था। उनकी नियुक्ति का सुझाव कुछ भले कारखाना-मालिको ने स्वय ही दिया था। क्योकि वास्तव मे समस्या बुरे मालिको की नही बल्कि उन माता-पिताओ की थी जो अपने बच्चो की कमाई पर निर्भर करते थे और जिनके इस व्यवहार का समुचित निरीक्षण आवश्यक था। फिर अच्छे मिल मालिक यह चाहते थे कि बुरे मालिक जिस प्रकार पहले के अधिनियमो का भी उल्लघन करते रहे है उस प्रकार अब न करे क्योकि इससे भले मालिको को भी हानि उठानी पडती थी, और इसके लिये वे राजकीय हस्तक्षेप की अपेक्षा करते थे।

सन् १८३३ मे बच्चो को प्रदान किये गये इस विशेषाधिकार से आगे चलकर दस घटे वाले विधेयक (टेन आवर्स बिल) का जन्म हुआ। कारखाना-अधिनियम सम्बन्धी यह दूसरा सकट सन् १८४४-४७ की अवधि मे खाद्यान्न अधिनियमो (कॉर्न लॉज) के साथ-साथ प्रकट हुआ, और उस बडे झगडे का सम्पर्क प्राप्त कर अधिक विकट हो गया। दस घटे वाले विधेयक (टेन आवर्स बिल) द्वारा कपडा मिल मे काम करने वाले स्त्री-पुरुषो के दैनिक कार्य-काल को सीमित कर दिया गया था, क्योकि वयस्क लोग अकेले काम नही कर सकते थे इसलिये सभी को केवल दस घटे काम करना होता था। कार्य-काल के इस प्रकार सीमित हो जाने की कामगारो की वर्षों से इच्छा थी और यह तीव्रतम विरोधो का भी विषय रहा था। ससद मे इस विषय पर बहुत ही विचित्र ढग से मतदान हुआ था। उदारदलीय लोगो मे—मेलबॉर्न-कोब्डेन तथा ब्राइट ने जहा इस विधेयक का विरोध किया, रसेल, पामरस्टोन तथा मेकॉले इसके पक्ष मे थे। और अनुदारदलीय सदस्यो मे भी इस पर मतभेद नही था, पील जहा इस विधेयक के कट्टर विरोधी थे अधिकाश आरक्षणवादी (प्रोटेक्शनिस्ट) जमीदारो ने इसके पक्ष मे मत दिया। लेकिन लोकसभा (हाउस ऑफ कॉमन्स) मे इस विधेयक को अन्त मे पारित कराने का श्रेय फील्डेन को है, जो 'इगलैंड के कपडा उद्योग का सबसे बडा व्यक्ति था। लेकिन जिस व्यक्ति ने हाउस ऑफ कॉमन्स मे विधेयक को प्रस्तावित करने का साहस किया' वह इगलैंड का सबसे बडा रुई की कताई करने वाला उद्योग-पति फील्डन था, 'और जिस व्यक्ति ने ससद में विधेयक के पक्ष मे जनमत बनाने का प्रयत्न किया वह भी एक मजदूर के स्तर से उठ कर उसी उद्योग मे एक उद्योगपति बन गया था।' (हैमॉण्ड लार्ड शैफ्ट्सबरी, पृष्ठ १२१ एंड पैसिम)।

जिस प्रकार सन् १८३२ के रिफार्म बिल को मताधिकार के विस्तारित क्षेत्र के लिये उत्तरदायी माना जा सकता है उसी प्रकार सन् १८३३ तथा १८४७ के फैक्ट्री अधिनियम उन सभी नियमो तथा धाराओ के आधार माने जा सकते है जो सभी औद्योगिक क्षेत्रो की स्थितियो तथा काम के घटो का नियत्रण करती है। कारखानो की जिस व्यवस्था ने सम्पूर्ण प्रजाति के स्वास्थ्य एव सुखी जीवन को विनाश की ओर धकेला उसी ने धीरे-धीरे लोगो की आर्थिक स्थिति को इस स्तर तक ले आने मे, कि काम करना सम्भव हो सके, एक महत्वपूर्ण भाग अदा किया। घरेलू काम काज की प्रणाली का निरीक्षण कर पाना उतना सहज नही था जितना कि कारखानो की देख रेख कर पाना सहज हो गया। रॉबर्ट ओवन ने कारखानो मे काम करने वाले श्रमिको के उत्कृष्ट जीवन का जो स्वपन देखा था और जिसे उसने अपनी न्यू लेनार्क मिल्स मे यथार्थ रूप दिया वही सौ वर्षो की अवधि मे अधिकाश औद्योगिक जगत का मानक सिद्ध हो गया। और सन् १८३३ तथा १८४७ मे अर्थात् उस काल मे कि जो व्यक्ति-स्वातन्त्र्य (लैसे फेयर) की विचारधारा से आक्रान्त था और जब किसी ऐसे प्रयास का बहिष्कार स्वाभाविक था इसके लिये कुछ प्राथमिक निर्णय लिये गये। एक बार किसी प्रकार लोगो की भावनाओ को स्पर्श कर देने तथा आर्थिक लाभ पहुँचा देने के बाद केवल किसी विचार-धारा के आधार पर उन्हे वशीभूत कर पाना अत्यन्त दुरूह कार्य है। जैकोबिन-विरोधी काल मे, पिछली पीढी ने, जो केवल गरीबो का रक्त शोषण ही चाहती थी, 'लैसे फेयर' के केवल उन्ही पक्षो को चुना था जिनसे उनके स्वार्थ की सिद्धि होती थी, और अन्य पक्षो की उपेक्षा कर दी थी। अब इस प्रक्रिया को बदला जा रहा था उसी लोकसभा (हाउस ऑफ कॉमन्स) ने जिसने खाद्यान्न अधिनियमो को 'लैसे फेयर' के नाम पर रद्द कर दिया था अब उसी विचारधारा के विरोध मे टेन आवर्स बिल पारित किया। वास्तव मे किसी भी काल मे, सभी क्षेत्रो मे एक साथ लैसे फेयर नीति लागू नही हुई थी। बेन्थमवाद एक प्रकार से कई बातो मे इसके बिलकुल विपरीत था और समाज के विरोधी हितो मे सामजस्य उत्पन्न करने तथा नियत्रण स्थापित करने के लिये राजकीय विभागो के गठन की माग की थी।

सन् १८४७ के टेन आवर्स बिल के बाद के वर्षो मे कारखानो के नियमन के सिद्धान्त को अधिनियमो की एक शृखला द्वारा कपडा कारखानो के अतिरिक्त अन्य उद्योगो पर भी लागू कर दिया गया था। और कोयला खानो मे काम करने वाले स्त्री बच्चो की सैकडो वर्ष पुरानी निराशाजनक स्थिति के उद्घाटित होने पर लार्ड शैफट्सबरी ने सन् १८४२ मे खान अधिनियम (माइन्स एक्ट) बनवाया जिसके द्वारा दस वर्ष से कम आयु वाले बच्चो (स्त्री-पुरुषो) को भूमि के नीचे किसी प्रकार के काम पर लगाना निषिद्ध कर दिया गया। सन् १८५० के अधिनियम द्वारा वयस्क पुरुष-श्रमिको को भी खान निरीक्षण व्यवस्था (माइन्स इस्पेक्टोरेट) द्वारा आरक्षण प्रदान

कर दिया गया, और धीरे-धीरे खानो मे सुरक्षा का प्रबन्ध करवाना भी राज्य का दायित्व हो गया।

मालिको द्वारा सफाई करने वाले छोटे बच्चो के व्यापक दुरुपयोग—जिन्हे लम्बे ब्रुश के प्रयोग के स्थान पर चिमनी साफ करने के लिये ऊपर चढाया जाता था—को जनता मे काफी धिक्कारा गया, लेकिन उसका कोई फल नही निकला। सन् १८७५ मे शैफ्ट्सबरी ने अपनी डायरी मे लिखा था 'एक सौ दो वर्ष पूर्व जोनास हैनवे नामक सहृदय व्यक्ति ने इस क्रूर असमानता को जनता के समक्ष उद्घाटित किया था लेकिन फिर भी इगलैड तथा आयरलैड के अनेक भागो मे विभिन्न वर्गों के हजारो लोगो की जानकारी मे तथा उनकी पूर्ण सहमति से यह क्रूर स्थिति अब भी ज्यो की त्यो बनी हे।' उसी वर्ष शैफ्ट्सबरी के प्रयास से एक अधिनियम लागू किया गया और इस प्रकार इस रोग का उपचार सम्भव हुआ। सन् १८४० तथा १८६० के पिछले अधिनियमो की स्थानीय अधिकारियो, मजिस्ट्रेटो तथा निजी परिवारो ने मृत्त-पत्र की भाति उपेक्षा कर दी थी। (हैमॉन्ड, लॉर्ड शैफ्ट्सबरी, अध्याय १५)।

सन् १८६४ मे चिमनी-साफ करने वालो के अधिनियम की अपरिपक्व रचना पिछले वर्ष चार्ल्स किग्जले की 'वाटर बेबीज' नामक कृति, जिसमे लेखक ने बालक टॉम तथा उसके मालिक ग्रिम्स के सम्बन्धो का चित्रण किया था, के प्रकाशन के बाद सम्भव हुआ था। बच्चो के दुख-सुख की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने के लिये डिकेन्स ने पहले ही अपना काफी योगदान कर दिया था, उसकी 'वाटर बेबीज' नामक कृति ने इसके अतिरिक्त भी काफी कुछ किया था, इसमे ऐसी कल्पनाओ तथा चमत्कार का सृजन हुआ था जिसके प्रति वयस्क तथा बच्चे दोनो ही काफी आकर्षित हुए थे। बच्चो के खेलो, कल्पनाओ तथा विचारो मे रुचि होना उस युग की इसी विशेषता का द्योतक था कि वह पारिवारिक जीवन तथा बच्चो के लालन-पालन के बारे मे काफी चिन्तित था। शताब्दी के बीच के वर्षों मे ग्रिम तथा एन्डरसन की परी कथाओ ने यूरोप से प्रसारित होकर इगलैड को पूर्णरूपेण प्रभावित कर लिया था। लडके और लडकियो के लिये लिखी जाने वाली कथा पुस्तको की सख्या निरन्तर बढती गई। ऐसी पुस्तको का प्रणयन जिनमे बच्चो के साथ बडे भी रुचि ले सके इसी युग का आविष्कार था। पिछली शताब्दी मे ग्यूलिवर तथा रोबिनसन क्रूसो नामक कथा पुस्तको तथा अलिफ लैला के किस्सो मे यद्यपि बच्चे भी रुचि लेते थे लेकिन वास्तव मे ये वयस्क स्त्री-पुरुषो के लिये ही लिखी गई थी। लेकिन सन् १८५५ मे थैकरे ने 'रोज एड दि रिग, ए फायरसाइड पैन्टोमाइम फॉर ग्रेट एड स्माल चिल्ड्रन' पुस्तक प्रकाशित की तथा उसके दस वर्ष बाद क्राइस्ट चर्च के डीन की छोटी बच्ची के लिये 'लेविस कैरोल' द्वारा 'एलाइस' नामक पुस्तक का प्रकाशन हुआ। इस विशिष्ट प्रकार के साहित्य की उच्चतम कृतियों का तभी से

अनेक लेखको ने, जिनमे स्टीवेन्सन, बैरी तथा एड्रयू भी सम्मिलित थे, अनुकरण प्रारम्भ कर दिया।

बच्चो के प्रति इस व्यापक सहानुभूति के कारण विक्टोरिया कालीन अग्रेजी साहित्य ने वास्तविक सभ्यता को एक महत्वपूर्ण देन दी है। लेकिग जैसा कि बच्चो द्वारा चिमनी साफ कराये जाने वाली स्थिति के दीर्घकाल तक बने रहने से सिद्ध होता है ऐसी सहानुभूति का स्वरूप व्यापक अथवा सार्वभौमिक नही था। बच्चो की उपेक्षा तथा दुरुपयोग एक कठोर सत्य था। गन्दी बस्तियो की गलियो मे ही अधिकाश बच्चे खेलते थे, उनमे से कुछ को यद्यपि सन् १८७० तक स्कूल भी उपलब्ध थे लेकिन इस शताब्दी के मोड लेने के पूर्व तक कही भी खेल केन्द्रो की व्यवस्था नही थी। बच्चो के प्रति क्रूरताओ को रोकने के लिये सन् १८८४ मे पहले तक किसी भी सस्था का जन्म नही हुआ था, हा इस वर्ष के बाद से इस प्रकार की सस्था ने पचास लाख से अधिक क्रूरता सम्बन्धी मामलो को बडे ही प्रभावशाली ढग से निपटाया था। उन्नीसवी शताब्दी मे बच्चो पर कोडो की मार लगाने की प्रवृत्ति, जिसका कि भूतकाल मे शिक्षा सुधारको ने युगो तक बहिष्कार किया था, धीरे-धीरे स्वत समाप्त हो गई। बडे शहरो के विकासक्रम मे बढती हुई गन्दगी, धुए और कुहासे के वातावरण मे कई दिशाओ मे जीवन का मानवीकरण किया जा रहा था।

डिजरायली के इस विख्यात कथन मे कि इगलैंड, निर्धन तथा अमीर राष्ट्रो मे विभाजित है काफी सत्यता थी। लेकिन उक्ति वैचित्र्य प्रधान काव्याश की भाति यह केवल अर्ध-सत्य ही था। विक्टोरिया कालीन इगलैंड के औद्योगिक क्रान्ति ने अत्यधिक धनी तथा अत्यधिक निर्धन लोगो के बीच की आर्थिक खाई को काफी बढा दिया था और गावो तथा कस्बो के स्थान पर, जहा कि जीवन की कुछ सामान्य बाते सभी वर्गों मे समान थी, बडे नगरो को प्रतिष्ठित कर तथा विभिन्न सामाजिक वर्गों को पृथक-पृथक स्थानो पर बसा कर उनके भेद भाव को और अधिक तीव्र कर दिया था। लेकिन औद्योगिक परिवर्तनो ने सुख-सुविधा तथा सम्पन्नता की दृष्टि से कई स्तरो पर प्रतिष्ठित मध्य-वर्गों की सख्या मे भी काफी वृद्धि कर दी थी और कुछ अच्छे तकनीकी वर्गों जैसे इन्जीनियरो आदि के वर्गों के जीवन-स्तर को गन्दी बस्तियो मे रहने वालो तथा अप्रशिक्षित (अनस्किल्ड) मजदूरो की तुलना मे कही अधिक ऊचा उठा दिया था। दो ही नही यहा और भी कई 'राष्ट्र' थे, और यदि दो ही माने जाए तब भी डिजरायली के लिये दोनो के बीच विभाजन रेखा खीच पाना अत्यन्त कठिन होगा।

दैनिक पारिश्रमिक पाने वाले मजदूरो के जीवन स्तर मे सन् पचास तथा साठ के दशको मे होने वाला सुधार आशिक रूप से उन सौभाग्यशाली वर्षों मे सम्भव हो सका था जब कि वाणिज्य ने काफी प्रगति की थी और इगलैंड सम्पूर्ण विश्व का एक औद्योगिक केन्द्र बन गया था, और इसके लिये आशिक रूप में जहा ससद द्वारा पारित

सामाजिक अधिनियम भी उत्तरदायी थे अशत पारिश्रमिक बढाने तथा अन्य दोषो को समाप्त करवाने के लिये मजदूर-सघ (ट्रेड-यूनियन) द्वारा किये गये प्रयत्न भी सम्मिलित थे। श्रमिक वर्ग के ही उच्च स्तरो जैसे इन्जीनियर वर्ग तथा अन्य प्रशिक्षित वर्गो मे मजदूर-सगठन सम्बन्धी गतिविधिया अधिक शक्तिशाली थी।

इसी काल मे सहकारिता आन्दोलन (कोअॉपरेटिव मूवमेट) का भी काफी विकास हुआ, इस आन्दोलन ने जहा उपभोक्ताओ का विक्रेताओ द्वारा किये जाने वाले शोषण को दूर करने मे सहायता की वही वाणिज्य प्रशासन तथा स्वायत्तशासन की कार्य-विधियो मे श्रमिक वर्गों को प्रशिक्षण प्रदान करने मे भी काफी योगदान दिया। इसका जन्म चौबीस चार्टरवादियो (चार्टिस्ट) तथा रोचडेल के ओवनवादी कार्यकर्ताओ के प्रयत्नो से हुआ था जिन्होने सन् १८४४ मे टोड (T'owd) लेन मे 'रोचडेल पायोनियर्स' के एक विक्रय केन्द्र की स्थापना की थी। कई बडे सहकारी प्रयत्न जहा असफल हो चुके थे यह प्रयास तो उनकी तुलना मे एक अत्यन्त विनम्र प्रयास था। लेकिन इन लोगो ने रॉबर्ट ओवन के स्वप्नों को साकार करने के लिये सौभाग्य से ठीक योजना पर कार्य प्रारम्भ किया। बाज़ार भाव पर वस्तुओ का विक्रय करना तथा अतिरिक्त लाभ को सदस्यो मे उनके शेयरो की राशि के अनुपात मे विभाजित कर देना उनका मुख्य सिद्धान्त था। इससे एक ओर जहा लाभ अर्जन की प्रवृत्ति पर नियत्रण स्थापित हुआ वही क्रय-विक्रय के सचालन मे प्रजातात्रिक कार्य-प्रणाली का भी प्रचलन हुआ। इस प्रकार सहकारिता आन्दोलन ने शताब्दी की समाप्ति के पूर्व अत्यधिक प्रगति कर ली थी।

सन् पचास की दशाब्दी मे इस आन्दोलन की व्यावहारिक सफलता के लिये वही उत्साह एक कारण था जिसके आदर्शात्मक पक्ष का प्रचार ओवन के शिष्य होलयोक के नेतृत्व मे धर्म-निरपेक्षतावादियो (सेक्यूलरिस्ट्स) ने तथा फ्रेडरिक डेनिसन मौरिस और विशेष रूप से 'टॉम-ब्राउन्स स्कूलडेज' के लेखक टॉम ह्यूग्स की प्रेरणा से ईसाई समाजवादियो (क्रिश्चियन सोश्यलिस्ट्स) ने किया था। सामान्य दूकानदारो द्वारा इस आन्दोलन के बहिष्कार के प्रयत्नो से इसे शक्ति ही अधिक प्राप्त हुई। सन् सत्तर के दशक मे सहकारी समितियो ने अपने मूल कार्य के अतिरिक्त एक अच्छे पैमाने पर उत्पादन का कार्य भी प्रारम्भ कर दिया था।

वास्तव मे सहकारिता आन्दोलन का महत्व उसके आर्थिक पक्ष की अपेक्षा कही अधिक था। इसने श्रमजीवी लोगो के मनो मे यह भावना उत्पन्न कर दी थी कि 'राष्ट्र के प्रति कुछ उनका भी दायित्व है।' उन्हे पारस्परिक सहायता का तथा व्यापार किस प्रकार किया जाता है इसका प्रशिक्षण इस आन्दोलन से प्राप्त हुआ था और साथ ही समितियो से सम्बद्ध हो जाने के कारण आत्मोन्नति तथा शिक्षा ग्रहण करने की भी प्रेरणा मिली थी। जैसाकि इस आन्दोलन के इतिहासकार ने लिखा है . 'इससे आर्थिक बचत मे जितनी सहायता और प्रोत्साहन मिलता है उससे अधिक उसके सदस्यों पर

बौद्धिक तथा नैतिक प्रभाव पडा है जिसके कारण लाखो मजदूर-परिवारो मे एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आ गया है और ग्रेट ब्रिटेन के सामाजिक रूपान्तरण मे इसका एक महान् योगदान है।'

जिन उपलब्धियो के द्वारा नया ब्रिटेन औद्योगिक क्रान्ति से उत्पन्न रोगो का उपचार करना चाह रहा था अर्थात् सहकारिता, कारखानो से सम्बन्धित अधिनियम, श्रमिक सघवाद (ट्रेड यूनियनिज्म) आदि द्वारा, वे सभी औद्योगिक क्रान्ति की ही भाति अपने जन्म एव स्वरूप की दृष्टि से ब्रिटिश थे।

उन्नीसवी शताब्दी का द्वितीय चतुर्थ भाग एक ऐसा युग था जब कैनेडा, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड के विषय मे यह निश्चय किया जा रहा था कि लोग ब्रिटेन से वहा जाकर बसे और ये देश राष्ट्रो के स्वतन्त्र ब्रिटिश कॉमन वेल्थ सघ के अग बन जाए।

ब्रिटेन की बढती हुई जनसख्या, जिसकी कि माल्थस ने काफी आलोचना की थी, के कारण तथा कृषक-वर्ग की दु खद दशा के कारण इन वर्षों मे ग्रामीण क्षेत्रो से अनेक लोग उन उपनिवेशो मे जाकर बसने लगे थे जिन्हे कि आधुनिक साम्राज्य के पुनर्निर्माण का आधार कहा जा सकता था। गिबन वेकफील्ड ने अपने प्रचार कार्यों द्वारा अपने देशवासियो को इस प्रकार समझाना चाहा था कि हमारी आर्थिक कठिनाइयो का हल केवल बढती हुई आबादी के निष्क्रमण से ही सम्भव हो सकता है और उपनिवेशो को केवल व्यापार स्थलो के रूप मे नही वरन् नवीन ब्रिटिश राष्ट्रो के रूप मे भी विकसित किया जा सकता है। आधुनिक कैनेडा, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड की ओर जाने वाली जनसख्या के व्यवस्थित निष्क्रमण का श्रेय गिबन को काफी है।

उन्नीसवी शताब्दी मे इगलैड के सुख शान्तिपूर्ण जीवन तथा 'प्रगति' सिद्धान्त को अर्थात् एकरेखीय प्रगति ही इतिहास का एक मात्र नियम है—विक्टोरिया कालीन इगलैड का यह विश्वास प्रर्याप्त अशो मे इस कारण था कि वाटरलू युद्ध के सौ वर्षों बाद तक इगलैड को किसी प्रकार के युद्ध मे नही उलझना पडा। क्रिमियन युद्ध (१८५४-१८५६) को इसका अपवाद नही माना जा सकता। वास्तव मे इस युद्ध को श्याम सागर (ब्लैक सी) पर किये गये एक मूर्खतापूर्ण अभियान की ही सज्ञा दी जा सकती है क्योकि वास्तव मे तीन वर्ष पूर्व हाइड पार्क मे हुई बडी नुमाइस (ग्रेट एक्जीबीशन) के समय शान्तिवादी वार्ताओ के बावजूद अग्रेज उस शान्ति मे ऊब चुके थे और यही ऊब उनके इस अभियान का कारण थी। बुर्जुआ प्रजातन्त्र ने जिसका कि कुछ समाचार-पत्रो ने काफी पक्ष लिया था बालकन ईसाइयो के विरुद्ध तुर्की शासन की ओर से प्रचड रूप ग्रहण कर लिया था और यह स्थिति अगली पीढ़ी के समय उन्ही शक्तियो द्वारा ग्लैडस्टन के नेतृत्व मे उलटी कर दी गई थी। हमने क्रिमियन युद्ध को लडा था लेकिन जैसे ही विदेशो पर आक्रमण करने की वृत्ति सतुष्ट हुई उसे तत्काल समाप्त भी कर दिया। हमारे सामाजिक इतिहास का यह एक तथ्य है कि विदेश नीति अब धीरे-धीरे राजनीतिज्ञो के ही अधिकार की वस्तु न होकर आम जनता

की रुचि का भी विषय बन गई थी। राजनीतिज्ञ लोग अधिक मूर्ख थे या जनता, इसका निर्णय कर पाना, कठिन है।

लेकिन क्रिमियन युद्ध का एक लाभप्रद परिणाम अवश्य निकला अर्थात् प्रशिक्षित स्त्रियो के व्यवसाय रूप मे श्रीमती गैम्प की सस्था से भी एक अधिक अच्छी नर्सिंग सस्था का विकास हुआ। फ्लोरेन्स नाइटइंगेल की अद्‌भुत व्यक्तिगत सफलता ने क्रिमियन सेना के अधिकारियो को अस्पताल की पुरानी व्यवस्था के आधुनिकीकरण के लिये प्रेरित किया ये लोग पहले बालाक्लावा बन्दरगाह से सेबास्टोपोल के पूर्व की छावनी तक की थोडी दूरी के लिये भी रेल मार्ग का प्रबन्ध तब तक करने को तैयार नही थे। जब तक कि युद्ध समाचार भेजने वाले सवाददाता जनमत को अपने लेखो द्वारा इनके विरुद्ध नही उकसा देते। नर्सिंग व्यवसाय की गम्भीर आवश्यकता को भी क्रिमियन-युद्ध के समाचार के रूप मे नागरिक जीवन तक पहुचाया गया था और इसके तुरन्त बाद ही चिकित्सा-सेवा मे एक नये युग का आविर्भाव हो गया। इसके अतिरिक्त नर्सिंग के अलावा अन्य क्षेत्रो मे भी फ्लोरेन्स नाइटइंगेल के उपक्रमो से स्त्रियो को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिये इस विचार का काफी प्रचार हुआ। स्कॉट तथा बायरन के युग मे आदर्श नारी का स्वरूप कुछ भिन्न था—उससे यह अपेक्षा की जाती थी कि वह शारीरिक श्रम से मुक्त रह कर तथा पुरुष का अवलम्ब ग्रहण कर अपने नारित्व को चरितार्थ करे। लेकिन विक्टोरिया के शासनकाल के उत्तरार्ध मे एक दूसरे ही प्रकार का विचार जडे जमाने लगा, और वह था कि उच्च-मध्यवर्ग की स्त्रिया खास कर अविवाहितो को स्वावलम्बी होने तथा ससारोपयोगी होने का भी कुछ प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिये।

क्रिमियन युद्ध का अन्य छोटे क्षेत्रो पर भी काफी प्रभाव पडा। भद्र वर्ग द्वारा अस्सी वर्षों तक निषिद्ध रहने के बाद अब पुन सेबास्टोपोल के सामने की सैनिक खाइयो मे आदर्श-नायकों का अनुकरण कर सैनिको ने सिगरेट पीना शुरू कर दिया था। और इसी कारण उच्च वर्गों से लगभग दो सौ वर्षों तक गायब रहने के बाद अब पुन लोगो के चेहरो पर दाढिया प्रकट होने लगी थी। विक्टोरिया शासनकाल के बीच के वर्षों मे सभी वर्गों मे औसतन लोग दाढी रखने लगे थे तथा पाइप पीने लगे थे।

यह युग 'मासलतावादी ईसाईवाद', तनावो तथा शीतल स्नानो का युग था। सगठन प्रधान खेल, विशेषकर क्रिकेट तथा फुटबाल का स्कूलो, विश्वविद्यालयो तथा ग्राम जीवन मे काफी प्रचार हो रहा था। पैदल चलना तथा पर्वतों पर अभियान करना इस सशक्त तथा खिलाडी नई पीढी की प्रमुख विशेषताए थी, स्त्रियो को भी अब पैदल चलने मे किसी रोक-टोक का सामना नही करना पडता था। अभी 'लॉन टेनिस' का युग प्रारम्भ नही हुआ था और जब तक घेरदार घाघरो का फैशन था तब तक उसकी सम्भावना भी काफी कम थी। लेकिन भद्रवर्गीय महिलाए तथा पुरुष छोटे-छोटे घास के मैदानो मे क्रिकेट (गेद का खेल) खेला करते थे।

क्रिमियन युद्ध जिस एक वस्तु को उत्पन्न करने मे असमर्थ रहा वह सेना मे सुधार करना था। यद्यपि यह तथ्य स्पष्ट हो चुका था कि प्राय द्वीप (पेनिन्सुला) युद्ध की सैनिक परम्परा का पालन करते हुए सैनिको ने इस युद्ध मे भी अपने गौरव की रक्षा की थी लेकिन वास्तव मे यह भी एक तथ्य था कि अच्छे नेतृत्व, अच्छे नये सैनिको, अच्छे भोजन तथा अच्छे सगठन का इस बार काफी अभाव था। लेकिन इस बार जो गौरव-रक्षा मे थोडी बहुत कमी आ गई थी उसे सेना ने अगले वर्ष भारतीय विप्लव के समय, जबकि स्वावलम्बन तथा वैयक्तिक उपक्रम विषयक विक्टोरिया कालीन मूल्य अपने चरमोत्कर्ष पर थे—पुन प्राप्त कर लिया था। लेकिन किसी भी रूप मे उस युग के सुधारको की सेना मे तनिक भी रुचि नही थी। ये लोग उसे सभ्य राष्ट्र के लिये अनावश्यक तथा एक व्यर्थ की अभिजात्य सस्था मानते थे। सेना मे सुधार कर रक्षा व्यवस्था को और अधिक दृढ करने की अपेक्षा ये लोग उसमे कटौती कर पैसा बचाने के प्रति अधिक चिन्तित थे।

केवल १८५९ मे नेपोलियन तृतीय के तथाकथित बुरे इरादो को लेकर (यद्यपि नेपोलियन की हार्दिक इच्छा इगलैड के साथ मैत्री की ही थी) एक भयपूर्ण वातावरण व्याप्त हो गया था। और इसके फलस्वरूप द्वीपवासियो की सतत अतत्परता के आगे इस आतकपूर्ण वातावरण ने क्षण भर के लिये एक विराम चिन्ह लगा दिया था, स्वय सेवक बनाने का आन्दोलन उठ खडा हुआ और व्यापारियो तथा उनके नौकरो को उस काल की नागरिक तथा वैयक्तिक चेतना के अनुसार अवकाश के समय कवायद करवाने का कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया गया था। लेकिन सन् १८७० के फ्रैंको-प्रश्यन युद्ध, जिसके कारण कि जनता मे विदेशी गतिविधियो के प्रति एक स्पष्ट चेतना व्याप्त हुई थी, से पूर्व नियमित सेना मे किसी प्रकार के सुधार का यत्न नही किया जा सका था। और सौभाग्य से इस अवसर पर आतक के वातावरण ने कार्डवेल नामक प्रसिद्ध सुधारो को जन्म दिया था जिसके अन्तर्गत सैनिक अधिकारियो के पदो (कमीशन) को क्रय कर लिये जाने तथा अतिरिक्त सेना के गठन के लिये अल्पकालीन सैनिको को भर्ती कर लेने की प्रणाली को समाप्त कर दिया गया था।

अध्याय १८

महारानी विक्टोरिया के शासनकाल का उत्तरार्द्ध (१८६५-१६०१)

किसी राष्ट्र के राजनैतिक इतिहास से पृथक् सामाजिक इतिहास के लेखन मे एक कठिनाई उन निर्धारक घटनाओ तथा निश्चित तिथियो की जानकारी का अभाव है जिनके आधार पर कि परिवर्तन-क्रम का निरुपण सम्भव होता है। स्त्री-पुरुषो की सामाजिक प्रथाए तथा आर्थिक परिस्थितिया, विशेष रूप से आधुनिक काल मे, सदैव सक्रमणशील रही हैं, लेकिन वे पूर्णतया तथा आकस्मिक रूप से कभी परिवर्तित नही होती। किन्तु प्राचीन अर्वाचीन को इस प्रकार आच्छादित करता है कि बहुधा ही यह प्रश्न उपस्थित हो जाता है कि व्यवहार अथवा विचार मे इसके लिये इस पीढी को उत्तरदायी माना जाए अथवा अगली पीढी को, यह एक जटिल समस्या हो जाती है।

लेकिन कुल मिलाकर विक्टोरिया कालीन इगलैंड मे लोगो की प्रवृत्तियो मे सन् साठ सत्तर की शताब्दियो के अन्तिम वर्षो मे कुछ स्पष्ट परिवर्तन घटित हुए थे। यद्यपि अब भी कुछ पुराने चिन्ह विद्यमान है लेकिन अब वे उतने प्रभावशाली नही है। आज भी ग्रामीण क्षेत्रो मे अभिजाततन्त्र विद्यमान है और वहा की सभाओ-समारोहो तथा लन्डन के समाज मे उनका काफी प्रभाव है, बुर्जुआ 'स्वावलम्बन' तथा सीमित ईमानदारी के गुणो से युक्त व्यक्तिवादी व्यापारी अभी भी फल-फूल रहा है। लेकिन ये वर्ग आज उतने महत्वपूर्ण नही रहे है जितने कि पामरस्टोन तथा पील के समय थे, और जिन विचारो अथवा जिस विचारहीनता का ये प्रतिनिधित्व करते है उन्हे 'निम्न-स्तरीय रैडिकलो' के अतिरिक्त अन्य लोग भी चुनौती दे रहे है। सभी प्रकार के वर्गों और क्षेत्रो मे सामाजिक प्रथाओ तथा धार्मिक विश्वासो पर होने वाली बहस विक्टोरिया के आरम्भिक शासनकाल के जमे जमाए आचारो एव सम्प्रदायो का उन्मूलन कर रही है। जॉन स्टुअर्ट मिल ने अपनी 'लिबर्टी' (१८५९) नामक कृति मे इसी पारम्परिक मतावलम्बन के प्रति विद्रोह व्यक्त किया है और इसके बारह वर्ष बाद यह रवैया आम लोगो का एक प्रचलित रवैया बन गया था। यह युग वास्तव मे एक उदार तथा स्पष्ट वक्ता युग है जिसके अधिकाश प्रतिनिधि न तो अभिजातवर्गीय लोग हैं और न दूकानदार; विश्वविद्यालयीय शिक्षा प्राप्त अध्येता अथवा बुद्धिमान प्रशिक्षित

व्यवसायी, मिल, डार्विन हक्सले तथा मैथ्यू ऑरनोल्ड, जार्ज इलियट तथा ब्राउनिग—दाढी वाले भद्र बुद्धिवादी लोग जिनके पारिवारिक जीवन का डु मारियर 'पच' मे चित्रण किया करता था—के पाठक गण ही उसका प्रतिनिधित्व करते थे ।

प्रजातत्र, अधिकारीतन्त्र, सघवाद ये सभी सैकडो शाखाओ-प्रशाखाओ मे शान्त भाव से प्रगति कर रहे थे । विगत पीढी से सन् सत्तर के दशक को जो परिवर्तन पृथक् करते है उनमे से कुछ का उल्लेख स्थिति पर कुछ प्रभाव डाल सकता है । अग्रेजो के ईसाई धर्म को व्यापक रूप से नही लेकिन फिर भी डार्विनवाद काफी प्रभावित कर रहा था, सन् १८७१ मे ऑक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज मे धर्मनिरपेक्ष रूप मे लोगो को प्रवेश दिया जाने लगा था, धार्मिक धारणाओ के स्थान पर शैक्षणिक जगत मे शास्त्रो तथा गणित के अतिरिक्त विज्ञान तथा इतिहास की प्रतिष्ठा भी काफी बढ रही थी, सन् १८७० मे राजकीय सेवा (सिविल सर्विस) मे प्रवेश पाने के लिये प्रतियोगितात्मक परीक्षा एक सामान्य बात हो गई थी जिससे कि अधिकारीतत्रीय व्यवस्था मे योग्यतम व्यक्ति ही प्रवेश पा सके, नगरो के कामगारो को सन् १८६७ के सुधार विधेयक (रिफॉर्म-बिल) द्वारा ससद के लिये मताधिकार प्राप्त हो गया था, और इसके तीन वर्ष बाद फॉरेस्टर्स अधिनियम द्वारा सभी के लिये प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था भी हो गई थी, १८७१-१८७५ के अधिनियम द्वारा अपनी बढती हुई शक्ति के अनुरूप ही श्रमिक सघो को नये अधिकार प्राप्त हो गये, वाणिज्य प्रशासन के क्षेत्र मे पुरानी पारिवारिक कम्पनियो के स्थान पर सीमित दायित्वो वाली कम्पनिया प्रतिष्ठित होने लगी थी, स्त्रियो का सामाजिक एव व्यावसायिक उत्थान मिल की 'सब्जेक्शन ऑफ विमेन' (१८६९) नामक कृति मे बताई गई दिशा की ओर हो रहा था, ऑक्स-फोर्ड तथा कैम्ब्रिज मे स्त्रियो के लिये पृथक कॉलिजो की स्थापना हो गई थी और नारी माध्यमिक शालाओ मे काफी सुधार कर दिया गया था, विवाहित स्त्रियो की सम्पत्ति विषयक अधिनियम ने, यदि उसके पास अपना धन है तो उसे पति की आर्थिक निर्भरता से मुक्ति प्रदान कर दी थी . 'यौन समानता' को सैद्धान्तिक आधारो पर मान्यता दी जाने लगी थी और सभी वर्गों मे उन्हे अधिकाधिक व्यवहृत किया जाने लगा था । स्त्रियो को राजनैतिक क्षेत्र मे मिला मताधिकार पर्याप्त रूप मे उसे सामाजिक क्षेत्र मे प्राप्त हो चुके मताधिकार की ही परिणति था ।

लेकिन सन् सत्तर के दशक की वह एक घटना, जिसका भविष्य पर अपरिमेय प्रभाव पडा, वह अग्रेजी कृषि व्यवस्था का सहसा ही लडखडा जाना था ।

सन् १८७५ के बाद से कृषि मे घटित हुआ यह ह्रास बढता गया । अनुकूल मौसमो की एक श्रृखला ने ह्रास की इस प्रारम्भिक स्थिति को निरन्तर बढावा दिया, लेकिन इसका कारण वास्तव मे अमरीकियों द्वारा अकृपित भूमि को कृषि योग्य भूमि मे परिवर्तित कर अग्रेजी बाजार मे अन्न पहुँचाना था । नये कृषि यन्त्रो द्वारा मध्य-पश्चिम

(मिडल-वैस्ट) के कृषक एक बडे क्षेत्र की जुताई कर अन्न उपजाने मे समर्थ हो गये थे, नयी रेल-व्यवस्था इस उपज को बन्दरगाहो तक पहुँचा देती थी और नये जहाज उसे अटलाटिक पार तक ले जाते थे। अग्रेजी कृषि-व्यवस्था अमरीकी कृषि की अपेक्षा अधिक विज्ञानाधारित तथा अधिक पूजी सम्पन्न थी, लेकिन इस स्थिति मे उसके दोषो की मात्रा भी कम न थी। सस्ते तथा सहज तरीको से बडी मात्रा मे होने वाले अन्न उत्पादन से जमीदारो के बडे खेतो पर पिछले दो सौ वर्षों से प्रयुक्त खर्चीले तरीको द्वारा की जाने वाली खेती पर काफी भार पडा था। ब्रिटिश भूमिधारी अभिजात वर्ग का सुदूर अमरीका के प्रजातात्रिक कृषको द्वारा उखाड फेका जाना आर्थिक परिस्थितियो के परिवर्तन का ही एक परिणाम था। और इससे भी अधिक महत्व-पूर्ण परिणाम यह था कि इगलैडवासियो का जीवन प्रकृति से विलग हो गया था, जबकि पिछले सभी युगो मे लोगो की कल्पना तथा मानस को निर्मित करने मे प्रकृति का महत्वपूर्ण भाग था।

यूरोप के अन्य राज्यो मे, जहा अब भी कृषि का सामाजिक व्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करने मे महत्वपूर्ण योगदान था और लोग उसे स्वीकार करते थे वहा अमरीकी खाद्यान्न को देश मे नही आने दिया जाता था। लेकिन इगलैड मे न तो इस प्रकार की कोई नीति ही निर्धारित हो सकी थी और न उस पर कोई विचार ही किया जा रहा था। स्वतन्त्र व्यापार (फ्री ट्रेड) को ही समृद्धि का कारण मानना, बाह्य जगत् से होने वाले व्यापार को जिसके विषय मे यह विश्वास था कि हमारी शक्ति एव सम्पदा उसी के कारण सुरक्षित है उसमे किसी भी प्रकार के परिवर्तन की अनिच्छा, नगरो का ग्रामो पर कुछ सख्या की दृष्टि से तथा उससे भी अधिक बौद्धिक तथा राजनैतिक नेतृत्व की दृष्टि से आधिपत्य, सन् चालीस के क्षुधा-ग्रस्त दशक की स्मृतिया —जबकि खाद्यान्न अधिनियमो (कार्न लॉज) के कारण गरीबो के लिये रोटी के मूल्य काफी बढ गये थे—इन सभी परिस्थितियो के कारण ग्रामीण जीवन की रक्षा का कोई भी प्रयत्न सम्भव न हो सका। और इस सब की तुलना मे विक्टोरिया कालीन लोगो ने भावी युद्धो के लिये अन्न उत्पादन की आवश्यकता पर और भी कम ध्यान दिया। वाटरलू का युद्ध जीतते के बाद, सुरक्षा-कालीन दो पीढियो के बाद तक, ऐसा प्रतीत होता था कि 'विगत युद्धो और अतीत की कटु स्मृतियो की भाति, राष्ट्र पर आ सकने वाली भयानक विपत्ति की आशका भी समाप्त हो गई थी। सन् १८४६ मे डिजरायली ने खाद्यान्नो के स्वतन्त्र व्यापार (फ्री ट्रेड) की अवश्यम्भावी परिणति के रूप मे कृषि-व्यवस्था के विनाश की भविष्यवाणी कर दी थी। तीस वर्षो तक तो डिजरायली की बाते ठीक प्रतीत नही हुई। लेकिन अब सहसा ही वे उचित लगने लगी -और अब वह प्रधान-मत्री बन गया था। फिर भी उसने इस सम्बन्ध मे कुछ नही किया और 'कॉब्डन का अभिशाप', अग्रेजी कृषि-व्यवस्था को ग्रस्त करता रहा। पूर्व (ओरिएन्टल) की नीतियो मे ही समग्र रूप से उलझ जाने के कारण ये वृद्ध

महानुभाव स्वदेश पर हावी हो रही इस युग की प्रवृत्तियो का विरोध नही कर सके। एक प्रकार से इन्होने स्वय को इन प्रवृत्तियो के अनुकूल ढाल लिया था। राजनीतिज्ञो ने कृषि के भविष्य के प्रति उदासीनता का ही व्यवहार किया क्योकि इसमे बेरोजगारी जैसी कठिन समस्या का प्रवेश नही हुआ था।

जिस प्रकार से बेरोजगार खान मजदूर बन्द खान के चारो ओर चक्कर लगाते रहते थे खेतिहर मजदूर उस प्रकार से अपनी खेती समाप्त हो जाने पर अपनी भूमि पर आश्रित नही रह पाते थे। कृषि-श्रमिक के बेरोजगार हो जाने पर अथवा उसका पारिश्रमिक कम हो जाने पर वह नगरो मे जाकर काम की खोज करने लगता था। या फिर वह समुद्रपार के देशो की ओर प्रस्थान कर जाता था क्योकि सयुक्त राज्य अमरीका तथा उपनिवेश अब भी बढती हुई जनसख्या के आयात का स्वागत कर रहे थे। एक वर्ग के रूप मे अग्रेज कृषक मजदूर अपनी भूमि को छोडकर चले जाने के विचार के प्रति काफी अभ्यस्त हो चुका था। वह दूसरो के लिये जोते गये खेतो से उस प्रकार अपनत्व अनुभव नही कर सकता था जिस प्रकार कि आयरिश कृषक अपनी उस भूमि से अपनत्व का अनुभव करता था जिससे कि वह अपने परिवार के लिये भोजन प्राप्त करता था और जिस पर कि उसका अधिकार भी था। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण अग्रेज को नगरो तथा वहा उपलब्ध अवसरो व पारिश्रमिक के बारे मे भी काफी जानकारी थी। हमारी जनता मे जीवन को उन्नत करने की जो प्रबल इच्छा पाई जाती है वह उसमे भी विद्यमान थी और इसलिये उसे अपने बचपन का स्थान छोडकर बाहर जाने मे किसी प्रकार की आपत्ति नही थी।

इस बीच जमीदारो तथा बडे किसानो ने, जिनकी कि भूमि से पृथक होने की न तो इच्छा थी और न शक्ति ही, उन्हे इससे सबसे अधिक हानि हुई और वह इसकी व्यर्थ शिकायत करते रहे। इसका मुख्य कारण यह था कि इगलैंड पर उनका राजनैतिक प्रभुत्व समाप्त हो चुका था। सन् सत्तर तथा अस्सी के दशक के उदारवादी तथा अनुदारवादी बुद्धिजीवी स्वतन्त्र वाणिज्य के सिद्धान्त (फ्री ट्रेड डॉक्ट्राइन) के समर्थक थे उनका विश्वास था कि यदि कोई उद्योग जैसे कृषि, प्रतिस्पर्धापरक हो जाए तो उससे अन्य उद्योगो को भी लाभ पहुचेगा और इस प्रकार से सभी औद्योगिक क्षेत्र उन्नत हो जाएगे। लेकिन ऐसा नही हो सका, क्योकि राजनैतिक अर्थ-व्यवस्था मानव-कल्याण के समूचे क्षेत्र को प्रभावित नही करती। सैद्धान्तिक जगत् मे ही विचरण करने वाले यह देखना भूल गये कि अन्न उद्योगो की भाति कृषि एक उद्योग न होकर एक ऐसी जीवन-प्रणाली थी जिससे कुछ मानवीय तथा आध्यात्मिक मूल्य भी जुडे थे, अत: किसी अन्य उद्योग द्वारा उसे स्थानापन्न कर पाना अत्यन्त कठिन था।

सन् १८७१ से ह्रास की जो दशाब्दी प्रारम्भ हुई उसमे गेहू का उत्पादन इगलैंड मे लगभग दस लाख एकड कम हो गया। सन् १८८१ मे मजदूरों की सख्या दस वर्ष

पहले की सख्या से लगभग कई लाख कम हो गई थी, जबकि यह निष्क्रमण का केवल आरभ ही था। पश्चिमी प्रदेश मध्यभूमि तथा उत्तर की खाद्यान्न उपजाने वाली भूमि मे घास उगने लगी थी, लेकिन पशुधन मे किसी भी प्रकार की वृद्धि नही हुई थी और वह भी तब जब कि भेडो के स्थान पर लोग दुधारू पशुओ को अधिक पालने लगे थे। आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैड तथा दक्षिणी अमरीका से जमे हुए गोश्त का आयात सन् अस्सी तथा नब्बे की दशाब्दियो की एक नूतन विशेषता थी। सन् १८९१-१८९९ से कृषि के पतन की एक और लहर उठी और वह १८७५-१८८४ के पतन से कम भयकर नही थी। इस शताब्दी के अन्त तक इगलैड और वेल्स का खाद्यान्न उपजाने वाला क्षेत्र सन् १८७१ मे जहा अस्सी लाख एकड के लगभग था अब वह साठ लाख एकड से भी कम हो गया था। स्थायी चरागाह की भूमि का क्षेत्र काफी विस्तृत हो गया था, लेकिन दुधारू पशुओ तथा भेडो के मूल्य खाद्यान्नो की कीमतो के साथ ही गिरते रहे। और बावजूद इसके कि खेतिहर मजदूरो को सन् १८८४ मे मतदान का अधिकार प्राप्त हो गया था वे नगरो अथवा समुद्रपारीय देशो मे जाकर बसते रहे।

इगलैड की कृषि का अध्ययन करने वाले एक इतिहासकार ने विक्टोरिया के शासनकाल के अन्तिम दशको का विवरण इस प्रकार दिया है

"कोई ठोस सहायता कर पाने मे विधानमडल अक्षम था। भोजन ही एक प्रकार से विनिमय का माध्यम था जो विदेशी राज्य इगलैड मे उत्पादित सामग्री की एवज मे दिया करते थे और इसका सस्तापन निस्सन्देह श्रमजीवी समुदाय के लिये एक वरदानस्वरूप था। अपने स्वय के साधनो पर ही निर्भर करने को बाध्य होने के कारण किसानो ने साहस तथा धैर्य के साथ सघर्ष किया। लेकिन आगे चलकर उन पर भार अधिक आने लगा। उत्पादन मे जुटा हुआ वर्ग स्वदेश के अतिरिक्त सभी जगह अपने अन्न को खपाने के लिये बाजार की खोज करने लगा। धीरे-धीरे लोगो का उत्साह तथा उपक्रम भी मन्द पडने लगा, जमीदारो मे सहायता करने की प्रवृत्ति तथा किसानो मे उत्पादन शक्ति का अभाव होने लगा। दीर्घकालीन मन्दी के कारण मूल्यवान विकास कार्यों की गति भी अवरुद्ध हो गई। जलनिष्कासन प्रणाली व्यवहारत समाप्त प्राय: हो गई। भू-स्वामी तथा भूमि पर खेती करने वाले, दोनो ही अपने विपरीत छोरो की घटती हुई आय द्वारा समान हुए जा रहे थे। भूमि की दशा दयनीय हो गई थी, मजदूरो की सख्या कम हो गई थी, सुरक्षित खाद्यान्न की मात्रा कम हो चली थी, और रोटी तथा खाद के देयक भी काफी घट गये थे। सबसे अधिक हानि उन खाद्यान्न का उत्पादन करने वाले जिलो मे हुई जिनमे वृहद् स्तरीय भूखडो मे की जाने वाली खेती को सर्वाधिक सफलता प्राप्त हुई थी।" (अर्नले, इगलिश फार्मिंग, पृ० ३७९)।

निस्सन्देह हानि काफी हुई थी क्योंकि अग्रेजी कृषि प्रणाली मे जो विशेषत. खाद्य पदार्थों—खास कर गेहू तथा ससार की सर्वश्रेष्ठ भेडो के उत्पादन से सम्बन्धित थी,

काफी पू जी लगी हुई थी और इन वस्तुओ का उत्पादन इगलैड के कई भागो मे काफी महगा पडता था। भूमि पर अन्य वस्तुओ के उत्पादन की ओर कोई ध्यान नही दिया गया था। हॉप (एक प्रकार का फल) का उत्पादन बहुत ही सीमित भू-क्षेत्र मे विशेष रूप से केन्ट मे ही किया जाता था। लेकिन आलू की खेती कुल कृषि-क्षेत्र के केवल दो प्रतिशत भू-भाग मे ही की जाती थी। फलो अथवा सब्जियो के उत्पादन को लेकर भी पर्याप्त प्रयत्न नही किये गये थे।

किसान अथवा राज्य कोई भी यथेष्ट प्रयत्नो का परिचय नही दे रहे थे। केवल सन् १९१४-१९१८ के युद्ध के बाद ही राज्य ने व्यापक स्तर पर जगलो के पोषण की ओर ध्यान देना प्रारम्भ किया। जिन जमीदारो ने अठारहवी तथा प्रारम्भिक उन्नीसवी शताब्दी मे परिश्रमपूर्वक वृक्षारोपण किया था उनकी रुचि भी जगल के व्यापार मे समाप्त प्राय हो गई थी क्योकि सरकार को अब युद्ध-पोतो के निर्माण के लिये बलूत के बडे-बडे लट्ठो की आवश्यकता नही रही थी। इसके अतिरिक्त अनेक प्रकार की इमारती लकडी स्कैन्डीनेविया तथा उत्तरी अमरीका से ऐसे मूल्य पर प्राप्त होने लगी थी जिसने कि स्वदेशी उत्पादनकर्त्ता को हतोत्साहित ही अधिक किया। आधार-स्तम्भो तथा इमारती लकडी की आवश्यकता पूर्ति आयात द्वारा होती थी।

वाणिज्य मानको की अपेक्षा सौन्दर्यात्मक दृष्टि से देखने पर सन् १८८० मे इगलैड किसी भी अन्य देश की तुलना मे अपने इमारती वृक्षो पर गर्व कर सकता था। नये जगल (न्यू फॉरेस्ट) तथा डीन के जगल जैसे इक्के-दुक्के जगलो को छोडकर सभी जगल समाप्त हो चुके थे। फिर भी ऊचाई से देखने पर भूखड वृक्षविहीन बजर नही प्रतीत होता था। वृक्ष-झु ड या तो देहाती क्षेत्र मे सिलसिलेवार बाड की झाडियो से दिखाई देते थे या सुन्दरता के लिये रोपे गये उद्यान-वृक्षो की भाति दिखाई देते थे और या फिर आखेट स्थलो पर आच्छादित गाछो से प्रतीत होते थे। भू-सम्पत्ति के एजेन्ट लोग इमारती लकडी मे रुचि न होने के कारण बेकार के वृक्षो को हटाने, जगल की छटनी करने तथा उचित समय पर लकडी काट कर बेचने की ओर कोई ध्यान नही देते थे। देवदारु नस्ल के वृक्षो को अधिक उगाया जा रहा था और इसी प्रकार उस समय की रुचि के अनुसार एक सदाबाहर किस्म की झाडी को भी अधिक प्रश्रय दिया जा रहा था। द्वीप के अधिकाश भागो मे दोनो ही किस्मे विदेश से आई थी लेकिन उन जगली मुर्गों के पालन के लिये ये वृक्ष तथा झाडिया उपयुक्त स्थान प्रदान करते थे जिन्हे कि युवक किपलिग उस समृद्धि और शाति की मदहोशी के रूप मे घृणा करता था जो इगलैड मे सभी स्थानो पर व्याप्त थी और जो किसी भी दिन एक बडे विद्रोह को जन्म दे सकती थी।

कृषि की दशा इगलैड की राजकीय नीति की अदूरदर्शिता का ही परिचय देती थी। वे उन्ही आवश्यकताओ की पूर्ति करने तथा उन्ही समस्याओं को सुलझाने में

रुचि ले रहे थे जिन्हे लेकर कि पहले से ही दबाव महसूस किया जा रहा था। लेकिन इन सीमाओ मे वे पामरस्टोनी युग के अपने आत्मसतुष्ट पूवर्जो की अपेक्षा अधिक सक्रिय सुधारकर्त्ता थे उन्होने नागरिक सेवा, स्थानीय प्रशासन, शिक्षा, विश्वविद्यालय और एक सीमा तक सेना मे भी काफी सुधार किये थे।

इसका कारण यह था कि सन् पचास और साठ की दशाब्दियो की आत्मसतुष्टि और निश्चयात्मकता का भाव कुछ अशो तक समाप्त हो चुका था। विगत के उन भाग्यशाली दिनो मे अग्रेजो ने उन देशो के लिये उत्पादन कार्य किया था जो औद्योगिक यत्रो की दृष्टि से इगलैड से अब भी एक पीढी पीछे थे। जहा तक सैन्य शक्ति का प्रश्न है नेपोलियन तृतीय के शासनकाल की तुलना मे न तो वह अधिक दुर्धर्ष ही थी और न अधिक शत्रुभावयुक्त ही थी। सन् १८४८ जो कि यूरोपीय क्रान्ति तथा प्रतिक्रिया (कॉन्टीनेन्टल रिवोल्यूशन तथा रिएक्शन) का वर्ष था, मे मैकाले के देशवासी यह सोचने मे काफी सुख प्राप्त करते थे कि धन, स्वतन्त्रता तथा व्यवस्था की दृष्टि से हमारा देश अन्य किसी भी देश से आगे था और इस कारण कम सुखी देशो की ईर्ष्या का पात्र था। फ्रास और प्रश्या के बीच सन् १८७० मे हुआ युद्ध सर्वप्रथम घटी एक चोकाने वाली घटना थी। और आगामी तीस वर्षों के दौरान उत्पादन के क्षेत्र मे अमरीका और जर्मनी ने इतनी क्षमता का अर्जन कर लिया था कि वे हमसे प्रतिद्वन्द्विता करने लगे। अमरीका की अत्यधिक प्राकृतिक क्षमताओ ने तथा जर्मनी की दूर दृष्टि सम्पन्न सरकार द्वारा आयोजित वैज्ञानिक एव तकनीकी शिक्षा ने प्रत्येक वर्ष हमारी स्थिति को अधिकाधिक अशक्त ही किया। इस स्थिति का सामना करने के लिये हमारी स्वतन्त्रतावादी विचारधारा, स्वतत्र वाणिज्य (फ्री ट्रेड) तथा व्यक्तिवादी स्व-सेवा ही अकेले पर्याप्त नही थे। इसके प्रति आशिक चेतना ने तकनीकी शिक्षा मे कुछ सुधार अवश्य किया। और 'समुद्र पार की हमारी भूमि' मे निहित हमारे हितो को भी आगे बढाने के लिये इसने सन् नब्बे की दशाब्दी मे साम्राज्यवादी आन्दोलन का श्री गणेश किया, और साथ ही पामरस्टोनी युग के अन्त मे हुए अमरीकी गृह युद्ध के दौरान हमारे राजनैतिक वर्गों ने उस देश के प्रति जितना सम्मानजनक रवैया अपनाया था उसकी अपेक्षा इस बार अधिक मैत्री भाव इस जागरुकता के कारण प्रकट हुआ। इस नये युग का प्रजातात्रिक इगलैड अमरीका तथा तथाकथित 'उपनिवेशो' जैसे कैनेडा तथा आस्ट्रेलिया दोनो ही को, समझ पाने मे अधिक सक्षम था।

इस नवीन स्थिति ने जर्मनी मे भी हमारे उन हितो को काफी आगे बढाया जिन्हें कि सन् १८७० तक हमारे देशवासी भुलाते आ रहे थे। इसी वर्ष मैथ्यू आरनोल्ड की 'फ्रेडशिप्स गारलैंड' तथा जार्ज मेरेडिथ की 'हैरी रिचमन्ड' नामक कृतियो ने इगलैड को चेतावनी दी थी कि यूरोप के ट्यूटोनिक हृदय मे राष्ट्रीय शिक्षा तथा राष्ट्रीय अनुशासन एक ऐसी नवीन शक्ति को अवतरित कर रही है जो कि हमारे देशवासियो द्वारा सहज ही मे जीती गई, किन्तु अल्पसुरिक्षत तथा असमान रूप से वितरित सम्पत्ति को ईर्ष्या की दृष्टि से देखती

है। साथ ही रस्किन ने कला और प्रकृति के व्याख्याता के रूप मे जो प्रभाव तथा लोकप्रियता अर्जित की थी उसका उपयोग उसने अपनी नवअर्जित समाज की मसीहाई की भूमिका मे खुलकर किया और इस रूप मे उसने सौदर्य के विनाश मे प्रयुक्त हमारी सम्पत्ति के विरुद्ध तथा उसके असमान वितरण के विरुद्ध भी जिसके कारण कि धनिक तथा निर्धन दोनो ही वर्ग समान रूप से भ्रष्ट हो रहे थे, उसका खुलकर प्रयोग किया।

शताब्दी के अन्तिम वर्षों तक श्रमिक वर्ग मे किसी भी प्रकार का शक्तिशाली समाजवादी आन्दोलन आरम्भ नही हो सका था, लेकिन अहस्तक्षेप नीति (लैसे फेयर) के प्रति असन्तोष काफी पहले से बढता आ रहा था। जॉन स्टुअर्ट मिल की मृत्यु सन् १८७३ मे हो गई थी और नव्य-उदारतावादी दर्शन का आलेख वह अगली पीढी को सौप गया था जिसने उसके बाद के युग के आचार-विचार को काफ़ी प्रभावित किया। मिल की विचारधारा अर्ध समाजवादी विचारधारा थी। उसने प्रत्यक्ष करो, विशेष रूप से उत्तराधिकारो पर करो की माग कर, धन के अधिक औचित्यपूर्ण वितरण को प्रेरित किया था, प्रभावशाली राष्ट्रीय तथा स्थानीय अधिकारीतन्त्र के माध्यम से सामाजिक अधिनियमो को लागू करा कर जीवन की परिस्थितियो को श्रेष्ठतर बनाने की चेष्टा की थी, पुरुषो तथा स्त्रियो को न केवल ससद के लिये वरन् स्थानीय प्रजातान्त्रिक सगठनो के लिये भी मताधिकार की व्यवस्था का प्रबन्ध किया था। मिल के विचार मे प्रजातत्र तथा अधिकारीतन्त्र दोनो ही व्यवस्थाओ को साथ करना था, और मिल तथा उसके दर्शन का युग बीत जाने के बाद भी अधिकाशतः इसी दिशा मे आधुनिक इगलैंड की सामाजिक सरचना का निर्माण हुआ था।

लेकिन इगलैंड की कृषि के ह्रास तथा अन्य देशो पर उसके औद्योगिक क्षेत्र मे नेतृत्व की समाप्ति के बावजूद, और बावजूद इस चेतना के कि यद्यपि विक्टोरिया के शासनकाल की अन्तिम तीस वर्षीय अवस्था यद्यपि मे कुल मिलाकर सभी समुदायो की स्थिति अच्छी थी और ये वर्ष देश की आर्थिक समृद्धि के वर्ष थे उसकी नगरीय जीवन की परिस्थितियो मे तथा सामाजिक व्यवस्था मे सभी कुछ श्रेष्ठ नही था यह चेतना भी निरन्तर बढ रही थी। सन् १८८७ तथा १८९७ मे हुई महारानी की जयन्तियो को सभी वर्गों ने गर्व तथा कृतज्ञतापूर्वक मनाया था और इसका कारण अशत उन दुर्भिक्षपूर्ण स्थितियो से त्राण मिल पाना था जो महारानी के शासनकाल के प्रारम्भिक वर्षों मे व्याप्त थी और जिन्हे 'सन् चालीस की क्षुधित दशाब्दी' के रूप मे जाना जाता था। इस काल में लोग विनम्र थे, गलिया सुरक्षित थी, जीवन मानवीय था, स्वच्छता का तेजी से विकास हो रहा था और मजदूरो के मकान यद्यपि अब भी खराब दशा मे ही थे लेकिन पहले की अपेक्षा उनकी दशा निस्सन्देह अच्छी थी। काम की स्थितियो मे काफी सुधार हो गया था, पारिश्रमिक की राशि बढ़ गई थी, तथा काम के घटों मे कमी हो गई थी। लेकिन बेरोजगारी, बीमारी तथा वृद्धावस्था के विषय में राज्य

नियमित रूप से कुछ नही कर सका था और मजदूरो पर अब भी इनका आतक व्याप्त था।

पील तथा ग्लैडस्टन द्वारा प्रचारित स्वतन्त्र वाणिज्य वित्त (फ्री ट्रेड फाइनेन्स) द्वारा अप्रत्यक्ष करो की राशि मे कमी हो जाने के कारण गरीबो के सिर से करो का भार काफी कम हो गया था। फिर भी सन् अस्सी की दशाब्दी मे आयकर की राशि मे दो पैस प्रति पाउण्ड से लेकर मात्र छ पैस अर्ध पैनी का अन्तर था। अतिरिक्त कर को सम्मिलित न करने पर, अब, अर्थात् सन् १६४१ मे, यह राशि दस शिलिंग है।

मुक्त-व्यापार (फ्री ट्रेड) को गरीबो को भार मुक्त करने के अतिरिक्त समुद्र पारीय देशो से होने वाले व्यापार तथा हमारी जहाजरानी के विकास का भी श्रेय था। यहा तक कि हमारे तटीय व्यापार के द्वार भी, सभी देशो के जहाजो के लिये उन्मुक्त कर दिये गये थे लेकिन स्वच्छन्द प्रतिस्पर्धा के कारण विदेशी व्यापारी उसके एक प्रतिशत का भी मात्र अर्धाश प्राप्त कर सका था और सन् अस्सी की दशाब्दी मे इस तटीय व्यापार का आकार, जिसमे देश मे काम आने वाले कोयले का विशाल परिणाम भी सम्मिलित था, हमारे सम्पूर्ण समुद्रपारीय वाणिज्य की तुलना मे कही अधिक विशाल था। फिर भी ससार के विभिन्न सागरो को इगलैंड के प्रमुख मार्गों के रूप मे ही देखना होगा। सन् १८८५ मे ससार के एक-तिहाई समुद्री जहाजो—जिनमे वाष्पचालित जहाज भी सम्मिलित थे—का लेखा-जोखा ब्रिटिश रजिस्टर मे मौजूद था। पालो तथा चप्पुओ से चलने वाले जहाजो की सख्या मे कमी होती जा रही थी लेकिन तेज चाल वाले 'क्लिपर्स' जहाज बढ रहे थे, सन् १८८५ मे समुद्र मे चल रहे हमारे चप्पू वाले जहाजो का कुल वजन अब भी उतना ही था जितना कि सन् १८५० मे था, लेकिन वाष्पचालित जहाजो का वजन तुलनात्मक दृष्टि से चालीस लाख टन अधिक था।

यद्यपि लकाशायर की कपास के व्यापार से प्रमुखतया सम्बद्ध लिवरपूल का बन्दरगाह लन्दन की अपेक्षा अधिक वस्तुओ का निर्यात करता था किन्तु लन्दन के बन्दरगाह से सम्बद्ध जहाजो का कुल वजन मर्सी के जहाजो की अपेक्षा साठ प्रतिशत अधिक था। विशाल टेम्स तथा मर्सी के बन्दरगाहो का निर्माण सन् अस्सी के दशक मे पूर्ण हो चुका था। रेल व्यवस्था के कारण समुद्रपारीय वाणिज्य की वृद्धि मे काफी सहायता मिली थी लेकिन अठारहवी शताब्दी मे प्रारम्भ की गई बन्दरगाहो की सख्या मे कमी होने की प्रक्रिया मे इससे एक कडी और जुडी और उनकी सख्या मे और अधिक कमी हो गई। ह्विटबाई, लकास्टर, आइर तथा अन्य कई छोटे बन्दरगाहो की दशा अब फौवे, चेस्टर तथा किंक जैसे बन्दरगाहो की भाति हो गई थी। लेकिन उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध में बारो बन्दरगाह रेल मार्गों की बदौलत सामान्य स्थिति से एक विशाल बन्दरगाह हो गया और ग्रिम्सबाई भी लगभग क्षुद्र स्थिति से विशालता

की सीमा का स्पर्श करने लगा था। एक बडी अन्धकारपूर्ण अवधि के बाद साउथेम्प्टन का भी पुनरुत्थान हो गया था और इसका कारण यह था कि यह नगर अब पी तथा ओ के पूर्व की ओर जाने वाले मार्ग का प्रमुख केन्द्र (हैडक्वार्टर्स) हो गया था। यद्यपि टेनीसाइड आर्म्सस्ट्रोग एल्सविक के गौरवपूर्ण दिनो मे स्वय अपनी पूरी शक्ति के साथ बढ रहा था, कार्डिफ की जनसख्या भी तिगुनी हो गई थी और उसने न्यूकासल के ससार के सबसे अधिक कोयला निर्यात करने वाले केन्द्र होने के दावे को भग कर दिया था। औद्योगिक पुनर्निर्माण तथा वाणिज्य की पुन प्रगति के लिये रेल मार्गों ने इतना योगदान किया था। लेकिन वास्तव मे स्थिति यह नही थी कि 'रेलो' ने टेनीसाइड का निर्माण किया, बल्कि यह थी कि टेनीसाइड ने उन्हे बनाया था।' (क्लैपहम, II, ५१९-५२९)।

स्वतन्त्र व्यापार (फ्री ट्रेड) की ऐसी समृद्धिपूर्ण स्थितियो के बीच बहुत सी ऐसी उपभोग की वस्तुए, जिन्हे सन् १८३७ मे विलास-सामग्री के रूप मे देखा जाता था, सन् १८९७ मे आम आराम की वस्तुओ की कोटि मे आ गई थी। भोजन, कपडा, बिस्तर, फर्नीचर पिछले किसी भी युग की अपेक्षा आज अधिक प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध थे। गैस तथा तेल के स्थान पर बिजली का प्रयोग होने लगा था। छुट्टी के दिनो मे समुद्र तट पर घूमना निम्न मध्यवर्ग के ही नही वरन् श्रमिक वर्ग के एक विशाल भाग के लिये भी, विशेष रूप से उत्तरी क्षेत्र मे, नियमित जीवन का एक भाग बन गया था। सन् १८७६ मे ब्लैकपूल पहले ही लकाशायर के कारीगर के लिये वार्षिक छुट्टी बिताने के लिये बोरो (नगर) के आकार तथा स्थिति का हो गया था और साथ ही वह लैन्ड्युडनो तथा 'आइल ऑफ मैन' को भी सहयोग देता था। दूरी पर स्थित कॉर्नवाल पर छुट्टी बिताने के लिये ईस्टर के दिनो मे सम्पन्न लोग तथा अगस्त मे साधारण लोग पहले से ही जाते रहे थे। गर्मियो मे केस्विक तथा विन्डर-मियर के आवास-गृह तथा लेक-डिस्ट्रिक्ट के खेत घुमक्कड परिवार दलो से भर जाते थे।

रेलो के प्रारम्भ होने के पूर्व वाले युग मे भी लन्डन निवासी ब्राइटन के घाटो पर झुड बना कर घूमने आया करते थे और मार्गेट की बालू पर चहल कदमी किया करते थे। अब इगलैंड तथा वेल्स का समूचा तट 'घुमक्कडो' तथा वहा आकर ठहरने वालो के लिये खुला था। दूर के नदी नालो तथा मछली पकडने के स्थानो मे, जहा कि नगर से आकर परिवार ठहरते थे तथा बच्चे तथा बडे जहा स्नान करते और चट्टानो पर ज्वार मे बह कर आए सीप शक चुनते थे; यहा नगरवासी तथा ग्रामीण जीवन के बीच की दूरी किसी अश तक कम हो जाती थी।

लेकिन जहा विभिन्न मौसमो मे घर से बाहर आकर छुट्टी बिताने की बात काफी आम हो गई थी वही प्रत्येक सप्ताह के अन्त मे नगर से बाहर समय बिताने की अभी

केवल शुरुआत ही थी। जिन लोगो के पास बडे देहाती मकान थे वे अपने मेहमानो सहित वहा जाकर रहते थे लेकिन मध्यवर्गीय परिवार के लिये देहाती क्षेत्रो मे छुट्टी बिताने के लिये अलग से आवास-गृह यदाकदा ही उपलब्ध होते थे। परिवार के रोज चर्च जाने तथा व्यापार मे उलझे होने के कारण लोगो को सप्ताह मे सभी दिन शहर मे ही रहना होता था।

स्त्रिया अधिक खेल प्रेमी तथा अच्छी पद यात्री होती जा रही थी और इसका कारण यह भी था कि उनकी स्कर्ट्स कुछ छोटी तथा किफायती होती जा रही थी, घाघरो तथा लबी पोशाको के अदृश्य हो जाने के बाद सन् अस्सी के दशक मे क्रोकिट (गेद से खेला जाने वाला एक प्रकार का खेल) के स्थान पर भद्र पुरुष तथा स्त्रिया लॉन-टेनिस खेलने लगे थे। सन् नब्बे के दशक मे जैसे ही ऊची बाइसिकिल के स्थान पर दो छोटे पहियो वाली साइकिल का आगमन हुआ उसका भी काफी प्रचलन हो गया, इससे भी स्त्रियो के उत्थान मे काफी सहायता मिली—वे साइकिल पर सवार होकर अकेले अथवा किसी पुरुष के साथ देहातो मे भ्रमण करने लगी। मोटर कार तथा मोटर बाइसिकिल का आम प्रयोग विक्टोरिया की मृत्यु के समय तक भविष्य के ही गर्भ मे था।

जिस समय नगरवासी पैदल ही अथवा बाइसिकिल पर अपनी ही भूमि पर भ्रमण तथा खोज कर रहे थे, अन्य लोग फ्रास, स्विटजरलैंड तथा इटली मे पहले की अपेक्षा कही अधिक सख्या मे जाने लगे थे, वे पश्चिमी यूरोप, भूमध्यसागर तथा मिश्र के सर्वोत्कृष्ट होटलो के मुख्य आश्रयदाता थे। और टॉमस कुक की 'यात्राए अनेक खर्चीले लोगो तथा मितव्ययियो को यूरोप भ्रमण का आनन्द देती थी। सन् साठ तथा सत्तर के दशको मे—लैली स्टीफेन्सन, ह्विम्पर तथा प्रोफेसर टिन्डाल के काल मे अग्रेज स्विस मार्ग-दर्शको (स्विस गाइड्स) के साथ, जिन्हे कि वे पारिश्रमिक देते थे, बर्फीले तथा चट्टानी पहाडो पर अभियान किया करते थे और इस प्रकार उन्होने आल्प्स की अनेक चोटियो पर विजय प्राप्त करली थी। शताब्दी के अन्तिम दशक मे वेल्स तथा लेक डिस्ट्रिक्ट मे चट्टानो पर चढाई करना स्वदेश मे ही रह कर एक बुद्धि-कौशल प्रधान अवकाश व्यतीत करने जैसा कार्य हो गया था।

जॉन बुचन ने अपने सस्मरणो मे अपनी युवावस्था के समय के लन्डन के समाज का विवरण देते हुए दक्षिणी अफीका के सन् १८९९ के युद्ध का उल्लेख किया है

'शताब्दी के इस मोड पर लन्डन अपनी जॉर्जियन प्रकृति से मुक्त नही हो पाया था महारानी विक्टोरिया के निधन के समय तक शासक वर्ग प्रकृति से अभिजाततत्रीय था और अभिजातवर्गीय आचार-व्यवहारो का पोषण करता था। इस वर्ग के विशाल प्रासाद अब भी उसी प्रकार स्थित थे—आधुनिक प्रकार के सुन्दर आवास-स्थलो (फ्लैट्स) मे उनका रूपान्तरण अब भी नही हो सका था। ग्रीष्म मे यह नगर आनन्दोत्सवो का एक केन्द्र बन जाता था, प्रत्येक गवाक्ष फूलो से सज जाता, मार्ग नाना

प्रकार की सजावट-सामग्रियो से सज जाते तथा पार्क सुन्दर नर-नारियो तथा घोडो के प्रदर्शन स्थल बन जाते थे। आनुष्ठानिकता तथा औपचारिकता पीछे छूट गई थी, फ्रॉककोट तथा टोप केवल वेस्ट-एन्ड मे ही पहनने की वस्तु नही रह गये थे बल्कि न्यायालयो तथा नगर मे भी पहने जाने लगे थे। रविवार के दिन दोपहर बाद लोगो के घर जाकर भेट करना एक नियमित दिनचर्या हो गई थी। वार्तालाप आज जिस प्रकार एक आकस्मिकता बन गया है उस प्रकार वह विगत दिनो मे नही था, उन दिनो वार्तालाप एक कला समझी जाती थी जिसमे कुशलता प्राप्त व्यक्ति को सम्मान मिलता था। क्लब भी लोगो को काफी आकर्षित कर रहे थे, उनमे सदस्यता प्राप्त करने वाले अभ्यार्थियो की सूची काफी लम्बी थी, और जिन उपयुक्त लोगो को उनकी सदस्यता प्राप्त हो जाती थी वे इसे अपने लिये एक उपलब्धि समझते थे • • भूत की ओर देखने पर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वह युग अविश्वसनीय रूप से एक सुरक्षित तथा आत्म-सन्तुष्टि प्रधान युग था। जहा तक मुझे स्मरण है उस समय लोग सुसस्कारित थे, जिनमे असभ्यता का लेष मात्र भी कोई अश नही था और न वे इस नवीन शताब्दी के आविर्भाव के बाद जिस प्रकार लोग धन-पिपासु हो गये है उस प्रकार धन-उपासक थे।' (मेमोरी होल्ड दि डोअर, पृ० ६२-६४)।

फिर भी यह 'समाज मिश्रित होता जा रहा था' और डु मॉरियर के 'पच' के चित्रो मे सर जॉजियस मिडास की भाति ऐसे लोग जिनके पास धन के अतिरिक्त और अपना कुछ न था महारानी की मृत्यु के पूर्व लन्डन की चित्रशालाओ मे लगभग बीस वर्षो तक प्रमुखता प्राप्त करते रहे थे। पुराने तथा अधिक निश्चित अर्थ मे 'समाज' पामरस्टोन के युग मे भी एक सीमित वर्ग तक ही केन्द्रित था, जिसमे केवल ह्विग तथा टोरी कुलीन महिलाओ की इच्छा से ही प्रवेश सम्भव था। लेकिन सन् अस्सी की दशाब्दी मे 'समाज' का अर्थ कुछ अनिश्चित सा हो गया था जिसमे सम्भवत उच्च तथा व्यावसायिक वर्ग भी सम्मिलित थे, हाइड पार्क मे होने वाले प्रदर्शन मे बार-बार इधर-उधर घूमकर चक्कर लगाने वाले अथवा लन्डन के भोज-आयोजनों मे बतियाने वाले सुन्दर पोषाक धारी स्त्री-पुरुष भी सम्मिलित थे। फिर भी, जैसा कि जान बुचन ने सत्य ही देखा है, ये लोग कम से कम राजधानी मे शताब्दी के अन्त तक तो एक अभिजातवर्गीय परम्परा और तौर-तरीको को अपनाए ही हुए थे। वे प्रान्तों के सुसम्पन्न बुर्जुआ लोगो से भिन्न थे, जो यार्कशायर तथा लकाशायर मे औपचारिक भोजो के स्थान पर 'स्तरीय चाय पार्टियो,' को अधिक पसन्द करते थे।

सन् सत्तर तथा अस्सी के दशको मे व्यावसायिक तथा व्यापारिक वर्गों मे और साथ ही श्रमिक वर्गों के परिवारो का आकार काफी बडा था, और बच्चों की मृत्यु सख्या कम हो जाने के कारण जनसख्या भी काफी बढती जा रही थी। नगर की स्वच्छता में वृद्धि होने के कारण तथा चिकित्सा विज्ञान के ज्ञान तथा उपचार मे निरन्तर प्रगति होते रहने के कारण मृत्यु सख्या मे काफी कमी हो गई थी। सन् १८८६ मे मृत्यु सख्या से

जन्म-दर इगलैड मे जहा १३ ३ अधिक थी जर्मनी मे उस समय १० ८ थी और फ्रास मे यह सख्या १ ४ थी।

सन् १८७० के बाद श्रमिक वर्ग के परिवारो के माता-पिताओ को सभी जगह प्राथमिक शिक्षा की सुविधाए प्राप्त थी, लेकिन स्कूल के समय के अतिरिक्त गरीबो के बच्चे अब भी सडको पर आवारा घूमते रहते थे। मध्यवर्गीय परिवारो के लिये यह युग काठ के घोडो पर चढने तथा कागज की नौकाए बहाने का युग था शिशु शालाए तथा स्कूलो के कमरे सजीवता तथा ऐसी चहल-पहल का अहसास कराते थे जहा बच्चो मे चरित्र अकुरित होता है और यह तब तक चलता रहता था जब तक कि सभी भाई बोर्डिंग स्कूल मे नही चले जाते और अपनी बहिनो के लिये छुट्टी के दिनो को छोड कर प्रसन्नता अथवा क्षोभ का और अधिक कारण नही बनते थे। अध्यापिकाए, आयाए, परिचारिकाए तथा रसोइये अब भी काफी सख्या मे नियुक्त थे और वेतन आदि विषयक उनकी मागे भी अधिक नही थी। उनमे से कई तो घर के सदस्यो की ही भाति ही रहते थे, अन्य आते-जाते रहते थे और उन्हे याद भी यदा-कदा ही किया जाता था। इनकी सेवाए काफी श्रमसाध्य तथा अपरिहार्य होती थी, क्योकि ऊचे तथा सकडे मध्यवर्गीय मकानो मे श्रम की कुछ बचत की जा सके ऐसी किसी वस्तु का वहा प्रबन्ध नही था, अनेको परिचारिकाए टबो मे भरने के लिये गर्म पानी के बर्तन लिये सीढियो पर लडखडाती हुई नजर आती थी, और प्रत्येक कमरे मे कोयला पहुँचाने का काम करती थी जिसका धुआ लन्डन के कुहासे को और अधिक घना बनाता रहता था।

सन् नब्बे के दशक मे ही यह स्पष्ट हो पाया था कि परिवारो के आकार छोटे होने लगे है, सर्वप्रथम यह परिवर्तन उन व्यावसायिक वर्गों तथा मध्यवर्ग मे घटित हुआ था जिन्हे 'पब्लिक स्कूलो' मे एक भारी शुल्क अदा करना पडता था और उन सम्पन्न शिल्पियो के वर्ग मे भी घटित हो रहा था जिन्हे अपने जीवन-स्तर को उच्चस्तरीय बनाये रखने के लिये सघर्ष करना पड रहा था। सन् १८७७ मे ब्रॉडलॉफ तथा श्रीमती बेसेन्ट ने नव्य-माल्थसवादी परिपत्र के प्रकाशन के बाद सर्वप्रथम राष्ट्रीय स्तर पर परिवार-नियोजन की विधियो का विज्ञापन किया गया था। लेकिन जो गन्दी बस्तियो मे रहने वाले लोग इन सुधारको का लक्ष्य थे उन्होने उनके सुझाव पर सबसे कम ध्यान दिया था। जो परिवार बच्चो का वाछित प्रकार से लालन-पालन कर सकने मे सर्वाधिक समर्थ थे, दुर्भाग्य से वे, वे परिवार थे जो आगामी शताब्दी मे 'प्रजातीय-आत्म-हत्या' मे रत हो गये थे।

सन् सत्तर तथा अस्सी की दशाब्दिया केवल बडे परिवारो का ही युग नही थी बल्कि नैतिक तथा यौन सम्बन्धी विचारो के क्षेत्र मे विशुद्धतावादी दशाब्दिया थी जिनमे मानवीय प्रकृति की दुर्बलताएं नित्य-प्रति व्यवहृत होती रहती थी। महारानी विक्टोरिया का न्यायालय कठोर नियमों का ही पक्षपाती था। अधिकाश ब्रिटिश

व्यापारियो का वास्तव मे ईमानदार होना हमारी व्यापारिक समृद्धि का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कारण था। इस युग के लोकप्रिय नायक, जिनमे नायकत्व के निस्सन्देह सभी गुण विद्यमान थे —सर्वप्रथम तथा सर्वाधिक धार्मिक व्यक्ति थे अफ्रीका की खोज करने वाले तथा धर्मावलम्बी लिविगस्टन, सेवाधर्मी-सैनिक जनरल गार्डन लार्ड शैफ्ट्सबरी तथा ग्लैडस्टन —इन सभी व्यक्तियो के लिये, जो परस्पर काफी भिन्न थे, जीवन का अर्थ केवल ईश्वरीय सेवा मे निरत होता था।

लेकिन इन पुराने तथा रूढ धार्मिक विश्वासो पर, जो इन लोगो की दृष्टि मे इतने अर्थपूर्ण थे, उस काल के 'नास्तिवादी' सफलतापूर्वक आक्रमण कर रहे थे। लेकिन दृष्टिकोण तथा भावनाओ की दृष्टि से ये 'नास्तिवादी' भी 'विशुद्धतावादी' (प्यूरिटन) ही थे। 'सस्कृति' के भविष्यद्रष्टा मैथ्यू आरनाल्ड ने 'चरित्र' को जीवन के तीन भागो' की दृष्टि से देखा था लेकिन 'चरित्र' की अवधारणा उनके निकट सकीर्णता अथवा विशुद्ध नकारात्मकता की अवधारणा नही थी। जार्ज इलियट के उपन्यासो को जो ख्याति प्राप्त हुई थी उसका श्रेय अधिकाश इसी तथ्य को है कि अनेको लोगो ने उन्हे 'बुद्धिवादी नास्तिक चेतना को स्वीकार्य, आत्मोन्नति की प्रक्रिया तथा नैतिक मूल्यो की पुर्नव्याख्या' के कारण ही मान्यता प्रदान की थी। 'सार्टर' मे कार्लाइल के मत्र-वाक्यो ने अनेको लोगो को एक अस्पष्ट किन्तु प्रभावशाली चिन्तन प्रदान किया था, जिनमे डार्विनवाद के प्रबल समर्थक वे हक्सले भी सम्मिलित थे जिन्होने कि 'ल्यूथर एट वर्क्स' की भाति आक्सफोर्ड मे ब्रिटिश एसोसिएशन की प्रसिद्ध बैठक मे पादरी-विचारो का स्पष्ट उल्लघन कर दिया था। लेस्ली स्टीफेन तथा जान-मॉरले द्वारा असत्य अन्धविश्वासो से समझौता कर लिये जाने से इनकार कर देना भी सत्रहवी शताब्दी के विशुद्धतावाद की कट्टरता से युक्त था। लेस्ली स्टीफेन एक समय पादरी रह चुके थे और इसी प्रकार लोकप्रिय उदारतावादी इतिहासकार जे आर ग्रीन भी पादरी थे। साहित्य तथा चिन्तन के क्षेत्र मे यह युग धर्म से पृथक् एक अर्द्ध-धार्मिक आन्दोलन का युग था।

इसकी बहुपक्षी जिज्ञासा तथा सामर्थ्य, इसके आत्मविश्वास तथा तत्परता इन सभी दृष्टियो से उत्तर मध्य विक्टोरिया कालीन सस्कृति यूनानी (ग्रीक) थी। बौद्धिक अभियानो तथा नैतिक अनुदारतावाद की ओर इसके झुकाव इसे वास्तव मे एथेनियन प्रकृति के निकट ले आता है। समकालीन लोगो द्वारा टेनीसन की निम्न पक्तियो के अतिरिक्त कोई और पक्ति भी इतनी अधिक उद्धृत हुई है इसमे मुझे सन्देह है :

ज्ञान निरन्तर अधिक से अधिकतर होता जाय, किन्तु उससे भी अधिक रहे हममें ईश्वराराधन और मन और आत्मा रहे समस्वर तथा सदा की भाति एक ही तान दोनो से निकले, किन्तु यह अधिक से अधिक व्यापकतर हो।

विक्टोरिया कालीन केन्द्रीय स्थायित्व के विस्तार के आदर्श को इतनी पूर्णता से और कोई शब्द अभिव्यक्त नही कर सकते। लेकिन क्या कोई इस बात का दावा कर सकता है कि ये पक्तिया सोफोक्लीज का अनुवाद नही है?" (डेलाइट एड शैम्पेन, पृ० २६४, जी एम यग)।

जीवन तथा चरित्र के प्रति विशुद्धतावादी दृष्टिकोण के विकास मे विक्टोरिया कालीन बाइबिल धर्म ही मात्र एक कारण नही था बल्कि एग्लो-कैथोलिक धर्म, जिसका उद्भव सन् तीस के दशक मे चलाये गये ऑक्सफोर्ड आन्दोलन से हुआ था और अब उसका प्रसार भी काफी हो रहा था, भी एक कारण था और ग्लैडस्टन तथा सैलिसबरी जैसे लोग भी उसका प्रतिनिधित्व कर रहे थे। लेकिन जिला (पैरिश) पादरी वर्ग मे एग्लो-कैथोलीसिज्म सर्वाधिक शक्तिशाली था। इन पादरियो मे से कइयो को इस मत ने, तीव्रता से समाप्त होते हुए उन सामाजिक स्तरो पर जिन पर कभी 'एस्टेब्लिशमेन्ट के पादरी, प्रतिष्ठित थे स्वय को प्रतिष्ठित करने के लिये एक इच्छा तथा आत्माभिमान प्रदान किया था। सामान्य मानवीय स्वभाव की अभिव्यक्ति पर एग्लो-कैथोलिक प्रभाव ने अधिक नियम न लाद कर सुविधाए प्रदान कर दी थी जिसमे 'सैबाथ' के अनिवार्य पालन का इतना आवश्यक न होना भी सम्मिलित था। यह कार्य एवागेलिकल सम्प्रदाय नही कर सका था। 'इगलिश रविवार' के पालन मे होने वाले मन्द परिवर्तनो के अच्छे तथा बुरे दोनो ही प्रकार के प्रभाव पडे थे। भूत की अट्टरताओ अथवा कठोरताओ तथा वर्तमान के स्वच्छन्द आचरणो के बीच की इस सक्रान्त अवस्था मे कई परिवारो की इस क्रिया मे कि वे अब भी यदि धार्मिक ग्रन्थो का पठन नही तो कम से कम अपना 'रविवारीय अध्ययन' अवश्य जारी रखे हुए थे, एक अच्छाई ही थी। सप्ताह मे एक दिन, उपन्यासो तथा पत्रिकाओ को एक ओर रख कर अधिक स्थूल अथवा धर्मनिरपक्ष काव्य तथा इतिहास के साथ बाइबिल, पिलग्रिम्स प्रोग्रेस तथा पैराडाइस लॉस्ट जैसे गम्भीर साहित्य का भी अध्ययन किया जाता था।

केवल कुछ परिवर्तित रूप मे रविवारीय अनुष्ठानो का ही पालन नही बल्कि शताब्दी के अन्त तक बाइबिल का पाठ तथा पारिवारिक प्रार्थनाए भी नियमित रूप से प्रचलित थी। अग्रेजी जीवन पर पडे चार्ल्स साइमिओन के प्रभाव से सम्बन्धित अपने अध्ययन मे कैनन स्मिथ ने लिखा है

"घर मे एवागेलिकल धर्म का पालन किया जाता था, और पारिवारिक पूजा के इस पुनरअभ्युदय मे एक महत्वपूर्ण विजय प्राप्त की थी। हा यह ठीक है कि यह पुनरुत्थान एक प्रकार से उच्च तथा मध्य वर्गों, विशेष रूप से मध्यवर्ग तक ही, सीमित था, लेकिन इन सीमाओ के अन्तर्गत ही इसका इतना अधिक प्रसार हुआ था कि सन् १८८९ मे किंग्ज (कैम्ब्रिज) के प्रधानाचार्य ने उस कॉलेज के स्नातक-पूर्व कक्षाओ के विद्यार्थियो को सम्बोधित उपासना गृह में उनकी ऐच्छिक उपस्थिति के विषय मे अपने

सूचना-पत्र मे यह लिखा था कि 'आप मे से अनेक ऐसे परिवारो से यहा आए हे जहा प्रार्थना करने की प्रथा रही है' आज प्रार्थना की वह प्रथा विलीन हो चुकी है यह केवल इस कारण ही नही हुआ कि विक्टोरियन करुणा का अन्त हो गया है बल्कि इसलिए भी हुआ है कि विक्टोरिया परिवार भी समाप्त हो चुका है।' (साइमिओन एड चर्च ऑर्डर, चार्ल्स स्मिथ, १९४०, पृ० १९-२०)।

उन्नीसवी शताब्दी के मध्य मे इगलिश धर्म का गठन आदेशात्मक प्रकार का था, लेकिन उसके मूल मे ही स्थित कुछ दुर्बलताए भी थी जिन्हे वैज्ञानिक आविष्कारो के आन्दोलन ने काफी झकझोरा समायोजन विरोधियो (नॉन-कनफर्मिस्ट्स), एवागे-लिकलो और कुछ कम अशो मे प्रतिष्ठित पादरियो, जैसे बिशप सैमुअल विल्बरफोर्स तथा मि ग्लैडस्टन—इन सभी के लिये बाइबिल प्रेरणा स्रोत थी। चार्ल्स डार्विन वॉल्तेयर के उतना ही विपरीत था जितना कोई भी मनुष्य हो सकता था, मूर्ति-भजक बनने की उसकी कोई अभिलाषा नही थी, चर्च को वह 'घृणित स्थान' नही समझता था, और उसकी मृत्यु के पश्चात् उसे ससम्मान दफन भी वेस्टमिनस्टर एबे मे ही किया गया। लेकिन उसकी वैज्ञानिक शोध ने उसे जिन निष्कर्षों तक पहुँचाया था वे जेनेसिस के प्रारम्भिक अध्यायो से, जो अग्रेजी बाइबिल के भी उतने ही अश थे जितने कि न्यू टेस्टामेन्ट के थे, सगति स्थापित न कर सके थे। सामान्य रूप से विकासवादी विचार तथा 'मनुष्य बन्दर की सन्तान है' यह धारणा मनुष्य के उद्भव तथा ब्रह्माण्ड मे उसकी केन्द्रीय स्थिति विषयक धार्मिक स्थापनाओ के प्रतिकूल था।

अत धर्म-जगत् का सनातन स्थिति तथा अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिये, खड्ग-गहस्त हो जाना स्वाभाविक था। वैज्ञानिक लोगो की नई पीढी का अपने सम्मानित नेता की रक्षा के लिये उठ खडे होना और अपने इस अधिकार का प्रतिपादन करना कि चर्च की प्राचीन परम्पराओ से तथा सृष्टि की उत्पत्ति और विकास के बाइबल-सिद्धान्त से, के आग्रहो से मुक्त होकर अपने अनुसन्धानो द्वारा दर्शाए परिणामो को ही स्वीकार करने मे उनकी आस्था है, भी स्वाभाविक था। यह सघर्ष सन् साठ-सत्तर तथा अस्सी की दशाब्दियो मे निरन्तर चलता रहा। यह सघर्ष न्यू टेस्टामेन्ट सहित सभी प्रकार के चमत्कारो मे निहित विश्वासो के विरुद्ध था। बुद्धिजीवी इस सघर्ष के कारण अधिकाधिक पादरी-विरोधी, धर्म-विरोधी तथा भौतिकतावादी होते जा रहे थे।

इस परिवर्तन तथा सघर्ष के युग में व्यक्तिगत तथा पारिवारिक अशान्ति जन्म लेने लगी थी, शिक्षित पुरुषो तथा स्त्रियो का ससार एक ऐसे वास्तविक विवाद का विषय बन गया था जिसे कि अग्रेजो का स्वभावगत स्नेहिल समझौतावाद भी शान्त नही कर सका था।[1] बीसवी शताब्दी मे यह तूफान गुजर चुका है, पुराना संघर्ष

---

[1] टेनीसन की बौद्धिक विचक्षणता जो किंग आर्थरस् नाइट्स के ईश-गान से पूर्व उसकी

समाप्त हो चुका हे और उसमे खेत रहे पक्ष को दफना दिया गया है। आस्था एव अस्वीकार्य दोनो ही की अपनी पृथक् स्थिति है। सन् सत्तर की शताब्दी के वैज्ञानिक के भौतिकवाद को उतनी ही अमान्यता प्राप्त है जितना कि बाइबिल मे लिखित शाब्दिक सत्य अमान्य है। दोनो ही पक्ष यह स्वीकार करते है कि विश्व के सम्बन्ध मे सम्पूर्ण सत्य की खोज न तो प्रयोगशाला मे ही कर पाना सम्भव है और न चर्च मे ही यह प्राप्त हो सकता है। लेकिन इसकी प्राप्ति कहा हो सकती है यह निश्चय कर पाना अत्यन्त कठिन है।

उन्नीसवी शताब्दी के अन्तिम वर्षों मे एग्लिकन तथा प्रोटेस्टेन्ट चर्चो के अन्तर्गत कट्टरपथी विश्वासो के दोलायमान हो जाने से उन लोगो के मध्य, जो किसी शकाजन्य स्थिति मे स्वय को नही रखना चाहते थे, रोमन चर्च के आस्थावान तथा सम्पूर्ण ज्ञान के दावे को प्रचारित होने मे काफी सहायता मिली। निम्न वर्गो मे बाहर से आने वाले आयरिश लोगो, फैशनेबल तथा बुद्धिवादी उच्चवर्गों से मत परिवर्तन कर आने वाले लोगो तथा रोमन कैथोलिक लोगो मे बढती हुई जन्म-सख्या के कारण रोमन-सहधर्मचारिता (रोमन कम्यूनिअन) को, विक्टोरिया के शासन युग के अन्तिम समय मे पहले की अपेक्षा कही अधिक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो गया था।

उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध मे पुरातत्वशास्त्र तथा इतिहास की तीव्र प्रगति हो रही थी और उनके अन्वेषणो से अन्धविश्वासो के विरुद्ध लगे विज्ञान के मोर्चे को काफी बल प्राप्त हुआ था। लेकी की हिस्ट्री ऑफ रेशनलिज्म (१८६५) तथा हिस्ट्री ऑफ सिविलिजेशन (१८७५) मे व्यक्त बकल का अतिविश्वासी भौतिकवाद वस्तुत उसी तीव्र प्रवाह के अग थे जिसमे कि लोग अपने पुरातन विश्वासो से छूटे चले जा रहे थे। बौद्धिक जगत् मे प्रतिष्ठित एक 'उदारतावादी' शैक्षणिक दल को, आक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयो को चर्च के एक छत्र अधिकार से मुक्त कराने के लिये काफी सघर्ष करना पडा था और सन् १८७१ का टेस्ट अधिनियम बनवाकर इस सघर्ष मे उसने विजय भी प्राप्त कर ली थी। लन्दन तथा मैनचेस्टर के नये विश्वविद्यालय इस स्वाधीनता का अपने जन्म-सिद्ध अधिकार के रूप मे काफी समय तक उपभोग कर चुके थे।[२]

प्रारम्भिक युवावस्था मे रची गई कविताओ मे व्यक्त हुई थी उस पर लोग व्यर्थ ही आघात करते है। उसकी इन मेमोरियन नामक कृति मे जो सन् चालीस के वर्षों मे लिखी गई थी और सन् १८५० मे डार्विन की 'ओरिजिन ऑफ स्पेसीज' नाम ग्रन्थ के नौ वर्ष पूर्व, प्रकाशित हुई थी। इसमे आस्था एव विज्ञान के बीच छिडने वाले उस सघर्ष की, जिसने आगामी युग को झकझोर डाला था, पूर्वकल्पना कर डाली थी।

२ बहुत से प्रादेशिक विश्वविद्यालयों की स्थापना इनके भी बाद मे, बीसवी शताब्दी

दो पुराने विश्वविद्यालय नयो के साथ इतने घुल मिल गये थे कि महारानी के शासनकाल की समाप्ति के पूर्व आक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज के कर्मचारी पादरियो की अपेक्षा सामान्यजन अधिक थे और उन्हे सदस्यता (फैलोशिप) बनाए रखने हुए भी अब विवाह की अनुमति भी दे दी गई थी। शैक्षणिक अध्ययन के अन्तर्गत भौतिक विज्ञान तथा मध्ययुगीन इतिहास व आधुनिक इतिहास का अध्ययन भी उसी तीव्रता के साथ किया जाने लगा था जिस प्रकार कि पुरातन मानवतावाद तथा गणित का अध्ययन किया जाता था। शताब्दी के अन्तिम दशको मे कैम्ब्रिज का प्रतिनिधित्व ससार के महान् वैज्ञानिक जैसे क्लर्क मक्सवेल, रेले तथा युवक जे जे थॉमसन करते थे, आर्कडीकन कनिघम आर्थिक इतिहास की नीव डाल रहे थे और मैटलैण्ड की प्रतिभा मध्ययुगीन लोगो के आम विचारो को कानून जैसे कठोर माध्यम द्वारा अभिव्यक्त कर रही थी। आक्सफोर्ड का परिवर्तन इससे भी अधिक तीव्र था, इस शासनकाल के प्रारम्भ मे उस पर न्यूमैन तथा उसके विरोधियो का, जो सतो के चमत्कार प्रदर्शनो तथा पादरियो की सत्ता को लेकर सदैव झगड़ते रहते थे—प्रभाव रहा था। तीस वर्ष बाद विश्वविद्यालय का वातावरण दूसरा ही हो गया था जिसमे ढले व्यावहारिक एव उदार चरित्र का प्रतिनिधित्व मास्टर आफ बैलिओल के रूप मे जोवेट करते थे और स्टब्स तथा गार्डिनर की विद्वता अग्रेजी सविधान के विकास की द्योतक बन गई थी, और टी एच ग्रीन ने नैतिक दर्शन की एक नवीन व्यवस्था का प्रारम्भ किया था।

विक्टोरिया के शासनकाल का उत्तरार्द्ध नि सन्देह एक ऐसा काल था जिसमे आक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयो का जनता की दृष्टि मे काफी महत्व बढा। उनका सुधार, विशेष रूप से शैक्षणिक पदो के लिये धार्मिक परीक्षा का अनावश्यक (१८७१) घोषित कर दिया जाना उस युग का सर्वाधिक राजनैतिक मामला था। सन् सत्तर की दशाब्दी के उदार-मानस तथा उच्चशिक्षा प्राप्त प्रशासक वर्ग, ह्रासोन्मुख अभिजात वर्ग अथवा उठते हुए धनिकतत्र से अपना सम्बन्ध न जोडकर विश्वविद्यालयो से अधिक सम्बद्ध था। ग्लैडस्टन ने राजकीय कार्यालयो मे विशेष सुविधाओं के आधार पर नियुक्तिया समाप्त कर प्रतियोगिता एव योग्यता को प्रश्रय दिया। पिछले युग के अभिजातवर्गीय राजनीतिज्ञो तथा पॉमरस्टोन को परीक्षको के निर्णयानुसार लोगो की राजकीय सेवा मे नियुक्ति करना भला नही लगता था। इस नवीन युग मे विशेषाधिकारो की समाप्ति एक प्रकार से आक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज की परीक्षा प्रणाली एवं उपाधियो की प्रतिष्ठा के प्रति सम्मान प्रदर्शन ही था, और इसका प्रभाव यह हुआ कि पहले की अपेक्षा अब विश्वविद्यालयीय लोगो तथा जनता के मध्य अधिक

के प्रारम्भिक वर्षों मे हुई थी। सन् १९०२ के बालफोर विधेयक के पूर्व जिस लोकप्रिय माध्यमिक शिक्षा की समुचित व्यवस्था की कमी थी वही इस काल का प्रमुख कारण थी कि नये विश्वविद्यालयो का विकास इतनी मन्द गति मे हुआ।

घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित हो गया। सामाजिक सरक्षण अथवा प्रभावशाली मित्रो की अपेक्षा अब से प्रशिक्षित बुद्धि का होना ही किसी नवयुवक की योग्यता का प्रमाणपत्र बन गया था। परीक्षा प्रणाली के दोषो, विशेष रूप से स्कूलो की शिक्षा पर पडने वाले कुप्रभावो के प्रति अभी जागरुकता नही उत्पन्न हो सकी थी, और न ये दोष उस समय इतने हानिकर ही सिद्ध हो सके थे।

लेकिन इस शासनकाल के अन्तिम वर्षो की विशेष उपलब्धि शायद राष्ट्रीय जीवन चरित्र कोष (डिक्शनैरी ऑफ नेशनल बायोग्राफी) की रचना थी। इस 'जीवनी कोष' की रचना किसी विश्वविद्यालय अथवा राज्य के तत्वावधान मे नही की गई थी। इसके प्रणयन एव प्रकाशन का पूर्ण श्रेय जार्ज स्मिथ नामक एक प्रकाशक को है जिसकी अनेक लेखको से व्यक्तिगत मित्रता थी और इसी ने उसे इस महान् कार्य की प्रेरणा भी दी थी। यह कोष वाणिज्य-योग्यता, प्रबुद्ध जन भावना, तथा विक्टोरिया काल की व्यापक साहित्यिक एवं ऐतिहासिक विद्वत्ता के चरमोत्कर्ष का प्रतीक है। एक राष्ट्र के भूतकाल के विषय मे यह एक ऐसा सर्वोत्कृष्ट उपलब्ध विवरण है जिसे आज तक कोई भी सभ्यता उत्पन्न नही कर सकी है।

इसे पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि प्रारम्भिक विक्टोरिया काल के धर्माचरणो के विरुद्ध हुए अग्रेजी विद्रोह का सिद्धान्तो अथवा आचरण किसी भी दृष्टि से सुखवाद (हेडोनिज्म) से सबध नही है। केवल सन् नब्बे की दशाब्दी मे ही जिसे ह्रासान्मुख युग (फिन डे स्याक्ल) कहा जाता था उसमे ही यदि अराजकता नही तो कम से कम अस्थिरता की ओर घटित हो रहे परिवर्तन को स्पष्ट देखा जा सका था, और इसका कारण नि.सन्देह उन धार्मिक विश्वासो का लडखडा जाना था जिनसे कि त्याग एव सयम के नैतिक मूल्य सम्बद्ध थे। जब धर्म 'जन साधारण मे व्याप्त विश्वासो, आचरणो तथा महत्वाकाक्षाओ से विलग हो 'व्यक्तिगत आवश्यकताओ' द्वारा निर्धारित होने लगा तब उन लोगो के आचरण पर, जिन्हे इसकी आवश्यकता नही थी, उसका प्रभाव शून्य हो जाना स्वाभाविक ही था।' रविवार को पारिवारिक प्रार्थनाओ तथा नियमित रूप से गिरजाघर जाने के कार्यक्रम से निवृत्त होकर जब लोग नगर के बाहर भ्रमण के लिये जाने लगे तथा घुड-दौड तथा अन्य आमोद-प्रमोदो का आश्रय ग्रहण करने लगे उस समय इस सक्रमण का प्रिन्स ऑफ वेल्स (बाद मे एडवर्ड सप्तम) ने सहानुभूति शून्य माता तथा अबुद्धिमत्तापूर्ण शिक्षा प्रणाली का विरोध कर नेतृत्व ग्रहण किया था। शताब्दी का यह अन्तिम दशक येलो बुक तथा 'कला, कला के लिये' का युग है। लेकिन इस युग के महानतम लेखक, मैरेडिथ, विलियम मॉरिस, स्टीवेन्सन तथा हौजमैन, कट्टर धार्मिकता का विरोध करने के बावजूद अपने-अपने ढग से उतने ही 'गम्भीर' भी थे जितने कि प्रारम्भिक विक्टोरिया काल के लोग थे।

शिक्षित वर्गो मे धर्म तथा विज्ञान के सघर्ष की पुनरावृत्ति चार्ल्स ब्रैडलॉफ के वास्तविकतावाद मे प्रभावशाली ढग से हुई थी, यद्यपि वह कुछ अपरिष्कृत रूप मे थी। वह सार्वजनिक मचो पर श्रमिको के बीच भाषण देता था, और अन्तिम एवागेलिकल पुनरुत्थान तथा मुक्ति सेना (साल्वेशन आर्मी), जिसकी स्थापना 'जनरल' बूथ ने की थी, ने वेस्ले का अनुकरण कर भूखे, बेघर, शराबी तथा अपराधियो की एक दीर्घ पक्ति के मत परिवर्तन (कनवर्शन) को प्रेरित किया। आगामी युग की यह विशेषता थी कि 'साल्वेशन आर्मी' की कार्य प्रणाली पिछले विरोधी सगठनो की अपेक्षा अधिक रोमाचकारी थी। प्रोटेस्टैंट धर्म की सेवार्थ सडको पर बजने वाले बाजो तथा रगीन पोशाक का प्रयोग एकदम नयी बात थी। यह कोई कम महत्वपूर्ण बात नही थी कि मुक्ति-सेना (साल्वेशन आर्मी) समाज सेवा तथा तिरस्कृत लोगो एव गरीबो की आर्थिक स्थिति की देख-रेख करना ईसाई धर्म का कर्त्तव्य समझती थी। •इसी कारण उसकी शक्ति आधुनिक अग्रेजी जीवन का एक स्थायी अग बन गई थी। केवल पुन स्थापना पर ही उसका अस्तित्व निर्भर नही करता था।

धार्मिक तथा सामाजिक उद्देश्यो का मुक्ति-सेना ने जो समन्वय किया था उसी के अनुरूप एक और आन्दोलन पूर्ण-विरक्ति (टोटल एब्स्टेनेन्स) अथवा 'टीटोटलिज्म' का भी प्रारम्भ हुआ था। अत्यधिक मदिरा पान तथा शराब पर बेतहाशा खर्च करना शहरी जीवन का एक प्रमुख दोष बन चुका था जिसके कारण परिवारो का विनाश तथा अपराधो की वृद्धि हो रही थी; यह विनाश विशेष रूप से तब से प्रारम्भ हुआ था जब से कि बियर (हल्की शराब) का स्थान तेज शराब लेने लगी थी। हमारे चरित्र-चित्रणकर्त्ता इगलिश स्वभाव के इस दु खद पक्ष के सामने अपनी कला का दर्पण होगार्थ की 'जिन लेन' कृति से लेकर क्रिकशैक की 'दि बॉटल एड दि ड्रकर्ड्स चिल्ड्रन' (१८४७-१८४८) के प्रकाशन तक, जिसकी दस हजार प्रतिया बिक चुकी थी, रखते आ रहे थे। इसके बाद के वर्षों मे सभी वर्गों की मद्यपान सम्बन्धी आदतो के विरुद्ध 'ब्लू रिबन आर्मी' ने एक सुसगठित आक्रमण किया था जो पर्याप्त रूप मे सफल हुआ था पूर्ण विरक्ति की प्रतिज्ञा करने वाले अपने सीने पर एक नीला फीता पहनते थे जिससे कि जनता उनकी प्रतिज्ञा से अवगत हो सके और वे भी अपनी शपथ का निर्वाह कर सके। सन् सत्तर के दशक मे टेम्परेन्स दल, जिसका विरोधियो (नॉन कनफर्मिस्ट्स)[१] पर विशेष प्रभाव था, उदारतावादी राजनीति (लिबरल पालिटिक्स)

[१] लेकिन सभी धार्मिक सगठनो ने टेम्परेन्स आन्दोलन को गति दी थी। सन् १९०९ मे इगलैड की टेम्परेन्स सोसाइटी के चर्च की सदस्य संख्या ६३९,२३३ थी। इन सदस्यो में से ११४,४४४ ने मद्यपान को पूर्णरूपेण त्याग देने की शपथ ले ली थी और ४८६,८८८ बालक-सदस्य थे। यह उल्लेखनीय है कि टेम्परेन्स सोसाइटीज बच्चो को मदिरा से उनका परिचय हो इसके पूर्व ही अपना सदस्य बना लेती थी।

मे एक शक्ति रूप बन गया था लेकिन मद्यपता का दमन करने के लिये उन्होने जो वैधानिक प्रस्ताव रखे थे उनमे एक सनक विद्यमान थी जिसके कारण व्यावहारिक नियमो का बन पाना दीर्घकालीन अवधि तक मुल्तवी होता रहा था। इस आन्दोलन ने मदिरा-पान के समर्थको की गतिविधियो को उत्तेजित कर अधिक सगठित कर दिया था, मदिरा बनाने वाली कम्पनियो के साझीदारो की एक बडी जमात सहायता के लिये उठ खडी हुई थी और शताब्दी के अन्तिम दशको मे उन्होने उस अनुदार दल का समर्थन प्राप्त कर लिया था जिसने कि सन् १८८६ के बाद देश की सत्ता सभाली थी।

केवल शराब से परहेज करना ही नही बल्कि शराब तथा बिअर का उचित उपयोग भी बढती हुई सुविधाओ तथा ऊब की मात्रा मे कमी होने से बढने लगा था, अन्य मनोरजनो तथा अध्ययन, सगीत, खेलो, दृश्यावलोकन, साइकिल की सवारी आदि मे छुट्टियो का समय व्यतीत करना तथा इस सब के अतिरिक्त फिर पारिवारिक सुख-शाति मे वृद्धि तथा शिक्षा के प्रसार के कारण जीवन सतुलित हो चला था। फिर शराब बनाने वाली कम्पनिया भी धीरे-धीरे भय तथा लज्जा के कारण अपने अधीनस्थ मदिरालयो से सम्बन्धित नीति को प्रबुद्ध बनाने लगी थी—ये स्थल सुन्दर बनने लगे थे तथा शराब के अतिरिक्त अन्य वस्तुए भी बिक्री के लिये रखने लगे थे, ताकि ग्राहको को हर चीज के लिये बाहर न जाना पडे। और सन् १९०४ के 'बाल फोर लाइसेसिग' अधिनियम के कारण अन्त मे इन मदिरा बिक्री केन्द्रो की सख्या को कम करने की व्यावहारिक विधि भी निकाल ली गई।

बीसवी शताब्दी मे मद्यपान को सिनेमा तथा बेतार के तार जैसे अन्य दुश्मनो का भी सामना करना पड रहा है, और प्रशिक्षित श्रमिको को ही काम देने तथा यन्त्रो के उपयोग के कारण—विशेष रूप से मोटर कार के चलाने मे—भद्र तथा सतुलित व्यवहार एक अनिवार्य योग्यता बन गया है। लेकिन अब शायद मद्यपान से भी अधिक जुआ खेलने से हानि होती है। लेकिन महारानी विक्टोरिया की मृत्यु के समय सभी सामाजिक वर्गों मे मद्यपान का रोग आज की अपेक्षा तथा महारानी के शासन ग्रहण करने के समय की अपेक्षा कही अधिक व्यापक था।

विक्टोरिया के युग मे विश्व पर फोटोग्राफी का काफी प्रभाव पडा था। सन् १८७१ मे ही एक द्रष्टा के शब्दो मे फोटोग्राफी बाद के वर्षों मे गरीबो के लिये अब तक का सर्वश्रेष्ठ वरदान सिद्ध हुई थी। 'जिस किसी को भी निम्न वर्गो मे पारिवारिक स्नेह के महत्व का ज्ञान है और जिसने उनके कमरे मे छोटे-छोटे चित्रो की एक लम्बी पक्ति को टगे हुए देखा है, जिसमे पारिवारिक एकता तथा जीवन के विलग होते हुए पक्षो को- "कैनेडा गया हुआ पुत्र", "नौकरी पर बाहर गई हुई पुत्री", "फूलो की छाया मे विश्राम कर रहा स्वर्ण केश बच्चा", "ग्रामवासी वृद्ध पितामह"—इन सबको स्मृति स्वरूप सजो कर रखा है, वह शायद मेरी इस अनुभूति को समझ सके कि जो

सामाजिक तथा औद्योगिक प्रवृत्तिया पारिवारिक स्नेह को विछिन्न कर रही है उनके निराकरण मे सेवा भाव से किया जाने वाले किमी भी कार्य की अपेक्षा छ पैनी वाले छाया-चित्रो का अधिक योगदान है ।" (मैकमिलन'स मेगजीन, मितम्बर, १८७१) ।

सबसे सस्ते तथा बिल्कुल ठीक-ठीक चित्रण के क्षेत्र मे फोटोग्राफी ने निस्सन्देह सभी वर्गों को मृत अनुपस्थित, विगत तथा घटनाओ और सम्बन्धो की तीव्र स्मृतियो को सजो पाने मे पर्याप्त योगदान किया है ।

कला पर पडने वाले इसके लाभकारी प्रभावो के बारे मे निश्चय ही सन्देह किया जा सकता है । विगत काल मे कई हजार चित्रकार व्यक्तियो के चित्र, घटनाओ, दृश्यो, तथा इमारतो के रेखाकन तथा प्रसिद्ध प्राप्त चित्रो की अनुकृति की आय पर आश्रित थे । अब से इस माग की पूर्ति फोटोग्राफी करने लगी थी । चित्रकारिता के पेशे के महत्व को कम कर देने मे तथा सूक्ष्म वास्तविकताओ के चित्रण मे चित्रकला के पिछड जाने से उसे सैद्धातिक तथा 'कला, कला के लिये' के क्षेत्र मे किये जाने वाले बौद्धिक प्रयोगों का ही आश्रय ग्रहण करना पडा ।

यदि विक्टोरिया-युग के अन्तिम काल की अग्रेजी भाषा के स्वरूप की एलिजाबेथ के अन्तिम वर्षों की भाषा से तुलना की जाए तो उनमे कोई अन्तर नही दिखाई पडेगा एक आधुनिक अग्रेज सन् १६११ की बाइबिल को सरलता से समझ सकता है और शैक्सपीयर के मुहावरेदार कथोपकथनो को चॉसर की अपेक्षा अधिक सरलता मे समझ सकता है । एलिजाबेथ तथा विक्टोरिया के बीच के तीन सौ वर्षों का काल लिखित वैचारिक आदान-प्रदान का युग था जिसमे शिक्षित उच्च वर्ग का वर्चस्व था और यह वर्ग भाषा की परम्परागत शब्द रचना तथा व्याकरण मे किसी भी प्रकार के परिवर्तन का विरोधी था । लेकिन एक दृष्टि से भाषा मे परिवर्तन भी हुए थे- काव्य तथा भावनाओ की अभिव्यक्ति—माध्यम से अब भाषा, विज्ञान तथा पत्रकारिता की अभिव्यक्ति की ओर अग्रसर हो चुकी थी । एलिजाबेथ कालीन कोई व्यक्ति यदि विक्टोरिया-कालीन समाचार-पत्र मे छपे किसी लेख को पढता अथवा आधुनिक शिक्षा प्राप्त लोगों के वार्तालाप को सुनता तो ऐसे दीर्घकाय शब्दो को सुनकर आश्चर्यचकित रह जाता जिन्हे अधिकाशत लेटिन से काव्य के लिये नही बल्कि विज्ञान, पत्रकारिता तथा सामाजिक व राजनैतिक समस्याओ पर होने वाली चर्चाओं-परिचर्चाओ के उद्देश्य से ग्रहण किया गया था 'अपॉरट्यूनिस्ट' 'मिनिमाइज', 'इन्टरनेशनल', 'सैन्ट्रीफ्यूगल', 'कामर्श्यलिज्म', 'डिसेन्ट्रलाइज', 'आरगनिजेशन', शब्दो के अतिरिक्त प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्र मे कुछ और अधिक उपयोगी लेकिन भारी भरकम तकनीकी शब्दो को भी लिया गया था ।[१]

---

[१] दि इगलिश लैंग्वेज (होम यूनिवर्सिटी लायब्रेरी, पृ० १२४) नामक कृति मे मि. पिअरसाल स्मिथ ने लिखा है : "कई प्रकार से विज्ञान भाषा का स्वाभाविक शत्रु

उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे 'पू जी' तथा 'श्रम' दोनो ही का विस्तार हो रहा था और दोनो ही के प्रतिद्वन्द्वी सगठन आधुनिक लीक पर पूर्णता प्राप्त कर रहे थे। प्रशिक्षित व्यावसायिक लोगो के सहयोग से इस परिवर्तन ने नये युग की प्रौद्योगिकीय आवश्यकताओ की पूर्ति कर ली थी और इस प्रकार तकनीकी आविष्कर्ता के बाद दूसरी तथा तीसरी पीढी के समय पारिवारिक फर्मों की उत्पादन-कुशलता का जिस प्रकार ह्रास होता जा रहा था उससे इसने इस युग को बचा लिया था। फिर इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत उपक्रमो से अलग एक कदम सामूहिकता तथा नगरपालिका एव राज्य सचालित व्यापार की ओर भी बढाया गया था। रेलवे कम्पनिया, जो यद्यपि अब भी निजी क्षेत्र मे थी और साझीदारो के हितो के लिये ही जो कार्य करती थी, उनकी तुलना पुराने पारिवारिक व्यापार से नही की जा सकती। वास्तव मे उनका अस्तित्व ससद् द्वारा पारित उन अधिनियमो के कारण था जो उन्हे सुविधाए तथा राजकीय नियत्रण के स्थान पर कुछ अधिकार ही देते थे। इसके साथ ही बडी नगरपालिकाए भी व्यापार करती थी और प्रकाश व्यवस्था, ट्रामो तथा करदाताओ को अन्य सेवाए भी उपलब्ध कराती थी।

सीमित दायित्वो वाली कम्पनियो के विकास तथा नगरपालिका द्वारा किये जाने वाले व्यापार के कई महत्वपूर्ण परिणाम निकले थे। पू जी तथा उद्योगो के वृहद् स्तर पर ऐसे निर्वैयक्तिक आयोजन के कारण साझीदारो की सख्या तथा वर्ग के रूप मे उनके महत्व मे पर्याप्त वृद्धि हुई थी, राष्ट्रीय जीवन मे यह पक्ष एक ऐसी अनुत्तरदायित्वपूर्ण सम्पदा का द्योतक था जिसका अस्तित्व भूमि तथा भू-स्वामी के कर्त्तव्यो से पृथक् हो चुका था, और वाणिज्य के उत्तरदायित्वपूर्ण प्रबन्ध से भी लगभग उतना ही पृथक् था। सम्पूर्ण उन्नीसवी शताब्दी मे, अमरीका, अफ्रीका, भारत, आस्ट्रेलिया तथा यूरोप के भागो का ब्रिटिश पू जी द्वारा काफी विकास हो रहा था, और ब्रिटिश साझीदार इस प्रकार विश्वव्यापी औद्योगीकरण की प्रक्रिया मे काफी लाभ उठा रहे थे। ऐसे बडे 'आरामवादी' वर्गों को जिन्हे घर बैठे ही अपनी पू जी से आय हो जाती थी और

है। भाषा, चाहे वह साहित्यिक कोटि की हो अथवा क्षेत्रीय बोलचाल की उसे अनेक प्रकार से सजीव तथा वैविध्यपूर्ण शब्दो के भडार की आवश्यकता होती है– और ये शब्द ऐसे "विचार-चित्र" होने चाहिये जो हमारी अनुभव-क्षमताओ के निकट होने के साथ ही जिन वस्तु-रूपो का वे विवरण देते हो उनके साथ ही हमारी अनुभूतियो को भी आकार दे सके। लेकिन विज्ञान अभिव्यक्ति की विविधता अथवा भावनाओ को तनिक भी चिन्ता नही करता, उसका आदर्श ऐसे बीजगणितीय (एलजेब्रिक) चिन्ह होते है जिनका उपयोग केवल विश्लेषण मे ही किया जा सकता है, और इस कार्य के लिये किसी व्यक्तित्व विहीन मृत्त भाषा से कुछ अमूर्त तथा शुष्क शब्दो (पदो) को ग्रहण करना ही वह ठीक समझता है।"

जिनका साझीदारो की बैठको मे भाग लेकर प्रबन्धको पर टीका टिप्पणी करने के अतिरिक्त समुदाय से किसी प्रकार का सम्बन्ध नही था उनके अनेक आश्रय-स्थलो के रूप मे बोर्नमाउथ तथा ईस्टबोर्न जैसे नगर उठ खडे हुए थे । लेकिन दूसरी ओर 'साझीदार होने का अर्थ था अवकाश तथा स्वतन्त्रता की प्राप्ति जिसका आगे चल कर विक्टोरिया कालीन लोगो ने सभ्यता के विकास मे उपयोग किया था ।

लेकिन जिन 'साझीदारो' की चर्चा हम कर रहे है उन्हे अपनी कम्पनियो के कर्मचारियो के जीवन, विचारो अथवा आवश्यकताओ के विषय मे कोई जानकारी नही थी और पू जी तथा श्रम के परस्पर सम्बन्धो पर उनका प्रभाव भी अच्छा नही पडता था । कम्पनी की ओर से नियुक्त प्रबन्धक ही लोगो तथा उनकी मागो के सीधे सम्पर्क मे था लेकिन उसे पारिवारिक व्यापार के मुखिया की भाति जो अब समाप्त हो रहा था—अपने कर्मचारियो के बारे मे व्यक्तिगत तथा निकटतम जानकारी नही थी । निस्सन्देह कुछ तो इन कम्पनियो अथवा व्यापार के आकार के कारण और कुछ नियुक्त कर्मचारियो की सख्या के कारण वैयक्तिक सम्बन्धो का हो पाना असभव था । फिर भी सौभाग्य से, श्रमिक-सघो (ट्रेड यूनियन्स) की बढती हुई शक्ति तथा सगठन के कारण—कम से कम प्रशिक्षित श्रमिको मे, यह स्थिति तो उत्पन्न हो ही गई थी कि एक मजदूर अपने नियुक्ति-दाता प्रबन्धको से समानता के दर्जे पर बात कर सकता था । हडताल तथा तालाबन्दी के परस्पर कठोर नियत्रण के कारण दोनो ही पक्षो को एक दूसरे की शक्ति को स्वीकार कर उचित आधारो पर समझौता करना आवश्यक हो गया था ।

इन स्थितियो मे राष्ट्रीय लाभ का वितरण दोनो ही वर्गों मे अपेक्षाकृत ठीक-ठीक होने लगा था और असमान वितरण की सम्भावना कम हो गई थी । लेकिन पूंजी तथा श्रम तथा मालिको एव मजदूरो के बीच सामान्य जीवन मे भी दूरी निरन्तर बढती ही जा रही थी । यह तथ्य ही कि श्रमिक-क्षेत्रो मे कल्याणकारी 'बस्तियो' का निर्माण समझदार मालिको (बुर्जुआ) को यह दर्शाने के लिये किया जा रहा था कि गरीबो का जीवन किस प्रकार का है स्वय मे काफी महत्वपूर्ण है । अत. शताब्दी के अन्त मे 'वर्ग सघर्ष' की अनिवार्यता को प्रकट करने वाले मार्क्सवादी सिद्धान्तो का प्रचलन स्वाभाविक था, फेबियन सोसाइटी द्वारा प्रवर्तित अपेक्षाकृत अधिक अवसरवादी सघवाद का प्रभाव और भी अधिक व्यापक था ।

लेकिन अग्रेज-श्रमिक को अधिक प्रभावित कर पाने मे ये विचार अथवा सिद्धान्त व्यावहारिक होने के कारण अक्षम थे । सिद्धान्त की अपेक्षा व्यावहारिक आवश्यकता के कारण कानून के विरुद्ध श्रमिक-सघो की रक्षार्थ श्रमिकों को राजनीति में आना पड़ा था और उन्होने अपने दल का गठन किया था । वास्तव मे अग्रेजी कानूनी अदालतो में दुर्भाग्य से उन स्वाधीन-पक्षों की खोज की प्रवृत्ति घर कर गई थी जो ससद् अधि-

नियमो द्वारा श्रमिक-सघो को प्रदान करना चाहती थी लेकिन वास्तव मे उन्हे वे अधिकार कभी दिये ही नही गये। सन् १८२५ के अधिनियम द्वारा श्रमिक-सघो तथा अपने पारिश्रमिक मे वृद्धि करवाने के लिये बनाये गये सगठनो को मान्यता प्रदान कर दी गई थी -- ससद् तथा अन्य लोग भी कम से कम चालीस वर्षो से यही मानते आ रहे थे। लेकिन १८६७ मे, बॉईलर बनाने वालो के मुकदमे मे, माननीय मुख्य न्याय-धीश तथा अन्य जजो ने यह निर्णय दिया कि 'व्यापार (ट्रेड) विरोधी होने के कारण' ये सगठन वैध नही है। सौभाग्य से उसी वर्ष के सुधार-विधेयक (रिफार्म-बिल) द्वारा श्रमिक वर्गो को ससद् के लिये मतदान का अधिकार प्रदान कर दिया गया था और इस प्रकार राजनीतिज्ञो पर वैधानिक दबाव डाल कर अपनी कठिनाइयो को हल कराने मे वे समर्थ हो गये थे। परिणामस्वरूप ग्लैडस्टोन द्वारा लाये गये सन् १८७१ के अधिनियम द्वारा, श्रमिक-सघो को उन्ही के हितानुसार मान्यता मिल गई थी और १८७५ के डिजरायली के अधिनियम द्वारा शातिपूर्ण विरोध का अधिकार भी उन्हे प्राप्त हो गया था।

इसके बाद, जब महानुभावो ने ट्रेड-यूनियन को अगली पीढी तक के लिये अकेला छोड दिया, इस अवधि मे यह आन्दोलन प्रशिक्षित लोगो से अप्रशिक्षित श्रमिको मे भी व्याप्त हो चुका था। सन् १८८९ मे जॉन बर्न्स के नेतृत्व मे लन्डन के गोदी कर्मचारियो की बडी हडताल मे यह बात विशेष रूप से देखने मे आई थी। शताब्दी के अन्त तक कई व्यावसायिक क्षेत्रो मे श्रमिक सघ बन चुके थे और इगलैंड के अधिकाश प्रदेशो मे मजदूरो ने अपने पारिश्रमिक की रक्षा के लिये इस हथियार का बुद्धिमत्ता-पूर्वक उपयोग भी किया। सन् १९०१ मे जज-महानुभावो ने अपने निर्णयो द्वारा इस आन्दोलन पर पुन प्रहार किया, पिछली ससदो के कार्यो को इन जजो ने पुन अकिया कर दिया और यूनियन द्वारा की जाने वाली हडतालो को अवैधानिक घोषित कर दिया। इस निर्णय की चुनौती को स्वीकार कर नवीन शताब्दी के प्रारभ मे ससद् मे एक पृथक् मजदूर दल (लेबर पार्टी) का निर्माय किया गया और सन् १९०६ मे एक अधिनियम बनाया गया जिसके अन्तर्गत श्रमिक-सघो को पर्याप्त कानूनी स्वतत्रता प्रदान कर दी गई। लेकिन वास्तव मे ये घटनाए सामाजिक इतिहास के एक अन्य परिच्छेद की घटनाए है जिन्हे विक्टोरिया कालीन इगलैंड के अन्तर्गत नही देखा जा सकता।

शताब्दी तथा महारानी के शासन के अन्त के समय देहातो मे 'सामन्तवादी' समाज का अस्तित्व बरकरार था, लेकिन बदलती हुई परिस्थितिया इगलैंड के ग्रामीण क्षेत्रो मे भी प्रजातत्र के अभ्युदय का सकेत दे रही थी और गावो पर शहरी विचारो तथा शक्तियो का प्रभाव जमता जा रहा था। अगली पीढी के समय, मोटर यातायात के विकास के साथ तो ग्रामीण क्षेत्रो मे शहरीकरण की बाढ सी आ गई और इसके कारण सम्पूर्ण इगलैंड ही नगरीय सभ्यता से आच्छादित हो उठा। लेकिन जिस

समय विक्टोरिया की मृत्यु हुई (१६०१) उस समय तक नगरीकरण की प्रक्रिया कुछ अधिक आगे नही बढ सकी थी, देहाती सडको तथा गलियो का स्वरूप अब भी वही था—सदियो पुरानी सुशुप्तता जिसे भग किये बिना ही साइकिल सवार आनन्द प्राप्त कर लेते थे। गावो के छोटे बडे सभी 'मकान' जिनमे अब भी सप्ताहान्त मे नगर से आकर अतिथि ठहरा करते थे और आखेट के आयोजन किये जाते थे, उसी प्रकार चल रहे थे, और कृषि-व्यवस्था का गठन भी पुरानी वैयक्तिक सम्पत्ति प्रणाली (एस्टेट सिस्टम) द्वारा किया जाता था।

लेकिन इन ग्रामीण गृहो तथा सम्पत्तियो की देखरेख का भार कृषि-कर से उतना सम्बन्धित नही रहा था जितना कि पहले कभी था, कृषि-कर वास्तव मे अब अमरीका से आयातित सामग्री के कारण काफी कम हो गया था और अधिकाश किसानो पर बकाया ही बना रहता था। देहाती क्षेत्रो मे स्थित इन आरामगाहो तथा अचल सम्पत्ति सम्बन्धी कार्यों के लिये अब धन मालिक के अन्य उद्योगो, अथवा दूर के नगरीय क्षेत्रो मे स्थित उसकी भूमि से प्राप्त होता था। वह यद्यपि अब भी किसी ग्रामीण-क्षेत्र विशेष का ही एक भद्र पुरुष था लेकिन स्वय पर व्यय होने वाली राशि के लिये केवल इतना ही पर्याप्त नही था, अत अन्य स्रोतो पर ही निर्भर करता था।

इन परिस्थितियो मे, इस प्रकार की सम्पत्ति व्यवस्था, सामन्तवादी होने पर भी, देहाती क्षेत्रो मे इसलिये लोकप्रिय थी कि ह्रासोन्मुख कृषि की सहायता के लिये यह औद्योगिक क्षेत्रो से धन लाकर यहा लगाती थी और भूस्वामी तथा उसका परिवार गाव मे शिक्षा का प्रसार तथा मैत्रीपूर्ण नेतृत्व प्रदान करता था।

लेकिन मोटर-कार के प्रचलन के पूर्व नई शताब्दी के प्रारम्भ मे ग्रामीण जीवन नगरो से आने वाले समाचार-पत्रो, विचारो तथा यात्रियो के कारण अर्द्ध-शहरी अवस्था मे परिवर्तित होने लगा था। प्रजातात्रिक नगर तथा 'सामन्तवादी' ग्राम्य क्षेत्र का जो अन्तर विक्टोरिया के शासनकाल की मध्यावधि मे ट्रोलोप के इगलैंड की विशेषता बन गया था वह इस शताब्दी के अन्तिम दशको मे उतना स्पष्ट नही रहा। सन् १८७० के शिक्षा अधिनियम (एजूकेशन एक्ट) के परिणामस्वरूप अगली पीढ़ी के खेतिहर मजदूर तथा उनकी पत्निया पढना तथा लिखना सीख चुके थे। दुर्भाग्य से इस शक्ति का उपयोग उनमे देहाती जीवन के प्रति एक प्रबुद्ध रुचि उत्पन्न करने मे नही किया गया। इस नयी शिक्षा का आविष्कार तथा निरीक्षण शहरी लोगो द्वारा किया जाता था जिसका उद्देश्य कृषको की अपेक्षा क्लर्क पैदा करना अधिक था। विक्टोरिया की मृत्यु के पूर्व, लोग गाव की मद्यशाला तथा झोपडी मे बैठकर डेली मेल समाचार पढते थे। नगरीकरण का कुप्रभाव ग्रामीण जीवन की विशेषता बन गया था, और विशिष्ट स्थानीय परम्पराए राष्ट्रव्यापी स्तर पर बाजारी रूप धारण करती जा रही थीं।

राजनैतिक क्षेत्र मे भी नगर तथा ग्राम परस्पर घुलते-मिलते जा रहे थे। सन् १८८४ मे खेतिहर मजदूर को ससद् के लिये मतदान का अधिकार प्राप्त हो गया था जबकि सन् १८६७ मे उसके नगरवासी भाई को तो जहा यह अधिकार प्राप्त था उसे इससे वचित कर दिया गया था। मतदान-पत्र के आधार पर, खेतिहर मजदूर अपनी इच्छानुसार किसी भी व्यक्ति को—चाहे वह भूस्वामी हो अथवा बडा किसान—मत दे सकता था। इसका प्रमाण नये मतदान विधेयक (फ्रेन्चाइज बिल) के अन्तर्गत होने वाले सन् १८८५ के आम चुनाव (जनरल इलेक्शन) मे मिल चुका था। इस चुनाव मे, जहा नगरो में अनुदार दलीय उम्मीदवारो को मत मिले देहाती क्षेत्रो ने अप्रत्याशित रूप से जमीदारो के विरोध मे उदार दलीय व्यक्तियो को मतदान किया। जहा तक ससदीय चुनावो का प्रश्न है इगलैंड के ग्रामीण जीवन पर जमीदारो का सदियो पुराना नियत्रण अब वास्तव मे समाप्त होता जा रहा था। इसका यह एक अवश्यम्भावी परिणाम ही था कि जिला स्तरीय स्वशासन का गठन भी चुनाव के आधार पर ही किया जाता।

अत सन् १८८८ मे स्थानीय स्वशासन अधिनियम (लोकल गवर्नमेट एक्ट) ने चुनी गई जिला परिषदो (काउन्टी काउन्सिलो) को ही शाति के न्यायाधीशो के अधिनायकवादी प्रशासन के स्थान पर प्रशासनिक इकाई माना। न्यायाधीशो को केवल न्यायपालिका सम्बन्धी अधिकारो तक ही सीमित रखा और उनके प्रशासनिक अधिकार मतदान द्वारा गठित जिला परिषदो को सौप दिये गये, इन परिषदो को कुछ वर्ष आगे चलकर नगरीय तथा ग्रामीण जिला (डिस्ट्रिक्ट) परिषदो के गठन से और अधिक शक्ति प्राप्त हो गई थी। इस प्रकार सन् १८३५ के नगरपालिका सुधार अधिनियम (म्यूनिसिपल रिफार्म एक्ट) द्वारा नगरो (बौरोज) मे भी प्रजातान्त्रिक स्थानीय स्वशासन की स्थापना हो गई थी, यही सिद्धात ग्रामीण जिलो पर भी लागू किया गया। यह भाग्य की विडबना ही थी कि कृषको को ससद् तथा स्थानीय स्वशासन के लिये मताधिकार उस समय प्राप्त हुआ था जबकि इगलैंड के कृषकीय जीवन का अमरीका की प्रतिस्पर्धा तथा खाद्यान्नो के मूल्य मे होने वाली गिरावट के कारण ह्रास प्रारम्भ हो गया था। यदि कृषि मजदूर गावो मे रहते तो वे भी अपने स्वशासन मे कुछ हिस्सा बटाते, लेकिन वास्तव मे वे नगरो की ओर प्रस्थान करने लगे थे।

सन् १८३५ का म्यूनिसिपल रिफार्म अधिनियम केवल कुछ ही नगरो को प्रभावित कर सका था, लेकिन नगरीय स्वशासन व्यवस्था सन् १८८८ के स्थानीय स्वशासन अधिनियम के अन्तर्गत सम्पूर्ण इगलैंड मे लागू हो गई थी।

सन् १८३५ के विधायक राजधानी के प्रश्न पर चालाकी कर गये थे' बृहद् लन्दन, अर्थात् पुराने नगर के बाहर बसे हुए सम्पूर्ण लन्दन को प्रशासनिक सगठन मे सम्मिलित किये बिना ही छोड दिया गया था। ५० वर्ष बाद अतिआच्छादित

अधिकारियो के झमेले द्वारा ही राजधानी मे रहने वाले पचास लाख लोगो के मामलो को गलत ढग से निपटाया जा रहा था। सन् १८८८ के स्थानीय स्वशासन अधिनियम ने इस पुरानी समस्या का उपचार किया। इस अधिनियम के अन्तर्गत लन्डन काउन्टी काउन्सिल (जिला परिषद्) की स्थापना हुई और तब से इसी सगठन द्वारा, केवल नगर के पुरातन क्षेत्र को छोडकर जिस ऐतिहासिक महत्व का क्षेत्र मान कर लार्ड मेयर तथा बडे लोगो (एल्डर मेन) की देख-रेख के लिये छोड दिया गया था, लन्डन प्रशासित होता था। विदेशी यद्यपि लॉर्ड मेयर से ही भेट करने आते है, लेकिन लन्डन के स्वशासन का प्रमुख लन्डन काउन्टी काउन्सिल का अध्यक्ष (चैयरमैन) होता है।

स्थापना के तुरन्त बाद ही इस नवोदित लन्डन काउन्टी काउन्सिल ने सशक्त रूप से कार्य प्रारम्भ कर दिया था और प्रथम बीस वर्षों की अवधि मे इसने समाज कल्याण की अनेको नई योजनाओ को पूर्ण किया। और इसी काल मे लन्डन स्कूल बोर्ड ने शिक्षा के क्षेत्र मे कई महत्वपूर्ण प्रयोग किये और ये प्रयोग सन् १६०२ मे शिक्षा अधिनियम जिसके अन्तर्गत कि शैक्षणिक कार्यों को लन्डन काउन्टी काउन्सिल मे सम्मिलित कर लिया गया था, के बनने तक चलते रहे थे। स्थानीय शासन के क्षेत्र मे, लन्डन जो अभी तक काफी पिछडा हुआ नगर ही था के इस क्रान्तिकारी कदम का श्रेय प्रगतिशाली (प्रोग्रेसिव) दल को था, यह दल काउसिल के हर चुनाव मे बहुमत से विजय प्राप्त करता आ रहा था। यह दल स्वय को 'प्रगतिवादी' इसलिये कहता था कि जहा 'उदार दल' तथा 'श्रमिक दल' दोनो ही दलो से वह भिन्न था दोनो ही दलो से इसके निकट के सम्बन्ध भी थे। यह दल केवल नगरपालिका का ही चुनाव लडता था और इस कारण जो लोग ससद् के चुनाव मे अनुदार दल को भी मत देते थे काउन्टी काउन्सिल के चुनाव मे 'प्रगतिशाली' दल को चुन लेते थे। सन् 'नब्बे के दशक मे लन्डन का आम मतदाता राष्ट्र की राजनीति मे जहा अनुदार दलीय तथा साम्राज्यवादी था, अपने स्वय तथा नगर के लिये प्रजातान्त्रिक सामाजिक सुधार चाहता था। लन्डन मे स्थानीय स्वशासन के प्रगतिवादी स्वरूप एव वातावरण के कारण ही वहा फेबियन सोसाइटी अपनी जडे जमा सकी थी। ;सिडनी वेब्स तथा ग्राहमवालास जैसे फेबियन बुद्धिवादियो के नेतृत्व मे लन्डन के स्थानीय स्वशासन ने काफी प्रगति की थी। लेकिन जिस लोकप्रिय व्यक्ति के नेतृत्व को 'श्रमिक दल' तथा 'उदार दल' के सहकार का प्रतिनिधि माना जा सकता है वह जॉन बर्न्स था। बैटरसी के जॉन बर्न्स की लन्डन के प्रति विशेष अनुरक्ति थी और उनका यह लन्डन-प्रेम उस पुराने नगर की सर्वानुभूति से जो पुरातन चहारदीवारी मे घिरकर केवल ऐतिहासिक महत्व की ही वस्तु बन कर रह गया था स्पष्टत पृथक था।

इसी कारण विक्टोरिया के शासनकाल के अन्तिम दशको मे स्वच्छता, प्रकाश,

यातायात, जन वाचनालयो तथा स्नानागारो और कुछ अशो मे आवास-व्यवस्था की दृष्टि से भी नगरो का काफी विकास हो रहा था। इस क्षेत्र मे जोसेफ चैम्बरलेन के नेतृत्व मे सन् सत्तर की दशाब्दी मे बर्मिघम की नगरपालिका ने और बीस वर्ष बाद लन्डन की काउन्टी काउन्सिल ने जो प्रगति की थी उसका अन्य स्थानो पर भी व्यापक रूप से अनुकरण किया गया था। और केन्द्रीय सरकार ने नागरिको के जीवन को उन्नत करने के लिये, सरकारी निरीक्षको की सिफारिशो के अनुसार स्थानीय करो से होने वाली आय के अतिरिक्त भी नगरपालिकाओ को आर्थिक सहायता दी थी।

राज्य द्वारा समर्थित नगरपालिका-सुधार आन्दोलन के कारण एक बडी सामाजिक विपत्ति टल गई थी। विक्टोरिया के प्रारम्भिक शासनकाल की तुलना मे अब मृत्यु-दर काफी कम हो गई थी, भौतिक सुविधाओ की दृष्टि से नगरीय जीवन अधिकाधिक अच्छा होता जा रहा था, और प्रारम्भिक शिक्षा का सभी जगह प्रसार हो गया था। फिर भी बीसवी शताब्दी के लिये कई दृष्टियो से यह सब कोई विशेष सुखद विधि नही थी। अनियोजित रूप से विकसित हो रहे आधुनिक नगर मे अभी आकार अथवा स्वरूप की काफी कमी है, इसे मानवीय आत्मा के पिजरे की ही सज्ञा दी जा सकती है। आधुनिक इगलैड के नगरीय तथा ग्रामीण जीवन मे पुराने ग्रामीण जीवन की भाति अथवा मध्ययुगीन यूरोप के नागरिक जीवन की भाति कल्पना का तनिक भी समावेश नही हो पाया हे। उत्तर के औद्योगिक नगरो के लोगो मे नागरिकता के प्रति स्वाभिमान तथा उच्चता की होड का स्वरूप सौन्दर्य प्रधान होने की अपेक्षा पूर्णरूपेण भौतिकतावादी आग्रहो से ग्रस्त था। धुआ और कालिख सभी आनन्दवर्धक तथा सौन्दर्य सर्जक प्रयासो को व्यर्थ सिद्ध कर देते थे।

व्यक्ति मे एकता की भावना भर पाने तथा चरित्र निर्माण कर पाने मे नये नगर अपनी विशालता के कारण असमर्थ थे। इन्हे एथेन्स, रोम, पेरूगिया, नूरेम्बर्ग, ट्यूडर कालीन लन्डन तथा हजारो अन्य पुराने नगरो की भाति भी न तो प्यार ही किया जा सकता था और न ये वैसे प्रतीत ही होते थे। इन विक्टोरिया कालीन नगरो की दशा इसलिये और भी खराब थी कि इनके लिये किसी भी प्रकार की योजना का निर्माण नही किया गया था। राज्य ने आधुनिक इगलैड के विस्तार के लिये भूमिदारो तथा पू जीपतियो को मनमाने ढग से मकान बनवाने की छूट दे रखी थी और जन-सुविधा तथा जन-कल्याण का बहुत ही कम ध्यान रखा गया था। लन्डन तथा अन्य नगरो के विशाल क्षेत्रो मे बच्चो के आमोद-प्रमोद के लिये कोई खुला स्थान नही छोडा गया था, और वे अधिकाश अपने स्कूल के अहाते के बाहर गन्दी गलियो मे ही खेला करते थे। लाखो लोग प्रगति से एक दम कट से गये थे और इसी प्रकार गन्दी गलियो के आदिवासी होकर इन्होने मानवीय प्रतिष्ठा एव सौन्दर्य चेतना को भी खो दिया था। नयी शिक्षा तथा नयी पत्रकारिता दोनो इन परिस्थितियो की उपज थे। ऐसी परि-

स्थितियो मे जिस प्रजाति का लालन-पालन हुआ हो उसमे भले ही चरित्र सम्बन्धी कई गुण सुरक्षित रहे हो, पौष्टिक भोजन तथा अच्छी पोशाको के कारण भले ही उसने अपने स्वास्थ्य का विकास कर लिया हो और जीवन के प्रति अधिक साहसी, प्रसन्नता तथा प्रमोदपूर्ण दृष्टि का विकास कर लिया हो, लेकिन इसमे कोई सन्देह नही कि ऐसे लोगो मे कल्पनाशक्ति का ह्रास तथा व्यक्तित्व का धीरे-धीरे एक बधे हुए ढर्रे मे ढल जाना अवश्यम्भावी है।

बाद का विक्टोरिया-युग यद्यपि इस विपदाजन्य स्थिति से त्राण नही पा सका था लेकिन इसके प्रति उसमे चेतना अवश्य अकुरित होने लगी थी। रस्किन ने नवोदित लेखको तथा चिन्तको की पीढी मे इस औद्योगिक सभ्यता के विरुद्ध, जिसके प्रति कि पिछली पीढी को गर्व था, घृणा को उत्पन्न किया। विगत इतिहास की ओर देख कर इनका विचार था कि विगत युग आधुनिक लकाशायर की तुलना मे कही अधिक सुन्दर युग था सन् १८८६ मे विलियम मॉरिस ने अपनी 'दि अर्थली पेरेडाइस' नामक कृति मे लिखा था

'धूम्र आच्छादित उन छहो नगरो को भूल जाओ, भूल जाओ वाष्प की धुम-धुम और पिस्टन के शोर, वितृष्णा भरे नगर के विस्तार भूल जाओ, स्मरण करो ढलान पर उठते हुए अश्व-रव को और याद करो हरीतिमा की झालर से गुम्फित छोटे-स्वच्छ और सफेद लन्दन को ··· ।'

लेकिन कल्पना के अतिरिक्त इतिहास के उन विगत पृष्ठो मे पहुँच पाना कैसे सम्भव था।

१८७० का वर्ष शिक्षा की दृष्टि से एक नये मोड का शिलान्यास कर रहा था और इसलिए सामाजिक इतिहास मे भी परिवर्तन आना स्वाभाविक था। राष्ट्रीय महत्व की दृष्टि से शिक्षा केवल राजनैतिक कशमकश की वस्तु नही बल्कि धार्मिक सम्प्रदायो का अखाडा बन गई थी। मध्य-विक्टोरिया-काल मे इगलिश शिक्षा के पिछड़ जाने का प्रमुख कारण यह था कि इस अवधि मे ह्विग अथवा टोरी कोई भी सरकार राजकीय कोष से राष्ट्रव्यापी स्तर की ऐसी किसी भी प्रणाली की व्यवस्था नही कर सकी थी जिसने कि विरोधियो (डिसेन्टर्स) तथा एस्टेब्लिश्ड चर्च के क्रोध को न भडकाया हो। सन् १८७० मे ग्लैडस्टोन द्वारा उठाये गये साहसी कदम के पहले प्रत्येक सरकार को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। धार्मिक तथा साम्प्रदायिक उत्साह के कारण निजी राशि से सम्पूर्ण देश मे ऐच्छिक पाठशालाओ (वॉलन्टरी स्कूल्स) का एक जाल सा बिछा दिया गया था, लेकिन इन धार्मिक-प्रयत्नो एवं उत्साह के कारण ही राजनैतिक दल शिक्षा को राष्ट्रीय महत्व का प्रश्न बना पाने मे भय का अनुभव करते थे।

इन ऐच्छिक स्कूलो मे से अधिकाश, जो प्रारम्भिक शिक्षा का प्रमुख स्रोत थे, चर्च के सिद्धान्तो के आधार पर चलाये जाते थे (एग्लिकन) नेशनल सोसाइटी द्वारा स्थापित किये जाने के कारण इन स्कूलो को नेशनल स्कूल कहा जाता था। सन् १८३३ से उन्हे बहुत ही अल्प राशि का अनुदान दिया जा रहा था। सन् १८७० मे ग्लैडस्टोन द्वारा लाया गया विधेयक वास्तव मे डब्लू ई फोर्स्टर का, जो मूलत क्वेकर होने पर भी कट्टर चर्च भक्त थे, का कार्य था। फोर्स्टर ने इस विधेयक मे वर्तमान चर्च-स्कूलो तथा रोमन कैथोलिक स्कूलो को दिये जाने वाले राजकीय अनुदान की राशि दुगनी कर दी थी जिससे कि वे नवीन शिक्षा-प्रणाली का एक स्थायी भाग बन जाए, साथ उसने देश के शैक्षणिक मानचित्र मे राज्य नियत्रित स्कूलो की स्थापना कर अन्य सभी रिक्त स्थानो को भी भर दिया था। इन नयी पाठशालाओ को बोर्ड स्कूल कहा जाता था। इन्हे स्थानीय करो से अनुदान देकर प्रजातात्रिक रूप से चुने गये स्कूल बोर्डों के नियत्रण मे रखा जाता था। अधिकाश पुराने ऐच्छिक स्कूलो मे, अर्थात् सभी नेशनल स्कूलो मे, धार्मिक शिक्षा अनिवार्य थी। लेकिन नये बोर्ड स्कूलो मे धार्मिक अथवा साम्प्रदायिक शिक्षा वर्जित थी।

चर्च विरोधियो को इसी कारण यह आपत्ति थी कि इस प्रकार राज्य गावो मे चर्च स्कूलो को प्रोत्साहन दे रहा था और हर गाव मे होता भी एक ही स्कूल था और सभी बच्चो को उसी मे जाना पड़ता था। नगरो मे बोर्ड के स्कूलो तथा चर्च-स्कूलो, दोनो ही प्रकार के स्कूलो की व्यवस्था थी। यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति ही थी कि अधिकाश गावो मे एक मात्र चर्च स्कूल ही थे और अन्य कोई भी विकल्प नही था। आज भी (१९४१) अधिकाश यही स्थिति है, लेकिन आज इसका उतना विरोध नही किया जाता क्योकि चर्च तथा चर्च-विरोधियो के बीच का पहले वाला मनमुटाव अब काफी कम हो गया है और साथ ही सन् १९०२ के बालफोर अधिनियम द्वारा चर्च स्कूलो पर पर्याप्त अशो मे काउन्टी काउन्सिलो का नियत्रण भी लागू कर दिया गया है।

सन् १८७० के धार्मिक समझौतो के अनुसार यह अच्छा ही हुआ कि इगलैड ने और अधिक देर न कर सार्वभौम प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था को स्वीकार कर लिया अन्यथा आधुनिक देशो की तुलना मे वह काफी पिछड गया होता। सन् १८७० तथा १८८० के बीच स्कूल के विद्यार्थियो की औसत उपस्थिति लगभग बारह लाख से बढ-कर पैंतालीस लाख तक पहुँच गई थी और प्रति छात्र व्यय-भार दुगना हो गया था।

लेकिन माध्यमिक शिक्षा[1] के लिये अब भी काफी कम कार्य हुआ है, प्राथमिक

---

[1] 'सन् १८९९ मे माध्यमिक शिक्षा पर राजकीय कोष से प्रतिव्यक्ति इगलैड मे होने वाले खर्च जहा केवल तीन फार्दिग था, स्विटजरलैड मे एक शिलिग एक पेनी तीन फार्दिग था' बर्नार्ड एलेन की 'सर रॉबर्ट मोरेन्ट' कृति, पृ० १४१।

स्कूलो के सर्वश्रेष्ठ छात्रो को विश्वविद्यालयीय शिक्षा के लिये प्रोत्साहन दे पाने के लिये किसी प्रकार की छात्रवृत्ति का भी प्रबन्ध नही किया जा सका है प्रसिद्ध काकर्टन निर्णय द्वारा सन् १९०० मे न्यायालयो ने यह घोषणा की कि १८७० के अधिनियम के अधीन करो द्वारा प्राप्त होने वाले धन को माध्यमिक अथवा उच्च किसी भी प्रकार की शिक्षा पर खर्च किया जा सकता है।

इस नियम मे एक और दोष यह था कि स्कूल बोर्डों का क्षेत्र काफी छोटा था। किसी नगर अथवा गाव का स्कूल बोर्ड उसी क्षेत्र तक सीमित होने के कारण शिक्षा में किसी व्यापक दृष्टि को जन्म दे पाने मे असमर्थ था। फिर उनके स्थानीय स्वरूप ने चर्च तथा चर्च-विरोधियो (डिसेन्ट) के सघर्ष को और भी अधिक तीव्र तथा व्यक्तिगत स्वरूप दे डाला था।

सन् १८७० के अधिनियम के इन दोषो को, महान समाज सेवी रोबर्ट मोरेन्ट से प्रेरित होकर, सन् १९०२ मे बने बालफोर के शिक्षा अधिनियम मे दूर कर दिया गया था। इस अधिनियम द्वारा स्कूल बोर्डों को समाप्त कर दिया गया था और प्राथमिक तथा माध्यमिक दोनो ही प्रकार की शिक्षा के लिये प्रजातान्त्रिक रूप मे गठित काउन्टी काउन्सिलो तथा कुछ नगर परिषदो (बोरो काउन्सिल्स) को अधिकार सौंप दिये गये थे। आज हमारी प्रणाली इसी प्रकार की है। ये समितिया (काउन्सिल्स) उन्ही की शिक्षा समितियो (एड्यूकेशन कमीटीज) के सहयोग से शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रमो का सचालन करती है। काउन्टी एड्यूकेशन कमेटियो के बडे क्षेत्र तथा व्यापक दृष्टि के कारण जो सुधार सम्भव हुआ उससे प्राथमिक शिक्षा को काफी लाभ पहुँचा। माध्यमिक शिक्षा तो इससे और भी अधिक लाभान्वित हुई थी, विश्वविद्यालयीय स्तर तक भी बालफोर के विधेयक द्वारा एक प्रभावकारी शृखला स्थापित हो गई थी।

१८७० तथा १९०२ के शिक्षा अधिनियमो के बिना इगलैंड मशीन तथा सगठन प्रधान आगामी युग मे प्रतियोगिता के क्षेत्र मे काफी पिछड गया होता और उसकी जनता नगर के अशिक्षित जन समूह के बीच मे धस गई होती - यह अशिक्षित नगर-समाज पुराने समय की अशिक्षित ग्रामीण जनसख्या की तुलना में कही अधिक निकृष्ट था। पुरातन युगीन ग्रामीण समाज मे हलवाहो तथा शिल्पकारों के चरित्र एव मानस पर प्रकृति, कृषिप्रधान जीवन तथा काम की पुरानी व्यवस्था का प्रभाव स्पष्ट अकित था और उसी परिवेश मे उसकी रचना भी हुई थी।

हमारी आधुनिक लोकप्रिय शिक्षा का प्रचलन वास्तव में एक ऐतिहासिक आवश्यकता थी और इस देश को उससे लाभ भी काफी पहुँचा लेकिन दूसरी ओर कुछ महत्वपूर्ण पक्षो में इससे निराश भी काफी होना पडा। इसके नागरिक उद्भव तथा स्वरूप के कारण ग्रामीय आवश्यकताओ की पूर्ति कर पाने मे वह असफल रही थी:

शिक्षा-बोर्ड वास्तव मे ग्रामो की भिन्न आवश्यकताओ की प्रकृति को समझ ही नही पाया था। ग्राम्य क्षेत्रो से लोगो के निष्क्रमण को रोकने की अपेक्षा इस शिक्षा प्रणाली ने उसमे वृद्धि ही अधिक की थी। सामान्य रूप से इस शिक्षा ने यद्यपि पढने वालो की सख्या मे अवश्य वृद्धि की थी लेकिन कौन सी पुस्तक या कृति पढी जाए तथा कौन सी न पढी जाए यह विवेक जागृत कर पाने मे वह असफल थी और इस कारण नव-शिक्षित लोग सस्ते प्रभावो तथा उत्तेजनात्मक विचारो के जल्दी ही शिकार बन जाते थे। परिणामस्वरूप साहित्य तथा पत्रकारिता का सन् १८७० से ही पतन आरम्भ हो गया था, लाखो अर्द्धशिक्षित तथा एक-चौथाई रूप मे शिक्षित लोग ही ऐसे साहित्य तथा पत्रो के पाठक थे। पिछले युगो की भाति अब उच्च शिक्षा प्राप्त छोटा वर्ग साहित्यिक अभिरुचियो का स्तर निर्धारण नही करता था। बीसवी अथवा इक्कीसवी शताब्दी मे निम्न कोटि की पत्रकारिता तथा साहित्य उच्च साहित्य को पूर्णरूपेण कब निगल पाता है यह देखना अभी शेष है। यदि ऐसा नही होता है तो इसका श्रेय माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के ऐसे परिष्कृत स्वरूप को ही देना होगा जिसका बहुसख्यक स्नातक वर्ग अपनी अभिरुचि द्वारा उच्चस्तरीय पठन-सामग्री के सृजन को प्रोत्साहित कर सके।

इस पुस्तक का विषय-क्षेत्र केवल इगलैंड के सामाजिक इतिहास तक ही सीमित है, इसमे ब्रिटिश कॉमनवेल्थ मे सम्मिलित समुद्रपार के देशो तथा आश्रित क्षेत्रो की स्थिति को सम्मिलित नही किया गया है। लेकिन यदि इगलैंड समुद्री व्यापार तथा साम्राज्य का केन्द्र न होता तो वहा का समाज दूसरे ही प्रकार का होता। सागर-जीवी लोगो के रूप मे हम स्वय पर काफी समय से गर्व करते आ रहे है और इस द्वीप के जीवन का यह एक अग सा बन गया है। लेकिन जिस साम्राज्य के हम केन्द्र थे उसकी चेतना वास्तविकता से काफी पीछे रह गई है। उन्नीसवी शताब्दी के मध्य तक भी राष्ट्रीय गीतो मे 'अच्छे और चुस्त छोटे द्वीप' की ध्वनि झकृत होती रहती थी। लेकिन इस द्वीप को सामान्यतया उस साम्राज्य का, 'जिसमे कि सूर्य कभी अस्त नही होता था' अभी केन्द्र नही माना जाने लगा था। इस स्थिति को लोगो ने महारानी विक्टोरिया की दो जयतियो (१८८७,१८९७) के समय, जब कि सुदूर द्वीपो से महारानी को बधाई देने के लिये आए हुए लोगो ने लन्दन की गलियो मे अत्यन्त विस्मयकारी तथा प्रभावशाली ढग से अपना प्रदर्शन किया था, स्पष्ट महसूस किया।

वैसे विगत कई पीढियो से इगलैंड के नगरो तथा गावो पर समुद्रपारीय सम्बन्धो का काफी प्रभाव पडता रहा है। अठारहवी शताब्दी मे चाय तथा तम्बाकू उसी प्रकार राष्ट्र की खाद्य सामग्री बन गये थे जिस प्रकार कि गोमांस तथा बियर थे।

और सत्रहवी शताब्दी से ही असन्तुष्ट तथा साहसी लोग समुद्र पार के देशो, मे पहले अमरीकी उपनिवेशो मे, फिर सयुक्त राज्य, कैनेडा, आस्ट्रेलिया तथा दक्षिणी अफ्रीका, जाकर बसते रहे थे। यह सत्य है कि उन्नीसवी शताब्दी तक अपना देश त्याग कर सदा के लिये विदेश चले जाने वाले लोगो के विषय मे कोई समाचार ज्ञात नही होता था। लेकिन विक्टोरिया के शासनकाल मे जबकि प्रवासियो का ज्वार विदेशो की ओर पहले की अपेक्षा अधिक वेग से बढ रहा था डाक टिकटो द्वारा परिवार के स्वजनो के लिये 'उपनिवेशो मे रह रहे अपने उस प्रवासी पुत्र' से जो अब अक्सर कुछ उपार्जन के बाद अपने साथ धन लेकर लौटता था और समानता एव स्वावलम्बन वाले इन देशो की कहानिया सुनाता और स्नेह पूर्वक अपने पुराने मन्दगामी दिनो के प्रति क्षोभ दर्शाता था—सम्पर्क बनाए रखना काफी सहज हो गया था। इसी प्रकार मध्यवर्ग तथा निम्न वर्ग साम्राज्य के विषय मे अपने से अधिक 'उच्च स्तर' के लोगो के बराबर ही जानते थे और सयुक्त राज्य के विषय मे तो, जैसा कि १८६१-१८६५ मे हुए गृह-युद्ध के समय यह पर्याप्त स्पष्ट हो चुका था, उन्हे इन 'उच्च स्तरीय' लोगो से भी अधिक जानकारी थी। लेकिन व्यावसायिक वर्ग तथा उच्चवर्ग भी अपने जीवन को उन्नत करने के लिये राज्य, व्यापार तथा बडे शिकारो की तलाश मे अफ्रीका और भारत के प्रत्येक कोने मे पहुँच चुके थे। सभी सैनिको को भी भारत के बारे मे काफी जानकारी हो चुकी थी।

इस प्रकार समुद्र पार के देशो मे अर्जित किये गये वैविध्यपूर्ण अनुभव विक्टोरिया कालीन इगलैड के प्रत्येक नगर तथा प्रत्येक गाव मे पहुँचने जा रहे थे। ट्यूडर के समय से ही उच्च भूमि के गावो पर समुद्र का काफी प्रभाव पडा था, इन गावो मे से कोई भी ज्वार चढे समुद्र से सत्तर मील से अधिक दूरी पर स्थित नही था। और अब पुराने पोत चालन के अनुभवो मे उपनिवेशो का अनुभव और सम्मिलित हो गया था। कुछ दृष्टियो से हमारे द्वीप वासियो को सबसे कम द्वीपीय कहा जा सकता है। यूरोप वासियो को हम इसलिये द्वीपीय प्रतीत होते थे कि हम प्रायद्वीपीय भूमि के भाग नही थे। लेकिन हमारे अनुभव और हमे उपलब्ध अवसर अन्य देशो के निवासियो की अपेक्षा अधिक थे।

विक्टोरिया कालीन समृद्धि और सभ्यता की प्रगति का एक कारण यह भी था कि इस शताब्दी के महायुद्धो तथा कई गम्भीर राष्ट्रीय खतरो से यह देश मुक्त रहा था। नौसेना के आरक्षण मे सुरक्षित इगलैड वासी जीवन की सभी समस्याओ को, जो वास्तव मे अस्थायी तथा स्थानीय परिस्थितियो की ही उपज थी, सुरक्षा एव शान्ति से ही प्राकृतिक व्यवस्था का एक अग मानकर सुलझाने का प्रयत्न करते थे। अग्रेजी भाषा भाषी अमरीका को छोड कर कोई भी बडा देश विचार एव व्यवहार की दृष्टि से

विक्टोरिया कालीन इगलैंड की तुलना मे अधिक सभ्य नही था। मध्य वर्ग तथा श्रमिक वर्ग के लोग युद्ध कालीन परिस्थितियो को छोड कर सेना मे नौकरी करना अच्छा नही समझते थे। यह एक अनुचित दृष्टिकोण था जो अपराधवाद (क्रामियन) तथा बोर युद्धो की पूर्वकालीन स्थिति के रूप मे जिगोवाद (दम्भपूर्ण देश भक्त की नीति) के आकस्मिक झटको का रूप ग्रहण कर उठ खडा होता था और अनेक समानधर्मी अभिवृत्तियो को उत्पन्न कर देता था। लेकिन ट्रॉफलगर तथा वाटरलू के सौ वर्षो बाद तक इसके कारण किसी प्रकार के कुपरिणाम नही निकले। क्योकि समुद्र पर हमारा अधिकार था और समुद्र ही मानवीय कर्मो की जन्मस्थली था। कुल मिला कर समुद्री जीवन तथा विश्व के सागर-तटो को लेकर जो हमारी श्रेष्ठता थी उसका उन्नीसवी शताब्दी मे शान्ति, सद्भावना तथा स्वतन्त्रता के प्रसग मे पर्याप्त उपयोग किया गया। यदि हमारी इस श्रेष्ठता का उपयोग अन्यथा किया जाता तो शायद मानव जाति को कई कठिनाइयो का सामना करना पडता।

विक्टोरिया कालीन इगलैंड के निश्चिन्त लोग सैनिक रूप से सुसज्जित प्रायद्वीप (यूरोप) को आन्तरिक गतिविधियो तथा प्रक्रियाओ से परिचित नही थे। उन्हे आस्ट्रेलिया, अमरीका तथा अफ्रीका के बारे मे मानवीय एव व्यापारिक दृष्टि से अधिक जानकारी थी। यूरोप वास्तव मे उसकी आल्प्स पर्वतमाला, चित्रशालाओ तथा पुरातन नगरो के कारण अग्रेजो के लिये एक आमोद स्थल ही था। यद्यपि हमारा साम्राज्य समुद्र पार तक व्याप्त था लेकिन वास्तव मे हम यूरोपीय न होकर एक द्वीप वासी ही थे। और नाविको की अपेक्षा भी हम सैनिक ही अधिक थे। यूरोपीय राजनीति की हमारी अवधारणा भी शक्ति अथवा राष्ट्रीय सुरक्षा के अर्थ मे न हो कर इस बात पर आधारित थी कि हम रूस अथवा तुर्की की सरकारो, नैपोलियन तृतीय अथवा इटली के पुनर्जागरण को पसन्द करते है अथवा नापसन्द करते है। कभी हमारी यह सहानुभूति उचित दिशा की ओर ले जाती थी तो कभी गलत दिशा की ओर भी अग्रसर कर देती थी। लेकिन किसी भी रूप मे इस प्रसग मे हमारी कोई राष्ट्रीय सैन्य नीति नही थी। अग्रेजो की दृष्टि मे विदेश नीति वास्तव मे उदारतावादी (लिबरल) तथा अनुदारतावादी (कन्ज़रवेटिव) नीतियो की ही एक शाखा थी जिस पर भावनाओ, तथा रुचि-अरुचि का पर्याप्त प्रभाव था, अस्तित्व के प्रश्न से यह पक्ष सम्बन्धित नही था।

विक्टोरिया काल मे इस प्रकार की अभिवृत्ति को किसी गम्भीर खतरे का सामना नही करना पड़ा। लेकिन जैसे ही इस शताब्दी का अन्त हुआ सभी मानवीय पक्षो मे एक क्रान्तिकारी आन्तरिक परिवर्तन घटित हो उठा। इजिनों का आविष्कार हो चुका था और इसके स्थानगत दूरी को कम करने वाले पक्ष का उद्घाटन भी होने

वाला था। मोटरकार, मोटर लारी, पनडुब्बी, ट्रक, हवाई जहाज विश्व की शान्ति तथा युद्ध दोनो ही दृष्टियो से एक नये युग मे प्रवेश देने वाले थे। और इगलैंड पर इस विकास का अत्यधिक प्रभाव पड़ने वाला था क्योकि असमान्य द्वीप की स्थिति से उसे जो लाभ प्राप्त थे वे समाप्त होने वाले थे। समुद्र पर अब केवल जहाजो का ही आधिपत्य नही रह गया था, हवाई जहाज किसी भी शान्तिपूर्ण द्वीप की हजारो वर्ष पुरानी नीरवता को भग कर सकते थे। इस प्रकार की नयी परिस्थितियो मे यूरोप की शक्ति के प्रति हमारा उपेक्षात्मक रवैया, तथा हमारा पूर्ण असैनिक जीवन, नयी आवश्यकताओ के अनुरूप सैन्य शक्ति मे वृद्धि के प्रति उदासीनता--यदि यह सब इसी प्रकार चलता रहा तो हमारे अस्तित्व को एक बड़ा खतरा उत्पन्न हो जाएगा।

शान्ति के समय मे भी बीसवी शताब्दी के प्रथम चालीस वर्षो मे मोटर-गाड़ी द्वारा सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र मे जो क्रान्ति हुई थी वैसी इससे पहले रेलो तथा मशीनो द्वारा भी सम्भव नही हो सकी थी। रेलो के युग मे, जिसमे घोड़ा-गाड़ी तथा साइकिलो की यात्रा भी सम्मिलित है, स्थानीय तथा प्रान्तीय विभेद यद्यपि तेजी से विलीन हो रहे थे लेकिन कुल मिला कर इस समापन प्रक्रिया का क्षेत्र सीमित ही था। लेकिन नूतन परिस्थितियो मे इगलैंड ने एक विशाल अनियोजित उपनगरीय क्षेत्र का विकास कर डाला था। मोटर यातायात ने द्वीप के विकास पर राज्य के नियन्त्रण की आवश्यकताओ को जन्म दिया लेकिन दुर्भाग्य से इस समस्या को दैवयोग तथा आवास निर्माता की शोषण वृत्ति के ही भरोसे छोड दिया गया। अतुलनीय गति से परिवर्तित हो रही परिस्थितियो के अनुरूप यह राजनैतिक समाज तुरन्त अपनी कार्यविधियो मे परिवर्तन उत्पन्न नही कर सका था।

लेकिन इस नवीनतम युग के कुछ अच्छे पक्ष भी है। नई शताब्दी के प्रथम चालीस वर्षों मे जो प्रगति हुई थी विशेष रूप मे शिक्षा[1] तथा समाज सेवा के क्षेत्र मे, वह मानवीय बुद्धि की क्षमताओ को देखते हुए पर्याप्त थी। जिस वर्ष महारानी विक्टोरिया का निधन हुआ था उसकी तुलना मे सन् १६३६ मे श्रमिक वर्ग की आर्थिक दशा कही अधिक अच्छी थी।

---

[1] वाटरलू के युद्ध मे विजय एटन के खेल के मैदानो मे नही बल्कि इगलैंड के हरे-भरे गावो मे प्राप्त की गई थी। १८ जून, १८१५, को जिन सैनिक पदाधिकारियो ने युद्ध मे भाग लिया था, वे यद्यपि कम शिक्षित थे लेकिन उनमे देहात मे पले ग्रामीण के सभी गुण विद्यमान थे। आज हम शिक्षित तथा नगरवासी है। आर. ए. एफ के हवाबाज निस्सन्देह ग्रामीण वातावरण की उत्पत्ति नही हो सकते। यदि हम इस युद्ध मे विजय प्राप्त करते है तो निस्सन्देह उसका श्रेय प्राथमिक तथा माध्यमिक शालाओ को ही होगा (१६४१)।

शान्ति एव युद्ध दोनो ही स्थितियो मे अब भावी इगलैंड का स्वरूप किस प्रकार का होगा इस विषय मे इतिहासकार सामान्यजन से अधिक कुछ भी कह पाने की स्थिति मे नही है। और इस शताब्दी के प्रथम चालीस वर्षों मे जो क्रान्तिकारी परिवर्तन घटित हुए है वे निस्सन्देह अब से कुछ ही समय बाद नितात भिन्न दिखाई देने लगेगे और इस प्रकार एक दूसरे ही ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के अग बन जाएगे। इसलिये इगलैंड के सामाजिक इतिहास के समापन के लिये सबसे उपयुक्त स्थल महारानी विक्टोरिया का निधन तथा रेल युग की समाप्ति ही हो सकता है।